 श्री आगमोदय समिति. 



वाचकवर-भगवदार्यश्यामाचार्यविरचित

प्रज्ञापना सूत्र

तृतीय भाग पद २१-३६

मूल तथा

श्रीमदाचार्यमलयगिरिविरचित

टीकाना अनुवाद सहित

अनुवादक अने संशोधक—पंडित भगवानदास हर्षचंद्र

संवत् १९९१ मूल्य ५-८-० प्रत ५००

 श्री आगमोदय समिति. 



वाचकवर-भगवदार्यश्यामाचार्यविरचित

प्रज्ञापना सूत्र

तृतीय भाग पद २१-३६

मूल तथा

श्रीमदाचार्यमलयगिरिविरचित

टीकाना अनुवाद सहित

अनुवादक अने संशोधक—पंडित भगवानदास हर्षचंद्र

संवत् १९९१ मूल्य ५-८-० प्रत ५००

इदं पुस्तकं अमदावाद जैनसोसायटीस्थितश्रीशारदामुद्रणालये तद-
धिपतिना सुश्रावक-हर्षचन्द्रात्मजेन पं. भगवानदासेन मुद्रितम् ।

प्रस्तावना.

भगवंत महावीरनो उपदेश अंग अने उपांगादि ग्रन्थोमां वहेंचायेलो छे. अरिहंत या तीर्थंकर जे उपदेश करे छे तेने गणधर सूत्ररूपे रचे छे ते अंग कहेवाय छे. त्यार पछीना पूर्वधर आचार्योए अंगनी पूर्ति रूपे के अंगना विषयना विवेचनने अंगे जे जे ग्रन्थोनी रचना करी ते उपांग कहेवाय छे.

अंग अने उपांगनो संबन्ध—

अंग बार छे-१ आचारांग, २ सूत्रकृतांग, ३ स्थानांग, ४ समवायांग, ५ व्याख्याप्रज्ञप्ति (भगवती), ६ ज्ञातधर्मकथा, ७ उपासकाध्ययनदशा, ८ अन्तकृद्दशा, ९ अनुत्तरौपपातिकदशा, १० प्रश्नव्याकरण, ११ विपाकसूत्र अने १२ दृष्टिवाद. आ द्वादशांगी अथवा अंगप्रविष्ट कहेवाय छे. परन्तु तेमां दृष्टिवाद बारमुं अंग विछिन्न थयेलुं होवाथी अत्यारे अगियार अंग विद्यमान छे. उपांग बार प्रकारना छे-१ औपपातिक, २ राजप्रश्नीय, ३ जीवाजीवाभिगम, ४ प्रज्ञापना, ५ सूर्यप्रज्ञप्ति, ६ जंबुद्वीपप्रज्ञप्ति, ७ चन्द्रप्रज्ञप्ति, ८ कल्पिका, ९ कल्पावतंसिका, १० पुष्पिता, ११ पुष्पचूलिका, १२ वृष्णिदशा आ बार उपाङ्गनी गणना अंगबाह्य श्रुतमां थाय छे.

तेमां प्रस्तुत प्रज्ञापना सूत्र समवाय नामे चोथा अंगनुं उपांग छे. ए संबन्धे टीकाकार आचार्य श्री० मलयगिरिजी कहे छे के "इयं समवायाख्यस्य चतुर्थाङ्गस्योपाङ्गम्, तदुक्तार्थप्रतिपादनात्" आ समवाय नामे चोथा अंगनुं उपांग छे, कारण के तेमां कहेला अर्थनुं प्रतिपादन करे छे. नंदिसूत्रमां समवायांगनो परिचय आ प्रमाणे आपेलो छे-"१ समवायांगमां जीवो, अजीवो,

---

१ से किं तं समवाए ? समवाए णं जीवा समासिज्जंति, अजीवा समासिज्जंति, जीवाजीवा समासिज्जंति, ससमए समासिज्जइ, परसमए समासिज्जइ, ससमए परसमए समासिज्जइ, लोए समासिज्जइ; अलोए समासिज्जइ, लोयालोए समासिज्जइ, समवाए णं एगाइआणं एगुत्तरिआणं

जीवाजीवो, स्वसमय, परसमय, लोक, अलोक, अने लोकालोकनो समाश्रय छे. समवायमां एकथी आरंभी एक एक वधारतां यावत् सो स्थानक सुधीना भावोनी प्ररूपणा करवामां आवी छे. तेमां बार अंगोना पल्लवाग्र-अंशोनुं कथन छे. ते अंगोमां चोथुं अंग छे अने ते एक श्रुतस्कन्ध अने एक अध्ययन रूप छे".

समवायांगमां एकथी मांडी एक एकनी वृद्धि करतां यावत् सो सुधीना स्थानकनुं कथन छे. जेमके एक आत्मा छे, एक अनात्मा छे, एक दंड छे, एक अदंड छे, एक क्रिया छे, एक अक्रिया छे, एक लोक छे, एक अलोक छे, एक धर्म छे, एक अधर्म छे, एक पुण्य छे, एक पाप छे, एक बंध छे, एक मोक्ष छे, एक आस्रव छे, एक संवर छे, एक निर्जरा छे इत्यादि. प्रज्ञापना सूत्रमां सामान्यतः सर्व भावोनुं कथन छे अने तेनो सूत्रकारे प्रारंभमां ज 'पन्नवणा सव्वभावाणं'-(तेमां सर्व भावोनी प्ररूपणा छे) ए वडे निर्देश कर्यो छे, तो पण तेमां विशेषतः ३६ पदो छे अने एक एक पदमां एक एक विषयनुं निरूपण करवामां आव्युं छे. ते पदोना नाम आ प्रमाणे छे-१ प्रज्ञापना, २ स्थान, ३ अल्पबहुत्व ४ स्थिति ५ विशेष, ६ व्युत्क्रान्ति, ७ उच्छ्वास, ८ संज्ञा, ९ योनि, १० चरम, ११ भाषा, १२ शरीर, १३ परिणाम, १४ कषाय, १५ इन्द्रिय, १६ प्रयोग, १७ लेश्या, १८ कायस्थिति, १९ सम्यक्त्व, २० अन्तक्रिया, २१ अवगाहनासंस्थान, २२ क्रिया, २३ कर्म, २४ कर्मबन्धक, २५ कर्मवेदक, २६ वेदबन्धक, २७ वेदवेदक, २८ आहार, २९ उपयोग, ३० पश्यत्ता, ३१ संज्ञी, ३२ संयम, ३३ अवधि, ३४ प्रविचारणा, ३५ वेदना, अने ३६ समुद्घात.

प्रज्ञापना सूत्रमां एक पण विषय एवो नथी के जेनो समवायांगमां प्रतिपादन करेला विषयो साथे सीधो संबन्ध होय. वळी नंदिसूत्रमां प्रज्ञापनानी अंगबाह्य, आवश्यकव्यतिरिक्त अने उत्कालिक श्रुतमां गणना करी छे, परन्तु उपांग तरीके गणना करी नथी तो प्रज्ञापना समवायांगनुं उपांग शी रीते ए एक प्रश्न छे. तेनो उत्तर ए छे के अंग अने उपांगनो विभाग प्राचीन ग्रंथोमां मळे छे. ए संबन्धे तत्त्वार्थ भाष्यमां कह्युं छे के " तस्य श्रुतज्ञानस्य महाविषयत्वात्तांस्तानर्थानधिकृत्य प्रकरणसमाप्त्यपेक्षमङ्गोपाङ्गनानात्वम्,

ठाणसयविवड्ढियाणं भावाणं परूवणा आघविज्जइ, दुवालसविहस्स गणिपिडगस्स पल्लवग्गे समासिज्जइ." जुओ नंदिसूत्र आ. स. प. २२९.

किं चान्यत्–सुखग्रहणविज्ञानापोहप्रयोगार्थं च, अन्यथा ह्यनिबद्धमङ्गोपाङ्गशः समुद्रप्रतरणवद् दुरध्यवसानं स्यात् ।" ते श्रुतज्ञाननो महान् विषय होवाथी ते ते अर्थना अधिकारने आश्रयी प्रकरणनी समाप्तिनी अपेक्षाए अंग अने उपांगनुं भिन्नपणुं छे. वळी तेनुं सुखपूर्वक ग्रहण, विज्ञान, निश्चय अने प्रयोग–आचरणने माटे छे, जो तेम न होय तो समुद्र तरवानी पेठे मुश्केलीथी ग्रहण करी शकाय. एटले अंग अने उपांगनो विभाग प्राचीन छे. आ भाष्यनी 'अंगोपांगशः' ए प्रतीक लइने टीका करता याकिनीमहत्तरासूनु हरिभद्राचार्य अने गन्धहस्ती सिद्धसेनगणि कहे छे के 'अङ्गानि आचारादीनि, उपाङ्गानि राजप्रसेनकीयौपपातिकादीनि' (आचारादि अंगो अने राजप्रश्नीय अने औपपातिक वगेरे उपांगो छे.) एटले अंग अने उपांगनो भेद ते बन्ने आचार्यने संमत छे. वळी उपांग शब्दज अंगसापेक्ष छे एटले उपांगोनी रचना स्वतन्त्र नथी, पण अंगसापेक्ष छे. एटलुंज नहि पण अमुक अंगना अमुक उपांगो नियत छे. ए संबन्धे तत्त्वार्थनी टीकामां सिद्धसेनगणि कहे छे के "इदमङ्गमाचारादि, इदं च तदुपाङ्गमिति स्थापितम्" (आ आचारादि अंग छे अने आ तेनुं उपांग छे, एटले अमुक अंगनुं अमुक उपांग नियत छे. तात्पर्य ए छे के अंग अने उपांगनो विभाग तथा अमुक अंगनुं अमुक उपांग ए विभाग अर्वाचीन नथी, पण प्राचीन छे. उपांगनो ए अर्थ नथी के अंगमां कहेला विषयोनुं क्रमबद्ध निरूपण करवुं, परन्तु अंगना कोइ कोइ विषय लइने सविस्तरपणे प्रतिपादन करवुं. तेथी मात्र उपलक दृष्टिथी अंग अने उपांगनो सीधो संबन्ध लागतो नथी, तो पण वधारे विचार करतां अंग अने उपांगनो परस्पर संबन्ध जणाय छे. जेमके समवायांगमां एक आत्मा अने एक अनात्मा (अजीव) छे. तेनुं प्रथम प्रज्ञापना पदमां जीव प्रज्ञापनाने विशे आत्मानुं निरूपण छे अने अजीव प्रज्ञापनामां अनात्मा–अजीवनुं निरूपण छे. अथवा समवायांगना बीजा स्थानकमां "दुवे रासी पन्नत्ता जीवरासी चेव अजीवरासी चेव" (बे राशि कही छे–जीवराशि अने अजीवराशि.) एनुं निरूपण प्रथम प्रज्ञापना पदमां छे. एक दंड–दुष्ट मन, वचन अने कायानो व्यापार, अने अदंड–प्रशस्त मन, वचन अने कायानो व्यापार, तेनुं सोळमा प्रयोग पद वगेरेमां निरूपण करवामां आव्युं छे. एक क्रिया–कायिकी वगेरेनुं बावीशमां क्रियापदमां निरूपण छे अने एक अक्रिया–योगनो निरोध करवो, तेनुं ३६ मां समुद्घातपदमां निरूपण करवामां आव्युं छे.

ए प्रमाणे लोक अलोक, धर्म, अधर्म, पुण्य, पाप, वन्ध मोक्ष, आस्रव, संवर वगेरेनुं वर्णन प्रज्ञापनामां जुदा जुदा स्थळे आवेलुं छे. तथा इन्द्रिय, लेश्या, समुद्घात वगेरेनुं नाम मात्रथी प्रतिपादन समवायांगमां छे अने प्रज्ञापनामां इन्द्रियपद, लेश्यापद, समुद्घात पदमां ते विपयनुं सविस्तर वर्णन छे, माटे समवायांगमा संक्षेपथी कहेला विपयनुं सविस्तरपणे प्रतिपादन करतुं होवाथी प्रज्ञापना तेनुं उपांग छे एम स्पष्टपणे कही शकाय छे.

आगमोनी रचना अने प्रतिसंस्कार

सूत्र ग्रन्थोमां वार अंगोनी रचना करनारा भगवान महावीरना शिष्य आर्य सुधर्मा स्वामी छे. अने त्यार पछी तेनो प्रतिसंस्कार अनेक वार थयो छे. महावीरना निर्वाण वाद एक हजार वर्षमां त्रण वाचनाओ प्रसिद्धपणे थइ छे—१ स्थविर भद्रवाहुस्वामीना समयमां पाटलीपुत्रीय वाचना, २ आर्यस्कंदिल कृत माथुरी वाचना अने वाचक नागार्जुनकृत वलभी वाचना.

तेमांनी प्रथम पाटलीपुत्रीय वाचना महावीरना निर्वाणथी १६० वर्षनी आसपासना समयमां पाटलिपुत्रमां थइ हती. आ वाचनाना समयमां दुर्भिक्षने लीधे पठन पाठनना अभावे छिन्न भिन्न थयेला अगियार अंगो अने दृष्टिवादना भागो फरी व्यवस्थित करवामां आव्या हता. वीजी माथुरी वाचना वीरनिर्वाणथी ८२७थी ८४० वर्षना गाळामां युगप्रधान आर्य स्कंदिलसूरिना अध्यक्षपणामां मथुरामां थइ हती. आ वाचना पण दुष्काळना कारणथी पठन-पाठननी प्रणालीना अभावे आगमो अव्यवस्थित थइ गया हता. तेथी दुष्काळनुं संकट दूर थतां आर्य स्कंदिलसूरिना प्रमुखपणामां मथुरामां श्वेतांवर संघ एकत्र थयो हतो अने आगमोने व्यवस्थित करवामां आव्या हता. जेओने आगमोना जे जे भागो याद हता ते वधा लखी लेवामां आव्या. ए प्रमाणे आगमोने व्यवस्थित कर्या वाद तेने अनुसारे स्कंदिलाचार्ये वाचना आपी. जे समये मथुरामां आगमोने व्यवस्थित करी आर्य स्कंदिलसूरिए वाचनानो प्रारंभ कर्या ते समये वाचक नागार्जुने वलभि नगरीमां श्रमण संघने एकठो करी दुर्भिक्षने लीधे जे जे आगमो अने इतर ग्रन्थो नष्टावशेष हता तेने याद करी लखाव्या अने पूर्वापर संवन्धने अनुसारे व्यवस्थित करी ते प्रमाणे वाचना आपी. आ वाचनामां नागार्जुन मुख्य हता तेथी तेने ना-

गार्जुनी वाचना कहे छे. एम विस्मृत थयेला सूत्रार्थनुं स्मरण करी संघटना करवामां वाचनाभेद थयो. त्यार पछी ते बन्ने आचार्यो परस्पर न मळी शक्या तेथी ते वाचनाभेद कायम रही गयो.

त्यार पछी लगभग दोढसो वर्ष व्यतीत थया बाद देवर्द्धिगणिना अध्यक्षपणामां वलभीमां संघ एकठो थयो अने पूर्वोक्त बन्ने वाचनाओ समये लखेला सिद्धान्त ग्रन्थो उपरांत जे ग्रन्थो अने प्रकरणो रह्या हता ते बधाने लखावी सुव्यवस्थित कर्या अने बन्ने वाचनाओ समये लखेला सिद्धान्तोनो समन्वय करी भेदभाव दूर करी तेमां एकरूपता करी. ज्यां सूत्रना मोटा पाठो के जे बीजा सूत्रमां हता त्यां तेनी साक्षी आपी ते पाठोने टुंकाववामां आव्या. ए प्रमाणे अनेक वार अव्यवस्थित थयेला आगमोने व्यवस्थित करवामां प्रतिसंस्कार करतां आवश्यक परिवर्तन थाय ए स्वाभाविक छे जेम कोइ निपुण शिल्पी प्राचीन मंदिर के कलाकृतिनो तेनुं मूळ स्वरूप जाळवीने जीर्णोद्धार करे तेम आगमोनुं मूळ स्वरूप कायम राखी तेनो प्रतिसंस्कार करवामां आव्यो छे.

आगमोनी भाषा

जैनागमोनी भाषा अर्धमागधी या प्राकृत कहेवाय छे. ते संबन्धे प्राचीन तेमज अर्वाचीन ग्रन्थोमां पुष्कळ उल्लेखो मळे छे[1]. भाषातत्त्वविद् पश्चिमना विद्वानो कहे छे के "पश्चिम मगध अने शूरसेन देशना मध्यवर्ती जनोनी प्रचलित लोकभाषाथी जैनोना धर्मपुस्तकनी अर्धमागधी भाषा अने पूर्व मगधमां प्रचलित लोकभाषाथी बौद्ध धर्मग्रन्थोनी पाली भाषा उत्पन्न थइ" आ बधी प्रकृति-सामान्य जनसमाजनी भाषामांथी उत्पन्न थजेली होवाथी ते प्राकृत पण कहेवाय छे. वेदनी भाषा अने प्राकृत भाषा ए बन्ने तेना पूर्वेनी प्राकृत-लोकभाषामांथी उत्पन्न थयेली छे, तेथी ते बन्नेनी घणां अंशे समानता छे. वेदनी भाषा पण जनसमाजनी साधारण भाषा नहोती पण शिक्षित आर्योनी भाषा हती अने ते समयमां जनसमाजनी साधारण प्राकृत भाषाथी ते जुदीज हशे अने तेमांथी प्राकृत भाषा अने वैदिक भाषा नीकळी हशे एवुं अनुमान थइ शके छे.

आगमोनी रचना अर्धमागधी भाषामां थइ छे, कारण के भगवंत महावीरनो विहार मगध अने तेनी आसपासना देशोमां थयो

हतो अने तेणे जनसमूहनी प्रचलित भाषामां उपदेश कर्यो हतो. परन्तु समय जतां तेने ने ते समयमां प्रचलित लोक भाषानी असर थइ अने जे काळे आगमो लीपिबद्ध थया ए काळे महाराष्ट्र प्राकृत भाषानुं साहित्यनी भाषा तरीके उच्च स्थान हतुं अने सारा सारा ग्रन्थोनुं निर्माण महाराष्ट्र प्राकृतमां थवा लाग्युं हतुं एटले तेनी असर पण थइ एटले आगमोना घणा शब्दो अने रूपोनुं महाराष्ट्र प्राकृतमां परिवर्तन थयुं तेथी तेनी साथे तेनुं साम्य वधतुं गयुं. परन्तु आगमोमां मळी आवता सेंकडो रूपो महाराष्ट्र प्राकृत भाषाना व्याकरणना नियमथी सिद्ध थता नथी. तेथी आगमोनी भाषा तेटले अंशे महाराष्ट्र प्राकृतथी जुदी पडे छे. एटले एम कही शकाय के आगमोनी रचना अर्धमागधी भाषामां थयेली छे, परन्तु समय जतां महाराष्ट्र प्राकृतनी तेना उपर असर थयेली छे अने तेथी तेनी साथे तेनुं घणुं साम्य छे. पण आगमोनी भाषा अर्धमागधी नथी पण प्राकृत (महाराष्ट्र प्राकृत) छे एम केम कही शकाय? जेम शौरसेनी वगेरे भाषाओ महाराष्ट्र प्राकृत साथे तेनुं घणुं साम्य होवा छतां पण जुदी जुदी भाषा तरीके निर्दिष्ट छे, तो पछी अनेक विशेषतावाळी अर्ध मागधी भाषा जुदी भाषा तरीके केम न कही शकाय? आगमोना घणा रूपो महाराष्ट्र प्राकृतना नियम वडे सिद्ध थता नथी. परन्तु अहीं तेना रूपोनी सूचि आपी विस्तार करवानुं उचित नथी. जिज्ञासुओए पंडित हरगोविंददास संपादित प्राकृत शब्दार्णवनी प्रस्तावना जोवी. हेमचन्द्राचार्ये प्राकृत अष्टम अध्यायमां मागधी भाषाना जे नियमो बताव्या छे तेमां "अत एत् सौ पुंसि मागध्यां (पा० ४ सू०२८७) मागधी भाषामां प्रथमना एकवचनमां अकारनो एकार थाय छे. ते सिवायना कोइ नियमो वर्तमान जैनागमोनी भाषाने सामान्यतः लागु पडता नथी. तो तेने मागधी अथवा अर्धमागधी भाषा केम कहेवाय? आ एक प्रश्न छे. तेनो खुलासो ए छे के श्री० हेमचन्द्राचार्ये मागधी भाषाना जे नियमो बताव्या छे ते त्यार पछीना काळनी नाटक वगेरे साहित्यमां वपराती मागधी भाषाना छे, आर्ष प्राकृतने अंगे तो तेमणे "आर्षं" (पा. १. सू. ३)आर्ष प्राकृत बहु प्रकारे थाय छे. ए कथन वडे महाराष्ट्र प्राकृत अने आर्ष प्राकृतनो भेद स्पष्टपणे बताव्यो छे. जो महाराष्ट्र प्राकृत अने आर्ष प्राकृत-अर्धमागधीनो भेद विवक्षित न होत तो 'आर्षं' ए जुदुं सूत्र न कर्युं हत. माटे हेमचन्द्राचार्य पण महाराष्ट्र प्राकृतथी आर्ष प्राकृतने भिन्न माने छे. ते आर्ष प्राकृत तेज आगमोनी अर्धमागधी भाषा छे. पन्नवणा सूत्रमां

कह्युं छे के "से किं तं भासारिया ? भासारिया जे णं अद्धमागहाए भासाए भासंति" (प्रज्ञापना पद १ प. १७३) भापार्यो केवा प्रकारना छे ? जेओ अर्धमागधी भापामां वोले छे ते भापार्यो छे. ते सिवाय वीजा पण सूत्रोमां आगमनी अर्धमागधी भापा संवन्धमां घणा उल्लेखो जोवामां आवे छे[1]. अर्धमागधी एटले अरधा मगधदेशनी भापा[2], परन्तु मागधी भापाना अर्ध अंश घटित भापा ते अर्धमागधी नहि, तेथी हेमचन्द्राचार्ये प्राकृत अष्टम अध्यायमां "अत एत् सौ पुंसि मागध्याम्" (पा. ४ सू. २८७) ए सूत्रनी व्याख्यामां "पोराणमद्ध-मागहभासानिययं हवइ सुत्तं" प्राचीन सूत्रने अर्धमागधीभापामां वृद्ध आचार्यो माने छे ते प्रायः आज सूत्रना विधानथी माने छे, पण वीजा आगळ उपर कहेवाता लक्षणथी नहि. तेनो अर्थ तो एटलोज छे प्राचीन सूत्रोनी अर्ध मागधी भापा कहेवाय छे तेमां मागधी भापाना संवन्धे अहीं जे नियमो आपवामां आव्या छे तेमां वहुधा अकारनो एकार थाय छे तेना अंगे छे. परन्तु तेथी एम नथी समजवानुं के मागधी भापाना अरधा नियमो लागु पडे तो ज अर्धमागधी भापा कहेवाय.

"बालस्त्रीमन्दमूर्खाणां नृणां चारित्रकांक्षिणाम् । अनुग्रहार्थं तत्वज्ञैः सिद्धान्तः प्राकृतः स्मृतः" ॥

(चारित्रनी इच्छावाळा वाळ, स्त्री, मन्द अने मूर्ख मनुष्योना अनुग्रहने माटे तत्त्वज्ञोए सिद्धान्तनी रचना प्रकृतभापामां करी छे)–आ गाथा हरिभद्राचार्ये दशवैकालिकनी टीकामां उद्धृत करी छे अने तेमां आगमोनी प्राकृत भापा संवन्धे निर्देश छे ते सामान्य होवाथी आगमोनी अर्धमागधी भापानो वाधक नथी. प्रकृति–जनसमूहनी भाषा ते प्राकृत अने तेना देश विदेशना अंगे अनेक भेदो थयेला छे. हेमचंद्राचार्ये "प्रकृतिः संस्कृतम्, तत्र भवं तत आगतं वा प्राकृतं' प्रकृति–संस्कृत, अने तेमां थयेलुं के तेनाथी आवेलुं ते प्राकृत एवो प्राकृत नो यौगिक अर्थ करेलो छे ते प्राकृतना अनुशासननी अपेक्षाए छे, कारण तेमणे प्राकृतनुं अनुशासन संस्कृत द्वारा करेलुं छे. एटले

---

१ "भगवं च णं अद्धमागहीए भासाए धम्ममाइक्खइ" । (समवायांग प. ६०)

२ "मगहद्धविसयभासाणिवद्धं अद्धमागहं, अट्ठारसदेसीभासानियद्धं वा अद्धमागहं" (निशीथचूर्णि)

आगमोनी अर्धमागधी भाषा मानवामां कोई पण प्रत्यवाय होय एम लागतुं नथी.

प्रज्ञापनानुं बाह्य स्वरूप

प्रज्ञापना सूत्रनी रचना गौतम इन्द्रभूतिना प्रश्न अने भगवन्त महावीरना उत्तर रूप छे. तेमां ३६ पदो छे. अने तेमां कोइ कोइ पदमां उद्देशकनो विभाग पाडवामां आव्यो छे अने कोइमां पाडवामां आव्यो नथी. एक एक पदमां क्रमबद्ध एक एक विषयनुं सूक्ष्म अने सविस्तर पणे वर्णन छे. जेम अंगमां भगवती सूत्र मोटुं छे तेम उपांगोमां प्रज्ञापना सूत्र मोटुं छे. भगवती सूत्रमां अनेक भिन्न भिन्न विषयने लगता प्रश्नो छे तेम प्रज्ञापनामां नथी, प्रज्ञापनामां तो विषय परिमित होवाथी एक पदमां एकज विषयने लगता प्रश्न अने उत्तरो छे. प्रज्ञापना सूत्रनुं प्रमाण अनुष्टुप् श्लोक वडे गणता ७७८७ श्लोको छे. कारण तेनी समाप्तिना अन्ते ग्रन्थाग्रं ७७८७ इति ' ए प्रमाणे उल्लेख छे.

प्रज्ञापना सूत्रनी रचना करनार वाचकना वंशमां थयेला वाचकवर आर्य श्यामाचार्य छे. तेमना संबन्धमां बीजी विशेष हकीकत मळती नथी, तो पण प्रज्ञापना सूत्रना प्रारंभमां अन्य आचार्यकर्तृक आर्यश्यामाचार्यनी स्तुतिरूप बे गाथाओ छे, तेमां तेओ भगवंत महावीरनी तेवीशमे पाटे थयेला अने पूर्वधर हता तेवो निर्देश कर्यो छे[1]. आर्यमहागिरिना बहुल अने बलिस्सह ए बे शिष्यो हता, तेमां बलिस्सहना शिष्य हारित गोत्रीय स्वाति थया अने तेमना शिष्य हारित गोत्रीय [2]आर्यश्यामाचार्य थया अने तेओ भगवंत महावीरथी ३७६मा वरसे स्वर्गे गया. एटले भगवंत महावीरथी चोथा सैकामां प्रज्ञापना सूत्रनी रचना थइ.

---

१ "वायगवरवंसाओ तेवीसइमेण धीरपुरिसेणं । दुद्धरधरेण मुणिणा पुव्वसुयसमिद्धबुद्धिण ॥१॥
सुयसागरा विणेऊण जेण सुयरयणमुत्तमं दिन्नं । सीसगणस्स भगवओ तस्स नमो अज्जसामस्स " ॥२॥ प्रज्ञा० प. १ प. ११

२ हारियगुत्तं साइं च वंदिमो हारियं च सामज्जं ॥ नंदि. पट्टावली.
निज्जूहा जेण तया पन्नवणा सव्वभावपन्नवणा। तेवीसइमो पुरिसो पवरो सो जयउ सामज्जो ॥ ऋषिमंडल गा. ७०

टीका वगेरे साहित्य

प्रज्ञापना सूत्रनी प्रथम टीका करनारा याकिनीमहत्तरासूनु हरिभद्राचार्य थयेला छे अने तेमणे विषम पदना विवरण रूप लघु टीका करी छे अने ते अत्यारे उपलब्ध छे. ए संबन्धे टीकाकार मलयगिरिजी लखे छे के "टीकाकार हरिभद्र सूरिनो जय थाओ, जेमणे (प्रज्ञापना सूत्रना) विषम भावार्थनुं विवरण कर्युं छे. अने जेमना वचनथी-विवरणथी हुं पण लेशमात्र टीकाकार थयो छुं.

हरिभद्राचार्य चितोडना जितारि राजाना विद्वान् पुरोहित हता, तेओ याकिनी महत्तरा साध्वीथी प्रतिबोध पाम्या अने विद्याधर गच्छना आचार्य जिनदत्त सूरि पासे दीक्षा ग्रहण करी तेना शिष्य थया. जिनभट सूरि तो तेमना विद्यागुरु हशे अथवा तो ते गच्छना आचार्य होवा जोइए कारण के आवश्यक सूत्रनी टीकाना अन्ते ते बाबतनो स्पष्टपणे उल्लेख कर्यो छे. हरिभद्राचार्ये संस्कृत अने प्राकृत भाषामां घणा विद्वत्तापूर्ण दार्शनिक अने तात्त्विक ग्रन्थोनी रचना करी छे. तेमांना विद्यमान ग्रन्थो पण मोटी संख्यामां छे. आगम उपर संस्कृत टीकाकार तरीके तेओ पहेला ज छे, त्यार पहेलांनी आगम उपर टीकाओ छे ते प्राकृत भाषामां छे. जे चूर्णिना नामथी प्रसिद्ध छे.

तेओनी समभावपूर्वक दार्शनिक मीमांसा अने समन्वय करवानी शैली जुदाज प्रकारनी अने विद्वानोने मुग्ध करे तेवी छे. तेओए दार्शनिक चर्चा करतां प्रतिपक्षीने माटे पण 'सौगताः कृतबुद्धयः' 'तथा चाह महामतिः' 'यतो बुद्धो महामतिः' एवा गौरवसूचक शब्दो वापर्या छे.

हरिभद्र सूरि नामना अनेक आचार्य थया छे, परन्तु अहीं प्रज्ञापनाना टीकाकार याकिनीमहत्तरासूनु हरिभद्राचार्य विवक्षित छे. तेओना समयनो निर्णय करवा संबन्धे तेमना बनावेला कोइ ग्रन्थोमां उल्लेख के सूचन मळतुं नथी, परन्तु त्यार पछीना प्रबन्धकारोए अने ग्रन्थकारोए एमना संबन्धमां जे कंइ लखेलुं के सूचन करेलुं छे तेमांथी आपणे थोडे घणे अंशे जाणी शकीए छीए. तेमां आज सुधीमां तेमना समयनो निर्णय करवा संबन्धमां जे जे अत्यार सुधीमां साधनो मळ्यां छे ते नीचे प्रमाणे छे—

मेरुतुंगाचार्ये १३७१ मां विचारश्रेणि नामनो ग्रन्थ लखेलो छे तेमां तथा दुष्षमाकाल श्रमणसंघस्तव धर्मघोषसूरिए तेरमी शता-

द्वीमां रचेलुं छे तेनी प्राकृत अवचूरिमां हरिभद्राचार्यना स्वर्गवासना संबन्धमां एक प्राचीन गाथा आवेली छे—

"पंचसए पणसीए विक्कमकालाउ झत्ति अत्थमिओ । हरिभद्दसूरिसूरो भवियाणं दिसउ कल्लाणं ॥ "

विक्रमकाळथी आरंभी पांचसो पंच्याशीमां अस्त थयेला हरिभद्रसूरि रूपी सूर्य भव्योने कल्याण आपो.

आ गाथा प्राचीन कया ग्रन्थनी छे तेनो निर्णय थइ शकतो नथी, परन्तु मेरुतुंगाचार्ये तेमना पहेलाना कोइ पण ग्रन्थनी प्राचीन गाथा पोताना ग्रन्थमां उद्धृत करेली छे, अने त्यार पछी अन्य अन्य प्रबन्धकारोए पण पोतपोताना प्रबन्धमां ए गाथा उद्धृत करी छे. अने आज प्राचीन गाथाना संवादी बीजा अन्य उल्लेखो पण छे. ए प्रमाणे हरिभद्रसूरिनो समय विक्रमनी छट्ठी शताब्दी छे एम माने छे.

तेमना समय संबन्धे बीजो एक नवीन मत छे अने तेमनुं कहेवुं एम छे के 'विशेषावश्यक भाष्यना कर्ता युगप्रधान जिनभद्रगणि क्षमाश्रमणनो समय युगप्रधान पट्टावलीने अनुसरी ५८५–६४५ सुधीनो छे अने तेमना ग्रन्थना पुष्कळ अवतरणो हरिभद्राचार्ये आवश्यकटीका वगेरेमां लीधा छे, माटे तेमनो समय आठमी शताब्दी होवो जोइए,

ते सिवाय पूज्य जिनदास महत्तरे नन्दिसूत्रनी चूर्णि रची छे अने तेना अवतरणो हरिभद्राचार्ये नन्दिसूत्रनी टीकामां लीधां छे. ते चूर्णिनी नीचे आवो उल्लेख मळे छे–"शकराज्ञः पञ्चसु वर्षशतेषु व्यतिक्रान्तेषु अष्टनवतिषु नन्द्यध्ययनचूर्णिः समाप्ता" एटले शक संवत ५९८ (वि. ७३३) मां आ चूर्णि समाप्त करी अने बृहट्टिप्पनिकामां पण नन्दिचूर्णिनो काळ वि. ७३३ लखेलो छे. तेथी जिनदास महत्तराचार्य पछी थोडा काळने अन्तरे मानीए तो पण आठमी सदिना उत्तरार्धमां हरिभद्रसूरिनो समय आवे छे. आ समयनो संवाद करनारी रत्नसंचय प्रकरणनी गाथा नीचे प्रमाणे छे—

"पणपन्न बारससए हरिभद्दो सूरी आसि (अ)पुव्वकई । तेरसय वीस अहिए वरिसेहिं बप्पभट्टीपहू ॥ "

हरिभद्रसूरि वीरात् १२५५ (वि. ७८५) मां (अ)पूर्व कवि थया हता अने १३२०मा वरसे बप्पभट्टी थया हता.

दक्षिण्यचिन्ह सूरिए कुवलयमाला शक संवत ६९९ चैत्र कृष्ण वदि १४ ने दिवसे पूर्ण करी, तेमां तेमणे हरिभद्राचार्यनी 'सम-

राइच्च कहा' नो प्रारंभमां उल्लेख कर्यो छे, पटलुंज नहि परन्तु सिद्धान्त, प्रमाण अने न्यायमां हरिभद्राचार्यनो गुरु तरीके निर्देश कर्यो छे.[1] आ प्रमाणे नवीन मते हरिभद्राचार्यनो समय वसो वरस पाछो खसे छे.

धर्मघोष सूरिए तेरसोना सैकामां बनावेला दुष्षमाकाळ श्रमण संघस्तव (युगप्रधानस्तव) मां नीचेनी गाथा आपेली छे—

सीहं नागज्जुणं भूइदिन्नयं कालयं वंदे । सिरिसच्चमित्त–हारिलं जिणभद्दं वंदिमो उ साइं ॥ "

सिंह, नागार्जुन, भूतदिन्न अने कालकाचार्यने वंदन करुं छुं तथा श्री सत्यमित्र, हारिल, जिनभद्रगणि अने उमास्वातिने वंदन करीए छीए.

तेनी प्राकृत अवचूरिमां 'वर्धमान स्वामीथी ९९३ वरस गया पछी कालकसूरिए पर्युषणानो चतुर्थी करी, त्यार वाद सत्यमित्र ७ हारिल ५४ ए प्रमाणे १०५५ अने वि. ५८५. त्यार वाद हरिभद्रसूरि संवन्धे 'पंचसए पणसीए' ए गाथा आपी छे. त्यार वाद जिनभद्रगणि ६० अने उमास्वाति ७५. ए प्रमाणे क्रम छे.

अहीं विचारणीय छे के जिनभद्रगणि हरिभद्र सूरिनी पूर्वे थयेला छे तो तेमने हरिभद्रसूरिनी पछी केम मूकवामां आव्या छे? माटे आ गाथा युगप्रधान हारिल संवन्धे होय तो वधारे वन्ध बेसतो थाय छे. अने अहीं प्रसंग पण हारिलनो ज छे. हरिभद्र सूरिनो प्रसंग नथी. कारण के बीजा उदयना युगप्रधान यन्त्रमां सत्यमित्र, हारिल अने जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण एओनो क्रमथी निर्देश कर्यो छे. तेथी विद्वान् मुनिश्री कल्याणविजयजीए हरिभद्रसूरिने वदले हारिलनी कल्पना करी छे ते यथार्थ जणाय छे. जो ए वरोवर होय तो युग-

---

१ सो सिद्धन्त(म्मि) गुरू पमाणनाएण जस्स हरिभद्दो । बहुगन्थसत्थवित्थरपयड(डियसमत्तसुय)सच्चत्थो ॥ "

वहु ग्रन्थ अने शास्त्रना विस्तार वडे जेमणे समस्त श्रुतनो सत्यार्थ प्रकट कर्यो छे एवा ते हरिभद्राचार्य सिद्धान्तमां अने प्रमाण तथा न्यायमां जेना गुरु छे.

प्रधान हारिलनो ५८५ मां स्वर्गवास कर्यो छे ए गाथोक्त काळनी साथे बरोबर घटी जाय छे अने ए रीते गाथानी संगति थाय छे.

तत्त्वार्थनी टीकाना करनारा गन्धहस्ती सिद्धसेन गणि शिलांकाचार्यनी पहेला थयेला छे, कारण के तेमणे आचारांगनी टीकामां गन्धहस्तीना नामनो निर्देश कर्यो छे. शिलांकाचार्यनो समय नवमी शताब्दी छे एटले तेमना पहेलां गन्धहस्ती आठमी शताब्दीमां होवा जोइए. अने तेमना पहेला हरिभद्राचार्य थयेला छे. कारण के तत्त्वार्थभाष्य उपरनी हरिभद्रसूरिए आरंभेली अने यशोभद्रसूरिए पूरी करेली टीकाना छेवटना भागमां यशोभद्रसूरिए आवा भावार्थनो उल्लेख कर्यो छे के "आ टीका हरिभद्राचार्ये प्रारंभ करेली. पण अपूर्ण रही गइ, त्यार पछी गन्धहस्तीए नवी टीका करी अने में आ अधुरी टीका पूर्ण करी." आ उपरथी जणाय छे के हरिभद्र सूरि गन्धहस्तीनी पूर्वे थयेला छे. एटले तेमनो सत्ता समय आठमी विक्रमनी शताब्दी पछी तो नथी ए निश्चित छे.

हरिभद्राचार्यकृत धूर्ताख्यानमां छेवटनी गाथानो पूर्वार्ध आ प्रमाणे छे. "चित्तकूडदुग्गसंठिएहिं सामन्तरायरन्नेहिं" एटले चितोडमां रहेला सामन्तराजना समयमां तेनो रचनाकाळ छे पण सामन्तराजनो समय कयो छे ए जाणवामां नथी. एटले ते उपरथी निर्णय थतो नथी.

प्रज्ञापना सूत्र उपर त्यारपछीना बीजा टीकाकार आचार्य मलयगिरि छे. कारण के तेओए घणा स्थळे पोतानी टीकामां हरिभद्राचार्यकृत टीकाना पाठो उद्धृत कर्या छे. तेओनी सत्तानो समय निश्चित छे, तेओ हेमचन्द्राचार्य अने कुमारपालना समकालीन हता. तेमणे आगमोनी टीका, तथा कर्मप्रकृति टीका पंचसंग्रह टीका वगेरे घणा ग्रन्थो उपर टीका रची छे. तेमनी टीकानुं सरलता अने स्पष्टता लक्षण छे. तेमणे घणा ग्रन्थोनी रचना करी छे. तेमनी गुरुपरंपरा सम्बन्धे तेमणे पोताना ग्रन्थोमां प्रशस्ति तरीके तेमज पछीना प्रबन्धकारोए कंइपण लख्युं नथी. मात्र तेमनी विद्वत्ताना संबन्धे तेमना ग्रन्थो ज साक्षीभूत छे. मलयगिरिजीए जेटलुं कर्मविषयक साहित्य लख्युं छे तेटलुं कोइए पण लख्युं नथी. तेओए सिद्धान्तनी टीका वगेरे अनेक ग्रन्थोनी रचना करी छे. तेमनो विहार प्रायः गुजरातमां विशेषतः छे. जिनमंडनगणिना कुमारपालप्रबन्धमां हेमचन्द्रसूरि साथे विहार अने श्रीसिद्धचक्रना अधिष्ठायक विमलेश्वर देव पासेथी सिद्धान्तोनी वृत्ति करवा माटे वरदाननी प्राप्ति वर्णवी छे. तेमणे पोताना शब्दानुशासनमां 'अरुणत् कुमारपालोऽरातीन्' ए उदाहरण आपेलुं छे. अहीं प्रयोक्ताने शक्य दर्शन होवाथी अद्यतनी विभक्तिनो प्रयोग करेलो छे, तेथी तेओ कुमारपाळना राज्यकाळमां

हता अने तेनो राज्यकाळ बारमी शताब्दीनो प्रान्त भाग छे.

प्रज्ञापना सूत्रनो विषय.

आगमोमां चार प्रकारना अनुयोगनुं प्रतिपादन करेलुं छे-१ द्रव्यानुयोग, २ गणितानुयोग, ३ चरणकरणानुयोग अने ४ धर्मकथानुयोग. द्रव्यानुयोगमां जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश, काळ द्रव्य अने तेना स्वभावनुं वर्णन आवे छे. गणितानुयोगमां मनुष्य, तिर्यंच, देव, नारक वगेरेनी गणना वगेरे होय छे. चरणकरणानुयोगमां चारित्रने लगती बाबतनुं वर्णन होय छे अने धर्मकथानुयोगमां कथा द्वारा धर्मनो उपदेश आपवानो होय छे. प्रस्तुत प्रज्ञापना सूत्रमां द्रव्यानुयोगनो मुख्य विषय छे अने ते सिवाय क्वचित् क्वचिद् चरणकरणानुयोग अने गणितानुयोगनो पण विषय छे. आ सूत्रमां ३६ पदो-प्रकरणो छे

प्रथम प्रज्ञापना पदमां अजीवप्रज्ञापना अने जीवप्रज्ञापना बे विभाग आवेला छे. अजीवप्रज्ञापनामां धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय काळ अने पुद्गलास्तिकायना भेदोनुं वर्णन छे. जीवप्रज्ञापनामां जीवना भेदोनुं सविस्तर वर्णन छे. मनुष्योना भेदोना प्रसंगे आर्य अने म्लेच्छोना भेद अने आर्योना जातिआर्य वगेरे भेदोनुं वर्णन करवामां आव्युं छे. २ जा स्थानपदमां पृथिवीकायिकथी आरंभी सिद्धना जीवोना स्थाननुं निरूपण करवामां आव्युं छे. ३ जा अल्पबहुत्व पदमां दिशाथी आरंभी पुद्गलद्वार पर्यन्त २६ द्वारने आश्रयी अल्पबहुत्व कहेवामां आव्युं छे, तेमज २७ मा महादंडक द्वारमां सर्वे जीवोनुं सविस्तरपणे अल्पबहुत्व कह्युं छे. ४था स्थितिपदमां नैरयिकादि चोवीश दंडकने आश्रयी स्थिति-आयुषनी मर्यादा बतावी छे. ५ मां विशेष-पर्याय पदमां जीव अने अजीवना पर्यायोनुं निरूपण छे. ६ ठ्ठा व्युत्क्रान्ति पदमां जीवोनो उपपात, उपपातविरह, उद्वर्तना, उद्वर्तनाविरह, सान्तर अने निरन्तर उपपात, अने उद्वर्तना, सिद्धि, एक समयनो उपपात, क्यांथी आवीने उपजे अने मरीने क्यां जाय ? परभवना आयुषनो बन्ध, आयुषनो बन्ध केटला आकर्ष वडे थाय इत्यादि हकीकत छे. ७ मा उच्छ्वास पदमां नैरयिकादि चोवीश दंडकना जीवोने आश्रयी उच्छ्वासना काळनुं प्रमाण बतावेलुं छे. ८ मा संज्ञापदमां संज्ञानुं प्रतिपादन, संज्ञानो उपयोग अने तेना अल्पबहुत्वनुं निरूपण छे. ९ मा योनिपदमां योनि-उत्पत्तिस्थानना प्रकार, कया जीवोने कइ योनि होय छे तथा तेओना अल्पबहुत्वनुं प्रतिपादन छे. १० मा चर-

मा चरम पदमां रत्नप्रभादि पृथिवी तथा परमाणु वगेरेने आश्रयी आपेक्षिक चरमपणुं अने अचरमपणुं बताव्युं छे. तथा संस्थानना परिमंडलादि प्रकार, तेओना प्रदेशो अने ते सम्बन्धे चरमपणा अने अचरमपणानुं निरूपण छे. ११ मा भाषापदमां भाषाना प्रकारो, अने भाषापणे केवा प्रकारना द्रव्यो ग्रहण करे छे, भाषा द्रव्योनो पांच प्रकारनो भेद, वचनना सोळ प्रकार, भाषा बोलनारना आराधक अने विराधकपणा संबन्धे विचार इत्यादि भाषा संबन्धी सूक्ष्म विचार करेलो छे. १२ मा शरीरपदमां शरीरना भेदो अने बद्ध अने मुक्त-छोडी दीधेला शरीरनो विचार करवामां आव्यो छे. १३ मा परिणाम पदमां जीवना गतिपरिणाम वगेरे दस प्रकारना परिणाम अने अजीवना दस प्रकारना परिणामनुं निरूपण छे. १४ मा कषाय पदमां कषायना प्रकार, कषायोनी उत्पत्तिना स्थानो अने आठ कर्मना चय अने उपचयना स्थानोनुं निरूपण छे. १५ मा इन्द्रियपदमां इन्द्रियोना प्रकार, संस्थान, अवगाहना, जाडाइ, प्रदेशो अने इन्द्रियना विषयनुं परिमाण, आरीसामां पडता प्रतिबिम्ब संबन्धे विचार, इन्द्रियोना उपयोगनो काळ, अवग्रहादि भेदो तथा अतीत, अनागत अने भविष्य काळने आश्रयी द्रव्येन्द्रियो तथा भावेन्द्रियोनो विचार करवामां आव्यो छे. १६ मा प्रयोगपदमां योगना पंदर भेद, गतिप्रपातना भेदो तथा विहायोगतिना सत्तर प्रकारनुं निरूपण छे. १७ मा लेश्यापदमां छ प लेश्यानुं स्वरूप, जीवोना समान आहार, शरीर, उच्छ्वास, कर्म, वर्ण, लेश्या, वेदना अने क्रियाने आश्रयी विचार, लेश्यावाळा जीवोनुं अल्पबहुत्व, लेश्याओनो परिणाम, तेना वर्णादि वगेरे अनेक बाबतनुं प्रतिपादन छे. १८ मा कायस्थिति पदमां जीवोनी कायस्थिति-ते ते पर्याय रूपे स्थितिनुं निरूपण छे. १९ मा सम्यक्त्वपदमां सम्यग्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि अने सम्यग्मिथ्यादृष्टिनुं नैरयिकादि चोवीश दंडकने आश्रयी निरूपण छे. २० मा अन्तक्रिया पदमां नैरयिकादि चोवीश दंडकना जीवो अनन्तरागत-तुरत नीकळीने के परंपराए अन्तक्रिया-सर्व कर्मनो क्षय करे ए संबन्धे विचार तथा केवलिए कहेला धर्मना श्रवणादि संबन्धे तथा असंयत भव्य द्रव्य देवो वगेरेना उपपात संबन्धे निरूपण छे. २१ मा अवगाहनासंस्थान पदमां शरीरना प्रकार, संस्थान-आकार, शरीरनुं प्रमाण, शरीरना पुद्गलोनो चय, शरीरोनो परस्पर संबन्ध अने अल्पबहुत्वनुं निरूपण करवामां आव्युं छे. २२ मा क्रिया पदमां कायिकी वगेरे क्रियाओनुं वर्णन छे. २३ मा कर्मप्रकृति पदमां कर्मप्रकृतिओनो भेद, कर्मप्रकृतिओ केवी रीते बांधे छे, केटला स्थाने बांधे छे, केटला प्रकारे वेदे छे अने तेनो विपाक, स्थिति, कया

जीवो केटलो बंध करे, जघन्य स्थितिवन्ध अने उत्कृष्ट स्थितिबंधना स्वामी वगेरे बाबतनुं प्रतिपादन करेलुं छे. २४ मा कर्मबन्ध पदमां ज्ञानावरणीयादि कर्म बांधतो केटली प्रकृतिओनो बंध करे ए संबन्धे विवेचन छे. २५ मा कर्मवेद पदमां ज्ञानावरणीयादि कर्म बांधतो केटली कर्मप्रकृतिओ वेदे ए संबन्धे कथन छे. २६ मा कर्मवेदबन्ध पदमां ज्ञानावरणीय वगेरे कर्म बांधतो केटली कर्मप्रकृतिओ वेदे ए संबन्धे प्रतिपादन छे. २७ मा कर्मवेदवेद पदमां ज्ञानावरणीय वगेरे कर्म वेदतो बीजी केटली कर्म प्रकृतिओ वेदे ए संबन्धे निरूपण छे. अठ्यावीशमा आहार पदमां आहारना प्रकार, कया जीवोने केवा प्रकारनो आहार होय, कया जीवोने केटला काळे आहारनी इच्छा थाय ? आभोगपूर्वक अने अनाभोगपूर्वक आहार, आहारने योग्य द्रव्यो, आहारनो परिणाम तथा आहारक भव्य वगेरे तेर द्वारोने आश्रयी आहारकपणा अने अनाहारकपणानो विचार करवामां आव्यो छे. २९ मा उपयोग पदमां साकार उपयोग अने अनाकार उपयोगनुं निरूपण करवामां आव्युं छे. ३० मा पासणया-पश्यत्ता पदमां उपयोगनी पेठेज निरूपण छे. परन्तु उपयोग अने पश्यत्तामां भेद एटलोज छे के स्पष्ट उपयोगने पश्यत्ता कहे छे. एटले उपयोगना बार प्रकार छे अने पश्यत्ताना नव प्रकार छे. मतिज्ञान, मति-अज्ञान, अने अचक्षुदर्शननो उपयोग अस्पष्टरूप होवाथी तेनी पश्यत्तामां गणना थती नथी. तथा केवलज्ञानीना ज्ञानोपयोग अने दर्शन उपयोग एक काळे केम न होय ते संबन्धे प्रतिपादन करवामां आव्युं छे. ३१ मा संज्ञी पदमां दीर्घकालिकी संज्ञानी अपेक्षाए संज्ञा वाळा कया जीवो होय ए संबन्धे निरूपण कर्युं छे बावीशमां संयम पदमां संयत, असंयत, संयतासंयत वगेरे जीवोनुं निरूपण छे. ३३ मा अवधिपदमां अवधिज्ञानना भेद, विषय, संस्थान, अभ्यन्तरावधि, बाह्यावधि, देशावधि, हीयमान, वर्धमान, प्रतिपाती, अप्रतिपाती, अवस्थित अने अनवस्थित भेदोनुं प्रतिपादन करवामां आव्युं छे. ३४ मा प्रवीचार पदमां मुख्यपणे देवोना काय, स्पर्श, रूप, शब्द अने मन संबन्धी प्रवीचार-विषयोपभोगनुं निरूपण छे. ३५ मा वेदना पदमां वेदनाना प्रकार अने कोने कया प्रकारनी वेदना होय ए संबन्धे निरूपण छे. ३६ मा समुद्घात पदमां समुद्घातना प्रकार, समुद्घातनुं काळप्रमाण, कया जीवोने केटली समुद्घातो होय तथा चोवीश दंडकने अतीत अनागत अने वर्तमान काळने आश्रयी समुद्घातनुं निरूपण, वेदनादि समुद्घात वडे बहार काढेला पुद्गलोनुं क्षेत्र, ते बहार काढेला पुद्गलोने आश्रयी क्रिया, केवली समुद्घातवाळा केवलज्ञानीना चरमसमयना निर्जरा पुद्गलोनुं सूक्ष्म-

पणुं अने तेओने सर्व लोकने स्पर्शीने रहेवुं, ते निर्जरापुद्गलो वर्णादि वडे छद्मस्थना ज्ञाननो अविषय, केवलिसमुद्घात करवानुं कारण आयोजीकरण, केवलिसमुद्घातना प्रकार, समुद्घातसमये मन, वचन अने काययोगनो व्यापार, मनोयोग वगेरे रोध करवानो प्रकार अने सिद्धोनुं स्वरूप बताववामां आव्युं छे.

आ प्रस्तावनामां श्रीमान् मुनि श्रीकल्याण विजयजीनो महावीरनी काळगणना, मुनिश्री जिनविजयजी संपादित हरिभद्रसूरिका समय निर्णय अने पंडित हरगोविंददास संपादित प्राकृत शब्दमहार्णवनी प्रस्तावनानो उपयोग कर्यो छे माटे ए महाशयोनी अहीं कृतज्ञता पूर्वक नोंध लउं छुं.

आ पुस्तकना संशोधनमां तेना प्रुफ सुधारवामां तथा बीजी उपयोगी सूचना करवामां मारा मित्र भाइ हीरालाल देवचंद शाहे घणीज सहाय करी छे तेथी तेओनो तथा आ ग्रन्थना प्रकाशनमां जेओनी परोक्ष तथा प्रत्यक्ष सहाय मळी होय ते बधानो अहीं आभार मानुं छुं.

आ पुस्तकने छपाववामां अज्ञानथी भ्रान्तिथी प्रमादथी के उतावळथी जे कांइ भूलो थइ होय तथा सूत्र विरुद्ध लखाण थयुं होय ते माटे मिथ्या दुष्कृत आपुं छुं अने विद्वानोने प्रार्थुं छे के तेओ शुद्धकरावे मारी त्रुटिओ जणावी मारा उपर अनुग्रह करशे.

आ पुस्तकनुं शुद्धिपत्रक तैयार करी छापवानुं हतुं परन्तु ग्राहकोनी घणी उतावळ होवाथी मात्र प्रथम भागनुं ज शुद्धिपत्रक आ साथे आपवामां आव्युं छे. द्वितीय भाग अने तृतीय भागनुं शुद्धिपत्रक तैयार थये खबर आपवामां आवशे एटले ग्राहकोए मंगावी लेवा कृपा करवी.

संवत् १९९१ भाद्रपद
कृष्ण द्वितीया
शारदा भवन
जैन सोसाइटी १५
अमदावाद.

भगवानदास हरखचंद दोशी.

प्रज्ञापनासूत्र तृतीय भाग—अनुक्रमणिका.

२२ क्रिया पद १३०१–१३५०

२३ कर्मप्रकृति पद-प्रथम उद्देशक १३५१-१३८०

२३ कर्मप्रकृति पद-द्वितीय उद्देशक १३८१-१४५०

२४ कर्मबन्ध पद १४५१-१४५९

२८ आहारपद-द्वितीय उद्देशक १५०८-१५३९.

२९ उपयोग पद १५४०-५०

३० पश्यत्ता पद १५५१-६२

३१ संज्ञी पद १५६३-६६

३२ संयत पद १५६७-७०

३३ अवधि पद.

३४ परिचारणा पद १५८९-१६१४

३५ वेदना पद १६१५-१८

३६ समुद्घात पद १६२९-१५७०

इगवीसइमं सरीरपयं ।

विहिसंठाणपमाणे पोग्गलचिणणा सरीरसंजोगो । दव्वपएसऽप्पबहुं सरीरोगाहणऽप्पबहुं ॥

एकवीशमुं शरीर पद.

१ विधि-शरीरना भेद, २ संस्थान-शरीरनो आकार, ३ शरीरनुं प्रमाण, ४ शरीरना पुद्गलोनो चय, ५ शरीरोनो परस्पर संबन्ध, ६ शरीरोनुं द्रव्य, प्रदेशो अने द्रव्य-प्रदेशो वडे अल्पबहुत्व अने, शरीरनी अवगाहनानुं अल्पबहुत्व ए अधिकारो कहेवाना छे.

१. वीशमा पदनी व्याख्या करी, हवे एकवीशमा पदनो प्रारंभ कराय छे. तेनो आ प्रमाणे संबंध छे—अहीं पूर्वना पदमां गतिना परिणाम विशेष अन्तक्रियारूप परिणाम कह्यो, अहीं पण नरकादि गतिमां उत्पन्न थयेला जीवोना गतिना परिणाम विशेष रूप ज शरीरना संस्थानादिनुं प्रतिपादन कराय छे. अहीं आ अधिकारगाथा छे-'विहिसंठाणपमाणे' इत्यादि. प्रथम अधिकारमां विधि-शरीरना भेदो कहेवाना छे. त्यार पछी संस्थानो, पछी शरीरोनुं प्रमाण, त्यार बाद केटली दिशाओथी शरीरोना पुद्गलोनो उपचय थाय छे-ए प्रमाणे पुद्गलोनो चय कहेवानो छे. पछी कया शरीरना सद्भावमां कयुं शरीर अवश्य होय ए प्रमाणे शरीरोनो परस्पर संबंध कहेवानो छे. त्यार पछी द्रव्यो, प्रदेशो अने द्रव्यप्रदेशो वडे अल्पबहुत्व कहेवानुं छे, तात्पर्य ए छे के द्रव्यार्थरूपे प्रदेशार्थरूपे अने द्रव्यार्थ-प्रदेशार्थरूपे पांचे शरीरोनुं अल्पबहुत्व कहेवानुं छे, त्यार पछी पांचे शरीरोनुं अवगाहना संबंधे अल्पबहुत्व कहेवानुं छे. ए अधिकार गाथानो संक्षेपथी अर्थ कह्यो.

तेमां 'उद्देशना क्रम प्रमाणे निर्देश होय छे' ए न्यायथी प्रथम विधिद्वार कहेवानी इच्छावाळा सूत्रकार प्रारंभमां शरीरना मूल भेदो जणावे छे—'कइ णं भंते' ! इत्यादि. हे भगवन्! केटलां शरीरो छे? 'शीर्यन्ते'-प्रतिक्षण विनश्वर भावने धारण करे ते शरीरो.

भगवान् उत्तर आपे छे—'हे गौतम! में तथा अन्य तीर्थंकरोए पांच शरीरो कह्यां छे. तेने नाममात्रथी जणावे छे—'ओरालिए' इत्यादि.
उदार-प्रधान, एनुं प्रधानपणुं तीर्थंकर अने गणधरना शरीरनी अपेक्षाए समजवुं. कारण के तेथी अन्य अनुत्तर देवोनुं शरीर पण
अनन्तगुणहीन छे. अथवा उदार-कंइक अधिक हजार योजन प्रमाण होवाथी बीजा शरीरनी अपेक्षाए मोटुं; तेनुं मोटापणुं भव-
धारणीय स्वाभाविक वैक्रिय शरीरनी अपेक्षाए समजवुं, अन्यथा उत्तर वैक्रिय लाख योजन प्रमाण पण होय छे. उदारमेव औदारिकं
उदार एज औदारिक. अहीं स्वार्थमां विनयादिमां पाठ होवाथी 'इकण्' प्रत्यय थयो छे. जेमके विनय उपरथी वैनयिक. विविधा विशिष्टा
वा क्रिया विक्रिया, तस्यां भवं वैक्रियम्—विविध प्रकारनी अथवा विशिष्ट क्रिया ते विक्रिया, ते निमित्ते थयेलुं ते वैक्रिय, ते आ
प्रमाणे-ते वैक्रियशरीर एक थइने अनेक रूपे थाय छे, अने अनेक थइने एक थाय छे, सूक्ष्म थइने मोटुं थाय छे अने मोटुं थइने
सूक्ष्म थाय छे. खेचर थइने-आकाशमां चालीने भूमि उपर चाले छे, भूमी उपर चालीने आकाशमां चाले छे. दृश्य थइने अदृश्य
थाय छे, अने अदृश्य थइने दृश्य थाय छे"—इत्यादि. ते वैक्रिय शरीर बे प्रकारनुं छे—औपपातिक अने लब्धिप्रत्यय. तेमां उपपात-
जन्म निमित्ते थयेलुं ते औपपातिक. ते देव अने नारकोने होय छे अने लब्धिनिमित्तक मनुष्य अने तिर्यंचोने होय छे. 'आहारए'
त्ति. आहारक—चउद पूर्वधरोए तीर्थंकरनी ऋद्धिदर्शन वगेरे तथाविध प्रयोजन वडे विशिष्ट लब्धिना वशथी 'आह्रियते'-कराय ते
आहारक. अहीं कर्ममां 'णक' प्रत्यय थयो छे. जेमके पादाभ्यां ह्रियते इति पादहारकः-पग वडे हरण कराय ते पादहारक. ए संबन्धे
कह्युं छे के—

"कज्जंमि समुपन्ने सुयकेवलिणा विसिट्ठलद्धिए। जं एत्थ आहरिज्जइ भणंति आहारगं तं तु"॥

कार्य उत्पन्न थवाथी श्रुतकेवलीए विशिष्ट लब्धि वडे कराय तेने आहारक कहे छे. अने तेओने आ काय होय छे—

पाणिदयरिद्धिदंसणसुहमपयत्थावगहणहेउं वा। संसयवोच्छेयत्थं गमणं जिणपायमूलंमि॥

प्राणीदया, ऋद्धिदर्शन अने सूक्ष्म पदार्थने समजवा माटे तथा संशय दूर करवा माटे जिननी पासे (आहारक शरीर वडे) गमन थाय छे.

ते वैक्रियशरीरनी अपेक्षाए अत्यन्त शुभ अने स्वच्छ स्फटिकशिलानी पेठे शुभ्र पुद्गलना समूहनी रचनारूप छे. 'तेयए' इति. तेजस—तेजस् एटले तेजस् पुद्गलोनो विकार-परिणाम ते तैजस शरीर. अहीं विकार अर्थमां 'अण्' प्रत्यय थयो छे. ते उष्मा-गरमी छे लिंग-चिन्ह जेनुं एवुं तथा खाधेला आहारना परिणमननुं कारण छे. ते तैजस शरीरथी जेने विशिष्ट तपथी लब्धि विशेष उत्पन्न थयेली छे एवा पुरुषने तेजोलेश्या नीकळे छे. ए संबन्धे कह्युं छे के—

सव्वस्स उम्हसिद्धं रसाइआहारपाकजणगं च। तेयगलद्धिनिमित्तं च तेयगं होइ नायव्वं ॥

सर्वने उष्मा-गरमीथी सिद्ध-निश्चित, रसादि आहारना पाक-परिणामने उत्पन्न करनार अने तैजस लब्धिनुं कारण तैजस शरीर छे. 'कम्मए' इति—कर्मज-कर्मथी उत्पन्न थयेलुं कर्मज अथवा कार्मण शरीर कहेवाय छे. तात्पर्य ए छे के कर्मपरमाणुओ ज आत्मप्रदेशनी साथे क्षीरनीरनी पेठे परस्पर मळेला अने शरीररूपे परिणत थयेला छे ते कर्मज शरीर कहेवाय छे. आज कारणथी तेने बीजे स्थळे 'कार्मण' शरीर कह्युं छे. कर्मनो विकार-परिणाम ते कार्मण. ए संबन्धे कह्युं छे के—

कम्मविगारो कम्मणमट्ठविहविचित्तकम्मनिप्पन्नं। सव्वेसिं सरीराणं कारणभूयं मुणेयव्वं ॥

कर्मनो विकार ए कार्मण, ते आठ प्रकारना विचित्र कर्मथी थयेलुं छे. अने तेने बधा शरीरनुं कारणभूत जाणवुं."—बधा औदारिकादि शरीरोनुं कारणभूत-बीजरूप कार्मण शरीर छे. कारण के भव प्रपंचरूप अंकुरना बीजभूत कार्मण शरीरनो मूळथी नाश थयो होय तो बाकीना शरीरनी उत्पत्ति थती नथी. आ कार्मण शरीर प्राणीने एक गतिथी बीजी गतिमां जवाने अत्यंत साधक कारणरूप छे. ते आ प्रमाणे-तैजस सहित कार्मण शरीर युक्त जीव मरण स्थानने त्याग करी उपजवाना स्थाने जाय छे. (प्र०)—जो तैजस युक्त कार्मण शरीर सहित जीव बीजी गतिमां जाय छे तो जतां आवतां केम देखातो नथी? (उ०)—कर्मपुद्गलो अत्यंत सूक्ष्म होवाथी चक्षु आदि इन्द्रियोने अगोचर छे. अन्यतीर्थिकोए पण कह्युं छे—

"अन्तरा भवदेहोऽपि सूक्ष्मत्वान्नोपलभ्यते। निष्क्रामन् प्रविशन् वाऽपि नाभावोऽनीक्षणादपि ॥

१. कति णं भंते ! सरीरया पण्णत्ता ? गोयमा ! पंच सरीरया पन्नत्ता, तंजहा-ओरालिए १, वेउव्विए २, आहारए ३, तेयए ४, कम्मए ५. ओरालियसरीरे णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचविधे पन्नत्ते, तंजहा-एगिंदियओरालियसरीरे, जाव पंचिंदियओरालियसरीरे । एगिंदियओरालियसरीरे ण भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पन्नत्ते, तंजहा—पुढविकाइयएगिंदियओरालियसरीरे, जाव वणप्फइकाइयएगिंदियओरालिय-

१. हे भगवन् ! केटलां शरीरो कह्यां छे ? हे गौतम ! पांच शरीरो कह्यां छे. ते आ प्रमाणे-१ औदारिक, २ वैक्रिय, ३ आ-हारक, ४ तैजस, अने ५ कार्मण. हे भगवन् ! औदारिक शरीर केटला प्रकारनुं छे ? हे गौतम ! पांच प्रकारनुं छे. ते आ प्रमाणे-१ एकेन्द्रिय औदारिक शरीर, यावत् ५ पंचेन्द्रिय औदारिक शरीर. हे भगवन् ! एकेन्द्रिय औदारिक शरीर केटला प्रकारनुं छे ? हे गौतम ! पांच प्रकारनुं छे. ते आ प्रमाणे-१ पृथिवीकाय एकेन्द्रिय औदारिकशरीर, यावत् वनस्पतिकाय एकेन्द्रिय औदारिक

वच्चे रहेलो भवदेह (भवनी साथे संबंध राखनार शरीर) पण नीकळता के प्रवेश करता जणातो नथी, पण नहि जोवाथी तेनो अभाव सिद्ध थतो नथी. एटले कोइपण वस्तुनो अनुपलब्धिमात्रथी अभाव सिद्ध थतो नथी, पण योग्यानुपलब्धि अभावनी साधक छे.

१. हवे औदारिक शरीरना जीवनी जातिना भेदथी अने अवस्थाना भेदथी भेदो कहेवानी इच्छावाळा सूत्रकार कहे छे-'ओरालियसरीरे णं भंते' ! इत्यादि. औदारिक शरीर एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउरिन्द्रिय अने पचेन्द्रियना भेदथी पांच प्रकारे छे. एकेन्द्रिय औदा-रिक शरीर पण पृथिवी, अप्, तेजस्, वायु अने वनस्पति रूप एकेन्द्रियना भेदथी पांच प्रकारनुं छे. पृथिवीकायिक एकेन्द्रिय औदा-रिक शरीर पण सूक्ष्म अने बादरना भेदथी बे प्रकारे छे. फरीथी एक एकना पर्याप्त अने अपर्याप्तना भेदथी बे प्रकार थाय छे. ए प्रमाणे अप्, तेजस्, वायु अने वनस्पति एकेन्द्रिय औदारिक शरीर पण एक एक चार प्रकारे थाय छे. एम बधी संख्या मळी एकेन्द्रिय

सरीरे । पुढविकाइयएगिंदियओरालियसरीरे णं भंते ! कतिविहे पन्नत्ते ? गोयमा! दुविहे पन्नत्ते, तंजहा—सुहुमपुढविकाइयएगिंदियओरालियसरीरे, बादरपुढविकाइयएगिंदियओरालियसरीरे य। सुहुमपुढविकाइयएगिंदियओरालियसरीरे णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! दुविहे पन्नत्ते, तंजहा—पज्जत्तगसुहुमपुढविक्काइयएगिंदियओरालियसरीरे य अपज्जत्तगसुहुमपुढविक्काइयएगिंदियओरालियसरीरे य । बादरपुढविकाइयावि एवं चेव, एवं जाव वणस्सइकाइयएगिंदियओरालियसरीरेत्ति। बेइंदियओरालियसरीरे णं भंते! कतिविधे पन्नत्ते? गोयमा ! दुविधे पन्नत्ते, तंजहा—पज्जत्तबेइंदियओरालियसरीरे य अपज्जत्तगबेइंदियओरालियसरीरे य । एवं तेइं-

शरीर. पृथिवीकाय एकेन्द्रिय औदारिक शरीर केटला प्रकारनुं छे ? हे गौतम ! बे प्रकारनुं छे. ते आ प्रमाणे—सूक्ष्मपृथिवीकाय एकेन्द्रिय औदारिक शरीर अने बादर पृथिवीकाय एकेन्द्रिय औदारिक शरीर. सूक्ष्मपृथिवीकाय एकेन्द्रिय औदारिक शरीर केटला प्रकारे छे ? हे गौतम ! बे प्रकारे छे. ते आ प्रमाणे—पर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकाय औदारिक शरीर अने अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकाय औदारिकशरीर. बादर पृथिवीकायिक शरीर पण एमज जाणवुं. ए प्रमाणे यावत् वनस्पतिकायिक एकेन्द्रिय औदारिक शरीर समजवुं. हे भगवन् ! बेइन्द्रिय औदारिक शरीर केटला प्रकारनुं छे ? हे गौतम ! बे प्रकारनुं छे. ते आ प्रमाणे—पर्याप्त बेइन्द्रिय औदारिक शरीर अने अपर्याप्त बेइन्द्रिय औदारिक शरीर. ए प्रमाणे तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रिय औदारिक शरीर जाणवुं. हे भगवन् ! पंचेन्द्रिय औदारिक

औदारिक शरीरो वीश प्रकारना छे. बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रिय औदारिक शरीरो प्रत्येक पर्याप्त अने अपर्याप्त भेद होवाथी बे प्रकारना छे. पंचेन्द्रिय औदारिक शरीर तिर्यंच अने मनुष्यना भेदथी बे प्रकारनुं छे. तिर्यंच पंचेन्द्रिय औदारिक शरीर जलचर,

दिया चउरिंदियावि। पचिंदियओरालियसरीरे ण भंते! कतिविधे पन्नत्ते? गोयमा! दुविधे पन्नत्त, तंजहा–तिरिक्खजोणियपचिंदियओरालियसरीरे य मणुस्सपंचिंदियओरालियसरीरे य। तिरिक्खजोणियपंचिंदियओरालियसरीरे णं भंते! कतिविधे पन्नत्ते? गोयमा! तिविधे पन्नत्ते, तंजहा—जलयरतिरिक्खजोणियपंचिंदियओरालियसरीरे य थलयरतिरिक्खजोणियपंचिंदियओरालियसरीरे य खहयरतिरिक्खजोणियपंचिंदियओरालियसरीरे य। जलयरतिरिक्खजोणियपंचिंदियओरालियसरीरे णं भंते! कतिविधे पन्नत्ते? गोयमा! दुविधे प-

---

शरीर केटला प्रकारनुं छे? हे गौतम! बे प्रकारनुं छे. ते आ प्रमाणे–तिर्यंच पंचेन्द्रिय औदारिक शरीर अने मनुष्य पंचेन्द्रिय औदारिक शरीर. तियचं पंचेन्द्रिय औदारिक शरीर केटला प्रकारनुं छे? हे गौतम! त्रण प्रकारनुं छे. ते आ प्रमाणे–जलचर तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय औदारिकशरीर, स्थलचर तिर्यञ्चपंचेन्द्रिय औदारिकशरीर अने खेचर तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय औदारिक शरीर. जलचर तियचं पंचेन्द्रिय औदारिक शरीर केटला प्रकारनुं छे? हे गौतम! बे प्रकारनुं छे. ते आ प्रमाणे–संमूर्छिम जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय औदारिक शरीर अने गर्भज जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय औदारिक शरीर. हे भगवन्! संमूर्छिम जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय औदारिक शरीर

स्थलचर अने खेचरना भेदथी त्रण प्रकारनुं छे. जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय औदारिक शरीर पण संमूर्छिम अने गर्भजना भेदथी बे प्रकारे छे. अने पर्याप्त अने अपर्याप्तना भेदथी एक एकना पण बे प्रकार छे. स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय औदारिक शरीर पण चतुष्पद परिसर्पना भेदथी बे प्रकारे छे. चतुष्पद स्थलचर तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय औदारिक शरीर पण संमूर्छिम अने गर्भजना भेदथी बे प्रकारे छे. पुनः एक एकना पर्याप्त अने अपर्याप्त एवा बे प्रकार छे. परिसर्प स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय औदारिक शरीर पण उरपरिसर्प अने भुजपरिस-

न्नत्ते, तजहा—संमुच्छिमजलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियओरालियसरीरे य गब्भवक्कतियजलयरपंचिंदिय तिरिक्खजोणियओरालियसरीरे य। संमुच्छिमजलयरतिरिक्खजोणियपंचिंदियओरालियसरीर णं भंते! कतिविधे पन्नत्ते? गोयमा! दुविहे पन्नत्ते, तंजहा—पज्जत्तगसंमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणियओरालियसरीरे य अपज्जत्तगसंमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणियओरालियसरीरे य, एवं गब्भवक्कंतिएवि। थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियओरालियसरीरे णं भंते! कतिविधे पन्नत्ते? गोयमा! दुविहे पन्नत्ते, तंजहा-चउप्पयथलयरतिरिक्खजोणियपंचिंदियओरालियसरीरे य परिसप्पथलयरतिरिक्खजोणियपंचेन्दियओरालियसरीरे य। चउप्प-

---

केटला प्रकारनुं छे? हे गौतम! बे प्रकारनुं छे. ते आ प्रमाणे—पर्याप्त संमूर्छिम जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय औदारिक शरीर अने अपर्याप्त जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय औदारिक शरीर. ए प्रमाणे गर्भज जलचर संबंधे जाणवुं. हे भगवन्! स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय औदारिक शरीर केटला प्रकारनुं छे? हे गौतम! बे प्रकारनुं छे. ते आ प्रमाणे—चतुष्पद स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय औदारिक शरीर अने परिसर्प स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय औदारिक शरीर. हे भगवन्! चतुष्पद स्थलचर पंचेन्द्रिय औदारिक शरीर केटला प्रकारनुं छे? हे गौतम! बे प्रकारनुं छे. ते आ प्रमाणे—संमूर्छिम स्थलचर चतुष्पद तिर्यंच पंचेन्द्रिय औदारिक शरीर अने गर्भज स्थलचर चतुष्पद तिर्यंच पंचेन्द्रिय औदारिक शरीर. हे भगवन्! संमूर्छिम स्थलचर चतुष्पद तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय औदारिक शरीर केटला प्रकारनुं छे?

पैना भेदथी बे प्रकारे छे. वळी एक एकना संमूर्छिम अने गर्भज एम बे प्रकार थाय छे. अने तेमां पण पर्याप्त अने अपर्याप्त भेदथी एक एकना बे प्रकार छे. बधा मळीने परिसर्प स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय औदारिक शरीरना आठ भेद थाय छे. खेचर पंचेन्द्रिय औदा-

यथलयरतिरिक्खजोणियपंचिंदियओरालियसरीरे णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! दुविहे पन्नत्ते, तंजहा—समुच्छिमचउप्पयथलयरतिरिक्खजोणियपंचेंदियओरालियसरीरे य गब्भवक्कंतियचउप्पयथलयरतिरिक्खजोणियपंचिंदियओरालियसरीरे य । संमुच्छिमचउप्पयतिरिक्खजोणियपंचिंदियओरालियसरीरे कइविहे पन्नत्ते? गोयमा ! दुविधे पन्नत्ते, तंजहा—पज्जत्तसंमुच्छिमचउप्पयथलयरतिरिक्खजोणियपंचिंदियओरालियसरीरे य अपज्जत्तसंमुच्छिमचउप्पयथलयरतिरिक्खजोणियपंचिंदियओरालियसरीरे य । एवं गब्भवक्कंतिएवि । परिसप्पथलयरतिरिक्खजोणियपंचिंदियओरालियसरीरे णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! दुविहे पन्नत्ते, तंजहा—उरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियओरालियसरीरे य भुयपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियओरालियसरीरे य । उरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियओरालियसरीरे णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ? गोय-

---

हे गौतम ! बे प्रकारनुं छे. ते आ प्रमाणे—पर्याप्त संमूर्छिम चतुष्पद स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय औदारिक शरीर अने अपर्याप्त संमूर्छिम चतुष्पद स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय औदारिक शरीर. एम गर्भज संबंधे पण जाणवुं. हे भगवन् ! परिसर्प स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय औदारिक शरीर केटला प्रकारनुं छे ? हे गौतम ! बे प्रकारनुं छे. ते आ प्रमाणे—उरपरिसर्प स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय औदारिक शरीर अने भुजपरिसर्प स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय औदारिक शरीर. हे भगवन् ! उरपरिसर्प स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय औदारिक शरीर केटला प्रकारे छे ? हे गौतम ! बे प्रकारे छे. ते आ प्रमाणे—संमूर्छिम उरपरिसर्प स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय औदारिक शरीर अने गर्भज उरपरिसर्प स्थलचर

रिक शरीर संमूर्छिम अने गर्भजना भेदथी बे प्रकारनुं छे. पुनः एक एकना पर्याप्त अने अपर्याप्त ए बे प्रकार छे. जलचरना चार,

मा ! दुविहे पन्नत्ते, तंजहा—संमुच्छिमउरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियओरालियसरीरे य गब्भव-
क्कंतियउरपरिसप्पथलयरतिरिक्खजोणियपंचिंदियओरालियसरीरे य। संमुच्छिमे दुविहे पन्नत्ते, तंजहा—अप-
ज्जत्तसंमुच्छिमउरपरिसप्पथलयरतिरिक्खजोणियपंचिंदियओरालियसरीरे य पज्जत्तसंमुच्छिमउरपरिसप्पथलय-
रतिरिक्खजोणियपंचिंदियओरालियसरीरे य, एवं गब्भवक्कंतियउरपरिसप्पे चउक्कतो भेओ । एवं भुयपरिस-
प्पावि संमुच्छिमगब्भवक्कंतिया पज्जत्ता अपज्जत्ता य। खहयरा दुविधा पन्नत्ता, तंजहा—संमुच्छिमा य गब्भव-
क्कंतिया य । संमुच्छिमा दुविधा पन्नत्ता, पज्जत्ता अपज्जत्ता य । गब्भवक्कंतियावि पज्जत्ता अपज्जत्ता य ।
मणूसपंचिंदियओरालियसरीरे णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! दुविहे पन्नत्ते, तंजहा—संमुच्छिममणूस-

संमूर्छिम उरपरिसर्प स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय औदारिक शरीर बे प्रकारनुं छे. ते आ प्रमाणे—अपर्याप्त संमूर्छिम उरपरिसर्प स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय औदारिक शरीर. संमूर्छिम उरपरिसर्प स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय औदारिक शरीर अने पर्याप्त संमूर्छिम उरपरिसर्प स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय औदारिक शरीर. ए प्रमाणे गर्भज उरपरिसर्पना पण चार भेद जाणवा. एम भुजपरिसर्पना पण संमूर्छिम, गर्भज, पर्याप्ता अने अपर्याप्ता भेदो समजवा. खेचर बे प्रकारना छे—जेमके संमूर्छिम अने गर्भज. संमूर्छिम बे प्रकारना कह्या छे, जेमके पर्याप्ता अने अपर्याप्ता. गर्भज पण पर्याप्ता अने अपर्याप्ता ए बे प्रकारना छे. हे भगवन् ! मनुष्य पंचेन्द्रिय औदारिक शरीर केटला प्रकारे छे ? हे गौतम ! बे प्रकारे छे. ते आ प्रमाणे—संमूर्छिम मनुष्य पंचेन्द्रिय औदारिक शरीर अने गर्भज मनुष्य पंचेन्द्रिय औदारिक शरीर. हे भगवन् ! गर्भज मनुष्य पंचेन्द्रिय

चतुष्पद स्थलचरना चार, परिसर्प स्थलचरना आठ अने खेचरना चार एम तिर्यंच पंचेन्द्रिय औदारिक शरीरना वीश भेद थाय छे.

पंचिंदियओरालियसरीरे य गब्भवक्कंतियमणूसपंचिंदियओरालियसरीरे य। गब्भवक्कंतियमणूसपंचिंदियओरालियसरीरे णं भंते! कतिविधे पन्नत्ते? गोयमा! दुविहे पन्नत्ते, तंजहा–पज्जत्तगगब्भवक्कंतियमणूसपंचिंदियओरालियसरीरे य अपज्जत्तगगब्भवक्कंतियमणूसपंचिंदियओरालियसरीरे य।

२. ओरालियसरीरे णं भंते! किंसंठिते पन्नत्ते? गोयमा! णाणासंठाणसंठिते पन्नत्ते। एगिंदियओरालियसरीरे किंसंठिते पन्नत्ते? गोयमा! णाणासंठाणसंठिते पन्नत्ते। पुढविकाइयएगिंदियओरालियसरीरे किंसंठिते पन्नत्ते? गोयमा! मसूरचंदसंठाणसंठिते पन्नत्ते। एवं सुहुमपुढविकाइयाणवि बादराणवि एवं चेव, पज्जत्तापज्ज-

---

औदारिक शरीर केटला प्रकारे छे? हे गौतम! बे प्रकारे छे. ते आ प्रमाणे–पर्याप्त गर्भज मनुष्य पंचेन्द्रिय औदारिक शरीर अने अपर्याप्त गर्भज मनुष्य पंचेन्द्रिय औदारिक शरीर.

२. हे भगवन्! औदारिक शरीर केवा संस्थान आकारवाळुं छे? हे गौतम! अनेक प्रकारना संस्थानवाळुं छे. एकेन्द्रिय औदारिक शरीर केवा संस्थानवाळुं छे? हे गौतम! अनेक प्रकारनां संस्थानवाळुं छे. हे भगवन्! पृथिवीकायिक एकेन्द्रिय औदारिक शरीर

मनुष्य पंचेन्द्रिय औदारिक शरीरना संमूर्छिम अने गर्भज ए बे भेद छे. तेमां गर्भजना पर्याप्त अने अपर्याप्त भेदथी बे प्रकार थाय छे. अने संमूर्छिम मनुष्य अपर्याप्ता ज होय छे.

२. एम औदारिक शरीरना भेदो कह्या, हवे ए शरीरभेदोना अनुक्रमे संस्थानो कहे छे—'ओरालिय सरीरे णं भंते'! इत्यादि. औदारिक शरीर अनेक प्रकारना संस्थानवाळुं छे, कारण के जीवनी जातिना भेदथी संस्थाननो भेद थाय छे. एकेन्द्रिय औदारिक शरीरने

त्ताणवि एवं चेव, आउक्काइयएगिंदियओरालियसरीरे णं भंते ! किंसंठिते पन्नत्ते ? गोयमा ! थिवुकबिंदुसं-
ठाणसंठिते पन्नत्ते । एवं सुहुमबादरपज्जत्तापज्जत्ताणवि । तेउक्काइयएगिंदियओरालियसरीरे णं भंते ! किंसं-
ठिते पन्नत्ते ? गोयमा ! सूईकलावसंठाणसंठिते पन्नत्ते । एवं सुहुमबादरपज्जत्तापज्जत्ताणवि । वाउक्काइयाणवि
पडागासंठाणसंठिते, एवं सुहुमबादरपज्जत्तापज्जत्ताणवि। वणप्फइकाइयाणं णाणासंठाणसंठिते पन्नत्ते, एवं सुहु-
मबादरपज्जत्तापज्जत्ताणवि। बेइंदियओरालियसरीरे णं भंते! किंसंठाणसंठिते पन्नत्ते? गोयमा! हुंडसंठाणसंठिते

केवा संस्थानवाळुं छे ? हे गौतम ! मसूरना चंद्राकार अर्ध भागना जेवा संस्थानवाळुं छे. ए प्रमाणे सूक्ष्म पृथिवीकायिक अने बादर
पृथिवीकायिकनुं संस्थान जाणवुं. एम पर्याप्ता अने अपर्याप्तानुं पण समजवुं. हे भगवन्! अप्कायिक एकेन्द्रिय औदारिक शरीर केवा
संस्थानवाळुं छे ? हे गौतम ! स्तिवुकबिन्दु—परपोटाना जेवा संस्थानवाळुं छे. एम सूक्ष्म, बादर, पर्याप्ता अने अपर्याप्ता संबंधे जाणवुं.
हे भगवन् ! तेजस्कायिक एकेन्द्रिय औदारिक शरीर केवा संस्थानवाळुं छे ? हे गौतम ! सोयना समूहना जेवा संस्थानवाळुं छे. ए
प्रमाणे सूक्ष्म, बादर, पर्याप्ता अने अपर्याप्ता संबंधे जाणवुं. वायुकायिकोनुं शरीर पताकाना जेवा संस्थानवाळुं छे. एम सूक्ष्म, बादर,

विषे अनेक प्रकारना संस्थान होय छे, कारण के पृथिव्यादि प्रत्येकना जुदा जुदा संस्थान छे. तेमां सूक्ष्म, बादर, पर्याप्ता अने अप-
र्याप्ता पृथिवीकायिकना औदारिक शरीरोना संस्थानो मसूरना चंद्रनी-चंद्राकार अर्ध भागनी आकृति जेवां छे. सूक्ष्मादि
भेदथी चार प्रकारना अप्कायिक जीवोना औदारिक शरीरो स्तिवुकबिंदुना—परपोटानी आकृति जेवां छे. स्तिवुकनी आकृति जेवो
बिन्दु, पण पवन वगेरेथी चारे तरफ फेलायेलो नहि, तेनुं जे संस्थान-आकार तेना जेवी आकृतिवाळां छे. सूक्ष्मादि भेदथी चार प्रकार-

पन्नत्ते, एव पज्जत्तापज्जत्ताणवि, एवं तेइंदियचउरिंदियाणवि । पंचिंदियतिरिक्खजोणियओरालियसरीरेणं भंते ! किंसंठाणसंठिते पन्नत्ते ? गोयमा ! छव्विहसंठाणसंठिते पन्नत्ते, तंजहा—समचउरंससंठाणसंठिते, जाव हुंडसंठाणसंठितेवि, एवं पज्जत्तापज्जत्ताणवि ३ । संमुच्छिमतिरिक्खजोणियपंचिंदियओरालियसरीरे णं भंते ! किंसंठाणसंठिते पन्नत्ते ? गोयमा ! हुंडसंठाणसंठिते पन्नत्ते, एवं पज्जत्तापज्जत्ताणवि । गब्भवक्कंतियतिरिक्खजोणियपंचिंदियओरालियसरीरे णं भंते ! किंसंठाणसंठिते पन्नत्ते ? गोयमा ! छव्विहसंठाणसंठिते

पर्याप्ता अने अपर्याप्तानुं शरीर जाणवुं. वनस्पतिकायिकोना शरीर अनेक प्रकारना संस्थानवाळां छे. एम सूक्ष्म, बादर, पर्याप्ता अने अपर्याप्तानुं शरीर जाणवुं. हे भगवन् ! बेइन्द्रिय औदारिक शरीर केवा संस्थानवाळुं छे ? हे गौतम ! ते हुंड संस्थानवाळुं छे. ए प्रमाणे पर्याप्ता अने अपर्याप्तानुं शरीर पण समजवुं. ए प्रमाणे तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रियना शरीरो पण जाणवां.हे भगवन् ! पंचेन्द्रिय तिर्यंच औदारिक शरीर केवा संस्थानवाळुं छे ? हे गौतम ! छ प्रकारना संस्थानवाळुं छे. ते आ प्रमाणे—समचतुरस्रसंस्थानवाळुं यावत् हुंड संस्थानवाळुं. ए प्रमाणे पर्याप्ता अने अपर्याप्तानुं शरीर जाणवुं ३. हे भगवन् ! संमूर्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय औदारिक

वाळा तेजसकायिक जीवोना औदारिक शरीरो सोयना जथ्थानी आकृति जेवां छे. सूक्ष्मादि भेदथी चार भेदवाळा वायुकायिकोना औदारिक शरीरो पताका-ध्वजानी आकृति जेवां छे. सूक्ष्म बादर, पर्याप्ता अने अपर्याप्ता दरेक वनस्पतिकायिकोना औदारिक शरीरो अनेक प्रकारनी आकृतिवाळां छे. कारण के देश, काळ अने जातिना भेदथी तेओना संस्थानो अनेक प्रकारनां छे. पर्याप्ता अने अपर्याप्ता बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रिय प्रत्येकना औदारिक शरीरो हुंडसंस्थानवाळां होय छे. तिर्यंच पंचेन्द्रियना औदारिक

पन्नत्ते, तंजहा—समचउरंस० जाव हुंडसंठाणसंठिते। एवं पज्जत्तापज्जत्ताणवि ३। एवमेते तिरिक्खजोणियाणं ओहियाणं णव आलावगा। जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियओरालियसरीरे णं भंते! किंसंठाणसंठिते पन्नत्ते? गोयमा! छव्विहसंठाणसंठिते पन्नत्ते, तंजहा—समचउरंसे जाव हुंडे, एवं पज्जत्तापज्जत्ताणवि। संमुच्छिमजल-

---

शरीर केवा संस्थानवाळुं छे? हे गौतम! ते हुंड संस्थानवाळुं छे. एम पर्याप्ता अने अपर्याप्तानुं शरीर पण जाणवुं. ३. हे भगवन्! गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय औदारिक शरीर केवा संस्थानवाळुं छे? हे गौतम! ते छ प्रकारना संस्थानवाळुं छे. ते आ प्रमाणे—१ समचतुरस्र संस्थानवाळुं, यावत्—हुंडसंस्थानवाळुं. एम पर्याप्ता अने अपर्याप्ता शरीर संबंधे जाणवुं ३. ए प्रमाणे औधिक—सामान्य तिर्यंचोना नव आलापको थाय छे. हे भगवन्! जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय औदारिक शरीर केवा प्रकारना संस्थानवाळुं छे? हे गौतम!

शरीर सामान्य रीते छ प्रकारना संस्थानवाळां छे. तेज बतावे छे—'समचउरंससंठाणसंठिए' इत्यादि. समचतुरस्र संस्थानवाळुं, यावत् शब्दथी 'नग्गोहपरिमंडलसंठाणसंठिए'—न्यग्रोधपरिमंडलसंस्थानवाळुं, साइसंठाणसंठिए—सादिसंस्थानवाळुं, वामणसंठाणसंठिए, वामनसंस्थानवाळुं, खुज्जसंठाणसंठिए-कुब्जसंस्थानवाळुं, हुंडसंठाणसंठिए-हुंड संस्थानवाळुं होय छे, तेमां सम—सामुद्रिक शास्त्रमां कहेला प्रमाण अने लक्षण युक्त चतुर्—चार अस्रि—चार बाजुना शरीरना अवयवो जेना छे ते समचतुरस्र. अहीं समासान्त 'अ' प्रत्यय थवाथी समचतुरस्र थाय छे. न्यग्रोध—वडनी पेठे परिमंडल—आकार जेनो छे ते न्यग्रोधपरिमंडल. जेम वड उपरना भागमां (शाखा, प्रशाखा, पांदडा वगेरेथी) संपूर्ण प्रमाणवाळो छे अने नीचे थडनो भाग हीन प्रमाणवाळो छे तेम जे संस्थान नाभिनी उपरना भागमां संपूर्ण प्रमाणवाळुं होय अने नीचे तेवा प्रकारनुं न होय ते न्यग्रोधपरिमंडल, आदि सहित ते आदि—उत्सेध नामे नाभिनी नीचेना शरीरनो भाग, एटले जेमां नाभिनी नीचेनो भाग शास्त्रोक्त प्रमाण अने लक्षणयुक्त होय ते सादि

यरा हुंडसंठाणसंठिता, एतेसिं चेव पज्जत्ता. अपज्जत्तगावि एवं चेव। गब्भवक्कंतियजलयरा छव्विहसंठाणसंठिता, एवं पज्जत्तापज्जत्ताणवि। एवं थलयराणवि णव सुत्ताणि, एवं चउप्पयथलयराणवि उरपरिसप्पथलयराणवि भुयपरिसप्पथलयराणवि। एवं खहयराणवि णव सुत्ताणि, नवरं सव्वत्थ संमुच्छिमा हुंडसंठाणसंठिता

छ प्रकारना संस्थानवाळुं छे. ते आ प्रमाणे–समचतुरस्र संस्थानवाळुं यावत् हुंडसंस्थानवाळुं. ए प्रमाणे पर्याप्ता अने अपर्याप्तानुं शरीर जाणवुं ३. संमूर्छिम जलचरो हुंडसंस्थानवाळा छे ४. एओना पर्याप्ता अने अपर्याप्ता एमज समजवा ६. गर्भज जलचरो छ प्रकारना संस्थानवाळा छे. ए प्रमाणे पर्याप्ता अने अपर्याप्ताने पण जाणवुं ९. एम स्थलचरोना पण नव सूत्रो जाणवा. चतुष्पद स्थलचरोना, उरपरिसर्प स्थलचरोना अने भुजपरिसर्प स्थलचरोना पण नव नव सूत्रो जाणवा. ए रीते खेचरोना पण नव सूत्रो जाणवां. परन्तु बधे

संस्थान. यद्यपि सर्व शरीरो आदि—नाभिनी नीचेना भाग–सहितज होय छे तेथी सादि विशेषण बीजी रीते सार्थक थतुं नहिं होवाथी विशिष्ट प्रमाण अने लक्षण सहित आदि भाग ग्रहण करवो. माटे यथोक्त प्रमाण अने लक्षणवाळा आदि भाग सहित एम कह्युं छे. तात्पर्य ए छे के जे संस्थान नाभिनी नीचेना भागमां प्रमाण अने लक्षणयुक्त होय अने उपरना भागमां प्रमाण अने लक्षणहीन होय ते सादि. बीजा आचार्यो सादिने बदले 'साची' एवो पाठ कहे छे. तेमां प्रवचनने जाणनार साची–शाल्मली—शेमळाना झाडने कहे छे. जेम शेमळाना झाडना स्कन्ध–थड अने कांड पुष्ट होय छे अने उपर तेने योग्य विशालता होती नथी, तेम आ संस्थाननो पण नीचेनो भाग परिपूर्ण होय छे अने उपरनो भाग तेवो होतो नथी. ज्यां मस्तक, ग्रीवा, हाथ अने पग वगेरे शास्त्रोक्त प्रमाण अने लक्षण हीन होय अने छाती, पेट वगेरे प्रमाण अने लक्षणहीन अप्रशस्त होय ते कुब्ज संस्थान. ज्यां छाती, उदर वगेरे प्रमाण अने लक्षणयुक्त होय, अने मस्तक ग्रीवा, हाथ अने पग वगेरे हीन होय ते वामन संस्थान. ज्यां बधा अवयवो प्रमाण अने लक्षण रहित होय ते

भाणितव्वा, इयरे छसुवि । मणूसपंचिंदियओरालियसरीरे णं भंते ! किंसंठाणसंठिते पन्नत्ते ? गोयमा ! छव्विहसंठाणसंठिते पन्नत्ते, तंजहा–समचउरंसे जाव हुंडे, पज्जत्तापज्जत्ताणवि एवं चेव, गब्भवक्कंतियाणवि एवं चेव, पज्जत्तापज्जत्ताणवि एवं चेव । संमुच्छिमाणं पुच्छा । गोयमा ! हुंडसंठाणसंठिता पण्णत्ता ।

संमूर्छिमो हुंडसंस्थानवाळा कहेवा. अने बीजा गर्भज छ ए संस्थानोमां होय छे. एटले तेओने छ संस्थानो होय छे. मनुष्य पंचेन्द्रिय औदारिक शरीर केवा प्रकारना संस्थानवाळुं होय छे ? हे गौतम ! छ प्रकारना संस्थानवाळुं होय छे. ते आ प्रमाणे–समचतुरस्र संस्थानवाळुं यावत् हुंडसंस्थानवाळुं. पर्याप्ता अने अपर्याप्ताना शरीर पण एमज जाणवां. गर्भजना तथा गर्भज पर्याप्ता अने अपर्याप्ताना एमज समजवां. संमूर्छिम मनुष्यो संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! तेओ हुंडसंस्थानवाळा होय छे.

हुंड संस्थान. 'एवं पज्जत्तापज्जत्ताण वि'—ए प्रमाणे सामान्य पंचेन्द्रिय तिर्यंचोनी पेठे पर्याप्ता अने अपर्याप्ता प्रत्येकने सूत्र कहेवुं. ए प्रमाणे त्रण सूत्रो थयां. ए रीते संमूर्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रियोना पण त्रण सूत्रो कहेवां. परन्तु तेओना त्रणे सूत्रोमां औदारिक शरीर हुंडसंस्थानवाळुं कहेवुं. कारण के बधा समूर्छिमोने पण विशेषता सिवाय एक हुंड संस्थान होय छे. त्रणे सूत्रो सामान्य रीते गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रियोने पण होय छे. परन्तु ते त्रणे सूत्रोमां 'छव्विहसंठाणसंठिए पण्णत्ते'–छ प्रकारना संस्थानवाळा होय छे. इत्यादि कहेवुं. कारण के गर्भजोमां समचतुरस्रादि छ ए संस्थानोनो संभव छे. ए प्रमाणे सामान्य तिर्यंच पंचेन्द्रिय संबन्धे नव आलापक कह्या. आज क्रमथी जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रियो, सामान्य स्थलचर, चतुष्पद स्थलचर, उपरिसर्प स्थलचर, भुजपरिसर्प स्थलचर, अने खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रियो प्रत्येकने नव नव सूत्रो कहेवां. बधा मळीने तिर्यंच पंचेन्द्रियोना त्रेसठ सूत्रो अने मनुष्योने नव सूत्र तथा बधे संमूर्छिमोमां हुंड संस्थान कहेवुं अने गर्भजने छए संस्थानो कहेवां.

३. ओरालियसरीरस्स णं भंते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पन्नत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखे-
ज्जतिभागं, उक्कोसेणं सातिरेगं जोयणसहस्सं । एगिंदियओरालियस्सवि एवं चेव जहा ओहियस्स । पुढविका-
इयएगिंदियओरालियसरीरस्स णं भंते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि
अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, एवं अपज्जत्तयाणवि पज्जत्तयाणवि । एवं सुहुमाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं, बादराणं पज्ज-
त्तापज्जत्ताणवि । एवं एसो नवओ भेदो जहा पुढविक्काइयाणं तहा आउक्काइयाणवि तेउक्काइयाणवि वाउ-

३. हे भगवन् ! औदारिक शरीरनी केटली मोटी शरीरावगाहना कही छे ? हे गौतम ! जघन्यथी अंगुलनो असंख्यातमो भाग
अने उत्कृष्ट कांइक अधिक एक हजार योजन प्रमाण कही छे. एकेन्द्रिय औदारिक शरीरनी अवगाहना पण जेम औधिक–सामान्य
औदारिक शरीरनी अवगाहना कही छे तेम जाणवी. हे भगवन् ! पृथिवीकायिक एकेन्द्रिय औदारिक शरीरनी केटली मोटी शरीरा-
वगाहना छे ? हे गौतम ! जघन्य अने उत्कर्षथी अंगुलनो असंख्यातमो भाग छे. एम पर्याप्ता अने अपर्याप्तानी पण जाणवी. ए
प्रमाणे सूक्ष्म, पर्याप्ता अने अपर्याप्ता तथा बादर पर्याप्ता अने अपर्याप्तानी पण अवगाहना जाणवी. ए प्रमाणे ए नव भेद पृथिवीका-

३. ए प्रमाणे औदारिक शरीरना भेदोना संस्थानो कह्यां, हवे औदारिक शरीरअवगाहनानुं प्रमाण कहे छे—'ओरालियसरीरस्स
णं भंते' ! इत्यादि. औदारिक शरीरनी जघन्य अवगाहना अंगुलनो असंख्यातमो भाग छे. अने ते उत्पत्तिना प्रथम समये पृथिवीका-
यिकादिना शरीरनी जाणवी. उत्कृष्ट कांइक अधिक एक हजार योजन प्रमाण होय छे. ए अवगाहना लवण समुद्रना गोतीर्थादिने विषे
रहेला पद्मनाल वगेरेने आश्रयी समजवी. ए सिवाय बीजे एटला मोटा औदारिक शरीरनो असंभव छे. एम एकेन्द्रिय सूत्रने

क्काइयाणवि। वणस्सइकाइयओरालियसरीरस्स णं भंते! केमहालिया सरीरोगाहणा पन्नत्ता? गोयमा! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, उक्कोसेणं सातिरेगं जोयणसहस्सं। अपज्जत्तगाणं जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, पज्जत्तगाणं जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, उक्कोसेणं सातिरेगं जोयणसहस्सं। बादराणं जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, उक्कोसेणं सातिरेगं जोयणसहस्सं, पज्जत्ताणवि एवं चेव। अपज्जत्ताणं जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं। सुहुमाणं पज्जत्तापज्जत्ताण य तिण्हवि जहन्नेणवि उक्को-

---

यिकोना कह्या तेम अप्कायिको, तेजस्कायिको अने वायुकायिकोना पण कहेवा. हे भगवन्! वनस्पतिकायिक औदारिक शरीरनी केटली मोटी शरीरावगाहना छे? हे गौतम! जघन्यथी अंगुलनो असंख्यातमो भाग अने उत्कर्षथी कांइक अधिक हजार योजन प्रमाण होय छे. अपर्याप्तानी जघन्य अने उत्कृष्ट अंगुलनो असंख्यातमो भाग, पर्याप्तानी जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग अने उत्कृष्ट कांइक अधिक हजार योजन प्रमाण, बादरनी जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग अने उत्कृष्ट कांइक अधिक हजार योजन होय छे. पर्याप्तानी पण एमज जाणवी. अपर्याप्तानी जघन्य अने उत्कृष्ट अंगुलनो असंख्यातमो भाग समजवी. सूक्ष्म, पर्याप्ता अने

विषे पण जाणवुं. ते प्रमाणे सूत्रकार कहे छे—'एगिंदियओरालियस्स एवं चेव जहा ओहियस्स'–जेम औघिक-सामान्य औदारिक शरीरनी अवगाहना कही तेम एकेन्द्रिय औदारिक शरीरनी अवगाहना जाणवी. पृथिवी, अप्, तेजस्, अने वायु सूक्ष्म अने बादर, ते प्रत्येक पर्याप्ता अने अपर्याप्ताना औदारिक शरीरनी जघन्यथी अने उत्कर्षथी अवगाहना अंगुलनो असंख्यातो भाग होय छे. एम प्रत्येक पृथिवीकायादिना नव नव सूत्रो थाय छे—तेमां १ औघिक-सामान्यसूत्र, २ औघिक अपर्याप्तसूत्र, ३ औघिक पर्याप्त सूत्र, ४ सूक्ष्म सूत्र, ५

सेणवि अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं। बेइंदियओरालियसरीरस्स णं भंते! केमहालिया सरीरोगाहणा पन्नत्ता? गोय-मा! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, उक्कोसेणं बारस जोअणाइं। एवं सव्वत्थवि अपज्जत्तयाणं अंगुलस्स असं-खेज्जतिभागं जहण्णेणवि उक्कोसेणवि। पज्जत्तगाणं जहेव ओरालियस्स ओहियस्स। एवं तेइंदियाणं तिण्णि गाउयाइं, चउरिंदियाणं चत्तारि गाउयाइं, पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं उक्कोसेण जोयणसहस्सं ३, एवं संमु-च्छिमाणं ३, गब्भवक्कंतियाणवि ३, एवं चेव नवओ भेदो भाणियव्वो। एवं जलयराणवि जोयणसहस्सं नवओ

अपर्याप्ता ए त्रणोनी शरीरावगाहना जघन्य अने उत्कृष्ट अंगुलनो असंख्यातमो भाग जाणवी. हे भगवन्! बेइन्द्रिय औदारिक शरीरनी केटली मोटी शरीरावगाहना होय छे? हे गौतम! जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग अने उत्कृष्ट बार योजन प्रमाण होय छे. एम बधा स्थळे अपर्याप्तानी जघन्य अने उत्कृष्ट अंगुलना असंख्यातमा भाग प्रमाण होय छे. पर्याप्तानी अवगाहना जेम सामान्य बेइन्द्रिय औदा-रिक शरीरनी कही छे तेम जाणवी. ए प्रमाणे तेइन्द्रियनी त्रण गाउ अने चउरिन्द्रियनी चार गाउ शरीरावगाहना होय छे. पंचेन्द्रिय तिर्यंचोनी उत्कृष्ट हजार योजन प्रमाण होय छे ३. एम संमूर्छिमनी ३ अने गर्भजनी पण जाणवी ३. एम नव भेद कहेवा. ए प्रमाणे जलचरनी

सूक्ष्म अपर्याप्त सूत्र, ६ सूक्ष्मपर्याप्तसूत्र, ७-८ एम बादरनां (७ बादर, ८ बादर अपर्याप्त अने ९ बादर पर्याप्तना) त्रण सूत्रो जाणवा. एम वन-स्पतिकायिकोनां पण नव सूत्रो थाय छे, परन्तु औघिक-सामान्य वनस्पतिसूत्रमां, औघिक वनस्पतिपर्याप्त सूत्रमां, बादर सूत्रमां अने बादर पर्याप्त सूत्रमां जघन्यथी अंगुलनो असंख्यातमो भाग अने उत्कर्षथी कांइक अधिक एक हजार योजन प्रमाण होय छे. अने ते पद्मनालादिनी अपेक्षाए जाणवुं. बाकीना पांच सूत्रोमां जघन्यथी अने उत्कर्षथी अंगुलनो असंख्यातमो भाग समजवो. बेइन्द्रिय, तेइ-

भेदो, थलयराणवि णव भेदा ९, उक्कोसेणं छ गाउयाइं, पज्जत्तगाणवि एवं चेव, संमुच्छिमाणं पज्जत्तगाण य उ-
क्कोसेणं गाउयपुहुत्तं ३, गब्भवक्कंतियाणं उक्कोसेणं छ गाउयाइं पज्जत्ताण य २, ओहियचउप्पयपज्जत्तगगब्भ-
वक्कंतियपज्जत्तयाणवि उक्कोसेणं छ गाउयाइं । संमुच्छिमाणं पज्जत्ताण य गाउयपुहुत्तं उक्कोसेणं, एवं उरप-
रिसप्पाणवि। ओहियगब्भवक्कंतियपज्जत्तगाणं जोयणसहस्सं, संमुच्छिमाणं पज्जत्ताण य जोयणपुहुत्तं, भुयपरि-

पण अवगाहना हजार योजन प्रमाण जाणवी अने तेना नव भेद कहेवा. स्थलचरना पण नव भेद कहेवा. तेनी उत्कृष्ट अवगाहना
छ गाउ प्रमाण छे. पर्याप्तानी पण उत्कृष्ट ए प्रमाणे छ गाउनी होय छे. एम संमूर्छिम पर्याप्तानी उत्कृष्ट गाउपृथक्त्व (बे गाउथी
नव गाउ सुधी) जाणवी. गर्भज पर्याप्तानी उत्कृष्ट छ गाउ, औघिक-सामान्य चतुष्पद, पर्याप्ता अने गर्भज पर्याप्तानी पण उत्कृष्ट
छ गाउ, संमूर्छिम पर्याप्तानी उत्कृष्ट गाउपृथक्त्व, ए प्रमाणे उरपरिसर्पनी पण औघिक, गर्भज अने पर्याप्तानी हजार योजन जाणवी.
न्द्रिय अने चउरिन्द्रियोमां प्रत्येकने त्रण त्रण सूत्रो जाणवा. जेम के, औघिक सूत्र, अपर्याप्त सूत्र अने पर्याप्त सूत्र. तेमां औघिक सूत्र
अने पर्याप्त सूत्रमां बेइन्द्रियोनुं शरीर उत्कृष्टथी बार योजन, तेइन्द्रियोनुं त्रण गाउ अने चउरिन्द्रियोनुं चार गाउ प्रमाण होय छे. अपर्याप्त
सूत्रमां जघन्य अने उत्कृष्टथी अंगुलना असंख्यातमा भाग प्रमाण छे. सामान्यतः तिर्यंच पंचेन्द्रिय, जलचर, सामान्यतः स्थलचर, चतु
ष्पद, उरपरिसर्प, भुजपरिसर्प अने खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचोमां प्रत्येकना नव नव सूत्रो जाणवा. ते आ प्रमाणे—औघिक त्रण सूत्रो, संमू
र्छिम संबन्धे त्रण सूत्रो, अने गर्भज संबन्धे त्रण सूत्रो. तेमां बधाय अपर्याप्ताना स्थानोमां जघन्यथी अने उत्कर्षथी अंगुलनो असंख्यातमो
भाग होय छे. अने बाकीना स्थानोमां जघन्यथी अंगुलनो असंख्यातमो भाग अने उत्कर्षथी सामान्यतः तिर्यंच पंचेन्द्रिय अने जलचरमां
उत्कृष्ट हजार योजन, सामान्य स्थलचर, सामान्य चतुष्पद स्थलचर अने गर्भज स्थलचरने विषे छ गाउ, संमूर्छिममां गाउपृथक्त्व,

सप्पाणं ओहियगब्भवक्कंतियाण य उक्कोसेणं गाउयपुहुत्तं, संमुच्छिमाणं धणुपुहुत्तं, खहयराणं ओहियगब्भ-वक्कंतियाणं संमुच्छिमाण य तिण्हवि उक्कोसेणं धणुपुहुत्तं । इमाओ संगहणिगाहाओ—

जोयणसहस्सं छग्गाउयाइं तत्तो य जोयणसहस्सं । गाउयपुहुत्त भुयए धणुहपुहुत्तं च पक्खीसु ॥१॥

जोयणसहस्सं गाउयपुहुत्त तत्तो य जोयणपुहुत्तं । दोण्हं तु धणुपुहुत्तं संमुच्छिमे होंति उच्चत्तं ॥२॥

मणूसोरालियसरीरस्स णं भंते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखे-

---

संमूर्छिमनी योजन पृथक्त्व, भुजपरिसर्प औघिक अने गर्भजनी पण उत्कृष्ट गाउपृथक्त्व, संमूर्छिमनी धनुपपृथक्त्व, खेचर औघिक, गर्भज अने संमूर्छिम त्रणेनी उत्कृष्ट धनुपपृथक्त्व जाणवी. ए संबंधे आ संग्रहणी गाथाओ छे–हजार योजन, छ गाउ अने हजार योजन (गर्भज्ञ जलचर, चतुष्पद अने उरपरिसर्पनी) जाणवी. भुजपरिसर्पनी गाउपृथक्त्व अने पक्षीओनी धनुपपृथक्त्व अवगाहना होय छे. अने संमूर्छिम (जलचरो, चतुष्पद स्थलचरो अने उरपरिसर्पो) उंचाइमां हजार योजन, गाउपृथक्त्व अने योजन पृथक्त्व होय छे. संमूर्छिम (भुजपरिसर्प अने पक्षीओ) बन्नेनुं धनुपपृथक्त्व प्रमाण छे. हे भगवन् ! मनुष्य औदारिक शरीरनी केटली मोटी शरीरागाहना

औघिक-सामान्य उरपरिसर्पमां अने गर्भज उरपरिसर्पमां हजार योजन, संमूर्छिम उरपरिसर्पमां योजनपृथक्त्व, तथा सामान्य भुजपरिसर्पमां अने गर्भज भुजपरिसर्पमां गाउपृथक्त्व, संमूर्छिम भुजपरिसर्पमां धनुपपृथक्त्व, सामान्यतः खेचर, गर्भज तथा संमूर्छिम खेचर ए बधा स्थानोमां अवगाहना धनुपपृथक्त्व प्रमाण होय छे. आ संबन्धे आ बे संग्रहणीगाथा छे—'जोयणसहस्सं' इत्यादि. गर्भज जलचरोनुं उत्कर्षथी शरीरनी अवगाहनानुं प्रमाण हजार योजन, चतुष्पद स्थलचरोनुं छ गाउ, उरपरिसर्प स्थलचरोनुं हजार

ज्जतिभागं, उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं। एवं अपज्जत्ताणं जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं। संमुच्छिमाणं जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, गब्भवक्कंतियाणं पज्जत्ताण य जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं।

४. वेउव्वियसरीरे णं भंते! कतिविधे पन्नत्ते? गोयमा! दुविधे पन्नत्ते, तंजहा-एगिंदियवेउव्वियसरीरे य

कही छे? हे गौतम! जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग अने उत्कृष्ट त्रण गाउ होय छे. ए प्रमाणे अपर्याप्ताओनी अवगाहना जघन्य अने उत्कृष्ट अंगुलना असंख्यातमा भाग प्रमाण छे. संमूर्छिमोनी जघन्य अने उत्कृष्ट अंगुलना असंख्यातमा भाग प्रमाण छे. गर्भज अने पर्याप्ताओनी जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग अने उत्कृष्ट त्रण गाउनी होय छे.

४. हे भगवन्! वैक्रिय शरीर केटला प्रकारे छे? हे गौतम! बे प्रकारे छे. ते आ प्रमाणे—एकेन्द्रिय वैक्रिय शरीर अने पंचे-

---

योजन, भुजपरिसर्प स्थलचरनुं गाउपृथक्त्व, पक्षीओनुं धनुषपृथक्त्व तथा संमूर्छिम जलचरोनुं उत्कृष्ट शरीर प्रमाण हजार योजन, चतुष्पद स्थलचरोनुं गाउपृथक्त्व, उरपरिसर्प स्थलचरोनुं योजनपृथक्त्व, भुजपरिसर्प स्थलचरो अने पक्षीओनुं शरीर प्रमाण धनुषपृथक्त्व होय छे, ए प्रमाणे तिर्यंच पंचेन्द्रिय औदारिक शरीर अवगाहनानुं प्रमाण कह्युं. हवे मनुष्य पंचेन्द्रिय औदारिक शरीरनी अवगाहनानुं प्रमाण कहे छे—'मणूसोरालियसरीरस्स णं' इत्यादि. हे भगवन्! मनुष्य औदारिक शरीरनी केटली मोटी अवगाहना छे-इत्यादि सूत्र स्पष्ट छे, परन्तु त्रण गाउनुं शरीर देवकुरु वगेरे क्षेत्रनी अपेक्षाए समजवुं.

४. ए प्रमाणे औदारिक शरीरना भेदो, संस्थानो अने प्रमाण कह्युं, हवे वैक्रिय शरीरना प्रकार, संस्थान अने प्रमाण अनुक्रमे कहे

पंचिंदियवेउव्वियसरीरे य। जति एगिंदियवेउव्वियसरीरे किं वाउक्काइयएगिंदियवेउव्वियसरीरे, अवाउक्काइयएगिंदियवेउव्वियसरीरे? गोयमा! वाउक्काइयएगिंदियवेउव्वियसरीरे, नो अवाउक्काइयएगिंदियवेउव्वियसरीरे। जइ वाउकाइयएगिंदियवेउव्वियसरीरे किं सुहुमवाउक्काइयएगिंदियवेउव्वियसरीरे, बायरवाउक्काइयएगिंदियवेउव्वियसरीरे? गोयमा! नो सुहुमवाउक्काइयएगिंदियवेउव्वियसरीरे, बादरवाउकाइयएगिंदियवेउ-

---

न्द्रियवैक्रिय शरीर. जो एकेन्द्रिय वैक्रिय शरीर छे तो शुं वायुकायिक एकेन्द्रिय वैक्रिय शरीर छे के अवायुकायिक–वायुकायिक सिवायनुं एकेन्द्रिय वैक्रिय शरीर छे? हे गौतम! वायुकायिक एकेन्द्रिय वैक्रिय शरीर छे, पण अवायुकायिक एकेन्द्रिय वैक्रिय शरीर नथी. जो वायुकायिक एकेन्द्रिय वैक्रिय शरीर छे तो शुं सूक्ष्म वायुकायिक एकेन्द्रिय वैक्रिय शरीर छे के बादर वायुकायिक एकेन्द्रिय वैक्रिय शरीर छे? हे गौतम! सूक्ष्म वायुकायिक एकेन्द्रिय वैक्रिय शरीर नथी, पण बादर वायुकायिक एकेन्द्रिय वैक्रिय शरीर छे.

छे—'वेउव्वियसरीरे णं भंते'! इत्यादि. हे भगवन्! वैक्रिय शरीर केटला प्रकारनुं छे–इत्यादि. वैक्रिय शरीर एकेन्द्रिय अने पंचेन्द्रिय शरीरना भेदथी मूळथी बे प्रकारनुं छे, तेमां एकेन्द्रियमां वायुकायने, तेमां पण बादरने, तेमां पण पर्याप्ताने वैक्रिय शरीर होय छे. बीजाने वैक्रिय लब्धिनो संभव नथी. कह्युं छे के—'तिण्हं ताव रासीणं वेउव्वियलद्धी चेव नत्थि, बायरपज्जत्ताणंपि संखेज्जइभागमेत्ताणं'। त्रण राशिने वैक्रिय लब्धि नथी. बादर पर्याप्तामां पण संख्याता भाग मात्रने होय छे. अहीं त्रण राशि–सूक्ष्म पर्याप्ता, सूक्ष्म अपर्याप्ता अने बादर अपर्याप्ताने समजवुं.

पंचेन्द्रियना विचारमां पण जलचर, चतुष्पद, उरःपरिसर्प, भुजपरिसर्प, खेचर अने मनुष्यो ए बधा गर्भज अने संख्याता वरसना आयुष्यवाळाने छोडीने बाकीनानो प्रतिषेध समजवो, कारण के भवस्वभावथी तेओने वैक्रिय लब्धिनो असंभव छे.

व्वियसरीरे। जइ बादरवाउक्काइयएगिंदियवेउव्वियसरीरे किं पज्जत्तबादरवाउक्काइयएगिंदियवेउव्वियसरीरे, अपज्जत्तबादरवाउक्काइयएगिंदियवेउव्वियसरीरे ? गोयमा ! पज्जत्तबादरवाउक्काइयएगिंदियवेउव्वियसरीरे, नो अपज्जत्तबादरवाउक्काइयएगिंदियवेउव्वियसरीरे। जति पंचिंदियवेउव्वियसरीरे किं नेरइयपंचिंदियवेउव्वियसरीरे जाव किं देवपंचिंदियवेउव्वियसरीरे ? गोयमा ! नेरइयपंचिंदियवेउव्वियसरीरेवि जाव देवपंचिंदियवेउव्वियसरीरेवि । जइ नेरइयपंचिंदियवेउव्वियसरीरे किं रयणप्पभापुढविनेरइयपंचिंदियवेउव्वियसरीरे, जाव किं अहेसत्तमापुढविनेरइयपंचिंदियवेउव्वियसरीरे ? गोयमा ! रयणप्पभापुढविनेरइयपंचिंदियवेउव्वियसरीरेवि जाव अहेसत्तमापुढविनेरइयपंचिंदियवेउव्वियसरीरेऽवि। जइ रयणप्पभापुढविनेरइयपं. विउव्वियसरीरे किं पज्जत्तगरय

जो बादर वायुकायिक एकेन्द्रिय वैक्रिय शरीर छे तो शुं पर्याप्त बादर वायुकायिक एकेन्द्रिय वैक्रिय शरीर छे के अपर्याप्त बादर वायुकायिक एकेन्द्रिय वैक्रिय शरीर छे ? हे गौतम ! पर्याप्त बादर वायुकायिक एकेन्द्रिय वैक्रिय शरीर छे, पण अपर्याप्त बादर वायुकायिक एकेन्द्रिय वैक्रिय शरीर नथी. जो पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर छे तो शुं नैरयिक पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर छे के यावद् देव पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर छे ? हे गौतम ! नैरयिक पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर पण छे, यावत् देव पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर पण छे. जो नैरयिक पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर छे तो शुं रत्नप्रभापृथिवी नैरयिक पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर छे के यावत् नीचेनी सातमी नरक पृथिवी-नैरयिक पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर छे ? हे गौतम ! रत्नप्रभा पृथिवी नैरयिकपंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर पण छे, यावत् नीचेनी सातमी नरक पृथिवीनैरयिक पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर पण छे. जो रत्नप्रभा पृथिवीना नैरयिक पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर छे तो शुं पर्याप्त

णप्पभापुढविनेरइयपंचिंदियवेउव्वियसरीरे, अपज्जत्तगरयणप्पभापुढविनेरइयपंचिंदियवेउव्वियसरीरे ? गोयमा! पज्जत्तगरयणप्पभापुढविनेरइयपंचिंदियवेउव्वियसरीरे, अपज्जत्तगरयणप्पभापुढविनेरइयपंचिंदियवेउव्वियसरीरे, एवं जाव अहेसत्तमाए दुगतो भेदो भाणितव्वो। जइ तिरिक्खजोणियपंचिंदियवेउव्वियसरीरे किं संमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणियवेउव्वियसरीरे, गब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणियवेउव्वियसरीरे ? गोयमा! नो संमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणियवेउव्वियसरीरे, गब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणियवेउव्वियसरीरे। जति गब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणियवेउव्वियसरीरे किं संखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियपंचिंदियवेउव्वियसरीरे, असंखिज्जवासाउयगब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणियवेउव्वियसरीरे ? गोयमा ! संखेज्जवासाउ-

---

रत्नप्रभा नैरयिक पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर छे के अपर्याप्त रत्नप्रभा नैरयिक पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर छे ? हे गौतम ! पर्याप्त रत्नप्रभा-पृथिवी नैरयिक पंचेन्द्रिय वक्रिय शरीर पण छे अने अपर्याप्त रत्नप्रभापृथिवी नैरयिक पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर पण छे. ए प्रमाणे यावत् नीचेनी सातमी नरक पृथिवी सुधी बन्ने प्रकारनो भेद कहेवो. जो तिर्यंच पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर छे तो शुं संमूर्छिम पंचेन्द्रिय तिर्यंच वैक्रिय शरीर होय के गर्भज पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च वैक्रिय शरीर होय ? हे गौतम ! संमूर्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर न होय, पण गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर होय. जो गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर होय तो शुं संख्याता वरसना आयुषवाळा गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर होय के असंख्याता वरसना आयुषवाळा गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर होय ? हे गौतम ! संख्याता वरसना आयुषवाळा गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर होय पण असंख्याता वरसना आयुषवाळा

यगब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणियवेउव्वियसरीरे,नो असंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणियवेउव्वियसरीरे। जइ संखिज्जवासाउयगब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणियवेउव्वियसरीरे किं पज्जत्तगसंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणियवेउव्वियसरीरे, अपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणियवेउव्वियसरीरे? गोयमा! पज्जत्तगसंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणियवेउव्वियसरीरे, नो अपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणियवेउव्वियसरीरे। जइ संखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणियवेउव्वियसरीरे, किं जलयरसंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणियवेउव्वियसरीरे,थलयरसंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणियवेउव्वियसरीरे, खहयरसंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणियवेउव्वियसरीरे? गोयमा! ज-

---

गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर न होय. जो संख्याता वरसना आयुषवाळा गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर छे तो शुं पर्याप्ता संख्याता वरसना आयुषवाळा गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर होय के अपर्याप्ता संख्याता वरसना आयुषवाळा गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर होय? हे गौतम! पर्याप्त संख्याता वरसना आयुषवाळा गर्भज तिर्यंज पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर होय, पण अपर्याप्त संख्याता वरसना आयुषवाळा गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर न होय. जो संख्याता वरसना आयुषवाळा गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर छे तो शुं संख्याता वरसना आयुषवाळा जलचर गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर होय, संख्याता वरसना आयुषवाळा स्थलचर गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर होय के संख्याता वरसना आयुषवाळा खेचर गर्भज तिर्यंच

लयरसंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणियवेउव्वियसरीरेवि, थलयरसंखेज्जवासाउयगब्भव-
क्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणियवेउव्वियसरीरेवि, खहयरसंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजो-
णियवेउव्वियसरीरेवि। जइ जलयरसंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणियवेउव्वियसरीरे किं
पज्जत्तगजलयरसंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणियवेउव्वियसरीरे, अपज्जत्तगजलयरसंखेज्ज-
वासाउयगब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणियवेउव्वियसरीरे? गोयमा! पज्जत्तजलयरसंखेज्जवासाउयगब्भव-
क्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणियवेउव्वियसरीरे, नो अपज्जत्तगजलयरसंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियपंचिंदि
यतिरिक्खजोणियवेउव्वियसरीरे। जति थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिय-जाव सरीरं किं चउप्पय-जाव
सरीरे, परिसप्प-जाव सरीरे? गोयमा! चउप्पय-जाव सरीरेवि, परिसप्प-जाव सरीरेवि। एवं सव्वेसिं

पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर होय? हे गौतम! संख्याता वरसना आयुषवाळा जलचर गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर पण होय, संख्याता वरसना आयुषवाळा स्थलचर गर्भज पंचेन्द्रिय तिर्यंच वैक्रिय शरीर पण होय, अने संख्याता वरसना आयुषवाळा खेचर गर्भज पंचेन्द्रिय तिर्यंच वैक्रिय शरीर पण होय. जो जलचर संख्याता वरसना आयुषवाळा गर्भज पंचेन्द्रिय तिर्यंच वैक्रिय शरीर छे तो शुं पर्याप्त जलचर संख्याता वरसना आयुषवाळा गर्भज पंचेन्द्रिय तिर्यंच वैक्रिय शरीर होय के अपर्याप्त जलचर संख्याता वरसना आयुषवाळा गर्भज पंचेन्द्रिय तिर्यंच वैक्रिय शरीर होय? हे गौतम! पर्याप्त जलचर संख्याता वरसना आयुषवाळा गर्भज पंचेन्द्रिय तिर्यंच वैक्रिय शरीर होय, परन्तु अपर्याप्त जलचर संख्याता वरसना आयुषवाळा गर्भज पंचेन्द्रिय तिर्यंच वैक्रिय शरीर न होय. जो स्थल-

णेयव्वं जाव खहयराणं पज्जत्ताणं, नो अपज्जत्ताणं। जति मणूसपंचिंदियवेउव्वियसरीरे किं संमुच्छिममणूस-
पंचिंदियवेउव्वियसरीरे, गब्भवक्कंतियमणूसपंचिंदियवेउव्वियसरीरे ? गोयमा ! णो संमुच्छिममणूसपंचिंदि-
यवेउव्वियसरीरे, गब्भवक्कंतियमणूसपंचिंदियवेउव्वियसरीरे। जइ गब्भवक्कंतियमणूसपंचिंदियवेउव्विय-
सरीरे किं कम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसपंचिंदियवेउव्वियसरीरे, अकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसपंचिंदि-
यवेउव्वियसरीरे, अंतरदीवगगब्भवक्कंतियमणूसपंचिंदियवेउव्वियसरीरे ? गोयमा ! कम्मभूमगगब्भवक्कंतिय-
मणूसपंचिंदियवेउव्वियसरीरे, णो अकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसपंचिंदियवेउव्वियसरीरे, णो अंतरदी-
वगगब्भवक्कंतियमणूसपंचिन्दियवेउव्वियसरीरे। जइ कम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसपंचिंदियवेउव्वियस-
रीरे किं संखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसपंचिंदियवेउव्वियसरीरे, असंखेज्जवासाउयकम्मभूम-

चर पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक यावत् वैक्रिय शरीर छे तो शुं चतुष्पद यावत् वैक्रिय शरीर होय के परिसर्प यावत् वैक्रिय शरीर होय ? हे गौतम ! चतुष्पद यावत् वैक्रिय शरीर होय अने परिसर्प यावत् वैक्रिय शरीर पण होय. ए प्रमाणे बधाने जाणवुं. खेचर पर्याप्ताने होय, अपर्याप्ताने न होय. जो मनुष्य पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर छे तो शुं संमूर्छिम मनुष्य पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर होय के गर्भज मनुष्य पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर होय ? हे गौतम ! संमूर्छिम मनुष्य पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर न होय, पण गर्भज मनुष्य पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर होय. जो गर्भज मनुष्य पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर छे तो शुं कर्मभूमिना गर्भज मनुष्य पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर होय, अकर्मभूमिना गर्भज मनुष्य पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर होय के अन्तर्द्वीपना गर्भज मनुष्य पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर होय ? हे गौतम ! कर्म-

गगब्भवक्कंतियमणूसपंचिंदियवेउव्वियसरीरे ? गोयमा ! संखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसपंचिंदियवेउव्वियसरीरे, नो असंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसपंचिंदियवेउव्वियसरीरे । जति संखेज्जवासाउयकम्मभूसगगब्भवक्कंतियमणूसपंचिंदियवेउव्वियसरीरे किं पज्जत्तग्रसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसपंचिंदियवेउव्वियसरीरे, अपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसपंचिंदियवेउव्वियसरीरे ? गोयमा ! पज्जत्तयसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसपंचिंदियवेउव्वियसरीरे, नो अपज्जत्तयसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसपंचिंदियवेउव्वियसरीरे । जइ देवपंचिंदियवेउव्वियसरीरे किं भवणवासिदेवपंचिंदियवेउव्वियसरीरे, जाव वेमाणियदेवपंचिंदियवेउव्वियसरीरे ? गोयमा ! भवणवा-

भूमिना गर्भज मनुष्य पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर होय, पण अकर्मभूमिना गर्भज मनुष्य पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर न होय अने अन्तर्द्वीपना गर्भज मनुष्य पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर न होय. जो कर्मभूमिना गर्भज मनुष्य पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर छे तो शुं संख्याता वरसना आयुषवाळा कर्मभूमिना गर्भज मनुष्य वैक्रिय शरीर होय के असंख्याता वरसना आयुषवाळा कर्मभूमिना गर्भज मनुष्य पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर होय ? हे गौतम ! संख्याता वरसना आयुषवाळा कर्मभूमिना गर्भज मनुष्य पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर होय, पण असंख्याता वरसना आयुषवाळा कर्मभूमिना गर्भज मनुष्य पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर न होय. जो संख्याता वरसना आयुषवाळा कर्मभूमिना गर्भज मनुष्य पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर छे तो शुं पर्याप्त संख्याता वरसना आयुषवाळा कर्मभूमिना गर्भज मनुष्य पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर होय के अपर्याप्त संख्याता वरसना आयुषवाळा कर्मभूमिना गर्भज मनुष्य पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर होय ? हे गौतम !

सिदेवपंचिंदियवेउव्वियसरीरेवि जाव वेमाणियदेवपंचिंदियवेउव्वियसरीरवि । जइ भवणवासिदेवपंचिंदियवेउव्वियसरीरे किं असुरकुमारभवणवासिदेवपंचिंदियवेउव्वियसरीरे, जाव थणियकुमारभवणवासिदेवपंचिंदियवेउव्वियसरीरे ? गोयमा ! असुरकुमार० जाव थणियकुमारदेवपंचिन्दियवेउव्वियसरीरेवि । जइ असुरकुमारभवणवासिदेवपंचिंदियवेउव्वियसरीरे किं पज्जत्तगअसुरकुमारभवणवासिदेवपंचिंदियवेउव्वियसरीरे, अपज्जत्तगअसुरकुमारभवणवासिदेवपंचिंदियवेउव्वियसरीरे ? गोयमा ! पज्जत्तगअसुरकुमारभवणवासिदेवपंचिंदियवेउव्वियसरीरेवि, अपज्जत्तगअसुरकुमारभवणवासिदेवपंचिंदियवेउव्वियसरीरेवि, एवं जाव थणियकु-

---

पर्याप्ता संख्याता वरसना आयुषवाळा कर्मभूमिना गर्भज मनुष्य पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर होय, पण अपर्याप्ता संख्याता वरसना आयुषवाळा कर्मभूमिना गर्भज मनुष्य पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर न होय.

जो देव पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर छे तो शुं भवनवासी देव पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर होय, यावत् वैमानिक देव पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर होय ? हे गौतम ! भवनवासी देव पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर पण होय, यावत् वैमानिक देव पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर पण होय. जो भवनवासी देव पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर छे तो शुं असुरकुमार भवनवासी देव पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर होय के यावत् स्तनितकुमार भवनवासी देव पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर होय ? हे गौतम ! असुरकुमार, यावत् स्तनितकुमार भवनवासी देव पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर होय. जो असुरकुमार देव पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर छे तो शुं पर्याप्त असुरकुमार देव पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर होय के अपर्याप्त असुरकुमार भवनवासी देव पंचेन्द्रिय वैक्रियशरीर होय ? हे गौतम ! पर्याप्त असुरकुमार भवनवासी देव पंचेन्द्रिय वैक्रियशरीर पण होय

माराणं दुगतो भेदो। एवं वाणमंतराणं अट्ठविहाणं, जोतिसियाणं पंचविहाणं। वेमाणिया दुविहा—कप्पोवगा कप्पातीता य। कप्पोवगा बारसविहा, तेसिंपि एवं चेव दुहतो भेदो। कप्पातीता दुविहा गेवेज्जगा य अणुत्तरोववाइया य, गेवेज्जगा णवविहा, अणुत्तरोववाइया पंचविहा, एतेसिं पज्जत्तापज्जत्ताभिलावेणं दुगतो भेदो भाणियव्वो।

५. वेउव्वियसरीरे णं भंते! किंसंठिते पन्नत्ते? गोयमा! णाणासंठाणसंठिते पन्नत्ते। वाउकाइयएगिंदियवेउव्वियसरीरे णं भंते! किंसंठिते पन्नत्ते? गोयमा! पडागासंठाणसंठिते पन्नत्ते। नेरइयपंचिंदियवेउव्वियस-

अने अपर्याप्त असुरकुमार भवनवासी देव पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर पण होय. ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमार सुधी बे भेद जाणवा. एम आठ प्रकारना व्यन्तरो अने पांच प्रकारना ज्योतिषिकोने जाणवुं वैमानिको बे प्रकारना छे कल्पोपपन्न अने कल्पातीत,तेमां कल्पोपपन्न बार प्रकारना छे,अने तेओना पण पर्याप्ता अने अपर्याप्ता एम बे प्रकार जाणवा. कल्पातीत बे प्रकारना छे–ग्रैवेयको अने अनुत्तरौपपातिक. ग्रैवेयको नव प्रकारना छे. अनुत्तरौपपातिक पांच प्रकारना छे, एओना पर्याप्ता अने अपर्याप्ताना अभिलापथी बे भेद जाणवा.

५. हे भगवन्! वैक्रिय शरीर केवा प्रकारना संस्थानवाळुं छे? हे गौतम! अनेक प्रकारना संस्थानवाळुं छे. हे भगवन्! वायुकायिक एकेन्द्रिय वैक्रिय शरीर केवा संस्थानवाळुं छे? हे गौतम! पताकाना आकार जेवा संस्थानवाळुं छे. हे भगवन्! नैरयिक

५. वैक्रिय शरीरना भेदो कह्या, हवे संस्थानो कहे छे—'वेउव्वियसरीरे णं भंते'! इत्यादि.—हे भगवन्! वैक्रिय शरीर केवा संस्थानवाळुं छे' इत्यादि. परन्तु नैरयिकोने अत्यन्त अशुभ कर्मना उदयथी भवधारणीय अने उत्तरवैक्रिय बन्ने शरीर हुंडसंस्थानवाळां

रीर णं भंते! किंसंठाणसंठिते पन्नत्ते ? गोयमा ! नेरइयपंचिंदियवेउव्वियसरीरे दुविधे पन्नत्ते, तजहा-भवधारणिज्जे य उत्तरवेउव्विए य। तत्थ णं जे से भवधारणिज्जे से णं हुंडसंठाणसंठिते पन्नत्ते । तत्थ ण जे से उत्तरवेउव्विते सेवि हुंडसंठाणसंठिते पन्नत्ते। रयणप्पभापुढविनेरइयपंचिंदियवेउव्वियसरीरे णं भते! किंसंठाणसंठिते पन्नत्ते ? गोयमा! रयणप्पभापुढविनेरइयाणं दुविधे सरीरे पन्नत्ते, तंजहा-भवधारणिज्जे य उत्तरवेउव्विए य। तत्थ णं जे से भवधारणिज्जे से णं हुंडे, जे से उत्तरवेउव्विए सेवि हुंडे। एवं जाव अहेसत्तमापु-

---

पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर केवा संस्थानवाळुं छे ? हे गौतम ! नैरयिक पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर बे प्रकारनुं छे. ते आ प्रमाणे-भवधारणीय अने उत्तर वैक्रिय. तेमां जे भवधारणीय शरीर छे ते हुंडसंस्थानवाळुं छे, अने जे उत्तर वैक्रिय छे ते पण हुंडसंस्थानवाळुं छे. रत्नप्रभापृथिवी नैरयिक पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर केवा संस्थानवाळुं छे ? हे गौतम ! रत्नप्रभा पृथिवीना नैरयिकोनुं शरीर बे प्रकारनुं छे. ते आ प्रमाणे-भवधारणीय अने उत्तर वैक्रिय. तेमां जे भवधारणीय शरीर छे ते हुंडसंस्थानवाळुं छे, अने जे उत्तर वैक्रिय शरीर छे ते पण हुंडसंस्थानवाळुं छे. ए प्रमाणे यावत् नीचेनी सातमी नरक पृथिवीना नैरयिकनुं वैक्रिय शरीर जाणवुं. हे भगवन् !

होय छे. ते आ प्रमाणे—तेओनुं भवधारणीय शरीर भवस्वभावथीज मूळथी छेदी नांखेल पांखवाळा अने डोक वगेरेना रुंवाटा जेना उखेडी नांख्या छे एवा पक्षीनी आकृति जेवुं अत्यन्त बीभत्स हुंडसंस्थानवाळुं होय छे. जे उत्तरवैक्रिय छे ते पण 'अमे सुंदर शरीर करीशुं' ए इच्छाथी करवानो आरंभ करे छे तो पण तेवा प्रकारना अत्यन्त अशुभ नाम कर्मना उदयथी अत्यंत अशुभ थाय छे माटे ते पण हुंडसंस्थानवाळुं छे. तिर्यंच पंचेन्द्रिय अने मनुष्यनुं वैक्रिय शरीर अनेक प्रकारना संस्थानवाळुं होय छे, कारण के ते इच्छा

ढविनेरइयवेउव्वियसरीरे। तिरिक्खजोणियपंचिंदियवेउव्वियसरीरे णं भंते! किंसंठाणसंठिते पन्नत्ते? गोयमा! णाणासंठाणसंठिते पन्नत्ते। एवं जाव जलयरथलयरखहयराणवि। थलयराणवि चउप्पयपरिसप्पाणवि, परिसप्पाणवि उरपरिसप्पभुयपरिसप्पाणवि। एवं मणुसपंचिंदियवेउव्वियसरीरेवि। असुरकुमारभवणवासीदेवपंचिंदियवेउव्वियसरीरे णं भंते! किंसंठाणसंठिते पन्नत्ते? गोयमा! असुरकुमाराणं देवाणं दुविहे सरीरे पन्नत्ते, तंजहा–भवधारणिज्जे य उत्तरवेउव्विते य। तत्थ णं जे से भवधारणिज्जे से णं समचउरंससंठाणसंठिते पन्नत्ते,

---

तिर्यंच पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर केवा संस्थानवाळुं छे? हे गौतम! अनेक प्रकारना संस्थानवाळुं छे. ए प्रमाणे यावत् जलचरो, स्थलचरो अने खेचरोनुं पण जाणवुं. स्थलचरोमां चतुष्पद अने परिसर्पोनुं, परिसर्पोमां उरपरिसर्पो अने भुजपरिसर्पोनुं पण एमज जाणवुं. एम मनुष्य पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर संबन्धे पण जाणवुं. हे भगवन्! असुरकुमार भवनवासी देव पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर केवा संस्थान–आकारवाळुं छे? हे गौतम! असुरकुमार देवोनुं शरीर बे प्रकारनुं छे. ते आ प्रमाणे–भवधारणीय अने उत्तर वैक्रिय. तेमां जे भवधारणीय

प्रमाणे थाय छे. दश प्रकारना भवनपति, व्यन्तर, ज्योतिष्क अने सौधर्मथी मांडी अच्युत सुधीना वैमानिक देवोनुं भवधारणीय शरीर भवस्वभावथी तेवा प्रकारना शुभ नामकर्मना उदय वडे समचतुरस्र संस्थानवाळुं छे. अने उत्तर वैक्रिय इच्छा प्रमाणे थतुं होवाथी जुदा जुदा संस्थानवाळुं होय छे. ग्रैवेयको अने अनुत्तरौपपातिकोने प्रयोजन नहि होवाथी उत्तर वैक्रिय शरीर होतुं नथी. कारण के उत्तरवैक्रिय गमनागमन निमित्ते के परिचारणा–विषयोपभोग निमित्ते कराय छे, अने एओने गमनागमन के परिचारणा होतां नथी. एओने जे भवधारणीय शरीर छे ते समचतुरस्र संस्थानवाळुं होय छे.

तत्थ णं जे से उत्तरवेउव्विए से णं णाणासंठाणसंठिए पन्नत्ते, एवं जाव थणियकुमारदेवपंचिंदियवेउव्वियसरीरे, एवं वाणमंतराणवि, णवरं ओहिया वाणमंतरा पुच्छिज्जंति, एवं जोतिसियाणवि ओहियाणं, एवं सोहम्मे जाव अच्चुयदेवसरीरे। गेवेज्जगकप्पातीतवेमाणियदेवपंचिंदियवेउव्वियसरीरे णं भंते ! किंसंठिते पन्नत्ते ? गोयमा ! गेवेज्जगदेवाणं एगे भवधारणिज्जे सरीरे, से णं समचउरंससंठाणसंठिते पन्नत्ते, एवं अणुत्तरोववाइयाणवि।

६. वेउव्वियसरीरस्स णं भंते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं सातिरेगं जोयणसयसहस्सं। [वाउक्काइय] एगिंदियवेउव्वियसरीरस्स णं भंते! केमहालिया सरीरो-

---

शरीर छे ते समचतुरस्र संस्थानवाळुं कह्युं छे. अने जे उत्तर वैक्रिय शरीर छे ते अनेक प्रकारना संस्थान-आकारवाळुं छे. ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमार देव पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर जाणवुं. एम व्यन्तर संबन्धे पण समजवुं. परन्तु सामान्य व्यन्तर संबन्धे प्रश्न करवो. एम सामान्य ज्योतिषिको संबन्धे पण जाणवुं. ए प्रमाणे सौधर्म, यावत् अच्युत देव वैक्रिय शरीर संबन्धे जाणवुं. हे भगवन् ! ग्रैवेयक कल्पातीत वैमानिक देव पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर केवा संस्थानवाळुं छे ? हे गौतम ! ग्रैवेयक देवोने एक भवधारणीय शरीर छे, अने ते समचतुरस्र संस्थानवाळुं छे. ए प्रमाणे अनुत्तरौपपातिकने पण समजवुं.

६. हे भगवन् ! वैक्रिय शरीरनी केटली मोटी शरीरावगाहना कही छे ? हे गौतम ! जघन्यथी अंगुलनो असंख्यातमो भाग अने उत्कृष्ट कांइक अधिक लाख योजन प्रमाण कही छे. हे भगवन् ! वायुकायिक एकेन्द्रिय वैक्रिय शरीरनी केटली मोटी शरीरावगा-

---

६. संस्थानो कह्यां, हवे अवगाहनानुं प्रमाण कहे छे—'वेउव्वियसरीरस्स णं' इत्यादि. वैक्रिय शरीर जघन्यथी अंगुलना असंख्यात-

गाहणा पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणवि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं । नेरइयपंचिंदियवेउव्वियसरीरस्स ण भंते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया य । तत्थ णं जा सा भवधारणिज्जा सा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, उक्कोसेणं पंचधणुसयाइं । तत्थ णं जा सा उत्तरवेउव्विया सा जहन्नेणं अंगुलस्स संखेज्जतिभागं, उक्कोसेणं धणुसहस्सं । रयणप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तंज-

हना कही छे ? हे गौतम ! जघन्यथी अंगुलनो असंख्यातमो भाग अने उत्कर्षथी पण अंगुलनो असंख्यातमो भाग होय छे. हे भगवन् ! नैरयिक पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीरनी केटली मोटी शरीरावगाहना कही छे ? हे गौतम ! तेओनी बे प्रकारनी शरीरावगाहना छे. ते आ प्रमाणे–भवधारणीय अने उत्तरवैक्रिय. तेमां जे भवधारणीय शरीरावगाहना छे ते जघन्यथी अंगुलना असंख्यातमा भाग प्रमाण छे अने उत्कर्षथी पांचसो धनुष प्रमाण छे. अने जे उत्तरवैक्रिय शरीरावगाहना छे ते जघन्यथी अंगुलना संख्यातमा भाग प्रमाण अने उत्कृष्ट हजार धनुष छे. हे भगवन् ! रत्नप्रभा पृथिवीना नैरयिकोनी केटली मोटी शरीरावगाहना कही छे ? हे गौतम ! बे प्रकारनी

मा भाग प्रमाण छे अने ते नैरयिकादीनुं भवधारणीय अपर्याप्तावस्थामां अने वायुकायनुं (पर्याप्तावस्थामां) होय छे. अने उत्कर्षथी कांइक अधिक एक लाख योजन प्रमाण उत्तरवैक्रिय देवो अने मनुष्योने होय छे. 'एगिंदियवेउव्वियसरीरस्स णं' इत्यादि. अहीं एकेन्द्रिय वायुकायिक जाणवा, ते सिवाय बीजाने वैक्रिय लब्धिनो असंभव छे. तेने जघन्यथी अने उत्कर्षथी अवगाहनानुं प्रमाण अंगुलनो असंख्यातमो भाग छे. कारण के एटला प्रमाणनुं वैक्रिय शरीर करवानी तेनी शक्ति संभवे छे. सामान्य नैरयिक सूत्रमां 'भवधारणीया'–भवो धार्यते अनया—

हा–भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विता य। तत्थ णं जा सा भवधारणिज्जा सा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्ज-
इभागं, उक्कोसेणं सत्त धणूई तिण्णि रयणीओ छच्च अंगुलाइं। तत्थ णं जा सा उत्तरवेउव्विता सा जहन्नेणं
अंगुलस्स संखेज्जइभागं, उक्कोसेणं पण्णरस धणूतिं अड्ढाइज्जाओ रयणीओ। सक्करप्पभाए पुच्छा। गोयमा!
जाव तत्थ णं जा सा भवधारणिज्जा सा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं पण्णरस धणूइं अड्ढा-
इज्जातो रयणीओ। तत्थ णं जा सा उत्तरवेउव्विता सा जहन्नेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं, उक्कोसेणं एक्क-

कही छे. ते आ प्रमाणे—भवधारणीय अने उत्तरवैक्रिय. तेमां जे भवधारणीय अवगाहना छे ते जघन्यथी अंगुलनो असंख्यातमो
भाग अने उत्कृष्ट सात धनुष त्रण हाथ अने छ अंगुल छे. अने जे उत्तर वैक्रिय अवगाहना छे ते जघन्यथी अंगुलनो संख्यातमो
भाग अने उत्कृष्ट पंदर धनुष अने अढी हाथ छे. शर्कराप्रभा संबंधे पृच्छा. हे गौतम! यावत्–तेमां जे भवधारणीय अवगाहना छे ते
जघन्यथी अंगुलनो असंख्यातमो भाग अने उत्कृष्ट पंदर धनुष अने अढी हाथ प्रमाण छे अने जे उत्तर वैक्रिय अवगाहना छे ते
जघन्यथी अंगुलनो संख्यातमो भाग अने उत्कृष्ट एकत्रीश धनुष अने एक हाथ छे. वालुकाप्रभानी भवधारणीय अवगाहना एकत्रीश

जे वडे भव धारण कराय ते भवधारणीय-जन्म प्राप्त अवगाहना-शरीर उत्कृष्ट पांचसो धनुष प्रमाण अने उत्तरवैक्रिय अवगाहना हजार
धनुषप्रमाण सातमी नरकनी अपेक्षाए जाणवी. ते सिवाय बीजे पटली भवधारणीय अने उत्तर वैक्रिय शरीरावगाहनानो असंभव छे.
हवे दरेक पृथिवीनी अवगाहनानुं प्रमाण कहे छे—'रयणप्पभा'-इत्यादि. रत्नप्रभामां अंगुलना असंख्यातमा भागनुं प्रमाण प्रथम उत्पत्ति
समये जाणवुं. अने उत्कर्षथी सात धनुष, त्रण हाथ अने छ अंगुल पर्याप्तावस्थामां समजवुं. आ उत्कृष्ट शरीरावगाहनानुं प्रमाण तेरमां

तीसं धणूइं एक्का य रयणी । वालुयप्पभाए भवधारणिज्जा एक्कतीसं धणूइं एक्का रयणी, उत्तरवेउव्विया बावट्ठिं
धणूतिं दो रयणीओ। पंकप्पभाए भवधारणिज्जा बावट्ठिं धणूइं दो रयणीओ, उत्तरवेउव्विया पणवीसं धणु-
सयं । धूमप्पभाए भवधारणिज्जा पणवीसं धणुसयं, उत्तरवेउव्विया अड्ढातिज्जाइं धणुसयाइं । तमाए भवधार-
णिज्जा अड्ढाइज्जाइं धणूसताइं, उत्तरवेउव्विया पंच धणुसताइं । अधेसत्तमाए भवधारणिज्जा पंच धणुसयाइं,
उत्तरवेउव्विता धणुसहस्सं एवं उक्कोसेणं । जहन्नेणं भवधारणिज्जा अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं,उत्तरवेउव्विता

धनुप अने एक हाथ अने उत्तरवैक्रिय अवगाहना बासठ धनुप अने बे हाथ छे. पंकप्रभानी भवधारणीय अवगाहना बासठ धनुप अने
बे हाथ अने उत्तर वैक्रिय अवगाहना एकसो पचीश धनुप प्रमाण छे. धूमप्रभानी भवधारणीय अवगाहना एकसो पचीश धनुप अने
उत्तर वैक्रिय अवगाहना अढीसो धनुप प्रमाण छे. तमःप्रभापृथिवीनी भवधारणीय अवगाहना अढीसो धनुप अने उत्तर वैक्रिय अवगा-
हना पांचसो धनुप प्रमाण छे. नीचेनी सातमी नरकपृथिवीनी भवधारणीय अवगाहना पांचसो धनुप अने उत्तर वैक्रिय अवगाहना
हजार धनुप प्रमाण छे एम उत्कर्षथी जाणवी. जघन्यथी भवधारणीय अवगाहना अंगुलनो असंख्यातमो भाग अने उत्तरवैक्रिय अंगु-
प्रस्तट-पाथडाने विशे जाणवुं. अने बाकीना तेना पूर्वना प्रस्तटोमां ओछुं ओछुं शरीर प्रमाण होय छे. ते आ प्रमाणे—रत्नप्रभाना
पहेला प्रस्तटमां त्रण हाथ उत्कृष्ट शरीर प्रमाण छे. बीजा प्रस्तटमां एक धनुष, एक हाथ अने साडा आठ आंगळ, त्रीजा प्रस्तटमां
एक धनुष, त्रण हाथ अने सत्तर आंगळ, चोथा प्रस्तटमां बे धनुष, बे हाथ अने दोढ आंगळ, पांचमा प्रस्तटमां त्रण धनुष अने
दश आंगळ, छठ्ठा प्रस्तटमां त्रण धनुष,बे हाथ अने साडा अढार आंगळ,सातमा प्रस्तटमां चार धनुष, एक हाथ अने त्रण आंगळ, आठमा
प्रस्तटमां चार धनुष, त्रण हाथ अने साडा अगियार आंगळ, नवमा प्रस्तटमां पांच धनुष, एक हाथ अने वीश आंगळ, दसमा प्रस्त-

अच्चुओ कप्पो, नवरं सणंकुमारे भवधारणिज्जा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेण छ रयणीओ। एवं माहिंदेवि, बंभलोयलंतगेसु पंच रयणीओ, महासुक्कसहस्सारेसु चत्तारि रयणीओ, आणयपाणयआरणच्चुएसु तिण्णि रयणीओ। गेविज्जगकप्पातीतवेमाणियदेवपंचिंदियवेउव्वियसरीरस्स णं भंते! केमहालिया सरीरो-

भवधारणीय अवगाहना जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग अने उत्कृष्ट छ हाथ प्रमाण होय छे. एम माहेन्द्र देवलोकने विषे पण समजवुं. ब्रह्मलोक अने लान्तकने विशे पांच हाथ, महाशुक्र अने सहस्रारने विशे चार हाथ, आनत, प्राणत, आरण अने अच्युतमां त्रण हाथ प्रमाण जाणवी. ग्रैवेयक कल्पातीत वैमानिक देव पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीरनी केटली मोटी अवगाहना कही छे? हे गौतम!

त्रीजा प्रतरमां नव धनुष, एक हाथ अने बार आंगळ, चोथा प्रतरमां दस धनुष अने पंदर आंगळ, पांचमा प्रतरमां दस धनुष, त्रण हाथ अने अढार आंगळ, छट्ठा प्रतरमां अगियार धनुष, बे हाथ अने एकवीश आंगळ, सातमा प्रतरमां बार धनुष अने बे हाथ, आठमा प्रतरमां तेर धनुष, एक हाथ अने त्रण आंगळ, नवमा प्रतरमां चौद धनुष अने छ आंगळ, दसमा प्रतरमां चौद धनुष, त्रण हाथ अने नव आंगळ अने अगियारमा प्रतरमां मूळ सूत्रमां कहेलुं (पंदर धनुष, बे हाथ अने बार आंगळ) परिमाण जाणवुं. अहीं पण आ तात्पर्य छे—प्रथम प्रतरमां जे परिमाण कह्युं छे तेना उपर उपरना प्रतरना क्रमथी त्रण हाथ अने त्रण आंगळ नांखवा. तेथी प्रतरोमां पूर्वे कहेलुं परिमाण थाय छे. कह्युं छे के—

सो चेव बीयाए पढमे पयरम्मि होइ उस्सेहो। हत्थत्तिय तिन्नि अंगुल पयरे पयरे य वुड्ढीए ॥
एक्कारसमे पयरे पण्णरस धणूणि दोण्णि रयणीओ। बारस अंगुलाइं देहपमाणं तु विन्नेयं ॥

आ बे गाथानो अक्षरार्थ आ छे—जे प्रथम पृथिवीना तेरमा प्रतरने विषे उत्कर्षथी उंचाइ सात धनुष, त्रण हाथ अने छ अंगुल

गाहणा पन्नत्ता ? गोयमा ! गेवेज्जगदेवाणं एगा भवधारणिज्जा सरीरोगाहणा पन्नत्ता, सा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं दो रयणी । एवं अणुत्तरोववाइयदेवाणवि, णवरं एक्का रयणी ।

ग्रैवेयक देवोने एक भवधारणीय शरीरावगाहना कही छे, अने ते जघन्यथी अंगुलनो असंख्यातमो भाग, अने उत्कृष्ट बे हाथ प्रमाण होय छे. ए प्रमाणे अनुत्तरौपपातिक देवोने पण जाणवुं. परन्तु तेओनुं वैक्रिय शरीर एक हाथ प्रमाण छे.

कही छे ते बीजी शर्कराप्रभाना प्रथम प्रतरने विषे जाणवी. ते पछी प्रतरे प्रतरे त्रण हाथ अने त्रण अंगुलनी वृद्धि करवी, तेथी अगियारमा प्रतरमां उत्कर्षथी भवधारणीय शरीरनुं परिमाण पंदर धनुष, बे हाथ अने बार आंगळनुं आवे छे. हवे उत्कर्षथी उत्तर वैक्रियनुं परिमाण कहे छे—एकत्रीश धनुष अने एक हाथ प्रमाण छे. आ अगियारमां प्रतरने विशे जाणवुं. बाकीना प्रतरोमां पोतपोताना भवधारणीय शरीरप्रमाणनी अपेक्षाए बमणुं बमणुं जाणवुं. त्रीजी वालुकाप्रभा पृथिवीमां उत्कर्षथी भवधारणीय अवगाहना एकत्रीश धनुष अने एक हाथ छे. ए नवमा प्रतरने आश्रयी कहेलुं समजवुं, बाकीना प्रतरोमां आ प्रमाणे छे—प्रथम प्रतरमां भवधारणीय अवगाहना पंदर धनुष, बे हाथ अने बार अंगुल, बीजा प्रतरमां सत्तर धनुष, बे हाथ अने साडासात अंगुल, त्रीजा प्रतरमां ओगणीश धनुष बे हाथ अने त्रण अंगुल, चोथा प्रतरमां एकवीश धनुष, एक हाथ अने साडी बावीश अंगुल, पांचमा प्रतरमां तेवीश धनुष, एक एक हाथ अने अढार आंगळ, छट्ठा प्रतरमां पचीश धनुष, एक हाथ अने साडातेर अंगुल, सातमा प्रतरमां सत्यावीश धनुष, एक हाथ अने नव अंगुल, आठमा प्रतरमां ओगणत्रीश धनुष, एक हाथ अने साडाचार आंगळ, अने नवमा प्रतरमां पूर्वोक्त परिमाण थाय छे. अहीं आ भावार्थ छे—पहेला प्रतरमां जे परिमाण कह्युं छे तेना उपर प्रतरे प्रतरे सात हाथ अने ओगणीश आंगळ अनुक्रमे नांखवा, तेथी प्रतरोमां पूर्वोक्त परिमाण थाय छे. ए संबन्धे कह्युं छे के—

अंगुलस्स संखिज्जतिभागं । तिरिक्खजोणियपंचिंदियवेउव्वियसरीरस्स णं भंते ! केमहालिया सरीरोगाहणा
पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं,उक्कोसेणं जोयणसतपुहुत्तं। मणुस्सपंचिंदियवेउव्वियसरी-
रस्स णं भंते! केमहालिया सरीरोगाहणा पन्नत्ता? गोयमा! जहन्नेणं अंगुलस्स संखेज्जतिभागं, उक्कोसेणं सातिरेगं
जोयणसतसहस्सं।असुरकुमारभवणवासिदेवपंचिंदियवेउव्वियसरीरस्स णं भंते! केमहालिया सरीरोगाहणा पन्न-

लनो संख्यातमो भागःसमजवो. हे भगवन् ! तिर्यंच पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीरनी केटली मोटी शरीरावगाहना कही छे. हे गौतम !
जघन्यथी अंगुलनो संख्यातमो भाग अने उत्कृष्ट योजन शतपृथक्त्व–बसोथी नवसो योजन होय छे. हे भगवन् ! मनुष्य पंचेन्द्रिय
वैक्रिय शरीरनी केटली मोटी शरीरावगाहना कही छे ? हे गौतम ! जघन्यथी अंगुलना संख्यातमा भाग प्रमाण अने उत्कृष्ट कांइक
अधिक एक लाख योजन प्रमाण कही छे. असुरकुमार भवनवासी देव पंचेन्द्रियना वैक्रिय शरीरनी केटली मोटी शरीरावगाहना कही

टमां छ धनुष अने साडा चार आंगळ, अगियारमा प्रस्तटमां छ धनुष, बे हाथ अने तेर आंगळ, बारमा प्रस्तटमां सात धनुष अने
साडी एकवीश आंगळ अने तेरमा प्रस्तटमां सात धनुष, त्रण हाथ अने पूरा छ आंगळ होय छे. अहीं आ तात्पर्यार्थ छे–पहेला प्रस्त-
टमां जे शरीरावगाहनानुं प्रमाण त्रण हाथ कह्युं छे, तेमां तेना उपर उपर प्रतरना अनुक्रमथी साडी छप्पन आंगळ नांखवामां आवे
पटले प्रस्तटोमां पूर्वे कहेलुं शरीरावगाहनानुं परिमाण थाय छे. ए संबन्धे कह्युं छे के—

"रयणाए पढमपयरे हत्थतियं देहउस्सओ भणिओ । छप्पनंगुल सड्ढा पयरे पयरे हवइ वुड्ढी" ॥

रत्नप्रभाना प्रथम प्रतरमां त्रण हाथप्रमाण शरीरनी उंचाइ छे अने ते पछी प्रतरे प्रतरे साडी छप्पन आंगळनी वृद्धि थाय छे, 'तत्थ
णं सा उत्तरवेउव्विया' इत्यादि. तेमां जे उत्तर वैक्रिय छे ते जघन्यथी अंगुलना संख्यातमा भाग प्रमाण छे, कारण के उत्तरवैक्रियना

त्ता? गोयमा ! असुरकुमाराणं देवाणं दुविहा सरीरोगाहणा पन्नत्ता,तंजहा–भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया य।
तत्थ णं जा सा भवधारणिज्जा सा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं सत्त रयणीओ। तत्थ णं जा
सा उत्तरवेउव्विता सा जहन्नेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं,उक्कोसेणं जोयणसतसहस्सं। एवं जाव थणियकुमा-
राणं, एवं ओहियाणं वाणमंतराणं, एवं जोइसियाणवि, सोहम्मीसाणदेवाणं एवं चेव, उत्तरवेउव्विता जाव

छे ? हे गौतम ! असुरकुमार देवोने बे प्रकारनी शरीरावगाहना कही छे. ते आ प्रमाणे–भवधारणीय अने उत्तरवैक्रिय. तेमां जे भव-
धारणीय अवगाहना छे ते जघन्यथी अंगुलनो असंख्यातमो भाग अने उत्कृष्ट सात हाथ प्रमाण होय छे. अने जे उत्तरवैक्रिय छे ते
जघन्यथी अंगुलनो संख्यातमो भाग अने उत्कृष्ट लाख योजन प्रमाण छे. ए प्रमाणे यावत् स्तनित कुमार सुधी जाणवुं. एम सामान्य
व्यन्तर, ज्योतिषिको अने सौधर्म–ईशान देवोने जाणवुं. एम यावत् अच्युत देवलोक सुधी उत्तर वैक्रिय समजवुं. परन्तु सनत्कुमारने

प्रथम समये पण तेनी अवगाहना अंगुलना संख्यातमा भाग प्रमाणज होय छे, पण असंख्यातमा भाग प्रमाण होती नथी. संग्रहणीना
मूल टीकाकार आचार्य हरिभद्रसूरि कहे छे के—"उत्तरवैक्रिया तु तथाविधप्रयत्नभावादाद्यसमयेऽप्यङ्गुलसंख्येयभागमात्रैव, उत्कर्षतः
पञ्चदश धनूंषि अर्धतृतीया हस्ताः"। उत्तर वैक्रिय शरीरावगाहना तेवा प्रकारना प्रयत्नथी प्रथम समये पण अंगुलना संख्यातमा
भाग प्रमाण होय छे. अने उत्कृष्ट पंदर धनुष अने अढी हाथ होय छे. आ उत्तरवैक्रिय शरीरनी अवगाहनानुं परिमाण तेरमा प्रत-
रमां जाणवुं. बाकीना प्रतरोमां पूर्वे कहेला भवधारणीय शरीरना प्रमाणनी अपेक्षाए बमणुं जाणवुं. शर्करा प्रभामां भवधारणीय शरीर
उत्कृष्ट पंदर धनुष अने अढी हाथ छे. आ उत्कृष्ट भवधारणीय अवगाहनापरिमाण अगियारमे प्रतरे जाणवुं बाकीना प्रतरोमां आ
प्रमाणे छे—शर्कराप्रभाना पहेला प्रतरे सात धनुष, त्रण हाथ अने छ आंगळ, बीजा प्रतरमां आठ धनुष, बे हाथ अने नव आंगळः

"सो चेव तइयाए पढमे पयरम्मि होइ उस्सेहो । सत्त रयणीउ अंगुल उणवीसं सड्ढवुड्ढी य ॥
पयरे पयरे य तहा नवमे पयरम्मि होइ उस्सेहो । धणुयाणि एगतीसं एक्का रयणी य नायव्वा ॥

आ बे गाथानो अक्षरार्थ आ छे—जे बीजी शर्कराप्रभाना अगियारमा प्रतरने विशे भवधारणीय शरीरनी उत्कर्षथी उंचाइ पंदर धनुष, बे हाथ अने बार अंगुल प्रमाण कही छे तेज त्रीजी वालुकाप्रभाना पहेला प्रतरमां समजवी. त्यार पछी प्रतरे प्रतरे सात हाथ अने साडी ओगणीश आंगळनी वृद्धि करवी. एम करवाथी नवमा प्रतरमां पूर्वोक्त एकत्रीश धनुष अने एक हाथनुं भवधारणीय अवगाहनानुं प्रमाण थाय छे. उत्तर वैक्रियनुं उत्कृष्ट प्रमाण कहे छे—बासठ धनुष अने बे हाथ. आ प्रमाण नवमा प्रतरनी अपेक्षाए जाणवुं. अने बाकीना प्रतरोमां पोतपोताना भवधारणीय शरीर प्रमाणनी अपेक्षाए बमणुं बमणुं समजवुं.

चोथी पंकप्रभामां उत्कृष्ट भवधारणीय अवगाहना बासठ धनुष अने बे हाथनी छे. आ प्रमाण सातमा प्रतरने विशे जाणवुं. बाकीना प्रतरोमां आ प्रमाणे छे—पंकप्रभाना प्रथम प्रतरमां एकत्रीश धनुष अने एक हाथ, बीजा प्रतरमां छत्रीश धनुष, एक हाथ अने वीश आंगळ, त्रीजा प्रतरमां एकताळीश धनुष, बे हाथ अने सोळ आंगळ, चोथा प्रतरमां छेंताळीश धनुष, त्रण हाथ अने बार आंगळ, पांचमा प्रतरमां बावन धनुष अने आठ आंगळ, छठ्ठा प्रतरमां सत्तावन धनुष, एक हाथ अने चार आंगळ, अने सातमा प्रतरमां सूत्रमां कहेलुं परिमाण जाणवुं. अहीं पण आ भावार्थ छे—पहेला प्रतरमां जे परिमाण कह्युं छे तेने उपर उपरना प्रतरमां अनुक्रमे पांच धनुष अने वीश आंगळनी वृद्धि करवी. तेथी सातमा प्रतरमां सूत्रमां कहेलुं परिमाण थाय छे. कह्युं छे के—

"सो चेव चउत्थीए पढमे पयरम्मि होइ उस्सेहो । पंच धणु वीस अंगुल पयरे पयरे य वुड्ढी य ॥
जा सत्तमए पयरे नेरइयाणं तु होइ उस्सेहो । बासट्ठी धणुयाणं दोण्णि रयणी य बोद्धव्वा" ॥

"वालुकाप्रभाना नवमा प्रतरमां जे उंचाइ छे, तेज चोथी नरकपृथिवीना प्रथम प्रतरने विषे उंचाइ जाणवी अने प्रतरे प्रतरे पांच

धनुप अने वीश आंगळनी वृद्धि करवी. यावत् सातमा प्रतरमां नैरयिकोनी उंचाइ वासठ धनुप अने वे हाथ प्रमाण जाणवी.
उत्तर वक्रियनुं उत्कृष्ट परिमाण एकसो पचीश धनुप होय छे अने ते सातमा प्रतरे छे. वाकीना प्रतरोमां पोतपोताना भवधारणीय
शरीरनी अपेक्षाए वमणुं छे.

पांचमी धूमप्रभा पृथिवीमां उत्कृष्टथी भवधारणीय शरीरनुं परिमाण एकसो पचीश धनुपनुं होय छे. अने ते पांचमा प्रतरने
आश्रयी कहेलुं जाणवुं. वाकीना प्रतरोमां आ प्रमाणे छे—पहेला प्रतरमां वासठ धनुप अने वे हाथ, वीजा प्रतरमां अठ्योतेर धनुप
अने एक वेंत. त्रीजा प्रतरमां त्राणुं धनुप अने त्रण हाथ. चोथा प्रतरमां एकसो नव धनुप, एक हाथ अने एक वेंत. अने पांचमा
प्रतरमां सूत्रमां कहेलुं परिमाण समजवुं. अहीं पण आ तात्पर्य छे-जे पहेला प्रतरमां परिमाण कह्युं छे तेना उपर दरेक प्रतरे अनु-
क्रमे पंदर धनुप अने अढी हाथ वधारीए पटले पांचमा प्रतरमां पूर्वे कहेलुं परिमाण आवे छे. कह्युं छे के—

"सो चेव पंचमीए पढमे पयरम्मि होइ उस्सेहो। पनरस धणूणि दो हत्थ सड्ढ पयरेसु वुड्ढी य॥ नह पंचमए पयरे उस्सेहो धणुसयं तु पणवीसं"।

तेज पांचमी नरकपृथिवीना प्रथम प्रतरमां उंचाइ छे, तेमां पंदर धनुप अने अढी हाथनी वृद्धि करवी. तेथी पांचमा प्रतरमां एक
सो पचीश धनुपनी उंचाइ थाय छे. आ दोढ गाथानो अक्षरार्थ पूर्वनी पेठे करवो. उत्तर वक्रियनुं उत्कृष्ट परिमाण अढीसो धनुप
समजवुं. आ प्रमाण पांचमे प्रतरे जाणवुं अने वाकीना प्रतरोमां पोतपोताना भवधारणीय शरीरनी अपेक्षाए वमणुं जाणवुं.

छठ्ठी तमःप्रभा पृथिवीमां भवधारणीय शरीरनी अवगाहना उत्कृष्टथी अढीसो धनुप होय छे. अने ते त्रीजा प्रतरमां जाणवी. प्रथम
प्रतरमां एकसो पचीस धनुप, वीजा प्रतरमां एकसो साडी सत्याशी धनुप अने त्रीजा प्रतरमां सूत्रमां कहेलुं परिमाण होय छे. अहीं
आ तात्पर्य छे-प्रथम प्रतरमां जे परिमाण कह्युं छे तेना उपर प्रतरे प्रतरे साडी वासठ धनुप उमेरवां, एम करवाथी त्रीजा प्रतरने
विशे सूत्रोक्त परिमाण थाय छे. कह्युं छे के—

"सो चेव य छट्ठीए पढमपयरम्मि होइ उस्सेहो। वासट्ठी धणुय सड्ढा पयरे पयरे य वुड्ढीओ॥ छट्ठीए तइय पयरे दोसयपण्णासया होंति"।

तेज छट्ठी नरक पृथिवीना प्रथम प्रतरमां उंचाइ छे. तेमां साडी वासठ धनुपनी प्रतरे प्रतरे वृद्धि करवी. एम करवाथी छट्ठीना त्रीजा प्रतरे बसो पचास धनुष परिमाण थाय छे. अहीं पण उत्तरार्ध सहित गाथानो अक्षरार्थ पूर्वनी पेठे करवो. उत्तर वक्रियनु परिमाण उत्कर्षथी पांचसो धनुष होय छे अने ते त्रीजा प्रतरमां जाणवुं. प्रथमना बे प्रतरमां पोतपोताना भवधारणीय शरीरनी अपेक्षाए बमणुं बमणुं समजवुं.

सातमी नरक पृथिवीमां भवधारणीय शरीर उत्कृष्ट पांचसो धनुषप्रमाण छे अने उत्तर वैक्रिय हजार धनुष छे. बधे भवधारणीय शरीर जघन्यथी आंगळना असंख्यातमा भागप्रमाण अने उत्तर वैक्रिय अंगुलना संख्यातमा भागप्रमाण छे.

तिर्यञ्च पंचेन्द्रियनुं वैक्रिय शरीर उत्कृष्टथी बसोथी नवसो योजन सुधी छे. कारण के तेओनी तेथी वधारे मोटुं वैक्रिय शरीर करवानी शक्ति नथी. मनुष्योने कंइक अधिक लाख योजन प्रमाण वैक्रिय शरीर होय छे, कारण के विष्णुकुमार प्रमुखे तेवा प्रकारनुं शरीर कर्यानुं शास्त्रमां संभळाय छे. पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च अने मनुष्य बन्नेने जघन्य शरीर अंगुलना संख्यातमा भागप्रमाण (प्रारंभ काळे) होय छे, पण असंख्यातमा भागप्रमाण होतुं नथी. कारण के तेवा प्रकारना प्रयत्ननो संभव नथी.

असुरकुमारथी मांडी स्तनितकुमार सुधीना भवनपति, व्यन्तर, ज्योतिपिक अने सौधर्म-ईशान देवो प्रत्येकने जघन्य भवधारणीय वैक्रिय शरीरनी अवगाहना अंगुलना असंख्यातमा भागप्रमाण होय छे, अने ते उत्पत्ति समये जाणवी. तथा उत्कृष्ट अवगाहना सात हाथनी होय छे. उत्तर वैक्रियनी जघन्य अवगाहना अंगुलना संख्यातमा भागप्रमाण छे अने उत्कृष्ट लाख योजन प्रमाण छे. 'उत्तर-वेउव्विया जाव अच्चुओ कप्पो'—उत्तर वैक्रिय अच्युत देवलोक सुधी होय छे. तेथी उपर उत्तर वैक्रियनो संभव नथी. ए वात पूव कही छे. बधे जघन्य अवगाहना अंगुलना संख्यातमा भागप्रमाण छे अने उत्कृष्ट लाख योजन छे. भवधारणीय शरीर विविध प्रकारनुं होय छे, माटे ते जुदुं जुदुं कहे छे—'नवरं' इत्यादि. परन्तु भवधारणीय शरीरनी विशेपता छे-सनत्कुमार देवलोकमां जघन्यथी आंगळनो असंख्यातमो भाग अने उत्कृष्ट छ हाथ छे. 'एवं माहिंदेवि' ए प्रमाणे जघन्य अने उत्कृष्ट भवधारणीय शरीर माहेन्द्र देवलोकने-

विशे पण कहेवुं. आ सात सागरोपमनी स्थितिवाळा देवोने आश्रयी कहेलुं जाणवुं. बे त्रण इत्यादि सागरोपमनी स्थितिवाळाने आ प्रमाणे छे—सनत्कुमार अने माहेन्द्र कल्पमां जेओनी बे सागरोपमनी स्थिति छे तेओनुं भवधारणीय शरीर उत्कर्षथी पूरा सात हाथ प्रमाण छे. जेओनी त्रण सागरोपमनी स्थिति छे तेओनुं शरीर छ हाथ अने एक हाथना चार अगियारांश होय छे. जेओनी चार सागरोपमनी स्थिति छे तेओनुं शरीर छ हाथ अने एक हाथना त्रण अगियारांश होय छे. जेओनी पांच सागरोपमनी स्थिति छे तेओनुं शरीर छ हाथ अने हाथना बे अगियारांश होय छे, जेओनी छ सागरोपमनी स्थिति छे तेओनुं शरीर छ हाथ अने हस्तनो एक अगियारांश होय छे. अने जेओनी पूरा सात सागरोपमनी स्थिति छे तेओनुं पूरा छ हाथ प्रमाण भवधारणीय शरीर छे. ए संबन्धे कह्युं छे के—"अयरतिगं ठिइ जेसिं सणंकुमारे तहेव माहिंदे। रयणीछक्कं तेसिं भागचउक्काहियं देहो। तत्तो अयरे अयरे भागो एक्केक्कओ पडइ जाव। सागरसत्तठिईणं रयणीछक्कं तणुपमाणं" ॥ सनत्कुमार अने माहेन्द्र देवलोकमां जेओनी त्रण सागरोपमनी स्थिति छे तेओनुं शरीर छ हाथ अने एक हाथना अगियार भाग करीए एवा चार भाग अधिक होय छे. तेमांथी दरेक सागरोपमे एक एक भाग बाद करवो, यावत् सात सागरोपमनी स्थितिवाळा देवोनुं छ हाथनुं शरीरप्रमाण होय छे. अहीं जघन्य भवधारणीय शरीर बधे स्थळे पण अंगुलना असंख्यातमा भागप्रमाण छे अने ते प्रसिद्ध छे. माटे तेने छोडीने उत्कृष्ट अवगाहनानुं प्रतिपादन करे करे छे—'बंभलोग-लंतगेसु पञ्च रयणीओ' इति. ब्रह्मलोक अने लान्तक देवलोकमां पांच हाथनुं शरीर छे. जो के अहीं ब्रह्मलोकना उपर लान्तक छे, समश्रेणिए नथी, तोपण अहीं शरीरना प्रमाणनो विचार होवाथी आ बे देवलोकनी विवक्षा करी छे. कारण के बे देवलोकने अन्ते एक हाथ प्रमाण घटे छे. ए प्रमाणे आगळ पण शुक्र अने सहस्रार देवलोकने विशे तथा आनत, प्राणत, आरण अने अच्युत ए चार देवलोकने विशे एक एक हाथ प्रमाण शरीर घटे छे. एम ग्रैवेयकमां तथा पांच अनुत्तरने विशे एक एक हाथ प्रमाण शरीर घटे छे-एम बे चार इत्यादि देवलोकने साथे ग्रहण करवानुं कारण समजवुं. तेमां ब्रह्मलोक अने लान्तकने विषे भवधारणीय शरीर उत्कृष्ट पांच हाथ छे. ए शरीरप्रमाण लान्तकने विशे चौद सागरोपमनी स्थितिवाळा देवोने आश्रयी प्रतिपादन करेलुं समजवुं. बाकीना

सागरोपमनी स्थितिवाळा देवोने विशे आ प्रमाणे छे—जेओनी ब्रह्मलोकमां सात सागरोपमनी स्थिति छे तेओनुं भवधारणीय शरीर पूरा छ हाथ छे. जेओनी आठ सागरोपमनी स्थिति छे तेओनुं पांच हाथ अने हाथना छ अगियारांश होय छे. जेओनी नव सागरोपमनी स्थिति छे तेओनुं पांच हाथ अने हाथना पांच अगियारांश होय छे. जेओनी दस सागरोपमनी स्थिति छे तेओने पांच हाथ अने हाथना चार अगियारांश होय छे. लान्तकमां पण जेओनी दस सागरोपमनी स्थिति छे तेओने पटलुंज भवधारणीय शरीर उत्कृष्टथी होय छे. जेओनी लान्तकने विशे अगियार सागरोपमनी स्थिति छे तेओने पांच हाथ अने हाथना त्रण अगियारांश होय छे. जेओनी बार सागरोपमनी स्थिति छे तेओने पांच हाथ अने हाथना बे अगियारांश होय छे. जेओनी तेर सागरोपमनी स्थिति छे तेओने पांच हाथ अने हाथनो पक अगियारांश शरीरप्रमाण होय छे अने जेओनी चौद सागरोपमनी स्थिति छे तेओने पूरा पांच हाथ प्रमाण भवधारणीय शरीर छे.

'महासुक्कसहस्सारेसु चत्तारि रयणीओ'–महाशुक्र अने सहस्रारने विशे उत्कृष्ट चार हाथ प्रमाण भवधारणीय शरीर होय छे. प प्रमाण सहस्रार कल्पमां रहेला अढार सागरोपमनी स्थितिवाळा देवोने आश्रयी जाणवुं. बाकीना सागरोपमनी स्थितिवाळा देवोमां आ प्रमाणे छे—जेओनी महाशुक्र कल्पमां चौद सागरोपमनी स्थिति छे तेओनुं उत्कृष्टथी भवधारणीय शरीर संपूर्ण पांच हाथनुं होय छे. जेओनी पंदर सागरोपमनी स्थिति छे तेओनुं शरीर चार हाथ अने हाथना त्रण अगियारांश होय छे. जेओनी सोळ सागरोपमनी स्थिति छे तेओनुं शरीर चार हाथ अने पक हाथना बे अगियारांश होय छे. जेओनी सत्तर सागरोपमनी स्थिति छे तेओनुं शरीर चार हाथ अने हाथनो पक अगियारांश होय छे. अने सहस्रार देवोमां पण जेओनी स्थिति सत्तर सागरोपमनी छे तेओने पटलुं ज भवधारणीय शरीर होय छे. सहस्रार देवलोकमां जेओनी संपूर्ण अढार सागरोपमनी स्थिति छे तेओनुं परिपूर्ण चार हाथ प्रमाण भवधारणीय शरीर होय छे.

'आणयपाणयआरणच्चुपसु तिन्नि रयणीओ' इति. आनत, प्राणत, आरण अने अच्युत देवलोकमां उत्कृष्ट त्रण हाथनुं भवधारणीय शरीर होय छे. आ अच्युत देवलोकमां बावीश सागरोपमनी स्थितिवाळा देवोने आश्रयी समजवुं. बाकीना सागरोपमनी स्थितिवाळाने

विशे आ प्रमाणे छे—जेओनी आनत कल्पमां पण परिपूर्ण के कंइक अधिक अढार सागरोपमनी स्थिति छे तेओने उत्कृष्ट चार हाथनुं भवधारणीय शरीर होय छे. जेओनी ओगणीश सागरोपमनी स्थिति छे तेओने त्रण हाथ अने हाथना त्रण अगियारांश प्रमाण शरीर होय छे. प्राणत कल्पमां पण जेओनी ओगणीश सागरोपमनी स्थिति छे तेओने एटलुं ज भवधारणीय शरीर होय छे. जेओनी पुनः प्राणत कल्पमां वीश सागरोपमनी स्थिति छे तेओने त्रण हाथ अने हाथना बे अगियारांश शरीर होय छे. जेओनी आरण कल्पमां पण वीश सागरोपमनी स्थिति छे तेओने एटलुं ज भवधारणीय शरीर होय छे. जेओनी आरण कल्पमां पण एकवीश सागरोपमनी स्थिति छे तेओने त्रण हाथ अने एक हाथनो अगियारमो भाग भवधारणीय शरीर होय छे. अच्युत कल्पमां पण जेओनी एकवीश सागरोपमनी स्थिति छे तेओने एटलुं ज भवधारणीय शरीर होय छे. जेओनी अच्युत कल्पमां बावीश सागरोपमनी स्थिति छे तेओने उत्कृष्ट पूरा त्रण हाथ शरीर होय छे.

'गेवेज्जकप्पातीत'-इत्यादि. ग्रैवेयक कल्पातीत देवोने विशे एक भवधारणीय शरीर होय छे-इत्यादिनो विचार कर्यो छे. 'नवरं उक्कोसेणं दो रयणीओ'त्ति-परन्तु उत्कृष्टथी बे हाथ प्रमाण शरीर होय छे. ए नवमा ग्रैवेयकने विशे एकत्रीश सागरोपमनी स्थिति-वाळा देवोने आश्रयी जाणवुं. बाकीना सागरोपमनी स्थितिवाळाने विशे आ प्रमाणे छे—पहेला ग्रैवेयकने विशे जेओनी बावीश सागरोपमनी स्थिति छे तेओनुं त्रण हाथ भवधारणीय शरीर छे, जेओनी त्यां ज तेवीश सागरोपमनी स्थिति छे तेओनुं शरीर बे हाथ अने एक हाथना आठ अगियारांश प्रमाण होय छे. बीजा ग्रैवेयकमां पण जेओनी तेवीश सागरोपमनी स्थिति छे तेओने एटलुं ज भवधारणीय शरीर होय छे. जेओनी त्यां चोवीश सागरोपमनी स्थिति छे तेओने भवधारणीय शरीर बे हाथ अने हाथना सात अगियारांश प्रमाण होय छे. त्रीजा ग्रैवेयकमां पण जेओनी चोवीश सागरोपमनी स्थिति छे तेओने एटलुं ज भवधारणीय शरीर होय छे. जेओनी त्यां पचीश सागरोपमनी स्थिति छे तेओने बे हाथ अने हाथना छ अगियारांश भवधारणीय शरीर होय छे. चोथा ग्रैवेयकने विशे पण जेओनी पचीश सागरोपमनी स्थिति छे तेओने एटलुंज भवधारणीय शरीर होय छे. जेओनी त्यां छवीश सागरो-

७. आहारगसरीरे णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! एगागारे पन्नत्ते । जइ एगागारे किं मणूसआहार-

७. हे भगवन् ! आहारक शरीर केटला प्रकारनुं कह्युं छे ? हे गौतम ! एक आकारवाळुं कह्युं छे. जो एक आकारवाळुं छे तो शुं

पमनी स्थिति छे तेओने बे हाथ अने हाथना पांच अगिआरांश प्रमाण शरीर होय छे. पांचमा ग्रैवेयकमां पण जेओनी छवीश साग-
रोपमनी स्थिति छे तेओने पटलुंज भवधारणीय शरीर होय छे. जेओनी त्यां सत्यावीश सागरोपमनी स्थिति छे तेओने बे हाथ अने
हाथना चार अगियारांश भवधारणीय शरीर होय छे. छट्ठा ग्रैवेयकमां पण जेओनी सत्यावीश सागरोपमनी स्थिति छे तेओने पटलुंज भवधारणीय
शरीर होय छे. जेओनी त्यां अठ्यावीश सागरोपमनी स्थिति छे तेओने बे हाथ अने हाथना त्रण अगियारांश भवधारणीय शरीर होय छे.
सातमा ग्रैवेयकमां पण जेओनी अठ्यावीश सागरोपमनी स्थिति छे तेओने पटलुंज शरीर होय छे. जेओनी त्यां ओगणत्रीश सागरोप-
मनी स्थिति छे तेओने भवधारणीय शरीर बे हाथ अने हाथना बे अगियारांश प्रमाण होय छे आठमा ग्रैवेयकमां पण जेओनी ओगणत्रीश
सागरोपमनी स्थिति छे तेओने पटलुंज शरीर होय छे. जेओनी त्यां त्रीश सागरोपमनी स्थिति छे, तेओने बे हाथ अने एक हाथनो
अगियारमो भाग भवधारणीय शरीर होय छे. नवमा ग्रैवेयकमां जेओनी स्थिति त्रीश सागरोपमनी छे तेओने भवधारणीय शरीर
पटलुंज होय छे. जेओनी त्यां एकत्रीश सागरोपमनी स्थिति छे तेओने परिपूर्ण बे हाथनुं भवधारणीय शरीर होय छे. 'एवं अणुत्तरे'
इत्यादि. ए प्रमाणे-ग्रैवेयक देवोने कह्या प्रमाणे अनुत्तरौपपातिक देवोने पण सूत्र कहेवुं. परन्तु भवधारणीय शरीर उत्कृष्टथी एक
हाथ प्रमाण कहेवुं. ए तेत्रीश सागरोपमनी स्थितिवाळा देवोने आश्रयी जाणवुं. जेओनी विजयादि चार विमानने विशे एकत्रीश
सागरोपमनी स्थिति छे तेओने संपूर्ण बे हाथ प्रमाण भवधारणीय शरीर होय छे. जेओनी त्यां ज मध्यम बत्रीश सागरोपमनी स्थिति
छे तेओने एक हाथ अने एक हाथनो अगियारमो भाग भवधारणीय शरीर होय छे. जेओनी त्यां सर्वार्थसिद्ध महाविमानमां तेत्रीश
सागरोपमनी स्थिति छे तेओने एक हाथ भवधारणीय शरीर होय छे. जघन्य बधे आंगळना असंख्यात भाग प्रमाण जाणवुं.

गसरीरे, अमणूसआहारगसरीरे ? गोयमा ! मणूसआहारगसरीरे, नो अमणूसआहारगसरीरे। जइ मणूसआहारगसरीरे किं संमुच्छिममणूसआहारगसरीरे, गब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे ? गोयमा! नो संमुच्छिममणूसआहारगसरीरे, गब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे । जइ गब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे किं कम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे, अकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे, अंतरदीवगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे ? गोयमा ! कम्मभूमगगब्भवक्कंतिय०, नो अकम्मभूमगगब्भवक्कंतिय०, नो अं-

मनुष्य आहारक शरीर छे के अमनुष्य (मनुष्य सिवाय) आहारक शरीर छे ? हे गौतम ! मनुष्यआहारक शरीर छे पण अमनुष्य—मनुष्य सिवाय आहारक शरीर नथी. जो मनुष्य आहारकशरीर छे तो शुं संमूर्छिम मनुष्य आहारक शरीर होय के गर्भज मनुष्य आहारक शरीर होय ? हे गौतम ! संमूर्छिम मनुष्य आहारक शरीर नथी, पण गर्भज मनुष्य आहारक शरीर छे. जो गर्भज मनुष्य-आहारक शरीर छे तो शुं कर्मभूमिना गर्भज मनुष्य आहारक शरीर होय, अकर्मभूमिना गर्भज मनुष्य आहारक शरीर होय के अन्तर्द्वीपना गर्भज मनुष्य आहारक शरीर होय ? हे गौतम ! कर्मभूमिना गर्भज मनुष्य आहारक शरीर होय, पण अकर्मभूमिना के

७. ए प्रमाणे वैक्रिय शरीरनुं पण विधि-प्रकार, संस्थान अने प्रमाण कह्युं, हवे आहारक शरीरना प्रकारादि प्रतिपादन करवानी इच्छावाळ. आचार्य कहे छे-'आहारगसरीरे णं भंते ! कइविहे पन्नत्ते' हे भगवन् ! आहारक शरीर केटला प्रकारे छे ? इत्यादि सुगम छे, परन्तु 'संजय'त्ति संयच्छन्ति स्म-सर्व सावद्ययोगोथी सम्यक् विराम पामे, तेनी विरति करे ते संयत-सर्वविरति चारित्रवाळा. अहीं कर्तामां अर्थमां 'त' प्रत्यय करवामां आव्यो छे. असंयत-अविरतिसम्यग्दृष्टि, संयतासंयत-देशविरतिवाळा. तथा 'पमत्त'त्ति-प्रमाद्यन्ति स्म-

तरदीवगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे । जइ कम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे किं संखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे, असंखेज्जवासाउकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे ? गोयमा ! संखिज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे, नो असंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे । जति संखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहार-

अन्तर्द्वीपना मनुष्य संबन्धे आहारक शरीर न होय. जो कर्मभूमिना गर्भज मनुष्य संबन्धी आहारक शरीर छे तो शुं संख्यात वरसना आयुषवाळा कर्मभूमिना गर्भज मनुष्य आहारक शरीर होय के असंख्यात वरसना आयुषवाळा कर्मभूमिना गर्भज मनुष्य आहारक शरीर होय ? हे गौतम ! संख्यात वरसना आयुषवाळा कर्मभूमिना गर्भज मनुष्य आहारक शरीर होय, पण असंख्यात वरसना आयुषवाळा कर्मभूमिना गर्भज मनुष्य संबन्धी आहारक शरीर न होय. जो संख्याता वरसना आयुषवाळा कर्मभूमिना गर्भज मनुष्य

मोहनीयादि कर्मना उदयना सामर्थ्यथी संज्वलन कषाय अने निद्रादिमांना कोइ पण प्रमादना योगथी संयमयोगमां शिथिल थयेला होय ते प्रमत्त. अहीं पूर्वेनी पेठे कर्त्ताना अर्थमां 'त' प्रत्यय थयो छे. तेओ प्रायः गच्छवासी होय छे. तेओने क्वचित् अनुपयोगनो–आत्मविस्मृतिनो संभव छे. तेथी विपरीत अप्रमत्त कहेवाय छे. ते प्रायः जिनकल्पिक, परिहारविशुद्धिक, अने [1]यथालन्दकल्पिकनी

१ पाणीथी भींजायेलो हाथ जेटला वखतमां सूकाइ जाय तेटला काळने शास्त्रनी परिभाषामां जघन्य लन्द कहे छे, परन्तु अहीं पांच रात्रिदिवसरूप उत्कृष्ट लन्द–काळ ग्रहण करवो. एक मोटा शहेरना छ विभाग कल्पी एक एक विभागमां उत्कृष्टथी पांच दिवस सुधी भिक्षाए फरे अने ए प्रमाणे मास कल्प पूर्ण करे ते यथालन्दिक कहेवाय छे. पांच साधुओनो गण आ कल्पनो स्वीकार करे छे, ते कल्पनी घणीखरी मर्यादा जिनकल्पना जेवी छे.

गसरीरे किं पज्जत्तसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे, अपज्जत्तसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे? गोयमा! पज्जत्तसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे, नो अपज्जत्तसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे। जइ पज्जत्तसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे किं सम्मदिट्ठीपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगग-

---

आहारक शरीर होय तो शुं पर्याप्ता संख्याता वरसना आयुषवाळा कर्मभूमिना गर्भज मनुष्य आहारक शरीर होय के अपर्याप्ता संख्याता वरसना आयुषवाळा कर्मभूमिना गर्भज मनुष्य आहारक शरीर होय? हे गौतम! पर्याप्ता संख्याता वरसना आयुषवाळा कर्मभूमिना गर्भज मनुष्य आहारक शरीर होय, पण अपर्याप्त संख्याता वरसना आयुषवाळा कर्मभूमिना गर्भज मनुष्य आहारक शरीर न होय. जो पर्याप्त संख्याता वरसना आयुषवाळा कर्मभूमिना गर्भज मनुष्य आहारक शरीर छे तो शुं सम्यग्दृष्टि पर्याप्ता संख्याता वरसना आयु-

---

प्रतिमा-अभिग्रहने प्राप्त थयेला होय छे. तेओने निरंतर उपयोग-आत्मजागृतिनो संभव छे. अहीं जिनकल्पिकादि लब्धिनो उपयोग करता नथी. कारण के तेओनो तेवा प्रकारनो कल्प-आचार छे. जे आ गच्छवासी छे तेओ आहारक शरीर करे छे, तेओ पण ते वखते लब्धिनो उपयोग करवाने लीधे उत्सुकता थवाथी प्रमादयुक्त होय छे अने आहारक शरीरनो त्याग करतां पण प्रमादवाळा होय छे. कारण के आत्मप्रदेशोनुं औदारिक शरीरने विशे संहरण करवा वडे व्याकुलपणुं होय छे. तेओ आहारक शरीरमां अन्तर्मुहूर्त सुधी रहे छे, तेथी जो के वच्चेना काळमां केटलोक काळ कांइक विशुद्धि होवाथी कार्मग्रन्थिक आचार्योए तेओनुं अप्रमत्तपणुं वर्णवेलुं छे, तो पण ते लब्धिनो उपयोग करवा वडे प्रमत्त ज छे, माटे 'नो अपमत्तसंजए' इत्यादि सूत्रथी अप्रमत्तभावनो प्रतिषेध कर्यो छे. 'इड्ढिपत्त'त्ति—ऋद्धिप्राप्त-ऋद्धि-आमर्शौषधि (जेनो आमर्श-स्पर्श रोगने दूर करवामां औषधिरूप थाय तेवी लब्धि) वगेरे आत्मिक

ऽभवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे, मिच्छद्दिट्ठीपज्जत्तसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे ? गोयमा ! सम्म-सरीरे, सम्मामिच्छद्दिट्ठिपज्जत्तसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे, नो मिच्छादिट्ठिपज्जत्त०, नो स-दिट्ठिपज्जत्तसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे । जइ सम्मद्दिट्ठिपज्जत्त-म्मामिच्छद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे, नो मिच्छादिट्ठिपज्जत्त०, नो स-

---

पवाळा कर्मभूमिना गर्भज मनुष्य आहारक शरीर होय, मिथ्यादृष्टि पर्याप्त संख्याता वरसना आयुषवाळा कर्मभूमिना गर्भज मनुष्य आहारक शरीर होय के सम्यग्मिथ्यादृष्टि पर्याप्त संख्याता वरसना आयुषवाळा कर्मभूमिना गर्भज मनुष्य आहारक शरीर होय ? हे गौतम ! सम्यग्दृष्टि पर्याप्त संख्याता वरसना आयुषवाळा कर्मभूमिना गर्भज मनुष्य आहारक शरीर होय, पण मिथ्यादृष्टि पर्याप्त अने सम्यग्मिथ्यादृष्टि पर्याप्त संख्याता वरसना आयुषवाळा कर्मभूमिना गर्भज मनुष्य आहारक शरीर न होय. जो सम्यग्दृष्टि पर्याप्त

शक्ति, तेने प्राप्त थयेल ऋद्धिप्राप्त कहेवाय छे. तेथी विपरीत अनृद्धिप्राप्त (लब्धि सिवायना अन्य) अहेवाय छे. प्रथमथी विशिष्ट अने उत्तरोत्तर अपूर्व अपूर्व अर्थनुं प्रतिपादन करनार श्रुतमां प्रवेश करतो अने श्रुतना सामर्थ्यथी तीव्र अने तीव्रतर शुभ भावना उपर चढतो अप्रमत्त थतां ऋद्धिओ प्राप्त करे छे. ए संवन्धे कह्युं छे के—

अवगाहते च स श्रुतजलधिं प्राप्नोति चावधिज्ञानम् । मानसपर्यायं वा ज्ञानं कोष्ठादिबुद्धीर्वा ॥
चारणवैक्रियसर्वौषधिताद्या वाऽपि लब्धयस्तस्य । प्रादुर्भवन्ति गुणतो बलानि वा मानसादीनि ॥

ते-अप्रमत्त श्रुतसागरमां प्रवेश करे छे. अने अवधिज्ञान तथा मनःपर्याय ज्ञान के कोष्ठादि बुद्धि प्राप्त करे छे. तेने चारण, वैक्रिय अने सर्वौषधि वगेरे लब्धिओ तथा मानसिक वळ वगेरे गुणथी प्रगट थाय छे. मानस-मन संवन्धी पर्यायो-विषयो जेने छे ते

संखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे किं संजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्म-भूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे, असंजतसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतिय-मणूसआहारगसरीरे, संजयासंजयसम्मदिट्ठीपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारग-सरीरे ? गोयमा ! संजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे, नो

संख्याता वरसना आयुषवाळा कर्मभूमिना गर्भज मनुष्य आहारक शरीर छे तो शुं संयत सम्यग्दृष्टि पर्याप्त संख्याता वरसना आयु-पवाळा कर्मभूमिना गर्भज मनुष्य आहारक शरीर होय, असंयत सम्यग्दृष्टि पर्याप्त संख्याता वरसना आयुषवाळा कर्मभूमिना गर्भज मनुष्य आहारक शरीर होय के संयतासंयत सम्यग्दृष्टि पर्याप्त संख्याता वरसना आयुषवाळा कर्मभूमिना गर्भज मनुष्य आहारकशरीर होय ? हे गौतम ! संयत सम्यग्दृष्टि पर्याप्त संख्यातायुष्क गर्भज कर्मभूमिज मनुष्य आहारक शरीर होय पण असंयत सम्यग्दृष्टि पर्याप्त

मानसपर्याय अथवा मनःपर्याय कहेवाय छे. 'कोष्ठादिबुद्धीर्वा' अहीं आदि शब्दथी पदानुसारी अने बीजबुद्धिनुं ग्रहण करवुं. सिद्धान्तमां परम अतिशय रूप त्रण प्रकारनी बुद्धि कहेली छे. ते आ प्रमाणे—१ कोष्ठबुद्धि, २ पदानुसारी बुद्धि अने ३ बीजबुद्धि. तेमां कोष्ठक-कोठारमां धान्य होय तेनी पेठे जे बुद्धि आचार्यना मुखथी नीकळेला सूत्र अने अर्थने ते ज रूपमां धारण करे पण तेमांथी कालान्तरे पण कांइपण विस्मृत न थाय ते कोष्ठबुद्धि. जे बुद्धि एक पण सूत्रना पदने जाणी बाकीनुं श्रुत नहि सांभळवा छतां जे रीते होय ते रीते जाणे ते पदानुसारी बुद्धि. जे तेवा प्रकारना एक अर्थपदने अनुसरी बाकीनुं नहि सांभळवा छतां यथार्थ-पणे घणा अर्थने जाणे ते बीजबुद्धि. सौथी उत्तम अने पराकाष्ठाए पहोंचेली ते बीजबुद्धि पूज्य गणधरोने होय छे. ते गणधर भगवंतो-'उप्पन्ने इ वा, विगमे इ वा, धुवे इ वा' ए उत्पादादि त्रण पदने सांभळी सर्व द्वादशाङ्गीरूप प्रवचननी रचना करे छे.

पढमेण माणुसोत्तरनगं स नन्दिस्सरं तु विइएण। एइ तओ तइएणं कयचेइयवंदणो इहइं ॥
पढमेणं नंदणवणे विअउप्पाएण पंडगवणम्मि। एइ इहं तइएणं जो विज्जाचारणो होइ ॥"

जङ्घा अने विद्यावडे अतिशय गमनना सामर्थ्यवाळा चारण मुनिओ होय छे. प्रथम जङ्घाचारण जङ्घा वडे सूर्यना किरणोनुं पण अवलम्बन करीने जाय छे. जङ्घाचारण एक उत्पात वडे-एक पगले रुचकवर द्वीपमां जाय छे अने त्यांथी पाछा फरतां बीजा उत्पात-पगले नन्दीश्वरमां जाय छे, अने ते पछी त्रीजा उत्पात-पगले स्वस्थाने आवे छे. प्रथम उत्पात वडे पंडक वन, बीजा उत्पात वडे नन्दन वन अने त्रीजा उत्पात वडे अहीं आवे छे. विद्याचारण प्रथम उत्पात वडे मानुषोत्तर पर्वत अने बीजा उत्पात वडे नन्दीश्वर जाय छे, अने त्यां चैत्यवन्दन करी त्रीजा उत्पात वडे अहीं आवे छे. प्रथम उत्पात वडे नन्दन वन, अने बीजा उत्पात वडे पांडुक वनमां जाय छे अने त्रीजा उत्पातवडे अहीं आवे छे. तथा जेना सर्व विष्ठा मूत्रादिक औषधरूप छे ते सर्वौषधलब्धिवाळो कहेवाय छे. तात्पर्य ए छे के जेनुं मूत्र, विष्ठा, कफ, के शरीरनो मेल रोगने शान्त करवामां समर्थ होय ते सर्वौषधलब्धिवाळो जाणवो. आदि शब्दथी आमर्षौषध्यादि लब्धिनुं ग्रहण करवुं. जेनो आमर्ष-स्पर्श औषधरूप एटले रोगने दूर करवामां समर्थ होय ते आमर्षौषध लब्धिवाळो होय छे. अप्रमत्त संयत ए ऋद्धि-लब्धिओ प्राप्त करी पछी प्रमत्त थाय छे. तेनुं ज अहीं प्रयोजन छे. ते माटे कह्युं छे के—'इड्ढिपत्तपमत्तसंजय'-इत्यादि. ऋद्धिप्राप्त प्रमत्तसंयतआहारक शरीर होय छे.

अहीं कोइ शङ्का करे के 'मनुष्यने आहारक शरीर होय छे एम कहेवाथी अमनुष्यने आहारक शरीर होतुं नथी एम अर्थात् समजाय छे तो 'नो अमणुस्साहारगसरीरे'-अमनुष्यने आहारक शरीर नथी-इत्यादि कथन निरर्थक होवाथी केम कह्युं? तेनुं समाधान ए छे के अहीं त्रण प्रकारना शिष्यो छे ते आ प्रमाणे—उद्घटितज्ञ, मध्यम बुद्धिवाळा, अने प्रपञ्चितज्ञ. तेओमां जे उद्घटितज्ञ-अर्थनुं उद्घाटन करी जाणनारा बुद्धिमान् अने मध्यमबुद्धिवाळा छे ते पूर्वोक्त अर्थापत्तिगम्य अर्थने जाणे छे, परन्तु जेओ हजी पण अव्युत्पन्न होवाथी पूर्वोक्त अर्थापत्तिगम्य अर्थ समजवामां कुशल नथी तेओ प्रपञ्चित-विस्तारपूर्वक कहेला अर्थने जाणवामां समर्थ

सम्मद्दिट्ठीसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगमणूसआहारगसरीरे किं इड्ढिपत्तप्पमत्तसंयतसम्मद्दिट्ठिकम्मभूमगसंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे, अणिड्ढिपत्तपमत्तसंयतकम्मभूमगसंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे ? गोयमा ! इड्ढिपत्तप्पमत्तसंयतसम्मद्दिट्ठिसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे, नो अणिड्ढिपत्तप्पमत्तसंयतसम्मद्दिट्ठिसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे,

शरीर होय, पण अप्रमत्त संयत पर्याप्त सम्यग्दृष्टि कर्मभूमिज गर्भज मनुष्य आहारक शरीर न होय. जो प्रमत्त संयत सम्यग्दृष्टि पर्याप्त संख्यातायुष्क कर्मभूमिज गर्भज मनुष्य आहारक शरीर छे तो शुं ऋद्धिप्राप्त प्रमत्त संयत सम्यग्दृष्टि पर्याप्त संख्यातायुष्क कर्मभूमिज गर्भज मनुष्य आहरक शरीर होय के ऋद्धिने अप्राप्त प्रमत्तसंयत सम्यग्दृष्टि पर्याप्त संख्यातायुष्क कर्मभूमिज गर्भज मनुष्य आहारक शरीर होय ? हे गौतम ! ऋद्धिप्राप्त प्रमत्तसंयत सम्यग्दृष्टि पर्याप्त संख्यातायुष्क कर्मभूमिज गर्भज मनुष्य आहारक शरीर

प्रकारना छे—जङ्घाचारण अने विद्याचारण. तेमां चारित्र अने तपविशेषना प्रभावथी जेओने गमन करवानी लब्धि विशेष उत्पन्न थइ छे ते जङ्घाचारण. जेओने विद्याना सामर्थ्यथी गमन करवानी लब्धि उत्पन्न थइ छे ते विद्याचारण. जङ्घाचारण रुचकवर द्वीप सुधी जवाने समर्थ छे अने विद्याचारण नन्दीश्वर सुधी जवाने समर्थ छे. तेमां जङ्घाचारण कोइपण स्थळे जवानी इच्छावाळा होय तो, ते सूर्यकिरणोनी निश्रा (अवलम्बन) करीने त्यां जाय छे अने विद्याचारण पण एम ज जाय छे. जङ्घाचारण रुचकवर द्वीपे जता एक उत्पात वडे जाय छे अने त्यांथी पाछा आवता एक उत्पात वडें नन्दीश्वर द्वीपे आवे छे अने बीजा उत्पात वडे पोताना स्थाने आवे छे. जो मेरु पर्वतना शिखर उपर जवानी इच्छावाळा होय तो तेओ पहेला उत्पातवडे त्यां रहेला पंडक वन उपर जाय छे, अने त्यांथी पाछा आवता प्रथम उत्पातवडे नन्दनवनमां आवे छे अने बीजा उत्पातवडे स्वस्थाने आवे छे. चारित्रातिशयना प्रभावथी

रीरे। आहारगसरीरे णं भंते! किंसंठिते पन्नत्ते? गोयमा! समचउरंससंठाणसंठिते पन्नत्ते। आहारगसरीरस्स णं भंते! केमहालिया सरीरोगाहणा पन्नत्ता? गोयमा! जहन्नेणं देसूणा रयणी, उक्कोसेणं पडिपुण्णा रयणी।

होय, पण ऋद्धिने अप्राप्त प्रमत्तसंयत सम्यग्दृष्टि पर्याप्त संख्यातायुष्क कर्मभूमिज गर्भज मनुष्य आहारक शरीर न होय. हे भगवन्! आहारक शरीर केवा प्रकारना संस्थानवाळुं छे? हे गौतम! एक समचतुरस्र संस्थानवाळुं छे. हे भगवन्! आहारक शरीरनी केटली मोटी शरीरावगाहना छे? हे गौतम! जघन्यथी कांइक न्यून एक हाथ अने उत्कृष्ट संपूर्ण एक हाथ होय छे.

जङ्घाचारण थाय छे, तेथी लब्धिनो उपयोग करवानुं औत्सुक्य थवावडे प्रमादनो संभव होवाथी चारित्रना अतिशयहेतुक लब्धि क्षीण थाय छे तेथी पाछा वळता बे उत्पात वडे स्वस्थाने आवे छे. विद्याचारण तो प्रथम उत्पातवडे मानुषोत्तर पर्वते जाय छे अने बीजा उत्पातवडे नन्दीश्वर द्वीपे जाय छे अने त्यांथी पाछा वळता एक उत्पातवडे स्वस्थाने आवे छे. तथा ते उपर जतां प्रथम उत्पातवडे नन्दनवन जाय छे अने बीजा उत्पातवडे पंडक वनमां जाय छे. त्यांथी पाछा वळतां एक उत्पातवडे स्वस्थाने आवे छे. विद्याचारण विद्याना सामर्थ्यथी थाय छे. अने परिशीलन-अभ्यास करातो विद्या स्फुट अने वधारे स्फुट थती जाय छे तेथी पाछा वळता वधारे शक्तिनो संभव होवाथी एक उत्पातवडे स्वस्थाने आवे छे. कह्युं छे के—

"अइसयचरणसमत्था जङ्घाविज्जाहि चारणा मुणओ। जङ्घाइ जाइ पढमो नीसं काउं रविकरे वि॥
एगुप्पाएण गओ रुयगवरम्मि उ तओ पडिनियत्तो। बिइएणं नंदिस्सरमिहं तओ एइ तइएणं॥
पढमेणं पंडगवणं बिइउप्पाएण नंदणं एइ। तइउप्पाएण तओ इह जङ्घाचारणो एइ॥

असंजतसम्मदिट्ठिपज्जत्तआहारगसरीरे, नो संजतासंजतसम्मदिट्ठिपज्जत्तआहारगसरीरे। जइ संजतसम्मदिट्ठिपज्जत्तसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे किं पमत्तसंजतसम्मदिट्ठिसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे, अपमत्तसंजतसम्मदिट्ठिसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे ? गोयमा ! पमत्तसंजतसम्मदिट्ठिपज्जत्तसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे, नो अपमत्तसंजतसम्मदिट्ठिकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे। जइ पमत्तसंजतसम्मदिट्ठिकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे, नो अपमत्तसंजतसम्मदिट्ठिकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे ।

संख्यातायुष्क कर्मभूमिज मनुष्य आहारकशरीर न होय, तेम संयतासंयत सम्यग्दृष्टि पर्याप्त संख्यातायुष्क कर्मभूमिज गर्भज मनुष्य आहारक शरीर न होय. जो संयत सम्यग्दृष्टि पर्याप्त संख्यातायुष्क कर्मभूमिज गर्भज मनुष्य आहारक शरीर छे तो शुं प्रमत्तसंयत पर्याप्त सम्यग्दृष्टि कर्मभूमिज गर्भज मनुष्य आहारक शरीर होय के अप्रमत्त संयत सम्यग्दृष्टि पर्याप्त संख्यातायुष्क कर्मभूमिज गर्भज मनुष्य आहारक शरीर होय ? हे गौतम ! प्रमत्त संयत सम्यग्दृष्टि पर्याप्त संख्यातायुष्क कर्मभूमिज गर्भज मनुष्य आहारक

तथा 'चारण-वैक्रिय-सर्वौषधिताद्याः' चारण, वैक्रिय अने सर्वौपधिता वगेरे लब्धिओ पण अप्रमत्त संयतने प्राप्त थाय छे. तेमां चरण-गमन शक्ति जेओने होय ते चारण. अहीं मत्वर्थक 'अण्' प्रत्यय थयो छे. तेमां गमन तो बीजा मुनिओने पण होय छे, तेथी विशे-पण बीजी रीते सार्थक नहि थतुं होवाथी विशिष्ट गमन ग्रहण करवुं. तेथी अतिशय अर्थमां मत्वर्थक 'अण्' प्रत्यय थयो छे. जेमके रूप-वाळी कन्या, जो के रूप तो बधी कन्याओमां होय छे, परन्तु अहीं विशिष्ट रूप ग्रहण करवानुं छे एटले विशिष्ट रूपवाळी कन्या ए अर्थ छे. तेथी अहीं आ अर्थ थाय छे—अतिशय चरण-गमन करवामां समर्थ ते चारण. अहीं भाष्यकार पोतानी करेली भाष्यनी टीकामां कहे छे—'अतिशयचरणाच्चारणाः, अतिशयगमनादित्यर्थः।" अतिशय गमनशक्ति होवाथी चारण कहेवाय छे. ते चारण बे

८. तेयगसरीरे णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पन्नत्ते, तंजहा—एगिंदियतेयगसरीरे जाव पंचिंदियतेयगसरीरे । एगिंदियतेयगसरीरे णं भंते ! कइविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचविधे पन्नत्ते, तंजहा–पुढविकाइय० जाव वणस्सइकाइयएगिंदियतेयगसरीरे । एवं जहा ओरालियसरीरस्स भेदो भणितो तहा तेयगस्सवि जाव चउरिंदियाणं । पंचिंदियतेयगसरीरे णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे पन्नत्ते, तंजहा–नेर-

८. हे भगवन् ! तैजस शरीर केटला प्रकारनुं छे ? हे गौतम ! पांच प्रकारनुं छे. ते आ प्रमाणे–एकेन्द्रिय तैजस शरीर, यावत् पंचेन्द्रिय तैजस शरीर. हे भगवन् ! एकेन्द्रिय तैजस शरीर केटला प्रकारनुं छे ? हे गौतम ! पांच प्रकारनुं छे. ते आ प्रमाणे–पृथिवीकायिक, यावत् वनस्पतिकायिक एकेन्द्रिय तैजस शरीर. ए प्रमाणे जेम औदारिक शरीरनो भेद कह्यो तेम तैजस शरीरनो पण चउरिन्द्रिय जीवो सुधी भेद कहेवो. हे भगवन् ! पंचेन्द्रिय तैजस शरीर केटला प्रकारे छे ? हे गौतम ! चार प्रकारे छे. ते आ

होय छे. बीजी रीते जाणी शकता नथी. तेथी तेवा शिष्योना उपर उपकार करवा माटे अर्थापत्तिगम्य प्रतिपक्षरूप अर्थना निषेधनुं कथन करवामां आव्युं छे. कारण के महान् पुरुषो परम कारुणिक होवाथी सामान्यपणे बधाना उपकार माटे प्रवृत्ति करे छे. माटे कांइ पण दोष नथी.

'जहण्णेणं देसूणा रयणी' आहारक शरीरनी जघन्यथी अवगाहना कांइक न्यून रत्नि–एक हाथनी होय छे. कारण के तेवा प्रकारना प्रयत्नथी आहारक शरीरना प्रारंभ समये पण तेनी एटली ज अवगाहना होय छे.

८. ए प्रमाणे आहारक शरीरना भेद, संस्थान अने अवगाहनानुं प्रमाण कह्युं, हवे तैजस शरीरना भेद वगेरेनुं निरूपण करवानी इच्छावाळा सूत्रकार कहे छे—'तेयगसरीरे णं भंते !—हे भगवन् ! तैजस शरीर केटला प्रकारनुं छे ? इत्यादि. अहीं तैजस शरीर

इयतेयगसरीरे, जाव देवतेयगसरीरे, नेरइयाणं दुगतो भेदो भाणितव्वो जहा वेउव्वियसरीरे। पंचिंदियतिरि-
क्खजोणियाणं मणूसाण य जहा ओरालियसरीरे भेदो भणितो तहा भाणियव्वो। देवाणं जहा वेउव्वियसरी-
रभेदो भणितो तहा भाणियव्वो, जाव सव्वट्ठसिद्धदेवत्ति। तेयगसरीरे णं भंते! किंसंठिए पन्नत्ते? गोयमा!

प्रमाणे–नैरयिक तैजस शरीर, यावत्–देव तैजस शरीर. नैरयिकोना वैक्रिय शरीर संबंधे (पर्याप्त अने अपर्याप्त रूप) बे भेद कह्या छे
तेम तैजस शरीर संबंधे कहेवा. पंचेन्द्रिय तिर्यंचो अने मनुष्योने जेम औदारिक शरीर संबंधे भेद कह्यो छे तेम कहेवो अने देवोने वैक्रिय
शरीरनो भेद कह्यो छे तेम सर्वार्थसिद्ध सुधी कहेवो. हे भगवन्! तैजस शरीर केवा प्रकारना संस्थानवाळुं छे? हे गौतम! अनेक

वधाने अवश्य होय छे. तेथी जेम एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रिय संबन्धे औदारिक शरीरनो भेद कह्यो तेम चउरि-
न्द्रिय सुधी यावत् तैजस शरीरनो भेद कहेवो. पंचेन्द्रिय तैजस शरीरना विचारमां नारक, तिर्यञ्च, मनुष्य अने देवताना भेदथी चार
प्रकारनुं पंचेन्द्रिय तैजस शरीर छे. तेमां नारक संबन्धी तैजस शरीरना विचारमां जेम पूर्वे वैक्रिय शरीरना पर्याप्त अने अपर्याप्त
बे भेद कह्या छे तेम अहीं पण कहेवा. ते आ प्रमाणे–'जो नैरयिक पंचेन्द्रिय तैजस शरीर छे तो शुं रत्नप्रभा पृथिवी नैरयिक
पंचेन्द्रिय तैजस शरीर छे के यावत् नीचेनी सातमी नरकपृथिवी नैरयिक पंचेन्द्रिय तैजस शरीर छे? हे गौतम! रत्नप्रभा पृथिवी
नैरयिक पंचेन्द्रिय तैजस शरीर छे, यावत् नीचे सातमी नरक पृथिवी नैरयिक पंचेन्द्रिय तैजस शरीर पण छे. जो रत्नप्रभा पृथिवी
नैरयिक पंचेन्द्रिय तैजस शरीर छे तो शुं पर्याप्त रत्नप्रभा नैरयिक तैजस शरीर छे के अपर्याप्त रत्नप्रभा नैरयिक तैजस शरीर छे?
इत्यादि. पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च अने मनुष्योने जेम पूर्वे औदारिक शरीरनो भेद कह्यो छे तेम अहीं पण कहेवो. ते आ प्रमाणे–'हे भग-
वन्! तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय तैजस शरीर केटला प्रकारनुं छे'-इत्यादि. देवोने जेम वैक्रिय शरीरनो भेद कह्यो छे ते प्रमाणे तैजस शरी-

पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं मणूसाणं जहा एतेसिं चेव ओरालियत्ति। देवाणं भंते! जहा वेउव्वियसरीरे। पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं मणूसाणं जहा एतेसिं चेव ओरालियत्ति। देवाणं भंते! किंसंठिते तेयगसरीरे पन्नत्ते? गोयमा! जहा वेउव्वियस्स जाव अणुत्तरोववाइयत्ति।

९. जीवस्स णं भंते! मारणंतियसमुग्घाएणं समोहयस्स तेयासरीरस्स केमहालिया सरीरोगाहणा पन्नत्ता? गोयमा! सरीरपमाणमेत्ता विक्खंभबाहल्लेणं, आयामेणं जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं लोगंताओ लोगंते। एगिंदियस्स णं भंते! मारणंतियसमुग्घाएणं समोहयस्स तेयासरीरस्स केमहालिया सरीरोगाहणा पन्नत्ता? गोयमा! एवं चेव, जाव पुढवि० आउ० तेउ० वाउ० वणप्फइकाइयस्स। बेइंदियस्स णं भंते! मारणंतियसमुग्घाएणं समोहयस्स तेयासरीरस्स केमहालिया सरीरोगाहणा पन्नत्ता? गोयमा! सरीरप्पमाणमेत्ता

जे प्रमाणे औदारिक शरीर कह्युं छे तेम कहेवुं. हे भगवन्! देवोने तैजस शरीर केवा प्रकारना संस्थानवाळुं छे? हे गौतम! जेम वैक्रिय शरीर संबंधे कह्युं छे तेम यावत् अनुत्तरौपपातिक सुधी कहेवुं.

९. हे भगवन्! मारणान्तिकसमुद्घात वडे युक्त एटले मरणसमुद्घातने प्राप्त थयेला जीवना तैजस शरीरनी केटली मोटी शरीरावगाहना होय? हे गौतम! विष्कंभ—विस्तार अने बाहल्य—जाडाइमां शरीर प्रमाण मात्र, अने लंबाइमां जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग, अने उत्कृष्ट लोकान्तथी मांडी लोकान्त सुधी होय. मारणान्तिक समुद्घात वडे युक्त एकेन्द्रिय जीवना तैजस शरीरनी केटली मोटी शरीरावगाहना होय? हे गौतम! एमज समजवी. ए प्रमाणे यावत्—पृथिवीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक अने वनस्पतिकायिक सुधी जाणवी. हे भगवन्! मारणान्तिक समुद्घात वडे युक्त बेइन्द्रिय जीवनी केटली मोटी शरीरावगाहना

---

९. ए प्रमाणे तैजससंस्थान कह्युं, हवे तैजस शरीरनी अवगाहनानुं प्रमाण कहे छे—'जीवस्स णं भंते! मारणंतियसमुग्घाएणं'

विक्खंभबाहल्लेणं, आयामेणं जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं तिरियलोगाओ लोगंते। एवं जाव चउरिंदियस्स। नेरइयस्सणं भंते! मारणंतियसमुग्घाएणं समोहयस्स तेयासरीरस्स केमहालिया सरीरोगाहणा प० ? गोयमा ! सरीरप्पमाणमेत्ता विक्खंभबाहल्लेणं, आयामेणं जहन्नेणं सातिरेकं जोयणसहस्सं, उक्कोसेणं अधे जाव अहेसत्तमा पुढवी, तिरियं जाव सयंभुरमणे समुद्दे, उड्ढं जाव पंडगवणे पुक्खरिणीतो। पंचिंदियतिरिक्खजोणि-

---

होय ? हे गौतम ! विस्तार अने जाडाइमां शरीर प्रमाण मात्र, लंबाइमां जघन्यथी अंगुलनो असंख्यातमो भाग अने उत्कृष्ट तीरछा लोकथी मांडी लोकान्त सुधीनी होय छे. ए प्रमाणे यावत् चउरिन्द्रिय सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! मारणान्तिक समुद्घात वडे युक्त नैरयिकना तैजस शरीरनी केटली मोटी शरीरावगाहना कही छे ? हे गौतम ! विस्तार अने जाडाइमां शरीर प्रमाण, लंबाइमां जघन्यथी कंइक अधिक एक हजार योजन अने उत्कृष्ट नीचे सातमी नरकपृथिवी सुधी, तीरछुं स्वयंभूरमण समुद्र पर्यन्त अने ऊर्ध्व

इत्यादि. हे भगवन् ! तेमां प्रथम नैरयिक वगेरे मारणान्तिक समुद्घात वडे युक्त जीवोनी विवक्षा कर्या सिवाय सामान्यतः संसारी जीवना तैजस शरीरनी 'केमहालिया' केटली मोटी शरीरावगाहना कहेली छे ? अहीं जीवने औदारिक शरीर पण होय छे माटे 'तैजस शरीरनी' ए विशेषण आपवामां आव्युं छे. भगवान् उत्तर आपे छे—विष्कम्भ–उदरादिनो विस्तार, बाहल्य–छाती अने पीठना भागनी स्थूलता, जाडाइ; तेमां विष्कम्भ–विस्तार अने बाहल्य–जाडाइमां तैजस शरीरनी अवगाहना शरीर प्रमाण छे. आयाम–दीर्घता, ते आयाम–लंबाइमां जघन्यथी आंगळना असंख्यातमा भाग प्रमाण छे. आ तैजस शरीरनी अवगाहना तद्दन पासेज रहेला एकेन्द्रियोमां उत्पन्न थता एकेन्द्रियनी अपेक्षाए जाणवी. अने उत्कृष्ट अवगाहना लोकान्तथी आरंभी लोकान्त सुधी होय छे. तात्पर्य ए छे के अधोलोकना अन्तथी मांडी ऊर्ध्व लोकना अन्त सुधी अने ऊर्ध्वलोकना अन्तथी मांडी अधोलोकना अन्त सुधी जाणवी.

यस्स णं भंते ! मारणंतियसमुग्घाएणं समोहयस्स तेयासरीरस्स य केमहालिया सरीरोगाहणा ? गोयमा ! जहा वेइंदियसरीरस्स । मणुस्सस्स णं भंते ! मारणंतियसमुग्घाएणं समोहयस्स तेयासरीरस्स केमहालिया सरीरोगाहणा ? गोयमा ! समयखेत्ताओ लोगंतो । असुरकुमारस्स णं भंते ! मारणंतियसमुग्घाएणं समोहयस्स तेयासरीरस्स केमहालिया सरीरोगाहणा ? गोयमा ! सरीरप्पमाणमेत्ता विक्खंभबाहल्लेणं, आयामेणं जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं अधे जाव तच्चाइ पुढवीए हिट्ठिल्ले चरमंते, तिरियं जाव सयंभुरमणसमुद्दस्स

लोकमां पंडकवनमां पुष्करिणी सुधी होय छे. हे भगवन् ! मारणान्तिक समुद्घात वडे युक्त पंचेन्द्रिय तिर्यंचना तैजस शरीरनी केटली मोटी अवगाहना होय ? हे गौतम ! जेम बेइन्द्रियना शरीरनी कही छे तेम जाणवी. हे भगवन् ! मरणसमुद्घात वडे युक्त मनुष्यना तैजस शरीरनी केटली मोटी शरीरावगाहना होय ? हे गौतम ! समयक्षेत्र—मनुष्यक्षेत्रथी मांडी लोकान्त सुधीनी होय छे. हे भगवन् ! मरण समुद्घात वडे युक्त असुरकुमारना तैजस शरीरनी केटली मोटी शरीरावगाहना होय छे ? हे गौतम ! विस्तार अने जाडाइमां शरीरप्रमाण अने लंबाइमां जघन्यथी अंगुलनो असंख्यातमो भाग, अने उत्कृष्ट नीचे यावत् त्रीजी नरकपृथिवीना हेठेना

आ अवगाहनानुं प्रमाण सूक्ष्म के बादर एकेन्द्रियनी अपेक्षाए समजवुं, बाकीना जीवनी अपेक्षाए न जाणवुं, कारण के बीजाओने संभव नथी. एकेन्द्रियो सूक्ष्म के बादर यथासंभव बधा लोकमां होय छे, बीजा जीवो होता नथी, तेथी अधोलोकना अन्ते वर्तता सूक्ष्म के बादर एकेन्द्रिय ऊर्ध्वलोकना अन्ते सूक्ष्मपणे के बादरपणे उत्पन्न थवाने योग्य होय, अथवा ऊर्ध्वलोकना अन्ते वर्तता सूक्ष्म के बादर एकेन्द्रिय अधोलोकना अन्ते सूक्ष्मपणे के बादरपणे उत्पन्न थवाने योग्य होय त्यारे तेने मारणान्तिक समुद्घात

वाहिरिल्ले वेइयंते, उड्ढं जाव इसीपब्भारा पुढवी, एवं जाव थणियकुमारतेयगसरीरस्स । वाणमंतरजोइसियसो-
हम्मीसाणगा य एवं चेव । सणंकुमारदेवस्स णं भंते ! मारणंतियसमुग्घाएणं समोहयस्स तेयासरीरस्स केम-
हालिया सरीरोगाहणा ? गोयमा ! सरीरप्पमाणमेत्ता विक्खंभबाहल्लेणं, आयामेणं जहन्नेणं अंगुलस्स असंखे-
ज्जइभागं, उक्कोसेणं अधे जाव महापातालाणं दोच्चे तिभागे, तिरियं जाव सयंभुरमणे समुद्दे, उड्ढं जाव अच्चुओ

चरमान्त सुधी, तीरछुं यावत् स्वयंभूरमण समुद्रना बहारनी वेदिकाना अन्त सुधी अने उपर ईषत्प्राग्भारा पृथिवी सुधी होय छे. ए
प्रमाणे यावत् स्तनितकुमारना तैजस शरीरनी अवगाहना जाणवी. व्यन्तर, ज्योतिषिक, सौधर्म अने ईशान देवोने एमज समजवुं.
हे भगवन् ! मारणान्तिक समुद्घात वडे युक्त सनत्कुमार देवना तैजस शरीरनी केटली मोटी शरीरावगाहना होय छे ? हे गौतम !
विस्तार अने जाडाइमां शरीरप्रमाण अने लंबाइमां जघन्यथी अंगुलनो असंख्यातमो भाग अने उत्कृष्ट नीचे यावत् महापाताल कल-

करतां उपर कह्या प्रमाणे तैजस शरीरनी अवगाहना होय छे. ए कथन वडे पृथिवी, पाणी, अग्नि, वायु अने वनस्पतिना सूत्रोनो पण
विचार करवो. ते आ प्रमाणे—अधोलोक के ऊर्ध्वलोकमां वर्तती सूक्ष्म पृथिवीकायिक ज्यारे सूक्ष्म पृथिवीकायिकादि रूपे के वादर
वायुकायिकरूपे ऊर्ध्वलोकमां के अधोलोकमां उत्पन्न थवानो होय त्यारे तेने मारणान्तिक समुद्घात करतां उत्कृष्ट लोकान्तथी
आरंभी लोकान्त सुधी तैजस शरीरनी अवगाहना होय छे. एम अप्कायिकादि संबन्धे पण जाणवुं.

बेइन्द्रिय सूत्रमां आयाम-लंबाइ वडे जघन्यथी आंगळना असंख्यातमा भाग प्रमाण तैजस शरीरनी अवगाहना होय छे. ज्यारे
आंगळना असंख्यातमा भाग प्रमाण औदारिकशरीरवाळो अपर्याप्त बेइन्द्रिय पोतानी नजीकना प्रदेशमां एकेन्द्रियादि पणे उत्पन्न थाय
त्यारे जाणवी. अथवा जे शरीरमां रही मरण समुद्घात करे अने ते मरणसमुद्घात वडे ते शरीरथी बहार नीकळेल तैजस शरीरनी

कप्पो। एवं जाव सहस्सारदेवस्स । आणयदेवस्स णं भंते! मारणंतियसमुग्घाएणं समोहयस्स तेयासरीरस्स केमहालिया सरीरोगाहणा ? गोयमा! सरीरप्पमाणमेत्ता विक्खंभबाहल्लेणं, आयामेणं जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं जाव अधोलोइयगामा, तिरियं जाव मणूसखेत्तं, उड्ढं जाव अच्चुओ कप्पो, एवं जाव आरणदेवस्स। अच्चुअदेवस्स एवं चेव, णवरं उड्ढं जाव सयाइं विमाणाति। गेविज्जगदेवस्स णं भंते!

शना बीजा त्रिभाग–बे तृतीयांश सुधी, तीरछुं स्वयंभूरमण समुद्र सुधी अने उपर अच्युत देवलोक सुधी होय छे. ए प्रमाणे यावत् सहस्रार देवना तैजस शरीरनी अवगाहना जाणवी. हे भगवन्! मारणान्तिक समुद्घात वडे युक्त आनत देवना तैजस शरीरनी केटली मोटी अवगाहना होय छे? हे गौतम! विस्तार अने जाडाइमां शरीरप्रमाण अने लंबाइमां जघन्यथी अंगुलनो असंख्यातमो भाग, अने उत्कृष्ट यावत् अधोलौकिक ग्राम सुधी तथा तीरछुं यावत् मनुष्यक्षेत्र अने ऊर्ध्व अच्युत देवलोक सुधी होय छे. ए प्रमाणे आरण देव सुधी जाणवुं. अच्युत देवने एमज समजवुं. परन्तु उपर पोतपोताना विमान सुधी होय छे. हे भगवन्! मरण समुद्घात

अवगाहनानो आयाम अने विष्कम्भ–विस्तार वडे विचार कराय छे. पण शरीरसहित तैजस शरीरनी अवगाहनानो विचार करातो नथी. जो एम न होय तो भवनपति वगेरेनी अवगाहना जघन्यथी अंगुलनां असंख्यातमा भाग प्रमाण कहेवामां आवशे तेनी साथे विरोध थशे. कारण के भवनपति वगेरेनुं शरीर सात हाथ इत्यादि प्रमाणवाळुं छे. तेथी मोटा शरीरवाळो पण बेइन्द्रिय ज्यारे पोतानी नजीकना प्रदेशमां एकेन्द्रियपणे उत्पन्न थाय त्यारे पण आंगळना असंख्यातमा भाग प्रमाण अवगाहना जाणवी. अने उत्कृष्ट तीरछा लोकथी आरंभी लोकान्त सुधीनी होय छे. तात्पर्य ए छे के—तीरछा लोकथी अधोलोकनो अन्त के ऊर्ध्वलोकनो अन्त जेटलो होय छे तेटला प्रमाणवाळी अवगाहना होय छे. केवी रीते एटला प्रमाणवाळी अवगाहना होय? अहीं बेइन्द्रियो एकेन्द्रियोमां पण उत्पन्न

मारणंतियसमुग्घाएणं समोहयस्स तेयगसरीरस्स केमहालिया सरीरोगाहणा ? गोयमा ! सरीरपमाणमेत्ता विक्खंभबाहल्लेणं, आयामेणं जहन्नेणं विज्जाहरसेढीतो, उक्कोसेणं जाव अहोलोइयगामा, तिरियं जाव मणूसखेत्ते, उड्ढं जाव सगातिं विमाणातिं, अणुत्तरोववाइयस्सवि एवं चेव । कम्मगसरीरे णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ?

वडे युक्त ग्रैवेयक देवना तैजस शरीरनी केटली मोटी शरीरावगाहना होय ? हे गौतम ! विस्तार अने जाडाइमां शरीरप्रमाण अने लबाइमां जघन्यथी विद्याधरनी श्रेणि पर्यन्त तथा उत्कृष्ट अधोलौकिक ग्राम सुधी होय छे. तीरछुं यावत् मनुष्यक्षेत्र पर्यन्त अने उपर यावत् पोतपोताना विमान सुधी होय छे. अनुत्तरौपपातिकने पण एमज समजवुं. हे भगवन् ! कार्मण शरीर केटला प्रकारे छे ?

थाय छे. अने एकेन्द्रियो तो सकल लोकव्यापी होय छे. तेथी ज्यारे तीरछा लोकमां रहेलो बेइन्द्रिय ऊर्ध्वलोकना अन्ते के अधोलोकना अन्ते एकेन्द्रियपणे उत्पन्न थाय त्यारे तेने मारणान्तिक समुद्‌घात करतां उपर कहेला प्रमाणवाळी अवगाहना होय छे. तीरछा लोकने ग्रहण करवानुं कारण ए छे के प्रायः बेइन्द्रियोनुं तीरछा लोक स्वस्थान छे, अन्यथा अधोलोकना एक भागमां अधोलौकिक ग्रामादिने विषे पण तथा ऊर्ध्वलोकना एक भागमां आवेला पंडक वनादिमां पण बेइन्द्रियनो संभव छे, माटे तेनी अपेक्षाए तैजस शरीरनी अवगाहना अधिक पण समजवी. ए प्रमाणे तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रिय सूत्रोनो पण विचार करवो.

नैरयिक सूत्रमां लंबाइ-वडे जघन्यथी कंइक अधिक हजार योजन कह्या छे तेनो विचार आ प्रमाणे करवो-अहीं वलयामुखादि चार पाताल कलशो लाख योजन उंडा छे. तेनी ठींकरी हजार योजन जाडी छे. तेओनी नीचेनो त्रीजो भाग वायुथी भरेलो छे, उपरनो त्रीजो भाग पाणीथी संपूर्ण छे अने वच्चेनो त्रीजो भाग वायु अने पाणीना वधवा अने घटवाना स्वभाववाळो छे. तेमां ज्यारे कोइ सीमन्तकादि-इन्द्रक नरकावासोमां वर्तमान नैरयिक जे पातालकलशना नजीक छे ते पोताना आयुष्यना क्षयथी नीकळी अने हजार योजन

गोयमा ! पंचविधे पन्नत्ते, तंजहा—एगिंदियकम्मगसरीरे, जाव पंचिंदियकम्मगसरीरे य । एवं जहेव तेयगसरीरस्स भेदो संठाणं ओगाहणा य भणिता तहेव निरवसेसं भाणितव्वं जाव अणुत्तरोववाइयत्ति ।

हे गौतम ! पांच प्रकारे छे. ते आ प्रमाणे–एकेन्द्रिय कार्मणशरीर, यावत् पंचेन्द्रिय कार्मण शरीर. ए प्रमाणे जेम तैजस शरीरनो भेद, संस्थान अने अवगाहना कही छे तेम बधुं यावत् अनुत्तरौपपातिक सुधी कहेवुं.

प्रमाण पातालकलशनी भींतने भेदी पातालकलशना बीजा के त्रीजा त्रिभागने विषे मत्स्यपणे उत्पन्न थाय त्यारे मारणान्तिक समुद्घात करता नैरयिकनी कांइक अधिक हजार योजन प्रमाण तैजस शरीरनी जघन्य [1]अवगाहना होय छे. अने उत्कृष्ट सातमी नरकपृथिवी सुधी तथा तीरछुं स्वयंभूरमण समुद्र सुधी अने ऊर्ध्व लोकमां पंडक वननी पुष्करिणी सुधी जाणवी. तात्पर्य ए छे के नीचे सातमी नरकपृथिवीथी आरंभी तीरछुं स्वयंभूरमण सुधी अने ऊर्ध्व पंडकवननी पुष्करिणीओ (वावो) सुधीनी अवगाहना होय छे. एटली अवगाहना ज्यारे नीचेनी सातमी नरकपृथिवीनो नारक स्वयंभूरमण समुद्रना अन्ते के पंडकवनमां पुष्करिणीने विषे मत्स्यरूपे उत्पन्न थाय त्यारे होय छे. तिर्यंच पंचेन्द्रियने उत्कर्षथी तीरछा लोकथी मांडी लोकान्त सुधीनी अवगाहना होय छे. अहीं पण बेइन्द्रियनी पेठे विचार जाणवो. कारण के एकेन्द्रियोमां तिर्यंच पंचेन्द्रियनी उत्पत्तिनो संभव छे. मनुष्यनी समयक्षेत्रथी मांडी

१ प्रज्ञापनावृत्तिमां आचार्य हरिभद्रसूरि आ संबंधे नीचे प्रमाणे खुलासो करे छे—"नैरयिकोनुं तैजस शरीर लंबाइमां कंइक अधिक हजार योजन केम होय ? नरकथी नीकळी पातालकलशनी भींतने भेदी मत्स्यमां उत्पन्न थनारने अथवा पातालकलशथी नरकमां उत्पन्न थनार मत्स्यने होय छे. बीजा आचार्यो आ प्रमाणे कहे छे—नारकोने हजार योजन केम होय ? रत्नना उपर, नीचेना अने तेनी भींत हजार योजन जाडी छे एवो सीमन्तक नामे नरकावास छे तेमां जे नारको छे ते अहींथी हजार योजन जइ मत्स्यपणे उपजनारा छे ते मरण समुद्घात करी त्यां जाय छे माटे हजार योजन थाय छे.

लोकान्त सुधीनी अवगाहना होय छे. जेमां समय-काळ प्रधान छे ते समयक्षेत्र. अहीं मध्यमपद लोपी समास होवाथी प्रधान शब्दनो लोप थयो छे. जे अढी द्वीप प्रमाण क्षेत्रमां सूर्यादिनी गमन क्रिया वडे व्यक्त समय नामे काळ द्रव्य छे ते समयक्षेत्र, पटले के मानुषक्षेत्र कहेवाय छे. त्यांथी मांडी ऊर्ध्व अने अधो लोकान्त प्रमाण मनुष्यना तैजस शरीरनी अवगाहना होय छे. कारण के मनुष्यनी पण एकेन्द्रियमां उत्पत्तिनो संभव छे. समयक्षेत्रनुं ग्रहण समयक्षेत्रथी अन्य क्षेत्रमां मनुष्यनो जन्म अने संहरण असंभवित होवाथी अधिक अवगाहनानो संभव नथी.

असुरकुमारथी मांडी स्तनितकुमार सुधीना भवनपति, व्यन्तर, ज्योतिषिक, सौधर्म अने ईशान देवोने जघन्यथी आंगळनो असंख्यातमो भाग छे. केवी रीते होय छे ? कारण के ए पूर्वोक्त जीवो एकेन्द्रियोमां उत्पन्न थाय छे. तेथी ज्यारे पोताना आभरणरूप अंगद-वाजुबन्ध वगेरेमां के कुंडलादिमां जे पद्मरागादि मणिओ छे तेओमां आसक्तिवाळा, मूर्छावाळा अने तेनाज अध्यवसाय-परिणामवाळा तेओ तेज शरीर उपरना घरेणा वगेरेमां पृथिवीकायिकपणे उत्पन्न थाय छे त्यारे जघन्यथी आंगळना असंख्यातमां भाग प्रमाण तैजस शरीरनी [1]अवगाहना होय छे. अन्य आचार्यो अहीं बीजी रीते विचार करे छे, परन्तु ते अत्यन्त संगत नथी. "नहि कुमार्गं तित्यक्षुः पुनस्तमनुधावति"-कुमार्गनो त्याग करनार पुनः तेनुं अनुसरण करतो नथी-ए न्यायने अनुसरी अहीं ते विचार लख्यो नथी, तेम दूषित पण कर्यो नथी. उत्कर्षथी नीचे त्रीजी नरक पृथिवीना नीचेना चरमान्त सुधी अने तीरछुं स्वयंभूरमण

१ ए संबन्धे पूज्य हरिभद्राचार्य आ प्रमाणे कहे छे—उत्पत्ति स्थाने आवेला जीव प्रदेशनी अपेक्षाए ए कथन छे. (केमके उपपात क्षेत्र अंगुलना असंख्यातमा भाग प्रमाण छे.) कारण के मणि के तेना आभरणादि उपपात क्षेत्रनी साथे तेना (भवनपत्यादिना) शरीरना विष्कभ-विस्तार अने बाहल्य जाडाइनो सबन्ध नथी. उपपात क्षेत्रमां जवा छतां पण समुदायने आश्रयी आहारक त्यारे कहेवाय के ज्यारे विष्कंभ अने जाडाइने संहरी सर्वात्मा वडे त्यां स्थिर थाय. (एटले त्यां सुधी जीव प्रदेशनी अपेक्षाए तैजस शरीरनी अवगाहना अंगुलना असंख्यातमा भाग प्रमाण छे.) आ भवनपत्यादि पोताना आभरणादिमां उत्पन्न थतो हयो त्यारे ज जाणवुं.

समुद्रनी बाह्य वेदिकाना अन्त सुधी तथा ऊर्ध्वलोकमां ईषत्प्राग्भारा पृथिवी सुधी होय छे. केवी रीते होय ? ते आ प्रमाणे—ज्यारे भवनपति वगेरे देव त्रीजी नरकपृथिवीना नीचेना चरमान्त सुधी कोइ पण प्रयोजनना वशथी जाय छे. अने त्यां गयेलो कोइ पण रीते पोताना आयुषनो क्षय थवाथी मरीने तीरछुं स्वयंभूरमण समुद्रना बहारनी वेदिकाना अन्ते, अथवा ईषत्प्राग्भारा नामे पृथिवीना अन्त भागमां पृथिवीकायिकपणे उत्पन्न थाय छे त्यारे उत्कृष्ट उपर कह्या प्रमाणे तैजस शरीरनी अवगाहना होय छे. सनत्कुमार देवने पण जघन्यथी आंगळना असंख्यातमा भाग प्रमाण तैजस शरीरनी अवगाहना होय छे. केवी रीते होय छे ? ते आ प्रमाणे—अहीं सनत्कुमादि देवो तेवा प्रकारना भवस्वभावथी एकेन्द्रिय के विकलेन्द्रियोमां उत्पन्न थता नथी, परन्तु तिर्यंच पंचेन्द्रियो अने मनुष्योमां उत्पन्न थाय छे. तेथी ज्यारे मेरु वगेरेनी पुष्करिणी–वाव प्रमुखमां स्नान करतां पोताना भवना आयुषनो क्षय थवाथी त्यां ज पोतानी पासेना प्रदेशमां मत्स्यपणे उत्पन्न थाय छे त्यारे आंगळना असंख्यातमा भाग प्रमाण होय छे. अथवा पूर्वभव संबन्धी मनुष्य स्त्रीने मनुष्ये भोगवेली जाणी अत्यन्त अनुरागथी अहीं आवी आलिंगन करे अने आलिंगन करी तेना अवाच्य प्रदेशमां पोतानुं पुरुषचिह्न नांखी काळ करी पुरुषना बीजरूप तेनाज गर्भमां उत्पन्न थाय त्यारे होय छे. अने उत्कर्षथी नीचे लाख योजन उंडा पाताल कलशोना बीजा त्रिभाग सुधी होय. तथा तीरछुं स्वयंभूरमण समुद्र सुधी अने उपर अच्युत देवलोक सुधी होय छे. केवी रीते होय ? ते आ प्रमाणे—अहीं सनत्कुमारादि देवोनुं अन्य देवनी निश्राथी अच्युत देवलोक सुधी गमन होय छे, परन्तु त्यां वाव वगेरेमां मत्स्य वगेरे जंतुओ होता नथी, तेथी अहीं तिर्यंचो के मनुष्योमां उत्पन्न थवुं जोइए. तेमां ज्यारे सनत्कुमार देव अन्य देवनी निश्राथी अच्युत देवलोक सुधी जाय अने त्यां जइ पोताना आयुषनो क्षय थवाथी काळ करी तीरछा स्वयंभूरमण समुद्रना अन्ते अथवा नीचे पाताल कलशोना पवन अने पाणीना उत्सरण–वृद्धि अने अपसरण–हानि जेमां छे एवा बीजा त्रिभागमां मत्स्यादि पणे उत्पन्न थाय त्यारे तेने तीरछा के अधोलोक सुधी पूर्वोक्त क्रमथी तैजस शरीरनी अवगाहना होय छे. 'एवं जाव सहस्सारदेवस्स' त्ति—ए प्रमाणे जेम सनत्कुमार देव संबन्धे कह्युं छे ते प्रकारे जघन्यथी अने उत्कर्षथी तैजस शरीरनी अवगाहना सहस्रार देवो

सुधी कहेवी. बधे ठेकाणे विचार समानपणे जाणवो. आनत देवनी पण जघन्यथी तैजस शरीरनी अवगाहना आंगळना असंख्यातमा भाग प्रमाण छे. (प्र०)—आनतादि देवो मनुष्योमां ज उत्पन्न थाय छे अने मनुष्यो मनुष्योमां ज होय छे तो तेनी अवगाहना आंगळना असंख्यातमा भाग प्रमाण केम होय ? (उ०)—अहीं कोइ आनत देव पूर्वभव संबन्धी मनुष्य स्त्रीने अन्य मनुष्ये भोगवेली अवधिज्ञानथी जाणी नजीक मृत्यु होवाने लीधे विपरीत थयेला स्वभावथी, प्राणीओना चरित्र विचित्र होवाथी, कर्मनी गति अचिन्त्य होवाथी अने कामवृत्ति मलिन होवाथी, ए संबन्धे कह्युं छे के—

"सत्त्वानां चरितं चित्रं विचित्रा कर्मणां गतिः । मलिनत्वं च कामानां वृत्तिः पर्यन्तदारुणा ॥"

प्राणीओना विचित्र चरित्र, कर्मनी विचित्र गति अने कामनुं मलिनपणुं छे तेथी अन्ते दारुण-भयंकर वृत्ति थाय छे. माटे अत्यन्त अनुरागथी अहीं आवीने नोळीयानी पेठे गाढ आलिंगन करी तेना अवाच्य प्रदेशमां पोतानुं पुरुषचिन्ह नांखी अतिशय मूर्छित थइ पोताना आयुषना क्षयथी काळ करी ज्यारे ते स्त्रीना ज गर्भमां मनुष्य बीजने विषे मनुष्यपणे उत्पन्न थाय छे. मनुष्यबीज जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी बार मुहूर्त सुधी रहे छे. कह्युं छे के—"मणुस्सबीए णं भंते ! कालतो केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेणं अन्तोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बारस मुहुत्ता" । हे भगवन् ! मनुष्यबीज काळथी क्यां सुधी रहे ? हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी बार मुहूर्त सुधो रहे छे. तेथी बार मुहूर्तनी अंदर भोगवेली स्त्रीने आलिंगन करी मरण पामी त्यांज मनुष्यपणे उत्पन्न थाय छे. तेथो उत्कर्षथी नीचे अधोलौकिक ग्राम सुधी, तीरछुं मनुष्यक्षेत्र सुधी अने उपर अच्युत देवलोक सुधी अवगाहना जाणवी. केवी रीते होय ? ते आ प्रमाणे—ज्यारे आनत देव कोइ पण अन्य देवनी निश्रा-अवलंबनथी अच्युत देवलोकमां जाय अने त्यां जइ काळ करी अधोलौकिक ग्राममां, अथवा मनुष्यक्षेत्रना पर्यन्त भागमां मनुष्यपणे उत्पन्न थाय त्यारे होय छे. एम प्राणत, आरण अने अच्युत देवो संबन्धे पण जाणवुं. ते प्रमाणे सूत्रकार कहे छे—'एवं जाव आरणदेवस्स, अच्चुयदेवस्स एवं चेव, नवरं उड्ढं जाव सयाइं विमाणाइं'। अच्युत देवने पण जघन्यथी अने उत्कर्षथी तैजस शरीरनी अवगाहना ए प्रमाणे छे. परन्तु सूत्रपाठमां 'उड्ढं जाव सयाइं विमाणाइं'—उपर

१०. ओरालियसरीरस्स णं भंते ! कतिदिसिं पोग्गला चिज्जंति ? गोयमा ! निव्वाघाएणं छद्दिसिं, वाघायं

१०. हे भगवन् ! औदारिक शरीरना पुद्गलो केटली दिशाथी आवी एकठा थाय छे ? हे गौतम ! व्याघात-प्रतिबन्धना अभावे

उपर अच्युत देवलोक सुधी होय छे पम न कहेवुं. केमके ज्यारे पोताना विमान सुधी होय छे, पम कहेवुं, पण 'उड्ढं जाव अच्चुओ कप्पो'-उपर अच्युत देवलोक सुधी होय-ए केम घटे ? केवळ अच्युत देव पण कदाचित् अच्युत देवनो विचार करीए त्यारे ते त्यां होवाथी तेने ऊर्ध्व-उपर अच्युत देवलोक सुधी होय-ए केम घटे ? केवळ अच्युत देव पण कदाचित् उपर पोताना विमानना पर्यन्त सुधी जाय अने त्यां जइ काळ पण करे, तेथी कह्युं छे के "ऊर्ध्व-उपर पोताना विमानो सुधी होय." ग्रैवेयक अने अनुत्तर देवो तीर्थंकरने वंदनादिक पण त्यां रहीने ज करे छे, तेथी तेओना आगमननो अहीं असंभव होवाथी आंगळना असंख्यातमा भागनुं प्रमाण घटतुं नथी, परन्तु ज्यारे वैताढ्य पर्वतमां रहेली विद्याधरनी श्रेणिओमां उत्पन्न थाय त्यारे पोताना स्थानथी आरंभी नीचे विद्याधरनी श्रेणि सुधी जघन्य तेजस शरीरनी अवगाहना होय छे. आथी पण वधारे जघन्य अवगाहनानो संभव नथी. उत्कृष्ट अधोलौकिक ग्राम सुधी होय छे, कारण के तेथी नीचे उत्पत्तिनो संभव नथी. तीरछुं मनुष्यक्षेत्र सुधी होय छे, तेथी आगळ तीरछुं पण उपजवानो संभव नथी. जो के विद्याधरो अने विद्याधरीओ नन्दीश्वरद्वीप सुधी जाय छे, अने पछी संभोग पण करे छे तो पण मनुष्यक्षेत्रनी बहार मनुष्योमां गर्भने विशे उत्पन्न थता नथी, तेथी तीरछुं 'मनुष्यक्षेत्र' सुधी कह्युं छे. ए प्रमाणे तैजस शरीरना भेद, संस्थान-आकार अने शरीरप्रमाण कह्युं. हवे कार्मण शरीर तेजसनी साथे नियत सहचारी छे अने तैजसनी पेठे जीवप्रदेशने अनुसरी संस्थानवाळुं छे तेथी जेम तैजस शरीरना भेद वगेरे कह्यां छे तेमज कार्मणनां पण कहेवां. ते प्रमाणे सूत्रकार कहे छे—'एवं जहेव तेयगसरीरस्स भेदो संठाणमोगाहणा य भणिता तहेव निरवसेसं भाणितव्वं जाव अणुत्तरोववाइय' त्ति. ए प्रमाणे जेम तैजस शरीरना भेद, संस्थान अने अवगाहना कही, ते प्रमाणे वधुं अनुत्तरोपपातिक देवो सुधी कार्मण संबन्धे कहेवुं.

पडुच्च सिय तिदिसिं, सिय चउद्दिसिं,सिय पंचदिसिं। वेउव्वियसरीरस्स णं भंते ! कतिदिसिं पोग्गला चिज्जंति?
गोयमा ! णियमा छद्दिसिं। एवं आहारगसरीरस्सवि, तेयाकम्मगाणं जहा ओरालियसरीरस्स। ओरालियसरी·
रस्स णं भंते ! कतिदिसिं पोग्गला उवचिज्जंति ? गोयमा ! एवं चेव, जाव कम्मगसरीरस्स एवं उवचिज्जंति,
अवचिज्जंति।

छ दिशाथी आवी, व्याघातने आश्रयी कदाच त्रण दिशाथी, कदाच चार दिशाथी अने कदाच पांच दिशाथी आवी एकठा थाय छे.
हे भगवन् ! वैक्रिय शरीरना पुद्गलो केटली दिशाथी आवी चयने प्राप्त थाय छे–एकठा थाय छे ? हे गौतम ! अवश्य छ दिशाथी
आवी एकठा थाय छे. ए प्रमाणे आहारक शरीर संबंधे पण जाणवुं. तैजस अने कार्मण शरीरने औदारिक शरीरनी पेठे जाणवुं. हे
भगवन् ! औदारिक शरीरना पुद्गलो केटली दिशाथी आवी उपचयने प्राप्त थाय छे ? हे गौतम ! एमज समजवुं. यावत् कार्मण श-
रीरना पुद्गलो ए प्रमाणे उपचय पामे छे अने अपचयने पामे छे.

१०. पांचे शरीरोना भेद, संस्थान अने अवगाहनानुं प्रमाण कह्युं, हवे तेओना पुद्गलोनो केटली दिशाथी आवी चय थाय छे ते
वतावे छे—'ओरालियसरीरस्स णं भंते' ! इत्यादि. अहीं 'णं' वाक्यालंकारमां वपराय छे. 'कइदिसिं' अहीं प्राकृत होवाथी पंचमीना
अर्थमां बीजी विभक्ति अने बहुवचनमां एकवचननो प्रयोग थयेलो छे. तेथी आ अर्थ थाय छे—'भंते' हे भगवन् ! केटली दिशाओथी
आवीने पुद्गलो 'चीयन्ते' स्वयं चयने प्राप्त थाय छे–एकठा थाय छे ? भगवान् उत्तर आपे छे–'निर्व्याघातेन' निर्व्याघातथी व्याघात–
प्रतिबंधना अभावने आश्रयी एटले कोइ पण प्रकारनो प्रतिबंध न होय तो 'छद्दिसिं' छ दिशाथी आवेला पुद्गलोनो चय थाय छे.
तात्पर्य ए छे के—ज्यां त्रसनाडीना मध्य भागमां के तेनी बहारना भागमां रहेला औदारिक शरीरवाळानी एक पण दिशा अलोक

११. जस्स णं भंते ! ओरालियसरीरं तस्स वेउव्वियसरीरं, जस्स वेउव्वियसरीरं तस्स ओरालियसरीरं ?

११. हे भगवन् ! जेने औदारिक शरीर छे तेने शुं वैक्रिय शरीर होय ? जेने वैक्रिय शरीर छे तेने शुं औदारिक शरीर होय ? हे

वडे प्रतिबंधवाळी नथी एवा निर्व्याघात स्थळमां रहेलाने अवश्य छ ए दिशाओथी पुद्गलोनुं आगमन थाय छे. व्याघात-अलोक वडे प्रतिस्खलना-प्रतिबंध थवो, ते व्याघातने आश्रयी 'सिय तिदिसिं' स्यात्-कदाचित् त्रण दिशाओथी, कदाचित् चार दिशाओथी अने कदाचित् पांच दिशाओथी आवेला पुद्गलोनो चय थाय छे. शी रीते थाय ? ते आ प्रमाणे-औदारिक शरीरवाळा सूक्ष्म जीवने ज्यां उपर लोकाकाश नथी, तेमज तीरछुं पूर्व दिशाए के दक्षिण दिशाए लोकाकाश नथी एवा सौथी उपरना प्रतरमां अग्नि खूणाने विशे लोकान्ते रहेला जीवने नीचेनी अधोदिशा, पश्चिम दिशा तथा उत्तरदिशा रूप त्रण दिशाओथी आवेला पुद्गलोनो उपचय थाय छे. कारण के बाकीनी त्रण दिशा अलोक वडे व्याप्त छे. हवे ते औदारिक शरीरी सूक्ष्म जीव पश्चिम दिशाने आश्रयी रहे त्यारे पूर्व दिशा अधिक थइ तेथी तेने चार दिशाओथी पुद्गलोनुं आगमन थाय छे. ज्यारे ते जीव नीचे द्वितीयादि प्रतरमां पश्चिम दिशाने आश्रयी रहे त्यारे उर्ध्वदिशा पण अधिक थाय छे केवळ दक्षिण दिशा अलोक वडे प्रतिबंधवाळी होय छे तेथी पांच दिशाओथी पुद्गलोनुं आगमन थाय छे. वैक्रिय शरीर अने आहारक शरीर त्रसनाडीना मध्यमांज संभवे छे, बीजे लोकान्तने विषे तेनो संभव नथी माटे ते बन्ने शरीरना पण पुद्गलोनो उपचय अवश्य छए दिशाथी होय छे. तैजस अने कार्मण शरीर सर्व संसारी जीवोने होय छे, तेथी जेम औदारिकने व्याघात सिवाय छ दिशाओथी अने व्याघातने आश्रयी त्रण दिशाथी चार दिशाथी, अने पांच दिशाथी पुद्गलोनुं आगमन थाय छे तेम तैजस अने कार्मणशरीरने पण जाणवुं. जेम चय कह्यो तेम उपचय अने अपचय पण कहेवो. तेमां उपचय-एटले घणो चय थवो अने अपचय एटले ह्रास, शरीरथी पुद्गलोनुं जुदा पडवुं.

११. एम पुद्गलोनो चय कह्यो, हवे शरीरनो संयोग—परस्पर संबन्ध बतावे छे—'जस्स णं भंते' ! इत्यादि. जेने औदारिक शरीर

गोयमा ! जस्स ओरालियसरीरं तस्स वेउव्वियसरीरं सिय अत्थि सिय नत्थि, जस्स वेउव्वियसरीरं तस्स ओरालियसरीरं सिय अत्थि सिय नत्थि। जस्स णं भंते ! ओरालियसरीरं तस्स आहारगसरीरं, जस्स आहारगसरीरं तस्स ओरालियसरीरं ? गोयमा ! जस्स ओरालियसरीरं तस्स आहारगसरीरं सिय अत्थि सिय नत्थि, जस्स पुण आहारगसरीरं तस्स ओरालियसरीरं णियमा अत्थि। जस्स णं भंते ! ओरालियसरीरं तस्स तेयगसरीरं, जस्स तेयगसरीरं तस्स ओरालियसरीरं ? गोयमा ! जस्स ओरालियसरीरं तस्स तेयगसरीरं नियमा अत्थि, जस्स

गौतम ! जेने औदारिक शरीर छे तेने वैक्रिय शरीर कदाच होय अने कदाच न होय, अने जेने वैक्रिय शरीर छे तेने औदारिक शरीर कदाच होय अने कदाच न होय. हे भगवन् ! जेने औदारिक शरीर छे तेने आहारक शरीर होय ? जेने आहारक शरीर होय तेने औदारिक शरीर होय ? हे गौतम ! जेने औदारिक शरीर छे तेने आहारक शरीर कदाच होय अने कदाच न होय. परन्तु जेने आहारक शरीर छे तेने अवश्य औदारिक शरीर होय. हे भगवन् ! जेने औदारिक शरीर छे तेने तैजस शरीर होय ? अने जेने तैजस शरीर छे तेने औदारिक शरीर होय ? हे गौतम ! जेने औदारिक शरीर छे तेने अवश्य तैजस शरीर होय अने जेने तैजस शरीर छे तेने औ-

---

छे तेने वैक्रिय शरीर होय अथवा न पण होय. जे औदारिक शरीरी छतां वैक्रिय लब्धिवाळो वैक्रिय शरीरनो आरंभ करी तेमां रहे तेने होय छे बीजाने होतुं नथी, जेने वैक्रिय शरीर छे तेने औदादिक शरीर होय अने न पण होय. वैक्रिय शरीरवाळा देवो अने नारकोने औदारिक शरीर होतुं नथी, अने वैक्रिय शरीरवाळा तिर्यंच अने मनुष्यने होय छे. आहारक शरीरनी साथे विचार करतां जेने औदारिक शरीर छे तेने आहारक शरीर होय छे अने नथी पण होतुं. जे औदारिक शरीरी चौद पूर्वधर आहारक लब्धिवाळो

पुण तेयगसरीरं तस्स ओरालियसरीरं सिय अत्थि सिय णत्थि, एवं कम्मगसरीरंपि। जस्स णं भंते! वेउव्वियसरीरं तस्स आहारगसरीरं,जस्स आहारगसरीरं तस्स वेउव्वियसरीरं? गोयमा! जस्स वेउव्वियसरीरं तस्स आहारगसरीरं णत्थि,जस्सवि आहारगसरीरं तस्सवि वेउव्वियसरीरं णत्थि। तेयाकम्माति जहा ओरालिएण समं तहेव आहारगसरीरेणवि समं तेयाकम्मगाति चारेयव्वाणि। जस्स णं भंते! तेयगसरीरं तस्स कम्मगस-

दारिक शरीर कदाच होय अने कदाच न होय. ए प्रमाणे कार्मण शरीर संबंधे पण जाणवुं. हे भगवन्! जेने वैक्रिय शरीर छे तेने आहारक शरीर होय? अने जेने आहारक शरीर छे तेने वैक्रिय शरीर होय? हे गौतम! जेने वैक्रिय शरीर छे तेने आहारक शरीर न होय अने जेने आहारक शरीर छे तेने वैक्रिय शरीर न होय. तैजस कार्मणनो जेम औदारिक साथे विचार कर्यो छे तेम आहारक शरीरनी साथे पण विचार करवो. हे भगवन्! जेने तैजस शरीर छे तेने कार्मण शरीर होय? अने जेने कार्मण शरीर छे तेने तैजस

आहारक शरीर करे तेने होय छे बीजाने नथी होतुं, परन्तु जेने आहारक शरीर छे तेने औदारिक शरीर अवश्य होय छे. कारण के औदारिक शरीरना अभावमां आहारक लब्धिनो पण असंभव छे. तैजस शरीरनी साथे विचार करतां जेने औदारिक शरीर छे तेने अवश्य तैजस शरीर होय छे तेजस शरीरना अभावमां औदारिक शरीरनो असंभव छे. जेने तैजस शरीर छे तेने औदारिक शरीर होय छे अने नथी पण होतुं. देव अने नारकोने होतुं नथी अने तिर्यंच मनुष्योने होय छे. ए प्रमाणे कार्मण शरीरनी साथे पण विचार करवो. कारण के तैजस अने कार्मण शरीर बन्ने सहचारी छे. हवे वैक्रिय शरीरना आहारकादि शरीरनी साथे संबन्धनो विचार करे छे—'जस्स णं भंते'! इत्यादि. जेने वैक्रिय शरीर छे तेने आहारक शरीर नथी, अने जेने आहारक शरीर छे तेने वैक्रिय शरीर नथी. कारण के एक काळे आ बन्ने शरीरनो असंभव छे. तैजस अने कार्मणनो जेम औदारिक शरीरनी साथे विचार

जस्स तेयगसरीरं तस्स कम्मगसरीरं णियमा अत्थि, ज-
रीरं, जस्स कम्मगसरीरं तस्स तेयगसरीरं ? गोयमा ! जस्स तेयगसरीरं तस्स कम्मगसरीरं णियमा अत्थि, ज-
स्सवि कम्मगसरीरं तस्सवि तेयगसरीरं णियमा अत्थि ।

१२. एतेसि णं भंते ! ओरालियवेउव्वियआहारगतेयगकम्मगसरीराणं दव्वट्ठयाए पदेसट्ठयाए दव्वट्ठपएस-
ट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा आहारगसरीरा दव्वट्ठयाते, वेउव्वियसरीरा दव्व-
ट्ठयाए असंखेज्जगुणा, ओरालियसरीरा दव्वट्ठयाते असंखेज्जगुणा, तेयाकम्मगसरीरा दोवि तुल्ला दव्वट्ठयाते

शरीर होय ? हे गौतम ! जेने तैजस शरीर छे तेने अवश्य कार्मण शरीर होय, अने जेने कार्मण शरीर छे तेने तैजस शरीर अवश्य होय.

१२. हे भगवन् ! औदारिक, वैक्रिय, आहारक, तैजस अने कार्मण शरीरमां द्रव्यार्थपणे, प्रदेशार्थपणे अने द्रव्यप्रदेशार्थपणे कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य अने विशेषाधिक ? हे गौतम ! द्रव्यार्थपणे सौथी थोडा आहारक शरीरो छे. तेथी वैक्रिय शरीर द्रव्यार्थपणे असंख्यातगुणा छे, तेथी औदारिक शरीरो द्रव्यार्थपणे असंख्यातगुणा छे, अने तेथी तैजस अने कार्मण शरीरो द्रव्यार्थपणे अनं-

---

कर्यो तेम वक्रिय शरीरनी साथे पण विचार करवो अने आहारक शरीरनी साथे पण तेमज विचार करवो. तैजस अने कार्मण परस्पर नियत सहचारी होवाथी जेने तैजस शरीर छे तेने अवश्य कार्मण शरीर होय छे, जेने कार्मण शरीर छे तेने अवश्य तैजस शरीर होय छे. एम संबन्ध द्वार समाप्त थयुं.

१२. हवे द्रव्य, प्रदेश अने द्रव्य-प्रदेश उभय रूपे अल्पबहुत्व कहे छे—'एएसि णं भंते !' इत्यादि. सौथी थोडां आहारक शरीरो द्रव्यार्थपणे छे, एटले आहारक शरीरो-शरीरमात्र द्रव्यनी संख्या वडे थोडां छे. कारण के उत्कृष्ट स्थाने पण तेओ बे हजारथी नव

अणंतगुणा। पदेसट्ठयाए-सव्वत्थोवा आहारगसरीरा पदेसट्ठयाए, वेउव्वियसरीरा पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, ओरालियसरीरा पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, तेयगसरीरा पदेसट्ठयाए अणंतगुणा, कम्मगसरीरा पदेसट्ठयाए अणंतगुणा। दव्वट्ठपदेसट्ठयाते-सव्वत्थोवा आहारगसरीरा दव्वट्ठयाते,वेउव्वियसरीरा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, ओरालियसरीरा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, ओरालियसरीरेहिंतो दव्वट्ठयाएहिंतो आहारगसरीरा पदेसट्ठयाए

तगुणा छे अने बन्ने परस्पर तुल्य छे. प्रदेशार्थपणे-सौथी थोडा आहारक शरीरो प्रदेशार्थपणे छे, तेथी वैक्रिय शरीरो प्रदेशार्थपणे असंख्यातगुणा छे, तेथी औदारिक शरीरो प्रदेशार्थपणे असंख्यातगुणा छे, तेथी तैजस शरीरो प्रदेशार्थपणे अनंतगुणा छे, तेथी कार्मण शरीरो प्रदेशार्थपणे अनन्तगुणा छे. द्रव्यार्थप्रदेशार्थपणे-सौथी थोडा आहारक शरीरो द्रव्यार्थपणे छे, तेथी वैक्रिय शरीरो द्रव्यार्थपणे असंख्यातगुणा छे, तेथी औदारिक शरीरो द्रव्यार्थपणे असंख्यातगुणा छे, द्रव्यार्थरूपे औदारिक शरीर करतां प्रदेशार्थरूपे

हजार सुधी होय छे. केम के "उक्कोसेणं उ जुगवं पुहुत्तमेत्तं सहस्साणं" उत्कृष्टथी एकसमये सहस्रपृथक्त्व होय छे-एवुं शास्त्र वचन छे. तेथी पण वैक्रिय शरीरो द्रव्यार्थपणे असंख्यातगुणा छे, कारण के सर्व नारको सर्व देवो तथा केटलाएक तिर्यंच पंचेन्द्रिय, मनुष्य अने बादर वायुकायिकोने वैक्रिय शरीरनो संभव छे. तेथी पण औदारिक शरीरो द्रव्यार्थपणे असंख्यातगुणा छे, कारण के पृथिवी, पाणी, अग्नि, वायु, वनस्पति, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउरिन्द्रिय, तिर्यंच पंचेन्द्रिय अने मनुष्योने औदारिक शरीर होय छे. तेथी पण तैजस-कार्मण शरीरो द्रव्यार्थपणे अनन्तगुणां छे, कारण के अनन्तानन्त सूक्ष्म अने बादर निगोद जीवो प्रत्येकने तैजस अने कार्मण शरीर होय छे. स्वस्थानने आश्रयी परस्पर तुल्य छे, कारण बन्ने अवश्य सहचारी छे, तेमांना एकना अभावमां बीजानो पण अवश्य अभाव होय छे. प्रदेशार्थपणाना विचारमां सौथी थोडा आहारक होय छे. तेथी वैक्रियशरीरो प्रदेशार्थपणे असंख्यातगुणां छे. अहीं

अणंतगुणा, वेउव्वियसरीरा पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, ओरालियसरीरा पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, तेयाकम्मा दोवि तुल्ला दवट्ठयाए अणंतगुणा, तेयगसरीरा पदेसट्ठयाए अणंतगुणा, कम्मगसरीरा पदेसट्ठयाए अणंतगुणा ।

आहारक शरीरो अनन्तगुणा छे. तेथी वैक्रिय शरीरो प्रदेशार्थरूपे असंख्यातगुणा छे, तेथी औदारिक शरीरो प्रदेशार्थरूपे असंख्यातगुणा छे, तेथी तैजस अने कार्मण शरीरो द्रव्यार्थरूपे अनन्तगुणा अने बन्ने परस्पर तुल्य छे, तेथी तैजस शरीरो प्रदेशार्थरूपे अनंतगुणा छे, तेथी कार्मण शरीरो प्रदेशार्थरूपे अनन्तगुणा छे.

जो के वैक्रियशरीर योग्य वर्गणाथी आहारकशरीर वर्गणा परमाणुनी अपेक्षाए अनन्तगुणी छे, तो पण थोडी वर्गणा वडे आहारक शरीर थाय छे. कारण के ते हस्त प्रमाण छे. अने अतिशय घणी वैक्रिय शरीर वर्गणा वडे वैक्रिय शरीर थाय छे, कारण के ते उत्कृष्ट लाख योजन प्रमाण छे. अति थोडां आहारक शरीरो छे, कारण के के सहस्रपृथक्त्व प्रमाण होय छे. अने अतिशय घणां वैक्रिय शरीरो छे, कारण के ते असंख्याती श्रेणिमां रहेला आकाश प्रदेशना राशि प्रमाण होय छे. तेथी आहारक शरीरोथी प्रदेशार्थपणे वैक्रियशरीरो असंख्यातगुणा होय छे. तेथी पण औदारिक शरीरो प्रदेशार्थपणे असंख्यातगुणां छे, कारण के ते असंख्याता लोकाकाशना प्रदेश प्रमाण होवाथी तेने अत्यंत घणा प्रदेशोनो संभव छे. तेथी पण तैजस शरीरो प्रदेशार्थपणे अनन्तगुणा छे. कारण के औदारिक शरीरोथी द्रव्यार्थपणे पण तेओ अनन्तगुणा छे. तेथी पण कार्मण शरीरो प्रदेशार्थपणे अनन्तगुणां जाणवा. कारण के तैजस वर्गणाथी कार्मण वर्गणा परमाणुनी अपेक्षाए अनन्तगुणी छे. द्रव्यार्थ-प्रदेशार्थपणाना विचारमां-सौथी थोडा आहारक शरीरो द्रव्यार्थपणे छे, तेथी वैक्रिय शरीरो द्रव्यार्थपणे असंख्यातगुणा छे, तेथी औदारिक शरीरो द्रव्यार्थपणे असंख्यातगुणा छे. अहीं बधे पूर्वे कहेलो विचार करवो. द्रव्यार्थपणे औदारिक शरीरो करतां आहारकशरीरो प्रदेशार्थपणे अनन्तगुणा छे, कारण के औदारिक शरीरो बधी संख्या मळी असंख्याता लोकाकाश प्रदेश प्रमाण छे. अने आहारक शरीरने योग्य एक एक वर्गणामां पण अभव्योथी

१३. एतेसि णं भंते ! ओरालियवेउव्वियआहारगतेयगकम्मगसरीराणं जहण्णियाए ओगाहणाए उक्कोसियाए ओगाहणाए जहण्णुक्कोसियाए ओगाहणाए कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा ओरालियसरीरस्स जहण्णिया ओगाहणा, तेयाकम्मगाणं दोण्हवि तुल्ला जहण्णिया ओगाहणा विसेसाहिया, वेउव्वियसरीरस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा, आहारगसरीरस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा।

१३. हे भगवन् ! ए औदारिक,वैक्रिय,आहारक,तैजस अने कार्मण शरीरोमां जघन्य अवगाहना वडे,उत्कृष्ट अवगाहना वडे तथा जघन्य अने उत्कृष्ट अवगाहना वडे कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे? हे गौतम ! सौथी थोडी औदारिक शरीरनी जघन्य अवगाहना छे. तेथी तैजस अने कार्मण शरीरनी जघन्य अवगाहना विशेषाधिक अने परस्पर तुल्य छे, तेथी वैक्रिय शरीरनी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी छे, तेथी आहारक शरीरनी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी छे. उत्कृष्ट अवगाहना वडे—सौथी

अनन्तगुणा परमाणुओ होय छे. तेथी पण वैक्रिय शरीरो प्रदेशार्थपणे असंख्यातगुणां होय छे. तेथी औदारिक शरीरो प्रदेशार्थपणे असंख्यातगुणां छे. आ संवन्धे विचार हमणांज कर्यो छे. तेथी पण तैजस अने कार्मण शरीरो द्रव्यार्थपणे अनन्तगुणां छे. कारण के ते अतिशय मोटी अनन्त संख्यावडे युक्त छे. तेथी पण तैजस शरीरो प्रदेशार्थपणे अनन्तगुणां छे. कारण के अनन्तपरमाणुरूप एवी अनन्त वर्गणाओ वडे एक एक तैजस शरीर बनवा योग्य छे. तेथी पण कार्मण शरीरो प्रदेशार्थपणे अनन्तगुणां छे, तेनुं कारण पूर्व जणावेलुं छे. ए पांचे शरीरोनुं द्रव्य, प्रदेश अने उभयने आश्रयी अल्पबहुत्व कह्युं.

१३. हवे जघन्य, उत्कृष्ट अने उभय अवगाहनानी अपेक्षाए अल्पबहुत्व कहे छे—'एएसि णं' इत्यादि. सौथी थोडी औदारिक शरीरनी जघन्य अवगाहना होय छे, कारण के ते आंगळना असंख्यातमा भाग प्रमाण छे. तेथी तैजस कार्मणनी जघन्य अवगाहना

उक्कोसियाए ओगाहणाए—सव्वत्थोवा आहारगसरीरस्स उक्कोसिया ओगाहणा, ओरालियसरीरस्स उक्को-
सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा, वेउव्वियसरीरस्स उक्कोसिया ओगाहणा संखिज्जगुणा, तेयाकम्मगाणं दोवि
तुल्ला उक्कोसिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा । जहण्णुकोसियाते ओगाहणाते—सव्वत्थोवा ओरालियसरीरस्स जह-
ण्णिया ओगाहणा, तेयाकम्माणं दोण्हवि तुल्ला जहण्णिया ओगाहणा विसेसाहिया, वेउव्वियसरीरस्स जह-

थोडी आहारक शरीरनी उत्कृष्ट अवगाहना छे. तेथी औदारिक शरीरनी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी छे, तेथी वक्रिय शरीरनी
उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी छे. तेथी तैजस अने कार्मण शरीरनी उत्कृष्ट अवगाहना असंख्यातगुणी छे अने परस्पर तुल्य छे.
जघन्योत्कृष्ट अवगाहनावडे—सौथी थोडी औदारिक शरीरनी जघन्य अवगाहना छे. तेथी तैजस कार्मण शरीरनी जघन्य अवगाहना
विशेषाधिक छे अने परस्पर तुल्य होय छे. तेथी वैक्रिय शरीरनी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी छे. तेथी आहारक शरीरनी

परस्पर तुल्य अने औदारिकनी जघन्य अवगाहनाथी विशेषाधिक छे. केवी रीते छे? आ प्रमाणे छे—'मरण समुद्घात युक्त प्राणीना
पूर्वेना शरीरथी जे वहार नीकळेलुं तैजस शरीर छे तेनी लंबाइ, जाडाइ अने विस्तार वडे अवगाहनानो विचार कराय छे'—एम पूर्वे
कहेलुं छे. तेमां जे प्रदेशमां उत्पन्न थवानो छे ते पण औदारिक शरीरनी अवगाहना जेटलो आंगळना असंख्यातमा भागप्रमाण प्रदेश
तैजस शरीरवडे व्याप्त छे अने जे वच्चेनो भाग घणोज थोडो छे ते पण तैजस शरीर वडे व्याप्त छे. माटे औदारिक शरीरनी जघन्य
अवगाहनाथी विशेषाधिक छे. तेथी पण वैक्रिय शरीरनी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी छे, कारण के आंगळनो असंख्यातमा
भागना असंख्याता भेदो छे. तेथी आहारक शरीरनी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी छे. कारण के कांइक न्यून एक हाथ प्रमाण छे.
उत्कृष्ट अवगाहनाना विचारमां सौथी थोडी आहारक शरीरनी उत्कृष्ट अवगाहना छे, कारण के ते एक हाथ प्रमाण छे. तेथी पण

ण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा, आहारगसरीरस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखिज्जगुणा, आहारगसरीरस्स जहण्णियाहिंतो ओगाहणाहिंतो तस्स चेव उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया, ओरालियसरीरस्स उक्कोसिया ओगाहणा संखेज्जगुणा, वेउव्वियसरीरस्स उक्कोसिया ओगाहणा संखिज्जगुणा, तेयाकम्मगाणं दोण्हवि तुल्ला उक्कोसिया ओगाहणा असंखिज्जगुणा ॥ पण्णवणाए भगवईए एगवीसइमं ओगाहणासंठाणं पयं समत्तं ॥ २१ ॥

जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी छे. आहारक शरीरनी जघन्य अवगाहनाथी तेनीज उत्कृष्ट अवगाहना विशेषाधिक छे. तेथी औदारिक शरीरनी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी छे. तेथी वैक्रिय शरीरनी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी छे. तेथी तैजस अने कार्मण शरीरनी उत्कृष्ट अवगाहना असंख्यातगुणी अने परस्पर तुल्य छे.

प्रज्ञापना भगवतीना अनुवादमां एकवीशमुं अवगाहनासंस्थान पद समाप्त.

औदारिक शरीरनी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी छे, कारण के के कांइक अधिक हजार योजन प्रमाण छे. तेथी वैक्रिय शरीरनी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी छे, कारण के ते कांइक अधिक लाख योजन प्रमाण छे. तेथी तैजस-कार्मणनी उत्कृष्ट अवगाहना परस्पर तुल्य अने वैक्रिय शरीरनी उत्कृष्ट अवगाहनाथी असंख्यातगुणी होय छे, कारण के ते चौद राजलोक प्रमाण छे. जघन्य अने उत्कृष्ट अवगाहनाना विचारमां आहारक शरीरनी जघन्य अवगाहना करतां तेनीज उत्कृष्ट अवगाहना विशेषाधिक जाणवी. कारण के ते पण अंश वडे अधिक छे. बाकी बधुं सुगम छे, कारण के तेनो हमणांज विचार कर्यो छे.

प्रज्ञापना टीकाना अनुवादमां एकवीशमुं अवगाहनासंस्थान पद समाप्त.

बावीसतिमं किरियापयं ।

१. कति णं भंते ! किरियाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! पंच किरियाओ पण्णत्ताओ, तंजहा–काइया १, अहिगरणिया २, पादोसिया ३, पारियावणिया ४, पाणाइवायकिरिया ५। काइया णं भंते ! किरिया कतिविहा पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–अणुवरयकाइया य दुप्पउत्तकाइया य । अहिगरणिया णं भंते ! किरिया कइविहा पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–संजोयणाहिगरणिया य निव्वत्तणाहिगरणिया य ।

बावीशमुं क्रियापद.

१. हे भगवन् ! केटली क्रियाओ कही छे ? हे गौतम ! पांच क्रियाओ कही छे. ते आ प्रमाणे—१ कायिकी, २ अधिकरणिकी, ३ प्राद्वेपिकी, ४ पारितापनिकी अने ५ प्राणातिपातिकी. हे भगवन् ! कायिकी क्रिया केटला प्रकारनी छे ? हे गौतम ! बे प्रकारनी कही छे. ते आ प्रमाणे–१ अनुपरतकायिकी अने २ दुष्प्रयुक्तकायिकी. हे भगवन् ! अधिकरणिकी क्रिया केटला प्रकारनी कही छे ? हे गौतम ! बे प्रकारनी कही छे. ते आ प्रमाणे–संयोजनाधिकरणिकी अने निर्वर्तनाधिकरणिकी. हे भगवन् ! प्राद्वेपिकी क्रिया

---

१. एम एकवीशमुं पद कह्युं, हवे बावीशमा पदनो आरंभ कराय छे. तेनो आ प्रमाणे संबन्ध छे—पूर्वना पदमां गतिना परिणाम रूपे शरीरना अवगाहनादिनो विचार कर्यो अने आ पदमां नारकादि गति परिणाम रूपे परिणत थयेला जीवोनी प्राणातिपात वगेरे स्वरूपवाळी क्रियाओनो विचार कराय छे. तेनुं आ प्रथम सूत्र छे—'कइ णं भंते किरियातो पन्नत्ताओ' ? हे भगवन् ! केटली क्रियाओ कही छे ? इत्यादि. करवुं ते क्रिया, एटले कर्मबंधना कारणभूत जीवनी चेष्टा-प्रवृत्ति, ते पांच प्रकारनी छे. ते आ प्रमाणे-

पादोसिया णं भंते ! किरिया कतिविहा पन्नत्ता ? गोयमा ! तिविहा पन्नत्ता, तंजहा–जेणं अप्पणो वा परस्स वा तदुभयस्स वा असुभं मणं संपधारेति, सेत्तं पादोसिया किरिया । पारियावणिया णं भंते ! किरिया कतिविहा पन्नत्ता ? गोयमा ! तिविहा पन्नत्ता, तंजहा–जेणं अप्पणो वा परस्स वा तदुभयस्स वा अस्सायं वेदणं उदीरेति, सेत्तं पारियावणिया किरिया । पाणातिवायकिरिया णं भंते ! कतिविहा पन्नत्ता ? गोयमा ! तिविहा

केटला प्रकारनी कही छे ? हे गौतम ! त्रण प्रकारनी कही छे. ते आ प्रमाणे–जे प्रकारे पोताना उपर, परना उपर के बन्नेना उपर अशुभ मन करे–अशुभ चिंतवे. एम प्राद्वेषिकी क्रिया कही. हे भगवन् ! पारितापनिकी क्रिया केटला प्रकारनी कही छे ? हे गौतम ! त्रण प्रकारनी कही छे. ते आ प्रमाणे–जे प्रकारे पोताने, परने अने बन्नेने अशाता वेदना उदीरे छे. एम पारितापनिकी क्रिया कही. हे भगवन् ! प्राणातिपातिकी क्रिया केटला प्रकारनी कही छे ? हे गौतम ! त्रण प्रकारनी कही छे. ते आ प्रमाणे–जे प्रकारे पोताने, परने

'कायिकी' इत्यादि. 'चीयते' जे उपचय पामे–वृद्धि पामे ते काय–शरीर. काये भवा कायेन निर्वृत्ता वा—काय निमित्ते थयेली अथवा ते वडे करायेली क्रिया ते कायिकी. अधिक्रियते अनेन–जे वडे नरकादि दुर्गतिमां आत्मा स्थापन कराय ते अधिकरण–क्रियाविशेष, अथवा चक्र खड्ग वगेरे वस्तु, ते निमित्ते थयेली अथवा ते वडे करायेली क्रिया ते अधिकरणिकी. 'पाउसिया' प्रद्वेष–मत्सर, कर्मबन्धनुं कारण जीवनो अशुभ परिणामविशेष, ते निमित्ते थयेली अथवा ते वडे करायेली अथवा मत्सररूप क्रिया ते प्राद्वेषिकी. 'पारियावणिया' परिताप–पीडा करवी, ते निमित्ते थयेली, अथवा ते वडे करायेली अथवा परितापरूप क्रिया ते पारितापनिकी. प्राण–इन्द्रियादि, तेओनो अतिपात–नाश, ते संबन्धे क्रिया, अथवा प्राणतिपात–हिंसा करवारूप क्रिया ते प्राणातिपातक्रिया. तेमां कायिकी क्रिया बे प्रकारनी छे. ते आ प्रमाणे–अनुपरतकायिकी अने दुष्प्रयुक्तकायिकी. अनुपरत–देशथी के सर्वथी जे सावद्य–अशुभ योगथी निवृत्त थयेलो न होय

पन्नत्ता, तंजहा-जेणं अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा जीवियाओ ववरोवेइ, से त्तं पाणाइवायकिरिया ।

अथवा बन्नेने जीवितथी जुदा करे. एम प्राणातिपात क्रिया कही.

ते, तेनी जे कायिकी क्रिया ते अनुपरतकायिकी. आ क्रिया दरेक जीवने विषे होय छे. आ क्रिया अविरतिने जाणवी, पण देशविरति के सर्वविरतिने होती नथी. तथा दुष्ट प्रयुक्त-कायादिनो व्यापार जेओने छे ते दुष्प्रयुक्त, तेने जे कायिकी क्रिया ते दुष्प्रयुक्तकायिकी. आ क्रिया प्रमत्तसंयतने पण होय छे, कारण के प्रमत्त अवस्थामां कायना दुष्प्रयोगनो-अशुभ व्यापारनो संभव छे. आधिकरणिकी क्रिया पण बे प्रकारनी छे-संयोजनाधिकरणिकी अने निर्वर्तनाधिकरणिकी. तेमां संयोजन-पूर्वे बनावेलां हळ, गर (कालान्तरे मारनार विष) अने कूट यन्त्रादिना अंगो मेळववा, तेज अधिकरण-संसारनो हेतु होवाथी संयोजनाधिकरणिकी कहेवाय छे. आ क्रिया पूर्वे बनावेला हलादिना अवयवो जोडी तैयार करनारने होय छे. तथा निर्वर्तन-तलवार, शक्ति, भाला अने तोमर वगेरे शस्त्रोने मूळथी बनाववा ते निर्वर्तनाधिकरणिकी. अथवा पांच प्रकारना औदारिकादि शरीरोनुं उत्पन्न करवुं ते पण निर्वर्तनाधिकरणिकी कहेवाय छे, कारण के अशुभ प्रवृत्तिवाळुं शरीर पण संसारवृद्धिनुं कारण छे. प्राद्वेषिकी क्रिया त्रण प्रकारनी छे, ते आ प्रमाणे-जे प्रकारे जीवो पोताना, अन्यना के उभय-स्वपर बन्नेना उपर अशुभ-अकुशल मन 'संप्रधारयति' धारण करे, विशेषतः करे ते कारणथी-त्रण प्रकारनो विषय होवाथी त्रण प्रकारनी प्राद्वेषिकी क्रिया छे. ते आ प्रमाणे-कोइ मनुष्ये कोइ कार्य पोते कर्युं अने तेनुं परिणाम भयंकर थाय त्यारे अविवेकथी पोताना उपर अशुभ मन धारण करे, ए प्रमाणे कोइ बीजाना उपर, तेमज कोइ पोताना अने परना बन्नेना उपर अकुशल मन धारण करे छे. पारितापनिकी पण त्रण प्रकारनी छे. ते आ प्रमाणे-जे प्रकारे कोइ मनुष्य कोइ पण कारणथी अविवेक वडे पोतानेज दुःखरूप असाता वेदना उत्पन्न करे, कोइ बीजाने करे, तथा कोइ पोताने अने बीजाने एम बन्नेने करे तेथी स्व, पर अने उभयना भेदथी त्रण प्रकारनी परितापनिकी क्रिया छे. (प्र०)—जो एम होय तो लोच करवो, तपस्या करवी वगेरे

२. जीवा णं भंते ! किं सकिरिया अकिरिया ? गोयमा ! जीवा सकिरियावि अकिरियावि । से केणट्ठेणं

२. हे भगवन् ! जीवो शुं सक्रिय–क्रियावाळा छे के क्रियारहित छे? हे गौतम ! जीवो क्रियावाळा पण छे अने क्रियारहित पण छे.

अनुष्ठान नहि करवानो प्रसंग प्राप्त थशे, कारण के ते यथासंभव स्व, पर के उभयने अशाता वेदनानुं कारण छे. (उ०)—ते अयुक्त छे, कारण के ते परिणामे हितकारक होवाथी चिकित्सानी पेठे विवेकथी थयेला लोच, तपोऽनुष्ठानादि असातावेदनानो हेतु नथी. वळी (दुर्ध्याननुं कारण) अशक्य तपनो तो प्रतिषेध करेलो छे. ए संबन्धे कह्युं छे के-

"सो हु तवो कायव्वो जेण मणो मंगुलं न चिंतेइ । जेण न इंदियहाणी जेण य जोगा न हायंति" ॥

ते तप करवुं के जेथी मन अशुभ चिंतन न करे, इन्द्रियोनो नाश न थाय अने योगो क्षीण न थाय.

"कायो न केवलमयं परिपालनीयो, मृष्टै रसैर्बहुविधैर्न च लालनीयः ।
चित्तेन्द्रियाणि न चरन्ति यथोत्पथेषु वश्यानि येन च तथाऽऽचरितं जिनानाम्" ॥

केवळ शरीरनुं सारी रीते रक्षण करवुं एम नथी, तेम मिष्ट एवा बहु प्रकारना रसो वडे लालन करवुं एम पण नथी, जेम मन अने इन्द्रियो उन्मार्गे न जाय अने वश रहे ते प्रमाणे जिनोनुं आचरण छे.

प्राणातिपात क्रिया पण त्रण प्रकारनी छे. ते आ प्रमाणे—'जेणं अप्पणो' इत्यादि. जे प्रकारे कोइ अविवेकी मनुष्य भैरवप्रपात-पर्वतादि उपरथी पडवा वगेरेथी पोताने जीवितथी जुदो करे, कोइ द्वेषादि वडे बीजाना जीवननो नाश करे अने कोइ पोताना अने परना जीवननो नाश करे, माटे प्राणातिपातक्रिया पण त्रण प्रकारनी छे. आज कारणथी भगवंते अकाळ मरणनो पण प्रतिषेध कर्यो छे. कारण के तेथी प्राणातिपात क्रियाना दोषनो संभव छे.

२. ए प्रमाणे क्रियाओ कही, हवे ए क्रियाओ सामान्यपणे बधा जीवोने होय छे के नथी होती? एवी जिज्ञासावाळो शिष्य आ प्रश्न

भंते ! एवं वुच्चइ–'जीवा सकिरियावि अकिरियावि'? गोयमा! जीवा दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–संसारसमावण्णगा य असंसारसमावण्णगा य। तत्थ णं जे ते असंसारसमावण्णगा ते णं सिद्धा, सिद्धा णं अकिरिया। तत्थ णं जे ते संसारसमावण्णगा ते दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–सेलेसिपडिवण्णगा य असेलेसिपडिवन्नगा य। तत्थणं जे ते सेलेसिपडिवन्नगा ते णं अकिरिया, तत्थ णं जे ते असेलेसिपडिवन्नगा ते णं सकिरिया, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ–'जीवा सकिरियावि अकिरियावि'।

हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के 'जीवो क्रियावाळा पण छे अने क्रियारहित पण छे ?' हे गौतम! जीवो बे प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे–संसारसमापन्न–संसारने प्राप्त थयेला अने असंसारसमापन्न–मोक्षने प्राप्त थयेला. तेमां जे संसारने प्राप्त थयेला जीवो छे ते बे प्रकारना छे, ते आ प्रमाणे–शैलेशीने प्राप्त थयेला अने शैलेशीने प्राप्त नहि थयेला. तेमां जे शैलेशीने प्राप्त थयेला छे तेओ अक्रिय–क्रियारहित छे, अने जे शैलेशीने प्राप्त थयेला नथी तेओ क्रियासहित छे, ते माटे हे गौतम ! एम कहुं छुं के जीवो क्रियासहित छे अने क्रियारहित पण छे.

करे छे—'जीवा णं भंते'। इत्यादि. हे भगवन् ! जीवो क्रियावाळा होय छे ? इत्यादि सुगम छे. परन्तु 'संसारसमावन्नगा' इति संसारसमापन्न–चार गतिमां भ्रमण करवारूप संसारने सम्-पकता वडे प्राप्त थयेला, तेथी विपरीत असंसारसमापन्न जाणवा. च शब्द तेओना अनेक भेदोनो सूचक छे. तेमां जे असंसारसमापन्न छे तेओ सिद्ध छे अने सिद्धो शरीर अने मनोवृत्तिना अभावे क्रियारहित छे. जेओ संसारसमापन्न–संसारी छे ते बे प्रकारना छे—शैलेशी–अयोगी अवस्थाने प्राप्त थयेला अने ते सिवायना बीजा शैलेशीने नहि प्राप्त थयेला. तेमां जेओ शैलेशीने प्राप्त थयेला छे तेओ सूक्ष्म अने बादर काययोग, वचनयोग अने मनोयोगनो रोध

करेलो होवाथी क्रियारहित छे. जेओ शैलेशीने प्राप्त थयेला नथी तेओ सयोगी होवाथी क्रियासहित छे. 'ए हेतुथी एम कहुं छुं.' इत्यादि उपसंहार वाक्य छे. ए प्रमाणे सक्रिय अने अक्रिय जीवो कह्या.

३. हवे प्राणातिपातक्रिया जे प्रकारे थाय ते प्रकारे बतावे छे—'हे भगवन्! जीवोने प्राणातिपात वडे एटले प्राणातिपातना अध्यवसाय वडे क्रिया-अर्थात् प्राणातिपातक्रिया कराय छे? आ कर्मकर्तरि प्रयोग छे. एटले जीवोने प्राणातिपातना अध्यवसाय वडे प्राणातिपातक्रिया थाय छे? आ प्रश्न वर्तमान नयना अभिप्रायथी छे. अहीं कयो नय छे के जे अध्यवसाय संबन्धी प्रश्न करे छे? ऋजुसूत्र नय छे. जेम के ऋजुसूत्र नयना मते हिंसाना परिणाम समये ज प्राणातिपातक्रिया कहेवाय छे, पण अन्य प्रकारना परिणाम होय त्यारे प्राणातिपातक्रिया कहेवाती नथी. कारण के पुण्य अने पाप कर्मनुं ग्रहण अने अग्रहण अध्यवसायने अनुसारे होय छे, भगवंत पण ते ऋजुसूत्र नयने आश्रयी प्रत्युत्तर आपे छे—'हन्ता अत्थि'. 'हन्त' अव्यय प्रेषण, अवधारण अने विषाद अर्थमां वपराय छे. अहीं अवधारण अर्थमां छे. एम निश्चित छे के प्राणातिपातना अध्यवसाय वडे प्राणातिपात क्रिया थाय छे. कारण के 'परिणामियं पमाणं निच्छयमवलंबमाणाणं' निश्चय नयनुं अवलम्बन करनारने परिणाम प्रमाणभूत छे-एवुं आगमनुं वचन छे. आ ज वचनने आश्रयी आवश्यकमां पण आ सूत्र छे—"आया चेव अहिंसा, आया हिंस त्ति निच्छओ एस" आत्मा ज अहिंसा छे अने आत्मा हिंसा छे-ए निश्चय नयनुं वचन छे. ए प्रमाणे जेम प्राणातिपातक्रिया थाय ते प्रकारे कह्युं. हवे कोने विषे प्राणातिपात क्रिया थाय छे ए संबन्धे निरूपण करे छे—'कम्हि णं भंते'।-हे भगवन्! कोने विशे प्राणातिपातक्रिया थाय छे? इत्यादि सूत्र सुगम छे, पण एटली विशेषता छे के मारवानो परिणाम जीवने विषे थाय छे, पण अजीवने विशे थतो नथी. जे रज्जु वगेरेमां सर्पादिनी बुद्धिथी मारवानो विचार थाय छे ते पण 'आ सर्प छे' ए बुद्धिथी प्रवृत्ति करतो होवाथी जीवने विषेज थाय छे, पण रज्जु वगेरेने रज्जु वगेरे रूपे जाण्या पछी कोइ पण तेने मारवानो विचार करतुं नथी. माटे प्राणातिपातक्रिया छ जीवनिकायने विशे कही छे. हवे एज प्राणातिपातक्रियानो उपर कह्या प्रमाणे नैरयिकादि चोवीश दंडकने आश्रयी विचार करे छे—'अत्थि णं भंते' इत्यादि. परन्तु सूत्रपाठ

अत्थि णं भंते ! नेरइयाणं पाणाइवाएणं किरिया कज्जइ ? हन्ता अत्थि । कम्हि णं भंते ! पाणाइवाएणं किरिया

आ प्रमाणे जाणवो—"अत्थि णं भंते ! नेरइयाणं पाणाइवाएणं किरिया कज्जइ ? हन्ता अत्थि । कम्हि णं भंते ! पाणाइवाएणं किरिया कज्जइ ? गोयमा ! छसु जीवनिकाएसु"—हे भगवन् ! शुं एम छे के नैरयिकोने प्राणातिपात वडे क्रिया थाय छे ? हा अवश्य थाय छे. हे भगवन् ! कोने विशे प्राणातिपात वडे क्रिया थाय छे ? गौतम ! छ जीवनिकायने विशे थाय छे. ए प्रमाणे वैमानिकसूत्र सुधी जाणवुं. एम जे प्रकारे प्राणातिपात क्रिया थाय छे अने जेने विषे थाय छे तेनुं प्रतिपादन कर्युं. हवे ए प्रमाणे ज मृषावादादि संबन्धे सूत्रो कहे छे—'अत्थि णं भंते' ! मुसावाएणं'—मृषावादना परिणामवडे क्रिया थाय छे ? इत्यादि सुगम छे. परन्तु 'किरिया कज्जइ' यथासंभव प्राणातिपात वगेरे क्रिया थाय छे. एटले प्राणातिपातनां परिणाम वडे प्राणातिपातक्रिया थाय छे, मृषावादना परिणाम वडे मृषावादक्रिया थाय छे. तथा सद्वस्तुनो अपलाप करवो अने असतनी प्ररूपणा करवी ते मृषावाद. अने ते लोकालोकमां रहेली बधी वस्तु विशे पण संभवे छे. तेथी मृषावाद सूत्रमां कह्युं छे के 'सव्वदव्वेसु' मृषावादक्रिया सर्व द्रव्यने विषे होय छे. अहिं द्रव्यनुं ग्रहण पर्यायनुं उपलक्षण- सूचक छे, तेथी पर्यायोने विषे पण जाणवुं. तथा जे वस्तु ग्रहण के धारण करी शकाय तेनुं ज आदान-ग्रहण थाय छे, बाकीनानुं ग्रहण थतुं नथी. माटे अदत्तादान सूत्रमां 'गहणधारणिज्जेसु दव्वेसु' अदत्तादानक्रिया ग्रहण करवा अने धारण करवा लायक द्रव्यने विषे होय छे-एम कह्युं छे. मैथुननो विचार चित्र, लेप अने काष्ठादिना बनावेलां रूपोमां अने रूपसहित स्त्री वगेरेमां होय छे. तेथी मैथुन सूत्रमां कह्युं छे के 'रूवेसु वा रूवसहगएसु दव्वेसु वा' मैथुनक्रिया रूपो अने रूपसहित द्रव्योमां होय छे. तथा परिग्रह-स्वस्वामिभाव संबन्ध वडे मूर्छा-आसक्ति, अने ते प्राणीओने अतिशय लोभथी सर्व वस्तुने विशे थाय छे. तेथी परिग्रह सूत्रमां कह्युं छे के 'सव्वदव्वेसु'—परिग्रहक्रिया सर्व द्रव्योने विशे होय छे. आज हेतुथी शास्त्रमां बीजे स्थळे पण प्रथम व्रत सर्वजीवविषयक कह्युं छे. बीजुं मृषावाद विरमण अने छेल्लुं परिग्रहविरमण व्रत सर्व वस्तुने विशे तथा त्रीजुं अने चोथुं तेना-सर्व वस्तुना एक देश-भागने विशे होय छे. ए संबन्धे कह्युं छे के—

"पढमंमि सव्व जीवा बीए चरिमे य सव्वदव्वाइं । सेसा महव्वया खलु तदेकदेसम्मि नायव्वा" ॥

३. अत्थि णं भंते ! जीवाणं पाणाइवाएणं किरिया कज्जति ? हंता गोयमा ! अत्थि । कम्हि णं भंते ! जीवाणं पाणातिवाएणं किरिया कज्जति ? गोयमा ! छसु जीवनिकाएसु । अत्थि णं भंते ! नेरइयाणं पाणाइवाएणं किरिया कज्जति ? गोयमा ! एवं चेव । एवं जाव निरंतरं वेमाणियाणं । अत्थि णं भंते ! जीवाणं मुसावाएणं किरिया

३. हे भगवन् ! शुं एम छे के जीवो प्राणातिपात वडे क्रिया करे छे ? हा गौतम ! एम छे. हे भगवन् ! कोने विषे जीवो प्राणातिपात वडे क्रिया करे छे ? हे गौतम ! छ जीवनिकायने विषे करे छे. हे भगवन् ! शुं एम छे के नैरयिको प्राणातिपात वडे क्रिया करे छे ? हे गौतम ! एमज समजवुं. ए प्रमाणे निरन्तर वैमानिको सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! शुं एम छे के जीवो मृषावाद

पहेला महाव्रतनो विषय सर्व जीवो, बीजा अने छेल्ला महाव्रतनो विषय सर्व द्रव्यो अने वाकीना महाव्रतो तेना एक देशने विषे जाणवा. क्रोधादि सुप्रसिद्ध छे. परन्तु कलह-राडो पाडवी, अभ्याख्यान-खोटा दोषनो आरोप करवो. जेम के चोर नहि होवा छतां 'तुं चोर छो, परस्त्री गमन नहि करनारने पण तुं परस्त्रीलंपट छो' एम कहेवुं इत्यादि. अभ्याख्याननो मृषावादमां पण समावेश थाय छे तो पण आ मोटो दोष छे एम जाणी जुदुं ग्रहण कर्युं छे. पैशून्य-परोक्षमां साचा अथवा खोटा दोषो प्रगट करवा. परपरिवाद-घणा माणसोनी समक्ष बीजाना दोषो कहेवा. रति अने अरति प्रसिद्ध छे, अने बन्ने मळीने एक पापस्थान छे. 'मायामोसेणं' इति मायामृषावाद-माया-कपट अने मृषा-जुठुं, कपट पूर्वक जुठुं बोलवुं. अहीं समुदायनी विवक्षा करेली छे अने महा कर्मबन्धनुं कारण छे माटे माया अने मृषावादथी जुदुं पापस्थान कह्युं छे. तथा 'मिच्छादंसणसल्लेणं' इति. मिथ्यादर्शन रूप शल्य ते मिथ्यादर्शनशल्य, ते वडे-आ हमणां कहेला पदोना कथन वडे 'अट्ठारस एए दंडगा' बतावेला बधा मळीने अढार दंडको थाय छे. कारण के प्राणातिपातादि अढार पापस्थानको छे.

४. ए प्रमाणे अढार पापस्थानकोने आश्रयी जीवोनी क्रिया अने तेओनो विषय बताव्यो, हवे ते अढार पापस्थानकोने आश्रयी

कज्जति ? हंता ! अत्थि । कम्हि णं भंते ! जीवाणं मुसावाएणं किरिया कज्जति ? गोयमा ! सव्वदव्वेसु, एवं निरंतरं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं । अत्थि णं भंते ! जीवाणं अदिन्नादाणेणं किरिया कज्जति ? हंता अत्थि । कम्हि णं भंते ! जीवाणं अदिन्नादाणेणं किरिया कज्जति ? गोयमा ! गहणधारणिज्जेसु दव्वेसु, एवं नेरइयाणं निरंतरं जाव वेमाणियाणं । अत्थि णं भंते ! जीवाणं मेहुणेणं किरिया कज्जति ? हंता अत्थि । कम्हि णं भंते ! जीवाणं मेहुणेणं किरिया कज्जति ? गोयमा ! रूवेसु वा रूवसहगतेसु वा दव्वेसु, एवं नेरइयाणं निरंतरं जाव वेमाणियाणं ।

वडे क्रिया करे छे ? हा गौतम ! एम छे. हे भगवन् ! जीवो कोने विषे मृषावाद वडे क्रिया करे छे ? हे गौतम ! सर्व द्रव्योने विशे करे छे. ए प्रमाणे निरन्तर नैरयिकोने यावत् वैमानिकोने जाणवुं. हे भगवन् ! शुं एम छे के जीवो अदत्तादान वडे क्रिया करे छे ? हा गौतम ! एम छे. हे भगवन् ! जीवो कोने विषे अदत्तादान वडे क्रिया करे छे ? हे गौतम ! ग्रहण करवा योग्य अने धारण करवा योग्य द्रव्यने विषे करे छे. ए प्रमाणे नैरयिकोने यावत् निरन्तर वैमानिकोने जाणवुं. हे भगवन् ! शुं एम छे के जीवो मैथुन वडे क्रिया करे छे ? हा एम छे. हे भगवन् ! जीवो मैथुन वडे कोने विषे क्रिया करे छे ? हे गौतम !

जीवो एकवचन तथा बहुवचन वडे केटली कर्म प्रकृतिओ बांधे ? ते बतावयानी इच्छावाळा सूत्रकार कहे छे—'जीवे णं भंते'-हे भगवन् ! जीव प्राणातिपात वडे केटली कर्मप्रकृतिओ बांधे ? इत्यादि सूत्र सुगम छे. परन्तु आयुषना बन्धना अभावे सात प्रकृतिओ बांधे छे अने ज्यारे आयुषनो बन्ध करे त्यारे आठ प्रकृतिओ बांधे छे. बहुवचनमां अनेक जीवोना बन्धना विचारमां सामान्यपणे जीवपदने आश्रयी सात प्रकृतिओ बन्ध करनारा अने आठ प्रकृतिओना बन्ध करनारा पण घणा जीवो होय छे तेथी बन्ने स्थळे

अत्थि णं भंते ! जीवाणं परिग्गहेणं किरिया कज्जति? हंता अत्थि । कम्हि णं भंते! जीवाणं परिग्गहेणं किरिया कज्जति ? गोयमा ! सव्वदव्वेसु, एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं । एवं कोहेणं माणेणं मायाए लोभेणं पेज्जेणं दोसेणं कलहेणं अब्भक्खाणेणं पेसुन्नेणं परपरिवाएणं अरतिरतीते मायामोसेणं मिच्छादंसणसल्लेणं । सव्वेसु जीवनेरइयभेदेणं भाणितव्वा निरंतरं जाव वेमाणियाणंति, एवं अट्ठारस एते दंडगा १८ ।

रूपने विषे अथवा रूप सहित द्रव्यने विषे करे छे. ए प्रमाणे नैरयिकोने निरन्तर यावत् वैमानिको सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! शुं एम
छे के जीवो परिग्रह वडे क्रिया करे छे ? हा एम छे. हे भगवन्! जीवो कोने विषे परिग्रह वडे क्रिया करे छे ? हे गौतम ! सर्व द्रव्यने
विषे करे छे. ए प्रमाणे नैरयिको यावत् वैमानिको सुधी जाणवुं. एम क्रोध, मान, माया, लोभ, प्रेम, द्वेष, कलह, अभ्याख्यान
(तोहमत) पैशुन्य, परपरिवाद, अरति रति, मायामृषावाद अने मिथ्यादर्शन शल्य वडे क्रिया करे छे. एम सर्वने विषे जीव अने नैर-
यिकना भेद वडे कहेवा. एम निरन्तर यावत् वैमानिको सुधी जाणवुं. ए प्रमाणे ए अढार दंडको थाय छे.

बहुवचनरूप ए एकज भांगो होय छे. नैरयिक सूत्रमां सात प्रकृतिओनो बन्ध करनारा अवस्थित ज होय छे, कारण के हिंसादि परिणामवाळा हमेशां घणा जीवोने सात प्रकृतिओनो बन्ध अवश्य थाय छे. तेथी ज्यारे एक पण नारक आठ प्रकृतिओने बांधनार न होय त्यारे 'बधा सात प्रकृतिओने बांधनारा होय' ए एक भांगो होय छे. ज्यारे एक आठ प्रकृतिओनो बांधनार होय अने बाकी बधा सात प्रकृतिओना बांधनार होय त्यारे घणा सात प्रकृतिओना बन्धक जीवो अने एक आठ प्रकृतिओनो बन्धक जीव-ए बीजो भांगो होय. ज्यारे आठ प्रकृतिओना बांधनारा पण घणा जीवो होय त्यारे बन्ने स्थळे बहुवचनरूप घणा सात प्रकृतिओना बांधनारा अने आठ प्रकृतिओना बांधनारा होय-ए त्रीजो भांगो थाय छे. ए प्रमाणे त्रण भांगा वडे असुरकुमारथी आरंभी स्तनितकुमार सुधीना

४. जीवे णं भंते ! पाणातिवाएणं कति कम्मपगडीओ बंधति ? गोयमा ! सत्तविहबंधए वा अट्ठविहबंधए
वा । एवं नेरइए जाव निरंतरं वेमाणिते । जीवा णं भंते ! पाणातियाएणं कति कम्मपगडीओ बंधंति ? गोयमा !
सत्तविहबंधगावि अट्ठविहबंधगावि । नेरइया णं भंते ! पाणातियाएणं कइ कम्मपगडीओ बंधंति ? गोयमा !
सव्वेवि ताव होज्जा सत्तविहबंधगा, अहवा सत्तविहबंधगा य अट्ठविहबंधए य, अहवा सत्तविहबंधगा य अट्ठ-
विहबंधगा य । एवं असुरकुमारावि जाव थणियकुमारा । पुढविआउतेउवाउवणप्फइकाइया य एए सव्वेवि

४. हे भगवन् ! जीव प्राणातिपात वडे केटली कर्मप्रकृतिओ बांधे ? हे गौतम ! सात प्रकृतिओ बांधे के आठ प्रकृतिओ बांधे.
ए प्रमाणे नैरयिकथी मांडी निरन्तर वैमानिक सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! जीवो प्राणातिपात वडे केटली कर्मप्रकृतिओ बांधे ? हे गौ-
तम ! बधा जीवो सात प्रकृतिओ बांधे अने आठ प्रकृतिओ बांधे. हे भगवन् ! नैरयिको प्राणातिपात वडे केटली कर्मप्रकृतिओ बांधे ?
हे गौतम ! बधाय सात कर्मप्रकृतिना बांधनारा होय, अथवा बधा सात प्रकृतिओनो बंध करनारा होय अने कोइ एक आठ प्रकृतिओनो
बन्ध करनार होय. अथवा सात प्रकृतिओना बांधनारा होय अने आठ प्रकृतिओना बांधनारा होय. ए प्रमाणे असुरकुमारो यावत्
भवनपति देवो कहेवा. जेम सामान्यथी जीवो कह्या तेम पृथिवी, पाणी, अग्नि, वायु अने वनस्पतिकायिको कहेवा. अने बन्ने स्थळे
पण बहुवचनने आश्रयी एक ज भांगो कहेवो, कारण के हिंसाना परिणामवाळा प्रत्येक पृथिवीकायिकादि जीवो सात प्रकृतिओनो बन्ध
करनारा के आठ प्रकृतिओनो बन्ध करनारा हमेशां घणा होय छे. बाकीना बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउरिन्द्रिय, तिर्यंच पंचेन्द्रिय, मनुष्य,
व्यन्तर, ज्योतिषिक अने वैमानिको जेम त्रण भांगा वडे नैरयिको कह्या तेम कहेवा. जेम प्राणातिपात वडे एकवचन अने बहुवचनने
आश्रयी बे दंडको कह्या तेम सर्व पापस्थानो वडे पण प्रत्येकना बब्बे दंडको 'जाव मिच्छादंसणसल्लेणं' यावत्-मिथ्यादर्शन शल्य

जहा ओहिया जीवा, अवसेसा जहा नेरइया। एवं ते जीवेगिंदियवज्जा तिण्णि तिण्णि भंगा सव्वत्थ भाणियव्वत्ति, जाव मिच्छादंसणसल्ले, एवं एगत्तपोहत्तिया छत्तीसं दंडगा होंति।

५. जीवे णं भंते ! णाणावरणिज्जं कम्मं बंधमाणे कतिकिरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए, एवं नेरइए जाव वेमाणिए। जीवा णं भंते ! णाणावरणिज्जं कम्मं बंधमाणा कतिकिरिया ? गोयमा !

स्तनितकुमारोने जाणवुं. पृथिवीकाय, अप्काय, तेजस्काय, वायुकाय अने वनस्पतिकायिको ए बधा औधिक–सामान्य जीवोनी पेठे जाणवा. अने बाकीना बधा नैरयिकोनी पेठे जाणवा. ए प्रमाणे जीव अने एकेन्द्रिय सिवाय त्रण त्रण भांगा बधे कहेवा. अने ते यावत् मिथ्यादर्शनशल्य सुधी कहेवुं. एम एकवचन अने बहुवचनना छत्रीश दंडको थाय छे.

५. हे भगवन् ! जीव ज्ञानावरणीय कर्म बांधतो केटली क्रियावाळो होय ? हे गौतम ! कदाच त्रण क्रियावाळो, कदाचित् चार क्रियावाळो अने कदाचित् पांच क्रियावाळो होय. एम नैरयिक यावत् वैमानिक सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! जीवो ज्ञानावरणीय कर्म

वडे कहेवा. बधी संख्या मळी केटला दंडको थाय ? ए माटे सूत्रकार कहे छे—'एवं एगत्तपोहत्तिया छत्तीसं दंडगा होंति' ए प्रमाणे एकवचन अने बहुवचनना मळी छत्रीश दंडको थाय छे, कारण के अढारने बेए गुणवाथी छत्रीश थाय छे.

५. 'जीवेणं भंते'–हे भगवन् ! जीव ज्ञानावरणीय कर्म बांधतो अहीं केटली क्रियावाळो होय ? इत्यादि. पूर्वना सूत्रनी साथे आ सूत्रनो पण शो संबन्ध छे ? उत्तर–अहीं पूर्वे कह्युं के 'जीव प्राणातिपात वडे सात के आठ प्रकारना कर्म बांधे छे अने ते ज्ञानावरणीयादि कर्म बांधतो जीव केटली क्रियाओ वडे तेज प्राणातिपातने करे छे ते अहीं प्रतिपादन कराय छे. वळी प्राणातिपातना कार्यरूप ज्ञानावरणीय कर्म वडे तेना कारण भूत प्राणातिपातनी उत्पत्तिनो भेद बतावाय छे, अने प्राणातिपातनी उत्पत्तिना भेदथी बन्ध विशेष

सिय तिकिरिया, सिय चउकिरिया, सिय पंचकिरियावि, एवं नेरइया निरंतरं जाव वेमाणिया । एवं दरिसणावरणीयं वेदणिज्जं मोहणिज्जं आउयं नामं गोत्तं अंतराइयं च अट्ठविहकम्मपगडीतो भाणितव्वाओ, एगत्तपोह-

बांधतां केटली क्रियावाळा होय ? हे गौतम ! कदाच त्रण क्रियावाळा, कदाचित् चार क्रियावाळा अने कदाच पांच क्रियावाळा होय. ए प्रमाणे नैरयिकोथी मांडी निरन्तर वैमानिको सुधी जाणवुं. एम दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोहनीय, आयुष, नाम, गोत्र

पण थाय छे, ए संबन्धे कह्युं छे के—

"तिसृभिश्चतसृभिरथ पञ्चभिश्च हिंसा समाप्यते क्रमशः । बन्धोऽस्य विशिष्टः स्याद् योगप्रद्वेषसाम्यं चेत्" ॥

त्रण, चार अने पांच क्रियाओ वडे अनुक्रमे हिंसा समाप्त थाय छे अने तेमां योग अने द्वेषनी समानता होय तो एनो विशिष्ट बन्ध थाय छे. तेज प्राणातिपातनी उत्पत्तिनो भेद बतावे छे—कदाचित् त्रण क्रियावाळो होय, कदाचित् चार क्रियावाळो होय, अने कदाचित् पांच क्रियावाळो होय. तेमां कायिकी, आधिकरणिकी अने प्राद्वेषिकी क्रिया वडे त्रण क्रिया होय छे. कायिकी एटले हस्त, पादादि अवयवोनो व्यापार-प्रवृत्ति, आधिकरणिकी-खड्गादि अधिकरण सज्ज करी तैयार राखवा. 'एने मारीश' एवुं अप्रशस्त मन करवुं ते प्राद्वेषिकी. कायिकी, आधिकरणिकी, प्राद्वेषिकी अने पारितापनिकी क्रिया वडे चार क्रिया होय छे. पारितापनिकी-खड्गादिना घा वडे पीडा करवी. ज्यारे पांचमी प्राणातिपात क्रिया होय छे त्यारे पांच क्रिया थाय छे.प्राणातिपात क्रिया एटले जीवितथी जुदा करवुं. ए प्रमाणे नैरयिकथी आरंभी चोवीश दंडकना क्रमथी वैमानिक सूत्र सुधी कहेवुं. सूत्रपाठ आ प्रमाणे—'हे भगवन् ! नैरयिक ज्ञानावरणीय कर्म बांधतो केटली क्रियावाळो होय'-इत्यादि. ए प्रमाणे एक जीवने आश्रयी दंडक कह्यो. हवे घणा जीवोने आश्रयी कहे छे-'जीवा णं भंते'-इत्यादि प्रश्नसूत्र सुगम छे. भगवान् उत्तर कहे छे-जीवो त्रण क्रियावाळा, चार क्रियावाळा, अने पांच क्रियावाळा पण होय छे. तात्पर्य ए छे के-ज्ञानावरणीय कर्म बांधनारा जीवो हमेशां घणा होय छे माटे त्रण क्रियावाळा, चार

त्तिया सोलस दंडया भवन्ति ।

६. जीवे णं भंते ! जीवातो कतिकिरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए, सिय अकिरिए । जीवे णं भंते नेरइयाओ कतिकिरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय अकिरिए, एवं जाव थणियकुमाराओ । पुढविकाइयातो आउक्काइयातो तेउक्काइयातो वाउक्काइयवणप्फइकाइयवेइंदियतेइंदि-

---

अने अंतराय एम आठे कर्म प्रकृतिओ कहेवी. एम एकवचन अने बहुवचनना सोळ दंडको थाय छे.

६. हे भगवन् ! जीव जीवने आश्रयी केटली क्रियावाळो होय ? हे गौतम ! कदाच त्रण क्रियावाळो, कदाच चार क्रियावाळो, कदाच पांच क्रियावाळो अने कदाच अक्रिय होय. हे भगवन् ! जीव नैरयिकने आश्रयी केटली क्रियावाळो होय ? हे गौतम ! कदाच त्रण क्रियावाळो, कदाच चार क्रियावाळो अने कदाच अक्रिय होय. ए प्रमाणे स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं. पृथिवीकायिक,

---

क्रियावाळा अने पांच क्रियावाळा पण घणा होय छे. ए प्रमाणे एकज भंग थाय छे. जेम सामान्यतः जीव पदने आश्रयी भांगानो अभाव छे तेम नैरयिकादि चोवीशे दंडकोने आश्रयी पोतपोताने स्थाने प्रत्येकने भांगानो अभाव जाणवो. कारण के ज्ञानावरणीय कर्म बांधता नैरयिकादीमां पण हमेशां त्रण क्रियावाळा, चार क्रियावाळा अने पांच क्रियावाळा घणा होय छे. जेम ज्ञानावरणीय कर्मने आश्रयी एक जीव अने अनेक जीवनी अपेक्षाए बे दंडक कह्या तेम दर्शनावरणीयादि कर्मने आश्रयी पण प्रत्येकने बब्बे दंडको कहेवा. तेथी बधा मळीने सोळ दंडक थया.

६. 'जीवे णं भंते जीवातो कतिकिरिए' हे भगवन् ! जीव जीवने आश्रयी केटली क्रियावाळो होय ? आ सूत्रनो पूर्वना सूत्रनी साथे शो संबंध छे ? उत्तर-अहीं केवळ वर्तमान भवमां रहेला जीवने ज्ञानावरणीयादि कर्म बन्धना भेदना विचारमां कायिकी वगेरे

यचउरिंदियपंचिंदियतिरिक्खजोणियमणुस्सातो जहा जीवातो,वाणमंतरजोइसियवेमाणियातो जहा नेरइयातो। जीवे णं भंते ! जीवेहिंतो कतिकिरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिते, सिय अकिरिए। जीवे णं भंते ! नेरइएहिंतो कतिकिरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिते, सिय अकिरिए, एवं जहेव पढमो दंडतो तहा एसो बितिओ भाणितव्वो जीवा णं भंते ! जीवातो कतिकि-

अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक, वनस्पति,बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च अने मनुष्यने आश्रयी जेम जीवने आश्रयी कह्युं तेम कहेवुं. हे भगवन् ! जीव जीवोने आश्रयी केटली क्रियावाळो होय ? हे गौतम ! कदाच त्रण क्रियावाळो, कदाच चार क्रियावाळो, कदाच पांच क्रियावाळो अने कदाच अक्रिय होय. हे भगवन् ! जीव नैरयिकोने आश्रयी केटली क्रियावाळो होय ? हे गौतम ! कदाच त्रण क्रियावाळो, कदाच चारक्रियाळो अने कदाच अक्रिय होय-ए प्रमाणे जेम पहेलो दंडक कह्यो तेम आ बीजो दंडक कहेवो. हे भगवन् ! जीवो एक जीवने आश्रयी केटली क्रियावाळा होय ? हे गौतम ! कदाच त्रण क्रियावाळा पण होय, कदाच चार

क्रिया रूप विशेषणवाळो प्राणातिपातनो भेद कारण छे एटले कर्मबन्धनी विशेषतामां प्राणातिपातनी विशेषता कारण छे एम न समजवुं, पण कायिकी आदि क्रियारूप विशेषणवाळो अतीत भवनो शरीर संबन्ध पण कारण छे. तेथी आ अर्थनुं प्रतिपादन करवा माटे आ सूत्र छे. तेनो पूर्वाचार्योए बतावेलो आ भावार्थ छे—"आ संसाराटवीमां परिभ्रमण करता सर्वे जीवोए ते ते स्थानोमां शरीर आयुधादि (अधिकरणो) छोड्या छे अने ते शस्त्रो वडे ज्यारे कोइने स्वयमेव पीडा वगेरे थाय छे त्यारे भवान्तरमां गयेला तेना मालीकने पण तेनाथी निवृत्त थयेलो नहि होवाथी क्रियानो संभव छे, पण तेनो त्याग करे तो क्रियानो संभव नथी, कारण के तेथी निवृत्त थयेलो छे. अहीं आ उदाहरण छे—"वसंतपुर नगरमां अजितसेन राजानी सेवा करनारा बे कुलपुत्रो छे. तेमां एक श्रमणोपासक

रिया ? गोयमा ! सिय तिकिरियावि, सिय चउकिरियावि, सिय पंचकिरियावि, सिय अकिरियावि । जीवा णं भंते ! नेरइयातो कतिकिरिया ? गोयमा ! जहेव आदिल्लदंडतो तहेव भाणितव्वो, जाव वेमाणियत्ति । जीवा णं भंते ! जीवेहिंतो कतिकिरिया ? गोयमा ! तिकिरियावि, चउकिरियावि, पंचकिरियावि, अकिरियावि । जीवा णं भंते ! नेरइएहिंतो कतिकिरिया ? गोयमा ! तिकिरियावि, चउकिरियावि, अकिरियावि । असुरकुमारेहिंतोवि एवं

क्रियावाळा पण होय, कदाच पांच क्रियावाळा पण होय अने कदाच क्रियारहित पण होय. हे भगवन् ! जीवो एक नैरयिकने आश्रयी केटली क्रियावाळा होय ? हे गौतम ! जेम प्रथम दंडक कह्यो तेम यावत् वैमानिक सुधी कहेवो. हे भगवन् ! जीवो जीवोने आश्रयी केटली क्रियावाळा होय ? हे गौतम ! कदाच त्रण क्रियावाळा पण होय, कदाच चारक्रियावाळा पण होय, कदाचित् पांचक्रियावाळा पण होय अने कदाचित् क्रियारहित पण होय. हे भगवन् ! जीवो नैरयिकोने आश्रयी केटली क्रियावाळा होय ? हे गौतम ! कदाच त्रण क्रियावाळा, कदाच चार क्रियावाळा अने कदाच क्रियारहित होय. असुरकुमारोने आश्रयी पण एमज जाणवुं. यावत् वैमानिकोने आश्रयी एमज समजवुं. जेम जीवोने आश्रयी कह्युं तेम औदारिकशरीरोने आश्रयी कहेवुं. हे भगवन् !

श्रावक छे अने वीजो मिथ्यादृष्टि छे. कोई दिवसे रात्रीए राजाने बहार जवानुं थयुं. उतावळथी घोडा उपर चढतां तेओना खड्गो पडी गयां. श्रावक कुलपुत्रे तेनी तपास करी पण मनुष्योनो कोलाहल होवाथी ते खड्ग न मळ्युं. वीजो कुलपुत्र हस्यो, के शुं वीजुं खड्ग नहि मळे? श्रावके अधिकरण समजी वोसराव्युं. ते खड्गने ग्रहण करनारा वीजाओने वंदीवानोने पकडवामां साहसिक राजपुरुषोए पकड्या. वीजाओए (तेओए) राजाना प्रिय मनुष्यने पकडयो अने ते नासवा लाग्यो एटले मारी नांख्यो. त्यार पछी आरक्षको तेओने पकडी राजा पासे लइ गया अने वृत्तांत कह्यो. राजा गुस्से थयो. तेणे पूछयुं–तमे कोना माणसो छो ? तेओए कह्युं के—'अमे अनाथ छीए' काले

चेव जाव वेमाणितेहिंतो, ओरालियसरीरेहिंतो जहा जीवेहिंतो। नेरइए णं भते! जीवातो कतिकिरिए? गोयमा! सिय तिकिरिए, सिउ चउकिरिए, सिय पंचकिरिए। नेरइए णं भंते! नेरइयातो कतिकिरिए? गोयमा! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए। एवं जाव वेमाणिएहिंतो, नवरं नेरइयस्स नेरइएहिंतो देवेहिंतो य पंचमा किरिया नत्थि। नेरइया णं भंते! जीवातो कतिकिरिया? गोयमा! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए सिय पंचकिरिए,

नैरयिक जीवने आश्रयी केटली क्रियावाळो होय? हे गौतम! कदाच त्रण क्रियावाळो, कदाच चार क्रियावाळो अने कदाच पांच क्रियावाळो होय. हे भगवन्! नैरयिक नैरयिकने आश्रयी केटली क्रियावाळो होय? हे गौतम! कदाचित् त्रणक्रियावाळो अने कदाच चारक्रियावाळो होय.ए प्रमाणे यावत् वैमानिकोने आश्रयी समजवुं.परन्तु नैरयिकने नैरयिकोने अने देवोने आश्रयी पांचमी प्राणातिपात क्रिया नथी. हे भगवन्! नैरयिको जीवने आश्रयी केटली क्रियावाळा होय? हे गौतम! कदाच त्रणक्रियावाळा, कदाच चार क्रियावाळा अने कदाच पांचक्रियावाळा पण होय. ए प्रमाणे यावत् वैमानिकने आश्रयी जाणवुं. परन्तु नैरयिक अने देवने आश्रयी

अमे कार्पटिको–भिक्षुको हता. आ खड्गो तमने क्यां मळ्यां? एम पूछ्युं पटले तेओए कह्युं के पडेलां हतां. त्यार पछी राजाए क्रोध पूर्वक कह्युं के जेनी साथे मारे वैर नथी एवा महाप्रमादी कुलपुत्रोनी तपास करो के आ खड्गो कोनां छे? तेथी ते राजपुरुषोए बारीक तपास करीने राजाने विज्ञप्ति करी के स्वामी! गुणचंद्र,अने बालचन्द्रना खड्गो छे. तेथी राजाए जुदा जुदा बोलावीने कह्युं के तमारा खड्गो ल्यो. एक कुलपुत्रे लीधा, राजाए पूछ्युं के तारुं खड्ग क्यां खोवायुं? तेणे जेम बन्युं हतुं तेम कह्युं. तेनी तपास केम न करी? तेणे कह्युं के स्वामी! तमारी कृपाथी पटला (खड्ग) मात्रनी हुं तपास करुं? अर्थात् तमारी मारा उपर महेरबानी छे तो पटला खड्गमात्रनी

एवं जाव वेमाणियातो, नवरं नेरइयाओ देवाओ य पंचमा किरिया नत्थि । नेरइया णं भंते ! जीवेहिंतो कति-किरिया ? गोयमा ! तिकिरियावि, चउकिरियावि पंचकिरियावि । नेरइया णं भंते ! नेरइएहिंतो कतिकिरिया ? गोयमा ! तिकिरियावि चउकिरियावि । एवं जाव वेमाणिएहिंतो, नवरं ओरालियसरीरेहिंतो जहा जीवेहिंतो । असुर-कुमारे णं भंते ! जीवातो कतिकिरिए? गोयमा ! जहेव नेरइए चत्तारि दंडगा तहेव असुरकुमारेवि चत्तारि दंडगा

पांचमी प्राणातिपात क्रिया नथी. हे भगवन् ! नैरयिको जीवोने आश्रयी केटली क्रियावाळा होय ? हे गौतम ! त्रण क्रियावाळा, चार क्रियावाळा अने पांच क्रियावाळा पण होय. हे भगवन् ! नैरयिको नैरयिकोने आश्रयी केटली क्रियावाळा होय ? हे गौतम ! त्रण क्रियावाळा अने चार क्रियावाळा होय. ए प्रमाणे यावत् वैमानिकोने आश्रयी जाणवुं. परन्तु औदारिक शरीरोने आश्रयी जेम जीवोने आश्रयी कह्युं तेम कहेवुं. हे भगवन् ! असुरकुमार जीवने आश्रयी केटली क्रियावाळो होय ? हे गौतम ! जेम नैरयिकने चार दंडको कह्या तेम असुरकुमारने पण चार दंडको कहेवा. एम उपयोग राखीने विचार करवो. जीव अने मनुष्य क्रियारहित

हुं तपास केम करुं ? श्रावक कुलपुत्र खड्ग ग्रहण करवा इच्छतो नथी. राजाए पूछ्युं-'शा माटे ग्रहण करतो नथी' ? तेणे कह्युं-'स्वामी' ? अमारी एवी स्थिति-मर्यादा छे के ए प्रमाणे ग्रहण करी शकाय नहि'. कारण के ते अधिकरण छे. अत्यन्त उतावळ होवाने लीधे तपास करवा छतां ते खड्ग हाथ न लाग्युं अने तेथी अधिकरण होवाथी वोसरावी दीधुं. माटे हवे मारे तेने लेवुं न कल्पे. तेथी राजाए प्रमाद करनार कुलपुत्रने शिक्षा करी अने बीजाने छोडी मूक्यो. आ दृष्टांत छे तेना अर्थनो उपनय आ प्रमाणे छे—जे ते कुलपुत्र प्रमादगर्भित नहि वोसराव्याना दोषथी अपराधने प्राप्त थयो, एम जीव पण जन्मान्तरमां प्राप्त थयेलां शरीर अने शस्त्रादिने नहि वोसरा-

भाणितव्वा, एवं च उवउज्जिऊणं भावेयव्वंति। जीवे मणूसे य अकिरिए वुच्चति, सेसा अकिरिया न वुच्चंति।
सव्वजीवा ओरालियसरीरेहिंतो पंचकिरिया। नेरइयदेवेहिंतो पंचकिरिया ण वुच्चंति। एवं एक्केक्कजीवपदे
चत्तारि चत्तारि दंडगा भाणितव्वा, एवं एतं दंडगसयं सव्वेवि य जीवादीया दंडगा।

कहेवाय छे. अने बाकीना क्रियारहित कहेवाता नथी. बधा जीवो औदारिक शरीरोने आश्रयी पांचक्रियावाळा होय छे. अने नैरयिको
अने देवोने आश्रयी पांच क्रियावाळा नथी. ए प्रमाणे एक एक जीवपदमां चार चार दंडको कहेवा. ए प्रमाणे ए बधा जीवादि दंडको
मळी सो दंडको थाय छे.

वतो अनुमोदनना भावथी दोषने प्राप्त थाय छे. शास्त्रमां कहेलुं छे के—"केटलाएक जातिस्मरणादि वडे पूर्वना शरीरने जाणी अतिमो-
हथी गंगानदीमां पोताना अस्थि लई जाय छे."

हवे सूत्रनी व्याख्या करे छे—'हे भगवन्! जीव जीवने आश्रयी केटली क्रियावाळो होय? भगवान् उत्तर आपे छे—हे गौतम!
स्यात्-कदाचिद् कायिकी, अधिकरणिकी अने प्राद्वेषिकी क्रिया होवाथी त्रण क्रियावाळो होय तेमां वर्तमान भवने आश्रयी पूर्वेनी
पेठे विचार करवो. अतीत भवनी अपेक्षाए तेना शरीरना अथवा शरीरना एक भागनो उपयोग थतो होवाथी तेने कायिकी क्रिया, तेणे
जोडेला-तैयार करेला हळ, गर (विष) अने कूटयन्त्रादि तथा तेणे बनावरावेला तलवार, भाला अने तोमरादि बीजाना उपघात माटे
वपरातां होवाथी अथवा शरीर पण अधिकरण छे माटे अधिकरणिकी क्रिया पण होय छे. ते संबन्धी अशुभ परिणामनुं प्रत्याख्यान-त्याग
करेलो नहि होवाथी प्राद्वेषिकी-एम त्रण क्रिया होय छे. स्यात्-कदाचित् पारितापनिकी होवाथी चार क्रियावाळो होय छे. कारण के तेना
शरीर वडे के शरीरना एक भाग रूप अधिकरण वडे परिताप कराय छे. अथवा ज्यारे तेनाथी जीवितथी पण वियोग कराय छे त्यारे ।

कदाचित् पांच क्रियावाळो होय छे स्यात्-कदाचित् अक्रिय होय छे. ज्यारे पूर्वे जन्मना शरीर के अधिकरणनो त्रिविध त्रिविधे त्याग
करे अने ते जन्मना शरीर वडे कांइ पण क्रिया न करे. आ अक्रियपणुं मनुष्यनी अपेक्षाए समजवुं. कारण के तेने ज सर्वविरतिपणुं
होय छे. अथवा सिद्धनी अपेक्षाए अक्रियपणुं जाणवुं. कारण के शरीर अने मनोवृत्तिना अभावे सिद्ध जीवो अक्रिय छे. आ अर्थने
चोवीश दंडकना अनुक्रमथी वर्णवे छे—'जीवे णं भंते नेरइयाओ कतिकिरिए'–हे भगवन्! जीव नैरयिकने आश्रयी केटली क्रियावाळो
होय? इत्यादि सुगम छे. परंतु तेनो भावार्थ आ छे—देव अने नारकोने आश्रयी जीव चार क्रियावाळो ज होय. कारण के (कोइपण
क्रियाथी) तेओना जीवितनो वियोग थतो नथी. केमके 'अनपवर्त्यायुषो नारक-देवाः' नारको अने देवो अनपवर्तनीय आयुषवाळा होय
छे-एवुं शास्त्रनुं वचन छे. बाकीना संख्यात वरसना आयुषवाळा जीवोने आश्रयी पांच क्रियावाळो पण होय. कारण के तेओनुं अपव-
र्तनीय आयुष होवाथी तेओने जीवितथी वियोगनो पण संभव छे. ए प्रमाणे एक जीवनी एक जीवने आश्रयी क्रियाओनो विचार कर्यो.
हवे घणा जीवोने आश्रयी एक जीवनी क्रियाओनो विचार करे छे—'जीवे णं भंते! जीवेहिंतो कइकिरिए पण्णत्ते'–हे भगवन्! जीव
घणा जीवोने आश्रयी केटली क्रियावाळो होय? इत्यादि. आ दंडकनो पण पूर्वनी पेठे विचार करवो. हवे घणा जीवोनी एक जीवने
आश्रयी क्रियाओनो विचार करे छे—'जीवा णं भंते! जीवातो कइकिरिया पन्नत्ता'–हे भगवन्! जीवो एक जीवने आश्रयी केटली
क्रियावाळा होय? इत्यादि. आ दंडक पण प्रथम दंडकनी पेठे जाणवो. हवे घणा जीवोनी घणा जीवोने आश्रयी क्रियाओ संबंधे सूत्र
कहे छे—'जीवा णं भंते! जीवेहिंतो कइकिरिया पन्नत्ता'–हे भगवन्! जीवो जीवोने आश्रयी केटली क्रियावाळा होय? इत्यादि. अहीं
प्रश्न पाठमात्रथी सिद्ध छे. उत्तर आ प्रमाणे छे—हे गौतम! त्रणक्रियावाळा पण होय, चारक्रियावाळा पण होय, पांचक्रियावाळा पण
होय अने क्रियारहित पण होय, कारण के कोइ जीव कोई पण जीवने आश्रयी त्रण क्रियावाळो, कोइने आश्रयी चार क्रियावाळो, कोइने
आश्रयी पांच क्रियावाळो अने कोइ पण सर्वोत्तम चारित्रवाळो मनुष्य अने बधा सिद्ध अक्रिय-क्रियाना अभाववाळा होय छे. एम बधे बहुवच-
नरूप एक ज भङ्ग होय छे. ए प्रमाणे नैरयिकादि दंडकना अनुक्रमथी वैमानिक सूत्र सुधी जाणवुं. परंतु नैरयिको अने देवोने आश्रयी

त्रण क्रियावाळा पण, चार क्रियावाळा पण अने क्रियारहित पण होय छे एम कहेवुं. बाकीना संख्याता वरसना आयुपवाळा जीवोने आश्रयी पांच क्रियावाळा पण होय. ए प्रमाणे सामान्यपणे जीवपदने आश्रयी चार दंडको कह्या.

हवे नैरयिक पदने आश्रयी सूत्रकार कहे छे—'नेरइए णं भंते! जीवातो कतिकिरिए पन्नत्ते'-हे भगवन्! नैरयिक जीवने आश्रयी केटली क्रियावाळो होय? इत्यादि. 'एवं जाव वेमाणिएहिंतो' इति. ए प्रमाणे यावत् वैमानिकोने आश्रयी कहेवुं. अहीं यावत् शब्द होवाथी 'नैरयिक जीव जीवोने आश्रयी केटली क्रियावाळो होय' इत्यादिरूप बीजो दंडक कहेलो जाणवो. बधे औदारिक शरीरी संख्यात वरसना आयुपवाळाने आश्रयी कदाच त्रण क्रियावाळो होय, चार क्रियावाळो होय अने कदाच पांच क्रियावाळो होय एम कहेवुं. नैरयिक अने देवोने आश्रयी पांचमी प्राणवियोग रूप प्राणातिपात क्रिया नथी, कारण के तेओनुं अनप-वर्तनीय आयुप छे. तेथी तेओने आश्रयी कदाच त्रण क्रियावाळो होय अने कदाच चार क्रियावाळो होय एम कहेवुं.

(प्र०)—नैरयिक देवोने आश्रयी चार क्रियावाळो केम होय? उ०—अहीं भवनवासी वगेरे देवो त्रीजी नरकपृथिवी सुधी गयेला छे अने जशे. शा माटे गयेला छे अने जशे? पूर्व भवना मित्रनी वेदना शान्त करवाने माटे अथवा पूर्व भवना वैरीने वेदना उत्पन्न करवाने माटे त्यां जाय छे. त्यारे अनन्त काळे आवुं पण थाय छे के त्यां गयेला देवो नारको वडे बंधाय छे. आ संबन्धे मूलटीका-कार पण कहे छे के—"तत्र गता नारकैर्बध्यन्ते इत्यप्यनन्तकाल एव कथञ्चित् संभवमात्रमिति. त्यां गयेला देवो नारको वडे बंधाय छे, आ पण अनन्तकाळे संभवे छे. अहीं प्रश्न करे छे के—'नारकने बेइन्द्रियादि जीवोने आश्रयी कायिकी वगेरे क्रिया केवी रीते होय? (उ०)—अहीं नारकोए पूर्व भवनुं शरीर विवेक-विरतिना अभावथी वोसराव्युं नथी अने तेने विवेकनो अभाव भवनिमित्तक होय छे. तेथी ते जीवे बनावेलुं शरीर ज्यां सुधी शरीरपरिणामनो सर्वथा त्याग न करे त्यां सुधी अंशथी पण शरीर परिणामने प्राप्त थयेलुं पूर्व भावनी अपेक्षाए घीना घडानी पेठे 'आ तेनुं शरीर छे' एम कहेवाय छे. जेम घीथी भरेलो घडो घी काढी लेवा छतां पण 'घृतघट' एम कहेवाय छे, तेम ते शरीर पण तेणे बनावेलुं होवाथी 'तेनुं आ शरीर छे' एम कहेवाय छे. तेथी ते शरीरना एक

७. कति णं भंते ! किरियाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! पंच किरियाओ पण्णत्ताओ, तंजहा—कातिया जाव पाणातिवातकिरिया । नेरइयाणं भंते ! कति किरियातो पण्णत्ताओ ? गोयमा ! पंच किरियातो पण्णत्ताओ,

७. हे भगवन् ! केटली क्रियाओ कही छे ? हे गौतम ! पांच क्रियाओ कही छे. ते आ प्रमाणे—१ कायिकी, यावत्—५

भागरूप अस्थि वगेरेथी जे कोइ अन्य प्राणातिपात-हिंसा करे छे, माटे पूर्वे बनावेला शरीरनो जीव पण कायिकी आदि क्रियाओ वडे जोडाय छे. कारण के तेणे तेने वोसराव्युं नथी. तेमां आ पांचे क्रियाओनी भावना आ प्रमाणे छे—तेना शरीरनो व्यापार थतो होवाथी कायिकी, 'शरीर अधिकरण पण छे' एम पूर्वे कह्युं छे तेथी अधिकरणिकी. प्राद्वेषिकी वगेरे आ प्रमाणे छे—ज्यारे ते ज शरीरना एक भागने अभिघात वगेरे करवामां समर्थ जोइने कोइपण हिंसा करवामां तत्पर थयेलो अने हिंसाने पात्र नेइन्द्रियादिने विषे जेने क्रोधादिनुं कारण उत्पन्न थयुं छे एवो आत्मा 'आ शस्त्र घात करवामां समर्थ छे' एम विचारतो अतिशय क्रोधादि भावने प्राप्त थाय छे अने पीडा उत्पन्न करे छे तथा प्राणवियोग करे छे त्यारे ते संबन्धी प्राद्वेषिकी वगेरे क्रियानुं कारण होवाथी नैगम नयना मते तेने पण प्राद्वेषिकी, पारितापनिकी अने प्राणातिपातक्रिया यथायोग्यपणे होय छे. जेम नैरयिक पदमां चार दंडको कह्या छे तेम बाकीना असुरकुमारादि त्रेवीशे दंडकोमां चार चार दंडको कहेवा. परंतु जीवपदमां अने मनुष्यपदमां 'क्रियारहित पण होय' एम कहेवुं. विरतिनी प्राप्तिमां शरीर वोसरावेल होवाथी शरीरनिमित्तक क्रियानो असंभव छे. बाकीना जीवो अक्रिय होता नथी, कारण के विरतिना अभावथी भवान्तरना शरीरने वोसरावेलुं नहि होवाथी तेने अवश्य क्रियानो संभव छे ए प्रमाणे सामान्यपणे जीवपदे एक अने बाकीना नैरयिकादि चोवीश स्थानको मळी बधी पचीश संख्या थाय छे अने एक एक स्थानके चार चार दंडको थता होवाथी सर्व मळी सो दंडक थाय छे.

७. हवे कया जीवने केटली क्रिया होय ए बताववा माटे पूर्वे कहेलुं सूत्र कहे छे—'कइ णं भंते ! किरियाओ पन्नत्ताओ' इत्यादि

तंजहा-कातिया जाव पाणातिवायकिरिया, एवं जाव वेमाणियाणं । जस्स णं भंते ! जीवस्स कातिया किरिया
कज्जइ तस्स अहिगरणिया किरिया कज्जति, जस्स अहिगरणिया किरिया कज्जति तस्स कातिया किरिया कज्जति ?
गोयमा ! जस्स णं जीवस्स कातिया किरिया कज्जति तस्स अहिगरणी किरिया नियमा कज्जति, जस्स अहिग-
रणी किरिया कज्जति तस्सवि काइया किरिया नियमा कज्जति । जस्स णं भंते ! जीवस्स काइया किरिया कज्जइ
तस्स पादोसिया किरिया कज्जइ, जस्स पादोसिया किरिया कज्जइ तस्स काइया किरिया कज्जइ ? गोयमा ! एवं चेव ।

प्राणातिपात क्रिया. हे भगवन् ! नैरयिकोने केटली क्रियाओ कही छे ? हे गौतम ! पांच क्रियाओ कही छे. ते आ प्रमाणे-१ कायिकी,
यावत्-५ प्राणातिपात क्रिया. ए प्रमाणे यावत् वैमानिकोने कहेवुं. हे भगवन् ! जे जीवने कायिकी क्रिया होय छे तेने आधिकरणिकी
क्रिया होय ? अने जेने अधिकरणिकी क्रिया होय छे तेने कायिकी क्रिया होय ? हे गौतम ! जे जीवने कायिकी क्रिया होय छे
तेने अधिकरणिकी क्रिया अवश्य होय छे. अने जेने अधिकरणिकी क्रिया होय छे तेने कायिकी क्रिया पण अवश्य होय छे.

सूत्र पूर्वनी पेठे जाणवुं. एज क्रियाओनो चोवीश दंडकना क्रमथी विचार करे छे—नेरइया णं भंते !-हे भगवन् ! नैरयिकोने केटली
क्रिया होय ? इत्यादि सूत्र पाठसिद्ध छे. हवे आ क्रियाओनो एक जीवने आश्रयी परस्पर नियत संबन्ध बतावे छे—"जस्स णं भंते !"
हे भगवन् ! जेने कायिकी क्रिया होय छे तेने अधिकरणिकी क्रिया होय ? इत्यादि. अहीं कायिकी क्रिया औदारिकादि शरीरने
आश्रित, प्राणातिपात-हिंसा करवाना सामर्थ्यवाळी विशिष्ट ग्रहण करवी. पण कार्मण शरीराश्रित क्रिया न ग्रहण करवी. तेथी प्रथमनी
त्रण क्रियाओनो परस्पर नियत संबन्ध छे. केवी रीते छे ? तेनो उत्तर ए छे के 'शरीर अधिकरण पण छे' एम पूर्वे कह्युं छे तेथी

जस्स णं भंते ! जीवस्स काइया किरिया कज्जइ तस्स पारियावणिया किरिया कज्जइ, जस्स पारियावणिया किरिया कज्जइ तस्स कातिया किरिया कज्जइ ? गोयमा ! जस्स णं जीवस्स काइया किरिया कज्जइ तस्स पारितावणिया सिय कज्जइ, सिय नो कज्जइ, जस्स पुण पारियावणिया किरिया कज्जइ तस्स काइया नियमा कज्जति एवं पाणाइवायकिरियावि । एवं आदिल्लाओ परोप्परं नियमा तिण्णि कज्जंति । जस्स आइल्लाओ तिन्नि कज्जंति

हे भगवन् ! जे जीवने कायिकी क्रिया होय छे तेने प्राद्वेषिकी क्रिया होय ? जेने प्राद्वेषिकी क्रिया होय छे तेने कायिकी क्रिया होय ? हे गौतम ! एम ज समजवुं. हे भगवन् ! जे जीवने कायिकी क्रिया होय छे तेने पारितापनिकी क्रिया होय ? जेने पारितापनिकी क्रिया होय छे तेने कायिकी क्रिया होय ? हे गौतम ! जे जीवने कायिकी क्रिया होय छे तेने पारितापनिकी क्रिया कदाच होय अने कदाच न होय. पण जेने पारितापनिकी क्रिया होय तेने कायिकी क्रिया अवश्य होय छे. ए प्रमाणे प्राणातिपातक्रिया पण जाणवी. एम प्रथमनी त्रण क्रियाओ परस्पर अवश्य होय छे. जेने आदिनी त्रण क्रियाओ होय छे तेने उपरनी बन्ने क्रियाओ कदाच होय अने

काय अधिकरण होवाथी कायिकी क्रिया होय त्यां अवश्य अधिकरणिकी होय छे अने अधिकरणी होय त्यां अवश्य कायिकी क्रिया होय छे. अने ते विशिष्ट कायिकी क्रिया प्रद्वेष सिवाय होती नथी, माटे प्राद्वेषिकी क्रियानी साथे पण तेनो परस्पर नियत संबन्ध छे. प्रद्वेष पण शरीरने विषे स्पष्ट चिह्नवाळो जणाय छे. कारण के मुखनुं रूक्षपणुं वगेरे तेना नियत चिह्नो प्रत्यक्षथी ज जणाय छे. कह्युं छे के—

"रूक्षयति रुष्यतो ननु वक्त्रं स्निग्धति रज्यतः पुंसः । औदारिकोऽपि देहो भाववशात् परिणमत्येवम्" ॥

तस्स उवरिल्लाओ दोन्नि सिय कज्जंति सिय नो कज्जंति, जस्स उवरिल्लाओ दोण्णि कज्जंति तस्स आइल्लाओ नियमा तिण्णि कज्जंति । जस्स णं भंते ! जीवस्स पारियावणिया किरिया कज्जति तस्स पाणातिवायकिरिया कज्जति, जस्स पाणातिवायकिरिया कज्जति तस्स पारियावणिया किरिया कज्जति ? गोयमा ! जस्स णं जीवस्स पारियावणिया किरिया कज्जइ तस्स पाणातिवातकिरिया सिय कज्जति, सिय नो कज्जति, जस्स पुण पाणातिवातकिरिया कज्जति तस्स पारियावणिया किरिया नियमा कज्जति । जस्स णं भंते ! नेरइयस्स काइया किरिया

कदाच न होय. जेने उपरनी बे क्रियाओ होय छे तेने प्रथमनी त्रण क्रियाओ अवश्य होय छे. हे भगवन्! जे जीवने पारितापनिकी क्रिया होय छे तेने प्राणातिपात क्रिया होय ? जेने प्राणातिपात क्रिया होय छे तेने पारितापनिकी क्रिया होय ? हे गौतम ! जे जीवने पारितापनिकी क्रिया होय छे तेने प्राणातिपात क्रिया कदाच होय अने कदाच न होय. पण जेने प्राणातिपात क्रिया होय छे

गुस्से थनारनुं मुख सुकाइ जाय छे. अने स्नेहवाळा पुरुषनुं मोढुं स्निग्ध थाय छे. औदारिक शरीर पण भावना वशथी एम परिणमे छे." परिताप अने प्राणातिपातनुं प्रथमनी त्रण क्रियाना सद्भावमां नियतपणुं नथी. ते आ प्रमाणे—जो आ घातक-शीकारी घातने पात्र थयेला मृगादि पशुने धनुष वडे फेंकेला बाण वगेरेथी वींधे छे, तेथी तेनुं परिताप अने मरण थाय छे, अन्यथा थतुं नथी, तेथी अनियतपणुं छे. अने परिताप अने प्राणातिपातना सद्भावमां पूर्वनी क्रियाओ अवश्य होय छे. कारण के पूर्व क्रियाओना अभावमां परिताप अने प्राणातिपात क्रिया होती नथी. तेथी आ अर्थनो विचार करी कायिकी क्रिया वाकीनी चार क्रियाओ साथे, अधिकरणिकी त्रण क्रियाओ साथे अने प्राद्वेषिकी बे क्रियाओनी साथे सूत्रथी सारी रीते विचारवी. परितापनिकी अने प्राणातिपात क्रियाओनुं खास सूत्र कहे छे—"जस्स णं भंते जीवस्स पारियावणिया किरिया कज्जइ" जे जीवने पारितापनिकी क्रिया होय

कज्जति तस्स अभिगरणिया किरिया कज्जति ? गोयमा ! जहेव जीवस्स तहेव नेरइयस्सवि, एवं निरंतरं जाव वेमाणियस्स।

८. जं समयं णं भंते ! जीवस्स काइया किरिया कज्जति तंसमयं अभिगरणिया किरिया कज्जइ, जं समयं अहिगरणिया कज्जइ, तं समयं काइया किरिया कज्जइ? एवं जहेव आइल्लओ दंडओ तहेव भाणितव्वो, जाव वेमाणियस्स।

८. हे भगवन् ! जे समये जीवने कायिकी क्रिया होय छे ते समये अधिकरणिकी क्रिया होय ? जे समये अधिकरणिकी क्रिया होय छे ते समये कायिकी क्रिया होय ?—ए प्रमाणे जेम प्रथमनो दंडक कह्यो तेमज आ दंडक यावत्–वैमानिक सुधी कहेवो.

हवे नैरयिकादि चोवीश दंडकना क्रमथी क्रियाओनो परस्पर नियत संबन्ध बतावे छे—"जस्स णं भंते ! नेरइयस्स काइया किरिया कज्जइ"—जे नैरयिकने कायिकी क्रिया होय छे तेने अधिकरणिकी क्रिया होय ? इत्यादि सूत्र प्रसिद्ध छे, कारण के तेनो विचार पूर्वे करेलो छे. ए प्रमाणे एक दंडक कह्यो.

८–९. हवे काळने आश्रयी उपर कह्या प्रमाणे त्रीजो दंडक कहे छे—"जं समयं णं भंते ! जीवस्स काइया किरिया कज्जइ तं समयं

तेने पारितापनिकी क्रिया अवश्य होय. हे भगवन् ! जे नैरयिकने कायिकी क्रिया होय छे तेने अधिकरणिकी क्रिया होय ? हे गौतम ! जेम जीव संबन्धे कह्युं तेमज नैरयिकने पण जाणवुं. ए प्रमाणे निरंतर यावत्–वैमानिकने समजवुं.

छे तेने प्राणातिपात क्रिया थाय–इत्यादि. पारितापनिकी क्रियाना सद्भावमां प्राणातिपात क्रिया कदाच होय अने कदाच न होय. ज्यारे बाण वगेरेना अभिघातथी जीवितथी जुदो पडे–मृत्यु पामे त्यारे होय छे अने बाकीना काळे होती नथी. जेने प्राणातिपातक्रिया होय छे तेने अवश्य पारितापनिकी क्रिया होय छे, कारण के परिताप सिवाय प्राणनो वियोग थतो नथी.

जं देसं णं भंते ! जीवस्स काइया किरिया तं देसं णं अधिगरणिया किरिया तहेव जाव वेमाणियस्स । जं पएसं णं
भंते ! जीवस्स काइया किरिया तं पदेसं णं अधिगरणिया किरिया एवं तहेव जाव वेमाणियस्स । एवं एते जस्स
जं समयं जं देसं जं पएसं णं चत्तारि दंडगा होंति ।

९. कति णं भंते ! आतोजितातो किरियाओ पण्णत्तातो ? गोयमा ! पंच आओजियाओ किरियाओ पण्ण-
त्ताओ, तंजहा–काइया जाव पाणातिवातकिरिया, एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं । जस्स णं भंते ! जीवस्स

हे भगवन् ! जीवने जे अंशे कायिकी क्रिया होय ते अंशे अधिकरणिकी क्रिया होय ?–इत्यादि यावत् वैमानिकने तेमज कहेवुं.
हे भगवन् ! जीवने जे प्रदेशे कायिकी क्रिया होय ते प्रदेशे अधिकरणिकी क्रिया होय ?–इत्यादि तेमज यावत् वैमानिको सुधी
जाणवुं. ए प्रमाणे १ जे जीवने, २ जे समये, ३ जे अंशे अने ४ जे प्रदेशे–ए चार दंडको थाय छे.

९. हे भगवन् ! केटली आयोजिका–संसारनी साथे जोडनारी क्रियाओ कहेली छे ? हे गौतम ! पांच आयोजिका क्रियाओ
कही छे. ते आ प्रमाणे–कायिकी, यावत्–प्राणातिपात क्रिया. ए प्रमाणे नैरयिको, यावत् वैमानिकोने जाणवुं. हे भगवन् ! जे

अहिगरणिया कज्जइ'–हे भगवन् ! जे समये जीवने कायिकी क्रिया होय छे ते समये अधिकरणिकी क्रिया होय ? इत्यादि बधुं पूर्वे कहेलुं
ए प्रमाणे जेम प्रथमनो दंडक कह्यो तेमज यावत् वैमानिक सुधी कहेवुं. अहीं समयना ग्रहण करवा वडे सामान्य काळनुं ग्रहण
सूत्र ते प्रमाणे वैमानिक सूत्र सुधी कहेवुं. ते प्रमाणे सूत्रकार कहे छे–'एवं जहेव आइल्लओ दंडओ तहेव भाणियव्वो जाव वेमाणियस्स'
करवुं, परन्तु अत्यन्त सूक्ष्म पूर्वे कहेला स्वरूपवाळो नैश्चयिक समय न ग्रहण करवो. कारण के परिताप अथवा प्राणातिपात

काइया आतोजिया किरिया अत्थि तस्स अधिगरणिया किरिया आतोजिता अत्थि, जस्स अधिगरणिया आतोजिता किरिया अत्थि तस्स काइया आतोजिया किरिया अत्थि ? एवं एतेणं अभिलावेणं ते चेव चत्तारि दंडगा भाणितव्वा, जस्स जं समयं जं देसं जं जाव वेमाणियाणं ।

जीवने कायिकी आयोजिका क्रिया होय छे तेने आधिकरणिकी आयोजिका क्रिया होय ? जेने आधिकरणिकी आयोजिका क्रिया होय छे तेने कायिकी आयोजिका क्रिया होय ? ए प्रमाणे आवा प्रकारना पाठ वडे ते (पूर्वोक्त) जेने, जे समये, जे अंशे अने जे प्रदेशे-एम चार दंडको यावत् वैमानिक सुधी कहेवा.

बाणादिना फेंकवाथी थयेला होवाने लीधे तेनो कायिकी क्रियाना प्रथम समयेज असंभव छे. आ बीजो दंडक छे. हवे क्षेत्रने आश्रयी वे दंडको कहे छे—'जं देसं णं भंते ! जीवस्स'—जे देश-अंशने आश्रयी जीवने कायिकी क्रिया थाय छे ते देशने आश्रयी अधिकरणिकी क्रिया थाय ? इत्यादि. अहीं पण पूर्वोक्त सूत्र ते आ प्रमाणेज वैमानिक सूत्र पर्यन्त कहेवुं. ते प्रमाणे सूत्रकार कहे छे—'तहेव जाव वेमाणियस्स' तेमज यावत्-वैमानिक सुधी कहेवुं. आ त्रीजो दंडक छे. 'जं पएसं णं भंते ! जीवस्स काइया किरिया कज्जइ' जे प्रदेशने आश्रयी जीवने कायिकी क्रिया होय छे ते प्रदेशने आश्रयी अधिकरणिकी क्रिया होय ? इत्यादि चोथो दंडक छे. अहीं पण पूर्वे कहेला क्रम वडे ज्यां सुधी वैमानिक सूत्र छे त्यां सुधी कहेवुं. ते प्रमाणे सूत्रकार कहे छे—'तहेव जाव वेमाणिए' इति. ए प्रमाणे तेमज यावत् वैमानिक सुधी जाणवुं. हवे दंडकनी संकलना बतावे छे-'एवं एते जस्स जं समयं' इत्यादि. ए रीते जेने, जे समये, जे देशने आश्रयी, अने जे प्रदेशने आश्रयी-एम चार दंडको थाय छे. ए क्रियाओ जेम ज्ञानावरणीयादि कर्मबन्धनुं कारण छे तेम संसारनुं पण कारण छे, कारण के ज्ञानावरणीयादि कर्मनो बन्ध संसारनुं कारण होवाथी अने ते क्रियाओ

१०. जीवे णं भंते ! जं समयं काइयाए अधिगरणियाए पादोसियाते किरियाए पुट्ठे तं समयं पारियावणियाते पुट्ठे, पाणातिवातकिरियाते पुट्ठे ? गोयमा ! अत्थेगतिते जीवे एगतियाओ जीवाओ जं समयं काइयाए अधिगरणियाए पाओसियाए किरियाए पुट्ठे तं समयं पारियावणियाए किरियाए पुट्ठे, पाणाइवायकिरियाए पुट्ठे

१०. हे भगवन् ! जे समये (काळे) कायिकी, अधिकरणिकी अने प्राद्वेषिकी क्रिया वडे स्पृष्ट-युक्त होय ते समये पारितापनिकी क्रिया वडे युक्त होय अने प्राणातिपात क्रिया वडे युक्त होय ? हे गौतम ! १ कोइ जीव कोइ जीवने आश्रयी जे समये कायिकी, अधिकरणिकी अने प्राद्वेषिकी क्रिया वडे युक्त होय ते समये पारितापनिकी क्रिया वडे युक्त होय अने प्राणातिपात क्रिया वडे

कर्मबन्धना हेतु होवाथी उपचारथी ते क्रियाओ पण संसारनुं कारण थाय छे. ते वावत सूत्रकार कहे छे—"कइ णं भंते आओजियाओ किरियाओ पण्णत्ताओ ?"-हे भगवन् ! आयोजिका क्रियाओ केटली छे ? इत्यादि. 'आयोजयति जीवं संसारे इत्यायोजिकाः' जे जीवने संसारने विषे जोडे ते आयोजिका-कायिकादि क्रियाओ कहेवाय छे. बाकी बधुं सुगम छे. सूत्रपाठ पूर्वे कह्या प्रमाणे जेने, जे समये, जे देशे-अंशे अने जे प्रदेशे-एम पूरा चार दंडको थाय त्यां सुधी कहेवो. 'यं समयं' इत्यादि. 'काळ अने मार्गरूप अधिकरणमां व्याप्ति होय त्यारे द्वितीया विभक्ति थाय छे. तेथी 'जे समये, जे देशने अने जे प्रदेशने विशे एवी व्याख्या करवी.

१०. 'जीवे णं भंते ! जं समयं काइयाए अहिगरणियाए'-इत्यादि. हे भगवन् ! जीव जे समये कायिकी, अधिकरणिकी अने प्राद्वेषिकी क्रियावडे स्पृष्ट-युक्त होय ते समये पारितापनिकी वडे स्पृष्ट होय-इत्यादि. अहीं पण समयना ग्रहण वडे सामान्य रीते काळ ग्रहण करवो. प्रश्नसूत्र सुगम छे. उत्तरसूत्रमां त्रण भांगाओ थाय छे—कोइ जीव कोइ जीवने आश्रयी जे समये-काळे त्रणे क्रियावडे स्पृष्ट-युक्त होय ते समये पारितापनिकी क्रियावडे अने प्राणातिपान क्रियावडे युक्त होय ए प्रथम भङ्ग. पारितापनिकी क्रियावडे युक्त

१, अत्थेगतिते जीवे एगतियाओ जीवाओ जं समयं काइयाए अधिगरणियाए पादोसियाते किरियाए पुट्ठे तं समयं पारितावणियाए किरियाए पुट्ठे, पाणाइवायकिरियाए अपुट्ठे २, अत्थेगइए जीवे एगइयाओ जीवाओ जं समयं काइयाए अहिगरणियाए पाओसियाए पुट्ठे तंसमयं पारितावणियाए किरियाए अपुट्ठे, पाणाइवायकिरियाए अपुट्ठे ३।

११. कति णं भंते! किरियाओ पण्णत्ताओ? गोयमा! पंच किरियाओ पन्नत्ताओ, तंजहा—आरंभिया, परि-

युक्त होय २, कोइ जीव कोइ जीवने आश्रयी जे समये कायिकी, अधिकरणिकी अने प्राद्वेपिकी क्रिया वडे युक्त होय ते समये पारितापनिकी क्रिया वडे युक्त होय अने प्राणातिपात क्रिया वडे युक्त न होय. ३ कोइ जीव कोइ जीवने आश्रयी जे समये कायिकी, अधिकरणिकी अने प्राद्वेपिकी क्रिया वडे युक्त होय ते समये पारितापनिकी क्रिया वडे अयुक्त होय अने प्राणातिपात क्रिया वडे अयुक्त होय.

११. हे भगवन्! केटली क्रियाओ कही छे? हे गौतम! पांच क्रियाओ कही छे. ते आ प्रमाणे—१ आरंभिकी, २ पारिग्रहिकी,

होय अने प्राणातिपात क्रियावडे अयुक्त होय ए बीजो भांगो. अने पारितापनिकी क्रियावडे अने प्राणातिपात क्रियावडे अयुक्त होय ए त्रीजो भङ्ग समजवो. आ त्रीजो भङ्ग बाण वगेरेना लक्ष्यथी चुकी जवा वडे घातने पात्र मृगादिने परितापादिनो असंभव होय त्यारे जाणवो. जे जीव जे समये जे जीवने आश्रयी प्रथमनी त्रण क्रियावडे अयुक्त होय ते जीव ते समये ते जीवने आश्रयी अवश्य पारितापनिकी अने प्राणातिपात क्रियावडे अयुक्त होय, कारण के कायिकादि क्रियाना अभावमां परितापादिनो संभव नथी.

११. हवे बीजा प्रकारे क्रियाओनुं निरूपण करे छे—'कइ णं भंते!'—हे भगवन्! केटली क्रियाओ कही छे? इत्यादि. आरंभिकी-आरंभ

ग्गहिया, मायावत्तिया, अपच्चक्खाणकिरिया, मिच्छादंसणवत्तिया। आरंभिया णं भंते! किरिया कस्स कज्जति? गोयमा! अण्णयरस्सवि पमत्तसंजयस्स। परिग्गहिया णं भंते! किरिया कस्स कज्जइ ? गोयमा! अण्णयर-स्सवि संजयासंजयस्स। मायावत्तिया णं भंते! किरिया कस्स कज्जति? गोयमा! अण्णयरस्सवि अपमत्तसंज-

२ मायाप्रत्ययिकी, ४ अप्रत्याख्यान क्रिया अने ५ मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी. हे भगवन्! आरंभिकी क्रिया कोने होय छे? हे गौतम! कोइ पण प्रमत्त संयतने होय छे. हे भगवन्! पारिग्रहिकी क्रिया कोने होय छे? हे गौतम! कोइ संयतासंयत-देशविरतिने होय छे. हे भगवन्! मायाप्रत्ययिकी क्रिया कोने होय छे? हे गौतम! कोइ पण अप्रमत्त संयतने होय छे. हे भगवन्! अप्रत्या-

-पृथिव्यादीनी हिंसा करवी, कह्युं छे के—

" संकप्पो संरंभो परितावकरो भवे समारम्भो। आरम्भो उद्दवतो सुद्धु नयाणं तु सव्वेसिं ॥ "

संरंभ-(हिंसानो) संकल्प, परिताप उत्पन्न करनार समारंभ, अने आरंभ एटले उपद्रव-घात करवो ए बधा शुद्ध नयोनुं मन्तव्य छे. आरंभ छे प्रयोजन-कारण जेनुं ते आरंभिकी क्रिया कहेवाय छे. 'परिग्गहिय'त्ति-पारिग्रहिकी परिग्रह-धर्मोपकरण सिवायनी वस्तुनो स्वीकार करवो अने धर्मोपकरणमां पण मूर्छा-ममत्वनो परिणाम, परिग्रहरूप अथवा परिग्रह वडे उत्पन्न थयेली क्रिया ते पारिग्रहिकी. 'मायावत्तिय'त्ति-मायाप्रत्यया' माया-वक्रता, सरळपणानो अभाव. उपलक्षणथी क्रोधादि कषायनुं पण ग्रहण करवुं. माया प्रत्यय-कारण छे जेनुं ते मायाप्रत्ययिकी. 'अपच्चक्खाणकिरिय' त्ति-अप्रत्याख्यान-विरतिना लेशमात्र परिणामनो अभाव, ते रूप क्रिया ते अप्रत्याख्यानक्रिया. 'मिच्छादंसणवत्तिय' त्ति-मिथ्यादर्शनप्रत्यया. मिथ्यादर्शन-तत्त्वरुचिनो अभाव, ते जेनो प्रत्यय-हेतु छे ते मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी. ए उपर कहेली क्रियाओमां जे क्रिया जेने होय ते बतावे छे-'आरंभिया णं भंते'-हे भगवन्! आरंभिकी क्रिया

यस्स । अपच्चक्खाणकिरिया णं भंते ! कस्स कज्जति ? गोयमा ! अण्णयरस्सवि अपच्चक्खाणिस्स । मिच्छादंसणवत्तिया णं भंते ! किरिया कस्स कज्जति ? गोयमा ! अण्णयरस्सवि मिच्छादंसणिस्स ।

१२. नेरइयाणं भंते ! कति किरियातो पन्नत्ताओ ? गोयमा ! पंच किरियातो पन्नत्ताओ, तंजहा—आरंभिया

ख्यान क्रिया कोने होय छे ? हे गौतम ! कोइ पण अप्रत्याख्यानी—प्रत्याख्यान—विरति रहितने होय छे. हे भगवन् ! मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी क्रिया कोने होय छे ? हे गौतम ! कोइ पण मिथ्यादृष्टिने होय छे.

१२. हे भगवन् ! नैरयिकोने केटली क्रियाओ कही छे ? हे गौतम ! पांच क्रियाओ कही छे. ते आ प्रमाणे—आरंभिकी, यावत्

कोने होय ? इत्यादि. आरंभिकी क्रिया "अन्यतरस्यापि प्रमत्तसंयतस्य"-कोइ पण प्रमत्तसंयतने होय छे. अहीं अपि शब्द भिन्न क्रम जणावे छे. अन्यतर-कोइ पण एक प्रमत्तसंयतने प्रमादना सद्भावमां शरीरना दुष्प्रयोग-अयतना वडे पृथिव्यादिनी हिंसानो संभव छे. अपिशब्द बीजा नीचेना गुणस्थानकवर्ती जीवोने आरंभिकी क्रियानुं नियतपणुं बताववा माटे छे. प्रमत्तसंयतने पण आरंभिकी क्रिया होय छे तो पछी बाकीना देशविरतिप्रमुखने होय तेमां शुं कहेवुं ? ए प्रमाणे पछीना सूत्रोमां पण यथायोग्यपणे अपिशब्दना अर्थनो विचार करवो. पारिग्रहिकी संयतासंयतने-देशविरतिने पण होय छे. कारण के तेने पण परिग्रह होय छे. मायाप्रत्ययिकी क्रिया अप्रमत्तसंयतने पण होय छे. शी रीते होय छे ? प्रवचनना उड्डाहने ढांकवाने माटे वल्लीकरणसमुद्देशादिने विषे जाणवी. अप्रत्याख्यान क्रिया कोइ पण अप्रत्याख्यानीने-विरतिरहितने समजवी. जे कांइपण प्रत्याख्यान-विरति न करे ते अप्रत्याख्यानी जाणवो, मिथ्यादर्शनक्रिया जे सूत्रमां कहेला एक पण अक्षरनी श्रद्धा न करतो होय एवा कोइपण मिथ्यादृष्टिने होय छे.

१२. आज क्रियाओनुं चोवीश दंडकना क्रमथी निरूपण करे छे—नेरइयाणं भंते ! '—हे भगवन् ! नैरयिकोने केटली क्रियाओ

जाव मिच्छादंसणवत्तिया। एवं जाव वेमाणियाणं। जस्स णं भंते! जीवस्स आरंभिया किरिया कज्जति तस्स परिग्गहिया किं कज्जति? जस्स परिग्गहिया किरिया कज्जति तस्स आरंभिया किरिया कज्जइ? गोयमा! जस्स णं जीवस्स आरंभिया किरिया कज्जइ तस्स परिग्गहिया सिय कज्जति, सिय नो कज्जति, जस्स पुण परिग्गहिया किरिया कज्जति तस्स आरंभिया किरिया णियमा कज्जति। जस्स णं भंते! जीवस्स आरंभिया किरिया कज्जति तस्स

मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी. ए प्रमाणे वैमानिको सुधी जाणवुं. हे भगवन्! जे जीवने आरंभिकी क्रिया होय छे तेने पारिग्रहिकी क्रिया होय? जेने पारिग्रहिकी क्रिया होय छे तेने आरंभिकी क्रिया होय? हे गौतम! जे जीवने आरंभिकी क्रिया होय छे तेने पारिग्रहिकी क्रिया कदाच होय अने कदाच न होय, जेने पारिग्रहिकी क्रिया होय तेने आरंभिकी क्रिया अवश्य होय. हे भगवन्! जे जीवने आरंभिकी क्रिया होय तेने मायाप्रत्ययिकी क्रिया होय–इत्यादि पृच्छा. हे गौतम! जे जीवने आरंभिकी क्रिया होय तेने मायाप्रत्य-

होय छे? इत्यादि सुगम छे. हवे आ क्रियाओना परस्पर नियत संबन्धनो विचार करे छे. ते आ प्रमाणे-जेने आरंभिकी क्रिया होय छे तेने पारिग्रहिकी क्रिया कदाच होय अने कदाच न होय. प्रमत्तसंयतने न होय, बाकीनाने होय. तथा जेने आरंभिकी क्रिया होय छे तेने मायाप्रत्ययिकी क्रिया अवश्य होय छे. जेने मायाप्रत्ययिकी क्रिया होय तेने आरंभिकी क्रिया कदाच होय अने कदाच न होय. अप्रमत्त संयतने न होय, बाकीनाने होय. जेने आरंभिकी क्रिया होय तेने अप्रत्याख्यान क्रिया कदाच होय अने कदाच न होय. प्रमत्त संयत अने देशविरतिने न होय, बाकीना अविरतिसम्यग्दृष्ट्यादिने होय. जेने अप्रत्याख्यान क्रिया होय तेने आरंभिकी क्रिया अवश्य होय. कारण के अप्रत्याख्यानीने–अविरतिने अवश्य आरंभनो संभव छे. ए प्रमाणे मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी साथे पण तेनुं नियतपणुं विचारवुं. ते आ प्रमाणे–जेने आरंभिकी क्रिया होय छे तेने मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी क्रिया कदाच होय अने कदाच न होय. मिथ्या-

मायावत्तिया किरिया कज्जति पुच्छा। गोयमा! जस्स णं जीवस्स आरंभिया किरिया कज्जति तस्स मायावत्तिया किरिया नियमा कज्जइ, जस्स पुण मायावत्तिया किरिया कज्जइ तस्स आरंभिया किरिया सिय कज्जति, सिय नो कज्जति। जस्स णं भंते! जीवस्स आरंभिया किरिया कज्जइ तस्स अपच्चक्खाणकिरिया पुच्छा। गोयमा! जस्स जीवस्स आरंभिया किरिया कज्जइ तस्स अपच्चक्खाणकिरिया सिय कज्जति, सिय नो कज्जति, जस्स पुण

हे भगवन्! जे जीवने यिकी क्रिया अवश्य होय, जेने मायाप्रत्ययिकी होय तेने आरंभिकी क्रिया कदाच होय अने कदाच न होय. हे भगवन्! जे जीवने आरंभिकी क्रिया होय तेने अप्रत्याख्यान क्रिया होय-इत्यादि पृच्छा. हे गौतम! जे जीवने आरंभिकी क्रिया होय तेने अप्रत्याख्यान क्रिया कदाच होय अने कदाच न होय, जेने अप्रत्याख्यान क्रिया होय तेने आरंभिकी क्रिया अवश्य होय. ए प्रमाणे मिथ्यादर्शन प्रत्ययिकी क्रियानी साथे योग करवो. एम पारिग्रहिकी क्रियानो पण उपरनी त्रण क्रियाओनी साथे विचार करवो. जेने मायाप्रत्ययिकी

दृष्टिने होय, बाकीनाने न होय. जेने मिथ्यादर्शनक्रिया होय तेने आरंभिकी क्रिया अवश्य होय. कारण के मिथ्यादृष्टि विरतिरहित होवाथी तेने अवश्य आरंभनो संभव छे. ए प्रमाणे आरंभिकी क्रियानो पारिग्रहिकी वगेरे उपरनी चार क्रियाओनी साथे परस्पर नियतपणानो विचार कर्यो. एम पारिग्रहिकी क्रियानो त्रण क्रियाओनी साथे, मायाप्रत्ययिकी क्रियानो बे क्रियाओ साथे विचार कर्यो. ते प्रमाणे सूत्रकार कहे छे—'एवं परिग्गहिया वि तिहिं उवरिल्लाहिं समं संचारेयव्वा'—एम पारिग्रहिकीनो पण उपरनी त्रण क्रियाओनी साथे विचार करवो—इत्यादि सुगम छे, कारण के तेनी भावना प्रसिद्ध छे. आज अर्थने चोवीश दंडकना क्रमथी बतावे छे—'नेरइयस्स आइल्लाओ चत्तारि' नैरयिकने प्रथमनी चार क्रियाओ होय छे-इत्यादि. नैरयिकादि उत्कृष्ट अविरति सम्यग्दृष्टि गुणस्थान सुधी होय छे, ते पछी होता नथी. तेथी नैरयिकोने प्रथमनी चार क्रियाओ परस्पर नियतपणे होय छे. मिथ्यादर्शन प्रति स्याद्वाद छे-एटले

अपच्चक्खाणकिरिया कज्जइ तस्स आरंभिया किरिया णियमा कज्जइ। एवं मिच्छादंसणवत्तियाएवि समं। एवं परिग्गहियावि तिहिं उवरिल्लाहिं समं संचारेतव्वा। जस्स मायावत्तिया किरिया कज्जइ तस्स उवरिल्लाओ दोवि सिय कज्जंति, सिय नो कज्जंति, जस्स उवरिल्लाओ दो कज्जंति तस्स मायावत्तिया णियमा कज्जति। जस्स अपच्चक्खाणकिरिया कज्जति तस्स मिच्छादंसणवत्तिया किरिया सिय कज्जति, सिय नो कज्जति, जस्स पुण मिच्छादंसणवत्तिया किरिया तस्स अपच्चक्खाणकिरिया णियमा कज्जति। नेरइयस्स आइल्लियातो चत्तारि परोप्परं

क्रिया होय छे तेने उपरनी बे क्रियाओ कदाच होय अने कदाच न होय, जेने उपरनी बे क्रियाओ होय छे तेने मायाप्रत्ययिकी अवश्य होय. जेने अप्रत्याख्यान क्रिया होय छे तेने मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी क्रिया कदाच होय अने कदाच न होय, जेने मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी क्रिया होय छे तेने अप्रत्याख्यान क्रिया अवश्य होय छे. नैरयिकने प्रथमनी चार क्रियाओ परस्पर अवश्य होय छे. जेने ए चार क्रियाओ होय छे तेने मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी क्रिया भजनाए होय छे. एटले कदाच होय अने कदाच न होय. जेने मिथ्या-

---

कदाचित् होय छे अने कदाचित् होती नथी. तेज बाबत कहे छे. 'जस्स पयाओ चत्तारि' इत्यादि.जेने ए चार क्रियाओ होय छे तेने मिथ्यादर्शन प्रत्ययिकी भजनाए-विकल्पे होय छे-इत्यादि. मिथ्यादृष्टिने मिथ्यादर्शन क्रिया होय छे. बाकीना जीवोने होती नथी. जेने मिथ्यादर्शन क्रिया होय छे तेने प्रथमनी चार क्रियाओ अवश्य होय छे, कारण के मिथ्यादर्शनना सद्भावमां आरंभिकी वगेरे क्रियाओ अवश्य होय छे, ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमार सुधी कहेवुं. पृथिवीकायथी मांडी चउरिन्द्रिय सुधीना जीवोने पांच क्रियाओ परस्पर नियतपणे कहेवी. कारण के पृथिव्यादि जीवोने मिथ्यादर्शन क्रिया अवश्य होय छे. तिर्यंच पंचेन्द्रियने प्रथमनी त्रण क्रियाओ परस्पर नियत होय छे. केमके देशविरति सुधी आ क्रियाओ अवश्य होय छे. पछीनी बे क्रियाओ वडे स्याद्वाद छे-एटले कदाचित् होय अने

नियमा कज्जति, जस्स एताओ चत्तारि कज्जंति तस्स मिच्छादंसणवत्तिया किरिया भइज्जति, जस्स पुण मिच्छादंसणवत्तिया किरिया कज्जति तस्स एतातो चत्तारि नियमा कज्जंति, एवं जाव थणियकुमारस्स। पुढवीकाइयस्स जाव चउरिंदियस्स पंचवि परोप्परं नियमा कज्जंति। पंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स आतिल्लियातो तिण्णिवि परोप्परं नियमा कज्जंति, जस्स एयाओ कज्जंति तस्स उवरिल्लिया दोण्णि भइज्जंति, जस्स उवरिल्लातो दोण्णि कज्जंति तस्स एतातो तिण्णिवि णियमा कज्जंति। जस्स अपच्चक्खाणकिरिया तस्स मिच्छादंसणवत्तिया सिय

दर्शनप्रत्ययिकी क्रिया होय छे तेने ए चार क्रियाओ अवश्य होय छे. ए प्रमाणे स्तनितकुमार सुधी जाणवुं. पृथिवीकायिकथी आरंभी चउरिन्द्रिय सुधीना जीवोने पांचे क्रियाओ परस्पर अवश्य होय छे. पंचेन्द्रिय तिर्यंचने प्रथमनी त्रण क्रियाओ परस्पर अवश्य होय छे. जेने ए क्रियाओ होय छे तेने उपरनी बन्ने क्रियाओ भजनाए होय छे. जेने उपरनी बन्ने क्रियाओ होय छे तेने आ त्रणे क्रियाओ अवश्य होय छे. जेने अप्रत्याख्यान क्रिया होय छे तेने मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी क्रिया कदाच होय अने कदाच न होय. जेने मिथ्या-

कदाचित् न होय. तेज सूत्रकार बतावे छे—'जस्स एयाओ कज्जंति' जेने ए त्रण क्रियाओ होय छे तेने उपरनी बे क्रियाओ भजनाए होय छे-इत्यादि. देशविरतिने न होय अने बाकीनाने होय. जेने उपरनी बे क्रियाओ होय छे, तेने प्रथमनी त्रण क्रियाओ अवश्य होय छे. उपरनी बे क्रिया अप्रत्याख्यान क्रिया अने मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी छे, तेमां अप्रत्याख्यान क्रिया अविरति सम्यग्दृष्टि सुधी होय छे, अने मिथ्यादर्शन क्रिया मिथ्यादृष्टिने होय छे. प्रथमनी चार क्रियाओ देशविरति सुधी होय छे, माटे उपरनी क्रियाओ होय त्यारे अवश्य प्रथमनी त्रण क्रियाओ होय छे. हवे तिर्यंच पंचेन्द्रियने अप्रत्याख्यान क्रिया साथे मिथ्यादर्शन क्रियानुं परस्पर नियतपणुं बतावे छे—'जेने अप्रत्याख्यान क्रिया होय छे, तेने मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी क्रिया कदाच होय अने कदाच न होय-इत्यादि सूत्रनो विचार करवो.

कज्जति, सिय नो कज्जति, जस्स पुण मिच्छादंसणवत्तिया किरिया कज्जति तस्स अपच्चक्खाणकिरिया नियमा कज्जइ, मणूसस्स जहा जीवस्स, वाणमंतरजोइसियवेमाणियस्स जहा नेरइयस्स। जं समयण्णं भंते! जीवस्स आरंभिया किरिया कज्जति तं समयं परिग्गहिया किरिया कज्जइ? एवं एते जस्स जं समयं जं देसं जं पदेसेण य चत्तारि दंडगा णेयव्वा, जहा नेरइयाणं तहा सव्वदेवाणं नेतव्वं जाव वेमाणियाणं।

१३. अत्थि णं भंते! जीवाणं पाणातिवायवेरमणे कज्जति? हंता! अत्थि। कम्हि णं भते! जीवाणं पाणा-

---

दर्शनप्रत्ययिकी क्रिया होय छे तेने अप्रत्याख्यान क्रिया अवश्य होय छे. मनुष्यने जेम जीवने कह्युं छे तेम जाणवुं. व्यन्तर, ज्योतिषिक अने वैमानिकने नैरयिकनी पेठे कहेवुं. हे भगवन्! जे समये (काळे) जीवने आरंभिकी क्रिया होय छे ते समये पारिग्रहिकी क्रिया होय छे? ए प्रमाणे १ जेने, २ जे समये, ३ जे अंशे, अने ४ जे प्रदेशे—ए चार दंडको जाणवा. जेम नैरयिकोने कह्युं तेम सर्व देवोने यावत् वैमानिको सुधी समजवुं.

१३. हे भगवन्! शुं एम छे के जीवोने प्राणातिपातविरमण होय? हा गौतम! होय छे. हे भगवन्! जीवोने कोने विशे

जेम जीवपदने विषे कह्युं तेम मनुष्यने कहेवुं. व्यन्तर, ज्योतिषिक अने वैमानिकोने नैरयिकनी पेठे कहेवुं. ए एक दंडक कह्यो. ए प्रमाणे 'जं समयं णं भंते! जीवस्स—हे भगवन्! जे समये जीवने आरंभिकी क्रिया होय छे ते समये पारिग्रहिकी क्रिया होय? इत्यादि बीजो दंडक, 'जं देसं णं' जे देश—अंशने आश्रयी इत्यादि त्रीजो दंडक अने 'जं पपसेणं' जे प्रदेशने आश्रयी—इत्यादि चोथो दंडक कह्यो.

तिपातवेरमणे कज्जति ? गोयमा ! छसु जीवनिकाएसु । अत्थि णं भंते ! नेरइयाणं पाणातिवातवेरमणे कज्जति ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । एवं जाव वेमाणियाणं, णवरं मणूसाणं जहा जीवाणं । एवं मुसावाएणं जाव माया-मोसेणं जीवस्स य मणूसस्स य, सेसाणं नो तिणट्ठे समट्ठे । णवरं अदिन्नादाणे गहणधारणिज्जेसु दव्वेसु, मे-

---

प्राणातिपात विरमण होय ? हे गौतम ! छ जीवनिकायने विषे होय. हे भगवन् ! नैरयिकोने प्राणातिपातविरमण होय ? हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ–युक्त नथी. ए प्रमाणे वैमानिको सुधी जाणवुं. परन्तु जेम जीवोने कह्युं तेम मनुष्योने समजवुं. एम मृषावादविरमण वडे यावत् मायामृषाविरमण वडे जीवने अने मनुष्यने जाणवुं. बाकीनाने ए अर्थ युक्त नथी. परन्तु अदत्तादान ग्रहण अने धारण करवा

---

१३. पृथिव्यादि छ जीवनिकाय प्राणातिपात क्रियाना हेतु ज होय के तेना विरमणना हेतुओ पण होय–ए संबन्धे प्रश्न करे छे —'अत्थि णं भंते !–हे भगवन् ! जीवो वडे प्राणातिपातनी विरति कराय छे इत्यादि. अहीं बधे कज्जइ–क्रियते ए कर्मकर्तरि प्रयोग छे तेथी तेनो 'भवति'–थाय छे एवो अर्थ समजवो. एटले जीवोने प्राणातिपातनी विरति थाय छे ? प्राणातिपातादिना विरमणना विषयभूत छ कायादिनो पूर्वेज विचार कर्यो छे. माटे अहीं फरी विचार करता नथी. प्राणातिपातथी मांडी मायामृषा सुधीनी विरति जीवपद अने मनुष्यपदने विशे कहेवी. बाकीना स्थानकोमां 'ए अर्थ समर्थ नथी' एम कहेवुं. कारण के मनुष्य सिवाय बीजाने भव-निमित्तक सर्वविरतिनो अभाव छे. मिथ्यादर्शन विरमणना विषयनो विचार करतां 'सर्व द्रव्योने विषे' एम कह्युं छे, पण उपलक्षणथी सर्व पर्यायोने विशे पण समजवुं. कारण के जो एम न होय तो एक द्रव्य के पर्यायने विशे मिथ्यात्व होय तो तेने मिथ्यादर्शनना विरमणनो असंभव छे. कारण के—

"सूत्रोक्तस्यैकस्याप्यरोचनादक्षरस्य भवति नरः । मिथ्यादृष्टिः सूत्रं हि नः प्रमाणं जिनाभिहितम्" ॥

हुणे रूवेसु वा रूवसहगएसु वा दव्वेसु, सेसाणं सव्वेसु दव्वेसु। अत्थि णं भंते! जीवाणं मिच्छादंसणसल्ल-
वेरमणे कज्जति? हंता! अत्थि। कम्हि णं भंते! जीवाणं मिच्छादंसणसल्लवेरमणे कज्जति? गोयमा! सव्वद-
व्वेसु, एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं, णवरं एगिंदियविगलेंदियाणं नो तिणट्ठे समट्ठे।
१४. पाणातिपातविरए णं भंते! जीवे कइ कम्मपगडीतो बंधति? गोयमा! सत्तविहबंधए वा अट्ठविहबंधए

लायक द्रव्योने विषे, मैथुन रूप अने रूपसहित द्रव्योने विषे समजवुं. बाकी बधा सर्व द्रव्योने विषे जाणवा. हे भगवन्! जीवोने
मिथ्यादर्शनशल्यविरमण होय? हा होय. हे भगवन्! कोने विषे जीवोने मिथ्यादर्शनशल्यविरमण होय? हे गौतम! सर्व द्रव्योने
विषे होय. एम नैरयिको यावत् वैमानिकोने जाणवुं. परन्तु एकेन्द्रिय अने विकलेन्द्रियने ए अर्थ युक्त नथी.
१४. हे भगवन्! प्राणातिपातनी विरतिवाळो जीव केटली कर्मप्रकृतिओ बांधे? हे गौतम! सात प्रकृतिओ बांधे, आठ प्रकृति-

सूत्रमां कहेला एक पण अक्षरनी अरुचि थवाथी मनुष्य मिथ्यादृष्टि थाय छे, कारण के जिनेश्वरे कहेलुं सूत्र अमने प्रमाण
छे"—एवुं शास्त्रनुं वचन छे. मिथ्यादर्शनशल्यनुं विरमण एकेन्द्रिय अने विकलेन्द्रिय सिवाय बाकीना जीवस्थानोमां होय छे, बाकीना
एकेन्द्रियादिमां होतुं नथी. कारण के "उभयाभावो पुढवाएसु" पृथिव्यादिमां प्रतिपद्यमान (सम्यक्त्वने प्राप्त थता अने प्रतिपन्न-
सम्यक्त्वने प्राप्त थयेला) ए बन्नेनो अभाव छे-एवुं शास्त्रनुं वचन छे. यद्यपि कोइक बेइन्द्रियादिने करणापर्याप्तावस्थामां सास्वादन
सम्यक्त्व होय छे, तो पण ते मिथ्यात्वने अभिमुख थयेला अने सम्यक्त्वने प्रतिकूल थयेलाने होय छे माटे तेओने पण मिथ्यादर्शन-
शल्यना विरमणनो प्रतिषेध कर्यो छे, माटे ते संबंधे सूत्रकार कहे छे-'जीवाणं मिच्छादंसणसल्लवेरमणे कज्जइ'? जीवोने मिथ्यादर्शन-
शल्यनी विरति होय छे? इत्यादि.

वा छव्विहबंधए वा एगविहबंधए वा अबंधए वा। एवं मणूसेवि भाणितव्वे। पाणातिपातविरया णं भंते ! जीवा कति कम्मपगडीतो बंधंति ? गोयमा ! सव्वेवि ताव होज्जा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य १, अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य अट्ठविहबंधगे य २, अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य अट्ठविहबंधगा य ३ अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य छव्विहबंधगे य ४, अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य छव्विहबंधगा य ५, अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य अबंधए य ६, अहवा सत्तविहबंधगा य

ओ वांधे, छ प्रकृतिओ वांधे अने एक प्रकृति बांधे, तथा अबन्धक पण होय. एम मनुष्यने पण कहेवुं. हे भगवन् ! प्राणातिपातनी विरतिवाळा जीवो केटली कर्मप्रकृतिओ वांधे ? हे गौतम ! १ बधा य जीवो सात प्रकृतिओ वांधे अने एक प्रकृति बांधे. २ अथवा बधा सात प्रकृतिओ बांधे, एक प्रकृति बांधे अने कोइ एक आठ प्रकृतिओ बांधे. ३ अथवा घणा सात प्रकृतिओ बांधनारा एक प्रकृति बांधनारा अने एक आठ प्रकृतिओ बांधनार होय. ४ अथवा घणा सात प्रकृतिओ बांधनारा, एक प्रकृति बांधनारा अने एक छ प्रकृतिओ बांधनार होय. ५ अथवा (घणा) सात प्रकृतिओ बांधनारा, एक प्रकृति बांधनारा अने छ प्रकृतिओ बांधनारा होय. ६

१४. हवे प्राणातिपातनी विरतिवाळाने कर्म बंध थाय छे के नथी थतो ? थाय छे अने नथी पण थतो. पज बाबत प्रश्नना सूत्रपूर्वक कहे छे-पाणाइवायविरए णं भंते'-प्राणातिपातनी विरतिवाळो जीव केटली कर्मप्रकृतिओ बांधे ? इत्यादि सूत्र सुगम छे. बहुवचनमां पण प्रश्नसूत्र सुगम छे. उत्तर सूत्रमां १ बधा य जीवो सात प्रकृतिना बांधनारा अने एक प्रकृतिना बांधनारा होय. अहीं प्रमत्त, अप्रमत्त, अपूर्वकरण, अने अनिवृत्तिबादरसंपराय सात प्रकृतिओ बांधे छे. तेमां प्रमत्त अने अप्रमत्त आयुषना बन्धनकाळे आठ प्रकृतिओ बांधे छे. कारण के ते आयुषनो पण बंध करे छे. अने आयुषनो बन्ध कदाचित् होय छे, तेथी कोइ काळे सर्वथा पण न

एगविहबंधगा य अबंधगा य ७, अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य अट्ठविधबंधगे य छव्विहबंधए य १, अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य अट्ठविहबंधए य छव्विहबंधगा य २, अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य अट्ठविहबंधगा य छव्विहबंधए य ३, अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य अट्ठविहबंधगा य छव्विहबंधगा य ४, अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य अट्ठविहबंधए य अबंधए य १, अहवा

अथवा घणा सात प्रकृतिओ बांधनारा एक प्रकृति बांधनारा अने एक अबन्धक होय. ७ अथवा घणा सात प्रकृतिओ बांधनारा, एक प्रकृति बांधनारा अने अबन्धक होय, १ अथवा घणा सात प्रकृतिओ बांधनारा, एक प्रकृति बांधनारा एक आठ प्रकृतिओ बांधनार तथा एक छ प्रकृतिओ बांधनार होय. २ अथवा घणा सात प्रकृतिओ बांधनारा, एक प्रकृति बांधनारा, एक आठ प्रकृतिओ बांधनार अने घणा छ प्रकृतिओ बांधनारा होय. ३ अथवा घणा सात प्रकृतिओ बांधनारा, एक प्रकृति बांधनारा आठ प्रकृतिओ

होय माटे प्रमत्त अने अप्रमत्त हमेशां घणा होय छे. अपूर्वकरण अने अनिवृत्तिबादर कदाचित् न पण होय. कारण के आगममां तेओनो विरह पण कहेलो छे. एक प्रकृति बांधनारा उपशान्तमोह, क्षीणमोह अने सयोगी केवली छे, तेमां उपशान्तमोह अने क्षीणमोह कदाचित् होय अने कदाचित् न होय. कारण तेओनुं अन्तर पण संभवे छे. सयोगी केवली हमेशां होय छे, कारण के तेओ अन्य अन्य क्षेत्रमां होवाथी तेओनो विच्छेद थतो नथी. तेथी सात प्रकृतिना वन्ध करनारा अने एक प्रकृतिना वन्ध करनारा घणा अवस्थित होय छे. एम आठ प्रकृतिना वन्ध करनारा वगेरेना अभावमां प्रथम भंग थाय छे. अथवा सात प्रकृतिना बांधनारा अने एक प्रकृतिना बांधनारा घणा होय छे अने एक आठ प्रकृतिनो बांधनार होय छे-ए बीजो भंग. आठ प्रकृति बांधनारा घणा होय त्यारे त्रीजो भांगो. छ प्रकृतिना बंध करनारा पण कदाच होय अने कदाच न होय, कारण के तेओनो उत्कृष्ट

सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य अट्ठविहबंधए य अबंधगा य २, अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य
अट्ठविहबंधगा य अबंधए य ३, अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य अट्ठविहबंधगा य अबंधगा य ४।
अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य छव्विहबंधगे य अबंधए य १, अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहबं-
धगा य छव्विहबंधए य अबंधगा य २, अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य छव्विहबंधगा य अबंधए
य ३, अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य छव्विहबंधगा य अबंधगा य ४। अहवा सत्तविहबंधगा य एग-
बांधनारा अने एक छ प्रकृतिओ बांधनार होय. ४ अथवा घणा सात प्रकृतिओ बांधनारा एक प्रकृति बांधनारा आठ प्रकृतिओ
बांधनारा अने छ प्रकृतिओ बांधनारा होय. १ अथवा घणा सात प्रकृतिओ बांधनारा एक प्रकृति बांधनारा एक आठ प्रकृति
बांधनार अने एक अबन्धक होय. २ अथवा घणा सात प्रकृतिओ बांधनारा एक प्रकृति बांधनारा एक 'आठ प्रकृति बांधनार अने
घणा अबन्धक होय. ३ घणा सात प्रकृतिओ बांधनारा, एक प्रकृति बांधनारा, आठ प्रकृतिओ बांधनारा अने एक अबन्धक होय. ४
अथवा घणा सात प्रकृतिओ बांधनारा एक प्रकृति बांधनारा, आठ प्रकृतिओ बांधनारा अने अबन्धक होय. १ अथवा घणा सात
छ मासनो विरह होय छे. ज्यारे तेओ होय छे त्यारे पण जघन्यपदे एक अथवा बे अने उत्कृष्ट पदे एकसो आठ होय छे. तेथी
आठ प्रकृतिने बांधनारा न होय त्यारे षड्विधबन्धक पद वडे पण बे भांगा थाय छे. अबन्धक अयोगी केवली होय छे अने ते पण
कदाचित् होय अने कदाचित् न होय. कारण के तेओनो पण उत्कृष्ट छ मासनो विरह होय छे, ज्यारे तेओ होय छे त्यारे जघन्य
पदे एक, बे अने उत्कृष्टपदे एकसो आठ होय छे. तेथी आठ प्रकृतिने बांधनारा न होय त्यारे अबन्धक पद वडे पण बे भांगा थाय
छे. ए प्रमाणे एक पहेलो भांगो अने एक एकना संयोगे छ बीजा भांगाओ-एम बधा मळी सात भांगा थाय छे. हवे द्विकसंयोगी भांगा

अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य अट्ठविहबधगा य अट्ठविहबंधगे य छव्विहबंधए य अबंधए य १, अहवा सत्तविहबन्धगा य एगविहबन्धगा य अट्ठविहबन्धए य छविहबंधए य छव्विहबंधए य अबंधगा य २, अहवा सत्तविहबन्धगा य एगविहबन्धगा य अट्ठविधबन्धए य छव्विहबन्धगा य अबन्धए य ३, अहवा सत्तविहबन्धगा य एगविहबन्धगा य अट्ठविहबन्धगा य छव्विहबन्धगे य अबन्धए य अबन्धगा य ४, अहवा सत्तविहबन्धगा य एगविहबन्धगा य अट्ठविहबन्धगा य छव्विहबन्धगे य अबन्धगा य ६, अहवा य ५, अहवा सत्तविहबन्धगा य एगविहबन्धगा य अट्ठविहबन्धगा य छव्विहबन्धगे य अबन्धगा य ६, अहवा

प्रकृतिओ बांधनारा एक प्रकृति बांधनारा, एक छ प्रकृति बांधनार अने एक अबन्धक होय. २ अथवा घणा सात प्रकृतिओ बांधनारा प्रकृतिओ बांधनारा एक प्रकृति बांधनारा, एक छ प्रकृतिओ बांधनार अने घणा अबंधक होय. ३ अथवा घणा सात प्रकृतिओ बांधनारा एक प्रकृति बांध- एक प्रकृति बांधनारा एक छ प्रकृतिओ बांधनार अने अबंधक होय. ४ अथवा (घणा) सात प्रकृतिओ बांधनारा एक प्रकृति बांधनारा छ प्रकृतिओ नारा (एक) छ प्रकृतिओ बांधनार अने अबंधक होय. १ अथवा घणा सात प्रकृतिओ बांधनारा एक प्रकृति बांधनारा एक आठ प्रकृतिओ बांधनार एक छ प्रकृ- बांधनारा अने अबंधक होय. २ अथवा (घणा) सात प्रकृतिओ बांधनारा एक प्रकृति बांधनारा एक आठ प्रकृतिओ बांधनार एक तिओ बांधनार अने अबंधक होय.

अवस्थित छे. कारण के वन्ने हमेशां घणां होय छे. तेथी प्रत्येक अष्टविधवन्धक वतावाय छे-तेमां सप्तविधबंधक अने एकविधवन्धक अवस्थित छे. कारण के वन्ने हमेशां घणां होय छे. तेथी प्रत्येक अष्टविधवन्धक पद अने षड्विधवन्धकपदमां एकवचन रूप पहेलो भांगो. अष्टविधबन्धक पदमां एकवचन अने षड्विधवन्धकपदना बहुवचनरूप बीजो भांगो. ए बे भांगा अष्टविधवन्धक पदना एक वचन वडे थाय छे अने एज बे भांगा बहुवचन वडे थाय छे. एम चार भांगा थया, एमज चार भांगा अष्टविधवन्धक अने अबन्धक पद वडे जाणवा. ए प्रमाणे चार भांगा षड्विधवंधक अने अबन्धक पद वडे जाणवा. बधा मळी

सत्तविहबन्धगा य एगविहबन्धगा य अट्ठविहबन्धगा य छव्विहबन्धगा य अबन्धए य ७, अहवा सत्तविहबन्धगा य एगविहबन्धगा य अट्ठविहबन्धगा य छव्विहबन्धगा य अबन्धगा य ८, एवं एते अट्ठभंगा, सव्वेवि मिलिया सत्तावीसं भंगा भवंति । एवं मणूसाणवि एते चेव सत्तावीसं भंगा भाणितव्वा, एवं मुसावायविरयस्स जाव मायामोसविरयस्स जीवस्स य मणूसस्स य । मिच्छादंसणसल्लविरए णं भंते ! जीवे कति कम्मपग-

छ प्रकृतिओ बांधनार अने (घणा) अबंधक होय. ३ अथवा (घणा) सात प्रकृतिओ बांधनारा एक प्रकृति बांधनारा (एक) आठ प्रकृतिओ बांधनार (घणा) छ प्रकृतिओ बांधनारा अने (एक) अबंधक होय. ४ अथवा (घणा) सात प्रकृतिओ बांधनारा एक प्रकृति बांधनारा (एक) आठ प्रकृति बांधनार (घणा) छ प्रकृतिओ बांधनार अने घणा अबंधक होय. ५ अथवा (घणा) सात प्रकृतिओ बांधनारा एक प्रकृति बांधनारा आठ प्रकृतिओ बांधनारा (एक) छ प्रकृतिओ बांधनार अने एक अबंधक होय. ६ अथवा (घणा) सात प्रकृतिओ बांधनारा एक प्रकृति बांधनारा आठ प्रकृतिओ बांधनारा (एक) छ प्रकृतिओ बांधनार अने (घणा) अबंधक होय. ७ अथवा (घणा) सात

द्विकसंयोगना बार भांगा थाय छे. अष्टविधबन्धक अने अबन्धकरूप त्रण पदना संयोगे प्रत्येकना एकवचन अने बहुवचन वडे आठ भांगा थाय छे. सर्व मळी सत्यावीश भांगा थाय छे. अहीं अन्य शंका करे छे—विरतिवाळाने केम बंध थाय? कारण के विरति बंधनो हेतु नथी, जो विरति पण बंधनो हेतु थाय तो मोक्षना अभावनो प्रसंग थाय. कारण के मोक्षनो कोइ उपाय नथी. तेनो उत्तर ए छे के विरति बन्धनो हेतु नथी, परन्तु विरतिवाळाने जे कषाय अने योगो छे ते बन्धनुं कारण छे. ते आ प्रमाणे—सामायिक, छेदोपस्थान अने परिहारविशुद्धिक चारित्रमां पण जे उदयने प्राप्त थयेला संज्वलनरूप कषायो अने योगो छे तेथी विरतिवाळाने पण देवायुष वगेरे शुभप्रकृतिओनो कषाय अने योगनिमित्तक बन्ध थाय छे. जेम प्राणातिपातनी विरतिवाळाने सत्यावीश भांगा कह्या,

डीतो बन्धति ? गोयमा ! सत्तविहबन्धए वा अट्ठविहबन्धए वा छव्विहबन्धए वा एगविहबन्धए वा अबन्धए वा । मिच्छादंसणसल्लविरए णं भंते ! नेरइए कति कम्मपगडीतो बन्धति ? गोयमा ! सत्तविहबन्धए वा अट्ठविहबन्धए वा जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणिए । मणूसे जहा जीवे । वाणमंतरजोइसितवेमाणिते जहा नेरइते । मिच्छादंसणसल्लविरया णं भंते ! जीवा कति कम्मपगडीतो बन्धन्ति ? गोयमा ! ते चेव सत्तावीसं भंगा भा-

प्रकृतिओ बांधनारा एक प्रकृति बांधनारा आठ प्रकृति बांधनारा छ प्रकृतिओ बांधनारा अने (एक) अबंधक होय. ८ अथवा (घणा) सात प्रकृतिओ बांधनारा, एक प्रकृति बांधनारा आठ प्रकृतिओ बांधनारा छ प्रकृतिओ बांधनारा अने अबंधक होय. ए प्रमाणे ए आठ भांगा थया. बधा मळीने सत्यावीश भांगा थाय छे. एम मनुष्योने पण एज सत्यावीश भांगा कहेवा. ए रीते मृषावादनी विरतिवाळा, यावत् मायामृषावादनी विरतिवाळा जीवने अने मनुष्यने जाणवुं. हे भगवन् ! मिथ्यादर्शनशल्यनी विरतिवाळो जीव केटली कर्म प्रकृतिओ बांधे ? हे गौतम ! सात प्रकृतिओ बांधे, आठ प्रकृतिओ बांधे, छ प्रकृतिओ बांधे, एक प्रकृति बांधे अने अबंधक होय. हे भगवन् ! मिथ्यादर्शन शल्यनी विरतिवाळो नैरयिक केटली कर्मप्रकृतिओ बांधे ? हे गौतम ! सात प्रकृतिओ अने

तेम मृषावादनी विरतिवाळाने, यावत् मायामृषानी विरतिवाळाने जाणवा.

मिथ्यादर्शनशल्यनी विरतिवाळाने आश्रयी सूत्र कहे छे—"मिच्छादंसणसल्लविरएणं भंते !"-मिथ्यादर्शनशल्यनी विरतिवाळो केटली कर्मप्रकृतिओ बांधे ?—इत्यादि सूत्र सुगम छे, परन्तु तेओ सप्तविधबन्धक, अष्टविधबन्धक, षड्विधबन्धक एकविधबन्धक अने अबन्धक होय छे. मिथ्यादर्शनशल्यनी विरति अविरतिसम्यग्दृष्टि गुणस्थानकथी आरंभी अयोगी केवली सुधी होय छे. नैरयिकादि चोवीश दंडकना विचारमां मनुष्य सिवाय बाकीना बधा स्थानोमां सप्तविधबन्धक के अष्टविधबन्धक होय छे, पण षड्विधबन्धकादि

णितव्वा। मिच्छादंसणसल्लविरया णं भंते! नेरइया कति कम्मपगडीतो बन्धन्ति? गोयमा! सव्वेवि ताव होज्ज सत्तविहबन्धगा, अहवा सत्तविहबन्धगा य अट्ठविहबन्धगे य, अहवा सत्तविहबन्धगा य अट्ठविहबन्धगा य एवं जाव वेमाणिया, णवरं मणूसाणं जहा जीवाणं।

आठ प्रकृतिओ यावत् पंचेन्द्रिय तिर्यंच सुधी बांधे. मनुष्यने जीवनी पेठे बंध जाणवो. व्यन्तर, ज्योतिपिक अने वैमानिकने नैरयिकनी पेठे समजवुं, मिथ्यादर्शनशल्यनी विरतिवाळा जीवो केटली कर्मप्रकृतिओ बांधे? हे गौतम! ते (पूर्वोक्त) सत्यावीश भांगा कहेवा. मिथ्यादर्शनशल्यनी विरतिवाळा नैरयिको केटली कर्मप्रकृतिओ बांधे? हे गौतम! बधा य जीवो सात प्रकृतिओ बांधे. १ अथवा (घणा) सात प्रकृतिओ बांधे अने (एक) आठ प्रकृति बांधे. २ अथवा (घणा) सात प्रकृतिओ बांधे अने आठ प्रकृतिओ बांधनारा होय. ए प्रमाणे यावत् वैमानिको सुधी जाणवुं. परन्तु मनुष्योने जीवोनी पेठे समजवुं.

होता नथी, कारण के तेओने श्रेणिनी प्राप्तिनो असंभव छे. जेम जीवपदमां कह्युं तेम मनुष्यपदमां कहेवुं. कारण के मनुष्योमां सर्वभावनो संभव छे. हवे बहुवचन वडे आ संबन्धे सूत्र कहे छे—'मिच्छादंसणसल्लविरया णं भंते जीवा'--मिथ्यादर्शनशल्यनी विरतिवाळा जीवो केटली कर्मप्रकृतिओ बांधे? इत्यादि. अहीं पण पूर्वे कहेला तेज सत्यावीश भांगा जाणवा. नैरयिकपदमां त्रण भांगा होय छे. तेमां बधा सात कर्मने बांधनारा होय-ए प्रथम भंग, आ भांगो ज्यारे एक पण आठ प्रकृतिओ बांधनार न होय त्यारे होय छे. ज्यारे एक नैरयिक आठ प्रकृतिओनो बंध करे त्यारे घणा सात प्रकृति बांधनारा अने एक आठ प्रकृति बांधनार होय ए बीजो भांगो, ज्यारे आठ प्रकृति बांधनारा घणा होय त्यारे घणा सात कर्म बांधनारा अने आठ कर्म बांधनारा होय ए त्रीजो भांगो. एम त्रण भांगा वैमानिक सूत्र सुधी जाणवा. परन्तु मनुष्यपदमां सत्यावीश भांगा जेम जीवपदमां कह्या तेम कहेवा.

१५. पाणातिवायविरयस्स णं भंते ! जीवस्स किं आरंभिया किरिया कज्जति, जाव मिच्छादंसणवत्तिया किरिया कज्जति ? गोयमा ! पाणातिवायविरयस्स जीवस्स आरंभिया किरिया सिय कज्जति, सिय नो कज्जति । पाणातिवायविरयस्स णं भंते ! जीवस्स परिग्गहिया किरिया कज्जति ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । पाणातिवायविरयस्स णं भंते ! जीवस्स मायावत्तिया किरिया कज्जति ? गोयमा ! सिय कज्जति, सिय नो कज्जति । पाणातिपातविरयस्स णं भंते ! जीवस्स अपच्चक्खाणवत्तिया किरिया कज्जति ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । मिच्छा-

१५. हे भगवन् ! प्राणातिपातनी विरतिवाळा जीवने शुं आरंभिकी क्रिया होय ? यावत् मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी क्रिया होय ? हे गौतम ! प्राणातिपातनी विरतिवाळा जीवने कदाच आरंभिकी क्रिया होय अने कदाच न होय. हे भगवन् ! प्राणातिपातनी विरतिवाळा जीवने पारिग्रहिकी क्रिया होय ? हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी. हे भगवन् ! प्राणातिपातनी विरतिवाळा जीवने मायाप्रत्ययिकी क्रिया होय ? हे गौतम ! कदाच होय अने कदाच न होय. हे भगवन् ! प्राणातिपातनी विरतिवाळा जीवने अप्रत्याख्यानप्रत्ययिकी क्रिया होय ? हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी. हे भगवन् ! प्राणातिपातनी विरतिवाळा जीवने मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी होय एम पृच्छा

१५. हवे आरंभिकी आदि क्रियाओमां कइ क्रिया प्राणातिपातनी विरतिवाळाने होय तेनो विचार करे छे-'पाणाइवायविरयस्स णं भंते !' -हे भगवन् ! प्राणातिपातनी विरतिवाळा जीवने आरंभिकी क्रिया होय के यावत् मिथ्यादर्शन प्रत्ययिकी क्रिया होय इत्यादि. आरंभिकी क्रिया कदाच होय अने कदाच न होय. प्रमत्तसंयतने होय अने बाकीनाने न होय. पारिग्रहिकी क्रिया न होय, कारण के तेओ परिग्रहथी सर्वथा निवृत्त थयेला छे. जो एम न होय तो सम्यक् प्राणातिपातनी विरति न घटे. मायाप्रत्ययिकी कदाच होय अने कदाच न होय. कारण के मायाप्रत्ययिकी अप्रमत्तने पण कदाचित् प्रवचनना मलिनतानुं रक्षण करवा माटे होय छे, बीजा काळे न होय. अप्रत्याख्यान

दंसणवत्तियाए पुच्छा । गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । एवं पाणानिपातविरयस्स मणूसस्सवि, एवं जाव मायामोसविरयस्स जीवस्स मणूसस्स य । मिच्छादंसणसल्लविरयस्स णं भंते ! जीवस्स किं आरंभिया किरिया कज्जति, जाव मिच्छादंसणवत्तिया किरिया कज्जति ? गोयमा ! मिच्छादंसणसल्लविरतस्स जीवस्स आरंभिया किरिया सिय कज्जइ, सिय नो कज्जइ, एवं जाव अपच्चक्खाणकिरिया । मिच्छादंसणवत्तिया किरिया न कज्जइ । मिच्छादंसणसल्ल-

करवी. हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी. एम प्राणातिपातनी विरतिवाळा मनुष्यने पण जाणवुं. ए प्रमाणे यावत् मायामृषावादनी विर-
तिवाळा जीवने अने मनुष्यने समजवुं. हे भगवन् ! मिथ्यादर्शनशल्यनी विरतिवाळा जीवने शुं आरंभिकी क्रिया होय ? यावत् मि-
थ्यादर्शनप्रत्ययिकी क्रिया होय ? हे गौतम ! मिथ्यादर्शनशल्यनी विरतिवाळा जीवने आरंभिकी क्रिया कदाच होय अने कदाच न होय.
ए प्रमाणे यावत् अप्रत्याख्यान क्रिया जाणवी. मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी क्रिया न होय. हे भगवन् ! मिथ्यादर्शनशल्यनी विरतिवाळा

क्रिया अने मिथ्यादर्शनप्रत्यया क्रिया सर्वथा न होय. कारण के जो होय तो प्राणातिपातनी विरतिनो संभव न होय. प्राणातिपातनी विरतिना बे पद छे-जीव अने मनुष्य. तेमां जेम सामान्य जीवने आश्रयी कह्युं छे तेम मनुष्यने आश्रयी कहेवुं. ए प्रमाणे सूत्रकार कहे छे—"एवं पाणाइवायविरयस्स मणूसस्सवि" एम प्राणातिपातनी विरतिवाळा मनुष्यने पण कहेवुं. एम मायामृषानी विरतिवाळा जीव अने मनुष्यने कहेवुं. मिथ्यादर्शन शल्यनी विरतिवाळा जीवने आश्रयी सूत्र—'मिच्छादंसणसल्लविरयस्स णं भंते जीवस्स'-हे भगवन् ! मिथ्यादर्शनशल्यनी विरतिवाळा जीवने शुं आरंभिकी क्रिया होय के मायाप्रत्यया क्रिया होय ? इत्यादि. आरंभिकी कदाच होय अने कदाच न होय. प्रमत्तसंयत सुधी होय अने त्यारपछी न होय ए आशयथी छे. पारिग्रहिकी क्रिया देशविरति सुधी होय छे पछी होती नथी. मायाप्रत्यया क्रिया पण अनिवृत्ति बादरसंपराय सुधी होय छे, पछी न होय. अप्रत्याख्यानक्रिया पण अविरतिसम्यग्दृष्टि सुधी

विरयस्स णं भंते! नेरइयस्स किं आरंभिया किरिया कज्जति जाव मिच्छादंसणवत्तिया किरिया कज्जइ? गोयमा! आरंभिया किरिया कज्जति, जाव अपच्चक्खाणकिरियावि कज्जइ, मिच्छादंसणवत्तिया किरिया नो कज्जइ। एवं जाव थणियकुमारस्स। मिच्छादंसणसल्लविरयस्स णं भंते! पंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स एवमेव पुच्छा। गोयमा! आरंभिया किरिया कज्जइ, जाव मायावत्तिया किरिया कज्जइ, अपच्चक्खाणकिरिया सिय कज्जइ, सिय नो कज्जइ, मिच्छादंसणवत्तिया किरिया नो कज्जइ। मणूसस्स जहा जीवस्स। वाणमंतरजोइसियवेमाणियाणं जहा नेरइयस्स।

नेरयिकने शुं आरंभिकी क्रिया होय? यावत्-मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी क्रिया होय? हे गौतम! आरंभिकी क्रिया होय, यावत् अप्रत्याख्यान क्रिया पण होय. मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी क्रिया न होय. एम यावत् स्तनितकुमारने जाणवुं. हे भगवन्! मिथ्यादर्शनशल्यनी विरतिवाळा पंचेन्द्रिय तिर्यंचने एमज पृच्छा करवी. हे गौतम! आरंभिकी क्रिया होय. मायाप्रत्ययिकी क्रिया होय. अप्रत्याख्यान क्रिया कदाच होय अने कदाच न होय. मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी क्रिया न होय. मनुष्यने जीवनी पेठे जाणवुं. व्यन्तर, ज्योतिषिक अने वैमानिकने नैरयिकनी जेम कहेवुं.

होय, पछी न होय. तेथी ए क्रियाओने पण आश्रयी 'सिय कज्जइ, सिय नो कज्जइ' कदाच होय अने कदाच न होय-एम कहेवुं. ते प्रमाणे सूत्रकार कहे छे—'एवं जाव अपच्चक्खाणकिरिया'-ए प्रमाणे यावत् अप्रत्याख्यान क्रिया सुधी जाणवुं. मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी क्रियानो निषेध करवो. कारण के तेनो मिथ्यादर्शननी विरतिवाळाने असंभव छे. चोवीश दंडकना विचारमां नैरयिकथी आरंभी स्तनितकुमार सुधीना जीवोने चार क्रियाओ कहेवी. अने मिथ्यादर्शनप्रत्ययक्रियानो निषेध करवो. तिर्यंच पंचिन्द्रियने आदिनी त्रण

१९. एतासि णं भंते ! आरंभियाणं जाव मिच्छादंसणवत्तियाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा ४? गोयमा! सव्वत्थोवाओ मिच्छादंसणवत्तियाओ किरियाओ, अपच्चक्खाणकिरियाओ विसेसाहियाओ, परिग्गहियातो विसेसाहियाओ, आरंभियातो किरियातो विसेसाहियाओ, मायावत्तियातो विसेसाहियातो ।

पण्णवणाए भगवईए बावीसतिमं किरियापयं समत्तं ।

१९. हे भगवन् ! ए आरंभिकी क्रिया, यावत् मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी क्रियाओमां कई क्रिया कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक होय ? हे गौतम ! सौथी थोडी मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी क्रियाओ होय छे. तेथी अप्रत्याख्यान क्रिया विशेषाधिक छे, तेथी पारिग्रहिकी क्रियाओ विशेषाधिक छे, तेथी आरंभिकी क्रियाओ विशेषाधिक छे अने तेथी मायाप्रत्ययिकी क्रियाओ विशेषाधिक छे.

प्रज्ञापना भगवतीना अनुवादमां बावीशमुं क्रियापद समाप्त.

क्रियाओ अवश्य कहेवी. अने अप्रत्याख्यान क्रिया भजनाए (विकल्पे) जाणवी. ते देशविरतिने न होय, बाकीनाने होय. मिथ्यादर्शन क्रियानो निषेध करवो. मनुष्यने सामान्य जीवनी पेठे कहेवुं अने व्यन्तरादिने नैरयिकनी जेम जाणवुं.

१९. हवे आज आरंभिकी वगेरे क्रियाओनुं परस्पर अल्पबहुत्व कहे छे—'एतासि णं भंते'-हे भगवन् ! ए आरंभिकी, यावत् मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी क्रियाओमां कोण कोनाथी अल्प छे-इत्यादि. सौथी थोडी मिथ्यादर्शनप्रत्यय क्रिया छे, कारण के मिथ्यादृष्टिने ज होय छे. तेथी अप्रत्याख्यान क्रिया विशेषाधिक छे, कारण के ते अविरतिसम्यग्दृष्टि अने मिथ्यादृष्टिने होय छे. तेथी पण पारिग्रहिकी क्रिया विशेषाधिक छे, कारण के ते देशविरतिवाळा अने तेनी पूर्वेनाने होय छे. तेथी आरंभिकी क्रिया विशेषाधिक छे, कारण के ते प्रमत्तसंयत अने तेनी पहेलाना जीवोने होय छे. तेथी पण मायाप्रत्यय क्रिया विशेषाधिक छे, कारण के अप्रमत्त संयतोने पण होय छे.

प्रज्ञापना टीकाना अनुवादमां बावीशमुं क्रियापद समाप्त.

तेवीसतिमं पदं

पढमो उद्देसो ।

कति पगडी कह बन्धति कइहिवि ठाणेहिं बन्धए जीवो । कति वेदेइ य पयडी अणुभावो कइविहो कस्स ॥

१ कति णं भंते ! कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ, तंजहा—णाणावरणिज्जं १, दंसणावरणिज्जं २, वेदणिज्जं ३, मोहणिज्जं ४, आउयं ५, नामं ६, गोयं ७, अंतराइयं ८ । नेरइयाणं

तेवीशमुं कर्मप्रकृति पद

प्रथम उद्देशक

१ केटली कर्मप्रकृतिओ छे ? २ जीव केवी रीते बांधे छे ? ३ केटला स्थाने बांधे छे ? ४ केटली प्रकृतिओ वेदे छे ? ५ कया कर्मनो केटला प्रकारनो अनुभाव (विपाक) छे ? एटला द्वारो आ उद्देशकमां कहेवाना छे.

१. हे भगवन् ! केटली कर्मप्रकृतिओ कही छे ? हे गौतम ! आठ कर्मप्रकृतिओ कही छे. ते आ प्रमाणे—१ ज्ञानावरणीय, २

१. ए प्रमाणे बावीशमुं क्रियापद कह्युं. हवे तेवीशमा पदनो प्रारंभ थाय छे. एनो संबन्ध आ प्रमाणे छे—अहिं पूर्वना पदमां नारकादि गतिना परिणाम वडे परिणत थयेला जीवोना प्राणातिपातादि क्रियाविशेषनो विचार कर्यो, हवे तेओना कर्मबन्धादि परिणाम विशेषनो विचार करवानो छे. तेमां प्रथम अधिकारोनुं प्रतिपादन करनारी आ द्वार गाथा छे—'कइ पगडी' इत्यादि. केटली प्रकृतिओ छे-इत्यादि संबन्धे प्रथम अधिकार, तथा कया प्रकारे ते प्रकृतिओ बांधे छे-ए विशे बीजो अधिकार, केटला स्थानोए बांधे छे-ए

भंते ! कइ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! एवं चेव, एवं जाव वेमाणियाणं १।

दर्शनावरणीय, ३ वेदनीय, ४ मोहनीय, ५ आयुष, ६ नाम, ७ गोत्र, ८ अने अंतराय. हे भगवन् ! नैरयिकोने केटली कर्मप्रकृतिओ कही छे ? हे गौतम ! ए प्रमाणे (आठ कर्म प्रकृतिओ) कही छे. एम वैमानिको सुधी कहेवुं.

त्रीजो अधिकार, केटली प्रकृतिओ वेदे छे-ए चोथो अधिकार, अने कया कर्मनो केटला प्रकारनो अनुभाव-विपाक छे-ए पांचमो अधिकार. तेमां प्रथम अधिकारनुं निरूपण करवा माटे सूत्रकार कहे छे—'कति णं भंते कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ' इति. क्रियापदमां ' केटली कर्मप्रकृतिओ छे' ए कहेलुं छे, तो अहीं शा माटे प्रकृतिओनी संख्या संबन्धे फरीथी 'प्रश्न करे छे ? विशेपता जणाववा माटे आ प्रश्न छे अने ते विशेपता आ प्रमाणे छे—पूर्वे ज्ञानावरणीयादि कर्म बांधतो केटली क्रियाओ वडे जोडाय छे-एम कह्युं छे, क्रियाओ प्राणातिपातनुं कारण छे, प्राणातिपात ज्ञानावरणीयादि कर्मबन्धनुं बाह्य कारण छे अने कर्मबन्ध कार्य छे. अहीं तो ज्ञानावरणीय कर्म ज कर्मबन्धनुं आन्तर कारण छे-ए प्रतिपादन करवानुं छे. अहीं भगवान् उत्तर आपे छे—हे गौतम ! आठ कर्मप्रकृतिओ कही छे. तेज प्रकृतिओना नामनो उच्चार करीने दर्शावे छे—ज्ञानावरणीयं, दर्शनावरणीयं' इत्यादि. ज्ञायते अनेन-जे वस्तु जणाय-परिच्छेद कराय ते ज्ञान एटले सामान्य-विशेपात्मक वस्तुमां विशेपने ग्रहण करवारूप बोध. आव्रियते अनेन-जे वडे आच्छादन कराय-ढंकाय ते आवरण. अहीं करणना अर्थमां 'अनीय' प्रत्यय थयो छे. ज्ञाननुं अच्छादन करनार कर्म ते ज्ञानावरणीय. दृश्यते अनेन-जे वडे देखाय ते दर्शन-सामान्य-विशेपात्मक वस्तुमां सामान्यने ग्रहण करवा रूप बोध. कह्युं छे के—

"जं सामन्नगहणं भावाणं नेव कट्टु आगारं । अविसेसिऊण अत्थे दंसणमिह वुच्चए समये" ॥

भाव-पदार्थोना आकार सिवाय अर्थोनी विशेपता ग्रहण कर्या सिवाय सामान्यनुं ग्रहण करवुं ते सिद्धान्तमां दर्शन कहेवाय छे. तेनुं आवरणभूत कर्म ते दर्शनावरणीय. वेद्यते यद्-जे सुखादि स्वरूपे वेदाय-अनुभवाय ते वेदनीय. अहीं कर्म कारकना अर्थमां 'अनीय'

माटे तेनुं आच्छादन करनार ज्ञानावरणीय तेनाथी प्रथम कह्युं छे, अने त्यार पछी दर्शनावरणीय कर्म कह्युं छे. कारण के ज्ञानोपयोगथी पडीने जीव दर्शनोपयोगमां आवे छे. ए ज्ञानावरणीय अने दर्शनावरणीय पोतानो विपाक देखाडता यथायोग्यपणे अवश्य सुखदुःखरूप वेदनीय कर्मना विपाकनुं निमित्त थाय छे. ते आ प्रमाणे–अत्यन्त उपचित थयेला ज्ञानावरण कर्मने विपाकथी अनुभवता, सूक्ष्म अने सूक्ष्मतर वस्तुनो विचार करवाने पोताने असमर्थ मानता घणा माणसो खेद पामे छे. अने ज्ञानावरण कर्मना क्षयोपशमथी उत्पन्न थयेली बुद्धिनी पटुतायुक्त थइ सूक्ष्म, सूक्ष्मतर वस्तुने पोतानी प्रज्ञाथी जाणता अने घणा माणसोथी पोताने श्रेष्ठ मानता सुख वेदे छे. अतिगाढ दर्शनावरणना विपाकोदयथी जन्मान्धपणुं वगेरे घणुं दुःख अनुभवे छे. दर्शनावरण कर्मना क्षयोपशमजन्य पटुता युक्त प्राणी स्पष्ट चक्षु वगेरे इन्द्रियो सहित यथार्थपणे वस्तुने जोतो प्रमोदने अनुभवे छे. तेथी ए अर्थने जणाववा माटे दर्शनावरणीय कर्म पछी वेदनीय कर्मनुं ग्रहण कर्युं छे. वेदनीय कर्म इष्ट अने अनिष्ट विषयना संबन्धथी सुख–दुःख उत्पन्न करे छे. तेथी इष्ट अने अनिष्ट विषयना संबन्धथी संसारीने अवश्य राग–द्वेष थाय छे अने राग–द्वेष मोहनीयनिमित्तक छे. ए अर्थने जणाववा वेदनीय पछी मोहनीय कर्मनुं ग्रहण कर्युं छे. मोहनीय कर्म वडे मूढ थयेला प्राणीओ बहु आरंभ अने परिग्रहादिमां आसक्त थइ नरकादिनुं आयुष बांधे छे तेथी मोहनीय कर्मनी पछी आयुष कर्मनुं ग्रहण कर्युं छे. नारकादि आयुषना उदयमां अवश्य नरकगत्यादि नाम कर्म उदयमां आवे छे, तेथी आयुषकर्मनी पछी नामकर्मनुं ग्रहण कर्युं छे. नामकर्मना उदयमां अवश्य उच्च के नीच गोत्र कर्मनो विपाकोदय प्राप्त थाय छे माटे नामकर्म पछी गोत्र कर्मनुं कथन कर्युं छे. गोत्रकर्मना उदयमां उच्च गोत्रमां उत्पन्न थयेलाने प्रायः दान–लाभान्तरायादिनो क्षयोपशम होय छे, कारण के राजा प्रमुखने अधिकपणे दान-लाभादि जोवामां आवे छे. नीचकुळमां उत्पन्न थयेलाने दान-लाभान्तरायादिनो उदय होय छे. कारण के अन्त्यज जातिमां ते प्रमाणे जोवामां आवे छे. तेथी ए अर्थनुं ग्रहण करवा माटे गोत्र पछी अन्तराय कर्म कह्युं छे. ए प्रमाणे प्रथम द्वार कहेवामां आव्युं.

२. कहं णं भंते ! जीवे अट्ठ कम्मपगडीतो बन्धति ? गोयमा ! नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं दरिसणावरणिज्जं कम्मं णियच्छति, दंसणावरणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं दंसणमोहणिज्जं कम्मं णियच्छति, दंसणमोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं मिच्छत्तं नियच्छति, मिच्छत्तेणं उदिएणं गोयमा ! एवं खलु जीवो अट्ठ कम्मपगडीतो

२. हे भगवन् ! जीव केवी रीते आठ कर्मप्रकृतिओ बांधे छे ? हे गौतम ! ज्ञानावरणीय कर्मना उदयथी दर्शनावरणीय कर्मनो उदय थाय छे, दर्शनावरणीय कर्मना उदयथी दर्शनमोहनीय कर्मनो उदय थाय छे, दर्शनमोहनीय कर्मना उदयथी मिथ्यात्वनो उदय थाय छे अने मिथ्यात्वना उदयथी हे गौतम ! ए प्रमाणे खरेखर जीव आठ प्रकृतिओ बांधे छे. हे भगवन् ! नैरयिक आठ

२. हवे ए आठ प्रकृतिओ केवी रीते वांधे-ए बीजाद्वारनुं प्रतिपादन करवा माटे सूत्रकार कहे छे—'कहं णं भंते'! इत्यादि. हे भगवन् ! कथं-कया प्रकारे जीव आठ प्रकृतिओ वांधे ? भगवान् उतर आपे छे-गौतम ! ज्ञानावरणीय कर्मना उदय वडे दर्शनावरण कर्म 'नियच्छति'-निश्चित-अवश्य निर्गच्छति-प्राप्त थाय छे; एटले ते विशिष्ट उदयने प्राप्त थाय छे. तात्पर्य ए छे के उत्कृष्ट ज्ञानावरणीय कर्मने उदय वडे अनुभव करतो दर्शनावरणीय कर्मने उदय वडे वेदे छे. कारण के जेओनुं अन्तःकरण कुज्ञान वडे वासित छे एवा शून्यवादी प्रमुख अन्यतीर्थिको विपरीत दृष्टिवाळा जणाय छे.[1] दर्शनावरणीयकर्मना उदय वडे दर्शनमोहनीयकर्म 'निर्गच्छति' विपाका-

१ अहीं टीकाकारनुं तात्पर्य ए छे के ज्ञानावरणीय कर्मना उदय साथे नियत दर्शनावरण कर्मनो उदय होय छे. दर्शनावरणना उदयनी साथे दर्शनमोहनीयनो नियत उदय होय छे, दर्शनमोहनीयकर्मना उदय वडे मिथ्यात्वनो नियत उदय होय छे. अने मिथ्यात्वनो उदय ए आठे कर्मबन्धनो हेतु छे. अने मिथ्यात्वना उदयनुं कारण दर्शनमोहनीय अने दर्शनमोहनीयना उदयनुं कारण ज्ञानावरण-दर्शनावरण कर्म छे. जेनो विशेषावबोध विपरीत होय छे तेनो सामान्य अवबोध पण विपरीत होय छे. विशेषावबोध अने सामान्य अवबोधना विपर्ययथी दर्शनमोहनीयनो

बन्धति । कहं णं भंते ! नेरइए अट्ठ कम्मपगडीओ बन्धति ? गोयमा ! एवं चेव, एवं जाव वेमाणिते । कहण्णं भंते ! जीवा अट्ठ कम्मपगडीतो बन्धन्ति ? गोयमा ! एवं चेव, जाव वेमाणिया ।

कर्मप्रकृतिओ केम बांधे ? हे गौतम ! एमज जाणवुं. ए प्रमाणे वैमानिको सुधी कहेवुं. हे भगवन् ! जीवो आठ कर्मप्रकृतिओ केम बांधे ? एमज बांधे छे. ए प्रमाणे यावत् वैमानिको सुधी जाणवुं.

वस्थारूप उदयवडे प्राप्त थाय छे. ते दर्शनमोहनीयकर्मना उदयवडे मिथ्यात्वनो उदय थाय छे. अने तेथी ते अतत्त्वने तत्त्वरूपे अने तत्त्वने अतत्त्वरूपे माने छे. मिथ्यात्वना उदयथी जीव आठे कर्मप्रकृतिओ बांधे छे. 'खलु' शब्द प्रायोवृत्ति बतावबा माटे छे. एटले उपर कह्या प्रमाणे प्रायः जाणवुं. जो एम न होय तो कोइ सम्यग्दृष्टि पण आठे प्रकृतिओ बांधे छे, अने कोइ सम्यग्दृष्टि बांधता पण नथी. जेमके सूक्ष्मसंपरायादि गुणस्थानकवर्ती जीव कोइपण कर्मनो बंध करतो नथी, पण ते प्रकार अहीं कह्यो नथी. अहीं तात्पर्यार्थ आ छे-पूर्व कर्मना परिणामना सामर्थ्यथी उत्तर कर्म बंधाय छे. ए संबंधे कह्युं छे के—

" जीवपरिणामहेऊ कम्मत्ता पोग्गला परिणमंति । पुग्गलकम्मनिमित्तं जीवो वि तहेव परिणमइ " ॥

जीवना परिणामरूप निमित्तथी पुद्गलो कर्मपणे परिणमे छे, अने पुद्गल कर्मना निमित्ते जीव पण ते प्रमाणे परिणमे छे. उपर कहेला अर्थनुं चोवीश दंडकना क्रमथी निरूपण करे छे—'कहण्णं भंते ! नेरइए'-हे भगवन् ! नैरयिक कया प्रकारे आठ कर्मनो बंध

उदय थाय छे एटले के दर्शनमोहनीयना उदयमां विपरीत सामान्यावबोध अने सामान्यावबोधना विपर्ययमां विपरीत विशेषावबोध हेतु छे—कारणभूत छे. लोकमां पण एम ज जणाय छे के कुज्ञानवासित अन्तःकरणवाळाने दर्शनमोहनीयनो उदय होय छे अने तेथी तेने जिनोक्त तत्त्वनी रुचि थती नथी.

३. जीवे णं भंते ! णाणावरणिज्जं कम्मं कतिहिं ठाणेहिं बंधति ? गोयमा ! दोहिं ठाणेहिं, तंजहा—रागेण य दोसेण य । रागे दुविहे पन्नत्ते, तंजहा—माया य लोभे य । दोसे दुविधे पन्नत्ते,तंजहा—कोहे य माणे य, इच्चेतेहिं चउहिं ठाणेहिं विरितोवग्गहिएहिं एवं खलु जीवे णाणावरणिज्जं कम्मं बन्धति, एवं नेरतिते जाव वेमाणिते । जीवा णं भंते ! णाणावरणिज्जं कम्मं कतिहिं ठाणेहिं बन्धन्ति ? गोयमा ! दोहिं ठाणेहिं एवं चेव, एवं

३. हे भगवन् ! जीव केटला स्थानोए ज्ञानावरणीय कर्म बांधे ? हे गौतम ! बे स्थाने बांधे. ते आ प्रमाणे–रागथी अने द्वेषथी. राग बे प्रकारनो छे. ते आ प्रमाणे–माया अने लोभ. द्वेष बे प्रकारनो छे, ते आ प्रमाणे–क्रोध अने मान. जीववीर्य वडे युक्त ए चार स्थानकोए ए प्रमाणे जीव खरेखर ज्ञानावरणीय कर्म बांधे छे. एम नैरयिक यावत् वैमानिक संबंधे जाणवुं. हे भगवन् ! जीवो ज्ञानावरणीय कर्म केटला स्थानकोए बांधे ? हे गौतम ! बे स्थानकोए बांधे–इत्यादि एमज जाणवुं. ए प्रमाणे नैरयिको यावत्

करे ? इत्यादि पाठ सुगम छे. एम एकवचन वडे दंडक कह्यो. हवे बहुवचनवडे दंडक कहे छे—'कहण्णं भंते जीवा'–हे भगवन् ! जीवो कया प्रकारे आठ कर्मनो बंध करे ? इत्यादि पाठसिद्ध छे. एम बीजुं द्वार कह्युं.

३. हवे जीव केटला स्थानोए कर्म बांधे छे—ए त्रीजुं द्वार कहे छे–'जीवे णं भंते !' इत्यादि. हे भगवन् ! जीव केटला स्थाने ज्ञानावरणीय कर्म बांधे ? ए प्रश्नसूत्र सुगम छे. भगवान् उत्तर आपे छे—बे स्थानोए बांधे छे. ते स्थानो नामना कथनपूर्वक जणावे छे—राग अने द्वेष वडे. आ राग अने द्वेषनुं केवुं स्वरूप छे ? उत्तर—राग प्रीतिलक्षण छे अने अप्रीतिरूप द्वेष छे. प्रीति अने अप्रीतिरूप रागद्वेष क्रोधादिथी अत्यंत भिन्न नथी, परंतु तेओनो तेमां ज अन्तर्भाव थाय छे. अने ते अन्तर्भाव नयभेदथी विचित्र छे. माटे शिष्य उपर उपकार करवा अहीं बतावे छे—तेमां संग्रह नय माने छे के क्रोध अप्रीतिरूप प्रसिद्ध ज छे. मान पण बीजाना गुणने

॥५॥

नेरइया जाव वेमाणिया। एवं दंसणावरणिज्जं जाव अंतराइज्जं, एवं एते एगत्तपोहत्तिया सोलस दंडगा।

वैमानिको जाणवा. एम दर्शनावरणीय कर्म यावत् अंतरायकर्म संबंधे पण जाणवुं. ए प्रमाणे एकवचन अने बहुवचनना सोळ दंडको जाणवा.

नहि सहन करवारूप होवाथी अप्रीतिरूप छे. तेथी ए बन्ने अप्रीतिरूप होवाथी द्वेष छे, लोभ आसक्तिरूप होवाथी प्रीतिरूप सुप्रसिद्ध छे. कोइ वस्तुनी अभिलाषा करतो मनुष्य बीजाने छेतरवारूप मायाने पण आचरे छे. अने अभिलाप प्रीतिस्वभाववाळो छे माटे माया पण प्रीतिरूप छे. तेथी ए बन्ने माया अने लोभ प्रीतिरूप होवाथी रागरूप छे. कह्युं छे के—

" कोहं माणं चापीइजाइतो वेइ सङ्गहो दोसं। मायाए लोभेण य स पीइसामण्णतो रागं " ॥

संग्रह नय क्रोध अने मानने अप्रीतिनी जाति होवाथी द्वेष कहे छे अने माया अने लोभनी साथे प्रीतिनुं समानपणुं होवाथी तेने राग कहे छे. अहीं गाथाना उत्तरार्धनी अक्षरयोजना आ प्रमाणे छे—माया अने लोभनी साथे प्रीतिजातिनुं समानपणुं होवाथी एटले समान प्रीतिनी जाति होवाथी संग्रह नय बन्नेने-माया अने लोभने राग कहे छे.

पुनः ए संबंधे व्यवहार नय कहे छे—मायानो उपयोग बीजानो उपघात करवा माटे थाय छे, अने बीजाना उपघातनो परिणाम द्वेषरूप छे माटे मायानो पण द्वेषमां अन्तर्भाव थाय छे. अने जे न्यायपूर्वक उपार्जन करवा वडे अर्थने विषे मूर्छा-आसक्ति थवी ते बीजाना उपघात करवाना परिणामथी रहित शुद्ध लोभ ए राग छे. ए प्रमाणे व्यवहार नयना मतथी आवी रीते वस्तुनी व्यवस्था छे. क्रोध, मान अने माया द्वेषरूप छे अने लोभ रागरूप छे. ते संबंधे कहे छे के—

" मायंपि दोसमिच्छइ ववहारो जं परोवघाया य। नायोवायाणे च्चिय मुच्छा लोभेत्ति तो रागो " ॥

व्यवहार नय मायाने पण द्वेष माने छे, कारण के माया बीजाने उपघात करवा माटे छे. अने न्यायपूर्वक उपार्जन करेला अर्थमां

ऋजुसूत्र नय कहे छे के—क्रोध अवश्य अप्रीतिरूप छे अने तेथी ते बीजाने उपघात
मूर्छा ते लोभ छे अने तेथी ते रागरूप छे, अहीं ऋजुसूत्र नय कहे छे के—क्रोध अवश्य अप्रीतिरूप छे अने तेथी ते बीजाने उपघात करवारूप होवाथी द्वेष कहेवाय छे. अने जे मान, माया अने लोभ छे ते बे प्रकारना संभवे छे—प्रीतिरूप अने अप्रीतिरूप. ते आ प्रमाणे—मान स्वाभिमानना उपयोग समये स्वगुणना बहुमानपणाथी प्रीतिस्वरूप छे अने परगुणना द्वेषना उपयोगवेळा मात्सर्यादि करवारूप होवाथी अप्रीतिरूप छे, अने बीजाना होवाथी अप्रीतिरूप छे. माया पण बीजाने छेतरवानो उपयोग होय त्यारे परने उपघात करवारूप होवाथी अप्रीतिरूप छे, अने बीजाना द्रव्यने ग्रहण करवाना विचारमां आसक्तिरूप होवाथी प्रीतिरूप छे. लोभ पण क्षत्रियादि संबंधे विचार करता प्रीति अने अप्रीतिरूप सुप्रसिद्ध छे. जेमके क्षत्रियो एम माने छे के बीजानो देश लइ लेवो ते अमारो न्याय-धर्म छे, कारण के 'वीरभोग्या वसुंधरा'—वसुंधरा वीर पुरुषोवडे उपभोग करवा योग्य छे—एवो न्याय छे. तेथी ज्यारे बीजानो देश लेवा माटे तेओना उपर अत्यंत हुमलो करे त्यारे ते अप्रीतिरूप छे, कारण के ते बीजाने उपघात करवारूप छे. ज्यारे बीजाना देशने ग्रहण करवानी इच्छा थाय त्यारे ते आसक्तिरूप होवाथी प्रीतिरूप छे. तेथी मान, माया अने लोभ प्रीति अने अप्रीतिरूपे बन्ने प्रकारना वेदाय छे. ज्यारे प्रीतिनो उपयोग होय त्यारे अप्रीतिनो उपयोग होतो नथी अने ज्यारे अप्रीतिनो उपयोग होय त्यारे प्रीतिनो उपयोग होतो नथी, कारण के एक समये बे उपयोग होता नथी. तेथी मान माया अने लोभ प्रीतिना उपयोगकाळे राग अने अप्रीतिना उपयोगकाळे द्वेषरूप छे. कह्युं छे के—

" उज्जुसुयमयं कोहो दोसो सेसाणमयमणेगंतो । रागो त्ति दोसो त्ति य परिणामवसेण उ विसेसो ॥
माणो रागो त्ति मओ साहंकारोवओगकालंमि । सो चेव होइ दोसो परगुणदोसोवयोगम्मि ॥
मायालोभा चेवं परोवधाओवओगतो दोसो । मुच्छोवओगकाले रागोऽभिस्संगलिंगोत्ति ॥ "

ऋजुसूत्रनयनुं मत ए छे के क्रोध द्वेषरूप छे अने बाकीना कषायो माटे अनेकान्त छे परिणामना वशथी रागरूप अने द्वेषरूप ए विशेष छे. स्वाभिमानना उपयोगकाले मान रागरूप छे अने परगुणना द्वेषना उपयोग समये द्वेषरूप छे. माया अने लोभ बीजाने उपघात

करवाना उपयोगकाळे द्वेषरूप छे अने मूर्छाना उपयोग समये आसक्तिना चिह्नवाळो राग छे. शब्दादि त्रणे नयो आ प्रमाणे कहे छे—अहीं क्रोध अने लोभ ए बे ज कषायो छे. जे मान अने माया छे तेनो क्रोध अने लोभमां समावेश थाय छे. ते आ प्रमाणे—मान अने मायामां जे बीजाने उपघात करवाना हेतुभूत जे अध्यवसायो छे ते अप्रीतिरूप होवाथी क्रोध छे अने जे स्वगुणना उत्कर्षरूप अने परद्रव्यनी मूर्छारूप अध्यवसायो छे ते लोभ छे, कारण के ते आसक्तिरूप छे. लोभ पण लोकप्रसिद्ध बे प्रकारनो छे—परने उपघात करवारूप लोभ छे ते क्षत्रियोने बीजाना राज्यनुं अपहरण करवामां होय छे अने मूर्छात्मक लोभ न्यायथी उपार्जन करेला पोताना द्रव्यमां होय छे. तेमां जे परने उपघात करवारूप अध्यवसाय छे ते क्रोध छे अने बधा प्रकारनो क्रोध अप्रीतिरूप होवाथी तेनो पूर्वोक्त स्वरूपवाळा द्वेषमां समावेश थाय छे अने केवळ मूर्छारूप अध्यवसाय ते लोभ छे अने ते रागरूप छे. ए संबंधे कह्युं छे के—

" सद्दाइमयं माणे मायाए य सगुणोवरागा य। उपओगो लोहो च्चिय जतो स तत्थेव उवरद्धो ॥

सेसंसा कोहो चिय सपरोवघाइयमइओ त्ति तो दोसो। तल्लक्खणो य लोभो अह मुच्छा केवलो रागो " ॥

शब्दादि नयोनो अभिप्राय छे के मान अने मायामां स्वगुणना रागथी जे उपयोग प्रवर्ते छे ते लोभरूप ज छे. कारण के ते तेमां ज रंगायलो छे. बाकीना अंशो स्वपरना उपघातनी बुद्धिथी थयेला होवाथी क्रोधरूप ज छे अने उपघात स्वभाववाळो लोभ द्वेष छे अने मूर्छात्मक लोभ केवळ रागरूप छे. तेमां संग्रह नयना मतथी कहे छे—'रागे दुविहे पन्नत्ते'—राग बे प्रकारनो कह्यो छे—इत्यादि सुगम छे. कारण के तेनो विचार हमणां ज करवामां आव्यो छे. हवे उपसंहार करे छे—'इच्चेतेहिं चउहिं ठाणेहिं' इत्यादि. ए प्रमाणे हमणां ज कहेला 'वीर्योपगृहितैः' वीर्यवडे उपगृहित-उपस्थित करायेला एटले जीव वीर्यवडे सहित ए चार स्थानकोए जीव ज्ञानावरणीय कर्म बांधे छे.

हवे आ ज बाबतनो चोवीश दंडकना क्रमथी विचार करे छे—'एवं नेरइए जाव वेमाणिए' ए प्रमाणे नैरयिक यावत् वैमानिक

४. जीवे णं भंते ! णाणावरणिज्जं कम्मं वेदेति ? गोयमा ! अत्थेगइए वेदेति, अत्थेगइए नो वेएइ । नेरइए णं भंते ! णाणावरणिज्जं कम्मं वेदेति ? गोयमा ! नियमा वेदेति, एवं जाव वेमाणिते, णवरं मणूसे जहा जीवे। जीवा णं भंते ! णाणावरणिज्जं कम्मं वेदेंति ? गोयमा ! एवं चेव, एवं जाव वेमाणिया। एवं जहा णाणावरणि-

---

४. हे भगवन् ! जीव ज्ञानावरणीय कर्म वेदे ? हे गौतम ! कदाच वेदे अने कदाच न वेदे. हे भगवन् ! नैरयिक ज्ञानावरणीय कर्म वेदे ? हे गौतम ! अवश्य वेदे. ए प्रमाणे वैमानिक सुधी जाणवुं. परन्तु मनुष्यने जीवनी पेठे कहेवुं. हे भगवन् ! जीवो ज्ञानावरणीय कर्म वेदे ? हे गौतम ! ए प्रमाणे 'वेदे' एम समजवुं. ए प्रमाणे वैमानिको सुधी जाणवुं. जेम ज्ञानावरणीय कर्म कह्युं तेम

संबंधे जाणवुं-इत्यादि सुगम छे. परंतु सूत्रपाठ आ प्रमाणे छे—'नेरएणं भंते ! णाणावरणिज्जं कम्मं कइहिं ठाणेहिं बंधइ'—हे भगवन् ! नैरयिक ज्ञानावरण कर्म केटला स्थाने बांधे' इत्यादि. ए प्रमाणे एकवचन वडे विचार कर्यो हवे बहुवचन वडे विचार करे छे—'जीवा णं भंते' !-इत्यादि सुगम छे. जेम ज्ञानावरणीय कर्मनो एकवचन अने बहुवचनने आश्रयी बे दंडकवडे विचार कर्यो तेम दर्शनावरणीयादि कर्मनो पण विचार करवो. बधा मळीने सोळ दंडक थाय छे. ए प्रमाणे त्रीजुं द्वार कह्युं.

४. 'हवे केटली प्रकृतीओ वेदे छे' ए चोथा द्वार संबन्धे कहे छे—'जीवे णं भंते'! इत्यादि. हे भगवन् ! जीव ज्ञानावरणीय कर्म-वेदे ? कोइ एक जीव छे जे वेदे छे, कोइ एक जीव छे जे वेदतो नथी. जेणे घाती कर्मनो क्षय कर्यो नथी ते वेदे छे, जेणे घाती कर्मनो क्षय कर्यो छे ते वेदतो नथी ए भावार्थ छे. आज अर्थनो चोवीश दंडकना क्रमथी विचार करे छे—'नेरइ ए णं भंते !' इत्यादि सुगम छे. मनुष्यने छोडी 'बाकीना बधा स्थानोमां अवश्य वेदे छे'-एम कहेवुं. कारण के ते सिवाय बीजा बधाने घाती कर्मनो क्षय होतो नथी. जेम जीवपदमां कह्युं छे तेम मनुष्यने विशे कहेवुं, कारण के घाती कर्मनो क्षय करनार मनुष्य होय छे. ए

ज्जं तहा दंसणावरणिज्जं मोहणिज्जं अंतराइयं च, वेयणिज्जाउनामगोताइं एवं चेव, नवरं मणूसेवि नियमा वेदेंति, एवं एते एगत्तपोहत्तिया सोलस दंडगा ।

५. णाणावरणिज्जस्स णं भंते ! कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स पुट्ठस्स बद्धफासपुट्ठस्स संचियस्स चियस्स उवचियस्स आवागपत्तस्स विवागपत्तस्स फलपत्तस्स उदयपत्तस्स जीवेणं कयस्स जीवेणं निव्वत्तियस्स जीवेणं परि-

दर्शनावरणीय, मोहनीय अने अंतराय कर्म कहेवुं. वेदनीय, आयुष, नाम अने गोत्र कर्म पण एमज समजवुं. परन्तु मनुष्य पण तेने अवश्य वेदे. ए रीते एक वचन अने बहु वचनना सोळ दंडक जाणवा.

५. जीवे बांधेला, स्पृष्ट–स्पर्शेला, गाढ स्पर्श वडे स्पर्शेला, संचित, चित–एकठा करायेला, उपचित थयेला, आपाकप्राप्त–थोडा विपाकने प्राप्त थयेला, विशिष्ट विपाकने प्राप्त थयेला फलने प्राप्त थयेला, उदयने प्राप्त थयेला, जीवे करेला, जीवे निर्वर्तित–सामान्यरूपे

प्रमाणे एकवचनने आश्रयी अने बहुवचनने आश्रयी पण दंडक कह्यो, जेम ज्ञानावरणीय कर्मनो एक वचन अने बहु वचन वडे विचार कर्यो, तेम दर्शनावरणीय, मोहनीय अने अंतराय कर्मनो पण विचार करवो. वेदनीय, आयुष, नाम अने गोत्र कर्मनो जीवपदमां विकल्प समजवो. कारण के सिद्धोने तेओनुं वेदन नथी, अने बाकीना वधा जीवो वेदे छे. ते सिवाय बाकीना वधा नैरयिकादि अने मनुष्यो पण अवश्य वेदे छे, कारण के संसारना छेल्ला समय सुधी आ प्रकृतिओनो उदय होय छे. आ अधिकारमां पण एक वचन अने बहुवचन आश्रयी वधा मळी सोळ दंडको थाय छे. चोथुं द्वार समाप्त.

५. हवे कया कर्मनो केटला प्रकारनो विपाक छे–ए पांचमुं द्वार कहे छे—'णाणावरणिज्जस्स णं भंते' ! इत्यादि. हे भगवन् ! जे जीवे रागद्वेषना परिणामना वशथी बद्ध–बांधेला एटले कर्मरूपे परिणत थयेला, स्पृष्ट–आत्मप्रदेशनी साथे संबन्धने प्राप्त थयेला,

णामियस्स सयं वा उदिण्णस्स परेण वा उदीरियस्स तदुभएण वा उदीरिज्जमाणस्स गतिं पप्प ठितिं पप्प भवं पप्प पोग्गलपरिणामं पप्प कतिविधे अणुभावे पण्णत्ते? गोयमा! णाणावरणिज्जस्स णं कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स जाव पोग्गलपरिणामं पप्प दसविधे अणुभावे पन्नत्ते, तंजहा—सोतावरणे, सोयविण्णाणावरणे, नेत्तावरणे, नेत्तविण्णाणावरणे, घाणावरणे, घाणविण्णाणावरणे, रसावरणे, रसविण्णाणावरणे, फासावरणे, फासविण्णाणा-

करेला, जीवे परिणमावेला, स्वयं उदयने प्राप्त थयेला, परना निमित्ते उदयने प्राप्त थयेला, स्व अने पर निमित्ते उदयने प्राप्त थयेला ज्ञानावरणीय कर्मनो गतिने पामी, स्थितिने पामी, भवने पामी, पुदगल परिणामने पामी केटला प्रकारनो विपाक कह्यो छे? हे गौतम! जीवे बांधेला ज्ञानावरण कर्मनो यावत् पुद्गलपरिणामने पामी दश प्रकारनो अनुभाव–विपाक कह्यो छे. ते आ प्रमाणे–१ श्रोत्रेन्द्रियावरण, २ श्रोत्रेन्द्रियविज्ञानावरण, ३ नेत्रेन्द्रियावरण, ४ नेत्रेन्द्रियविज्ञानावरण, ५ घ्राणेन्द्रियावरण, ६ घ्राणेन्द्रियविज्ञानावरण, ७ रसावरण, ८ रसनेन्द्रिय-

'बद्धफासपुट्ठस्स' बद्धस्पर्शस्पृष्टस्य–फरीथी गाढपणे बांधेलां अने अति स्पर्श वडे स्पर्शायेलां, तात्पर्य ए छे के–आवेष्टन परिवेष्टनरूपे अति उपचयपूर्वक गाढ बांधेलां, 'संचितस्य'–अबाधा काळने छोडी पछीना काळे वेदनना योग्यपणे निषेक–रचनाने प्राप्त थयेलां, 'चितस्य'–उत्तरोत्तर स्थितिमां प्रदेशनी हानि अने रसनी वृद्धिवडे अवस्थित, 'उपचितस्य'–समान जातिनी बीजी प्रकृतिना दलिकना संक्रम वडे उपचयने प्राप्त थयेला, 'आपाकप्राप्तस्य' कंइक विपाकावस्थाने अभिमुख थयेला, 'विपाकप्राप्तस्य'–विशिष्ट विपाकावस्थाने प्राप्त थयेला, 'फलप्राप्तस्य'–फळ आपवाने सन्मुख थयेला, अने सामग्रीथी उदयने प्राप्त थयेला, कर्मना आपाकप्राप्त्वादि धर्मो आम्रफळनी पेठे जाणवा. जेम आम्रफळ प्रथम अल्प पक्वावस्थाने अभिमुख होय छे, त्यार पछी विशिष्ट पक्वावस्थाने प्राप्त थाय छे, त्यार बाद तृप्ति, प्रमोद वगेरे. फळ आपवाने योग्य थाय छे अने ते पछी सामग्रीना वशथी उपभोगने प्राप्त थाय छे. ए प्रमाणे कर्म संबन्धे पण

वरणे, जं वेदेति पोग्गलं वा पोग्गले वा पोग्गलपरिणामं वा वीससा वा पोग्गलाणं परिणामं, तेसिं वा उदएणं जाणियव्वं ण जाणति, जाणिउकामेवि ण याणति, जाणित्तावि न याणति, उच्छन्नणाणी यावि भवति णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं, एस णं गोयमा ! णाणावरणिज्जे कम्मे, एस णं गोयमा ! णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स जाव पोग्गलपरिणामं पप्प दसविधे अणुभावे पन्नत्ते ।

विज्ञानावरण, ९ स्पर्शावरण अने १० स्पर्शेन्द्रियविज्ञानावरण. जे पुद्‌गलने, पुद्‌गलोने, पुद्‌गलपरिणामने अने विस्रसा-स्वभाव वडे पुद्‌गलोना परिणामने वेदे छे, तेओना उदय वडे जाणवा योग्य जाणतो नथी, जाणवानी इच्छावाळो छतां पण जाणतो नथी. जाणीने पछी पण जाणतो नथी. ज्ञानावरणीय कर्मना उदयथी आच्छादितज्ञानवाळो पण थाय छे. हे गौतम ! ए ज्ञानावरणीय कर्म छे, हे गौतम ! जीवे बांधेला ज्ञानावरण कर्मनो यावत् पुद्‌गलपरिणामने पामी दस प्रकारनो अनुभाव कह्यो छे.

जाणवुं. ते कर्म जीवे केवी रीते बांधेलुं छे ? ए माटे सूत्रकार कहे छे—'जीवेण कयस्स' कर्मबन्धनथी बन्धायेला जीवे करेलुं. जीव उपयोग स्वभाववाळो छे अने तेथी ते रागादिपरिणतिवाळो होय छे, उपयोग सिवाय रागादिपरिणतिवाळो होतो नथी. ते रागादिपरिणामवाळो थइ कर्म करे छे अने ते रागादिपरिणाम कर्मबन्धनथी बन्धायेलाने होय छे, कर्मना वियोगमां होता नथी, अन्यथा मुक्त जीवोने पण अवीतरागपणानो प्रसंग प्राप्त थाय. माटे कर्म कर्मबन्धनथी बन्धायेला जीवे करेलुं जाणवुं. ए संबन्धे कह्युं छे के-

"जीवस्तु कर्मबन्धनबद्धो वीरस्य भगवतः कर्ता। सन्तत्याऽनाद्यं च तदिष्टं कर्मात्मनः कर्तुः" ॥

कर्मबन्धन वडे बन्धायेलो जीव कर्मनो कर्ता छे अने ते कर्म कर्ता एवा आत्माने सन्तति-प्रवाहथी अनादि छे एम भगवान महावीरने इष्ट छे. तथा "जीवेन निर्वर्तितस्य" जीवे निर्वर्तित-करेलुं, अहीं बन्धसमये जीव प्रथम सामान्य

कर्मवर्गणानी अंदरना पुद्गलोने अनाभोग वीर्य वडे ग्रहण करतो तेज बन्धन समये जेम आहारने रसादि सप्त धातुपणे व्यवस्थित करे तेम ज्ञानावरणादि पणे व्यवस्थित करे छे. जे ज्ञानावरणादिरूपे व्यवस्थापन करवुं ते 'निर्वर्तन' कहेवाय छे. 'जीवेन परिणामितस्य' जीवे परिणमावेला-प्रद्वेष अने निह्नवादिरूप कर्मबन्धना विशेष हेतुओ वडे ते ते उत्तरोत्तर परिणामने प्राप्त करेलां, 'सयं वा उदिण्णस्स' स्वयं विपाकने प्राप्त थयेला होवाथी बीजानी अपेक्षा सिवाय उदयमां आवेला, 'परेण वा उदीरियस्स' अन्य निमित्तथी उदयमां आवेला, 'तदुभयेन वा उदीर्यमाणस्य' स्वतः अने अन्य निमित्तथी उभय रूपे उदयमां आवेला कर्मनो विपाक गतिने आश्रयी होय छे. कारण के कोइ कर्म कोइ गतिने पामी तीव्रविपाकवाळुं होय छे. जेमके नरकगतिने पामी असातावेदनीय तीव्रविपाकवाळुं होय छे. असातावेदनीयनो उदय नारकोने तीव्र होय छे तेवो तिर्यंचादिने होतो नथी. तथा स्थितिने पामी, अहीं 'सर्वोत्कृष्ट' नो अध्याहार समजवो. एटले सर्वोत्कृष्ट स्थितिने पामी अशुभ कर्म तीव्रविपाकवाळुं होय छे. जेम के मिथ्यात्व. तथा 'भवं प्राप्य'—भवने पामीने कोइ कर्म कोइ भवने आश्रयी पोतानो विपाक बतावबाने समर्थ थाय छे. जेमके निद्रा मनुष्यभव के तिर्यंच भवने पामीने विपाक बतावे छे. माटे 'भवने पामीने' एम कह्युं छे. आटला कथनवडे स्वतः उदयना कारणो बताव्या. कारण के कर्म ते ते गति, स्थिति अने भवने पामी स्वयं उदयमां आवे छे. हवे कर्मनो परने आश्रयी उदय बतावे छे—'पुद्गलं'-काष्ठ, ढेफुं अने खड्ग वगेरे पामीने कर्मनो उदय थाय छे. ते आ प्रमाणे—बीजाए फेंकेल काष्ठ, ढेफुं अने तलवार वगेरे पुद्गलने पामी असातावेदनीय अने क्रोधादिनो उदय थाय छे. तथा 'पुद्गलपरिणामं प्राप्य' पुद्गलपरिणामने पामी, एटले कोइ कर्म कोइ पुद्गलने आश्रयी विपाकने प्राप्त थाय छे. जेमके खाधेला आहारना अजीर्ण परिणामने आश्रयी असातावेदनीय अने सुरापानने आश्रयी ज्ञानावरणीय कर्म विपाकने प्राप्त थाय छे. ते माटे 'पुद्गलपरिणामने आश्रयी' एम कह्युं छे. एवा ज्ञानावरणीय कर्मनो केटला प्रकारनो विपाक कह्यो छे'? ए प्रश्न छे. अहीं उत्तर कहे छे—दस प्रकारनो विपाक कह्यो छे. तेज दस प्रकारनो विपाक बतावे छे—'सोयावरणे'-श्रोत्रावरण-इत्यादि. अहीं श्रोत्र शब्द वडे श्रोत्रेन्द्रियना विषयभूत क्षयोपशम समजवो अने श्रोत्रविज्ञान वडे श्रोत्रेन्द्रियनो उपयोग लेवो. जे निर्वृत्ति अने उपकरण रूप द्रव्येन्द्रिय छे ते

अंगोपांगनामकर्मजन्य छे अने तेथी ते ज्ञानावरणनो विषय नथी. माटे तेने श्रोत्रशब्द वडे न ग्रहण करवी. ए प्रमाणे नेत्रावरण-इत्यादि संबन्धे विचार करवो. तेमां एकेन्द्रियोने रसन, घ्राण, चक्षु अने श्रोत्रना विषयरूप लब्धि अने उपयोगनुं प्रायः आवरण होय छे. 'प्रायः' कहेवानुं कारण बकुलादिनो निषेध करवा माटे छे. कारण के बकुलादि वनस्पतिने यथासंभव पांचे इन्द्रियोना लब्धि अने उपयोग फळथी अस्पष्टरूपे जणाय छे. आगम-शास्त्रमां पण कहेलुं छे के—

पंचिंदियोवि बउलो नरोव्व पंचिंदिओवगाओ । तहवि न भण्णइ पंचिंदिओत्ति दव्विंदियाभावा ॥ तथा

जह सुहुमं भाविंदियनाणं दव्विंदियावरोहेवि । दव्वसुयाभावम्मिवि भावसुयं पत्थिवाईणं ॥ (विशेषा० गा०)

बकुल पंचेन्द्रिय पण छे. कारण के मनुष्यनी पेठे तेने पांचे इन्द्रियोनो उपयोग होय छे, तो पण द्रव्येन्द्रियना अभावथी ते 'पंचेन्द्रिय' कहेवातो नथी. जेम सूक्ष्म भावेन्द्रिय ज्ञान द्रव्येन्द्रियना अभावमां होय छे तेम द्रव्यश्रुतना अभावमां पण भावश्रुत पृथिव्यादिने होय छे. ते माटे 'प्रायः' एम कह्युं छे. बेइन्द्रियने घ्राण, चक्षु अने श्रोत्रेन्द्रियना लब्धि अने उपयोगनुं, तेइन्द्रियोने चक्षु अने श्रोत्रना लब्धि अने उपयोगनुं, चउरिन्द्रियोने श्रोत्रेन्द्रिय संबन्धी लब्धि अने उपयोगनुं आवरण होय छे, अने सर्वने पण स्पर्शनेन्द्रियनी लब्धि अने उपयोगनुं आवरण होय छे अने ते कुष्ठादि व्याधि वडे पीडितशरीरवाळाने जाणवुं. पंचेन्द्रिय छतां पण जेओ जन्मांध छे अथवा पाछळथी आंधळा अने बहेरा थयेला छे एवाओने चक्षु वगेरे इन्द्रियोना लब्धि अने उपयोगनुं आवरण समजवुं.

(प्र०)—शाथी ए प्रमाणे इन्द्रियोना लब्धि अने उपयोगनुं आवरण होय छे? (उ०)—स्वयं उदयने प्राप्त थयेला अथवा परनिमित्ते उदयने प्राप्त थयेला ज्ञानावरणीय कर्मना उदयथी थाय छे. ते बाबत दर्शावे छे—'जं वेएइ' जे बीजाए फेंकेल काष्ठ, ढेफुं अने खड्ग वगेरे रूप पुद्गल वेदे छे, एवा अभिघात करवामां समर्थ ते पुद्गल वडे, 'पुग्गले वा' यावत् बीजाए फेंकेला काष्ठादिरूप जे घणा पुद्गलोने वेदे छे, अभिघात करवामां समर्थ एवा ते पुद्गलो वडे, 'पुद्गलपरिणामं वा' खाधेला आहारना परिणामरूप अतिदुःख

६. दरिसणावरणिज्जस्स णं भंते! कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स जाव पोग्गलपरिणामं पप्प कतिविधे अणुभावे पन्नत्ते? गोयमा! दरिसणावरणिज्जस कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स जाव पोग्गलपरिणामं पप्प णवविधे अणुभावे पन्नत्ते, तंज-

६. हे भगवन्! जीवे बांधेला दर्शनावरण कर्मनो यावत् पुद्गलपरिणामने पामी केटला प्रकारनो विपाक कह्यो छे? हे गौतम! जीवे बांधेला दर्शनावरण कर्मनो यावत् पुद्गलपरिणामने पामी नव प्रकारनो विपाक कह्यो छे. ते आ प्रमाणे—१ निद्रा, २ निद्रा-

उत्पन्न करनार पाणी रसादि पुद्गलपरिणामने वेदे छे, ते वडे ज्ञानपरिणतिनो घात थवाथी, तथा "वीससा वा पोग्गलाणं परिणामं" जे विस्रसा-स्वभाव वडे पुद्गलोनो शीत उष्ण आतपादिरूप परिणाम छे तेने ज्यारे वेदे छे त्यारे इन्द्रियोने उपघात उत्पन्न करवा द्वारा ते पुद्गलपरिणाम वडे ज्ञान परिणतिनो उपघात थवाथी 'ज्ञातव्यं' जाणवा योग्य विद्यमान वस्तुने ते इन्द्रियनो विषय छतां पण जाणतो नथी, कारण के ज्ञानपरिणतिनो उपघात थयेलो छे. आ सापेक्ष उदय कह्यो. अने निरपेक्ष उदय संबंधे आ सूत्र छे—'तेसिं वा उदएणं' विपाकने प्राप्त थयेल ते ज्ञानावरणीय कर्मपुद्गलोना उदय वडे जाणवा योग्य वस्तु जाणतो नथी, 'जाणिउकामेवि न याणइ'—जाणवानी इच्छावाळो छतां पण जाणतो नथी, एटले ज्ञानपरिणाम वडे परिणत थवानी इच्छा छतां ज्ञानपरिणतिनो उपघात थवाथी जाणतो नथी. 'जाणित्तावि न याणइ' जाणीने पण जाणतो नथी एटले पूर्वे जाणीने पण पछीथी जाणतो नथी, कारण के तेओने ते ज्ञानावरणीय कर्मपुद्गलोनो उदय छे. 'उच्छन्ननाणी यावि भवइ' ज्ञानावरणीय कर्मपुद्गलोना उदय वडे जीव उच्छन्न-आच्छादित ज्ञानवाळो पण थाय छे. अर्थात् आवरणनी शक्ति प्रमाणे प्रच्छादित ज्ञानवाळो पण थाय छे. 'एस णं गोयमा! णाणावरणिज्जे कम्मे'—'हे गौतम! ए ज्ञानावरणीय कर्म छे.' इत्यादि उपसंहारवाक्य स्पष्ट छे.

६. 'दंसणावरणिज्जस्स णं भंते!' इत्यादि. हे भगवन्! दर्शनावरणीय कर्मनो विपाक केटला प्रकारनो छे'—इत्यादि प्रश्नसूत्र पूर्ववत् समजवुं. उत्तर कहे छे—'हे गौतम! नव प्रकारनो कह्यो छे. ते नव प्रकार बतावे छे—'निद्रा' इत्यादि. निद्रा शब्दनो अर्थ

हा—णिद्दा, णिद्दाणिद्दा पयला, पयलापयला, थीणद्धी, चक्खुदंसणावरणे, अचक्खुदंसणावरणे, ओहिदंसणावरणे, केवलदंसणावरणे, जं वेदेति पोग्गलं वा पोग्गले वा पोग्गलपरिणामं वा वीससा वा पोग्गलाणं परिणामं तेसिं वा उदएणं पासियव्वं वा ण पासति, पासिउकामेवि ण पासति, पासित्ता वि ण पासति, उच्छन्नदंसणी यावि भवति दरिसणावरणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं, एस णं गोयमा ! दरिसणावरणिज्जे कम्मे, एस णं गोयमा !

निद्रा, ३ प्रचला, ४ प्रचलाप्रचला, ५ स्त्यानर्द्धि, ६ चक्षुदर्शनावरण, ७ अचक्षुदर्शनावरण, ८ अवधिदर्शनावरण अने ९ केवळदर्शनावरण. जे पुद्गल, पुद्गलो, पुद्गलपरिणाम के स्वभाव वडे थयेला पुद्गलोना परिणामने वेदे छे, तेओना उदय वडे जोवा योग्य वस्तुने जोतो नथी, जोवानी इच्छावाळो छतां पण जोतो नथी. जोया पछी पण जोतो नथी. दर्शनावरण कर्मना उदयथी आच्छादितदर्शनवाळो पण थाय छे. हे गौतम ! ए दर्शनावरणीय कर्म छे. हे गौतम ! ए जीवे बांधेला दर्शनावरण कर्मनो यावत्

आगळ कहेवामां आवशे. भावार्थ आ छे—'सुखप्रतिबोधा'–जे अवस्थामां प्राणी सुखपूर्वक जागे ते निद्रा, 'दुःखप्रतिबोधा'–जे अवस्थामां दुःखपूर्वक जागे ते निद्रानिद्रा. उभा रहेलाने प्रचला अने चालनारने प्रचलाप्रचला होय छे. स्त्यानगृद्धि अति संक्लिष्ट कर्मना वेदनमां होय छे, ते महानिद्रा छे अने प्रायः दिवसे चिंतवेला कार्यने करवावाळी छे. 'चक्षुदर्शनावरणं' चक्षुना सामान्य उपयोगनुं आवरण. एम बाकीना विपाकने विषे जाणवुं. 'जं वेपइ' जे कोमळ शय्या वगेरे पुद्गलने वेदे छे, अथवा जे 'पुग्गले वा' कोमळ शय्या वगेरे घणा पुद्गलोने वेदे छे, 'पुद्गलपरिणामं' भेंसनुं दहीं वगेरे खाधेला आहारना परिणामरूप पुद्गलपरिणामने वेदे छे, 'वीससा वा पोग्गलाण परिणामं' अथवा विस्रसा–स्वभावजन्य पुद्गलोना परिणामरूप वर्षाऋतुमां वादळायुक्त आकाश अथवा धारावंध वृष्टिपातने वेदे छे, ते वडे निद्रादिना उदयनी अपेक्षाए दर्शनपरिणामनो उपघात थवाथी, पटला वडे परने आश्रयी उदय कह्यो. हवे स्वतः उदय

दरिसणावरणिज्जस्स कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स जाव पोग्गलपरिणामं पप्प णवविधे अणुभावे पण्णत्ते ।

७. सायावेयणिज्जस्स णं भंते ! कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स जाव पोग्गलपरिणामं पप्प कतिविधे अणुभावे पन्नत्ते ? गोयमा ! सातावेदणिज्जस्स णं कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स जाव अट्ठविधे अणुभावे पन्नत्ते, तंजहा—मणुण्णा सद्दा १, मणुण्णा रूवा २, मणुण्णा गंधा ३, मणुण्णा रसा ४, मणुण्णा फासा ५, मणोसुहता ६, वयसुहया ७,

---

पुद्गलपरिणामने पामी नव प्रकारनो विपाक कह्यो छे.

७. हे भगवन् जीवे बांधेला सातावेदनीय कर्मनो यावत् पुद्गलपरिणामने पामी केटला प्रकारनो विपाक कह्यो छे ? हे गौतम ! जीवे बांधेला यावत् सातावेदनीय कर्मनो आठ प्रकारनो विपाक कह्यो छे. ते आ प्रमाणे–१ मनोज्ञ शब्दो, २ मनोज्ञ रूपो, ३ मनोज्ञ गन्धो, ४ मनोज्ञ रसो, ५ मनोज्ञ स्पर्शो, ६ मन संबन्धी सुख, ७ वचन संबन्धी सुख अने ८ शारीरिक सुख. जे पुद्गल, पुद्गलो,

---

कहे छे—ते दर्शनावरणीय कर्मपुद्गलोना उदय वडे परिणतिनो विघात थवाथी जोवा लायक वस्तु जोतो नथी, तथा दर्शनपरिणाम वडे परिणमनने इच्छावाळो छतां एटले जोवानी इच्छावाळो छतां जन्मांधपणा वगेरेथी दर्शनपरिणामना उपघात थवाथी जोतो नथी, पूर्वे जोइने पण दर्शनावरणीय कर्मपुद्गलोना उदयथी पछीथी जोतो नथी, किं बहुना ? दर्शनावरणीय कर्मना उदयथी जीव आच्छादित दर्शनवाळो पण थाय छे एटले आवरणनी जेटली शक्ति होय ते प्रमाणे प्रच्छादित दर्शनवाळो पण थाय छे. हे गौतम ! ए दर्शनावरणीयकर्म छे–इत्यादि उपसंहार वाक्य छे.

७. 'सायावेयणिज्जस्स णं भंते ! कम्मस्स'–इत्यादि. 'हे भगवन् ! सातावेदनीय कमनो विपाक केटला प्रकारनो छे' इत्यादि प्रश्नसूत्र पूर्वनी पेठे समजवुं. हवे उत्तर कहे छे—'आठ प्रकारनो विपाक कह्यो छे' ते आठ प्रकार दर्शावे छे—'मणुन्ना सद्दा' इत्यादि.

कायसुहता ८, जं वेदेति पोग्गलं वा पोग्गले वा पोग्गलपरिणामं वा वीससा वा पोग्गलाणं परिणामं तेसिं वा उदएणं सातावेदणिज्जं कम्मं वेदेति, एस णं गोयमा ! सायावेयणिज्जे कम्मे, एस णं गोयमा ! सातावेयणिज्जस्स जाव अट्ठविधे अणुभावे पन्नत्ते । असातावेयणिज्जस्स णं भंते ! कम्मस्स जीवेणं तहेव पुच्छा उत्तरं च, नवरं

पुद्‌गलपरिणाम अने स्वभाववडे थयेला पुद्‌गलोना परिणामने वेदे छे अने तेओना उदय वडे सातावेदनीय कर्म वेदे छे. हे गौतम ! ए सातावेदनीय कर्म छे. हे गौतम ! ए सातावेदनीय कर्मनो आठ प्रकारनो विपाक कह्यो छे. हे भगवन् ! जीवे बांधेल असाता वेदनीय कर्मनो विपाक केटला प्रकारनो छे ? इत्यादि प्रश्न अने उत्तर तेमज जाणवो. परन्तु अमनोज्ञ शब्दो यावत् शरीर संबन्धी

मनोज्ञ शब्दो–अहीं वांसळी, वीणा वगेरे संबंधी आगन्तुक–बहारथी आवता मनोज्ञ शब्दो जाणवा. बीजा आचार्यो 'पोताना मनोज्ञ शब्दो' एम कहे छे, ते अयुक्त छे. कारण के पोताना शब्दोनुं वाक्सुख–वचनसुख वडे ग्रहण थाय छे. इक्षुरस वगेरे मनोज्ञ रसो, कपूर वगेरे पदार्थोना मनोज्ञ गन्धो, पोताना, पोतानी स्त्रीना अने पोताना चित्रादिना मनोज्ञ रूपो, 'मनोज्ञाः स्पर्शाः' शय्यादिना मनोज्ञ स्पर्शो, 'मणोसुहया' मनःसुखता–मनसि सुखं यस्य, तस्य भावः–सुखकारक मन, 'वाक्सुखता' वचननुं सुख–एटले सर्वेना कान अने मनने हर्ष उत्पन्न करनार वचन ए तात्पर्य छे. 'कायसुखता' शरीरनुं सुख अर्थात् सुखी शरीर. ए आठ पदार्थो सातावेदनीयना उदय वडे प्राणीओने प्राप्त थाय छे. माटे आठ प्रकारनो सातावेदनीयनो विपाक कह्यो छे. हवे परने आश्रयी सातावेदनीयनो उदय बतावे छे—'जं वेएइ पुग्गलं' इत्यादि जे पुष्पमाळा अने चन्दनादि पुद्गलने वेदे छे–अनुभवे छे, जे माळा अने चन्दनादि घणा पुद्गलोने वेदे छे, जे देश, काळ, वय अने अवस्थाने योग्य आहारना परिणामरूप पुद्गलपरिणामने वेदे छे, 'वीससा वा पुग्गलाण परिणामं' जे काळे इष्ट, शीत अने उष्णादि वेदनाना प्रतीकाररूप विस्रसा वडे पुद्गलोना परिणामने वेदे छे, तेथी मननुं समाधान–स्वस्थता थवाथी सातावेदनीय कर्म अनुभवे छे. एटले सातावेदनीय कर्मनुं फळ सुख भोगवे छे. एम परने आश्रयी उदय कह्यो. हवे

अमणुण्णा सद्दा जाव कायदुहया, एस णं गोयमा ! असायावेयणिज्जे कम्मे, एस णं गोयमा ! असातावेदणिज्जस्स जाव अट्ठविधे अणुभावे पन्नत्ते ॥

दुःख. हे गौतम ! ए असातावेदनीय कर्म छे, हे गौतम ! ए असातावेदनीय कर्मनो आठ प्रकारनो विपाक कह्यो छे.

स्वतः उदय कहे छे—ते सातावेदनीय कर्मपुद्गलना उदय वडे मनोज्ञ शब्दादि सिवाय पण कदाचित् सुख वेदे छे. जेम तीर्थङ्करादिना जन्मादि समये नैरयिको सुख अनुभवे छे. 'हे गौतम ! ए सातावेदनीय छे' इत्यादि उपसंहार वाक्य जाणवुं. 'असायावेयणिज्जस्स णं भंते ! 'हे भगवन् ! असातावेदनीय कर्मनो विपाक केटला प्रकारनो छे.' इत्यादि प्रश्नसूत्र सुगम छे. अने उत्तर पूर्ववत् जाणवो. ते प्रमाणे सूत्रकार कहे छे—'तहेव पुच्छा उत्तरं च' तेमज प्रश्न अने उत्तर जाणवो. 'नवरं' परंतु इत्यादि वडे पूर्वना सूत्रथी आ सूत्रनी विशेषता बतावे छे—'अमणुण्णा सद्दा' इत्यादि-अमनोज्ञ शब्दो-गधेडा, उंट अने अश्वादिना आगन्तुक मनने अप्रिय शब्दो, 'अमनोज्ञा रसाः' पोताने जेनो प्रतिभास-अनुभव न थाय एवा दुःख आपनारा मनने अणगमता रसो, 'अमनोज्ञा गन्धाः' वळद, महिष वगेरेना मृत कलेवरादिना गन्धो, 'अमनोज्ञानि रूपाणि' पोताना अथवा पोतानी स्त्री वगेरेना अमनोज्ञ रूपो, 'अमनोज्ञाः स्पर्शाः' कर्कशादि अमनोज्ञ स्पर्शो, 'मनोदुःखता' मन संबंधी दुःख, 'वयदुहया' वचननुं दुःख, अप्रिय वाणी, 'कायदुहया' शरीर संबन्धी दुःख, दुःखी शरीर, 'जं वेएइ' जे विष, शस्त्र अने कंटकादि पुद्गल वेदे छे-अनुभवे छे, जे विष, शस्त्र अने कंटकादि घणा पुद्गलोने वेदे छे, जे अपथ्य आहाररूप पुद्गलपरिणामने वेदे छे, विस्रसा-स्वभाव वडे अकाळे अनिष्ट शीतोष्णादि रूप जे पुद्गलपरिणामने वेदे छे ते वडे मनने असमाधान-अस्वस्थता थवाथी असातावेदनीय कर्म अनुभवे छे. एटले असातावेदनीय कर्मनुं फळ असाता अनुभवे छे ए तात्पर्य छे. ए वडे परने आश्रयी उदय कह्यो, हवे स्वतः-परनिरपेक्ष उदय कहे छे—'तेसिं वा उदयेणं' ते असातावेदनीय कर्मपुद्गलोना उदय वडे असाता वेदे छे. 'हे गौतम ! ए असातावेदनीय छे' इत्यादि उपसंहार वाक्य छे.

८. मोहणिज्जस्स णं भंते ! कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स जाव कतिविधे अणुभावे पन्नत्ते? गोयमा! मोहणिज्जस्स कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स जाव पंचविधे अणुभावे पन्नत्ते, तंजहा—सम्मत्तवेयणिज्जे, मिच्छत्तवेयणिज्जे, सम्मामिच्छत्तवेयणिज्जे, कसायवेयणिज्जे, नोकसायवेयणिज्जे। जं वेदेति पोग्गलं वा पोग्गले वा पोग्गलपरिणामं वा

---

८. हे भगवन् ! जीवे बांधेल मोहनीय कर्मनो यावत् केटला प्रकारनो विपाक कह्यो छे ? हे गौतम ! जीवे बांधेला मोहनीय कर्मनो यावत् पांच प्रकारनो विपाक कह्यो छे. ते आ प्रमाणे—१ सम्यक्त्ववेदनीय, २ मिथ्यात्ववेदनीय, ३ सम्यग्मिथ्यात्ववेदनीय, ४ कपायवेदनीय अने ५ नोकपायवेदनीय. जे पुद्गल, पुद्गलो, पुद्गलपरिणाम अने विस्रसा पुद्गलपरिणामने वेदे छे,

---

८. 'मोहणिज्जस्स णं भंते !' इत्यादि. हे भगवन्! मोहनीय कर्मनो विपाक केटला प्रकारनो छे' इत्यादि प्रश्नसूत्र पूर्वेनी पेठे समजवुं. उत्तर—पांच प्रकारनो विपाक कह्यो छे, ते पांच प्रकार बतावे छे—'सम्यक्त्ववेदनीयं' इत्यादि. सम्यक्त्वरूपे वेदवा लायक ते सम्यक्त्व वेदनीय. ए प्रमाणे वाकीना पदोने विषे शब्दार्थनो विचार करवो. भावार्थ आ प्रमाणे छे—जे वेदतां प्रशमादि परिणाम उत्पन्न करे ते सम्यक्त्ववेदनीय. जे (देवादि तत्त्वमां) अदेवादि बुद्धि थवानुं कारण ते मिथ्यात्ववेदनीय, मिश्र परिणामनुं कारण ते सम्यग्मिथ्यात्ववेदनीय, क्रोधादि परिणामनुं कारण ते कपायवेदनीय, हास्यादि परिणामनुं कारण ते नोकपायवेदनीय. 'जं वेएइ पुग्गलं' इत्यादि. जे पुद्गलना विषयरूप प्रतिमादिने वेदे-अनुभवे, जे घणा प्रतिमादिरूप पुद्गलो वेदे छे, जे 'पुद्गलपरिणामं' कर्मपुद्गलविशेषने ग्रहण करवामां समर्थ देशादिने अनुकूल आहारना परिणामने वेदे छे, कारण के आहारना परिणामविशेषथी कदाचित् कर्मपुद्गलनी विशेषता थाय छे. जेमके ब्राह्मी औषधी वगेरेना आहारना परिणामथी ज्ञानावरणीय पुद्गलोनो विशिष्ट क्षयोपशम थाय छे. ए संबन्धे कह्युं छे के—

वा वीससा वा पोग्गलाण परिणामं तेसिं वा उदएणं मोहणिज्जं कम्मं वेएइ वा, एस णं गोयमा! मोहणिज्जस्स कम्मस्स जाव पंचविधे अणुभावे पन्नत्ते ॥

९. आउसस्स णं भंते! कम्मस्स जीवेणं तहेव पुच्छा। गोयमा! आउयस्स णं कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स जाव

तेओना उदय वडे मोहनीय कर्मने वेदे छे. हे गौतम! ए मोहनीय कर्मनो यावत् पांच प्रकारनो विपाक कह्यो छे.

९. हे भगवन्! जीवे बांधेल आयुष कर्मनो केटला प्रकारनो विपाक छे? इत्यादि तेमज पृच्छा करवी. हे गौतम! जीवे बांधेला

"उदयक्खयखओवसमावि य जं च कम्मुणो भणिया। दव्वं खेत्तं कालं भावं भवं च संपप्प" ॥

कर्मना उदय, क्षय, क्षयोपशम अने उपशम पण द्रव्य, क्षेत्र, काळ, भाव अने भवने आश्रयी कहेला छे. स्वभाव वडे पुद्गलोनो अभ्रविकारादि परिणाम, के जेने जोवाथी विवेक-विरक्तता उत्पन्न थाय छे. जेम के—

"आयुः शरज्जलधरप्रतिमं नराणां संपत्तयः कुसुमितद्रुमसारतुल्याः। स्वप्नोपभोगसदृशा विषयोपभोगाः संकल्पमात्ररमणीयमिदं हि सर्व्वम्" ॥

मनुष्योनुं आयुष शरद ऋतुना वादळां जेवुं छे. संपत्तिओ पुष्पित-पुष्पवाळा वृक्षना सार जेवी छे, विषयोपभोग स्वप्ना उपभोग जेवो छे, अने आ बधुं संकल्पमात्र वडे रमणीय छे" इत्यादि. अथवा प्रशमादि परिणामनुं कारणभूत जे विस्रसा पुद्गल परिणामने अनुभवे छे, तेना सामर्थ्यथी सम्यक्त्ववेदनीयादि मोहनीय कर्म वेदे छे एटले सम्यक्त्ववेदनीयादि कर्मनुं फळ प्रशमादि वेदे छे ए भावार्थ छे. एटला वडे परने आश्रयी उदय कह्यो. हवे स्वतः उदय कहे छे—'तेसिं वा उदयेणं' ते सम्यक्त्व वेदनीयादि कर्मपुद्गलोना उदय वडे प्रशमादि वेदे छे. 'एसं णं' ए मोहनीय कर्म छे'—इत्यादि उपसंहार वाक्य छे.

९. 'आउस्स णं भंते!' इत्यादि. हे भगवन् आयुष कर्मनो विपाक केटला प्रकारनो छे? इत्यादि सूत्र पूर्वनी पेठे जाणवुं उत्तर—

चउविहे अणुभावे पन्नत्ते, तंजहा—नेरइयाउते, तिरियाउते, मणुयाउए, देवाउए, जं वेदेति पोग्गलं वा पोग्गले वा पोग्गलपरिणामं वा वीससा वा पोग्गलाणं परिणामं तेसिं वा उदएणं आउयं कम्मं वेदेति वा, एस णं गोयमा! आउए कम्मे, एस णं गोयमा! आउकम्मस्स जाव चउव्विहे अणुभावे पण्णत्ते।

१०. सुहणामस्स णं भंते! कम्मस्स जीवेणं पुच्छा। गोयमा! सुहणामस्स णं कम्मस्स जीवेणं चउद्दसविधे

आयुप कर्मनो यावत् चार प्रकारनो विपाक छे. ते आ प्रमाणे–नेरयिकायुप, तिर्यंचायुप, मनुष्यायुप अने देवायुप. जे पुद्गल, पुद्गलो, पुद्गलपरिणाम के विस्रसा पुद्गलोना परिणामने वेदे छे अने तेओना उदय वडे आयुप कर्म वेदे छे. हे गौतम! ए आयुप कर्म छे अने हे गौतम! ए आयुप कर्मनो चार प्रकारनो विपाक कह्यो छे.

· १०. हे भगवन्! जीवे बांधेला शुभनामकर्मनो केटला प्रकारनो विपाक छे? हे गौतम! शुभनाम कर्मनो चौद प्रकारनो विपाक

चार प्रकारनो विपाक कह्यो छे. ते चार प्रकार दर्शवे छे—'नेरइयाउए' —नेरयिकायुप इत्यादि सुगम छे 'जं वेएइ पुग्गलं वा' इत्यादि. आयुप कर्मनुं अपवर्तन करवाने समर्थ जे शस्त्रादि पुद्गल वेदे छे, जे घणा शस्त्रादिरूप पुद्गलो वेदे छे, जे विषमिश्रित अन्न वगेरेना परिणामरूप पुद्गलपरिणामने वेदे छे, जे 'विस्रसा–स्वभाव वडे आयुपना अपवर्तन करवा समर्थ शीतादि पुद्गलपरिणामने वेदे छे ते वडे वर्तमान भवना आयुपनुं अपवर्तन थवाथी नारकादि आयुप कर्मने वेदे छे. आटला वडे परने आश्रयी उदय कह्यो. हवे स्वतः उदयनुं प्रतिपादक आ सूत्र छे—'तेसिं वा उदएणं'-ते नारकादि आयुप पुद्गलोना उदय वडे नारकादिनुं आयुप वेदे छे. 'ए आयुप कर्म छे'—इत्यादि उपसंहारवाक्य छे.

१०. नामकर्म बे प्रकारनुं छे—शुभनाम कर्म अने अशुभ नामकर्म. तेमां शुभनाम कर्मने आश्रयी सूत्र कहे छे—'सुभनामकम्मस

इट्ठा गती ६, इट्ठा
अणुभावे पन्नत्ते, तंजहा—इट्ठा सद्दा १, इट्ठा रूवा २, इट्ठा गंधा ३, इट्ठा रसा ४, इट्ठा फासा ५, इट्ठा गती ६, इट्ठा
ठिती ७, इट्ठे लावण्णे, ८ इट्ठा जसोकित्ती ९, इट्ठे उट्ठाणकम्मबलवीरियपुरिसक्कारपरक्कमे १०, इट्ठस्सरया ११,
कंतस्सरया १२, पियस्सरया १३, मणुण्णस्सरया १४, जं वेदेति पोग्गलं वा पोग्गले वा पोग्गलपरिणामं वा वी-
ससा वा पोग्गलाणं परिणामं तेसिं वा उदएणं सुभणामं कम्मं वेएइ, एस णं गोयमा! सुहनामकम्मे, एस णं

कह्यो छे. ते आ प्रमाणे—१ इष्ट शब्द, २ इष्ट रूप, ३ इष्ट गन्ध, ४ इष्ट रस, ५ इष्ट स्पर्श, ६ इष्ट गति, ७ इष्ट स्थिति, ८ इष्ट ला-
वण्य, ९ इष्ट यशःकीर्ति, १० इष्ट बल, वीर्य अने पुरुषकार—पराक्रम, ११ इष्ट स्वर, १२ कान्त स्वर, १३ प्रिय स्वर अने
१४ मनोज्ञ स्वर. जे पुद्गल, पुद्गलो, पुद्गलपरिणाम अने विस्रसा पुद्गलपरिणामने वेदे छे, अने तेओना उदय वडे शुभनाम कर्म
वेदे छे. हे गौतम! ए शुभनाम कर्म छे. हे गौतम! ए शुभनाम कर्मनो चौद प्रकारनो विपाक कह्यो छे. हे भगवन्! दुःख—अशुभ

णं भंते'! इत्यादि. हे भगवन्! शुभनाम कर्मनो विपाक केटला प्रकारनो छे इत्यादि प्रश्नसूत्र पूर्वनी पेठे समजवुं. उत्तर—चौद प्रका-
रनो विपाक कह्यो छे. तेज चौद प्रकार बतावे छे—'इट्ठा सद्दा' इष्ट शब्दो इत्यादि. आ शब्दादि पोतानाज लेवा, कारण के अहीं
नामकर्मना विपाकनो विचार छे. कोइ आचार्यो 'वादित्रादिथी उत्पन्न थयेला शब्दो' कहे छे, ते अयुक्त छे. कारण के ते अन्य कर्मना
उदयथी थाय छे. 'इष्टा गतिः'—इष्ट गति-मदोन्मत्त हस्ती वगेरेना जेवी गति. 'शिबिकादि उपर चढवाथी' इष्ट गति एवो कोइ अर्थ
करे छे. 'इष्टा स्थितिः'—सहज स्थिति 'सिंहासनादिने विषे स्थिति' एम अन्य आचार्य कहे छे. 'इष्ट लावण्य'—कान्तिविशेष, केसर
वगेरेना विलेपनथी उत्पन्न थयेलुं लावण्य एम अन्य आचार्य कहे छे. 'इष्टा यशःकीर्तिः'—यश वडे युक्त कीर्ति यशःकीर्ति कहेवाय छे.
यश अने कीर्तिनी आ विशेषता छे—दान अने पुण्यथी थाय ते कीर्ति अने पराक्रमथी थाय ते यश कहेवाय छे. 'इट्ठे उट्ठाणकम्मबल-

गोयमा ! सुभणामस्स कम्मस्स जाव चउद्दसविधे अणुभावे पन्नत्ते । दुहनामस्स णं भंते ! पुच्छा । गोयमा ! एवं चेव, णवरं अणिट्ठा सद्दा, जाव हीणस्सरया, दीणस्सरया, अकंतस्सरया, जं वेदेति सेसं तं चेव जाव चउद्दसविधे अणुभावे पण्णत्ते ।

नाम कर्मनो केटला प्रकारनो विपाक छे ? हे गौतम ! एम ज समजवो. परन्तु अनिष्ट शब्द, यावत् हीनस्वर, दीनस्वर अने अकान्तस्वर जाणवो. जे वेदे छे–इत्यादि बधुं तेमज जाणवुं. यावत्–चौद प्रकारनो अशुभनाम कर्मनो विपाक कह्यो छे.

वीरियपुरिसकारपरक्कमे' इति, 'इष्ट उत्थान, कर्म, बल, वीर्य, पुरुषकार अने पराक्रम.–उत्थान–शरीरनी चेष्टाविशेष, कर्म–आरेचन–जुदा करवुं, भ्रमण करवुं वगेरे कर्म, बल– शरीरनुं सामर्थ्य, वीर्य–जीवथी उत्पन्न थयेल, तेज पुरुषकार–अभिमानविशेष, ते पोताने विशे कर्युं होय तो पराक्रम कहेवाय छे. 'इष्टस्वरता' इष्ट स्वर, प्रिय स्वर, तेमां 'इष्ट शब्दो' ए सामान्यपणे कथन छे तो पण 'आ इष्ट स्वर' ए विशेष कथन तेथी अन्य घणानी अपेक्षाए समजवुं. 'कान्तस्वरता' कान्त–मनोहर, सामान्य रीते इच्छवा योग्य स्वर, प्रियस्वरता' वारंवार अभिलाषा करवा योग्य स्वर, 'मनोज्ञस्वरता' –भाव–प्रेम नहि होवा छतां पण पोताना विशे प्रीति उत्पन्न करनार मनोज्ञ कहेवाय छे, एवा प्रकारनो स्वर ते मनोज्ञ स्वर. 'जं वेएइ' जे 'वीणा, वर्णक–विलेपन, गन्ध, तांबूल, पट्ट, शिबिका, सिंहासन, कुंकुम, दान, राजानो योग अने गुटिकारूप पुद्गलने वेदे छे, कारण के वीणादिना संबन्धथी इष्ट शब्दादि थाय छे, एनो मार्गने विशे प्रसन्न

१. वीणाना संबन्धथी इष्ट शब्द, वर्णक–पीठीना संबन्धथी इष्ट रूप, गन्ध–सुगन्धी द्रव्यना संबन्धथी इष्ट गन्ध, तांबूलना संबन्धथी इष्ट स्पर्श, पट्ट–रेशमी वस्त्रना संबन्धथी इष्ट स्पर्श, शिबिका पालखीना संबन्धथी इष्ट गति, सिंहासनना संबन्धथी इष्ट स्थिति, कुंकुम–केसरना योगथी इष्ट लावण्य, दानना संबन्धथी यशःकीर्ति, राजाना योगथी इष्ट उत्थानादि अने गुटिकाना योगथी इष्ट स्वर वगेरे थाय छे.

११. उच्चागोतस्स णं भंते ! कम्मस्स जीवेणं पुच्छा । गोयमा ! उच्चागोतस्स कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स जाव
अट्ठविहे अणुभावे पन्नत्ते, तंजहा-जातिविसिट्ठया १, कुलविसिट्ठया २, बलविसिट्ठया ३, रूवविसिट्ठया ४,
तवविसिट्ठया ५, सुयविसिट्ठया ६, लाभविसिट्ठया ७, इस्सरियविसिट्ठया ८, जं वेदेति पोग्गलं वा पोग्गले

११. हे भगवन् ! जीवे बांधेला उच्च गोत्रना कर्मनो केटला प्रकारनो विपाक छे ? हे गौतम ! जीवे बांधेला उच्चगोत्र कर्मनो
आठ प्रकारनो विपाक कह्यो छे. ते आ प्रमाणे—१ जातिविशिष्टता, २ कुलविशिष्टता, ३ बलविशिष्टता, ४ रूपविशिष्टता, ५ तप-
विशिष्टता, ६ श्रुतविशिष्टता, ७ लाभविशिष्टता अने ८ ऐश्वर्यविशिष्टता. जे पुद्गल, पुद्गलो, पुद्गलपरिणाम के विस्रसा पुद्गलोना

चित्तने अनुसरनारी सूक्ष्मबुद्धिथी विचार करवो. 'पुग्गले वा' जे वेणु-वीणा वगेरे घणा पुद्गलो वेदे छे, जे ब्राह्मी औषधी वगेरे
आहारना परिणामरूप पुद्गलपरिणामने वेदे छे, जे विस्रसा-स्वभाव वडे शुभ मेघादि पुद्गलोना परिणामने वेदे छे, तथा काजळना जेवी
कान्तिवाळा चढेला मेघने जोइने मस्त युवतिओ रेल्लुक रूप ? इष्ट स्वर गाय छे. तेना प्रभावथी शुभनाम कर्म वेदे छे. अने शुभ-
नाम कर्मनुं फळ इष्ट स्वरादि अनुभवे छे. एटला वडे परने आश्रयी विपाक कह्यो. हवे स्वत उदय कहे छे—'तेसिं वा उदयेणं' ते
शुभनाम कर्म पुद्गलोना उदयथी इष्ट शब्दादि वेदे छे. 'ए शुभनाम कर्म छे' इत्यादि उपसंहार वाक्य जाणवुं. 'दुहनामस्स णं भंते' !
इत्यादि. हे भगवन् ! अशुभनाम कर्मनो विपाक केटला प्रकारनो छे-इत्यादि प्रश्नसूत्र पूर्वनी जेम जाणवुं. उत्तरसूत्र पूर्वे कहेला शुभनाम
कर्मना अर्थथी विपरीतपणे जाणवुं.

११. गोत्र कर्म बे प्रकारे छे-उच्च गोत्र अने नीच गोत्र. तेमां उच्चगोत्र संबंधे सूत्र कहे छे-'उच्चागोयस्स णं भंते !' हे भग-
वन् ! उच्च गोत्रनो केटला प्रकारनो विपाक छे ? इत्यादि प्रश्नसूत्र पूर्वनी पेठे जाणवुं. उत्तर-आठ प्रकारनो विपाक कह्यो छे. ते आठ

वा पोग्गलपरिणामं वा वीससा वा पोग्गलाणं परिणामं तेसिं वा उदएणं जाव अट्ठविधे अणुभावे पन्नते । णीयागोयस्स णं भंते ! पुच्छा । गोयमा ! एवं चेव, णवरं जातिविहीणया, जाव इस्सरियविहीणया, जं वेदेति पुग्गलं वा पोग्गले वा पोग्गलपरिणामं वा वीससा वा पोग्गलाणं परिणामं तेसिं वा उदएणं जाव अट्ठविधे अणुभावे पण्णत्ते ।

परिणामने वेदे छे, अने तेना उदय वडे (उच्चगोत्र कर्म वेदे छे) ए प्रमाणे यावत् आठ प्रकारनो उच्च गोत्रनो विपाक कह्यो छे. हे भगवन् ! नीचगोत्र कर्मनो केटला प्रकारनो विपाक छे ? हे गौतम ! एमज जाणवो. परन्तु जाति हीनपणुं, यावत् ऐश्वर्यहीनपणुं. जे पुद्गल, पुद्गलो, पुद्गलपरिणाम के विस्रसापुद्गलोना परिणामने वेदे छे अने तेओना उदय वडे (नीचगोत्र कर्म वेदे छे). यावत् आठ प्रकारनो विपाक कह्यो छे.

प्रकार बतावे छे-१ 'जातिविशिष्टता' इत्यादि. जाति वगेरे सुप्रसिद्ध छे. शब्दार्थ आ प्रमाणे छे-जाति-जन्म वडे विशिष्टपणुं. उच्च जातिमां जन्म थवो. 'जं वेएइ पुग्गले वा' इत्यादि-जे बाह्य द्रव्यादिरूप पुद्गलने अनुभवे छे. जेम के द्रव्यना संबन्धथी के राजा वगेरे विशिष्ट पुरुषना स्वीकार करवाथी नीच जातिना कुळमां उत्पन्न थयो होय तो पण जात्यादि संपन्न होय तेम लोकमान्य थाय छे. 'बलविशिष्टता' पण मल्लोनी पेठे लाठी वगेरेना भमाववाथी जाणवी. 'रूपविशिष्टता' उत्तम तेवा प्रकारना वस्त्रालंकारादि रूपना संबंधथी जाणवी. 'तपोविशिष्टता' पर्वतना शिखरादि उपर चढवा वडे आतापना लेनारने होय छे. 'श्रुतविशिष्टता' मनोहर पृथिवी प्रदेशना संबंधथी स्वाध्यायादि करनारने होय छे. 'लाभविशिष्टता' उत्तम रत्नादिना योगथी होय छे. 'ऐश्वर्यविशिष्टता' धन अने कनक वगेरेना संबंधथी होय छे. 'पुग्गले वा' जे एवा बहु प्रकारना पुद्गलो वेदे छे, 'पुद्गलपरिणामं' जे दिव्य फळादि आहारना परिणा-

मरूप पुद्गलपरिणामने वेदे छे. अने जे अकस्मात् कहेल मेघना आगमना सूचक वगेरे लक्षणवाळा विस्रसा-स्वभाव वडे पुद्गलोना परिणामने अनुभवे छे तेना प्रभावथी उच्च गोत्रने वेदे छे. एटले उच्चगोत्र कर्मनुं फळ जातिविशिष्टतादि वेदे छे. ए कथन वडे परने आश्रयी उदय कह्यो. हवे स्वत उदय कहे छे-'तेसिं वा उदएणं' ते उच्च गोत्र कर्मना उदय वडे जातिविशिष्टतादि थाय छे. 'एस णं गोयमा'! हे गौतम! ए आठ प्रकारनो विपाक कह्यो छे-इत्यादि उपसंहार वाक्य छे 'नीयागोयस्स णं भंते'! हे भगवन्! नीच गोत्रनो केटला प्रकारनो विपाक छे इत्यादि प्रश्नसूत्र पूर्ववत् जाणवुं. उत्तर—आठ प्रकारनो विपाक छे. ते आठ प्रकार बतावे छे-'जातिविहीनता' इत्यादि-सुप्रसिद्ध छे. 'जं वेएइ पुग्गलं' इति. जे नीच कर्म करवा रूप अथवा नीच पुरुषना संबंधरूप पुद्गलने वेदे छे. जेम के, उत्तम जातियुक्त अने उत्तम कुळमां उत्पन्न थयो होय तो पण जो नीच कर्म करवाथी आजीविका रूप कर्म करे, अथवा चंडाल स्त्रीनी साथे मैथुन सेवे त्यारे चांडालादिनी पेठे मनुष्यने निंदवा लायक थाय छे. 'बलहीनता' सुखशय्यादिना संबंधथी होय छे. 'रूपविहीनता' खराब वस्त्रादिना संबंधथी थाय छे, 'तपोविहीनता' पासत्थादिना संसर्गथी थाय छे. 'श्रुतविहीनता' विकथामां तत्पर साध्वाभास-साधुना जेवा लागता कुसाधुओना संसर्गथी थाय छे. 'लाभविहीनता' देश काळने अयोग्य खराब करीयाणाना संबंधथी थाय छे, 'ऐश्वर्यविहीनता' खराब ग्रहो अने खराब स्त्रीना संबंधथी थाय छे. 'पुग्गले' इति. एवा प्रकारना जे घणा पुद्गलोने वेदे छे. रींगणाना वगेरेना आहारना परिणामरूप पुद्गलपरिणामने वेदे छे. रींगणा खाधां होय तो ते खरज उत्पन्न करवा वडे रूपहीनता करे छे. कहेल मेघना आगमनथी विरूद्ध लक्षणरूप विस्रसा पुद्गलपरिणामने वेदे छे. तेना प्रभावथी नीचगोत्र कर्म वेदे छे. एटले जात्यादि विहीनतारूप नीचगोत्र कर्मनुं फळ जात्यादि विहीनपणुं वेदे छे. एटला वडे परने आश्रयी उदय कह्यो. हवे स्वतः उदय कहे छे—'तेसिं वा उदयेणं'—ते नीचगोत्र कर्मपुद्गलोना उदय वडे जात्यादि हीनपणाने अनुभवे छे एस णं गोयमा'! हे गौतम! ए नीचगोत्र कर्म छे' इत्यादि उपसंहार वाक्य छे.

१२. अंतराइयस्स णं भंते ! कम्मस्स जीवेणं पुच्छा । गोयमा ! अंतराइयस्स कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स जाव पंचविधे अणुभावे पन्नत्ते,तंजहा-दाणंतराए लाभंतराए भोगंतराए उवभोगंतराए वीरियंतराए,जं वेदेति पोग्गलं वा जाव वीससा वा पोग्गलाणं परिणामं वा तेसिं वा उदएणं अंतराइयं कम्मं वेदेति,एस णं गोयमा ! अंतराइए

१२. हे भगवन् ! जीवे बांधेला अन्तराय कर्मनो केटला प्रकारनो विपाक कह्यो छे ? हे गौतम ! जीवे बांधेला अन्तराय कर्मनो यावत् पांच प्रकारनो विपाक कह्यो छे. ते आ प्रमाणे—१ दानान्तराय, २ लाभान्तराय, ३ भोगान्तराय, ४ उपभोगान्तराय अने ५ वीर्यान्तराय. जे पुद्गलने यावत् विस्रसा पुद्गलोना परिणामने वेदे छे अने तेओना उदय वडे अन्तराय कर्म वेदे छे. हे गौतम !

१२. अंतराइयस्स णं भंते'!-हे भगवन् ! अन्तराय कर्मनो विपाक केटला प्रकारनो छे ? इत्यादि प्रश्नसूत्र पूर्वनी पेठे जाणवुं. उत्तर-पांच प्रकारनो विपाक कह्यो छे. ते पांच प्रकार दर्शावे छे—'दाणंतराए' इत्यादि. दानान्तराय-दानने अन्तराय-विघ्नरूप कर्म, ए प्रमाणे बधे स्थळे जाणवुं. तेमां दानान्तराय दानान्तराय कर्मनुं फळ छे अने लाभान्तरायादि लाभान्तरायादि कर्मना फळो छे. 'जं वेएइ पुग्गलं वा' इत्यादि. जे तेवा प्रकारना विशिष्ट रत्नादि रूप पुद्गल वेदे छे, जेम के उत्तम रत्नादिना संबंधथी तेना विषयमांज दानान्तरायनो उदय जणाय छे, ते रत्नादिना संधि-पडने छेदनारा उपकरणना संबंधथी लाभान्तरायकर्मनो उदय थाय छे. उत्तम आहारना संबंधथी अथवा अमूल्य वस्तुना संबंधथी लोभवडे भोगान्तरायनो उदय थाय छे. ए प्रमाणे उपभोगान्तराय कर्मना उदयनो पण विचार करवो. तथा लाकडी वगेरे वागवाथी वीर्यान्तराय कर्मनो उदय थाय छे. 'पुग्गले वा' जे तेवा प्रकारना घणा पुद्गलोने वेदे छे, जे तेवा प्रकारना आहार अने औषधी वगेरेना परिणामरूप पुद्गलपरिणामने वेदे छे. जेम के शास्त्रमां तेवा आहार अने औषधना परिणामथी वीर्यान्तराय कर्मनो उदय थाय छे. मन्त्र वडे संस्कारित वासक्षेपादि सुगन्धी पुद्गलना परिणामथी सुबंधु नामना प्रधाननी

कम्मे, एस णं गोयमा ! जाव पंचविधे अणुभावे पन्नत्ते ।

पण्णवणाए भगवईए तेवीसतितमस्स पयस्स पढमो उद्देसो समत्तो २३-१ ।

बीओ उद्देसो ।

१३. कति णं भंते ! कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ, तंजहा—णाणावरणिज्जं, जाव अंतराइयं । णाणावरणिज्जे णं भंते ! कम्मे कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचविधे पन्नत्ते, तं-

---

ए अन्तराय कर्म छे. हे गौतम ! ए अन्तराय कर्मनो पांच प्रकारनो विपाक कह्यो छे. प्रथम उद्देशक समाप्त.

द्वितीय उद्देशक ।

१३. हे भगवन् ! केटली कर्मप्रकृतिओ कही छे ? हे गौतम ! आठ कर्मप्रकृतिओ कही छे. ते आ प्रमाणे—१ ज्ञानावरणीय, यावत् ८ अन्तराय. हे भगवन् ! ज्ञानावरणीय कर्म केटला प्रकारे कह्युं छे ? हे गौतम ! पांच प्रकारनुं कह्युं छे. ते आ प्रमाणे—१

पेठे भोगान्तरायादि थाय छे. तथा विस्रसा वडे विचित्र शीत वगेरे रूप पुद्गलपरिणामने वेदे छे, जेम के वस्त्रादि आपवानी इच्छावाळा छतां पण ठंडी वगेरे पडती जोइने दानान्तरायादिना उदयथी तेने आपता नथी एम देखाय छे, ते तेना प्रभावथी जाणवुं. ए परने आश्रयी उदय कह्यो. हवे स्वने आश्रयी कहे छे—ते अन्तरायकर्म पुद्गलोना उदय वडे अन्तरायकर्मनुं फळ वेदे छे. 'ए अन्तराय कर्म छे' इत्यादि उपसंहार वाक्य छे. त्रेवीशमा कर्मप्रकृतिपदनी टीकाना अनुवादमां प्रथम उद्देशक समाप्त.

१३. प्रथम उद्देशकनी व्याख्या करी, हवे बीजा उद्देशकनी व्याख्या करवानी छे. तेनो संबन्ध आ प्रमाणे छे-पूर्वेना उद्देशकमां

जहा—आभिणिवोहियनाणावरणिज्जे, जाव केवलनाणावरणिज्जे ।

१४. दंसणावरणिज्जे णं भंते ! कम्मे कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! दुविहे पन्नत्ते, तंजहा—निद्दापंचए य दंसणचउक्कए य । निद्दापंचए णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पन्नत्ते तंजहा—निद्दा जाव थी-

---

आभिनिवोधिक ज्ञानावरणीय, यावत् ५ केवलज्ञानावरणीय.

१४. हे भगवन् ! दर्शनावरणीय कर्म केटला प्रकारनुं कह्युं छे ? हे गौतम ! बे प्रकारनुं कह्युं छे. ते आ प्रमाणे–१ निद्रापंचक अने दर्शनचतुष्क. हे भगवन् ! निद्रापंचक केटला प्रकारे कह्युं छे ? हे गौतम ! पांच प्रकारे कह्युं छे. ते आ प्रमाणे–१ निद्रा, यावत्

ज्ञानावरणीयादि कर्मनो विपाक कह्यो, अने अहीं तेज ज्ञानावरणीयादि कर्मनी उत्तर प्रकृतिओनो विभाग कहेवानो छे. तेमां विशेष जाणवा माटे फरीथी पण मूळ प्रकृति संबन्धे प्रश्न अने उत्तररूपे सूत्र कहे छे—'कइ णं भंते!' इत्यादि. हे भगवन्! केटली कर्मप्रकृतिओ छे—इत्यादि पूर्वनी पेठे जाणवुं. हवे "यथोद्देशं निर्देशः" उद्देशना क्रमने अनुसरी निर्देश थाय छे. वस्तुनुं नाममात्रथी कथन करवुं ते उद्देश. अने विस्तारथी कहेवुं ते निर्देश. ए न्यायने अनुसरी ज्ञानावरणीय कर्मनी उत्तर प्रकृति संबन्धे सूत्र कहे छे—'णाणावरणिज्जे णं भंते!' हे भगवन्! ज्ञानावरणीय कर्म केटला प्रकारे छे? इत्यादि. अहीं आभिनिवोधिकादि शब्दनो अर्थ उपयोगपदमां कहेशे. तेनो विग्रह आ प्रमाणे छे-आभिनिवोधिकस्यावरणीयं-आभिनिवोधिक ज्ञाननुं आवरण करनार कर्म ते आभिनिवोधिक ज्ञानावरणीय. एम श्रुतज्ञानावरणीय इत्यादिने विशे जाणवुं.

१४. हवे दर्शनावरणीयनी उत्तरप्रकृतिओ कहे छे-'दरिसणावरणिज्जे णं भंते!' इत्यादि. हे भगवन्! दर्शनावरणीय कर्मनी केटली उत्तरप्रकृतिओ छे-इत्यादि. 'निद्रा' अहीं द्रा धातु कुत्सा-निंदाना अर्थमां छे. 'नियतं द्राति यस्यां' जे अवस्थामां चैतन्य कुत्सितपणाने

णद्धी । दंसणचउक्कए णं पुच्छा । गोयमा ! चउव्विधे पन्नत्ते, तंजहा—चक्खुदंसणावरणिज्जे, जाव केवलदंसणावरणिज्जे ।

---

५ स्त्यानर्द्धि. हे भगवन् ! दर्शनचतुष्क केटला प्रकारनुं छे ? हे गौतम ! चार प्रकारनुं छे ? ते आ प्रमाणे–१ चक्षुदर्शनावरणीय, यावत् ४ केवलदर्शनावरणीय.

पटले अस्पष्टपणाने पामे ते निद्रा. अथवा द्रै धातु सुवाना अर्थमां छे, जे अवस्थामां चपटी वगाडवा मात्र वडे प्राणी जागृत थाय एवी उंघ ते निद्रा. ते विपाक वडे वेदवा लायक कर्मप्रकृति पण कारणने विशे कार्यना उपचारथी निद्रा कहेवाय छे. निद्राथी अधिक निद्रा ते निद्रानिद्रा. अहीं मध्यमपदलोपी समास छे. ते अवस्थामां चैतन्य अत्यन्त अस्पष्ट होवाथी घणा ढंढोळवा वगेरेथी जागृत थाय छे. माटे सुखपूर्वक जागृतिनुं कारण निद्राथी आनुं अधिकपणुं छे. ते विपाक वडे वेदवा लायक कर्मप्रकृति पण उपचारथी 'निद्रानिद्रा' कहेवाय छे. "प्रचलयति यस्यां" बेठेलो तथा उभो रहेल डोले, झोकां खाय जे निद्रावस्थामां ते प्रचला. ते विपाक वडे वेदवा लायक कर्मप्रकृति पण प्रचला कहेवाय छे. 'पयलापयला' प्रचलाथी अधिक जे प्रचला ते प्रचलाप्रचला. पूर्वनी पेठे मध्यमपदलोपी समास जाणवो. कारण के ते चालनारने पण उदयमां आवे छे. तेथी एक स्थाने बेठेला के उभा रहेला उंघनारने प्राप्त थती प्रचलानी अपेक्षाए प्रचलाप्रचलानुं अधिकपणुं छे. 'थीणद्धी' स्त्यान–पिंडरूप थयेली–एकठी थयेली ऋद्धि–आत्मशक्ति जे निद्रावस्थामां होय ते स्त्यानर्द्धि. ते निद्राना सद्भावमां प्रथम संघयणवाळाने वासुदेवना अर्धबल जेटली शक्ति प्राप्त थाय छे. प्रवचनमां एवी एक कथा छे के–कोइ स्थळे स्त्यानर्द्धि निद्रावाळो कोइ एक क्षुल्लक (साधु) हतो, तेने दिवसे एक हाथीए रोकी राख्यो. तेथी तेने हाथी उपर खूब गुस्से आव्यो. रात्रे स्त्यानर्द्धि निद्राना उदयमां ऊठीने तेणे हाथीना दांत उखेडी नांख्या अने तेने उपाश्रयना बारणामां मूकी ते सूइ गयो. इत्यादि.

चक्षु वडे दर्शन-सामान्य अववोध ते चक्षुदर्शन, तेने आच्छादन करनार ते चक्षुदर्शनावरणीय. अचक्षु-चक्षु सिवाय वाकीनी इन्द्रियो अने मन, ते वडे दर्शन-सामान्य अववोध ते अचक्षुदर्शन[1], तेने आवरणीय-आच्छादन करनार कर्म ते अचक्षुदर्शनावरणीय. अवधिरूप दर्शन ते अवधिदर्शन, इन्द्रियादिनी अपेक्षा सिवाय रूपी द्रव्यनो सामान्य अववोध, तेनुं आवरण करनार कर्म ते अवधिदर्शनावरण. केवल रूप दर्शन-रूपी अने अरूपी सर्व द्रव्यो अने तेना सर्व पर्यायोनो इन्द्रियादिनी अपेक्षा सिवाय सामान्य अववोध ते केवळ दर्शन. तेनुं आच्छादन करनार कर्म ते केवळदर्शनावरणीय. अहीं निद्रादि पांच प्रकृतिओ चक्षुदर्शनावरणादिना क्षयोपशम वडे प्राप्त थयेली दर्शन लब्धिनो उपघात करे छे अने दर्शनावरणचतुष्क मूळथी दर्शनलब्धिनो घात करे छे. आ संवन्धे गंधहस्ती (सिद्धसेनगणि) कहे छे-"निद्रादयः समधिगताया दर्शनलब्धेरुपघाते वर्तन्ते, दर्शनावरणचतुष्टयं तदुद्गमोच्छेदित्वात् समूलघातं हन्ति दर्शनलब्धिमिति।" निद्रादि प्राप्त थयेली दर्शनलब्धिना उपघातमां वर्ते छे अने दर्शनावरणचतुष्क तेनी उत्पत्तिनुं उच्छेदक होवाथी मूळथीज दर्शन लब्धिनो घात करे छे. अने तेना घात करवा छतां तथास्वभावथी अने क्षयोपशमथी अवशिष्ट रहेली दर्शनलब्धिनो निद्रादि घात करे छे.

---

१. चक्षु के इतर इन्द्रियोद्वारा तथा मन सिवाय सामान्य उपयोग प्रवर्ते छे तेने पण अचक्षुदर्शन कहेवामां आवे छे, तेथी भवान्तरमां जता जीवने इन्द्रिय अने मन सिवाय अचक्षुदर्शन शास्त्रमां मानेलुं छे.

२. केवलदर्शनावरण केवलदर्शनलब्धिनो सर्वथा घात करे छे, परन्तु तथास्वभावथी थोडो अंश अनावृत-खुल्लो रहे छे, तेने अवधिदर्शनावरणादि घात करे छे अने तेना क्षयोपशमथी प्राप्त दर्शनलब्धिनो निद्रादि घात करे छे. माटे दर्शनावरणचतुष्क समूल घात करे छे. अने निद्रादि प्राप्त दर्शनलब्धिनो घात करे छे.

१५. वेयणिज्जे णं भंते ! कम्मे कतिविधे पन्नत्ते? गोयमा ! दुविहे पन्नत्ते, तंजहा—सायावेयणिज्जे य असायावेयणिज्जे य। सातावेयणिज्जे णं भंते ! कम्मे पुच्छा। गोयमा! अट्ठविधे पन्नत्ते, तंजहा—मणुण्णा सद्दा, जाव कायसुहया। असायावेदणिज्जे णं भंते ! कम्मे कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! अट्ठविधे पन्नत्ते, तंजहा-अमणुण्णा सद्दा, जाव कायदुहया।

१६. मोहणिज्जे णं भंते ! कम्मे कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! दुविहे पन्नत्ते, तंजहा-दंसणमोहणिज्जे य

---

१५. हे भगवन् ! वेदनीय कर्म केटला प्रकारनुं छे. हे गौतम ! बे प्रकारे कह्युं छे. ते आ प्रमाणे—१ सातावेदनीय अने असातावेदनीय. हे भगवन् ! सातावेदनीय कर्म केटला प्रकारनुं छे ? हे गौतम ! आठ प्रकारनुं छे. ते आ प्रमाणे-१ मनोज्ञ शब्दो, यावत् कायसुख-शारीरिक सुख. हे भगवन् ! असातावेदनीय कर्म केटला प्रकारनुं छे ? हे गौतम ! आठ प्रकारनुं छे. ते आ प्रमाणे-१ अमनोज्ञ शब्दो, यावत् कायदुःख-शारीरिक दुःख.

१६. हे भगवन् ! मोहनीय कर्म केटला प्रकारनुं छे ? हे गौतम ! बे प्रकारनुं छे. ते आ प्रमाणे-दर्शनमोहनीय अने चारित्र-

---

१५. वेदनीयकर्म बे प्रकारनुं छे—सातावेदनीय अने असातावेदनीय. जे साता-सुखरूपे वेदाय ते सातावेदनीय अने तेथी विपरीत ते असातावेदनीय. तात्पर्य ए छे के जेना उदयथी शारीरिक अने मानसिक सुख वेदे ते सातावेदनीय. अने जेना उदयथी शरीर अने मन संबन्धी दुःख अनुभवे ते असातावेदनीय. ते प्रत्येकना मनोज्ञ अने अमनोज्ञ शब्दादि विषयना भेदथी आठ प्रकार छे.

१६. मोहनीय कर्म बे प्रकारे छे—दर्शनमोहनीय अने चारित्रमोहनीय. दर्शन-सम्यक्त्व, तत्त्वरुचिमां मोह-भ्रान्ति करे ते दर्शन-

चरित्तमोहणिज्जे य। दंसणमोहणिज्जे णं भंते! कम्मे कतिविधे पन्नत्ते? गोयमा! तिविहे पन्नत्ते, तंजहा-सम्मत्तवेदणिज्जे, मिच्छत्तवेयणिज्जे, सम्मामिच्छत्तवेयणिज्जे। चरित्तमोहणिज्जे णं भंते! कम्मे कतिविधे पन्नत्ते? गोयमा! दुविधे पन्नत्ते, तंजहा-कसायवेयणिज्जे, नोकसायवेदणिज्जे। कसायवेदणिज्जे णं भंते! कम्मे कतिविधे पन्नत्ते? गोयमा! सोलसविधे पन्नत्ते, तंजहा-अणंताणुबंधी कोहे, अणंताणुबंधी माणे, अणन्ताणुबंधी

मोहनीय. हे भगवन्! दर्शनमोहनीय कर्म केटला प्रकारनुं छे? हे गौतम! त्रण प्रकारनुं छे. ते आ प्रमाणे-१ सम्यक्त्व वेदनीय, २ मिथ्यात्ववेदनीय अने ३ सम्यग्मिथ्यात्व वेदनीय. हे भगवन्! चारित्रमोहनीय कर्म केटला प्रकारनुं छे? हे गौतम! बे प्रकारनुं छे. ते आ प्रमाणे-कषायवेदनीय अने नोकषायवेदनीय. हे भगवन्! कषायवेदनीय कर्म केटला प्रकारनुं छे? हे गौतम! सोळ प्रकारनुं छे. ते आ प्रमाणे—१ अनन्तानुबन्धी क्रोध, २ अनन्तानुबन्धी मान, ३ अनन्तानुबन्धी माया, ४ अनन्तानुबन्धी

मोहनीय. चारित्र—सावद्य योगथी निवृत्ति अने निरवद्य योगमां प्रवृत्ति वडे गम्य शुभ आत्मानो परिणाम, तेमां मोह पेदा करे ते चारित्रमोहनीय. दर्शनमोहनीय कर्म त्रण प्रकारनुं छे. जेमके, सम्यक्त्ववेदनीय, मिथ्यात्ववेदनीय अने मिश्रवेदनीय. तेमां सम्यक्त्वरूपे -जिनेश्वरे उपदेशेला तत्त्वनी श्रद्धारूपे वेदाय ते सम्यक्त्व वेदनीय, जे जिने उपदेशेला तत्त्वनी अरुचि रूप मिथ्यात्वरूपे वेदाय ते मिथ्यात्ववेदनीय, अने जे जिनोपदिष्ट तत्त्वमां रुचि नहि तेम अरुचि पण नहि एवा मिश्रपरिणामरूपे वेदाय ते मिश्रमोहनीय. (प्र०)—सम्यक्त्ववेदनीय कर्मने दर्शनमोहनीय केम कहेवाय? ते तो प्रशमादि परिणामनुं कारण होवाथी दर्शनमां मोह उत्पन्न करतुं नथी. (उ०)—अहीं सम्यक्त्ववेदनीय मिथ्यात्वमोहनीयनी प्रकृति छे, (परन्तु तेना पुद्गलो विशुद्ध होवाथी क्षयोपशम सम्यक्त्वनो प्रतिबंध करता नथी) तेथी देशभङ्गरूप अतिचारनो संभव छे. वळी ते औपशमिक तथा क्षायिक सम्यग्दर्शनमां मोह उत्पन्न करे छे-तेने रोके

माया, अणन्ताणुबंधी लोभे, अपच्चक्खाणे कोहे, एवं माणे, माया, लोभे, पच्चक्खाणावरणे कोहे, एवं माणे, माया, लोभे, संजलणकोहे, एवं माणे माया लोभे। नोकसायवेयणिज्जे णं भंते! कम्मे कतिविधे पन्नत्ते? गोयमा! णवविहे पन्नत्ते, तंजहा–इत्थीवेयवेयणिज्जे, पुरिसवेयवेयणिज्जे, नपुंसगवेयवेयणिज्जे, हासे, रती, अरती, भए, सोगे, दुगुंछा।

लोभ, ५ अप्रत्याख्यान क्रोध, एम ६ मान, ७ माया, ८ लोभ, ९ प्रत्याख्यानावरण क्रोध, १० एम मान, ११ माया, १२ लोभ, १३ संज्वलन क्रोध, १४ एम मान, १५ माया अने १६ लोभ. हे भगवन्! नोकषायवेदनीय कर्म केटला प्रकारनुं छे? हे गौतम! नव प्रकारनुं छे. ते आ प्रमाणे–१ स्त्रीवेदवेदनीय, २ पुरुषवेद वेदनीय, ३ नपुंसकवेद वेदनीय, ४ हास्य, ५ रति, ६ अरति, ७ भय, ८ शोक अने ९ जुगुप्सा.

छे माटे दर्शनमोहनीय कहेवाय छे. चारित्रमोहनीय बे प्रकारे छे—कषायवेदनीय अने नोकषायवेदनीय. तेमां जे क्रोधादि कषायरूपे वेदाय ते कषायवेदनीय अने जे स्त्रीवेदादि नोकषाय रूपे वेदाय ते नोकषायमोहनीय. तेमां कषायमोहनीय सोळ प्रकारे छे. कारण के क्रोध, मान, माया अने लोभना प्रत्येकना अनन्तानुबन्धी, अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यानावरण अने संज्वलनरूप चार चार भेदो थाय छे. तेमां जे अनन्त संसारना अनुबन्ध करवाना स्वभाववाळो कषाय ते अनन्तानुबन्धी कहेवाय छे. कह्युं छे के—

" अनन्तान्यनुबध्नन्ति यतो जन्मानि भूतये। ततोऽनन्तानुबन्ध्याख्या क्रोधाद्येषु नियोजिता "॥

कारण के उत्पत्ति माटे अनन्त जन्मोनो अनुबन्ध करे छे तेथी क्रोधादिने विषे अनंतानुबन्धी नामे संज्ञा जोडेली छे. पनुं संयोजना एवुं बीजुं पण नाम छे. तेनो आ व्युत्पत्तिथी थयेलो अर्थ छे. 'संयुज्यन्ते यैस्ते संयोजनाः' जे वडे प्राणीओ अनन्ता भवोनी साथे

जोडाय ते संयोजना. कह्युं छे के—

" संयोजयन्ति यन्नरमनन्तसंख्यैर्भवैः कषायास्ते । संयोजनताऽनन्तानुबन्धिता वाप्यतस्तेषाम् " ॥

जे कषायो मनुष्यने अनन्त भवोनी साथे जोडे छे तेथी तेने अनन्तानुबन्धी अथवा संयोजना कहेवामां आवे छे. जेओना उदयमां सर्वथा के देशथी प्रत्याख्यान-विरति न होय ते अप्रत्याख्यान कषाय कहेवाय छे. अहीं 'न' शब्द सर्वनिषेधवाची छे. कह्युं छे के—

" स्वल्पमपि नोत्सहेद् येषां प्रत्याख्यानमिहोदयात् । अप्रत्याख्यानसंज्ञाऽतो द्वितीयेषु निवेशिता " ॥

जेओना उदयथी थोडा पण प्रत्याख्याननी-विरतिनी इच्छा न थाय माटे बीजा कषायनी अप्रत्याख्यान संज्ञा कही छे. तथा सर्वविरतिरूप प्रत्याख्याननुं आवरण-आच्छादन जे वडे थाय ते प्रत्याख्यानावरण कहेवाय छे. कह्युं छे के—

"सर्वसावद्यविरतिः प्रत्याख्यानमुदाहृतम् । तदावरणसंज्ञाऽतस्तृतीयेषु निवेशिता ॥"

सर्व सावद्यनी विरतिने प्रत्याख्यान कहेलुं छे, माटे तेनुं आवरण करनार त्रीजा कषायोनी प्रत्याख्यानावरण संज्ञा कहेवामां आवी छे. परिषह अने उपसर्गनी प्राप्तिमां चारित्रवाळाने पण 'सम्-ईषज्ज्वलयन्ति'-कंइक कषाययुक्त करे ते संज्वलन. कह्युं छे के—

" संज्वलयन्ति यतिं यतसंविग्नं सर्वपापविरतमपि । तस्मात् संज्वलना इत्यप्रशमकरा निरुच्यन्ते " ॥

जे संविग्न अने सर्व पापनी विरतिवाळा यतिने पण कषाययुक्त करे छे माटे अप्रशमना करनार संज्वलन कषाय कहेवाय छे. बीजे स्थळे पण कह्युं छे—

" शब्दादीन् विषयान् प्राप्य संज्वलयन्ति यतो मुहुः । ततः संज्वलनाह्वानं चतुर्थानामिहोच्यते " ॥

शब्दादि विषयोने पामी जेथी वारंवार कषाययुक्त थाय, तेथी चोथा कषायनी 'संज्वलन' एवी संज्ञा कहेवाय छे. ए कषायोनुं पाछळना क्रमथी आ स्वरूप छे—

" जलरेणुपुढविपव्वयराईसरिसो चउव्विहो कोहो । तिणिसलया–कट्ठ–ट्ठिय–सेलत्थंभोवमो माणो ॥
मायावलेहिगोमुत्तिमिंढसिंगघणवंसमूलसमा । लोहो हलिद्दखंजणकद्दमकिमिरागसारिच्छो ॥
पक्खचउमाससंवच्छरजावजीवाणुगामिणो कमसो । देवनरतिरियनारयगइसाहणहेयवो भणिया" ॥

जलनी रेखा, रेतीनी, पृथिवीनी रेखा अने पर्वतनी रेखा सरखो चार प्रकारनो क्रोध छे. नेत्रनी लता, काष्ठस्तंभ, अस्थिस्तंभ अने शिलाना स्तंभना जेवो मान छे. वांसनी छाल, गोमूत्रिका, मेंढानुं शिंगडुं अने कठण वांसना मूळ जेवी माया छे. हलदर, खंजन (गाडानी मळी), कीचड अने कीरमजी रंगना जेवो लोभ छे. ते चारे प्रकारना कपायो अनुक्रमे पक्ष, चार मास, वरस अने यावज्जीव सुधी रहेवावाळा छे अने ते देवगति, मनुष्यगति, तिर्यंचगति अने नरकगतिना साधनभूत कह्या छे. 'इत्थीवेए' स्त्रीवेद–स्त्रीनो वेद–अभिलाषा एटले स्त्रीनी पुरुपना प्रति अभिलापा ते स्त्रीवेद. ते विपाक वडे वेदवा लायक कर्म पण स्त्रीवेद. पुरुपनो वेद–स्त्रीना प्रति अभिलाष ते पुरुषवेद. ते विपाक वडे वेदवा लायक कर्म पण पुरुपवेद. नपुंसकनो वेद–अभिलाषा, स्त्री अने पुरुप बन्नेना प्रति अभिलापा, ते नपुंसक वेद. ते विपाक वडे वेदवा लायक कर्म पण नपुंसक वेद कहेवाय छे. तथा जेना उदयथी निमित्त सहित के निमित्त विना हसे अथवा हसावे ते हास्यमोहनीय. जेना उदयथी वाह्य के अभ्यन्तर वस्तुमां प्रमोद थाय ते रतिमोहनीय, जेना उदयथी वाह्य अने अभ्यन्तर वस्तुमां अप्रीति करे ते अरतिमोहनीय. जेना उदयथी प्रिय वस्तुना वियोगादि निमित्ते छाती कूटवा पूर्वक आक्रन्दन करे, शोक करे, भूमि उपर आळोटे अने दीर्घ नीसासा मूके ते शोकमोहनीय. जेना उदयथी निमित्त सहित के निमित्त सिवाय तेवा प्रकारना पोताना संकल्पथी भय पामे ते भयमोहनीय. जेना उदयथी शुभ के अशुभ वस्तुनी जुगुप्सा–सूग करे ते जुगुप्सा उत्पन्न करनार जुगुप्सामोहनीय. ए प्रमाणे वधा पदोनो पण विग्रह करवो. आ हास्यादि कषायना सहचारी होवाथी नोकपाय कहेवाय छे. कया कपायोनी साथे सहचारी छे ? आदिना वार कपायोना सहचारी छे. ते आ प्रमाणे—आदिना वार कषायोनो क्षय थवाथी हास्यादिनी स्थितिनो संभव नथी, केमके त्यार पछी तुरतज तेओना क्षय करवा माटे प्रवृत्ति थाय छे. अथवा ए हास्यादि उत्पन्न थतां

१७. आउए णं भंते ! कम्मे कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! चउव्विधे पन्नत्ते, तंजहा—नेरइयाउए, जाव देवाउए।

१८. णामे णं भंते ! कम्मे कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! बायालीसतिविहे पण्णत्ते, तंजहा—गतिनामे १, जातिनामे २, सरीरनामे ३, सरीरोवंगनामे ४, सरीरबंधणनामे ५, सरीरसंघयणनामे ६, संघायणनामे ७, संठाणनामे ८, वण्णणामे ९, गंधणामे १०, रसणामे ११, फासणामे १२, अगुरुलघुनामे १३, उवघायणामे १४, पराघायणामे १५,

---

१७. हे भगवन् ! आयुष कर्म केटला प्रकारनुं छे ? हे गौतम ! चार प्रकारनुं छे. ते आ प्रमाणे—१ नैरयिकायुष अने यावत् ४ देवायुष.

१८. हे भगवन् ! नामकर्म केटला प्रकारनुं छे ? हे गौतम ! बेंताळीश प्रकारनुं कह्युं छे. ते आ प्रमाणे—१ गतिनाम, २ जातिनाम, ३ शरीरनाम, ४ शरीरांगोपांगनाम, ५ शरीरबन्धननाम, ६ शरीरसंघयण नाम, ७ संघातन नाम, ८ संस्थाननाम, ९ वर्णनाम, १० गन्धनाम, ११ रसनाम, १२ स्पर्शनाम, १३ अगुरुलघुनाम, १४ उपघातनाम, १५ पराघातनाम, १६ आनुपूर्वीनाम, १७

अवश्य कषायादिने उद्दीपन करे छे. तेथी ते कषायना सहचारी छे. पण 'नो' शब्द साहचर्यवाची जाणवो. कषायना सहचारी ते नोकषाय. कह्युं छे के

"कषायसहवर्तित्वात् कषायप्रेरणादपि। हास्यादिनवकस्योक्ता नोकषायकषायता" ॥

कषायना सहचारी होवाथी अने कषायना प्रेरक होवाथी पण हास्यादि नवने नोकषाय कषाय कहेवामां आवे छे."

१७. आयुषकर्मनुं सूत्र पाठ मात्रथी सिद्ध छे.

१८. नामकर्म बेंताळीश प्रकारनुं छे, ते बेंताळीश भेदने दर्शावे छे—'गतिनाम' इत्यादि. गम्यते—तेवा प्रकारना कर्मरूप प्रधान वडे प्राप्त कराय ते गति—नारकपणुं वगेरे पर्यायनो परिणाम. ते गति चार प्रकारनी छे—नरकगति, तिर्यंचगति, मनुष्यगति अने देव-

आणुपुव्विणामे १६, उस्सासणामे १७, आयवणामे १८, उज्जोयणामे १९, विहायगतिणामे २०, तसनामे २१, थावरणामे २२, सुहुमनामे २३, बादरणामे २४, पज्जत्तणामे २५, अपज्जत्तणामे २६, साहारणसरीरणामे २७, पत्तेयसरीरणामे २८, थिरणामे २९, अथिरणामे ३०, सुभणामे ३१, असुभणामे ३२, सुभगणामे ३३, दुभगणामे ३४, सूसरनामे ३५, दूसरनामे ३६, आदेज्जनामे ३७, अणादेज्जनामे ३८, जसोकित्तिणामे ३९, अजसोकित्तिणामे ४०, णिम्माणणामे ४१, लित्थगरणामे ४२। गतिनामे णं भंते ! कम्मे कतिविहे पन्नत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे

उच्छ्वासनाम, १८ आतप नाम, १९ उद्योतनाम, २० विहायोगतिनाम, २१ त्रसनाम, २२ स्थावरनाम, २३ बादरनाम, २४ सूक्ष्मनाम, २५ पर्याप्तनाम, २६ अपर्याप्तनाम, २७ साधारणशरीरनाम, २८ प्रत्येकशरीरनाम, २९ स्थिरनाम, ३० अस्थिरनाम, ३१ शुभनाम, ३२ अशुभनाम, ३३ सुभगनाम, ३४ दुर्भगनाम, ३५ सुस्वरनाम, ३६ दुःस्वरनाम, ३७ आदेयनाम, ३८ अनादेय नाम, ३९ यशःकीर्तिनाम, ४० अयशःकीर्ति नाम, ४१ निर्माणनाम अने ४२ तिर्थंकर नाम. हे भगवन् ! गतिनाम कर्म केटला प्रकारनुं छे ? हे गौतम ! चार प्रकारनुं छे. ते आ प्रमाणे–१ नैरयिकगति, २ तिर्यंचगति, ३ मनुष्यगति अने देवगतिनाम. हे

गति, तेनुं कारणभूत कर्म ते गतिनाम, ते पण चार प्रकारनुं छे—'नरकगतिनाम' इत्यादि. 'जातिनाम' एकेन्द्रियादि जीवोना एकेन्द्रियत्वादि समान परिणामरूप सामान्य के जेनो एकेन्द्रियादि शब्द वडे व्यवहार थाय छे ते जाति, तेनुं कारणभूत कर्म ते जातिनाम. अहीं आ तात्पर्य छे–'द्रव्यरूप इन्द्रिय अंगोपांगनामकर्म अने इन्द्रियपर्याप्ति नामकर्मना सामर्थ्यथी सिद्ध छे, अने भावरूप इन्द्रिय स्पर्शनादि इन्द्रियावरण कर्मना क्षयोपशमथी थाय छे, कारण के "क्षायोपशमिकानीन्द्रियाणि" क्षायोपशमिक-क्षायोपशमथी प्राप्त थयेली

पन्नत्ते, तंजहा-निरयगतिनामे , तिरियगतिनामे, मणुयगतिनामे, देवगतिणामे। जातिणामे णं भंते ! कम्मे पुच्छा। गोयमा ! पंचविहे पन्नत्ते, तंजहा-एगिंदियजातिणामे, जाव पंचिंदियजातिणामे। सरीरनामे णं भंते ! कम्मे कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पन्नत्ते, तंजहा-ओरालियसरीरनामे, जाव कम्मगसरीरणामे। सरीरोवंगनामे णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! तिविधे पन्नत्ते, तंजहा-ओरालियसरीरोवंगणामे, वेउव्वियसरी-

भगवन् ! जातिनाम केटला प्रकारनुं छे ? हे गौतम ! पांच प्रकारनुं छे. ते आ प्रमाणे—१ एकेन्द्रिय जातिनाम, ५ यावत् पंचेन्द्रिय जातिनाम. हे भगवन् ! शरीरनाम कर्म केटला प्रकारनुं छे. हे गौतम ! पांच प्रकारे कह्युं छे. ते आ प्रमाणे-१ औदारिक शरीरनाम, यावत् ५ कार्मणशरीरनाम. हे भगवन् ! शरीरांगोपांग नाम कर्म केटला प्रकारनुं कह्युं छे ? १ औदारिकशरीरांगोपांग, २ वैक्रियशरिरांगोपांग नाम अने ३ आहारकशरीरांगोपांगनाम. हे भगवन् ! शरीरबन्धन नाम कर्म केटला प्रकारनुं छे? हे गौतम !

इन्द्रियो छे-एवुं शास्त्र वचन छे. परन्तु जे एकेन्द्रियादि शब्दनी प्रवृत्तिनुं कारण तेवा प्रकारनुं समान परिणामरूप सामान्य छे ते अन्यथी असाध्य होवाना लीधे जातिनामकर्मनिमित्तक छे. ते जातिनाम पांच प्रकारे छे. १ एकेन्द्रियजातिनाम, यावत् पंचेन्द्रियजातिनाम.

शीर्यते—क्षीण थाय ते शरीर. ते पांच प्रकारे छे. ते आ प्रमाणे—औदारिक, वैक्रिय, आहारक, तैजस अने कार्मण. एओनी पूर्वे व्याख्या करेली छे. तेनुं कारण नामकर्म पण पांच प्रकारनुं छे. जेम के औदारिकनाम, वैक्रियनाम इत्यादि. तेमां जेना उदयथी औदारिक शरीर योग्य पुद्गलो ग्रहण करीने औदारिक शरीररूपे परिणमावे, परीणमन करी जीवप्रदेशो साथे परस्पर एकमेकपणे संबन्ध करे ते औदारिकशरीरनाम. ए प्रमाणे बाकीना शरीरनामकर्मनो पण विचार करवो. 'सरीरोपांगनाम' इति. शरीरना मस्तक प्रमुख आठ अंगो छे. कह्युं छे के "सीसमुरोयरपिट्ठी दो बाहू उरुया य अट्ठंगा ।" मस्तक, छाती, उदर, पीठ, बे हाथ अने बे उरु-

रोवंगणामे, आहारगसरीरोवंगनामे। सरीरबंधणनामे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविधे पन्नत्ते, तंजहा-ओरालियसरीरबंधणणामे, जाव कम्मगसरीरबंधणनामे। सरीरसंघायणामे णं भंते ! कतिविहे पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचविधे पन्नत्ते, तंजहा-ओरालियसरीरसंघायनामे, जाव-कम्मगसरीरसंघायनामे। संघयणनामे णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! छव्विहे पन्नत्ते, तंजहा-वइरोसभनारायसंघयणनामे, उसहनारायसंघयण-

पांच प्रकारनुं छे. ते आ प्रमाणे-१ औदारिकशरीरबन्धननाम, यावत् ५ कार्मण शरीरबन्धननाम. हे भगवन् ! शरीरसंघातन नाम कर्म केटला प्रकारे छे ? हे गौतम ! पांच प्रकारनुं छे. ते आ प्रमाणे-१ औदारिकशरीरसंघातननाम कर्म, यावत् कार्मण शरीरसंघातनाम. हे भगवन् ! संघयणनाम केटला प्रकारनुं छे ? हे गौतम ! छ प्रकारनुं छे. ते आ प्रमाणे-१ वज्रऋषभनाराच संघयणनाम, २ ऋषभनाराच संघयणनाम, ३ नाराच संघयणनाम, ४ अर्धनाराच संघयणनाम, ५ कीलिका संघयणनाम अने ६

र आठ अंग छे. अंगना आंगळी वगेरे अवयवो उपांग छे, बाकी तेना पण अवयवरूप आंगळीना पर्व रेखा वगेरे अंगोपांग छे. तेनुं [illegible] अंगोपांगनाम छे, ते त्रण प्रकारे छे-१ औदारिकांगोपांगनाम, २ वैक्रियांगोपांगनाम अने ३ आहारकांगोपांगनाम. जेना उद- [illegible] रूपे परिणत थयेला पुद्गलोनो अंगोपांगना विभागरूपे परिणाम थाय ते औदारिकांगोपांगनाम. एम वैक्रिय अने [illegible] जाणवां. तैजस अने कार्मण शरीर जीवप्रदेशना संस्थानने अनुसरतुं होवाथी तेने अंगोपांगनो संभव नथी. तथा [illegible] बंधाय ते बन्धन. जे पूर्वे ग्रहण करेला अने ग्रहण कराता औदारिक पुद्गलोनो परस्पर अने तैजसादि [illegible] संबन्ध करनार बंधननाम. आ संबंधे मूलटीकाकार कहे छे-"बिध्यते तत्कर्म यन्निमित्ता द्व्यादिसंयोगापत्तिराविर्भवति, यथा [illegible] जतु कारणम्।" ते कर्म छे के जे निमित्ते बे आदि शरीरोनो संयोग थाय छे, जेम बे लाकडाना मेदने-

संहनन

समाधान क०

नामे, नारायसंघयणनामे, अद्धनारायसंघयणनामे, कीलियासंघयणनामे, छेवट्ठसंघयणनामे । संठाणनामे णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! छव्विहे पन्नत्ते, तंजहा–समचउरंससंठाणनामे, निग्गोहपरिमंडलसंठाणनामे, साइसंठाणनामे, वामणसंठाणनामे, खुज्जसंठाणनामे, हुंडसंठाणनामे । वण्णनामे णं भंते ? कम्मे कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचविधे पन्नत्ते, तंजहा–कालवण्णनामे, जाव सुक्किल्लवण्णनामे । गंधनामे णं भंते ! कम्मे

छेवट्ठसंघयणनाम. हे भगवन् ! संस्थाननाम केटला प्रकारनुं कह्युं छे ? हे गौतम ! छ प्रकारनुं छे. ते आ प्रमाणे–१ समचतुरस्र संस्थाननाम, २ न्यग्रोधपरिमंडल, ३ सादि, ४ वामन, ५ कुब्ज, अने ६ हुंडकसंस्थाननाम. हे भगवन् ! वर्णनाम कर्म केटला प्रकारनुं छे ? हे गौतम ! पांच प्रकारनुं छे. ते आ प्रमाणे–१ कृष्णवर्णनाम, यावत् ५ शुक्लवर्णनाम. हे भगवन् ! गन्धनाम कर्म केटला प्रकारे छे ? हे गौतम ! बे प्रकारे छे. ते आ प्रमाणे–सुरभिगन्धनाम अने दुरभिगन्धनाम. रसनाम संबन्धे पृच्छा. हे गौतम !

एक करवामां लाग्न कारण छे. ते पांच प्रकारे छे. जेमके, औदारिकबंधननाम, वैक्रियबंधननाम, आहारकबंधननाम, तैजसबंधननाम अने कार्मणबंधननाम. तेमां जेना उदयथी पूर्वे ग्रहण करेला अने ग्रहण कराता औदारिक पुद्गलोनो परस्पर तथा तैजसादि पुद्गलोनी साथे संबंध थाय ते औदारिकबंधननाम. जेना उदयथी पूर्वे ग्रहण करेला अने हमणां ग्रहण कराता वैक्रिय पुद्गलोनो परस्पर तथा तैजसकार्मणनी साथे परस्पर संबन्ध थाय ते वैक्रियबन्धननाम. जेना उदयथी पूर्वे ग्रहण करेला अने हमणा ग्रहण कराता आहारपुद्गलोनो परस्पर तथा तैजसकार्मणनी साथे संबन्ध थाय छे ते आहारकबंधननाम. जेना उदयथी पूर्वे ग्रहण करेला अने हमणां ग्रहण कराता तैजस पुद्गलोनो परस्पर तथा कार्मण पुद्गलोनी साथे संबन्ध थाय ते तैजसबन्धननाम. जेना उदयथी पूर्वे ग्रहण करेला अने हमणा ग्रहण कराता कार्मण पुद्गलोनो परस्पर संबन्ध थाय ते कार्मणबन्धननाम. संघात्यन्ते-पिण्डीक्रियन्ते येन-जे वडे औदारिकादि

पुच्छा । गोयमा ! दुविहे पन्नत्ते, तंजहा–सुरभिगंधनामे, दुरभिगंधनामे । रसनामे णं पुच्छा । गोयमा ! पंचविधे पन्नत्ते, तंजहा–तित्तरसनामे, जाव महुररसनामे । फासनामे णं पुच्छा । गोयमा ! अट्ठविहे पन्नत्ते, तंजहा–कक्खडफासनामे, जाव लहुयफासनामे । अगुरुलहुयनामे एगागारे पन्नत्ते, उवघायनामे एगागारे पन्नत्ते, पराघातनामे एगागारे पन्नत्ते । आणुपुव्विणामे चउव्विहे पन्नत्ते, तंजहा–नेरइयआणुपुव्वीणामे, जाव देवाणुपु-

पांच प्रकारे छे. ते आ प्रमाणे–तिक्तरसनाम, यावत् मधुरसनाम. स्पर्श संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! आठ प्रकारे छे. ते आ प्रमाणे–१ कर्कशस्पर्शनाम, यावत् ८ लघुस्पर्शनाम. अगुरुलघुनाम एक प्रकारनुं छे. उपघातनाम एक प्रकारनुं छे. आनुपूर्वीनाम चार प्रकारे कह्युं छे. ते आ प्रमाणे–१ नैरयिकानुपूर्वीनाम, यावत् देवानुपूर्वीनाम. उच्छ्वासनाम एक प्रकारे छे, बाकीनी सर्व प्रकृतिओ तीर्थंकरनाम पर्यन्त एक प्रकारनी छे. परन्तु विहायोगतिनाम बे प्रकारे छे. ते आ प्रमाणे–प्रशस्त विहायोगतिनाम अने अप्रशस्त

पुद्गलो पिंडरूपे एकठा कराय ते संघातनाम कहेवाय छे. ते पण पांच प्रकारे छे—१ औदारिक संघातनाम, २ वैक्रिय संघातनाम, ३ आहारकसंघातनाम, ४ तैजस संघातनाम, ५ कार्मण संघातनाम. तेमां जेना उदयथी (औदारिक पुद्गलो) औदारिक शरीर रचनाने अनुसारे संघात–पिंडरूप थाय ते औदारिक संघातनाम. ए प्रमाणे वैक्रियादि शरीर संघातनामने विशे पण जाणवुं. 'संघयणनामे' संहनन–अस्थिनी रचना विशेष, मूलटीकाकार कहे छे के–"संहननमस्थिरचनाविशेषः" तेथी जे एम कहे छे के सूत्रमां शक्ति विशेषज संघयण छे. अने ते प्रमाणे तेना ग्रन्थमा कह्युं छे के, "सुत्ते सत्तिविसेसो संघयणं" ते भ्रान्त छे. सूत्रने अनुसरनारा मूलटीकाकारे पण संहनन अस्थिनी रचना विशेषरूप छे एम प्रतिपादन कर्युं छे. अन्य स्थळे एकेन्द्रियोने जे सेवार्त संघयण कह्युं छे तेनुं टीकाकारे समाधान कर्युं छे के "औदारिक शरीर होवाथी उपचारथी आ कहेलुं जाणवुं, पण वास्तविक न समजवुं. जो संघयण शक्तिविशेष

व्वीणामे । उस्सासनामे एगागारे पन्नत्ते, सेसाणि सव्वाणि एगागाराइं पण्णत्ताइं जाव तित्थगरनामे । णवरं विहायगतिनामे दुविधे पन्नत्ते, तंजहा—पसत्थविहायगतिनामे, अपसत्थविहायगतिनामे य ।

विहायोगतिनाम.

होत तो देवो अने नैरयिकोने संघयण कह्युं होत. अने तेओ तो सूत्रमां साक्षात् संघयण रहित कह्या[1] छे. पम उत्सूत्रना प्ररूपकनी चेष्टाओ संबन्धे विशेष कहेवानी जरूर नथी. ते अस्थिनी रचना विशेष औदारिक शरीरने विशेज होय छे, बीजा शरीरोमां होती नथी, कारण के अस्थिरहित छे. ते संघयण छ प्रकारे छे-जेमके वज्रऋषभनाराच, ऋषभनाराच, नाराच, अर्धनाराच, कीलिका अने सेवार्त. तेमां वज्र—खीली. ऋषभ-वींटवानो पाटो अने नाराच-बन्ने तरफ मर्कटबंध. कह्युं छे के—

"रिसहो य होइ पट्टो वज्जं पुण कीलिया मुणेयव्वा । उभओ मक्कडबंधो नारायं तं वियाणाहि" ॥

ऋषभ एटले पाटो अने वज्र एटले खीली जाणवी. तथा बन्ने तरफ मर्कटबन्ध तेने नाराच जाणवो. तेथी बे अस्थि मर्कटबन्धथी बन्धायेला होय अने तेना उपर पाटानी आकृतिवाळुं त्रीजु अस्थि वींटायेलुं होय अने त्रण अस्थिने भेदनार वज्र-खीली नामे अस्थि जेने विशे होय ते वज्रऋषभनाराच. जे किलिका रहित होय ते ऋषभनाराच ज्यां अस्थिओनो मर्कटबन्धज केवळ होय ते नाराचसंहनन. ज्यां एक तरफ केवळ मर्कटबन्ध होय अने बीजी बाजुए कीलिका-खीली होय ते अर्धनाराच संहनन. ज्यां अस्थिओ केवळ कीलिका-खीली वडेज बंधायेला होय ते कीलिका संघयण. ज्यां अस्थिओ एक बीजाना छेडाने स्पर्श करवा रूप सेवाने प्राप्त थयेलां होय, अथवा हमेशां तैलादि स्नेहना मर्दनादिरूप सेवानी अपेक्षा राखे ते सेवार्तसंहनन. एनुं कारणभूत संघयणनाम कर्म पण छ प्रकारे छे. जेम के—वज्रऋषभनाराच संघयणनाम, ऋषभनाराचनाम, नाराचनाम, अर्धनाराचनाम, कीलिकानाम, अने सेवार्तनाम. तेमां जेना उदयथी वज्रऋषभनाराच संघयण होय ते वज्रऋ-

१ सूरनेरइया "छण्हं संघयणाणं असंघयणी" । जीवाभिगम. सू. ३२ प. ३३-१

पभनाराच संघयणनाम. ए प्रमाणे वाकीना संघयण नाम कर्म संबन्धे पण जाणवुं. तथा 'संस्थान'—आकारविशेष, ग्रहण करेलां, जत्थारूपे करायेला अने बांधेला ते औदारिकादि पुद्गलोने विशे जे कर्मना उदयथी संस्थान-आकार विशेष थाय ते संस्थाननाम. तेना छ प्रकार छे. जेम के समचतुरस्रसंस्थान नाम, न्यग्रोधपरिमंडल संस्थाननाम, सादिसंस्थाननाम, वामनसंस्थाननाम, कुब्जसंस्थाननाम, अने हुंडकसंस्थाननाम. तेमां जे कर्मना उदयथी प्राणीओने समचतुरस्र संस्थान थाय ते समचतुरस्रसंस्थान नाम. जे कर्मना उदयथी न्यग्रोधपरिमंडलसंस्थान उपजे ते न्यग्रोधपरिमंडल संस्थाननाम. ए प्रमाणे वाकीना संस्थानो जाणी लेवा. 'वर्ण्यते अनेनेति वर्णः' जे वडे शरीर सुशोभित थाय ते वर्ण, तेना पांच प्रकार छे—श्वेत, पीत-पीळो, रक्त-रातो, नील-लीलो, अने कृष्ण-काळो. तेनुं कारण नामकर्म पण पांच प्रकारनुं छे. जेम के श्वेतवर्णनाम, पीतवर्णनाम, रक्तवर्णनाम, नीलवर्णनाम अने कृष्णवर्णनाम. तेमां जेना उदयथी प्राणीओना शरीरने विशे वगलानी पेठे श्वेतवर्ण थाय ते श्वेतवर्णनाम. एम वाकीना वर्णनामो पण जाणी लेवा. गन्ध्यते-आघ्रायते-जे सुंघाय ते गन्ध. तेना बे प्रकार छे—सुरभिगन्ध अने दुरभिगन्ध. तेनुं कारण गन्धनाम पण बे प्रकारनुं छे. जेम के सुरभिगन्धनाम अने दुरभिगन्धनाम. जेना उदयथी प्राणीओना शरीरने विषे कमल मालतीपुष्प वगेरेनी पेठे सुरभिगन्ध उत्पन्न थाय ते सुरभिगन्धनाम. जेना उदयथी प्राणीओना शरीरमां लसण वगेरेनी जेम दुरभिगन्ध उत्पन्न थाय ते दुरभिगन्धनाम. रस्यते-आस्वाद्यते-जेनो आस्वाद कराय ते रस. तिक्त-तीखो, कटुक-कडवो, कषाय-तुरो, अम्ल-खाटो अने मधुर-मीठो-एम पांच प्रकारनो छे. तेनुं कारण रसनाम पण पांच प्रकारे छे. जेम के तिक्तनाम, कटुनाम, कषायनाम, अम्लनाम अने मधुरनाम. तेमां जेना उदयथी प्राणीओना शरीरने विशे मरी वगेरेनी पेठे तीखो रस होय ते तिक्तरसनाम. एम वाकीना रसनाम पण जाणी लेवा. स्पृश्यते-जे स्पर्शाय एटले स्पर्शेन्द्रियनो विषय होय ते स्पर्श. ते कर्कश, मृदु, लघु, गुरु, स्निग्ध, रूक्ष, शीत अने उष्णना भेदथी आठ प्रकारे छे. तेनुं कारण स्पर्शनाम पण आठ प्रकारे छे. तेमां जेना उदयथी प्राणीओना शरीरने विशे पत्थर वगेरेनी जेम कर्कश-वरसठ स्पर्श होय ते कर्कशस्पर्शनाम. एम वाकीना स्पर्शनाम पण जाणी लेवा. जेना उदयथी प्राणीओना शरीर गुरु-भारे नहिं, तेम लघु-हलकां

पण नहि परन्तु अगुरुलघुपरिणामवाळां होय छे ते अगुरुलघुनाम. जेना उदयथी शरीरनी अन्दर वधता पडजीभ, गलवृन्द (काकडा ?) लम्बक (?) अने चोरदांत वगेरे शरीरना अवयवो वडे पोते ज हणाय, अथवा स्वयं गळे फांसो खावो, स्वयं पर्वत उपरथी पडवुं वगेरेथी आत्मघात करे ते उपघातनाम. जेना उदयथी प्रतापी मनुष्य पोताना दर्शनमात्रथी के वाक्पटुताथी महानृपनी सभामां पण जइने सभ्योने पण क्षोभ उत्पन्न करे अने प्रतिवादीनी प्रतिभानो नाश करे ते पराघातनाम. कोणी, हळ अने गोमूत्रिकाना आकारे अनुक्रमे बे त्रण अने चार समय प्रमाण विग्रह गतिथी बीजा भवमां उत्पत्ति स्थाने जतां जीवनी आकाश प्रदेशनी श्रेणिने अनुसारे नियत गमननी परिपाटी-क्रम ते आनुपूर्वी, ते विपाक वडे वेदवा लायक नामकर्म पण कारणने विषे कार्यना उपचारथी आनुपूर्वीनाम. ते चार प्रकारे छे, जेम के, नैरयिकानुपूर्वीनाम, तिर्यंचानुपूर्वीनाम, मनुष्यानुपूर्वीनाम अने देवानुपूर्वीनाम. जेना उदयथी आत्माने उच्छ्वास अने निःश्वासनी लब्धि प्राप्त थाय ते उच्छ्वासनाम. (प्र०)—जो एम छे तो उच्छ्वास पर्याप्ति नाम कर्मनो क्यां उपयोग छे ? (उ०)—उच्छ्वास नाम कर्मना उदयथी उच्छ्वास अने निःश्वास योग्य पुद्गलोने ग्रहण करवा अने मूकवा संबन्धी लब्धि उत्पन्न थाय छे. अने ते लब्धि उच्छ्वासपर्याप्ति सिवाय पोतानुं कार्य करती नथी. बाणने फेंकवानी शक्तिवाळो छतां पण धनुषने ग्रहण करवानी शक्ति सिवाय फेंकी शकतो नथी. तेथी उच्छ्वास पर्याप्ति उत्पन्न करवा माटे उच्छ्वासपर्याप्ति नामकर्मनो उपयोग छे. ए प्रमाणे बीजी प्रकृतिओनो पण यथासंभव भिन्न विषय सूक्ष्म बुद्धिथी विचारवो. जेना उदयथी प्राणीओना शरीर स्वरूपे अनुष्ण छतां उष्ण प्रकाश रूप आतप करे ते आतपनाम. तेनो विपाक सूर्यमंडलमां रहेला पृथिवीकायिकोने ज होय छे. अग्निने होतो नथी. कारण के सिद्धान्तमां पण तेनो निषेध कर्यो छे. अग्निमां उष्णपणुं उष्णस्पर्शनाम कर्मना उदयथी अने उत्कट रक्तवर्णनामना उदयथी प्रकाशकपणुं छे. तथा जेना उदयथी प्राणीओना शरीरो यति अने देवना उत्तर वैक्रिय शरीर तथा चन्द्र, नक्षत्र ताराना विमानो, रत्न, अने औषधिनी पेठे अनुष्ण प्रकाश रूप उद्योत करे ते उद्योतनाम. विहायसा गतिः-आकाशमां गमन करवुं ते विहायोगति. (प्र०)—आकाश सर्वव्यापक होवाथी आकाशथी बीजे गतिनो संभव नथी तो शा माटे 'विहायस्' विशेषण आप्युं छे ? कारण के

विहायसूपद वडे निषेध करवा योग्य कंइ पण नथी. (उ०)—तमारी शंका वरावर छे, परन्तु जो गतिमात्र कहेवामां आवे तो नाम
कर्मनी प्रथम प्रकृति पण गति नाम छे, तेथी पुनरुक्तपणानी आशंका थाय तेनो निषेध करवा माटे 'विहायस्' एवुं विशेषण आपवामां
आव्युं छे, पण नारकादि पर्यायना परिणामरूप गति ते विहायोगति नथी. ते वे प्रकारे छे—प्रशस्त अने अप्रशस्त. तेमां प्रशस्त गति
हंस, गज अने वृषभादिने होय छे. अप्रशस्त गति गधेडा, उंट अने पाडा वगेरेनी होय छे. ते विपाक वडे वेदवा लाक विहायोगति
नाम कर्म पण वे प्रकारे छे—प्रशस्तविहायोगतिनाम अने अप्रशस्तविहायोगतिनाम.

त्रसन्ति-गरमी वगेरेथी पीडित थयेला विवक्षित एक स्थानकथी उद्वेग पामे अने छायादिनो आश्रय करवा माटे वीजे स्थान जाय
ते त्रस-बेइन्द्रियादि जीवो. ते पर्यायना परिणाम वडे वेदवा लायक नामकर्म पण त्रसनाम. जेना उदयथी गरमी वगेरेनो संवन्ध छतां
पण ते स्थाननो त्याग करवा माटे असमर्थ एवा पृथिवी, पाणी, अग्नि, वायु अने वनस्पतिरूप स्थावर थाय ते स्थावरनाम. 'वादर-
नाम' जेना उदयथी जीवो वादर थाय ते वादरनाम. वादरपणुं ए जीवोनो परिणाम विशेष छे. जेना उदयथी पृथिव्यादि एक एक
जीवनुं शरीर चक्षुथी ग्राह्य नहि होवा छतां घणा जीवोनो समुदाय चक्षुथी ग्रहण थाय, तेथी विपरीत सूक्ष्म नाम छे. जेना उदयथी घणा
मळेलां छतां पण जीवोनुं शरीर चक्षुथी ग्राह्य थतुं नथी. श्रावकप्रज्ञप्तिनी मूल टीकामां कह्युं छे के—"सूक्ष्मनाम यदुदयात् सूक्ष्मो
भवति-अत्यन्तसूक्ष्मोऽतीन्द्रिय इत्यर्थः । सूक्ष्मनाम जेना उदयथी सूक्ष्म-अत्यंत सूक्ष्म-अतीन्द्रिय थाय ए तेनो अर्थ छे.

'पर्याप्तकनाम' जेना उदयथी पोताने योग्य पर्याप्तिने पूर्ण करवामां समर्थ थाय ते पर्याप्तनाम. पर्याप्ति एटले आहारादि पुद्गलोने
ग्रहण करवा अने तेनुं परिणमन करवामां हेतु आत्मानी शक्तिविशेष. तेनुं स्वरूप पूर्वे कहेवामां आव्युं छे. तेथी विपरीत अपर्याप्तनाम
छे. जेना उदयथी एक एक जीवनुं भिन्न भिन्न शरीर होय ते प्रत्येकनाम. जेना उदयथी अनन्त जीवोनुं साधारण-एक शरीर होय ते
साधारणनाम. जेना उदयथी शरीरना अवयव-शिर, अस्थि अने दांतनी स्थिरता होय ते स्थिरनाम. तेथी विपरीत ते अस्थिरनाम.
जेना उदयथी नाभिनी उपरना मस्तक वगेरे अवयवो शुभ-प्रशस्त होय ते शुभनाम. जेना उदयथी नाभिनी नीचेना पग वगेरे अवयवो

अशुभ होय ते अशुभनाम. जेमके मस्तक वडे जेनो स्पर्श करवामां आवे ते खुश थाय छे अने पग वडे स्पर्श करवामां आवे तो ते गुस्से थाय छे. (प्र०)—स्त्रीना पग वडे स्पर्श करायेलो मनुष्य खुश थाय छे, तेथी उपरना कथनमां व्यभिचार-नियमनो अभाव-छे. (उ०)—एम नथी, ते खुश थाय छे तेनुं कारण मोहनीय कर्म छे, अने अहीं तो वस्तुस्थितिनो विचार करवानो छे माटे दोष नथी. जेना उदयथी उपकार नहि करवा छतां पण सर्वेना मनने प्रिय थाय ते सुभगनाम. तेथी विपरीत दुर्भगनाम, के जेना उदयथी उपकार करवा छतां पण मनुष्यने अप्रिय थाय. कह्युं छे के—

"अणुवकए वि बहूणं जो पिओ तस्स सुभगनामुदओ । उपकारकारगोवि हु न रुच्चए दुब्भगस्सुदया ॥
सुभगुदए वि हु कोइ किंचि आसज्ज दुब्भगो जइवि । जायइ तद्दोसाओ जहा अभव्वाण तित्थयरो ॥"

"उपकार नहि करवा छतां पण जे घणा मनुष्यने प्रिय थाय तेने सुभग नामनो उदय छे अने दुर्भगनामना उदयमां उपकार करनार पण रुचे नहि". जो के सुभगनामना उदयमां पण कोइने आश्रयी तेना दोषने लीधे कोइ दुर्भग-अप्रिय थाय छे. जेम अभव्योने तीर्थंकर अप्रिय लागे छे. जेना उदयथी जीवनो स्वर सांभळनारने प्रीतिनुं कारण थाय ते सुस्वरनाम. तेथी विपरीत होय ते दुःस्वरनाम, के जेना उदयथी स्वर सांभळनारने अप्रीति थाय. तथा जेना उदयथी जे करे अथवा बोले ते सर्वलोक मान्य करे. जोवा मात्रथी लोक तेनो अभ्युत्थानादि सत्कार करे ते आदेयनाम. तेथी विपरीत अनादेयनाम, के जेना उदयथी युक्तियुक्त बोलवा छतां पण लोकमान्य वचन न थाय, तेमज उपकार करवा छतां पण मनुष्य तेनो अभ्युत्थानादि सत्कार न करे. तप, शौर्य अने त्याग वगेरेथी उपार्जन करेला यश वडे स्तुति थाय ते यशःकीर्ति. अथवा यश एटले सामान्य ख्याति अने कीर्ति-गुणनी स्तुति-प्रशंसा, अथवा सर्व दिशामां व्याप्त के पराक्रमथी करायेल सर्व मनुष्यो वडे गुणनी स्तुति ते यश, एक दिशामां व्याप्त अथवा पुण्यथी करायेली ख्याति ते कीर्ति, ते जेना उदयथी थाय ते यशःकीर्तिनाम. जेना उदयथी मध्यस्थ मनुष्यने प्रशंसा करवा योग्य न होय ते अयशःकीर्तिनाम. जेना उदयथी प्राणीओना शरीरने विषे पोतपोतानी जातिने अनुसारे अंगो अने प्रत्यंगो प्रतिनियत स्थाने होय ते निर्माणनाम. ते

१९. गोए णं भंते! कम्मे कइविहे पन्नत्ते? गोयमा! दुविहे पन्नत्ते, तंजहा—उच्चागोए य नीयागोए य। उच्चागोए णं भंते! कइविधे पन्नत्ते? गोयमा! अट्ठविधे पन्नत्ते, तंजहा—जाइविसिट्ठया, जाव इस्सरियविसिट्ठया, एवं नीयागोएवि, णवरं जातिविहीणता जाव इस्सरियविहीणया।

१९. हे भगवन्! गोत्रकर्म केटला प्रकारनुं छे? हे गौतम! बे प्रकारनुं छे. ते आ प्रमाणे-उच्च गोत्र अने नीच गोत्र. हे भगवन्! उच्च गोत्र कर्म केटला प्रकारनुं छे? हे गौतम! आठ प्रकारनुं छे. ते आ प्रमाणे-१ जातिविशिष्टता, यावत् ८ ऐश्वर्यविशिष्टता. ए प्रमाणे नीचगोत्र पण जाणवुं. परन्तु १ जातिविहीनता, यावत् ऐश्वर्यविहीनता जाणवी.

कर्म सूतारना जेवुं छे. तेना अभावे तेना भृत्य जेवा अंगोपांगादिनाम वगेरे वडे उत्पन्न थयेलां पण मस्तक, उर अने उदरादि अवयवोनुं नियत स्थाने रहेवापणुं न होय. जेना उदयथी अष्टमहाप्रातिहार्यादि चोत्रीश अतिशयो प्रगट थाय ते तीर्थंकरनाम. ए प्रमाणे नामना बेंताळीश भेदो कह्या. हवे गत्यादिना अवान्तर-पेटा भेदो बताववा माटे सूत्रकार कहे छे—'गइनामेणं भंते! कम्मे कइविहे पन्नत्ते? गतिनाम कर्म केटला प्रकारे छे?' इत्यादि बधुं पाठ सिद्ध छे. एम नामकर्मना भेदो कह्या.

१९. हवे गोत्रकर्मना भेदो कहे छे—'गोए णं भंते!' इत्यादि. जेना उदयथी उत्तम जाति, कुल, बल, तप, रूप, ऐश्वर्य, श्रुत, सत्कार, अभ्युत्थान (उभा थवुं), आसन आपवुं, हाथ जोडवा वगेरेनो संभव थाय ते उच्चैर्गोत्र. जेना उदयथी ज्ञानादि युक्त छतां पण निन्दा प्राप्त करे, हीन जात्यादिमां उत्पन्न थाय ते नीचगोत्र. एम गोत्रकर्मना बे भेदो कह्या, हवे उच्च अने नीच गोत्रना भेदो कहे छे—उच्चागोए णं भंते! कम्मे कइविहे पन्नत्ते? हे भगवन्! उच्चगोत्र कर्म केटला प्रकारनुं छे? इत्यादि. सुगम छे.

२०. अंतराइए णं भंते! कम्मे कतिविधे पन्नत्ते? गोयमा! पंचविधे पन्नत्ते, तंजहा–दाणंतराइए, जाव वीरियंतराइए।

२०. हे भगवन्! अन्तराय कर्म केटला प्रकारनुं कह्युं छे? हे गौतम! पांच प्रकारनुं छे. ते आ प्रमाणे–१ दानान्तराय, यावत् ५ वीर्यान्तराय.

२०. हवे अन्तराय कर्मना भेदो कहे छे—'अन्तराइए णं भंते! कम्मे कइविहे पन्नत्ते'? अन्तराय कर्म केटला प्रकारनुं छे इत्यादि. तेमां जेना उदयथी शक्ति छतां गुणवान् पात्रनो योग छतां, अने दान आपवुं महाफळवाळुं छे एम जाणवा छतां आपवानो उत्साह न थाय ते दानान्तराय. जेना उदयथी दानगुण वडे प्रसिद्ध एवा दाता पासेथी आपवा लायक वस्तु तेने घेर विद्यमान छतां याचना करवामां कुशल अने गुणवान् छतां पण याचक न मेळवी शके ते लाभान्तराय. जेना उदयथी उत्तम आहारादि वस्तु छतां तेमज प्रत्याख्यान-विरतिनो परिणाम के वैराग्य नहि होवा छतां केवळ कृपणपणाथी भोगवी न शके ते भोगान्तराय. एम उपभोगान्तराय कर्म पण जाणवुं. परन्तु भोग अने उपभोगमां आ विशेषता छे के जे एकवार भोगवाय ते आहार, पुष्पनी माला वगेरे भोग, वारंवार भोगवाय ते वस्त्र, अलंकार वगेरे उपभोग कहेवाय छे. कह्युं छे के—

"सइ भुज्जइत्ति भोगो सो पुण आहारपुप्फमाईओ। उवभोगो उ पुणो पुण उवभुज्जइ वत्थविलयादी"॥

एकवार भोगवाय ते भोग, अने ते आहार वगेरे जाणवो. जे वारंवार भोगवाय ते वस्त्र, [1]स्त्री वगेरे उपभोग. जेना उदयथी नीरोग शरीर

१. उपलक्षणथी पुरुष पण उपभोग कही शकाय एटले पुरुषनी अपेक्षाए स्त्री अने स्त्रीनी अपेक्षाए पुरुष पण उपभोग होइ शके. ज्यारे स्त्री भोक्तृत्वनी भावनाथी प्रवृत्ति करे त्यारे ते उपभोक्त्री छे अने पुरुष उपभोग्य छे, ज्यारे भोक्तापणानी भावनाथी पुरुष प्रवर्त्ते त्यारे ते उपभोक्ता छे अने स्त्री उपभोग्य छे.

२१. णाणावरणिज्जस्स णं भंते ! कम्मस्स केवतितं कालं ठिती पन्नत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तीसं सागरोवमकोडाकोडीतो, तिण्णि य वाससहस्साइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मठिती कम्मनिसेगो।

२१. हे भगवन् ! ज्ञानावरणीय कर्मनी केटला काळनी स्थिति कही छे ? हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट त्रीश कोडाकोडी सागरोपमनी छे. अबाधाकाळ त्रण हजार वरसनो छे. अबाधाकाळ हीन कर्मनी स्थिति ते कर्मनो निषेक छे.

छतां अने युवावस्थामां छतां अल्पवळवाळो होय, अथवा वलवान् शरीर छतां अने साधवा योग्य कार्य छतां पण हीनसत्त्वपणाथी प्रवृत्ति न करे ते वीर्यान्तराय. एम मूळ अने उत्तरप्रकृतिओनो विभाग कह्यो.

२१. हवे उत्तरप्रकृतिओनी जघन्य अने उत्कृष्ट स्थितिनुं प्रतिपादन करवानी इच्छावाळा सूत्रकार प्रथम पांच प्रकारना ज्ञानावरणीय कर्मनी स्थिति संवन्धे प्रश्न सूत्र कहे छे—'णाणावरणिज्जस्स णं भंते ! कम्मस्स केवइयं काल ठिई पन्नत्ता' मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यव अने केवल ज्ञानावरणना भेदथी पांच प्रकारना ज्ञानावरण कर्मनी केटला काळनी स्थिति कही छे ? एम प्रश्न कर्यो एटले भगवान् उत्तर आपे छे—हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने ते सर्व जघन्य स्थिति सूक्ष्म संपराय क्षपकने पोताना गुणस्थानकना छेल्ला समये जाणवी. अने उत्कृष्ट स्थिति त्रीश कोडाकोडी सागरोपमनी छे, ते उत्कृष्ट स्थिति उत्कृष्ट संक्लेशमां वर्तता मिथ्यादृष्टिने जाणवी. एम पूर्वे कहेला प्रश्ननो नियत उत्तर आप्यो. अने आ पूछ्या सिवायना प्रश्ननो (प्रसंगथी) उत्तर आपे छे—त्रण हजार वरसनो अबाधा (अनुदय काळ) अने अबाधा वडे न्यून कर्मनी स्थिति ए कर्मदलिकोनो निषेक (भोग्य काळ) छे. एम कहेवानुं शुं कारण छे ? कर्मनी बे प्रकारनी स्थिति बतावबा माटे छे. ते आ प्रमाणे-कर्मनी बे प्रकारनी स्थिति छे—१ कर्मपणे रहेवा योग्य स्थिति अने अनुभववा योग्य स्थिति. तेमां कर्मपणे रहेवा रूप स्थितिने आश्रयी त्रीश कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति कही छे. अने अनुभववा योग्य स्थिति तेथी त्रण हजार वरस न्यून छे. जेथी सूत्रकार कहे छे के 'त्रीणि वर्षसहस्राणि अबाधा'—त्रण हजार वरसनो अबाधाकाळ छे. तात्पर्य ए

२२. निद्दापंचगस्स णं भंते ! कम्मस्स केवतितं कालं ठिती पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं सागरोवमस्स ति-

२२. हे भगवन् ! पांच निद्रा कर्मनी केटला काळनी स्थिति कही छे ? हे गौतम ! जघन्य पल्योपमना असंख्यातमा भाग वडे

छे के ज्ञानावरणीय कर्म उत्कृष्ट स्थितिवाळुं वांध्युं होय तो वन्धसमयथी मांडी त्रण हजार वरस सुधी पोताना उदयथी जीवने कंइपण वाधा करतुं नथी. कारण के तेटला काळमां कर्मदलिकनी निषेक-रचनानो अभाव छे. त्यार पछीना काळमां कर्मदलिकनी निषेक-रचना थाय छे. ते ते वावत सूत्रकार जणावे छे—'अवाधोना'—अवाधाकाळ रहित अनुभव योग्य कर्मनी स्थिति ए कर्मनो निषेक छे. ते आ प्रमाणे छे—प्रथम स्थितिमां घणा कर्मदळ होय छे. वीजी स्थितिमां विशेषहीन, त्रीजी स्थितिमां विशेषहीन, एम विशेष हीन विशेष हीन त्यां सुधी कहेवां के ज्यां सुधी ते स्थितिनो छेल्लो समय होय. एटला वडे अग्रायणी नामे वीजा पूर्वने विशे कर्मप्रकृति प्राभृतना वन्धविधानना स्थितिवन्धाधिकारने विशे जे कह्युं छे—चत्वार्यनुयोगद्वाराणि, तद्यथा-स्थितिवन्धस्थानप्ररूपणा, अवाधाकण्डक प्ररूपणा, उत्कृष्टनिषेकप्ररूपणा, अल्पवहुत्वप्ररूपणा च इति—चार अनुयोग द्वारो छे. जेम के स्थितिवन्धना स्थानोनी प्ररूपणा, अवाधा कण्डक प्ररूपणा, उत्कृष्ट निषेकप्ररूपणा अने अल्पवहुत्वप्ररूपणा. तेमां उत्कृष्ट अवाधाकण्डकनी प्ररूपणा अने उत्कृष्ट निषेकनी प्ररूपणा वतावी. अवाधाकाळनुं परिज्ञान थवा माटे आ उपाय छे—जेनी जेटला कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति होय तेनो तेटला सैंकडो वरसनो अवाधाकाळ जाणवो. जेनी कोटाकोटी सागरोपमनी अंदर स्थिति छे ते कर्मनो आयुष सिवाय जघन्यथी अन्तर्मुहूर्तनो आवाधाकाळ अने आयुषनो उत्कृष्ट अवाधाकाळ पूर्वकोटीनो त्रीजो भाग समजवो. तेथी अवाधाकाळनो विचार करीने अवाधाविषयक सूत्रोनो स्वयं विचार करवो.

२२. पांच निद्रा संवन्धे सूत्र कहे छे—'निद्दापंचगस्स णं भंते' ! इत्यादि. हे भगवन् ! निद्रापंचकनी केटला काळनी स्थिति कही छे ? अहीं जघन्य स्थिति पल्योपमना असंख्यातमा भागवडे न्यून सागरोपमना त्रण सप्तमांश छे. एटले एक सागरोपमना सात भाग करीए तेवा त्रण भाग

णिण सत्तभागा पलितोवमस्स असंखेज्जतिभागेणं ऊणिया, उक्कोसेणं तीसं सागरोवमकोडाकोडीतो, तिण्णि य वाससहस्साइं अवाहा, अवाहूणिया कम्मट्ठिती कम्मनिसेगो । दंसणचउक्कस्स णं भंते ! कम्मस्स केवइयं कालं ठिती पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तीसं सागरोवमकोडाकोडीतो, तिण्णि य वाससहस्साइं अवाहा ।

न्यून त्रण सप्तांश सागरोपमनी अने उत्कृष्ट त्रीश कोडाकोडी सागरोपममनी स्थिति कही छे. त्रण हजार वर्ष अवाधाकाळ अने अवाधाकाळ हीन कर्मस्थिति कर्मनो निषेक छे. हे भगवन् ! चार दर्शनावरणनी केटला काळनी स्थिति कही छे ? हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट त्रीश कोडाकोडी सागरोपम छे. त्रण हजार वरस अवाधाकाळ अने अवाधाकाळ न्यून कर्म स्थिति ए कर्मनो निषेक छे.

होय छे. तात्पर्य ए छे के—चार ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण, संज्वलन लोभ अने पांच अन्तराय कर्मनी प्रकृतिओनी जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त छे. सकषायीने सातावेदनीयनी स्थिति बार मुहूर्तनी अने कषायरहितने बे समयनी छे. प्रथमसमये बन्ध अने बीजे समये उदय अने त्रीजे समये कर्मनो नाश थाय छे. यशःकीर्ति अने उच्चगोत्रनी स्थिति आठ मुहूर्त छे. पुरुषवेदनी आठ वर्ष, संज्वलन क्रोधनी बे मास, संज्वलन माननी एक मास, संज्वलन मायानी अर्धमास, अने बाकीनी प्रकृतिओनी जे जे पोतानी उत्कृष्ट स्थिति छे तेने उत्कृष्ट सित्तेर कोटाकोटी सागरोपम प्रमाण मिथ्यात्वनी स्थिति वडे भागतां जे आवे तेथी पल्योपमना असंख्यातमा भागवडे हीन जघन्य स्थितिनुं परिमाण छे. तेमां पांच निद्रानी उत्कृष्ट स्थिति त्रीश कोटाकोटी सागरोपमनी छे, तेने सित्तेर कोटाकोटी सागरोपम प्रमाण मिथ्यात्वनी स्थिति वडे भागाकार करता 'शून्य वडे शून्य उडी जाय छे' एवी भागाकारनी रीत होवाथी त्रण सप्तमांश सागरोपम थाय

२३. सायावेयणिज्जस्स ईरियावहियं बंधगं पडुच्च अजहण्णमणुक्कोसेणं दो समया, संपराइयबंधगं पडुच्च जहन्नेणं बारस मुहुत्ता, उक्कोसेणं पण्णरस सागरोवमकोडाकोडीतो, पण्णरस वाससयाइं अबाधा। असातावेदणिज्जस्स जहन्नेणं सागरोवमस्स तिण्णि सत्तभागा पलितोवमस्स असंखेज्जतिभागेणं ऊणया, उक्कोसेणं तीसं सागरोवमकोडाकोडीतो, तिण्णि य वाससहस्साइं अबाहा।

२४. सम्मत्तवेयणिज्जस्स पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं सातिरेगाइं।

---

२३. सातावेदनीयनी ईर्यापथिक बन्धने आश्रयी जघन्य अने उत्कृष्ट सिवाय बे समयनी स्थिति छे. सांपरायिक बन्धने आश्रयी जघन्य बार मुहूर्त अने उत्कृष्ट पन्दर कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति छे. तथा पन्दरसो वरसनो अबाधाकाळ छे. असातावेदनीयनी जघन्यथी पल्योपमना असंख्यातमा भाग वडे न्यून सागरोपमना त्रण सप्तमांशनी स्थिति छे. अने उत्कृष्ट त्रीश कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति छे. तेनो त्रण हजार वरसनो अबाधाकाळ अने अबाधाकाळवडे न्यून स्थिति कर्मनिषेक काळ समजवो.

छे, तेने पल्योपमना असंख्यातमा भागे न्यून करतां उपर कह्या प्रमाणे जघन्य स्थितिपरिमाण थाय छे.

---

२३. 'सायावेयणिज्जस्स ईरियावहियं बन्धगं पडुच्च अजहन्नमणुक्कोसेणं दो समया, संपराइयबंधगं पडुच्च जहण्णेणं बारस मुहुत्ता' सातावेदनीयनो ईर्यापथिक (अकषायिक, केवळ योगहेतुक) बंधने आश्रयी जघन्य अने उत्कृष्ट रहित बे समयनी स्थिति छे. सांपरायिक (कषायहेतुक) बंधने आश्रयी जघन्य बार मुहूर्तनी स्थिति छे एनो पूर्वज विचार कर्यो छे. असातावेदनीयनी जघन्यथी पल्योपमना असंख्यातमा भागवडे न्यून त्रण सप्तमांश सागरोपमनी स्थिति पांच निद्रानी पेठे जाणवी. कारण के तेनी पण उत्कृष्ट स्थिति त्रीश कोटाकोटी सागरोपमनी छे.

गातिं । मिच्छत्तवेयणिज्जस्स जहन्नेणं सागरोवमं पलितोवमस्स असंखेज्जतिभागेण ऊणगं, उक्कोसेणं सत्तरि
कोडाकोडीतो, सत्त य वाससहस्साइं अबाहा, अबाहूणिया० । सम्मामिच्छत्तवेयणिज्जस्स जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं,
उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं । कसायबारसगस्स जहन्नेणं सागरोवमस्स चत्तारि सत्तभागा पलितोवमस्स असंखेज्जइ-
भागेणं ऊणया, उक्कोसेणं चत्तालीसं सागरोवमकोडाकोडीतो, चत्तालीसं वाससताइं अबाहा जाव निसेगो ।
कोहसंजलणे पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं दो मासा, उक्कोसेणं चत्तालीसं सागरोवमकोडाकोडीतो, चत्तालीसं

---

२४. सम्यक्त्ववेदनीय संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट कंइक अधिक छासठ सागरोपमनी स्थिति छे.
मिथ्यात्ववेदनीय कर्मनी स्थिति जघन्य पल्योपमना असंख्यातमा भाग वडे न्यून एक सागरोपम अने उत्कृष्ट सित्तेर कोडाकोडी
सागरोपमनी स्थिति छे. सम्यग्मिथ्यात्व वेदनीय कर्मनी जघन्य अने उत्कृष्ट स्थिति अन्तर्मुहूर्त छे. बार कषायोनी जघन्य
स्थिति पल्योपमना असंख्यातमा भाग वडे न्यून एक सागरोपमना चार सप्तमांश अने उत्कृष्ट स्थिति चाळीश कोडाकोडी सागरो-
पमनी छे. तेनो चार हजार वरसनो अबाधाकाळ, यावत् [अबाधान्यून] निषेक काळ जाणवो. संज्वलन क्रोध संबन्धे पृच्छा. हे

---

२४. सम्यक्त्व वेदनीयनी जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी कांइक अधिक छासठ सागरोपम उदयने आश्रयी जाणवी. पण
बन्धने आश्रयी न जाणवी.कारण के सम्यक्त्व अने मिश्रमोहनीयनो बन्ध होतो नथी.परन्तु मिथ्यात्वना पुद्गलो जीवे सम्यक्त्वने योग्य-औपशमिक
सम्यक्त्व रूप विशुद्धि वडे त्रण प्रकारना कराय छे. जेम के—सर्वविशुद्ध, अर्धविशुद्ध अने अशुद्ध. तेमां जे सर्वविशुद्ध पुद्गलो छे
ते 'सम्यक्त्ववेदनीय' कहेवाय छे. जे अर्ध विशुद्ध पुद्गलो छे ते 'सम्यक्त्वमिथ्यात्ववेदनीय' अने अविशुद्ध पुद्गलो छे ते 'मिथ्या-

वाससताइं अबाहा जाव निसेगो । माणसंजलणाते पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणं मासं, उक्कोसेणं जहा कोहस्स। मायासंजलणाते पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अद्धं मासं, उक्कोसेणं जहा कोहस्स । लोहसंजलणाए पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं जहा कोहस्स । इत्थिवेयस्स पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं सागरोवमस्स दिवड्ढं सत्तभागं पलितोवमस्स असंखेज्जइभागेण ऊणयं, उक्कोसेणं पण्णरस सागरोवमकोडाकोडीतो, पण्णरस

गौतम ! जघन्य बे मासनी अने उत्कृष्ट चाळीश कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति छे. तेनो चार हजार वरसनो अबाधाकाळ, यावत् [ते वडे न्यून] निषेक समजवो. संज्वलन मान संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्य एक मासनी अने उत्कृष्ट स्थिति क्रोधनी जेम समजवी. संज्वलन माया संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्य अर्धमासनी अने उत्कृष्ट क्रोधनी स्थिति छे ते प्रमाणे जाणवी. संज्वलन लोभसंबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट स्थिति क्रोधना जेटली जाणवी. स्त्रीवेद संबन्धे पृच्छा. हे

त्ववेदनीय' कहेवाय छे. माटे सम्यक्त्ववेदनीय अने मिश्रवेदनीय ए बे प्रकृतिओना बन्धनो संभव नथी. परन्तु ज्यारे ते सम्यक्त्व अने सम्यक्त्व-मिथ्यात्व पुद्गलोनी स्वरूपथी स्थितिनो विचार करीए त्यारे तेनी अन्तर्मुहूर्त न्यून सित्तेर कोटाकोटी सागरोपम प्रमाण स्थिति जाणवी. अने तेटली स्थिति जे प्रकारे होय ते प्रकारे कर्मप्रकृति टीकामां संक्रमकरणना अधिकारमां विचारी छे माटे त्यांथी जाणी लेवुं. मिथ्यात्ववेदनीयनी जघन्य स्थिति पल्योपमना असंख्यातमा भागवडे न्यून एक सागरोपम छे, कारण के तेनी उत्कृष्ट स्थिति सित्तेर कोटाकोटी सागरोपम प्रमाण छे. सम्यग्मिथ्यात्ववेदनीयनी जघन्य अने उत्कर्षथी स्थिति उदय अपेक्षाए अन्तर्मुहूर्त छे. अने तेना पुद्गलोनी उत्कृष्ट स्थितिकाळ पूर्वे कह्यो छे.

अनन्तानुबन्धिचतुष्क, अप्रत्याख्यानचतुष्क अने प्रत्याख्यानावरण चतुष्क रूप बार कषायमां प्रत्येकनी जघन्य स्थिति पल्योपमना

वाससताइं अवाहा। पुरिसवेदस्स णं पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणं अट्ठ संवच्छराति, उक्कोसेणं दस सागरोवमकोडाकोडीतो, दस वाससताइं अबाहा जाव णिसेगो। णपुंसगवेदस्स णं पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणं सागरोवमस्स दोण्णि सत्तभागा पलितोवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणया, उक्कोसेणं वीसं सागरोवमकोडाकोडीतो,

गौतम ! पल्योपमना असंख्यातमा भाग वडे न्यून सागरोपमना अढी सप्तमांश अने उत्कृष्ट पन्दर कोडाकोडी सागरोपम, तथा पन्दरसो वरसनो अबाधाकाळ होय छे. पुरुष वेदसंबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्यथी आठ वरस अने उत्कृष्ट दस कोडाकोडी सागरोपम, एक हजार वरस अबाधाकाळ, यावत् [तेटला काळ न्यून] निषेककाळ समजवो. नपुंसक वेद संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्य पल्योपमना असंख्यातमा भाग वडे न्यून बे सप्तमांश सागरोपमनी अने उत्कृष्ट वीश कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति जाणवी. तेमज बे हजार वरसनो अबाधाकाळ जाणवो. हास्य अने रति संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्यथी पल्योपमना

असंख्यातमाभाग वडे न्यून चार सप्तमांश सागरोपम छे, कारण के तेओनी उत्कृष्ट स्थिति चाळीश कोटाकोटी सागरोपम प्रमाण छे. संज्वलन कषायनी जघन्य स्थिति बे मास वगेरे प्रमाणवाळी छे, ते क्षपकने पोताना बन्धना छेल्ला समये जाणवी. स्त्रीवेदनी जघन्य स्थिति पल्योपमना असंख्यातमा भागवडे न्यून दोढ सप्तमांश सागरोपमनी छे, एटले एक सागरोपमना सात भाग करीए तेमांना दोढ भाग प्रमाण स्थिति पल्योपमना असंख्यातमा भाग वडे न्यून जाणवी. अने तेटली संख्या त्रिराशि करवाथी आवे छे. ते आ प्रमाणे–ज्यारे दस कोटाकोटी सागरोपमनी स्थिति होय त्यारे एक सप्तमांश सागरोपम आवे तो पंदर कोटाकोटी सागरोपमनी स्थिति होय तो केटला आवे? १०-१-१५. अहीं अंते रहेला 'पंदर' राशि वडे मध्यना एक राशिने गुणता पंदर थाय, कारण के एकने गुणतां तेज राशि आवे. तेने आदिना दश राशि वडे भागीए एटले दोढ सप्तमांश थाय. 'हासरइअरइभयसोगदुगुंछाणं जहण्णुक्कोसट्ठिई भाणि-

वीसइ वाससताइं अबाहा। हासरतीणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं सागरोवमस्स एक्कं सत्तभागं पलितोवमस्स असंखेज्जतिभागेणं ऊणं, उक्कोसेणं दस सागरोवमकोडाकोडीओ, दस वाससताइं अबाहा। अरतिभयसोगदुगुंछाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं सागरोवमस्स दोण्णि सत्तभागा पलितोवमस्स असंखेज्जतिभागेणं उणया, उक्कोसेणं वीसं सागरोवमकोडाकोडीतो, वीसं वाससताइं अबाहा।

असंख्यातमा भाग वडे न्यून सागरोपमनो एक सप्तमांश अने उत्कृष्ट दस कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति होय छे. तेमज एक हजार वरसनो अबाधाकाळ जाणवो. अरति, भय, शोक अने जुगुप्सा संबन्धे पृच्छा. हे गौतम! जघन्य पल्योपमना असंख्यातमा भाग वडे न्यून सागरोपमना बे सप्तमांश अने उत्कृष्ट वीश कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति होय छे. तथा बे हजार वरसनो अबाधाकाळ जाणवो.

यव्वा'—हास्य, रति, अरति, भय शोक अने जुगुप्सानी जघन्य अने उत्कृष्ट स्थिति कहेवी, परन्तु सुप्रसिद्ध होवाथी कही नथी. केवी रीते कहेवी? ते आ प्रमाणे—'हासरईणं पुच्छा. गोयमा! एगो सागरोवमस्स सत्तभागो पलिओवमस्स असंखेज्जभागेण ऊणो, उक्कोसेणं दससागरोवमकोडाकोडीओ, दसवाससयाइं, अबाहा जाव निसेगो। अरइभयसोयदुगुंछाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं सागरोवमस्स दोण्णि सत्तभागा पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणगा, उक्कोसेणं वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ, वीसं सयाइं अबाहा जाव निसेगो'—हास्यरति संबन्धे प्रश्न. हे गौतम! पल्योपमना असंख्यातमा भाग वडे न्यून सागरोपमनो एक सप्तमांश अने उत्कृष्ट दश कोटाकोटी सागरोपमनी स्थिति छे. एक हजार वरसनो आबाधाकाळ अने अबाधा वडे न्यून निषेक काळ जाणवो. अरति, भय, शोक अने जुगुप्सा संबन्धे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी पल्योपमना असंख्यातमा भाग वडे न्यून सागरोपमना बे सप्तमांश अने उत्कृष्ट

२५. नेरइयाउयस्स णं पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणं दस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडीतिभागमब्भहियाति। तिरिक्खजोणियाउयस्स पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि पलितोवमाइं पुव्वकोडितिभागमब्भहियाइं, एवं मणूसाउयस्सवि। देवाउयस्स जहा नेरइयाउयस्स ठितित्ति।

२६. निरयगतिनामए णं पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणं सागरोवमसहस्सस्स दो सत्तभागा पलितोवमस्स

---

२५. नैरयिकायुष संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अधिक दस हजार वरस अने उत्कृष्ट पूर्वकोटीना त्रीजा भाग अधिक तेत्रीश सागरोपमनी स्थिति छे. तिर्यंचायुष संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट पूर्वकोटीना त्रीजा भाग अधिक त्रण पल्योपमनी स्थिति जाणवी. एम मनुष्यायुषनी पण स्थिति जाणवी. देवायुषनी स्थिति नैरयिकायुष प्रमाणे जाणवी.

२६. नरकगति नाम संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्यथी पल्योपमना असंख्यातमा भागे वडे न्यून एक हजार सागरोपमना बे

वीश कोटाकोटी सागरोपमनी स्थिति जाणवी. बे हजार वरसनो अबाधाकाळ अने तेटला काळवडे न्यून यावत् निषेक जाणवो.

२५. तिर्यंचायुष अने मनुष्यायुषनी पूर्वकोटीना त्रीजा भागवडे अधिक त्रण पल्योपमनी स्थिति कही छे, ते आयुषना बन्ध करनारा पूर्वकोटी वरसना आयुषवाळा मनुष्य अने तिर्यंचोनी अपेक्षाए जाणवी. कारण के बीजे एटली स्थिति अने पूर्वकोटीना त्रीजा भागनी अबाधा प्राप्त थती नथी.

२६. 'तिरियगइनामाए जहा नपुंसगवेयस्स' तिर्यंचगतिनामनी नपुंसक वेदनी पेठे स्थिति जाणवी. एटले जघन्यथी पल्योपमना

असंखिज्जतिभागेणं ऊणया, उक्कोसेणं वीसं सागरोवमकोडाकोडीतो, वीसं वाससताइं अबाहा। तिरियगतिनामए जहा नपुंसगवेदस्स। मणुयगतिनामते पुच्छा। जहन्नेणं सागरोवमस्स दिवड्ढं सत्तभागं पलितोवमस्स असंखेज्जतिभागेणं ऊणगं, उक्कोसेणं पण्णरस सागरोवमकोडाकोडीतो, पण्णरसवाससताइं अबाहा। देवगतिनामए णं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं सागरोवमसहस्सस्स एगं सत्तभागं पलितोवमस्स असंखेज्जतिभागेणं ऊणयं, उक्कोसेणं जहा पुरिसवेदस्स। एगिंदियजातिनामए णं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं सागरोवमस्स दोण्णि सत्त-

---

सप्तमांश अने उत्कृष्ट वीश कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति होय छे. तथा अबाधाकाळ बे हजार वरसनो जाणवो. तिर्यँचगतिनामनी नपुंसकवेदनी पेठे स्थिति जाणवी. मनुष्यगतिनाम संबन्धे पृच्छा. हे गौतम! जघन्यथी पल्योपमना असंख्यातमा भाग वडे न्यून सागरोपमनो दोढ सातमो भाग अने उत्कृष्ट पन्दर कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति छे. तथा अबाधाकाळ पन्दरसो वरसनो समजवो. देवगतिनामसंबन्धे पृच्छा. हे गौतम! जघन्य पल्योपमना असंख्यातमा भाग वडे न्यून एक हजार सागरोपमनो सातमो भाग अने उत्कृष्ट स्थिति पुरुषवेदना तुल्य जाणवी. एकेन्द्रिय जातिनाम संबन्धे पृच्छा. हे गौतम! जघन्यथी पल्योपमना असंख्या-

---

असंख्यातमा भाग वडे न्यून बे सप्तमांश सागरोपम अने उत्कर्षथी वीश कोटाकोटी सागरोपमनी स्थिति जाणवी. मनुष्यगति नामनी 'जहण्णेणं सागरोवमस्स दिवड्ढसत्तभागं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणगं'ति—जघन्यथी पल्योपमना असंख्यातमा भाग वडे न्यून दोढ सप्तमांश सागरोपमनी जाणवी. अहीं स्त्रीवेदनी पेठे विचार करवो. अहीं 'दिवड्ढसत्तभागं' इत्यादिने विशे प्राकृत होवाथी नपुंसक लिंगनो निर्देश कर्यो छे. नरकगति नामनी जघन्यथी स्थिति हजार सागरोपमना बे सप्तमांश जाणवी. तात्पर्य ए छे

भागा पलितोवमस्स असंखेज्जतिभागेणं ऊणया, उक्कोसेणं वीसं सागरोवमकोडाकोडीतो, वीसति वाससताइं अबाहा । बेइंदियजातिनामाए णं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं सागरोवमस्स नव पणतीसतिभागा पलितोवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणया, उक्कोसेणं अट्ठारस सागरोवमकोडाकोडीतो, अट्ठारस य वाससयाइं अबाहा । तेइंदियजातिनामए णं जहण्णेणं एवं चेव, उक्कोसेणं अट्ठारस सागरोवमकोडाकोडीतो, अट्ठारस वाससताइं अबाहा । चउरिंदियजातिनामाए पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं सागरोवमस्स णव पणतीसतिभागा पलितोवमस्स असंखे-

---

तमा भाग वडे न्यून सागरोपमना वे सप्तमांश अने उत्कृष्ट वीश कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति जाणवी. तथा वे हजार वरसनो अबाधाकाळ समजवो. वेइन्द्रियजातिनाम संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्य पल्योपमना असंख्यातमा भाग वडे न्यून सागरोपमना नव पांत्रीशांश, उत्कृष्ट अढार कोडाकोडी सागरोपमनी तथा अढारसो वर्षनो अबाधाकाळ जाणवो. तेइन्द्रिय जातिनाम संबन्धे पृच्छा. जघन्य स्थिति एमज—वेइन्द्रिय प्रमाणे समजवी. उत्कृष्ट अढार कोडाकोडी सागरोपमनी अने अढारसो वरसनो अबाधाकाळ जाणवो. चउरिन्द्रियनाम संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्य स्थिति पल्योपमना असंख्यातमा भाग वडे न्यून सागरोपमना नव

के सागरोपमना बे सप्तमांशने हजार वडे गुणवा. कारण के तेनी उत्कृष्ट स्थिति वीश कोटाकोटी सागरोपम प्रमाण छे, तेनो सौथी जघन्य वंध असंज्ञी पंचेन्द्रियने होय छे, कारण के असंज्ञी पंचेन्द्रियनो जघन्य कर्मवन्ध एकेन्द्रियना जघन्य कर्मवन्धनी अपेक्षाए हजार गुणो छे. आ वावतनो विचार वैक्रिय शरीरना विचार प्रसंगे करवामां आवशे. देवगतिनामनो जघन्य वंध हजार सागरोपमनो सातमो भाग जाणवो. तात्पर्य ए के सागरोपमनो एक सप्तमांश हजारथी गुणवो. कारण के तेनी उत्कृष्ट स्थिति दस कोटाकोटी

ज्जइभागेणं ऊणया, उक्कोसेणं अट्ठारस सागरोवमकोडाकोडीतो, अट्ठारस वाससताइं अबाहा। पंचिंदियजातिनामाए पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं सागरोवमस्स दोण्णि सत्तभागा पलितोवमस्स असंखेज्जतिभागेणं ऊणया, उक्कोसेणं वीसं सागरोवमकोडाकोडीतो, वीस य वाससताइं अबाहा। ओरालियसरीरनामाएवि एवंचेव। वेउव्वियसरीरनामाए णं भंते! पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं सागरोवमसहस्सस्स दो सत्तभागा पलितोवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणया, उक्कोसेणं वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ, वीसइ वाससयाइं अबाहा। आहारगसरीरनामाए जह-

---

पांत्रीशांश अने उत्कृष्ट स्थिति अढार कोडकोडी सागरोपमनी समजवी. तथा अबाधाकाळ अढारसो वर्षनो जाणवो. पंचेन्द्रियजातिनाम संबन्धे पृच्छा. हे गौतम! जघन्य पल्योपमना असंख्यातमा भाग वडे न्यून सागरोपमना बे सप्तमांश अने उत्कृष्ट वीश कोडाकोडी सागरोपमनी तथा अबाधाकाळ बे हजार वरसनो जाणवो. औदारारिक शरीरनाम संबन्धे पण एमज जाणवुं. हे भगवन्! वैक्रिय शरीर नाम संबंधे पृच्छा. हे गौतम! जघन्यथी पल्योपमना असंख्यातमा भाग वडे न्यून एक हजार सागरोपमना बे सप्तमांश, अने उत्कृष्ट वीश कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति, तथा बे हजार वर्षनो अबाधाकाळ जाणवो. आहारक शरीरनामनी

सागरोपम छे. तेथी पूर्वे कहेला करण-रीति वडे एक सागरोपमनो सातमो भाग आवे छे. एनो बन्ध पण जघन्यथी असंज्ञी पंचेन्द्रियने होय छे माटे हजार गुणो कह्यो छे. देवगतिनाम संबन्धी सूत्रमां 'उक्कोसेणं जहा पुरिसवेयस्स'—उत्कृष्ट बन्ध पुरुषवेदनी पेठे जाणवो. माटे दस कोटाकोटी सागरोपमनो छे. अने एक हजार वरसनो अबाधाकाळ छे अने अबाधा वडे न्यून कर्मस्थिति ते कर्मनिषेक जाणवो. बेइन्द्रियजातिनामसूत्रमां 'जहन्नेणं नव पणतीसइभागा पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेण ऊणगा'—बेइन्द्रिय जातिनामनी जघन्यथी

न्नेणं अंतोसागरोवमकोडाकोडीओ, उक्कोसेणं अंतोसागरोवमकोडाकोडीओ। तेयाकम्मसरीरनामाए जहण्णेणं दोण्णि सत्तभागा पलितोवमस्स असंखेज्जतिभागेणं ऊणया, उक्कोसेणं वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ, वीस य वाससताइं अबाहा। ओरालियवेउव्वियआहारगसरीरोवंगनामाए तिण्णिवि एवं चेव, सरीरबंधणनामाएवि पंचण्हवि एवं चेव, सरीरसंघायनामाए पंचण्हवि जहा सरीरनामाए कम्मस्स ठिइत्ति, वइरोसभनारायसंघयणना-

---

जघन्य अंतःकोटाकोटी सागरोपमनी अने उत्कृष्ट अंतः कोटाकोटी सागरोपमनी स्थिति जाणवी. तैजस अने कार्मणनामनी पल्योपमना असंख्यातमा भाग वडे न्यून बे सप्तमांश अने उत्कृष्ट वीश कोटाकोटी सागरोपमनी स्थिति जाणवी. तथा बे हजार वर्षनो अबाधाकाळ समजवो. औदारिक, वैक्रिय अने आहारक शरीरोपांगनाम ए त्रणेनी स्थिति एमज (उपर कह्या प्रमाणे) जाणवी. पांच शरीरबन्धन नामनी पण स्थिति एमज समजवी. पांचे शरीरसङ्घातनामनी स्थिति पण शरीरनाम कर्मनी स्थिति प्रमाणे जाणवी. वज्रऋषभसङ्घ-

---

पल्योपमना असंख्यातमा भागवडे न्यून सागरोपमना नव पांत्रीशांश होय छे. अने उत्कृष्ट स्थिति अढार कोटाकोटी सागरोपम प्रमाण छे. कारण के "अट्ठारस सुहुमविगलतिगे" सूक्ष्म अने विकलत्रिकनी स्थिति अढार कोटाकोटी सागरोपम छे-एवुं शास्त्रवचन छे. तेथी अढार कोटाकोटी सागरोपमने मिथ्यात्वनी सित्तेर कोटाकोटी सागरोपम प्रमाण उत्कृष्ट स्थिति वडे भाग आपवो. भाग पूरो थतो नथी, माटे शून्य वडे शून्यने उडाडी देवी. तेथी उपर अढार अने नीचे सित्तेर आवे छे. तेने अर्ध वडे छेद उडाडता नव पांत्रीशांश थाय छे. तेने पल्योपमना असंख्यातमा भागवडे न्यून करवा, एटले सूत्रमां कहेलुं परिमाण आवे छे. ए प्रमाणे तेइन्द्रिय जाति अने चउरिन्द्रिय जातिनाम संबन्धे बन्ने सूत्रोनो विचार करवो. वैक्रियशरीरनाम सूत्रने विशे 'जहण्णेणं सागरोवमस्स दो सत्तभागा पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणगा' जघन्यथी पल्योपमना असंख्यातमा भागवडे न्यून सागरोपमना बे सप्तमांश स्थिति होय

माए जहा रइनामाए । उसभनारायसंघयणनामाए पुच्छा । गोयमा ! सागरोवमस्स छ पणतीसतिभागा पलितोवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणया, उक्कोसेणं बारस सागरोवमकोडाकोडीओ, बारस वाससताइं अबाहा । नारायसंघयणनामस्स जहन्नेणं सागरोवमस्स सत्त पणतीसतिभागा पलितोवमस्स असंखेज्जतिभागेणं ऊणया, उक्कोसेणं चोद्दस सागरोवमकोडाकोडीतो चउद्दस वाससताइं अबाहा । अद्धनारायसंघयणनामस्स जहन्नेणं

यण नामनी स्थिति रतिमोहनीय कर्मनी पेठे जाणवी. नाराच सङ्घयण नाम संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्य पल्योपमना असंख्यातमा भाग वडे न्यून सागरोपमना छ पांत्रीशांश अने उत्कृष्ट चार कोटाकोटी सागरोपमनी स्थिति, तेमज बारसो वर्षनो अबाधाकाळ जाणवो. नाराच सङ्घयणनी जघन्य स्थिति पल्योपमना असङ्ख्यातमा भाग वडे न्यून सागरोपमना सात पांत्रीशांश अने उत्कृष्ट चौद कोटाकोटी सागरोपमनी स्थिति होय छे, तथा अबाधाकाळ चौदसो वरसनो समजवो. अर्धनाराच सङ्घयण नामनी जघन्य

छे. अहीं वैक्रियशरीरनामनी उत्कृष्ट स्थिति वीश कोटाकोटी सागरोपमनी छे, तेथी पूर्वे कहेल करण वडे जघन्य स्थितिना विचारमां सागरोपमना बे सप्तमांश आवे छे. परन्तु वैक्रियषट्क एकेन्द्रियो अने विकलेन्द्रियो बांधता नथी, पण असंज्ञी पंचेन्द्रियादिक बांधे छे अने असंज्ञी पंचेन्द्रियादि जघन्यथी बन्ध करतां एकेन्द्रियना बन्धनी अपेक्षाए हजार गुणो बंध करे छे. कारण के "पणवीसा पन्नासा सयं सहस्सं च गुणकारः" पचीश, पचास, सो अने सहस्र गुणा करवा—एवुं वचन छे, तेथी जे सागरोपमना बे सप्तमांश छे तेने पूर्वे कहेल करण रूप हजार वडे गुणवाथी सूत्रमां कहेलुं परिमाण थाय छे—बे हजार सप्तमांश-हजार सागरोपमना बे सप्तमांश थाय ए तात्पर्य छे. आहारकशरीरनामनी जघन्यथी पण अन्तःकोटाकोटी सागरोपम अने उत्कर्षथी पण अन्तःकोटाकोटी सागरोपमनी स्थिति छे, परन्तु जघन्यथी उत्कृष्ट संख्यातगुण समजवुं. अन्य आचार्य आहारक

सागरोवमस्स अट्ठ पणतीसतिभागा पलितोवमस्स असंखेज्जतिभागेणं ऊणया, उक्कोसेणं सोलस सागरोवमकोडाकोडीतो, सोलस वाससताइं अबाहा। खीलियासंघयणे णं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं सागरोवमस्स नव पणतीसतिभागा पलितोवमस्स असंखेज्जतिभागेणं ऊणया, उक्कोसेणं अट्ठारस सागरोवमकोडाकोडीओ, अट्ठारस वाससताइं अबाहा। छेवट्ठसंघयणनामस्स पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं सागरोवमस्स दोण्णि सत्तभागा पलितोवमस्स असंखेज्जतिभागेणं ऊणया, उक्कोसेणं वीसं सागरोवमकोडाकोडीतो, वीस य वाससताइं आबाहा,

स्थिति पल्योपमना असङ्ख्यातमा भाग वडे न्यून सागरोपमना आठ पांत्रीशांश अने उत्कृष्ट स्थिति सोळ कोटाकोटी सागरोपमनी तथा सोळसो वर्षनो अबाधाकाळ समजवो. कीलिका सङ्घयण संबंधे पृच्छा. हे गौतम! जघन्य स्थिति पल्योपमना असङ्ख्यातमा भाग वडे न्यून सागरोपमना नव पांत्रीशांश अने उत्कृष्ट अढार कोटाकोटी सागरोपम तथा अढारसो वर्षनो अबाधाकाळ जाणवो. छेवट्ठ-सेवार्त संघयण नाम संबंधे पृच्छा. हे गौतम! पल्योपमना असंख्यातमा भाग वडे न्यून सागरोपमना बे सप्तमांश अने उत्कृष्ट स्थिति वीश कोटाकोटी सागरोपम तथा बे हजार वरसनो अबाधाकाळ जाणवो. ए प्रमाणे जेम संघयणनामनी छ प्रकृतिओ कही तेम

चतुष्कनी स्थिति जघन्यथी पण अन्तर्मुहूर्त माने छे. ते संबंधे आ ग्रन्थनो पाठ छे-"पुंवेय अट्ठ वासा अट्ठ मुहुत्ता जसुच्चगोयाणं। साए बारस आहार-विग्घावरणाणं किंचूणं॥" पुरुषवेदनी स्थिति आठ वर्ष, यश अने उच्च गोत्रनी आठ मुहूर्त, सातावेदनीयनी बार मुहूर्त, आहारक, अंतराय अने ज्ञानावरण दर्शनावरणनी कंइक न्यून-अन्तर्मुहूर्त जाणवी. अहीं सत्य शुं छे ते केवलज्ञानी जाणे. जेम पांच शरीरनुं जघन्यथी अने उत्कर्षथी स्थितिपरिमाण कह्युं. तेज क्रमथी पांच शरीरबंधन अने पांच शरीरसंघात संबंधे कहेवुं. तेज सूत्रकार कहे छे—

एवं जहा संघयणनामाते छब्भणिया एवं संठाणावि छब्भाणितव्वा। सुक्किल्लवण्णणामते पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं सागरोवमस्स एगं सत्तभागं पलितोवमस्स असंखेज्जतिभागेणं ऊणगं, उक्कोसेणं दस सागरोवमकोडाकोडीतो, दस वाससताइं अवाहा। हालिद्दवण्णणामए णं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं सागरोवमस्स पंच अट्ठावीसतिभागा पलितोवमस्स असंखेज्जतिभागेणं ऊणया, उक्कोसेणं अद्धतेरससागरोवमकोडाकोडी, अद्धतेरस वाससयाइं अवाहा। लोहितवण्णणामए णं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं सागरोवमस्स छ अट्ठावीसतिभागा प-

संस्थाननाम कर्मनी पण कहेवी. शुक्लवर्णनाम संबंधे पृच्छा. हे गौतम! जघन्यथी पल्योपमना असंख्यातमा भाग वडे न्यून सागरोपमनो एक सप्तमांश अने उत्कृष्ट दस कोटाकोटी सागरोपमनी स्थिति तथा एक हजार वर्ष अबाधाकाळ जाणवो. हारिद्रवर्णनाम संबंधे पृच्छा. हे गौतम! जघन्य स्थिति पल्योपमना असंख्यातमा भाग वडे न्यून सागरोपमना पांच अठ्यावीशांश अने उत्कृष्ट स्थिति साडा बार कोटाकोटी सागरोपम तथा साडा बारसो वरसनो अबाधाकाळ जाणवो. लोहितवर्णनाम संबंधे पृच्छा. हे गौतम! जघन्य स्थिति पल्योपमना असंख्यातमा भाग वडे न्यून सागरोपमना छ अठ्यावीशांश अने उत्कृष्ट स्थिति पंदर कोटाकोटी सागरोपमनी

"सरीरबंधननामाएवि पंचण्हवि एवं चेव, सरीरसंघायणनामाए वि पंचण्हवि' पांच शरीरबंधननाम संबंधे अने पांच शरीरसंघातनाम संबंधे पण एमज समजवुं. "वइरोसहनारायसंघयणनामाए जहा रइनामाए' वज्रऋषभनाराच संघयण नामनी स्थिति जेम पूर्वे रतिमोहनीयनी कही छे तेम कहेवी. ते आ प्रमाणे—'वइरोसभनारायसंघयणनामाए णं भंते! कम्मस्स केवइयं कालं ठिती पन्नत्ता? गोयमा! जहन्नेणं एगं सत्तभागं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणं, उक्कोसेणं दस सागरोवमकोडाकोडीओ"। हे भगवन्! वज्रऋषभनाराच संघयण

उक्कोसेणं पण्णरस सागरोवमकोडाकोडीओ, पण्णरस वाससयातिं
लितोवमस्स असंखेज्जतिभागेहिं ऊणया, उक्कोसेणं पण्णरस सागरोवमस्स सत्त अट्ठावीसतिभागा पलितोवमस्स अ-
अबाहा। नीलवण्णनामाए पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं सागरोवमस्स सत्त अट्ठावीसतिभागा पलितोवमस्स अ-
संखेज्जतिभागेणं ऊणया, उक्कोसेणं अद्धट्ठारस सागरोवमकोडाकोडीतो, अद्धट्ठारस वाससताइं अबाहा। काल-
वण्णनामाए जहा छेवट्ठसंघयणनामस्स। सुब्भिगंधणामते पुच्छा। गोयमा! जह सुक्किल्लवण्णनामस्स, दुब्भि-
गंधणामाए जहा छेवट्ठसंघयणस्स, रसाणं महुरादीणं जहा वण्णाणं भणितं तहेव परिवाडीते भाणितव्वं, फासा

तथा पंदरसो वरसनो अबाधाकाळ जाणवो. नीलवर्णनाम संबंधी पृच्छा. हे गौतम! जघन्य स्थिति पल्योपमना असंख्यातमा भाग वडे
न्यून सागरोपमना सात अठ्यावीशांश अने उत्कृष्ट साडासत्तर कोटाकोटी सागरोपमनी तथा साडासत्तरसो वरसनो अबाधाकाळ
जाणवो. काळावर्णनामनी स्थिति छेवट्ठ संघयणनामनी पेठे जाणवी. सुरभिगंधनाम संबंधी पृच्छा. हे गौतम! जेम शुक्लवर्णनामनी
स्थिति कही छे तेम जाणवी.दुरभिगंधनामनी छेवट्ठ संघयणनामनी स्थितिनी पेठे जाणवी.मधुरादि रसनी स्थिति जेम वर्णनी स्थिति कही
छे तेम अनुक्रमे कहेवी. जे अप्रशस्त स्पर्शो छे तेओनी स्थिति छेवट्ठसंघयणनामनी जेम अने जे प्रशस्त वर्णो छे तेओनी स्थिति शुक्ल-

नामनी केटला काळनी स्थिति कही छे? हे गौतम! जघन्यथी पल्योपमना असंख्यातमा भाग वडे न्यून एक सप्तमांश सागरोपम छे
अने उत्कर्षथी दस कोटाकोटी सागरोपमनी छे. ऋषभनाराच सूत्रमां पल्योपमना असंख्यातमा भाग वडे न्यून 'सागरोपमना छ
पांत्रीशांश स्थिति छे. कारण के ऋषभनाराच संघयणनी उत्कृष्ट स्थिति बार कोटाकोटी सागरोपमनी छे, तेने मिथ्यात्वनी सित्तेर
कोटाकोटी प्रमाण स्थिति वडे भागवा. भाग चालतो न होवाथी शून्यवडे शून्यने उडाडी छेद्य अने छेदक राशिनो अर्ध छेद उडाडतां

जे अपसत्था तेसिं जहा छेवट्ठस्स, जे पसत्था तेसिं जहा सुक्किल्लवण्णनामस्स, अगुरुलहुनामाते जहा छेवट्ठस्स, एवं उवघातनामाएवि, पराघायनामाएवि एवं चेव । निरयाणुपुव्वीनामाए पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं सागरोवमसहस्सस्स दो सत्तभागा पलितोवमस्स असंखेज्जतिभागेणं ऊणया, उक्कोसेणं वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ, वीसं वाससताइं अबाहा । तिरियाणुपुव्वीए पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं सागरोवमस्स दो सत्तभागा

वर्ण नामनी पेठे कहेवी. अगुरुलघुनाम कर्मनी स्थिति छेवट्ठ संघयणनामनी पेठे जाणवी. एम उपघातनामनी पण स्थिति समजवी. पराघातनामनी स्थिति पण एमज जाणवी. नरकानुपूर्वीनाम संबन्धी पृच्छा. हे गौतम ! जघन्य स्थिति पल्योपमना असंख्यातमा भाग वडे न्यून एक हजार सागरोपमना बे सप्तमांश अने उत्कृष्ट स्थिति वीश कोटाकोटी सागरोपमनी तथा बे हजार वरसनो अबाधाकाळ जाणवो. तिर्यंचानुपूर्वी संबंधी पृच्छा. हे गौतम ! जघन्य स्थिति पल्योपमना असंख्यातमा भाग वडे न्यून सागरोपमना बे

सागरोपमना छ पांत्रीशांश थाय छे, तेने पल्योपमना असंख्यातमा भागे न्यून करवी. एम नाराचसंहनननामनी जघन्य स्थितिना विचारमां पल्योपमना असंख्यातमा भाग वडे न्यून सागरोपमना सात पांत्रीशांश होय छे, कारण के तेनी उत्कृष्ट स्थिति चौद सागरोपम प्रमाण छे. अर्धनाराच संहनननामनी सागरोपमना आठ पांत्रीशांश जघन्य स्थिति छे, कारण के तेनी उत्कृष्ट स्थिति सोळ सागरोपम कोटाकोटी प्रमाण छे. कीलिका संहनननामनी जघन्य स्थिति पल्योपमना असंख्यातमा भाग वडे न्यून सागरोपमना नव पांत्रीशांशनी छे, कारण के तेनी उत्कृष्ट स्थिति अढार कोटाकोटी सागरोपमप्रमाण होवाथी विचारवी. सेवार्तसंहनन सूत्र सुगम छे. जेम छ संघयणनी स्थिति कही तेम छ संस्थाननी स्थिति पण कहेवी. अने ते प्रमाणे सूत्रकार कहे छे-'एवं जहा संघयणनामाते छब्भणिया, एवं संठाणा छब्भाणियव्वा'-आज अर्थ अन्य स्थळे पण कह्यो छे'-"संघयणे संठाणे पढमे दस उवरिमेसु दुगवुड्ढी"—प्रथम संघयण अने

पलितोवमस्स असंखेज्जतिभागेणं ऊणया, उक्कोसेणं वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ, वीसति वाससताइं अबाधा। मणुयाणुपुव्वीनामाए णं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं सागरोवमस्स दिवड्ढं सत्तभागं पलितोवमस्स असंखेज्जतिभागेणं ऊणयं, उक्कोसेणं पण्णरस सागरोवमकोडाकोडीओ, पण्णरस वाससताइं अबाहा। देवाणुपुव्वीनामाते पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं सागरोवमसहस्सस्स एगं सत्तभागं पलितोवमस्स असंखेज्जतिभागेणं ऊण-

---

सप्तमांश अने उत्कृष्ट स्थिति वीश कोटाकोटी सागरोपम तथा बे हजार वरसनो अबाधाकाळ जाणवो. मनुष्यानुपूर्वी संबंधी पृच्छा. हे गौतम! जघन्य स्थिति पल्योपमना असंख्यातमा भाग वडे न्यून सागरोपमनो दोढ सप्तमांश अने उत्कृष्ट स्थिति पंदर कोटाकोटी सागरोपम तथा पंदरसो वरसनो अबाधाकाळ जाणवो. देवानुपूर्वी संबंधी पृच्छा. हे गौतम! जघन्य स्थिति पल्योपमना असंख्यातमा भाग वडे न्यून हजार सागरोपमनो एक सप्तमांश अने उत्कृष्ट स्थिति दस कोटाकोटी सागरोपमनी तथा एक हजार वरसनो अबाधा-

---

संस्थाननी दस कोटाकोटी सागरोपमनी स्थिति छे अने पछी उपरना संघयण अने संस्थानने विषे बब्बे सागरोपमनी वृद्धि करवी". हारिद्रवर्णनाम संबंधे सूत्रमां जघन्यथी पल्योपमना असंख्यातमा भाग वडे न्यून सागरोपमना पांच अठ्यावीशांशनी स्थिति जाणवी, कारण के हारिद्रवर्णनामनी साडाबार कोटाकोटी सागरोपमनी स्थिति छे. अन्य स्थळे पण कह्युं छे के "सुक्किल्ल-सुरभि-महुराण दस उ तहा सुभग-उण्हफासाणं अड्ढाइज्जपवुड्ढी अंबिलहालिद्दपुव्वाणं॥" शुक्ल वर्ण, सुरभिगन्ध, अने मधुर रसनी दस कोटाकोटी सागरोपमनी स्थिति छे, सुभगनाम, उष्णस्पर्श, अम्लरस अने हारिद्रवर्णनी स्थितिमां अढी सागरोपमनी वृद्धि करवी." तेने सित्तेर कोटाकोटी सागरोपम प्रमाण मिथ्यात्वनी स्थिति वडे भागवा. शून्य वडे शून्य उडी जाय छे, तेथी उपरनो राशि साडाबार होवाथी अंश सहित छे, पण पूर्ण नथी. माटे तेने चार भाग करवा माटे चारे गुणवाथी पचास थाय छे नीचेनी सित्तेर संख्यारूप छेद

यं, उक्कोसेणं दस सागरोवमकोडाकोडीओ, दस य वाससताइं अबाहा। ऊसासनामाते पुच्छा। गोयमा! जहा तिरियाणुपुव्वीए, आयवनामाए वि एवं चेव। उज्जोयनामाएवि पसत्थविहायोगतिनामाएवि पुच्छा। गो- यमा! जहन्नेणं एगं सागरोवमस्स सत्तभागं उक्कोसेणं दस सागरोवमकोडाकोडीओ, दस वाससताइं अबाहा। अपसत्थविहायोगतिनामस्स पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं सागरोवमस्स दोण्णि सत्तभागा पलितोवमस्स असंखे-

काळ समजवो. उच्छ्वासनाम संबंधी पृच्छा. हे गौतम! तिर्यंचानुपूर्वी संबंधे कह्युं छे तेम जाणवुं. आतपनाम संबंधे पण एमज जा- णवुं. उद्योतनाम संबंधे अने प्रशस्त विहायोगतिनाम संबंधी पृच्छा. हे गौतम! जघन्य स्थिति एक सागरोपमना सात भाग अने उत्कृष्ट दस कोटाकोटी सागरोपम तथा एक हजार वरसनो अबाधाकाळ समजवो. अप्रशस्त विहायोगतिनाम संबंधी पृच्छा. हे गौतम! जघन्य स्थिति पल्योपमना असंख्यातमा भाग वडे न्यून सागरोपमना बे सप्तमांश अने उत्कृष्ट वीश कोटाकोटी सागरोपम

राशिने चारे गुणवा पटले वसोने एंशी थाय छे. तेथी फरी शून्य वडे शून्य उडाडतां सागरोपमना पांच अठ्यावीशांश थाय छे, तेने पल्योपमना असंख्यातमा भागे हीन करतां सूत्रोक्त परिमाण आवे छे. आज गणितनी रीत वडे लोहितवर्णनामनी जघन्य स्थिति पल्यो- पमना असंख्यातमा भागवडे हीन सागरोपमना छ अठ्यावीशांश छे, कारण के तेनी उत्कृष्ट स्थिति पंदर कोटाकोटी सागरोपम प्रमाण छे. नीलवर्णनामनी जघन्य स्थिति पल्योपमना असंख्यातमा भागे न्यून सागरोपमना सात अठ्यावीशांश जाणवा. कारण के उत्कर्षथी तेनी स्थिति साडासत्तर सागरोपम प्रमाण छे. 'कालवण्णनामाए जहा छेवट्ठसंघयणस्स' इति. काळावर्णनामनी छेवठ्ठ संघय- णनी पेठे जघन्यथी पल्योपमना असंख्यातमा भागे न्यून सागरोपमना बे सप्तमांश अने उत्कर्षथी वीश कोटाकोटी सागरोपमनी जाणवी. सुरभिगन्धनामनी शुक्लवर्ण नामनी जेम स्थिति समजवी, कारण के 'सुक्किलसुरभिमधुराण दस उ' शुक्लवर्ण, सुरभिगन्ध अने मधु-

ज्जतिभागेणं ऊणया, उक्कोसेणं वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ, वीस य वाससताइं अवाहा। तसनामाए थावरनामाए य एवं चेव। सुहुमनामाए पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं सागरोवमस्स णव पणतीसतिभागा पलितोवमस्स असंखेज्जतिभागेणं ऊणया, उक्कोसेणं अट्ठारस सागरोवमकोडाकोडीतो, अट्ठारस य वाससताइं अबाहा। बादरनामाए जहा अप्पसत्थविहायोगतिनामस्स। एवं पज्जत्तनामाएवि, अपज्जत्तनामाए जहा सुहुमना-

तथा बे हजार वरसनो अबाधाकाळ जाणवो. त्रसनाम अने स्थावरनाम संबंधे एमज जाणवुं. सूक्ष्मनाम संबंधी पृच्छा. हे गौतम! जघन्य स्थिति पल्योपमना असंख्यातमा भाग वडे न्यून सागरोपमना नव पांत्रीशांश अने उत्कृष्ट अढार कोटाकोटी सागरोपम तथा अढारसो वरसनो अबाधाकाळ समजवो. बादर नामनी स्थिति अप्रशस्त विहायोगतिनामनी पेठे कहेवी. एम पर्याप्तनामनी स्थिति कहेवी, अपर्याप्त नामनी स्थिति सूक्ष्मनामनी पेठे जाणवी. प्रत्येक शरीरनामनी पण बे सप्तमांश,साधारण शरीरनामनी सूक्ष्मनी पेठे, स्थिरना-

ररसनी दस कोटाकोटी सागरोपमनी स्थिति छे-एवुं शास्त्रवचन छे. दुरभिगन्धनामनी जेम सेवार्तसंहनननी कही छे तेम समजवी, ते हमणांज कहेली छे तेथी तेने फरीथी कहेता नथी. 'रसाणं महुरादीणं जहा वण्णाणं भणियं तहा परिवाडीए भाणियव्वं' इति. मधुरादि रसोनी जेम वर्णोनी स्थिति कही छे तेम अनुक्रमे कहेवी. ते आ प्रमाणे-मधुररसनी जघन्य स्थिति पल्योपमना असंख्यातमा भागे न्यून सागरोपमनो एक सप्तमांश अने उत्कर्षथी दस कोटाकोटी सागरोपम जाणवी. तथा एक हजार वरसनो अबाधाकाळ होय छे. अबाधारहित कर्मस्थिति कर्मदलिक निषेक जाणवो. अम्लरस नामनी जघन्य स्थिति पल्योपमना असंख्यातमा भाग वडे हीन सागरोपमना पांच अठ्यावीशांश अने उत्कर्षथी साडाचार कोटाकोटी सागरोपम तथा साडाचारसो वरसनो अबाधाकाळ जाणवो. कषायरसनामनी जघन्य स्थिति पल्योपमना असंख्यातमा भाग वडे न्यून सागरोपमना छ अठ्यावीशांश उत्कर्षथी पंदर कोटाकोटी सागरोपम,

मस्स। पत्तेयसरीरनामाएवि दो सत्तभागा, साहारणसरीरनामाए जहा सुहुमस्स, थिरनामाए एगं सत्तभागं, अथिरनामाए दो, सुभनामाए एगो, असुभनामाए दो, सुभगनामाए एगो, दूभगनामाए दो, सूसरनामाए एगो, दूसरनामाए दो, आदिज्जनामाए एगो, अणाइज्जनामाए दो, जसोकित्तिनामाए जहन्नेणं अट्ठ मुहुत्ता, उक्कोसेणं दस सागरोवमकोडाकोडीतो, दस वाससताइं अबाहा । अजसोकित्तिनामाए पुच्छा। गोयमा! जहा अप्पसत्थ-

---

मनी स्थिति एक सप्तमांश,अस्थिरनामनी बे सप्तमांश,शुभनामनी एक सप्तमांश,अशुभनामनी बे सप्तमांश,सुभगनामनी एक सप्तमांश,दुर्भगनामनी बे सप्तमांश, सुस्वरनामनी एक सप्तमांश, दुःस्वरनामनी बे सप्तमांश, आदेयनामनी एक सप्तमांश, अनादेय नामनी बे सप्तमांश यशःकीर्तिनामनी जघन्य स्थिति आठ मुहूर्त अने उत्कृष्ट स्थिति दस कोटाकोटी सागरोपमनी अने एक हजार वरसनो अबाधाकाळ समजवो. अयशःकीर्तिनाम संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! जेम अप्रशस्तविहायोगतिनामनी स्थिति कही तेम कहेवी. ए प्रमाणे निर्माण-

---

अने पंदरसो वरसनो अबाधाकाळ जाणवो. कटुक रसनो जघन्यथी पल्योपमना असंख्यातमा भाग वडे न्यून सागरोपमना सात अठ्यावीशांश अने उत्कर्षथी साडासत्तर कोटाकोटी सागरोपम, तथा साडासत्तरसो वरसनो अबाधाकाळ जाणवो. तिक्तरस नामनी जघन्यथी पल्योपमना असंख्यातमा भाग वडे न्यून सागरोपमना बे सप्तमांश, अने उत्कृष्ट स्थिति वीश कोटाकोटी सागरोपमनी होय छे. तथा बे हजार वर्ष अबाधा अने अबाधाकाळ रहित कर्मस्थिति कर्मदलनिषेक समजवो. स्पर्शो बे प्रकारना छे-प्रशस्त अने अप्रशस्त, तेमां मृदु, लघु, स्निग्ध अने उष्णरूप प्रशस्त स्पर्शो छे, कर्कश, गुरु, रूक्ष, अने शीतरूप अप्रशस्त स्पर्शो छे, प्रशस्त स्पर्शोनी जघन्य स्थिति पल्योपमना असंख्यातमा भाग वडे न्यून सागरोपमनो एक सप्तमांश अने उत्कृष्टथी दस कोटाकोटी सागरोपम छे. तथा एक हजार वरसनो अबाधाकाळ अने अबाधाकाळहीन कर्मस्थिति कर्मदलिक निषेक समजवो. अप्रशस्त स्पर्शनी जघन्य

विहायोगतिनामस्स, एवं णिम्माणनामाएवि। तित्थगरणामाए णं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं अंतोसागरोवमकोडाकोडीओ, उक्कोसेणवि अंतोसागरोवमकोडाकोडीओ। एवं जत्थ एगो सत्तभागो तत्थ उक्कोसेणं दस सागरोवमकोडाकोडीओ, दस वाससताइं अबाहा, जत्थ दो सत्तभागा तत्थ उक्कोसेणं वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ वीस य वाससयाइं अबाहा।

नामनी पण स्थिति कहेवी. तीर्थंकरनाम संबंधी पृच्छा. हे गौतम! जघन्य स्थिति अन्तःकोटाकोटी सागरोपम अने उत्कृष्ट पण अन्तःकोटाकोटी सागरोपम जाणवी. ए प्रमाणे ज्यां एक सप्तम भाग होय त्यां उत्कृष्टथी दस कोटाकोटी सागरोपमनी स्थिति अने एक हजार वरसनो अबाधाकाळ समजवो. ज्यां बे सप्तम भाग होय त्यां उत्कृष्टथी वीश कोटाकोटी सागरोपमनी स्थिति अने बे हजार वरसनो अबाधाकाळ जाणवो.

स्थिति पल्योपमना असंख्यातमा भाग वडे न्यून सागरोपमना बे सप्तमांश अने उत्कृष्ट स्थिति वीश कोटाकोटी सागरोपमनी छे. तथा बे हजार वरसनो अबाधाकाळ अने अबाधाकाळहीन कर्मनी स्थिति कर्मदलिकनो निषेक जाणवो. ते प्रमाणेज सूत्रकार कहे छे 'फासा जे अप्पसत्था तेसिं जहा सेवट्ठस्स, जे पसत्था तेसिं जहा सुक्किल्लवण्णनामस्स.' जे अप्रशस्त स्पर्शो छे तेओनी स्थिति छेवट्ठ संघयणनी पेठे जाणवी अने जे प्रशस्त स्पर्श छे तेओनी स्थिति शुक्लवर्णनामनी पेठे जाणवी." नरकानुपूर्वीनामनी जघन्य स्थिति हजार सागरोपमना बे सप्तमांश एटले सहस्रगुणा बे सप्तमांश सागरोपम जाणवी. तेनो विचार नरकगतिनी पेठे करवो, मनुष्यानुपूर्वीनाम सूत्रमां 'जहण्णेणं सागरोवमस्स दिवड्ढं सत्तभागे पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं उणगं'ति. पल्योपमना असंख्यातमा भागे न्यून दोढ सप्तमांश सागरोपम जाणवी." कारण के तेनी उत्कृष्ट स्थिति पंदर कोटाकोटी सागरोपम प्रमाण छे. बीजे स्थळे पण

कह्युं छे के—

"तीसं कोडाकोडी असाय–आवरण–अंतरायाणं । मिच्छे सयरी इत्थी–मणुदुग–सायाण पन्नरस" ॥

"असातावेदनीय, ज्ञानावरण, दर्शनावरण अने अन्तराय कर्मनी त्रीश कोडाकोडी सागरोपम, मिथ्यात्वनी सित्तेर कोटाकोटी, स्त्रीवेद, मनुष्यद्विक अने सातावेदनीयनी पन्दर कोटाकोटी सागरोपम प्रमाण स्थिति जाणवी." देवानुपूर्वीनाम कर्मनी पण स्थिति जघन्यथी पल्योपमना असंख्यातमा भागवडे न्यून सहस्रगुण एक सप्तमांश सागरोपम जाणवी, कारण के तेनी उत्कृष्ट स्थिति दस कोटाकोटी सागरोपम प्रमाण छे. कह्युं छे के—

"पुं–हास–रई–उच्चे सुभखगति–थिराइछक्क–देवदुगे । दस सेसाणं वीसा एवइयाबाह वाससया" ॥

पुरुषवेद,हास्य,रति,उच्चगोत्र,शुभविहायोगति,स्थिरादिषट्क अने देवद्विकनी स्थिति दस बाकीनानी वीश कोटाकोटी सागरोपम छे अने जेटलो कोटाकोटी होय तेटला सेंकडो वर्ष अबाधा होय छे. देवानुपूर्वीनो जघन्यथी बन्ध असंज्ञी पंचेन्द्रियोने होय छे. सूक्ष्मनाम सूत्रमां जघन्यथी पल्योपमना असंख्यातमा भागवडे न्यून सागरोपमना नव पांत्रीशांश स्थिति बेइन्द्रिय जातिनामनी पेठे जाणवी. कारण के सूक्ष्मनाम कर्मनी उत्कृष्ट स्थिति अढार कोटाकोटी सागरोपम प्रमाण छे. केमके 'अट्ठारस सुहुमविगलतिगे' सूक्ष्म अने विकलेन्द्रियत्रिकनी अढार कोटाकोटी सागरोपमनी स्थिति छे-एवुं शास्त्रनुं वचन छे. एम अपर्याप्त अने साधारण नाम कर्मने पण जाणवुं. बादर, पर्याप्त अने प्रत्येक नामनी जघन्य स्थिति पल्योपमना असंख्यातमा भागवडे न्यून बे सप्तमांश सागरोपमनी छे अने उत्कृष्ट वीश कोटाकोटी सागरोपम प्रमाण छे. ते संबन्धे सूत्रकार कहे छे—'बायरनामाए जहा अपसत्थविहायोगइनामाए, एवं पज्जत्तनामाए वि' इत्यादि. बादरनामनी स्थिति अप्रशस्तविहायोगतिनामनी पेठे जाणवी. एम पर्याप्तनाम संबन्धे पण जाणवुं-इत्यादि. स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय रूप पांच प्रकृतिनी जघन्य स्थिति पल्योपमना असंख्यातमा भागवडे न्यून एक सप्तमांश सागरोपमनी छे. यशःकीर्तिनामनी जघन्यथी आठ मुहूर्त छे. कारण के 'अट्ठ मुहुत्ता जसुच्चगोयाणं' एवुं शास्त्र वचन छे, छए प्रकृतिओनी उत्कृष्ट स्थिति दस कोटाकोटी सागरो-

२७. उच्चागोयस्स णं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अट्ठ मुहुत्ता, उक्कोसेणं दस सागरोवमकोडाकोडीओ, दस

२७. उच्चगोत्र संबंधी पृच्छा. हे गौतम ! जघन्यथी आठ मुहूर्त अने उत्कृष्ट दस कोटाकोटी सागरोपमनी स्थिति तथा एक ह-

पमनी छे, कारण के 'थिराइछक्कदेवदुगे दस' स्थिरादि षट्क अने देवद्विकनी दस कोटाकोटी सागरोपमनी स्थिति छे-एवुं शास्त्रवचन छे. अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय अने अयशःकीर्तिनामनी जघन्य स्थिति पल्योपमना असंख्यातमा भागे न्यून बे सप्तमांश सागरोपम अने उत्कृष्ट वीश कोटाकोटी सागरोपमनी स्थिति छे. एम निर्माणनाम संबन्धे पण कहेवुं. तीर्थंकरनामनी जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तःकोटाकोटी सागरोपमनी स्थिति छे. (प्र०)—जो तीर्थंकरनामनी जघन्यथी अन्तःकोटाकोटी सागरोपम प्रमाण स्थिति छे तो तेटली स्थिति तिर्यंचोना भव सिवाय पूरी करवी अशक्य छे, माटे केटलाक काळ सुधी तीर्थंकरनाम कर्मनो सत्तावाळो पण तिर्यंच होय अने आगममां तो तिर्यंचमां तीर्थंकरनामनी सत्तानो निषेध कर्यो छे. कह्युं छे के—

तिरिएसु नत्थि तित्थयरनामसंतं ति देसियं समए । कह य तिरिओ न होही अयरोवमकोडाकोडीओ ॥

तिर्यंचोमां तीर्थंकर नाम सत्तामां नथी एम सिद्धान्तमां कह्युं छे, तो तेनी अन्तः कोटाकोटी सागरोपमनी स्थिति होवाथी ते तिर्यंच केम न थाय ? (उ०)—अहीं जे निकाचित तीर्थंकर नाम कर्म छे तेनी सत्तानो तिर्यंच गतिमां निषेध कर्यो छे. जे उद्वर्तना अने अपवर्तना ने योग्य तीर्थंकर नाम कर्म छे ते तिर्यंचगतिमां होय तो पण तेनो विरोध नथी. कह्युं छे के—

"जमिह निकाइयं तित्थं तिरियभवे तं निसेहियं संतं । इयरम्मि नत्थि दोसो उव्वट्टण–वट्टणासज्जे ॥"

जे अहीं निकाचित तीर्थंकर नाम कर्म छे तेनी सत्तानो तिर्यंच भवमां निषेध कर्यो छे, परन्तु अन्य उद्वर्तना अने अपवर्तना साध्य (अनिकाचित) तीर्थंकरनामनी सत्तामां कंइपण दोष नथी.

२७–२८. गोत्र अने अन्तरायना सूत्रो स्पष्ट छे. परन्तु 'अंतराइयस्स णं पुच्छा'—अंतराय संबन्धे पृच्छा. ए सूत्रमां 'पांचे प्रकारना'

य वाससताइं अबाहा। णीयागोत्तस्स पुच्छा। गोयमा! जहा अप्पसत्थविहायोगनिनामस्स।

२८. अंतराइए णं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तीसं सागरोवमकोडाकोडीओ, तिण्णि य वाससहस्साइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मट्ठिती कम्मनिसेगो।

२९. एगिंदिया णं भंते! जीवा णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं बंधंति? गोयमा! जहन्नेणं सागरोवमस्स तिण्णि सत्तभागा पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणया, उक्कोसेणं ते चेव पडिपुण्णे बंधंति। एवं निद्दापंचगस्स-

जार वरसनो अबाधाकाळ जाणवो. नीच गोत्रनी स्थिति संबंधे पृच्छा. हे गौतम! जेम अप्रशस्तविहायोगति नामनी स्थिति कही छे तेम जाणवी.

२८. अंतराय संबंधे पृच्छा. हे गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्टथी त्रीश कोटाकोटी सागरोपमनी स्थिति तथा त्रण हजार वरसनो अबाधाकाळ जाणवो अने अबाधाकाळ न्यून कर्मनी स्थिति ते कर्मनो निषेक समजवो.

२९. हे भगवन्! एकेन्द्रिय जीवो ज्ञानावरणीय कर्मनी केटली स्थिति बांधे? हे गौतम! जघन्यथी पल्योपमना असंख्यातमा भाग वडे न्यून सागरोपमना त्रण सप्तमांश अने उत्कृष्ट परिपूर्ण सागरोपमना त्रण सप्तमांश स्थिति बांधे. ए प्रमाणे पांच निद्रा

ए वाक्यनो अध्याहार करवो. एटले पांचे प्रकारना अंतराय संबंधे प्रश्न जाणवो. अने उत्तर पण पांच प्रकारना अंतराय कर्म संबन्धे जाणवो. ए प्रमाणे सामान्यपणे सर्व प्रकृतिओनुं जघन्य अने उत्कृष्ट स्थितिनुं परिमाण कह्युं.

२९. हवे एकेन्द्रियोने आश्रयी सर्व उत्तरप्रकृतिओनी स्थितिनुं परिमाण कहे छे—'एगिंदिया णं भंते! जीवा णाणावरणिज्जस्स

वि, दसणचउक्कस्सवि । एगिंदिया णं भंते ! ...
रोवमस्स दिवड्ढं सत्तभागं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागेणं ऊणयं,उक्कोसेणं तं चेव पडिपुण्णं बंधंति । असायवेयणिज्जस्स जहा णाणावरणिज्जस्स । एगिंदिया णं भंते ! जीवा सम्मत्तवेयणिज्जस्स कम्मस्स किं बंधंति ? गोयमा ! णत्थि किंचि बंधंति । एगिंदिया णं भंते ! जीवा मिच्छत्तवेदणिज्जस्स कम्मस्स किं बंधंति ? गोयमा ! जहन्नेणं सागरोवमं पलितोवमस्स असंखेज्जतिभागेणं ऊणं, उक्कोसेणं तं चेव पडिपुण्णं बंधंति । एगिंदिया णं

अने चार दर्शनावरणनी पण स्थिति जाणवी. हे भगवन् ! एकेन्द्रियो सातावेदनीय कर्मनी केटली स्थिति बांधे ? हे गौतम ! जघन्य पल्योपमना असंख्यातमा भाग वडे न्यून सागरोपमनो दोढ सप्तमांश अने उत्कृष्ट परिपूण दोढ सप्तमांश सागरोपमनी स्थिति बांधे. असातावेदनीयनी ज्ञानावरणीयनी पेठे जाणवी. हे भगवन् ! एकेन्द्रियो सम्यक्त्व वेदनीय कर्मनी केटली स्थिति बांधे ? हे गौतम कंइपण न बांधे. हे भगवन् ! एकेन्द्रिय जीवो मिथ्यात्व वेदनीय कर्मनी केटली स्थिति बांधे ? हे गौतम ! जघन्य पल्योपमना असंख्यातमा भाग वडे न्यून एक सागरोपम अने उत्कृष्ट परिपूर्ण एक सागरोपम बांधे. हे भगवन् ! एकेन्द्रिय जीवो सम्य-

कम्मस्स किं बंधंति ? 'हे भगवन् ! एकेन्द्रिय जीवो ज्ञानावरणीय कर्मनी केटली स्थिति बांधे ?' इत्यादि: अहीं आ प्रकारनो नियम छे के जे जे कर्मनी जे जे उत्कृष्ट स्थिति पूर्वे कही छे ते ते स्थितिने मिथ्यात्वनी सित्तेर कोटाकोटी सागरोपम प्रमाण स्थिति वडे भागता जे आवे तेथी पल्योपमना असंख्यातमे भागे न्यून जघन्य स्थिति जाणवी, अने तेज पल्योपमना असंख्यातमा भाग सहित परिपूर्ण उत्कृष्ट स्थिति होय छे. आ परिभाषाने ख्यालमां राखी सर्वे एकेन्द्रियना सूत्रनो स्वयं विचार करवो. तो पण शिष्यना उपर उपकार करवा

भंते ! जीवा सम्मामिच्छत्तवेयणिज्जस्स किं बंधंति ? गोयमा ! णत्थि किंचि बन्धन्ति। एगिंदिया णं भंते ! जीवा कसायबारसगस्स किं बंधंति ? गोयमा ! जहन्नेणं सागरोवमस्स चत्तारि सत्तभागे पलितोवमस्स असंखेज्जतिभागेणं ऊणते, उक्कोसेणं ते चेव पडिपुण्णे बंधंति, एवं जाव कोहसंजलणाएवि जाव लोभसंजलणाएवि। इत्थिवेदस्स जहा सातावेदणिज्जस्स। एगिंदिया पुरिसवेदस्स कम्मस्स जहन्नेणं सागरोवमस्स एगं सत्तभागं

गमिथ्यात्व वेदनीयनी केटली स्थिति बांधे ? हे गोतम ! कंइ पण न बांधे. हे भगवन् ! एकेन्द्रियो चार कषायनी केटली स्थिति बांधे ? हे गौतम ! जघन्य पल्योपमना असंख्यातमा भागवडे न्यून सागरोपमना चार सप्तमांश प्रमाण बांधे अने उत्कृष्ट पूरा चार सप्तमांश सागरोपम बांधे. ए प्रमाणे संज्वलन क्रोध यावत् संज्वलन लोभनी पण स्थिति जाणवी. स्त्रीवेदनी स्थिति सातावेदनीयनी पेठे जाणवी. एकेन्द्रियो पुरुषवेद कर्मनी स्थिति पल्योपमना असंख्यातमा भाग वडे न्यून एक सप्तमांश सागरोपम अने उत्कृष्ट परि-

स्थितिनुं परिमाण बतावीए छीए—पांच ज्ञानावरण, नव दर्शनावरण, असातावेदनीय अने पांच अंतराय कर्मनो एकेन्द्रियोने जघन्य स्थितिबंध पल्योपमना असंख्यातमा भागे न्यून सागरोपमना त्रण सप्तमांश होय छे अने उत्कृष्ट तेज परिपूर्ण सागरोपमना त्रण सप्तमांश जाणवा. सातावेदनीय, स्त्रीवेद, मनुष्यगति अने मनुष्यानुपूर्वीनो जघन्य स्थितिबंध पल्योपमना असंख्यातमा भागे न्यून सागरोपमनो दोढ सप्तमांश अने उत्कृष्टथी तेज संपूर्ण दोढ सप्तमांश सागरोपम जाणवो. मिथ्यात्वनो जघन्यथी स्थितिबंध पल्योपमना असंख्यातमा भागे न्यून सागरोपमनो एक सप्तमांश अने उत्कृष्टथी सागरोपमनो संपूर्ण एक सप्तमांश होय छे. सम्यक्त्व वेदनीय अने सम्यग्मिथ्यात्व वेदनीयनो कंइपण बंध करतो नथी. एटले उदयरूपे आत्मप्रदेशोनी साथे संबन्ध करतो नथी ए भावार्थ छे. कारण के एकेन्द्रियोने सम्यक्त्वमोहनीय अने सम्यग्मिथ्यात्वमोहनीयना उदयनो असंभव छे. सम्यक्त्वमोहनीय अने सम्यग्मिथ्यात्व-

पलितोवमस्स असंखेज्जतिभागेणं ऊणयं, उक्कोसेणं तं चेव पडिपुण्णं बंधंति। एगिंदिया नपुंसगवेदस्स कम्मस्स जहन्नेणं सागरोवमस्स दो सत्तभागे पलितोवमस्स असंखेज्जतिभागेणं ऊणए, उक्कोसेणं ते चेव पडिपुण्णे बंधंति। हासरतीते जहा पुरिसवेदस्स, अरतिभयसोगदुगुंछाए जहा नपुंसगवेयस्स। नेरइयाउय देवाउय निरयगतिनाम देवगतिनाम वेउव्वियसरीरनाम आहारगसरीरनाम नेरइयाणुपुव्विनाम देवाणुपुव्विनाम तित्थगरणाम--एताणि नव पदाणि ण बंधंति। तिरिक्खजोणियाउयस्स जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी सत्तहिं वाससहस्सेहिं वासस-

---

पूर्ण तेज स्थिति बांधे. एकेन्द्रियो नपुंसकवेदनी स्थिति जघन्य पल्योपमना असंख्यातमा भाग वडे न्यून बे सप्तमांश सागरोपम अने उत्कृष्ट परिपूर्ण तेटलीज स्थिति बांधे. हास्य अने रतिनी स्थिति पुरुषवेदना जेटली बांधे. अरति, भय, शोक अने जुगुप्सानी स्थिति नपुंसकवेदना जेटली बांधे. नैरयिकायुष, देवायुष, नरकगतिनाम, देवगतिनाम, वैक्रियशरीरनाम, आहारकशरीरनाम, नरकानुपूर्वीनाम, देवानुपूर्वीनाम अने तीर्थंकरनाम ए नव प्रकृतिओ बांधतो नथी. तिर्यंचायुषनी स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट सात हजार अने एक हजारना त्रीजा भाग वडे अधिक पूर्व कोटी वर्षनी बांधे. एम मनुष्यायुषनी पण स्थिति जाणवी. तिर्यंचगतिनामनी स्थिति

मोहनीयनो साक्षात् बंध तो घटतो ज नथी ए हकीकत पूर्वे कहेली छे. सोळ कषायनो जघन्य बंध पल्योपमना असंख्यातमा भागे न्यून सागरोपमना चार सप्तमांश अने उत्कृष्टथी पूरा चार सप्तमांश जाणवो. पुरुषवेद, हास्य, रति, प्रशस्तविहायोगति, स्थिरादिषट्क, प्रथम संस्थान, प्रथम संघयण, शुक्लवर्ण, सुरभिगन्ध, मधुर रस अने उच्च गोत्रनो जघन्य बन्ध पल्योपमना असंख्यातमा भागे न्यून सागरोपमनो एक सप्तमांश, अने उत्कृष्टथी परिपूर्ण सागरोपमनो एक सप्तमांश जाणवो. बीजा न्यग्रोधपरिमंडल संस्थान अने ऋषभ-

हस्सतिभागेण य अहियं बंधंति । एवं मणुस्साउयस्सवि । तिरियगतिनामाए जहा नपुंसगवेदस्स। मणुयगतिनामाए जहा सातावेदणिज्जस्स । एगिंदियनामाए पंचिंदियजातिनामाए य जहा नपुंसगवेदस्स । वेइंदियतेइंदियजातिनामाए पुच्छा । जहन्नेणं सागरोवमस्स नव पणतीसतिभागे पलितोवमस्स असंखेज्जतिभागेणं ऊणए, उक्कोसेणं ते चेव पडिपुण्णे बंधंति । चउरिंदियनामाएवि जहन्नेणं सागरोवमस्स णव पणतीसतिभागे पलितोवमस्स असंखेज्जतिभागेणं ऊणए, उक्कोसेणं ते चेव पडिपुण्णे बंधंति। एवं जत्थ जहण्णगं दो सत्तभागा ति-

नपुंसकवेदना जेटली अने मनुष्यगति नामनी स्थिति सतावेदनीयना जेटली समजवी. एकेन्द्रियनामनी अने पंचेन्द्रियनामनी नपुंसक वेदनी स्थिति प्रमाणे जाणवी. वेइन्द्रिय अने तेइन्द्रिय नामनी जघन्य स्थिति पल्योपमना असंख्यातमा भागे न्यून सागरोपमना नव पांत्रीशांश अने उत्कृष्ट संपूर्ण तेटलीज स्थिति वांधे. चउरिन्द्रियनामनी पण जघन्य पल्योपमना असंख्यातमा भागे न्यून सागरोपमना नव पांत्रीशांश अने उत्कृष्ट संपूर्ण तेटलीज स्थिति वांधे. ए प्रमाणे ज्यां सागरोपणना वे सप्तमांश, त्रण के चार सप्तमांश अथवा अठ्यावीस भागनी स्थिति होय त्यां तेटला भाग जघन्यथी पल्योपमना असंख्यातमा भागे न्यून कहेवा. अने ज्यां जघन्यथी एक के दोढ सप्तमां-

नाराच संघयणनो जघन्य स्थितिवंध पल्योपमना असंख्यातमा भागे न्यून सागरोपमना छ पांत्रीशांश, अने उत्कृष्टथी सागरोपमना पूरा छ पांत्रीशांश समजवा. त्रीजा सादिसंस्थान, अने नाराच संघयणनो जघन्य बंध पल्योपमना असंख्यातमा भागे न्यून सागरोपमना सात पांत्रीशांश अने उत्कृष्ट वन्ध पूरा सात पांत्रीशांश जाणवो. रक्तवर्ण अने कषाय-तूरा रसनो जघन्य स्थितिवन्ध पल्योपमना असंख्यातमा भागे न्यून सागरोपमना छ अठ्यावीशांश अने उत्कृष्ट पूरा छ अठ्यावीशांश जाणवा. पीतवर्ण अने अम्लरसनो जघन्य

न्नि वा चत्तारि वा सत्तभागा अट्ठावीसतिभागा भवंति, तत्थ णं जहण्णेणं ते चेव पलितोवमस्स असंखेज्जतिभागेणं ऊणगा भाणितव्वा, उक्कोसेणं ते चेव पडिपुण्णे बंधंति। जत्थ णं जहण्णेणं एगो वा दिवड्ढो वा सत्तभागो तत्थ जहन्नेणं तं चेव भाणितव्वं, उक्कोसेणं तं चेव पडिपुण्णं बंधंति। जसोकित्तिउच्चागोताणं जहण्णेणं सागरोवमस्स एगं सत्तभागं पलितोवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणं, उक्कोसेणं तं चेव पडिपुण्णं बंधंति। अंतराइयस्स णं भंते! पुच्छा। गोयमा! जहा णाणावरणिज्जस्स, जाव उक्कोसेणं ते चेव पडिपुण्णे बंधंति।

शनी स्थिति होय त्यां तेज भाग पल्योपमना असंख्यातमा भागे न्यून कहेवो अने उत्कृष्ट तेज भाग परिपूर्ण बांधे एम समजवुं. यशःकीर्ति अने उच्चगोत्रनी जघन्य स्थिति पल्योपमना असंख्यातमा भागे न्यून सागरोपमनो एक सप्तमांश अने उत्कृष्ट तेज परिपूर्ण बांधे छे. अन्तराय संबन्धे प्रश्न. हे गौतम! जेम ज्ञानावरणीयनी स्थिति कही छे तेम कहेवी. यावत् उत्कृष्टपणे तेज परिपूर्ण बांधे छे.

स्थितिबन्ध पल्योपमना असंख्यातमा भागे न्यून सागरोपमना पांच अठ्यावीशांश अने उत्कृष्ट सागरोपमना पूरा पांच अठ्यावीशांश समजवा. नीलवर्ण अने कटु रसनो जघन्य बंध पल्योपमना असंख्यातमा भागे न्यून सागरोपमना सात अठ्यावीशांश अने उत्कृष्ट सागरोपमना पूरा सात अठ्यावीशांश होय छे. नपुंसकवेद, भय, जुगुप्सा, शोक, अरति, तिर्यंचद्विक, औदारिकद्विक, छेल्लुं हुंडक संस्थान अने छेल्लुं छेवट्ठ संघयण, कृष्णवर्ण, तिक्तरस, अगुरुलघु, पराघात, उच्छ्वास, उपघात, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक, अस्थिर अशुभ, दुर्भग, दुःस्वर, अनादेय, अयशःकीर्ति, स्थावर, आतप, उद्द्योत, अशुभविहायोगति, निर्माण, एकेन्द्रिय जाति, पंचेन्द्रिय जाति,

३०. वेइंदिया णं भंते ! जीवा णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं बंधंति ? गोयमा ! जहन्नेणं सागरोवमपणवीसाते तिण्णि सत्तभागा पलितोवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणया, उक्कोसेणं ते चेव पडिपुण्णे बंधंति, एवं निद्दापंचगस्सवि । एवं जहा एगिंदियाणं भणितं तहा वेइंदियाणवि भाणितव्वं, नवरं सागरोवमपणवीसाए सह भा-

३०. हे भगवन् ! वेइन्द्रिय जीवो ज्ञानावरणीय कर्मनो केटलो बन्ध करे ? हे गौतम ! जघन्यथी पल्योपमना असंख्यातमा भागे न्यून सागरोपमना पचीश त्रण सप्तमांश अने उत्कृष्टथी तेटलोज पूरो बन्ध करे. एम पांच निद्रानो बन्ध पण जाणवो. ए प्रमाणे जेम एकेन्द्रियोने कह्यो छे तेम वेइन्द्रियोने पण कहेवो. परन्तु पचीशगुणा सागरोपम पल्योपमना असंख्यातमा भागे न्यून बन्ध कहेवो.

तैजस अने कार्मणनो जघन्य स्थितिबन्ध पल्योपमना असंख्यातमा भागे न्यून सागरोपमना वे सप्तमांश अने उत्कृष्ट सागरोपमना पूरा बे सप्तमांश होय छे. नरकद्विक, देवद्विक, वैक्रियचतुष्क, आहारकचतुष्क अने तीर्थकरनामनो एकेन्द्रियोने बन्ध होतो नथी. आयुषकर्मनो विचार करतां एकेन्द्रियो तथाभवस्वभावथी देवायुष अने नरकायुष बांधता नथी, परन्तु तिर्यंचायुष अने मनुष्यायुष बांधे छे. अने ते बांधता जघन्यथी अन्तर्मुहूर्तनुं अने उत्कृष्ट साधिक पूर्वकोटी वर्ष प्रमाण बांधे छे. केवळ अहीं उत्कृष्ट आयुषबन्धनो विचार छे माटे बावीश हजार वरसना आयुषवाळा एकेन्द्रियो पोताना आयुषनो त्रीजो भाग बाकी होय त्यारे परभवना आयुषनो बंध करता होय ते लेवा. माटे हजार वरसना त्रीजा भाग सहित सात हजार अधिक जाणवा. तेथी तिर्यंचायुष अने मनुष्यायुषना विचारमां सूत्रमां कहेलुं प्रमाण घटे छे. ए प्रमाणे कर्म बन्ध करनार एकेन्द्रियोने आश्रयी जघन्य अने उत्कृष्ट स्थितिनुं परिमाण कह्युं.

३०. हवे वेइन्द्रिय जीवोने आश्रयी स्थितिनुं निरूपण करे छे—'वेइंदिया णं भंते ! जीवा'—हे भगवन् ! वेइन्द्रिय जीवो ज्ञानावरणीय कर्मनो केटलो बन्ध करे ? इत्यादि. अहीं आ परिभाषा छे—जे जे कर्मप्रकृतिनी जे जे उत्कृष्ट स्थिति पूर्वे कहेवामां आवी

णितव्वा पलितोवमस्स असंखेज्जतिभागेणं ऊणा, सेसं तं चेव पडिपुण्णं बंधंति। जत्थ एगिंदिया न बंधंति तत्थ एतेवि न बंधंति। बेइंदिया णं भंते! जीवा मिच्छत्तवेयणिज्जस्स किं बंधंति? गोयमा! जहन्नेणं सागरोवमपणवीसं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेण ऊणयं, उक्कोसेणं तं चेव पडिपुण्णं बंधंति। तिरिक्खजोणियाउयस्स जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडिं चउहिं वासेहिं अहियं बंधंति। एवं मणुयाउयस्सवि, सेसं जहा एगिंदियाणं जाव अंतराइयस्स।

बाकी बधुं तेमज पूर्ण बंध करे छे. जे कर्मप्रकृतिने एकेन्द्रियो बांधता नथी तेने ए बेइन्द्रियो पण बांधता नथी. हे भगवन्! बेइन्द्रिय जीवो मिथ्यात्ववेदनीय कर्मनी केटली स्थिति बांधे? हे गौतम! जघन्यथी पल्योपमना असंख्यातमा भागे न्यून पचीश सागरोपम अने उत्कृष्टथी परिपूर्ण तेटलोज बन्ध करे छे, तिर्यंचायुषनो जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट चार वरस अधिक पूर्वकोटी वर्षनो बन्ध करे छे. ए प्रमाणे मनुष्यायुषनो पण बन्ध जाणवो. बाकी बधुं एकेन्द्रियोनी पेठे यावत् अन्तराय कर्म सुधी कहेवुं.

छे ते ते स्थितिने मिथ्यात्वनी सित्तेर कोटाकोटी प्रमाण स्थिति वडे भाग आपवाथी जे आवे तेने पचीश वडे गुणाकार करवो अने जेटलो थाय तेटलो पल्योपमना असंख्यातमा भागे न्यून करतां स्थितिबन्ध करनारा बेइन्द्रियोनुं जघन्य स्थितिपरिमाण आवे छे अने परिपूर्ण तेटलुंज उत्कृष्ट स्थितिपरिमाण छे. जेम के—पांच ज्ञानावरण, नव दर्शनावरण, असातावेदनीय अने पांच अन्तरायनुं सागरोपमना त्रण सप्तमांशने पचीशे गुणवा पटले वास्तविक रीते पचीश सागरोपमना त्रण सप्तमांश पल्योपमना असंख्यातमा भागे न्यून जघन्यस्थितिपरिमाण होय छे अने परिपूर्ण तेटलाज सागरोपम उत्कृष्ट स्थितिपरिमाण छे.

३१. तेइंदिया णं भंते ! जीवा णाणावरणिज्जस्स किं बंधंति ? गोयमा! जहन्नेणं सागरोवमपण्णासाए तिण्णि सत्तभागा पलितोवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणया, उक्कोसेणं ते चेव पडिपुण्णे बंधंति, एवं जस्स जतिभागा ते तस्स सागरोवमपण्णासाए सह भाणितव्वा । तेइंदिया णं भंते ! मिच्छत्तवेदणिज्जस्स कम्मस्स किं बंधंति? गोयमा ! जहन्नेणं सागरोवमपण्णासं पलितोवमस्सासंखेज्जतिभागेणं ऊणयं, उक्कोसेणं तं चेव पडिपुण्णं बंधंति । तिरिक्खजोणियाउयस्स जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं,उक्कोसेणं पुव्वकोडिं सोलसेहिं राइंदिएहिं राइंदियतिभागेण य अ-

३१. हे भगवन् ! तेन्द्रिय जीवो ज्ञानावरण कर्मनी केटली स्थिति बांधे ? हे गौतम ! जघन्यथी पल्योपमना असंख्यातमा भागे न्यून पचासगुणा त्रण सप्तमांश सागरोपम अने उत्कृष्टथी परिपूर्ण तेटलीज स्थिति बांधे छे. एकेन्द्रियने सागरोपमना जेटला भागनी स्थिति कही तेथी तेइन्द्रियोने पचासगुणा सागरोपम सहित कहेवी. हे भगवन् ! तेइन्द्रिय जीवो मिथ्यात्ववेदनीय कर्मनी केटली स्थिति बांधे ? हे गौतम ! जघन्यथी पल्योपमना असंख्यातमे भागे न्यून पचास सागरोपम अने उत्कृष्टथी पूरा पचास सागरोपमनी स्थिति बांधे छे. तिर्यंचायुपनी स्थिति जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्टथी दिवसना त्रीजा भाग सहित सोळ दिवस अधिक पूर्वकोटी

३१. तेइन्द्रियना स्थितिबन्धना विचारमां कर्मनी उत्कृष्ट स्थितिने सित्तेर कोटाकोटीए भागता जे आवे तेने पचासे गुणवा. चउरिन्द्रियना बन्धना विचारमां सोए गुणवा अने असंज्ञी पंचेन्द्रियना बंधमां हजारे गुणवा, ते संबन्धे कर्मप्रकृतिना संग्रहणीकार कहे छे—"पणवीसा पन्नासा सयं सहस्सं च गुणकारो। कमसो विगल-असन्नीणं"–एकेन्द्रियना बन्धने पचीश, पचास, सो अने हजारे गुणतां जेटलो थाय तेटलो अनुक्रमे विकलेन्द्रिय अने असंज्ञीने बन्ध होय छे" तेथी पने अनुसारे सुगम होवाथी सूत्रनो स्वयं विचार करवो.

हियं बंधंति, एवं मणुस्साउयस्सवि, सेसं जहा बेइंदियाणं जाव अंतराइयस्स ।

३२. चउरिंदिया णं भंते ! जीवा णाणावरणिज्जस्स किं बंधंति ? गोयमा ! जहन्नेणं सागरोवमसयस्स तिण्णि सत्तभागे पलितोवमस्स असंखेज्जतिभागेणं ऊणए, उक्कोसेणं ते चेव पडिपुण्णे बंधंति, एवं जस्स जति भागा तस्स सागरोवमसतेण सह भाणितव्वा । तिरिक्खजोणियाउयस्स कम्मस्स जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडिं दोहिं मासेहिं अहियं । एवं मणुस्साउयस्सवि, सेसं जहा बेइंदियाणं, णवरं मिच्छत्तवेदणिज्जस्स ज-

---

वरसनी बांधे छे. ए प्रमाणे मनुष्यायुषनी पण जाणवी. बाकीनुं बधुं बेइन्द्रियोने कह्युं तेम यावत् अन्तराय कर्म सुधी कहेवुं.

३२. हे भगवन् ! चउरिन्द्रिय जीवो ज्ञानावरणनी केटली स्थिति बांधे ? हे गौतम ! जघन्यथी पल्योपमना असंख्यातमा भागे न्यून सो सागरोपमना त्रण सप्तमांश अने उत्कृष्ट परिपूर्ण तेटली स्थिति बांधे. ए प्रमाणे जे प्रकृतिनी (एकेन्द्रियोने) सागरोपमना जेटला भागनी स्थिति कही छे ते प्रकृतिनी (तेइन्द्रियोने) सोगुणा सागरोपम सहित स्थिति कहेवी. तिर्यंचायुषनी जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्टथी बे मास अधिक पूर्वकोटी वरसनी बांधे छे. ए प्रमाणे मनुष्यायुषनी पण स्थिति जाणवी. बाकी बधुं बेइन्द्रियोनी पेठे

"नवरं सागरोपमपण्णवीसाए तिण्णि सत्तभागा असंखेज्जभागेणं ऊणगा"—परंतु "बेइन्द्रियने पल्योपमना असंख्यातमा भागे न्यून पचीश सागरोपमना त्रण सप्तमांश प्रमाण स्थिति होय छे" अहीं गणितनो विचार आ प्रमाणे छे-पचीश सागरोपमने साते भागता जे आवे तेने त्रण गुणा करी पल्योपमना असंख्यातमा भागे हीन करवा.एम बधे स्थळे ज्यां जे रीते संभवे ते रीते गणितनो विचार करवो.

३२. संज्ञी पंचेन्द्रियना वन्धसूत्रमां ज्ञानावरणीयादि कर्मनो जघन्य स्थितिवन्ध अन्तर्मुहूर्तादि परिमाण कह्यो छे ते क्षपकने पोत-

हन्नेणं सागरोवमसतं पलितोवमस्स असंखेज्जतिभागेणं ऊणयं, उक्कोसेणं तं चेव पडिपुण्णं बंधंति, सेसं जहा वेइंदियाणं जाव अंतराइयस्स ।

३३. असण्णी णं भंते ! जीवा पंचिंदिया णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं बंधंति? गोयमा! जहन्नेणं सागरोवमसहस्सस्स तिण्णि सत्तभागे पलितोवमस्सासंखेज्जतिभागेणं ऊणए,उक्कोसेणं ते चेव पडिपुण्णे बन्धंति,एवं सो चेव गमो जहा बेइंदियाणं, णवरं सागरोवमसहस्सेण समं भाणितव्वं जस्स जति भागत्ति । मिच्छत्तवेदणिज्जस्स जहन्नेणं सागरोवमसहस्सं पलितोवमस्सासंखेज्जतिभागेणं ऊणयं,उक्कोसेणं तं चेव पडिपुण्णं। नेरइयाउयस्स

कहेवुं. परन्तु मिथ्यात्ववेदनीयनी जघन्य पल्योपमना असंख्यातमा भागे न्यून सो सागरोपमनी अने उत्कृष्ट परिपूर्ण तेटलीज स्थिति बांधे छे. बाकी बधुं बेइन्द्रियोने कह्युं तेम अन्तराय कर्म सुधी कहेवुं.

३३. हे भगवन्! असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवो ज्ञानावरणीय कर्मनी केटली स्थिति बांधे? हे गौतम! जघन्यथी पल्योपमना असंख्यातमा भागे न्यून हजार सागरोपमना त्रण सप्तमांश अने उत्कृष्टथी परिपूर्ण तेटलीज स्थिति बांधे. ए प्रमाणे जेम बेइन्द्रियो संबंधे पाठ कह्यो ते प्रमाणे असंज्ञी पंचेन्द्रियने कहेवो. परन्तु जे प्रकृतिनी सागरोपमना जेटला भागनी स्थिति कही छे तेने हजारगुणा सागरोपम

ताना स्थितिबंधना छेल्ला समये जाणवो. पांच निद्रा, असातावेदनीय, मिथ्यात्व अने बार कषायादिनो क्षपणानी पूर्वे बंध थाय छे, तेथी तेओने जघन्यथी पण अन्तःकोटाकोटी सागरोपम प्रमाण बंध होय छे अने उत्कृष्ट अतिसंक्लेशवाळा मिथ्यादृष्टिने होय छे. परन्तु तिर्यंचायुष, मनुष्यायुष अने देवायुषनो उत्कृष्ट बंध पोतपोताना बन्ध करनारामां अतिविशुद्धने होय छे.

जहन्नेणं दस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं पलितोवमस्स असंखेज्जतिभागं पुव्वकोडितिभागब्भहियं बंधंति। एवं तिरिक्खजोणियाउयस्सवि,णवरं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं। एवं मणुयाउयस्सवि, देवाउयस्स जहा नेरइयाउयस्स। असण्णी णं भंते! जीवा पंचिंदिया निरयगतिनामाए कम्मस्स किं बंधंति? गोयमा! जहन्नेणं सागरोवमसहस्सस्स दो सत्तभागे पलितोवमस्स असंखेज्जतिभागेणं ऊणए, उक्कोसेणं ते चेव पडिपुण्णे, एवं तिरियगतिनामाएवि। मणुयगतिनामाएवि एवं चेव,णवरं जहन्नेणं सागरोवमसहस्सस्स दिवड्ढं सत्तभागं पलितोवमस्सासंखेज्जइभागेण ऊणं,उक्कोसेणं तं चेव पडिपुण्णं बंधंति। एवं देवगतिनामाएवि, नवरं जहन्नेणं सागरोवमसहस्सस्स एगं सत्तभागं पलिओवमस्सासंखेज्जइभागेणं ऊणं, उक्कोसेणं तं चेव पडिपुण्णं बंधंति। वेउव्वियस-

---

सहित कहेवी. मिथ्यात्ववेदनीय कर्मनी स्थिति जघन्यथी पल्योपमना असंख्यातमा भागे न्यून हजार सागरोपमनी अने उत्कृष्टथी पूरा तेटलाज सागरोपमनी बांधे छे. नैरयिकायुषनी स्थिति जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अधिक दस हजार वर्ष अने उत्कृष्ट पूर्वकोटीना त्रीजा भाग अधिक पल्योपमनो असंख्यातमो भाग बांधे छे. एम तिर्यंचायुषनी पण स्थिति जाणवी. परन्तु तेनी जघन्यथी अन्तर्मुहूर्तनी स्थिति बांधे छे. ए प्रमाणे मनुष्यायुषनी पण समजवी. देवायुषनी स्थिति नारकायुषनी पेठे जाणवी. हे भगवन्! असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवो नरकगतिनाम कर्मनी केटली स्थिति बांधे छे? हे गौतम! जघन्यथी पल्योपमना असंख्यातमा भागे न्यून हजार सागरोपमना बे सप्तमांश अने उत्कृष्ट परिपूर्ण तेज स्थिति बांधे छे. एम तिर्यंचगतिनाम संबन्धे जाणवुं. मनुष्यगतिनाम संबन्धे पण एमज समजवुं. परन्तु जघन्यथी पल्योपमना असंख्यातमा भागे न्यून हजार सागरोपमना दोढ सप्तमांश अने उत्कृष्ट तेज पूरी स्थिति बांधे छे.

रीरनामाए पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणं सागरोवमसहस्सस्स दो सत्तभागे पलितोवमस्सासंखेज्जतिभागेणं ऊणे, उक्कोसेणं दो पडिपुण्णे बंधंति। सम्मत्तसम्मामिच्छत्तआहारगसरीरनामाते तित्थगरनामाए ण किंचिवि बंधंति। अवसिट्ठं जहा बेइंदियाणं, णवरं जस्स जत्तिया भागा तस्स ते सागरोवमसहस्सेण सह भाणितव्वा सव्वेसिं आणुपुव्वीए जाव अंतराइयस्स।

३४. सण्णी णं भंते! जीवा पंचिंदिया णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं बंधंति ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तीसं सागरोवमकोडाकोडीओ, तिण्णि वाससहस्साइं अबाहा। सण्णी णं भंते! पंचिंदिया णिद्दापंचगस्स किं बंधंति ? गोयमा! जहन्नेणं अंतोसागरोवमकोडाकोडीओ, उक्कोसेणं तीसं सागरोवमकोडाकोडीओ,

---

एम देवगतिनाम संबन्धे जाणवुं. परन्तु पल्योपमना असंख्यातमा भागे न्यून हजार सागरोपमना एक सप्तमांश अने उत्कृष्ट पूरी तेज स्थिति बांधे छे. वैक्रिय शरीरनाम कर्म संबन्धे प्रश्न. हे गौतम! जघन्य पल्योपमना असंख्यातमा भागे न्यून हजार सागरोपमना बे सप्तमांश अने उत्कृष्ट तेज परिपूर्ण हजार सागरोपमना बे सप्तमांश बांधे छे. सम्यक्त्वमोहनीय, मिश्रमोहनीय, आहारकशरीरनाम अने तिर्थंकरनाम कर्मनो कांइपण बन्ध करता नथी. बाकी बधुं बेइन्द्रियोनी जेम जाणवुं. परन्तु जे प्रकृतिनी सागरोपमना जेटला भागनी स्थिति कही छे ते प्रकृतिनी हजारगुणा सागरोपम सहित कहेवी. एम सर्व प्रकृतिओनी अनुक्रमे स्थिति यावत् अंतराय सुधी जाणवी.

३४. हे भगवन्! संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवो ज्ञानावरणीय कर्मनी केटली स्थिति बांधे ? हे गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट त्रीश कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण बांधे. तेनो त्रण हजार वर्षनो अबाधाकाळ छे. हे भगवन्! संज्ञी पंचेन्द्रियो पांच निद्रानी केटली

तिण्णि य वाससहस्साइं अबाहा। दंसणचउक्कस्स जहा णाणावरणिज्जस्स। सायावेदणिज्जस्स जहा ओहिया ठिती भणिता तहेव भाणितव्वा, ईरियावहियबंधयं पडुच्च संपराइयबंधयं च। असायावेयणिज्जस्स जहा णिद्दापंचगस्स। सम्मत्तवेदणिज्जस्स सम्मामिच्छत्तवेदणिज्जस्स जा ओहिया ठिती भणिता तं बंधंति। मिच्छत्तवेदणिज्जस्स जहन्नेणं अंतोसागरोवमकोडाकोडीओ, उक्कोसेणं सत्तरिं सागरोवमकोडाकोडीओ, सत्तरि य वाससहस्साइं अबाहा। कसायबारसगस्स जहन्नेणं एवं चेव, उक्कोसेणं चत्तालीसं सागरोवमकोडाकोडीओ, चत्तालीस य वाससयातिं अबाहा। कोहमाणमायालोभसंजलणाए य दो मासा, मासो, अद्धमासो, अंतोमुहुत्तो, एवं जहन्नगं, उक्कोसगं पुण जहा कसायबारसगस्स। चउण्हवि आउयाणं जा ओहिया ठिती भणिता तं बंधंति। आहारगस-

---

स्थिति बांधे ? हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट त्रीश कोटाकोटी सागरोपम प्रमाण बांधे छे. तेनो अबाधाकाळ त्रण हजार वरसनो छे. दर्शनावरणचतुष्कनी ज्ञानावरणीयनी पेठे अने सातावेदनीयनी सामान्य वेदनीय कर्मनी स्थिति कही छे तेम ईर्यापथिक (योगनिमित्तक) बन्ध अने सांपरायिक (कापायिक) बन्धनी अपेक्षाए कहेवी. असातावेदनीय कर्मनी स्थिति निद्रापंचकनी पेठे अने सम्यक्त्वमोहनीय अने मिश्रमोहनीयनी औघिक–सामान्य स्थिति कही छे तेम बांधे छे. मिथ्यात्वमोहनीयनी जघन्य अन्तःकोटाकोटी अने उत्कृष्ट सित्तेर कोटाकोटी सागरोपम प्रमाण तथा सात हजार वर्षनो अबाधाकाळ जाणवो. बार कषायनी स्थिति जघन्य ए प्रमाणे– अन्तःकोटाकोटी अने उत्कृष्ट चाळीश कोटाकोटी सागरोपम प्रमाण छे. तेनो अबाधाकाळ चार हजार वर्षनो छे. संज्वलन, क्रोध, मान, माया अने लोभनो बे मास, मास, अर्धमास अने अन्तर्मुहूर्त एम जघन्य स्थितिबन्ध छे अने उत्कृष्ट बार कषायनी पेठे छे. चार आयुषनी

रीरस्स तित्थगरनामाए य जहण्णेणं अंतोसागरोवमकोडाकोडीतो, उक्कोसेण अंतोसागरोवमकोडाकोडीओ। पुरिसवेदणिज्जस्स जहन्नेणं अट्ठ संवच्छराइं, उक्कोसेणं दस सागरोवमकोडाकोडीओ, दस य वाससताइं अबाहा। जसोकित्तिणामाए उच्चागोत्तस्स एवं चेव, नवरं जहन्नेणं अट्ठ मुहुत्ता। अंतराइयस्स जहा णाणावरणिज्जस्स, सेसएसु सव्वेसु ठाणेसु संघयणेसु संठाणेसु वन्नेसु गंधेसु य जहन्नेणं अंतोसागरोवमकोडाकोडीओ, उक्कोसेणं जा जस्स ओहिया ठिती भणिता तं बंधंति, णवरं इमं नाणत्तं–अबाहा अबाहूणिया ण वुच्चति। एवं आणुपुव्वीते सव्वेसिं जाव अंतरायस्स ताव भाणितव्वं।

३८. णाणावरणिज्जस्स णं भंते! कम्मस्स जहण्णट्ठितीबंधए के? गोयमा! अण्णयरे सुहुमसंपरायते उवसामए

जे औघिक स्थिति कहेली छे ते प्रमाणे बांधे छे. आहारक शरीर अने तीर्थंकरनामनी जघन्य अन्तःकोटाकोटी सागरोपम अने उत्कृष्ट अन्तःकोटाकोटी सागरोपमनी स्थिति छे. पुरुषवेदनी जघन्य आठ वर्षनी अने उत्कृष्ट दस कोटाकोटी सागरोपमनी स्थिति छे. यशःकीर्तिनाम अने उच्चगोत्रनी ए प्रमाणे जाणवी. परन्तु जघन्य स्थिति आठ मुहूर्त समजवी. अंतरायनी स्थिति ज्ञानावरणीयनी जेम जाणवी. बाकी सर्व स्थानोमां संघयण, संस्थान वर्ण अने गंधनी जघन्य अन्तःकोटाकोटी सागरोपम अने उत्कृष्ट जे प्रकृतिनी जे सामान्य स्थिति कही छे तेने बांधे छे. परन्तु आ विशेषता छे के अबाधा अने अबाधा न्यून [निषेक] कहेवानो नथी. एम सर्व कर्मप्रकृतिओनी स्थिति अनुक्रमे यावत् अंतराय कर्म सुधी कहेवी.

३५. हे भगवन्! ज्ञानावरणीय कर्मनी जघन्य स्थिति बांधनार कोण छे? हे गौतम! कोइ पण उपशमक के क्षपक सूक्ष्मसंपराय

वा खवगए वा, एस णं गोयमा! णावरणिज्जस्स कम्मस्स जहण्णठितीबंधते, तव्वइरित्ते अजहण्णे, एवं एएणं अभिलावेणं मोहाउयवज्जाणं सेसकम्माणं भाणितव्वं। मोहणिज्जस्स णं भंते! कम्मस्स जहण्णठितीबंधते के? गोयमा! अन्नयरे बादरसंपराए उवसामए वा खवए वा, एस णं गोयमा! मोहणिज्जस्स कम्मस्स जहण्णठितीबंधते, तव्वतिरित्ते अजहण्णे। आउयस्स णं भंते! कम्मस्स जहण्णठितीबंधते के? गोयमा! जे णं जीवे असं-

छे. हे गौतम! ए ज्ञानावरणीय कर्मनो जघन्यस्थितिबन्धक छे. ते सिवाय बीजो अजघन्य (जघन्य सिवायनी) स्थितिनो बन्धक छे. ए प्रमाणे ए पाठ वडे मोहनीय अने आयुष सिवाय बाकीना बधा कर्मने माटे कहेवुं. हे भगवन्! मोहनीय कर्मनो जघन्यस्थितिबन्धक कोण छे? हे गौतम! कोइपण उपशमक के क्षपक बादरसंपराय होय छे. हे गौतम! ए मोहनीय कर्मनो जघन्यस्थितिबन्धक छे. ते सिवाय बीजो अजघन्यस्थितिबन्धक छे. आयुषकर्मनो जघन्यस्थितिबन्धक कोण छे? हे गौतम! असंक्षेप्याद्धाप्रविष्ट-

३५. अहीं संज्ञी पंचेन्द्रिय सूत्रमां ज्ञानावरणीयादि कर्मनो जघन्य स्थितिबन्ध अन्तर्मुहूर्तादि प्रमाण कह्यो. ते कया जीवोने विषे होय?' एम जिज्ञासु शिष्य पूछे छे—'नाणावरणिज्जस्स णं भंते! कम्मस्स जहण्णठिइबन्धए के? हे भगवन्! ज्ञानावरणीय कर्मनो जघन्य स्थितिबन्धक कोण होय-इत्यादि सुगम छे. परन्तु 'अन्यतर उपशमक के क्षपक सूक्ष्मसंपराय बांधे छे' एम कह्युं छे. तेनी व्याख्या आ प्रमाणे छे-अहीं ज्ञानावरणनो बन्ध क्षपक अने उपशमकने जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त प्रमाण होय छे, तेथी बन्नेने अन्तर्मुहूर्तना प्रमाणनो भेद नहि होवाथी 'उपशमक के क्षपक' एम कह्युं छे. कारण के बीजे क्षपकनी अपेक्षाए उपशमकने बमणो बन्ध कह्यो छे. केमके ए संबन्धे कर्मप्रकृति संग्रहणीकार कहे छे—'खवगुसामगपडिवंडमाणदुगुणो तहिं तहिं बन्धो'। (कर्म प्र० उपशमनाकरण गाथा ६१) क्षपक करतां उपशमकने अने तेथी उपशमश्रेणिथी पडनारने बमणो बमणो बन्ध थाय छे. तेथी वेदनीय

खेप्पद्धापविट्ठे, सव्वनिरुद्धे से आउते, सेसे सव्वमहंतीए आउयबंधद्धाए, तीसे णं आउयबंधद्धाए चरिमकालसमयंसि सव्वजहण्णियं ठिइं पज्जत्तापज्जत्तियं निव्वत्तेति, एस णं गोयमा ! आउयकम्मस्स जहण्णठितीबंधते, तव्वइरित्ते अजहण्णे ।

जेना आयुपबन्धनो काळ संक्षेप करी शकाय एम नथी एवो जे जीव छे, तेनुं सर्वनिरुद्ध–सौथी थोडुं आयुप के जे सौथी मोटा आयुपबन्धना काळना एक भाग रूप छे,एवा ते आयुपबन्धना छेल्ला काळमां वर्ततो पर्याप्त अने अपर्याप्तरूप एवी सौथी जघन्य स्थिति बांधे छे. हे गौतम ! ए आयुप कर्मनो जघन्यस्थितिबन्धक छे. ते सिवाय बीजो अजघन्यस्थितिबन्धक छे.

कर्मना सांपरायिक (कपायनिमित्तक) बन्धना विचारमां तेनो जघन्य स्थितिबन्ध क्षपकने बार मुहूर्तनो अने उपशमकने चोवीश मुहूर्तनो होय छे. नामगोत्रनो जघन्य बन्ध क्षपकने आठ मुहूर्त अने उपशमकने सोळ मुहूर्त छे. परन्तु उपशमकने पण बाकीना बन्धनी अपेक्षाए सौथी जघन्य बन्ध होय छे, माटे तेना सूत्रमां पण 'अन्नयरे सुहुमसंपराये उवसामए खवगे वा' कोइ पण उपशमक के क्षपक सूक्ष्मसंपराय जघन्यबंधक छे' एम कह्युं छे. अने एम कहेशे के—'मोहाउवज्जाणं सेसकम्माणं भाणियव्वं'ति आ पाठ वडे मोहनीय अने आयुप सिवाय बाकीना कर्म माटे कहेवुं.' उपसंहार सूत्रमां 'तव्वइरित्ते अजहन्ने' 'ते सिवाय बीजो अजघन्य छे.' एटले क्षपक अने उपशमक सूक्ष्मसंपराय सिवायना बीजा अजघन्य स्थितिबन्धक छे. आयुपना बन्धक सूत्रमां 'जे णं जीवे असंखिप्पद्धापविट्ठे' इत्यादि. 'जे जीव असंक्षेप्याद्धाप्रविष्ट छे' इत्यादि. अहीं जीवो बे प्रकारना छे—सोपक्रमआयुपवाळा अने निरुपक्रमआयुपवाळा. तेमां देवो, नारको, असंख्याता वरसना आयुपवाळा मनुष्य अने तिर्यञ्चो तथा संख्याता वरसना आयुपवाळा छतां पण चक्रवर्ती वगेरे उत्तम पुरुपो अने चरम शरीरी निरुपक्रमशरीरवाळा ज होय छे. बाकीना बधा सोपक्रम आयुपवाळा पण होय छे अने निरुपक्रम

आयुपवाळा पण होय छे. कह्युं छे के—

"देवा नेरइया वा असंखवासाउया तिरिमणुया । उत्तमपुरिसा य तहा चरमसरीरा य निरुवकमा ॥

सेसा संसारत्था भइया सोवक्कमा व इयरे वा । सोवक्कम–निरुवक्कमभेओ भणिओ समासेणं ॥"

तेमां देवो, नैरयिको तथा असंख्याता वरसना आयुपवाळा तिर्यंचो अने मनुष्यो पोतानुं छ मासनुं आयुष वाकी होय त्यारे अवश्य परभवना आयुषनो वंध करे छे. जे तिर्यंच अने मनुष्यो संख्याता वरसना आयुषवाळा छतां पण निरुपक्रमआयुपवाळा छे तेओ पण पोतानुं त्रीजा भागनुं आयुप वाकी होय त्यारे अवश्य परभवना आयुपनो वंध करे छे. जेओ सोपक्रमआयुपवाळा छे तेओ कदाच त्रीजा भागनुं आयुप वाकी छे जेओने एवा, अथवा त्रीजा भागना त्रीजा भागनुं आयुष वाकी जेओने छे एवा, यावत् असंक्षेप्याद्धाप्रविष्ट–जेनो न संक्षेप करी शकाय एटलोज मात्र आयुपनो काळ वाकी जेओने छे एवा परभवायुप वांधे छे, तेथी कहे छे—'जेणं जीवे' इत्यादि.–जे जीव असंक्षेप्याद्धा प्रविष्ट छे एटले जेणे त्रीजा भाग इत्यादि करवा वडे जेनो हवे संक्षेप–भाग थइ शके तेम नथी एवा काळमां प्रवेश करेलो छे, ए हेतुथी कहे छे–'से' तेनुं– असंक्षेप्य अद्धामां प्रविष्ट जीवनुं आयुष सर्वनिरुद्ध–उपक्रमना हेतुओ वडे अति संक्षेप करायेलुं छे, तेने मात्र आयुपवंध करवानो काळ वाकी छे एटले ते पछी जीवनकाळ नथी. एज वावतने वधारे स्पष्टतापूर्वक कहे छे—'सेसे सव्वमहंतीए आउयवन्धद्धाए' सौथी मोटा आयुषवंधना काळनो शेप भाग छे, तात्पर्य ए छे के आयुपवन्धनो काळ आठ आकर्षप्रमाण छे, तेनो शेप–एक आकर्षप्रमाण जेटलुं सौथी अल्प आयुप तेनुं वाकी छे. माटे ते न संक्षेप करी शकाय तेवा काळमां प्रविष्ट थयेलो अने आयुपवन्धना एक आकर्षरूपे छेल्ला समय–काळमां वर्ततो होय छे. अहीं चरमकालसमयना ग्रहण करवाथी परम सूक्ष्म समयनुं ग्रहण न करवुं, पण उपर कह्या प्रमाणे कालनुं ग्रहण करवुं, कारण के तेथी ओछा काळमां आयुपना वन्धनो असंभव छे. जेथी व्युत्क्रान्तिपदमां पूर्वे कह्युं छे के "हे भगवन्? जीवो स्थितिनाम सहित आयुपनो केटला आकर्ष वडे वन्ध करे? हे गौतम! जघन्यथी एक आकर्ष वडे अने उत्कृष्ट आठ आंकर्ष वडे आयुपनो वन्ध करे छे. एक आकर्ष वडे सर्व जघन्य आयुप वांधे छे. जेथी कह्युं छे के 'सर्व्वजहन्निय'

३६. उक्कोसकालट्ठितीयं णं भंते! णाणावरणिज्जं किं नेरइओ बंधति, तिरिक्खजोणिओ बंधइ, तिरिक्खजोणिणी बंधइ, मणुस्सो बंधइ, मणुस्सिणी बंधइ, देवो बंधइ, देवी बंधइ? गोयमा! नेरइओवि बंधइ, जाव देवीवि

---

३६. हे भगवन्! उत्कृष्ट काळनी स्थितिवाळुं ज्ञानावरणीय कर्म शुं नैरयिक बांधे, तिर्यंचयोनिक बांधे, तिर्यंचयोनिक स्त्री बांधे, मनुष्य बांधे, मनुष्यस्त्री बांधे, देव बांधे के देवी बांधे? हे गौतम! नैरयिक पण बांधे, यावत् देवी पण बांधे. हे भगवन्! केवा प्रकारनो नारक उत्कृष्ट

सर्वे जघन्य-सौथी नानी स्थिति बांधे छे. ते स्थिति केवा प्रकारनी छे? ते कहे छे—'पर्याप्तापर्याप्तिकां'-पर्याप्त अने अपर्याप्त रूप-शरीर अने इन्द्रियपर्याप्ति पूर्ण करवाने समर्थ अने उच्छ्वासपर्याप्ति पूरी करवाने असमर्थ एवी स्थिति बांधे छे. ए शी रीते जाणी शकाय के शरीर अने इन्द्रियपर्याप्ति पूरी करवाने समर्थ सौथी जघन्य स्थिति बांधे छे पण तेथी हीन स्थिति बांधतो नथी? युक्तिथी जाणी शकाय छे. ते आ प्रमाणे-सर्वे प्राणीओ परभवनुं आयुष बांधीने मरण पामे छे पण बांध्या सिवाय मरण पामता नथी. अने परभवना आयुषनो बंध औदारिक, वैक्रिय अने आहारककाययोगमां वर्तता प्राणीने होय छे, पण कार्मण के औदारिक मिश्रयोगमां वर्ततो होय त्यारे होतो नथी. ते संबन्धे मूळ टीकाकार कहे छे—"जेणोरालियाईणं तिण्हं सरीराणं कायजोगे वट्टमाणो आउयबंधगो, न कम्मए, ओरालियमिस्से वा" इति। जेथी औदारिकादि त्रण शरीरना काययोगे वर्ततो आयुषनो बन्ध करे छे, पण कार्मण के औदारिक मिश्र योगमां वर्ततो आयुषनो बन्ध करतो नथी" विशिष्ट औदारिकादि काययोग शरीर अने इन्द्रियपर्याप्ति वडे पर्याप्ताने होय छे, पण केवळ शरीरपर्याप्ति वडे पर्याप्ताने नथी होतो. तेथी आ सिद्ध थाय छे के शरीरपर्याप्ति अने इन्द्रियपर्याप्ति वडे पर्याप्तानुं ज मरण थाय छे, बीजानुं थतुं नथी. माटे शरीर अने इन्द्रियपर्याप्ति पूरी करवाने समर्थ एवी जघन्य स्थिति बांधे छे, पण तेथी हीन स्थिति बांधतो नथी. ए प्रमाणे जघन्यस्थितिनो बन्ध करनार कह्यो.

३६. हवे उत्कृष्ट स्थितिबंध करनार संबंधे पूछे छे-'उक्कोसकालठिईयं णं भंते! णाणावरणिज्जं कम्मं किं नेरइओ बंधइ' इत्यादि. उत्कृष्ट

बंधइ । केरिसए णं भंते ! नेरइए उक्कोसकालठितीयं णाणावरणिज्जं कम्मं बंधइ ? गोयमा! सण्णी पंचिंदिए स-
व्वाहिं पज्जत्तीहिं पज्जत्ते सागारे जागरे सुत्तो(तो)वउत्ते मिच्छादिट्ठी कण्हलेसे य उक्कोससंकिलिट्ठपरिणामे ईसि-
मज्झिमपरिणामे वा, एरिसए णं गोयमा ! नेरइए उक्कोसकालट्ठितीयं णाणावरणिज्जं कम्मं बंधति । केरिसए णं
भंते ! तिरिक्खजोणिए उक्कोसकालठितीयं णाणावरणिज्जं कम्मं बंधति ? गोयमा ! कम्मभूमए वा कम्मभूमगप-
लिभागी वा सण्णी पंचिंदिए सव्वाहिं पज्जत्तीहिं पज्जत्तए सेसं तं चेव जहा नेरइयस्स। एवं तिरिक्खजोणिणीवि

बांधे ? हे गौतम ! संज्ञी पंचेन्द्रिय सर्व पर्याप्तिओ वडे पर्याप्त, साकार-ज्ञानोपयोगवाळो, जागतो, श्रुत-
ना उपयोगवाळो, मिथ्यादृष्टि, कृष्णलेश्यावाळो, उत्कृष्ट संक्लिष्टपरिणामवाळो के कांइक मध्यम परिणामवाळो होय, आवा प्रकारनो नारक हे
गौतम ! उत्कृष्टकाळनी स्थितिवाळुं ज्ञानावरणीय कर्म बांधे. हे भगवन् ! केवा प्रकारनो तिर्यंच उत्कृष्ट काळनी स्थितिवाळुं ज्ञानावरणीय कर्म
बांधे ? हे गौतम ! कर्मभूमक-कर्मभूमिमां उत्पन्न थयेलो अथवा कर्मभूमगप्रतिभागी-कर्मभूमिमां उत्पन्न थयेलाना जेवो संज्ञी पंचेन्द्रिय,
सर्व प्राप्तिओ वडे पर्याप्त-बाकी बधुं नैरयिकोनी जेम कहेवुं. एम तिर्यंचस्त्री, मनुष्य अने मनुष्यस्त्री संबन्धे पण जाणवुं. देव अने

काळनी स्थितिवाळुं ज्ञानावरणीय कर्म शुं नारक बांधे'—इत्यादि सूत्र सुगम छे. नैरयिकसूत्रमां साकार—ज्ञानोपयोगवाळो, जागृत्—
जागतो, कारण के नारकोने पण कांइक निद्रानो अनुभव होय छे. ते माटे 'जागतो' एम कह्युं छे. 'सुतोवउत्ते'-श्रुतना उपयोगवाळो
एटले अभिलाप-शब्दगोचर ज्ञानना उपयोगवाळो, तिर्यंचयोनिक सूत्रमां 'कर्मभूमगपलिभागी' कर्मभूमग-कर्मभूमिमां उत्पन्न थयेला,
तेओना प्रतिभाग-समानपणुं जेओने छे एवा एटले तेओना सदृश, जे कर्मभूमिमां उत्पन्न थयेली गर्भिणी तिर्यंच स्त्री, तेने कोइए अप-

मणूसेवि मणूसीवि, देवदेवी जहा नेरइए, एवं आउयवज्जाणं सत्तण्हं कम्माणं। उक्कोसकालठितीयं णं भंते ! आउयं कम्मं किं नेरइओ बंधति, जाव देवी बंधति ? गोयमा ! नो नेरइओ बंधइ, तिरिक्खजोणिओ बंधति, नो तिरिक्खजोणिणी बंधति, मणुस्सेवि बंधति, मणुस्सीवि बंधति, नो देवो बंधइ, नो देवी बंधइ। केरिसए णं भंते ! तिरिक्खजोणिते उक्कोसठितीयं आउयं कम्मं बंधति ? गोयमा ! कम्मभूमए वा कम्मभूमगपलिभागी वा सण्णी पंचिंदिए सव्वाहिं पज्जत्तीहिं पज्जत्तए सागारे जागरे सुत्तोवउत्ते मिच्छदिट्ठी परमकण्हलेसे उक्कोससंकिलिट्ठ-

देवीने नैरयिकनी पेठे कहेवुं. ए प्रमाणे आयुष सिवायनी सात कर्मप्रकृतिओनो उत्कृष्ट बन्ध करे छे. हे भगवन् ! उत्कृष्ट काळनी स्थितिवाळुं आयुष कर्म नैरयिक बांधे के यावत् देवी बांधे ? हे गौतम ! नैरयिक न बांधे, तिर्यंच बांधे, तिर्यंचस्त्री न बांधे, मनुष्य बांधे, मनुष्यस्त्री पण बांधे, देव अने देवी न बांधे. हे भगवन् ! केवा प्रकारनो तिर्यंच उत्कृष्ट स्थितिवाळुं आयुष कर्म बांधे ? हे गौतम ! कर्मभूमिमां उत्पन्न थयेलो के कर्मभूमकप्रतिभागी—कर्मभूमिमां उत्पन्न थयेला जेवो, संज्ञी पंचेन्द्रिय, सर्व पर्याप्तिओ वडे पर्याप्त, साकारउपयोगवाळो, जागतो, श्रुतना उपयोगवाळो, मिथ्यादृष्टि, परमकृष्णलेश्यावाळो अने उत्कृष्ट संक्लिष्ट परिणामवाळो होय, आवा

हरण करी अकर्मभूमिमां मूकेली होय तेनाथी उत्पन्न थयेलो कर्मभूमकप्रतिभागी-कर्मभूमिमां उत्पन्न थयेला जेवो कहेवाय छे. बीजा आचार्यो आवी रीते व्याख्या करे छे-कर्मभूमिमांज उत्पन्न थयेलाने ज्यारे कोइ अकर्मभूमिमां लइ जाय त्यारे ते कर्मभूमकप्रतिभागी-कर्मभूमिमां उत्पन्न थयेला तुल्य गणाय छे. उत्कृष्ट स्थितिवाळा आयुषबंधना विचारमां नैरयिक, तिर्यंचस्त्री, देव अने देवीओनो प्रतिषेध जाणवो. कारण के तेओनी उत्कृष्ट स्थितिवाळा नारकोमां उत्पत्ति थती नथी. मनुष्यसूत्रमां 'सम्मदिट्ठी वा मिच्छादिट्ठी वा'

परिणामे, एरिसए णं गोयमा ! तिरिक्खजोणिते उक्कोसकालट्ठितीयं आउयं कम्मं बंधति । केरिसए णं भंते ! मणूसे उक्कोसकालट्ठितीयं आउयं कम्मं बंधति ? गोयमा ! कम्मभूमए वा कम्मभूमगपलिभागी वा जाव सुत्तो(तो)वउत्ते सम्मदिट्ठी वा मिच्छदिट्ठी वा कण्हलेसे वा सुक्कलेसे वा णाणी वा अण्णाणी वा उक्कोसं संकिलिट्ठपरिणामे वा असंकिलिट्ठपरिणामे वा तप्पाउग्गविसुज्झमाणपरिणामे वा, एरिसए णं गोयमा ! मणूसे उक्कोसकालट्ठितीयं आउयं कम्मं बन्धति । केरिसया णं भंते ! मणुस्सी उक्कोसकालट्ठिईयं आउयं कम्मं ब-

---

प्रकारनो तिर्यंचयोनिक हे गौतम ! उत्कृष्ट स्थितिवाळुं आयुप कर्म बांधे. हे भगवन् ! केवा प्रकारनो मनुष्य उत्कृष्ट काळनी स्थिति वाळुं आयुप कर्म बांधे ? हे गौतम ! कर्मभूमिमां उत्पन्न थयेलो, कर्मभूमकप्रतिभागी–कर्मभूमिमां उत्पन्न थयेलाना जेवो यावत्, श्रुतज्ञानना उपयोगवाळो, सम्यग्दृष्टि के मिथ्यादृष्टि, कृष्ण के शुक्ल लेश्यावाळो, ज्ञानी के अज्ञानी, उत्कृष्ट संक्लिष्ट परिणामवाळो, असंक्लिष्टपरिणामवाळो के तेने योग्य विशुद्ध परिणामवाळो होय, आवा प्रकारनो मनुष्य हे गौतम ! उत्कृष्ट स्थितिवाळुं आयुपकर्म बांधे. हे भगवन् ! केवा प्रकारनी मनुष्यस्त्री उत्कृष्ट स्थितिवाळुं आयुप कर्म बांधे ? हे गौतम ! कर्मभूमिमां उत्पन्न थयेली के कर्मभूमिमां

'सम्यग्दृष्टि के मिथ्यादृष्टि बांधे' एम कह्युं छे. कारण के अहीं बे उत्कृष्ट आयुप छे, जे सातमी नरकपृथिवीनुं आयुप बांधे छे ते मिथ्यादृष्टि अने अनुत्तर देवनुं आयुप बांधे छे ते सम्यग्दृष्टि होय छे. कृष्णलेश्यावाळो नारकायुपनो वन्ध करे छे अने शुक्ललेश्यावाळो अनुत्तरदेवना आयुपनो वन्ध करे छे. अहीं सम्यग्दृष्टि अप्रमत्तयति समजवो. उत्कृष्ट संक्लिष्ट परिणामवाळो नारकायुपनो वन्ध करे छे अने तेने योग्य विशुद्ध परिणामवाळो अनुत्तर देवना आयुपनो वन्ध करे छे. मनुष्यस्त्री सातमी नरकपृथिवीने योग्य आयुप

न्धइ ? गोयमा ! कम्मभूमिया वा कम्मभूमगपलिभागी वा जाव सुत्तोवउत्ता सम्मादिट्ठी सुक्कलेसा तप्पाउग्गविसुज्झमाणपरिणामा, एरिसिया णं गोतमा ! मणूसी उक्कोसकालट्ठिईयं आउयं कम्मं वन्धति, अंतराइयं जहा णाणावरणिज्जं ।

पण्णावणाए भगवईए तेवीसतिमं कम्मपगडीपयं समत्तं ॥

उत्पन्न थयेलाना जेवी, यावत् श्रुतना उपयोगवाळी, सम्यग्दृष्टि, शुक्ललेश्यावाळी अने तेने योग्य विशुद्ध परिणामवाळी होय, आवी मनुष्यस्त्री हे गौतम ! उत्कृष्ट स्थितिवाळुं आयुष कर्म बांधे. अन्तराय कर्म ज्ञानावरणीयनी पेठे जाणवुं.

प्रज्ञापना सूत्रना अनुवादमां तेवीशमुं कर्मप्रकृति पद समाप्त.

बांधती नथी, पण अनुत्तर देवने योग्य आयुष बांधे छे. माटे तेना सूत्रमां सर्व प्रशस्त जाणवुं. अहिं अतिविशुद्ध आत्मा आयुषनो बन्ध करतो ज नथी. माटे तेने योग्य विशुद्ध परिणामनुं ग्रहण छे. बाकी बधुं स्पष्ट छे.

श्रीमदाचार्यमलयगिरिविरचित प्रज्ञापनाटीकाना अनुवादमां तेवीशमुं कर्मप्रकृति पद समाप्त.

चउतीसतिमं कम्मबंधपयं ।

१. कति णं भंते ! कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ, तंजहा–णाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं । एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं। जीवे णं ! णाणावरणिज्जं कम्मं बन्धमाणे कति कम्मपगडीतो बन्धइ ? गोयमा ! सत्तविहबन्धए वा अट्ठविहबन्धए वा छव्विहबन्धते वा। नेरइए णं भंते ! णाणावरणिज्जं कम्मं बन्धमाणे कति कम्मपगडीतो बन्धति ? गोयमा ! सत्तविहबन्धए वा अट्ठविहबन्धए वा, एवं जाव

चोवीशमुं कर्मबन्ध पद.

१. हे भगवन् ! केटली कर्मप्रकृतिओ कही छे ? हे गौतम ! आठ कर्मप्रकृतिओ कही छे. ते आ प्रमाणे–१ ज्ञानावरणीय, यावत् ८ अन्तराय. एम नैरयिकोथी मांडी वैमानिको सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! जीव ज्ञानावरणीय कर्म बांधतो केटली कर्मप्रकृतिओ बांधे ? हे गौतम ! सात बांधे, आठ बांधे के छ कर्मप्रकृतिओ बांधे. हे भगवन् ! नैरयिक ज्ञानावरणीय कर्म बांधतो केटली कर्मप्रकृतिओ बांधे ? हे गौतम ! सात बांधे के आठ कर्मप्रकृतिओ बांधे. ए प्रमाणे वैमानिक सुधी जाणवुं. परन्तु मनुष्य जीवनी पेठे

---

१. तेवीशमा पदनी व्याख्या करी, हवे चोवीश पदनो प्रारंभ कराय छे. तेनो आ संबन्ध छे–पूर्वेना पदमां कर्मबन्धादिरूप परिणाम विशेषनो विचार कर्यो, तेज कर्मबन्धादि परिणामनो विचार हवे पछी कहेवाना चारे पदोमां कोइ कोइ स्थळे करवानो छे. तेमां चोवीशमा पदनुं आ प्रथम सूत्र छे—'कइ णं भंते ! कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ' ? 'हे भगवन् ! केटली प्रकृतिओ कही छे'–इत्यादि. पूर्वे आ सूत्रपाठ कहेवामां आव्यो छतां अहीं तेनुं फरीथी कथन ते विशेषता जणाववा माटे छे. ए प्रमाणे पछीना सूत्रोमां पण जाणवुं.

वेमाणिते, णवरं मणुस्से जहा जीवे। जीवा णं भंते! णाणावरणिज्जं कम्मं बन्धमाणा कति कम्मपगडीओ बन्धन्ति? गोयमा! सव्वेवि ताव होज्ज सत्तविहबन्धगा य अट्ठविहबन्धगा य, अहवा सत्तविहबन्धगा य अट्ठविहबन्धगा य छव्विहबन्धगे य, अहवा सत्तविहबन्धगा य अट्ठविहबन्धगा य छव्विहबन्धगा य। णेरइया णं भंते! णाणावरणिज्जं कम्मं बन्धमाणा कति कम्मपगडीतो बन्धन्ति? गोयमा! सव्वेवि ताव होज्जा सत्तविहबन्धगा, अहवा सत्तविहबन्धगा य अट्ठविहबन्धगे य, अहवा सत्तविहबन्धगा य अट्ठविहबन्धगा य तिण्णि

वांधे. हे भगवन्! जीवो ज्ञानावरणीय कर्मनो बंध करता केटली कर्मप्रकृतिओ बांधे? हे गोतम! बधा य जीवो सात प्रकृतिओ अने आठ प्रकृतिओ बांधे. अथवा सात प्रकृतिओ बांधे,आठ प्रकृतिओ बांधे अने एक छ प्रकृति बांधे. अथवा सात बांधे, प्रकृति आठ बांधे अने छ प्रकृति बांधे. हे भगवन्! नैरयिको ज्ञानावरणीय कर्म बांधता केटली कर्मप्रकृतिओ बांधे? हे गौतम! बधा य सात प्रकृति बांधे. अथवा सात बांधे अने एक आठ प्रकृति बांधे. अथवा बधा सात बांधे अने आठ प्रकृति बांधे. एम त्रण भांगा थाय छे. ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमार सुधी जाणवुं. पृथिवीकायिको केटली कर्मप्रकृतिओ बांधे? हे गौतम! सात प्रकृतिना बांधनारा पण होय. अने

हवे कयुं कर्म बांधतो कइ कर्मप्रकृतिओ बांधे एम बन्धना संबन्धनो विचार करवानी इच्छावाळा आचार्य प्रथमथी ज्ञानावरणीय कर्म साथे संबन्धनो विचार करे छे-'णाणावरणिज्जं कम्मं बंधमाणे कइ कम्मपगडीओ बंधइ' हे भगवन्! जीव ज्ञानावरणीय कर्म बांधतो केटली कर्मप्रकृतिओ बांधे' इत्यादि सुगम छे, परन्तु आयुष बन्धना अभावकाळे सात कर्मनो बन्ध करे छे. अने आयुषने बांधतो होय त्यारे आठ कर्मनो बन्ध करे छे. मोहनीय अने आयुषनो बन्ध न करे त्यारे छ कर्मनो बन्ध करे छे. अने ते सूक्ष्मसंपराय छे. कयुं

भंगा, एवं जाव थणियकुमारा। पुढविकाइया णं पुच्छा। गोयमा! सत्तविहबन्धगावि अट्ठविहबन्धगावि, एवं जाव वणस्सइकाइया। विगलाणं पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं तियभंगो–सव्वेवि ताव होज्जा सत्तविहबन्धगा, अहवा सत्तविहबन्धगा य अट्ठविहबन्धगे य, अहवा सत्तविहबन्धगा य अट्ठविहबन्धगा य। मणूसा णं भंते! णाणावरणिज्जस्स पुच्छा! गोयमा! सव्वेवि ताव होज्जा सत्तविहबन्धगा १, अहवा सत्तविहबन्धगा य अट्ठ-

आठ प्रकृतिना पण बांधनारा होय. एम वनस्पतिकायिको सुधी जाणवुं. विकलेन्द्रिय अने पंचेन्द्रिय तिर्यंचोने त्रण भांगा समजवा. बधा य सात प्रकृति बांधनारा, अथवा सात बांधनारा अने एक आठ बांधनार, अथवा सात प्रकृति बांधनारा अने आठ प्रकृतिओ बांधनारा होय छे. हे भगवन्! मनुष्यो ज्ञानावरणीयनो बंध करता केटली कर्मप्रकृतिओ बांधे? हे गौतम! १ बधा य सात प्रकृतिओ बांधनारा होय, २ अथवा सात कर्मप्रकृतिओ बांधनारा अने एक आठ कर्मप्रकृतिओ बांधनार होय, ३ अथवा सात कर्मप्रकृति बांध-

छे के–"सत्तविहबंधगा होंति पाणिणो आउगवज्जगाणं तु। तह सुहुमसंपराया छव्विहबंधा विणिद्दिट्ठा। मोहाउयवज्जाणं पयडीणं ते उ बंधगा भणिया।" प्राणीओ आयुष सिवाय सात कर्मप्रकृतिना बंधक छे अने सूक्ष्मसंपराय मोहनीय अने आयुष सिवाय छ कर्मप्रकृतिना बांधनारा कह्या छे. एक कर्मनो बन्धक होतो नथी. कारण के एक कर्मना बंधक उपशान्तकषायादि होय छे. ते संबन्धे कह्युं छे के—"उवसंतखीणमोहा केवलिणो एगविहबंधा। ते पुण दुसमयट्ठियस्स बंधका न उण संपरायस्स॥" उपशांतमोह, क्षीणमोह अने केवलज्ञानी एक कर्मनो बंध करे छे. अने ते बे समयनी स्थितिवाळा (सातावेदनीय) कर्मना बन्धक छे, परन्तु संपराय (काषायिक) कर्मना बन्धक होता नथी. वळी उपशान्तकषायादि ज्ञानावरणीय कर्म बांधता नथी, कारण के तेनो बन्ध सूक्ष्मसंपरायना छेल्ला समये विच्छेद थाय छे. पण केवळ सातावेदनीय बांधे छे, एज बाबतनो नैरयिकादि दंडकना अनुक्रमथी विचार करे

विहबन्धगे य २, अहवा सत्तविहबन्धगा य अट्ठविहबन्धगा य ३, अहवा सत्तविहबन्धगा य छव्विहबन्धए य ४, अहवा सत्तविहबन्धगा य छव्विहबन्धगा य ५, अहवा सत्तविहबन्धगा य अट्ठविहबन्धगे य छव्विहबन्धगे य ६, अहवा सत्तविहबन्धगा य अट्ठविहबन्धगे य छव्विहबन्धगा य ७, अहवा सत्तविहबन्धगा य अट्ठविहबन्धगा य छव्विहबन्धगे य ८, अहवा सत्तविहबन्धगा य अट्ठविहबधगा य छव्विहबन्धगा य ९, एवं एते नव

नारा अने आठ कर्म बांधनारा होय,४ अथवा सातकर्म बांधनारा अने एक छ कर्म बांधनार होय, ५ अथवा सात कर्म बांधनारा अने छ कर्म बांधनारा होय, ६ अथवा सात कर्म बांधनारा एक आठ कर्म बांधनार अने एक छ कर्म बांनधनार होय, ७ अथवा सात कर्म बांधनारा एक आठ कर्म बांधनार अने छ कर्म बांधनारा होय. ८ अथवा सात कर्म बांधनारा आठ कर्मबांधनारा अने एक छ कर्म बांधनार होय. ९ अथवा सात कर्म बांधनारा आठ कर्म बांधनारा अने छ कर्म बांधनारा होय. ए नव भांगा थया. बाकीना व्यन्तर-

छे-'नेरइए णं भंते !' इत्यादि. हे भगवन् ! नैरयिक ज्ञानावरण कर्म बांधतो केटली कर्मप्रकृतिओ बांधे ? इत्यादि. अहीं मनुष्य सिवाय बाकीना बधा स्थानोमां बेज भांगा जाणवा. सात कर्मना बन्धक के आठ कर्मना बन्धक होय, परन्तु 'छ कर्मना बन्धक' ए त्रीजो भांगो न होय. कारण के तेओने सूक्ष्मसंपराय गुणस्थानकनो असंभव छे. मनुष्यना स्थानमां त्रणे भांगा कहेवा. कारण के तेने सूक्ष्मसंपराय गुणस्थानकनो संभव छे. तेज प्रमाणे सूत्रकार कहे छे—'एवं जाव वेमाणिए' ए प्रमाणे बे भांगा वैमानिक सुधी कहेवा. 'नवरं मणुसे जहा जीवे' परन्तु मनुष्यने जीवनी पेठे कहेवुं. एम एक वचनने आश्रयी दंडक कह्यो. हवे बहुवचनने आश्रयी सूत्र कहे छे-'जीवा णं भंते'! इत्यादि. हे भगवन् ! जीवो ज्ञानावरणीय कर्म बांधतां केटली कर्मप्रकृतिओ बांधे ? इत्यादि. अहीं जीवो सात कर्मना बन्धक अने आठ कर्मना बन्धक हमेशां घणां होय छे अने छ कर्मनो बन्धक जीव कोइ वार होय छे अने कोइ वार होतो नथी.

भंगा। सेसा वाणमंतरादिया जाव वेमाणिता जहा नेरइया सत्तविहादिबन्धगा भणिता तहा भाणितव्वा। एवं जहा णाणावरणं बन्धमाणा जहिं भणिता दंसणावरणंपि बन्धमाणा तहिं जीवादीया एगत्तपोहत्तएहिं भाणितव्वा।

थी आरंभी वैमानिक सुधीना देवो नैरयिकोनी पेठे सप्तविधादि बन्धक कह्या छे तेम कहेवा. ए प्रमाणे जेम ज्ञानावरणना बन्ध करनारा ज्यां कह्या छे, त्यां दर्शनावरणनो पण बन्ध करनारा जीवादि एकवचन अने बहुवचन वडे कहेवा.

कारण के उत्कृष्ट छ मास सुधीनुं तेनुं अन्तर कह्यं छे. ज्यारे छ कर्मनो बन्ध करे छे त्यारे पण जघन्य स्थाने एक बे अने उत्कृष्ट एकसोने आठ होय छे. ज्यारे छ कर्मनो बन्धक एक पण न होय त्यारे पहेलो भांगो, ज्यारे एक होय त्यारे बीजो भांगो अने घणा होय त्यारे त्रीजो भांगो होय छे. नारको छ कर्मना बन्धक होताज नथी, अने आठ कर्मना बन्धक पण कदाचित् होय छे. तेमां ज्यारे एक पण नारक आठ कर्मनो बन्धक नथी होतो, त्यारे बधाय सात कर्मना बन्धक होय छे-ए प्रथम भंग. ज्यारे एक आठ कर्मनो बन्धक होय त्यारे बीजा भांगो, ज्यारे घणा आठ कर्मना बन्धक होय त्यारे त्रीजो भांगो होय छे. आज त्रणे भांगा दशे भवनपतिमां विचारवा. पांचे पृथिव्यादिमां 'सात कर्मना बांधनारा अने आठ कर्मना बांधनारा' आ एकज भांगो होय छे. कारण के तेओमां आठ कर्मने बांधनारा पण घणा होय छे. बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउरिन्द्रिय अने तिर्यंच पंचेन्द्रिय सूत्रमां नैरयिकनी पेठे त्रण भांगा जाणवा. मनुष्यसूत्रमां नव भांगा जाणवा, कारण के आठ कर्मना बन्धक अने छ कर्मना बन्धक कदाचित् सर्वथा पण होता नथी. तेमां आठ कर्मना अने छ कर्मना बांधनारा न होय त्यारे बधाय सात कर्मना बांधनारा होय ए प्रथम भंग. कारण के सात कर्मना बांधनारा हमेशां घणा होय छे. एक आठ कर्मनो बांधनार होय त्यारे सात कर्म बांधनारा अने एक आठ कर्म बांधनार-ए बीजो भांगो. घणा

२. वेयणिज्जं बंधमाणे जीवे कति कम्मपगडीओ बन्धइ ? गोयमा ! सत्तविहबन्धए वा अट्ठविहबन्धए वा छव्विहबन्धए वा एगविहबन्धए वा, एवं मणूसेवि । सेसा नारगादीया सत्तविहबन्धगा वा अट्ठविहबन्धगा जाव वेमाणिते । जीवा णं भंते ! वेदणिज्जं कम्मं पुच्छा । गोयमा ! सव्वेवि ताव होज्जा सत्तविहबन्धगा य अट्ठविहबन्धगा य एगविहबन्धगा य छव्विहबन्धए य, अहवा सत्तविहबन्धगा य अट्ठविहबन्धगा य एगवि-

---

२. वेदनीय कर्म बांधतो जीव केटली प्रकृतिओ बांधे ? हे गौतम ! सात कर्मनो बांधनार, आठ कर्मनो बांधनार, छ कर्मनो बांधनार अने एक कर्मनो पण बांधनार होय. एम मनुष्य संबंधे पण कहेवुं. बाकीना नारकादि जीवो सात कर्म बांधनारा अने आठ कर्म बांधनारा वैमानिक सुधी कहेवा. हे भगवन् ! वेदनीय कर्म बांधता जीवो केटली कर्मप्रकृतिओ बांधे ? हे गौतम ! बधा य जीवो सात प्रकृति बांधनारा, आठ प्रकृतिओ बांधनारा, एक प्रकृति बांधनारा अने एक छ प्रकृति बांधनार होय. अथवा सात कर्म बांधनारा आठ कर्म

आठ कर्मना बांधनारा होय त्यारे सात कर्म बांधनारा अने आठ कर्म बांधनारा होय-ए त्रीजो भांगो-ए प्रमाणे आठ कर्मनो बांधनार न होय त्यारे 'षड्विधबन्धक' पदना एक वचन अने बहुवचनने आश्रयी बे भांगा थाय. एम द्विकसंयोगमां चार भांगा, त्रिकसंयोगमां पण अष्टविधबन्धक अने षड्विधबन्धक पदना प्रत्येकना एकवचन अने बहुवचनने अपेक्षी चार भांगा थाय-एम बधा मळी नव भांगा थाय. व्यन्तर, ज्योतिषिक अने वैमानिको नैरयिकोनी पेठे जाणवा. जेम ज्ञानावरणीय कर्मनो विचार कर्यो तेम दर्शनावरणीय कर्मनो पण विचार करवो.

२. वेदनीय कर्मना विचारमां उपशान्तमोहादि एक कर्मना ज बन्धक होय छे. बाकी बधुं पूर्वनी पेठे जाणवुं. मनुष्यपदनो विचार करवामां पण तेज पूर्वे कहेला नव भांगा कहेवा. कारण के सात कर्म बांधनारा अने एक कर्म बांधनारा हमेशां घणा होवाथी बीजा

हबन्धगा य छव्विहबन्धगा य,अवसेसा नारगादीया जाव वेमाणिता जाओ णाणावरणं बंधमाणा बंधन्ति ताहिं भाणितव्वा। नवरं मणूसा णं भंते ! वेदणिज्जं कम्मं बन्धमाणा कति कम्मपगडीतो बन्धंति ? गोयमा ! सव्वेवि ताव होज्जा सत्तविहबन्धगा य एगविहबन्धगा य १,अहवा सत्तविहबन्धगा य एगविहबन्धगा य अट्ठविहबन्धगे य २,अहवा सत्तविहबन्धगा य एगगविहबन्धगा य अट्ठविहबन्धगा य ३,अहवा सत्तविहबन्धगा य एगविहबन्धगा य छव्विहबन्धगे य ४, अहवा सत्तविहबन्धगा य एगविहबन्धगा य छव्विहबन्धगा य ५, अहवा सत्तविहबन्धगा य एगविहबन्धगा य अट्ठविहबन्धते य छव्विहबन्धते य ६ अहवा सत्तविहबन्धगा य एगविहबन्धगा य अट्ठविहबन्धते य छव्विहबन्धगा य ७, अहवा सत्तविहबन्धगा य एगविहबन्धगा य अट्ठविहबन्धगा य छव्विहबन्धगे

बांधनारा एक कर्म बांधनारा अने छ कर्म बांधनारा होय. बाकीना नारकादि यावत् वैमानिको ज्ञानावरण बांधतां जे प्रकृतिओ बांधे छे ते वडे कहेवा. परन्तु हे भगवन् ! मनुष्यो वेदनीय कर्म बांधतां केटली कर्मप्रकृतिओ बांधे ? हे गौतम ! बधाय मनुष्यो १ सात कर्मप्रकृति बांधनारा अने एक प्रकृति बांधनारा होय. २ अथवा सात कर्मप्रकृति बांधनारा, एक कर्म बांधनारा अने एक आठ कर्म बांधनार होय. ३ अथवा सात कर्म बांधनारा एक कर्म बांधनारा अने आठ कर्म बांधनारा होय. ४ अथवा सात कर्म बांधनारा, एक कर्म बांधनारा अने एक छ कर्म बांधनारो होय. ५ अथवा सात कर्म बांधनारा एक कर्म बांधनारा अने छ कर्म बांधनारा होय. ६ अथवा सात कर्म बांधनारा एक कर्म बांधनारा एक आठ कर्म बांधनारो अने एक छ कर्म बांधनारो होय. ७ अथवा सात कर्म बांधनारा,

भांगाओनो संभव नथी.

य ८, अहवा सत्तविहबन्धगा य एगविहबन्धगा य अट्ठविहबन्धगा य छव्विहबन्धगा य ९–एवं एए नव भंगा भाणियव्वा ।

३. मोहणिज्जं बन्धमाणे जीवे कति कम्मपगडीओ बन्धइ ? गोयमा ! जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो । जीवेगिंदिया सत्तविहबन्धगावि अट्ठविहबन्धगावि । जीवे णं भंते ! आउयं कम्मं बन्धमाणे कति कम्मपगडीओ बन्धइ ? गोयमा ! नियमा अट्ठ, एवं नेरइए जाव वेमाणिए, एवं पुहुत्तेणवि । णामगोयंतराइयं बन्धमाणे जीवे कति कम्म-

---

एक कर्म बांधनारा एक आठ कर्म बांधनारो अने छ कर्म बांधनारा होय. ८ अथवा सात कर्म बांधनारा एक कर्म बांधनारा आठ कर्म बांधनारा अने एक छ कर्म बांधनारो होय. ९ अथवा सात कर्म बांधनारा एक कर्म बांधनारा आठ कर्म बांधनारा अने छ कर्म बांधनारा होय. ए प्रमाणे ए नव भांगा कहेवा.

३. मोहनीय कर्मनो बन्ध करतो जीव केटली कर्मप्रकृतिओ बांधे ? हे गौतम ! जीव अने एकेन्द्रिय सिवाय बाकीनाने त्रण भांगा जाणवा. जीव अने एकेन्द्रियो सात कर्म बांधनारा अने आठ कर्म बांधनारा पण होय. हे भगवन् ! जीव आयुष कर्म बांधतो केटली

---

३. मोहनीय कर्मनोविचार करवामां जीवपदमां अने पृथिव्यादि पदोमां प्रत्येकने विशे सात कर्म बांधनारा अने आठ कर्म बांधनारा होय ए एकज भांगो होय छे. कारण के बन्ने प्रकारना जीवो हमेशां घणा होय छे. छ कर्मनो बांधनार मोहनीय कर्म बांधतो नथी. कारण के मोहनीयनो बन्ध अनिवृत्ति बादरसंपराय सुधी होय छे अने सूक्ष्मसंपराय छ कर्मनो बन्ध करे छे. आयुषने बांधनार अवश्य आठ कर्मनो बन्धक होय छे, माटे तेना विचारमां एकवचन अने बहुवचनने आश्रयी भांगा थता नथी. नाम, गोत्र अने

पगडीओ बन्धइ ? गोयमा ! जाओ णाणावरणिज्जं कम्मं बन्धमाणे बन्धति ताहिं भाणितव्वो, एवं नेरइएवि जाव वेमाणिए, एवं पुहुत्तेणवि भाणियव्वं ।

पण्णवणाए भगवईए चउवीसतिमं कम्मबन्धपयं समत्तं ।

कर्मप्रकृतिओ बांधे ? हे गौतम ! अवश्य आठ कर्मप्रकृतिओ बांधे. ए प्रमाणे नैरयिकथी आरंभी वैमानिक सुधी जाणवुं. एम बहुवचन वडे पण समजवुं. हे भगवन् ! नाम, गोत्र अने अन्तराय कर्मनो वन्ध करतो जीव केटली कर्मप्रकृतिओ बांधे ? हे गौतम ! ज्ञानावरणीय कर्मनो बन्ध करतो जेटली कर्मप्रकृति बांधे तेटली कहेवी. एम नैरयिकथी मांडी वैमानिक सुधी कहेवुं. ए प्रमाणे बहुवचन वडे पण कहेवुं.

प्रज्ञापना भगतीमां चोवीशमुं कर्मबन्धपद समाप्त.

अन्तराय सूत्रो ज्ञानावरणीय सूत्रनी पेठे जाणवा.

श्रीमद् आचार्य मलयगिरिविरचित प्रज्ञापना टीकाना अनुवादमां कर्मबन्ध नामे चोवीशमुं पद समाप्त.

पणवीसतिमं कम्मवेयपयं ।

१. कति णं भंते ! कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ, तजहा—णाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं, एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं । जीवे णं भंते ! णाणावरणिज्जं कम्मं बन्धमाणे कति कम्मपगडीतो वेदेति ? गोयमा ! नियमा अट्ठ कम्मपगडीतो वेदेति । एवं नेरइए जाव वेमाणिए, एवं पुहुत्तेणवि। एवं वेदणिज्जवज्जं जाव अंतराइयं । जीवे णं भंते ! वेदणिज्जं कम्मं बन्धमाणे कति कम्मपगडीतो वेदेति ? गो-

पचीशमुं कर्मवेद पद

१. हे भगवन् ! केटली कर्मप्रकृतिओ कही छे ? हे गौतम ! आठ कर्मप्रकृतिओ कही छे. ते आ प्रमाणे–ज्ञानावरण, यावत् अंतराय. ए प्रमाणे नैरयिकोथी मांडी वैमानिको सुधी जाणवुं. हे भगवन्! जीव ज्ञानावरणीय कर्म बांधतो केटली कर्मप्रकृतिओ वेदे? हे गौतम ! अवश्य आठ कर्मप्रकृतिओ वेदे. एम नैरयिकथी आरंभी वैमानिक सुधी जाणवुं. ए प्रमाणे बहुवचन वडे पण समजवु. ए रीते वेदनीय सिवाय यावत् अंतराय सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! जीव वेदनीय कर्म बांधतो केटली कर्मप्रकृतिओ वेदे ? हे गौतम !

१. हवे पचीशमुं पद आरंभाय छे, तेमां आ प्रथम सूत्र छे—'कइ णं भंते ! कम्मपगडीओ'—'हे भगवन् ! केटली कर्मप्रकृतिओ कही छे' इत्यादि सूत्र स्पष्ट छे. हवे 'कयुं कर्म बांधतो केटली कर्मप्रकृति वेदे' ए विचारे छे—'जीवे णं भंते '! हे भगवन् ! जीव ज्ञानावरणीय कर्म बांधतो केटली कर्मप्रकृति वेदे ? इत्यादि सूत्र सुगम छे. वेदनीय सूत्रमां 'सत्तविहवेयए वा, अट्ठविहवेयए वा चउव्विहवेयए वा' सात कर्म वेदनार, आठ कर्म वेदनार अने चार कर्म वेदनार होय. सात कर्म वेदनार उपशान्तमोह के क्षीणमोह होय छे,

यमा ! सत्तविहवेदए वा अट्ठविहवेदए वा चउव्विहवेदए वा, एवं मणूसेवि । सेसा नेरइयाती एगत्तेणं पुहुत्तेणवि नियमा अट्ठ कम्मपगडीओ वेदंति जाव वेमाणिया । जीवा णं भंते ! वेदणिज्जं कम्मं बन्धमाणा कति कम्मपगडीतो वेदेंति? गोयमा! सव्वेवि ताव होज्जा अट्ठविहवेदगा य चउव्विहवेदगा य १, अहवा अट्ठविहवेदगा य चउव्विहवेदगा य सत्तविहवेदगे य २, अहवा अट्ठविहवेदगा य चउव्विहवेदगा य सत्तविहवेदगा य ३, एवं मणूसावि भाणियव्वा ॥ पण्णवणाए भगवईए कम्मवेदणामं पणवीसतिमं पयं समत्तं ॥

सात, आठ के चार कर्मप्रकृतिओ वेदे. ए प्रमाणे मनुष्य पण वेदे. बाकीना नैरयिकथी आरंभी वैमानिक सुधी एकवचन अने बहुवचन वडे पण अवश्य आठ कर्मप्रकृतिओ वेदे. हे भगवन् ! जीवो वेदनीय कर्म बांधता केटली कर्मप्रकृतिओ वेदे ? हे गौतम ! १ बधा य आठ कर्म वेदनारा अने चार कर्म वेदनारा होय. २ अथवा आठ कर्म वेदनारा चार कर्म वेदनारा अने एक सात कर्म वेदनार होय. ३ अथवा आठ कर्म वेदनारा चार कर्म वेदनारा अने सात कर्म वेदनारा होय. ए प्रमाणे मनुष्यो पण कहेवा.

प्रज्ञापना भगवतीना अनुवादमां 'कर्मवेद' नामे पचीशमुं पद समाप्त.

कारण के ते बन्नेने मोहनीयनो उदय नथी. आठ कर्म वेदनारा मिथ्यादृष्टिथी आरंभी सूक्ष्मसंपराय सुधीना जीवो छे, कारण के तेओने अवश्य आठे कर्मनो उदय छे. चार कर्म वेदनार सयोगी केवली छे, कारण के तेओने चार घाती कर्मनो उदय नथी. बहुवचनमां सात कर्म वेदनारा कदाचित् होय छे माटे त्रण भांगा थाय छे.

श्रीमद् आचार्य मलयगिरि विरचित प्रज्ञापना टीकाना अनुवादमां पचीशमुं कर्मवेद पद समाप्त.

छव्वीसतिमं कम्मवेयबंधपयं ।

१. कति णं भंते ! कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ, तंजहा—णाणावरणिज्जं, जाव अंतराइयं । एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं । जीवे णं भंते ! णाणावरणिज्जं कम्मं वेदमाणे कति कम्मपगडीओ बन्धति ? गोयमा ! सत्तविहबन्धए वा अट्ठविहबन्धए वा छव्विहबन्धए वा एगविहबन्धए वा । नेरइए णं भंते ! णाणावरणिज्जं कम्मं वेदमाणे कति कम्मपगडीओ बन्धति ? गोयमा ! सत्तविहबन्धए वा

छव्वीशमुं कर्मवेदबन्ध पद.

१. हे भगवन् ! केटली कर्मप्रकृतिओ कही छे ? हे गौतम ! आठ कर्मप्रकृतिओ कही छे. ते आ प्रमाणे—ज्ञानावरण, यावत् अन्तराय. ए प्रमाणे नैरयिकोथी मांडी वैमानिको सुधी कहेवुं. हे भगवन् ! ज्ञानावरणीय कर्म वेदतो केटली कर्मप्रकृतिओ बांधे ? हे गौतम ! सात कर्मप्रकृतिओनो बन्ध करे, आठ कर्मनो बन्ध करे, छ कर्मनो बन्ध करे अने एक कर्मनो पण बन्ध करे. हे भगवन् ! नैरयिक ज्ञानावरणीय कर्म वेदतो केटली कर्मप्रकृतिओ बांधे ? हे गौतम ! सात कर्म बांधे के आठ कर्म बांधे. ए प्रमाणे वैमानिक

---

१. हवे छव्वीशमा पदनो प्रारंभ कराय छे, तेनुं आ प्रथम सूत्र छे—'कति णं भंते' ! हे भगवन् ! केटली कर्मप्रकृतिओ कही छे ?—इत्यादि सूत्रनो अर्थ स्पष्ट छे, हवे 'कयुं कर्म वेदतो कइ कर्मप्रकृतिओ बांधे' एम उदयनी साथे बन्धना संबन्धनो विचार करता सूत्रकार कहे छे— 'जीवे णं भंते ! णाणावरणिज्जं कम्मं वेएमाणे कइ कम्मपगडीओ बंधइ' ? हे भगवन् ! जीव ज्ञानावरण कर्म वेदतो केटली कर्मप्रकृतिओ बांधे'—इत्यादि सुगम छे. परन्तु ज्ञानावरणीय कर्म वेदतो एक प्रकृतिनो बन्ध करनार उपशान्तमोह के क्षीणमोह होय

अट्ठविहबन्धए वा, एवं जाव वेमाणिते, एवं मणूसे जहा जीवे। जीवा णं भंते ! णाणावरणिज्जं कम्मं वेदेमाणा कति कम्मपगडीतो बन्धन्ति ? गोयमा ! सव्वेवि ताव होज्जा सत्तविहबन्धगा य अट्ठविहबंधगा य १, अहवा सत्तविहबन्धगा य अट्ठविहबन्धगा य छव्विहबन्धगे य २, अहवा सत्तविहबन्धगा य अट्ठविहबन्धगा य छव्विहबन्धगा य ३, अहवा सत्तविहबन्धगा य अट्ठविहबन्धगा य एगविहबन्धए य ४, अहवा सत्तविहबन्धगा य अट्ठविहबन्धगा य एगविहबन्धगा य ५, अहवा सत्तविहबन्धगा य अट्ठविहबन्धगा य छ-

---

सुधी जाणवुं. मनुष्य जीवनी पेठे बांधे छे. हे भगवन् ! जीवो ज्ञानावरणीय कर्म वेदता केटली कर्मप्रकृतिओ बांधे ? हे गौतम ! १ बधाय सात कर्म बांधनारा अने आठ कर्म बांधनारा होय. २ अथवा सात कर्म बांधनारा आठ कर्मना बांधनारा अने एक छ कर्म बांधनारो होय. ३ अथवा सात कर्म बांधनारा आठ कर्म बांधनारा अने छ कर्म बांधनारा होय. ४ अथवा सात कर्म बांधनारा आठ कर्मना बांधनारा अने एक एक कर्मनो बांधनार होय. ५ अथवा सात कर्म बांधनारा आठ कर्म बांधनारा अने एक कर्मना बांधनारा होय. ६ अथवा सात कर्म बांधनारा आठ कर्म बांधनारा एक छ कर्म बांधनारो अने एक एक कर्म बांधनारो होय. ७ अथवा

छे, पण सयोगी केवली होता नथी. कारण के तेने ज्ञानावरणीय कर्मनो उदय नथी. बहुवचनना विचारमां छ प्रकृतिनो बन्ध करनारा सूक्ष्म संपरायो अने एक प्रकृतिनो बन्ध करनारा उपशान्तमोह अने क्षीणमोह कदाचित् होय छे अने ते एकत्वादि रूपे विकल्पे होय छे. एटले कोइ वार एक होय, कोइ वार अनेक होय अने कोइ वार न पण होय. माटे एक अने अनेक ए बन्ने प्रकारना अभावमां सात कर्मना बांधनारा अने आठ कर्मना बांधनारा पण होय-ए एकज भांगो होय छे. कारण के बन्ने प्रकारना जीवो हमेशां घणा

ञ्विहबन्धए य एगविहबन्धए य ६, अहवा सत्तविहबन्धगा य अट्ठविहबन्धगा य छव्विहबन्धए य एगविहबन्धगा य ७, अहवा सत्तविहबन्धगा य अट्ठविहबन्धगा य छव्विहबन्धगा य एगविहबन्धए य ८, अहवा सत्तविहबन्धगा य अट्ठविहबन्धगा य छव्विहबन्धगा य एगविहबन्धगा य ९, एवं एते नव भंगा। अवसेसाणं एगिंदियमणूसवज्जाणं तियभंगो जाव वेमाणियाणं। एगिंदिया णं सत्तविहबन्धगा य अट्ठविहबन्धगा य। मणूसाणं पुच्छा। गोयमा! सव्वेवि ताव होज्ज सत्तविहबन्धगा १, अहवा सत्तविहबन्धगा य अट्ठविहबन्धगे य २, अहवा

सात कर्म बांधनारा आठ कर्म बांधनारा एक छ कर्म बांधनार अने एक कर्म बांधनारा होय. ८ अथवा सात कर्म बांधनारा आठ कर्म बांधनारा छ कर्म बांधनारा अने एक एक कर्म बांधनार होय. ९ अथवा सात कर्म बांधनारा आठ कर्म बांधनारा छ कर्म बांधनारा अने एक कर्म बांधनारा होय. ए प्रमाणे आ नव भांगा थाय छे. एकेन्द्रिय अने मनुष्य सिवाय बाकीनाने वैमानिक सुधी त्रण भांगा होय छे. एकेन्द्रियो सात कर्म बांधनारा अने आठ कर्मना बांधनारा होय. मनुष्यो ज्ञानावरणीय वेदतां केटली कर्मप्रकृतिओ बांधे? ए प्रश्न. हे गौतम! १ बधा य सात कर्मना बांधनारा होय. २ अथवा सात कर्मना बांधनारा अने एक आठ कर्मनो बांधनार होय. ३

होय छे. तेथी छ प्रकृतिना बन्धक पदनो प्रक्षेप करतां एकवचन अने बहुवचन वडे बे भांगा थाय छे, ए प्रमाणे एक प्रकृतिना बन्धकनो प्रक्षेप करतां पण बे भांगा थाय छे. बन्ने पदनो साथे प्रक्षेप करीए एटले पूर्वनी पेठे चार भांगा थाय छे-एम बधा मळीने नव भांगा थाय छे. एकेन्द्रिय अने मनुष्य सिवाय नैरयिकादि पदोमां बहुवचनने आश्रयी त्रण भांगा थाय छे, कारण के आठ प्रकारना कर्मनो बन्ध करनारा कदाचित् होवाथी एकपणे अने अनेकपणे विकल्पे होय छे. एकेन्द्रियोमां भांगानो अभाव छे एटले बीजा भांगा थता

सत्तविहबन्धगा य अट्ठविहबन्धगा य ३, अहवा सत्तविहबन्धगा य छव्विहबन्धए य ४, एवं छव्विहबन्धएणवि समं दो भंगा ५,एगविहबन्धएणवि समं दो भंगा ६-७,अहवा सत्तविहबन्धगा य अट्ठविहबन्धए य छव्विहबन्धए य चउभंगो १, अहवा सत्तविहबन्धगा य अट्ठविहबन्धए य एगविहबन्धगे य चउभंगो २, अहवा सत्तविहबन्धगा य छव्विहबन्धए य एगविहबन्धए य चउभंगो ३, अहवा सत्तविहबन्धगा य अट्ठविहबन्धए य छव्विहबन्ध-

अथवा सात कर्मना बांधनारा अने आठ कर्मना बांधनारा होय. ४ अथवा सात कर्मना बांधनारा अने एक छ कर्मनो बांधनार होय. ५ एम छ कर्मना बांधनारनी साथे बे भांगा जाणवा. अने ६-७ एक कर्मना बांधनारनी साथे पण बे भांगा होय, ८-११ अथवा सात कर्मना बांधनारा एक आठ कर्मनो बांधनार अने एक छ कर्मनो बांधनार होय-इत्यादि चार भांगा, १२-१५ अथवा सात कर्मना बांधनारा एक आठ कर्मनो बांधनार अने एक एक कर्मनो बांधनार होय इत्यादि चार भांगा. १६-१९ अथवा सात कर्म बांधनारा एक छ कर्म बांध-

नथी, कारण के तेमां सात प्रकारना कर्म बांधनारा अने आठ प्रकारना कर्म बांधनारा बन्ने प्रकारना पण होय छे अने ते बन्ने प्रकारना हमेशां घणां उपलब्ध थाय छे. मनुष्योमां सत्यावीश भांगा थाय छे. कारण के आठ कर्म बांधनारा, छ कर्म बांधनारा अने एक कर्म बांधनारा (उपशांतमोह अने क्षीणमोह)कदाचित् होय छे अने ते एकत्वादि रूपे विकल्पे होय छे.तेमां एओना अभावमां 'सात कर्म बांधनारा होय ए प्रथम भांगो थाय छे. अष्टविधबन्धक पदनो प्रक्षेप करवाथी तेना एकवचन अने बहुवचनना बे भांगा थाय छे. षड्विधबन्धक पदनो प्रक्षेप करीए त्यारे तेना एक अने अनेकना बे भांगा, एकविधबन्धकनो प्रक्षेप करीए त्यारे बे भांगा--एम सात भांगा थायछे. अष्टविधबन्धक अने षड्विधबन्धकनो प्रक्षेप करवाथी चार भांगा, अष्टविधबन्धक अने एकविधबन्धक पदनो प्रक्षेप करतां चार भांगा, षड्विधबन्धक अने एकविधबन्धकनो प्रक्षेप करतां चार भांगा-एम ओगणीश भांगा थया. त्यार पछी अष्टविधबन्धक, षड्विधबन्धक अने एकविधबन्धक

ए य एगविहबन्धए य भंगा अट्ठ, एवं एते सत्तावीसं भंगा। एवं जहा णाणावरणिज्जं तहा दंसणावरणिज्जंपि अंतराइयंपि।

२. जीवे णं भंते! वेदणिज्जं कम्मं वेदेमाणे कति कम्मपगडीतो वन्धति? गोयमा! सत्तविहबंधते वा छव्विहबन्धए वा एगविहबन्धए वा अबंधए वा, एवं मणूसेवि। अवसेसा णारयादीया सत्तविहबन्धगा अट्ठविहबन्धगा य, एवं जाव वेमाणिता। जीवा णं भते! वेदणिज्जं कम्मं वेदेमाणा कति कम्मपगडीओ बन्धन्ति? गो-

---

नार अने एक एक कर्म बांधनार होय-इत्यादि चार भांगा. २०-२७ अथवा सात कर्मना बांधनारा एक आठ कर्म बांधनार एक छ कर्म बांधनार अने एक एक कर्म बांधनार होय इत्यादि आठ भांगा. ए प्रमाणे ए सत्यावीश भांगा थाय छे. ए प्रमाणे जेम ज्ञानावरणीय वेदतां कर्मप्रकृतिओनो वन्ध कह्यो तेम दर्शनावरणीय अने अन्तराय वेदतां पण वन्ध कहेवो.

२. हे भगवन्! वेदनीय कर्म वेदतो जीव केटली कर्मप्रकृतिओ बांधे? हे गौतम! सात कर्म बांधनार, आठ कर्म बांधनार, छ कर्म बांधनार एक कर्म बांधनार अने अबन्धक होय. एम मनुष्य संबन्धे पण जाणवुं. बाकीना नारकादि सात कर्मना वन्धक अने आठ कर्मना

पदनो एक साथे प्रक्षेप करतां आठ भांगा-एम बधा मळी सत्यावीश भांगा थाय छे.

२. वेदनीय सूत्रमां एक कर्मनो वन्ध करनार सयोगी केवली पण होय छे, कारण के तेने पण वेदनीयनो उदय अने वन्धनो संभव छे. अवन्धक अयोगी केवली छे. कारण के तेने योग नहि होवाथी वेदनीय कर्म वेदवा छतां पण तेना वन्धनो संभव नथी. वेदनीय सूत्रमां एकवचन अने बहुवचनना विचारमां जीवपदने विशे नव भांगा थाय छे, कारण के तेमां सात आठ अने एक कर्मनो

यमा ! सव्वेवि ताव होज्जा सत्तविहवन्धगा य अट्ठविहबन्धगा य एगविहबन्धगा य १, अहवा सत्तविहबन्धगा य अट्ठविहबन्धगा य एगविहबन्धगा य छव्विहबंधगे य २, अहवा सत्तविहबन्धगा य अट्ठविहबन्धगा य एगविहबन्धगा य छव्विहबन्धगा य ३, अबंधगेणवि समं दो भंगा भाणितव्वा ५, अहवा सत्तविहबन्धगा य अट्ठविहबन्धगा य एगविहबन्धगा य छव्विहबन्धगे य अबंधगे य चउभंगो, एवं एए नव भंगा। एगिंदियाणं अभं-

हे भगवन् ! जीवो वेदनीय कर्म वेदता केटली कर्मप्रकृतिओ बांधे ? हे गौतम ! १ बधा य सात कर्म बांधनारा, आठ कर्म बांधनारा अने एक कर्म बांधनारा होय. २ अथवा सात कर्म बांधनारा आठ कर्म बांधनारा एक कर्म बांधनारा अने एक छ कर्म बांधनार होय. ३ अथवा सात कर्म बांधनारा आठ कर्म बांधनारा एक कर्म बांधनारा अने छ कर्म बांधनारा होय. ४–५ अबंधकनी साथे पण बे भांगा कहेवा. ६–९ अथवा सात कर्म बांधनारा आठ कर्म बांधनारा एक कर्म बांध- वन्धक होय. एम वैमानिको सुधी जाणवुं.

वन्ध करनारा हमेशां घणा होय छे. माटे बहुवचनरूप ए भांगामां षड्विधवन्धक अने अवन्धक ए बे पदोना अभावमां बधाय सात कर्म बांधनारा आठ कर्म बांधनार अने एक कर्म बांधनारा होय ए प्रथम भांगो, षड्विधवन्धक पदनो प्रक्षेप करीए एटले एकवचन अने बहुवचनने आश्रयी बे भांगा, एमज [1]एकविधवन्धक ? (अवन्धक) पदनो प्रक्षेप करतां बे भांगा, अने बन्ने पदनो प्रक्षेप करता चार भांगा थाय

१. वेदनीय कर्मना वेदनार एक कर्मना बन्धक हमेशां घणा होय छे, कारण के सयोगी केवली पण होय छे, अने तेओ हमेशां घणा विद्यमान होय छे माटे अहीं एकविधबन्धक पदनो प्रक्षेप करता एकवचन अने बहुवचनने आश्रयी बे भांगा कह्या छे ते विचारणीय छे, परन्तु तेना बदले अबन्धक पदनो प्रक्षेप करीए तो तेना एकवचन अने बहुवचनना बे भांगा घटी शके छे.

गतं, नारगादीणं तियभंगा जाव वेमाणियाणं। नवरं मणूसाणं पुच्छा । सव्वेवि ताव होज्जा सत्तविहबंधगा य एगविहबन्धगा य, अहवा सत्तविहबन्धगा य एगविहबंधगा य छव्विहबंधते य अट्ठविहबंधते य अबंधते य, एवं एते सत्तावीसं भंगा भाणितव्वा, एवं जहा वेदणिज्जं तहा आउयं नामं गोयं च भाणितव्वं । मोहणिज्जं वेदेमाणे जहा णाणावरणिज्जं तहा भाणियव्वं ॥ पण्णवणाए भगवईए छव्वीसतिमं कम्मवेयबन्धपयं समत्तम् ॥

नारा एक छ कर्म बांधनार अने एक अबंधक होय–इत्यादि चार भांगा जाणवा. ए प्रमाणे ए नव भांगा थाय छे. एकेन्द्रियोने अभंगक–बीजा भांगा थता नथी. नारकथी मांडी वैमानिक सुधी त्रण भांगा समजवा. परन्तु मनुष्यो संबंधे प्रश्न करवो. १ बधा य सात कर्म बांधनारा अने एक कर्म बांधनारा होय. २ अथवा सात कर्म बांधनारा एक कर्म बांधनारा एक छ कर्म बांधनारो एक आठ कर्म बांधनारो अने एक अबंधक होय–एम उपर प्रमाणे सत्यावीश भांगाओ कहेवा. जेम वेदनीय कह्युं, तेम आयुष, नाम अने गोत्र कर्म संबन्धे कहेवुं. जेम ज्ञानावरणीयने वेदता जेटली प्रकृतिनो बंध कह्यो छे तेम मोहनीय कर्म वेदता कहेवो.

प्रज्ञापना सूत्रना अनुवादमां छव्वीसमुं कर्मवेद बन्ध पद समाप्त.

छे. मनुष्यपदमां सत्यावीश भांगा थाय छे—तेमां सात कर्मना बांधनारा अने एक कर्म बांधनारा केवळ बहुवचन वडे हमेशां अवस्थित होय छे अने ते सिवाय बीजा त्रणे आठ कर्म बांधनारा, छ कर्म बांधनारा अने अबन्धक मनुष्यो कदाचित् होय छे अने ते एक अने अनेकरूपे विकल्पे होय छे. एटले कोइवार एक होय छे अने कोइवार अनेक होय छे माटे तेओना अभावमां सातकर्म बांधनारा अने एक कर्म बांधनारा होय–ए पहेलो भांगो. अष्टविधबन्धक पदनो प्रक्षेप करीए तो एकवचन अने बहुवचनने आश्रयी बे भांगा, षड्विधबन्धक पदनो प्रक्षेप करतां बे भांगा, एकविधबन्धक (? अबन्धक) पदनो प्रक्षेप करता बे

भांगा, मळीने छ भांगा थाय छे. तथा त्रण पदना त्रण द्विक संयोगो थाय छे अने एक एक द्विकसंयोगमां एकवचन अने बहुवचनननी अपेक्षाए चार भांगा थाय एम त्रण द्विकसंयोगना बार, त्रिकसंयोगना आठ एम बधा मळी सत्यावीश भांगा थाय छे. ए प्रमाणे आयुष नाम अने गोत्रना सूत्रोनो पण विचार करवो. मोहनीय कर्म वेदतो जीव सात कर्मनो बंधक, आठ कर्मनो बंधक अने छ कर्मनो बन्धक होय. कारण के सूक्ष्मसंपरायनी अवस्थामां पण मोहनीयना उदयनो संभव छे. ए प्रमाणे मनुष्यपदमां पण कहेवुं. नरकादि स्थानोमां सात कर्मनो बन्धक के आठ कर्मनो 'बन्धक होय'—एम कहेवुं. कारण के तेने सूक्ष्मसंपराय गुणस्थानक नहि होवाथी छ कर्मनुं बन्धकपणुं नथी. बहुवचनननी अपेक्षाए जीवपदमां त्रण भांगा जाणवा. तेमां सूक्ष्मसंपराय कदाचित् होय छे अने बीजा बे हमेशां घणा होय छे. माटे षड्विधबन्धक पदना अभावमां सात कर्म बांधनारा अने आठ कर्म बांधनारा होय-ए एक भंग, षड्विधबन्धक पदनो प्रक्षेप करीए एटले एकवचन अने बहुवचनने आश्रयी बे भांगा होय छे. नैरयिकथी मांडी स्तनितकुमार सुधीमां सात कर्मनो बन्ध करनारा हमेशां घणा होय छे. आठ कर्मनो बन्ध करनार कदाचित् होय छे अने ते पण एक के अनेकपणे विकल्पे होय छे. अष्टविध-बन्धक पदना अभावमां 'सात कर्मना बांधनारा होय' ए एक भंग, अष्टविधबन्धक पदनो प्रक्षेप करतां एकवचन अने बहुवचनने आश्रयी बे भांगा, पांचे पृथिव्यादिमां बीजा भांगाओनो अभाव छे. कारण के तेओ सात कर्मना बन्धक अने आठ कर्मना बन्धक होय छे अने बन्ने प्रकारना तेओमां हमेशां घणा होय छे. बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउरिन्द्रिय, तिर्यंच पंचेन्द्रिय अने व्यन्तर, ज्योतिष्क तथा वैमानिकोमां नैरयिकनी पेठे त्रण भांगा होय छे. मनुष्योमां नव भांगा होय छे—तेमां 'सात कर्मना बन्ध करनारा होय' ए एक भंग, अष्टविधबन्धक पदनो प्रक्षेप करतां एकवचन अने बहुवचनननी अपेक्षाए बे भांगा, षड्विधबन्धक पदनो प्रक्षेप करतां एकवचन अने बहुवचनना बे भांगा, अने बन्ने पदनो प्रक्षेप करतां चार भांगा थाय छे. माटे ते प्रकारे सूत्रकारे कह्युं छे के 'मोहणिज्जं वेएमाणे जहा णाणावरणिज्जं तहा भाणियव्वं' इति. ज्ञानावरणीय कर्मने वेदता जे बंध कह्यो छे तेम मोहनीय वेदता कहेवो.

श्रीमद्आचार्य मलयगिरि विरचित प्रज्ञापना टीकाना अनुवादमां छवीशमुं 'कर्मवेदबन्ध' पद समाप्त.

सत्तावीसइमं कम्मवेयवेयपयं ।

१. कति णं भंते ! कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ । तंजहा-णाणावरणं जाव अंतराइयं, एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं। जीवे णं भंते ! णाणावरणिज्जं कम्मं वेदेमाणे कति कम्मपगडीतो वेदेति ? गोयमा ! सत्तविहवेयए वा अट्ठविहवेयए वा, एवं मणूसेवि । अवसेसा एगत्तेणवि पुहुत्तेणवि णियमा अट्ठ कम्मपगडीतो वेदेंति जाव वेमाणिया । जीवा णं भंते ! णाणावरणिज्जं वेदेमाणा कति कम्मपग-

---

सत्यावीशमुं कर्मवेदवेद पद.

१. हे भगवन् ! केटली कर्मप्रकृतिओ कही छे ? हे गौतम ! आठ कर्मप्रकृतिओ कही छे. ते आ प्रमाणे–ज्ञानावरण, यावत् अंतराय. हे भगवन् ! ज्ञानावरणीय कर्म वेदतो जीव केटली कर्मप्रकृतिओ वेदे ? हे गौतम ! सात कर्मप्रकृतिओ वेदे के आठ कर्मप्रकृतिओ वेदे. एम मनुष्य संबन्धे पण कहेवुं. बाकीना बधा एकवचन अने बहुवचन वडे पण अवश्य आठ प्रकृतिओ वेदे छे. ए प्रमाणे यावत् वैमानिक सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! जीवो ज्ञानावरणीय कर्म वेदता केटली कर्मप्रकृतिओ वेदे ? हे गौतम ! १ बधा य जीवो

---

१. हवे सत्यावीशमा पदनो प्रारंभ थाय छे. तेमां आ प्रथम सूत्र छे—'कइ णं भंते !' हे भगवन् ! केटली कर्मप्रकृतिओ कही छे ? इत्यादि सूत्र स्पष्ट छे. हवे कयुं कर्म वेदतो केटली कर्मप्रकृतिओ वेदे ? ए प्रमाणे उदयनी साथे उदयना सबन्धनो विचार करे छे–'जीवे णं भंते ! णाणावरणिज्जं कम्मं वेएमाणे कइ कम्मपगडीओ वेएइ'—हे भगवन् ! जीव ज्ञानावरणीय कर्म वेदतो केटली कर्मप्रकृतिओ वेदे' इत्यादि सूत्र स्पष्ट छे. तेमां सात कर्मने वेदनार उपशान्तमोह अथवा क्षीणमोह होय छे, कारण के तेओने मोहनीय कर्मना उदयनो

डीतो वेदेंति ? गोयमा ! सव्वेवि ताव होज्जा अट्ठविहवेदगा, १ अहवा अट्ठविहवेदगा य सत्तविहवेदगे य २, अहवा अट्ठविहवेदगा य सत्तविहवेदगा य ३, एवं मणूसावि । दरिसणावरणिज्जं अंतराइयं च एवं चेव भाणितव्वं । वेदणिज्जं आउयनामगोत्तातिं वेदेमाणे कति कम्मपगडीओ वेएति ? गोयमा ! जहा बंधवेदगस्स वेयणिज्जं तहा भाणितव्वाणि । जीवे णं भंते ! मोहणिज्जं कम्मं वेदेमाणे कति कम्मपगडीतो वेदेति ? गोयमा !

आठ कर्मना वेदनारा होय. २ अथवा आठ कर्मना वेदनारा अने एक सात कर्मनो वेदनार होय. ३ अथवा आठ कर्मना वेदनारा अने सात कर्मना वेदनारा होय. ए प्रमाणे मनुष्यो पण जाणवा. दर्शनावरणीय अने अंतराय संबन्धे एम ज कहेवुं. वेदनीय, आयुष, नाम अने गोत्र कर्मने वेदतो केटली कर्मप्रकृतिओ वेदे ? हे गौतम ! जेम बंधकवेदकने वेदनीय कर्म संबंधे कह्युं छे तेम कहेवु. हे भगवन् ! मोहनीय कर्म वेदतो जीव केटली कर्मप्रकृतिओ वेदे ? हे गौतम ! आठ कर्मप्रकृतिओ वेदे. ए प्रमाणे नैरयिकथी आरंभी

संभव नथी, बाकीना सूक्ष्मसंपरायादि आठ कर्मना वेदक होय छे. ए प्रमाणे मनुष्यपदने विशे पण कहेवुं. नैरयिकादि अवश्य आठ कर्मना वेदनारा होय छे. बहुवचनना विचारमां जीवपद अने मनुष्यपदमां त्रण भांगा होय छे. तेमां बधा य आठ कर्मना वेदनारा होय ए प्रथम भंग. सात कर्मनो वेदनार एक होय त्यारे बीजो भांगो, सात कर्मना वेदक घणा होय त्यारे त्रीजो भांगो होय छे. बाकीना नैरयिकादि पदोमां आठ कर्मना वेदनारा ज होय छे माटे भांगानो अभाव छे. कारण के त्यां सात कर्मना वेदकपणानो असंभव छे. एम दर्शनावरणीय अने अन्तराय सूत्रसंबन्धे पण कहेवुं. वेदनीयसूत्रमां जीवपद अने मनुष्यपदमां प्रत्येकने आश्रयी आठ कर्मनो वेदक सात कर्मनो वेदक अने चार कर्मनो वेदक होय छे एम कहेवुं. अने बाकीना नैरयिकादि पदोमां आठ कर्मनो वेदक होय छे—ए एक भांगो जाणवो, कारण के तेओमां उपशान्तमोहत्वादि अवस्थानो असंभव छे. तेज वेदनीय सूत्रमां बहुवचनना विचारमां प्रत्येक जीव-

नियमा अट्ठ कम्मपगडीतो वेदेति, एवं नेरतिए जाव वेमाणिते, एवं पुहुत्तेणवि ।

पणणवणाए भगवईए सत्तावीसइमं कम्मवेयवेपयं समत्तं ॥

वैमानिक सुधी जाणवुं. एम बहुवचननी अपेक्षाए पण समजवुं.

प्रज्ञापना भगवती सूत्रना अनुवादमां सत्यावीशमुं कर्मवेदवेद पद समाप्त.

पद अने मनुष्यपदने विषे त्रण भांगा समजवा. तेमां 'आठ कर्मना वेदनारा होय' ए प्रथम भंग सर्वथा सात कर्मना वेदनाराओना अभावे होय छे. सप्तविधवेदक पदनो प्रक्षेप करवामां एक वचन अने बहुवचन वडे बे भांगा थाय छे. बाकीना नारकादि स्थानोमां 'आठ कर्मना वेदनारा होय छे' माटे भांगानो अभाव होय छे. एम आयुष, नाम अने गोत्र कर्मना सूत्रोनो विचार करवो. मोहनीय कर्मने वेदतो अवश्य आठ कर्मनी प्रकृतिओनो वेदक होय छे, माटे जीवादि पचीश स्थानकोमां एक वचन अने बहुवचननी अपेक्षाए बधे य भांगानो अभाव छे, कारण के एक अथवा अनेक आठ प्रकृतिओ वेदे छे.

श्रीमद्आचार्य मलयगिरिविरचित प्रज्ञापना टीकाना अनुवादमां सत्यावीशमुं कर्मवेदवेद पद समाप्त.

अट्ठावीसइमं आहारपयं

पढमो उद्देसो ।

संचित्ताहारट्ठी केवंति किं वाँवि सव्वतो चेव । कतिभागं सव्वे खलु परिणामे चेव बोद्धव्वे ॥
एगिंदियसरीरादी लोमाहारो तहेव मणभक्खी । एतेसिं तु पदाणं विभावणा होंति कातव्वा ॥

अठ्यावीशमुं आहार पद–प्रथम उद्देशक

१ सचित्ताहारी, २ आहारार्थी, ३ केटला काळे आहार करे ? ४ शेनो आहार करे ? ५ सर्वतः–सर्वात्म प्रदेशो वडे आहार करे ? ६ केटलामो भाग आहार करे ? ७ सर्व पुद्गलोनो आहार करे ? ८ केवा रूपे परिणाम थाय ? ९ एकेन्द्रिय शरीरादिनो आहार करे ? १० लोमाहार अने ११ मनोभक्षी–ए पदोनी अहीं विभावना–व्याख्या करवानी छे.

एम 'कर्मवेदवेद' नामे सत्यावीशमा पदनी व्याख्या करी, हवे अठ्यावीशमा पदनो प्रारंभ कराय छे. तेनो संबंध आ प्रमाणे छे–पूर्वेना पदमां नारकादि गतिने प्राप्त थयेला जीवोनो कर्मना वेदनरूप परिणाम कह्यो, हवे अहीं आहार परिणाम कहे छे. ते विशे आ बे संग्रहणी गाथाओ कहेवामां आवी छे–'सचित्ताहारट्ठी' इत्यादि. १ सचित्त पद वडे सहित प्रथम अधिकार, अने ते आ प्रमाणे—'नेरइया णं भंते ! किं सचित्ताहारा, अचित्ताहारा'–'हे भगवन् ! नैरयिको सचित्त आहारवाळा के अचित्ताहारवाळा छे' इत्यादि. २ 'आहारार्थी'–आहारनी इच्छावाळा–ए संबन्धे बीजो अधिकार, जेमके 'हे भगवन् ! नैरयिको आहारनी इच्छावाळा छे' ? ३ 'केवति' केटला काळे आहारनी इच्छा उत्पन्न थाय छे–इत्यादि रूप त्रीजो अधिकार, ४ 'किं' शेनो आहार करे छे ?–ए पदसहित चोथो अधिकार, ५ 'सर्वतः' ए पदसहित पांचमो अधिकार, ते आ प्रमाणे—'नैरयिको सर्वतः–सर्व आत्मप्रदेशो वडे आहार करे'–इत्यादि.

१. नेरइया णं भंते ! किं सचित्ताहारा, अचित्ताहारा, मीसाहारा ? गोयमा ! नो सचित्ताहारा, अचित्ताहारा, नो मीसाहारा, एवं असुरकुमारा जाव वेमाणिया। ओरालियसरीरा जाव मणूसा सचित्ताहाराचि अचित्ताहाराचि मीसाहाराचि। नेरइया णं भंते ! आहारट्ठी ? हन्ता आहारट्ठी। नेरइया णं भंते ! केवतिकालस्स आहा-

१. हे भगवन् ! नैरयिको सचित्ताहारी, अचित्ताहारी के मिश्राहारी होय ? हे गौतम ! नैरयिको सचित्ताहारी नथी, मिश्राहारी नथी, पण अचित्ताहारी छे. ए प्रमाणे असुरकुमारथी आरंभी वैमानिक सुधी जाणवुं. औदारिक शरीरवाळा (पृथिव्यादि) यावत् मनुष्यो सचित्ताहारी पण होय छे, अचित्ताहारी पण होय छे अने मिश्राहारी पण होय छे. हे भगवन् ! नैरयिको आहारार्थी–आहारनी इच्छावाळा

'चेव' शब्द समुच्चयना अर्थमां छे. ६ 'कतिभागं' ग्रहण करेला पुद्गलोनो केटलामो भाग आहार करे छे-इत्यादि छट्ठो अधिकार, ७ 'सव्वे' जे पुद्गलो आहारपणे ग्रहण करे छे ते बधानो आहार करे छे के बधानो आहार करतो नथी-इत्यादिरूप सातमो अधिकार, ८ परिणामरूप आठमो अधिकार. ते आ प्रमाणे-'नैरयिको जे पुद्गलोने आहारपणे ग्रहण करे छे ते पुद्गलोने तेओ केवा स्वरूपे वारंवार परिणमावे छे-इत्यादि रूप परिणामाधिकार. ९ एकेन्द्रियादि शरीररूप नवमो अधिकार. ते आ प्रमाणे-'हे भगवन् ! नैरयिको शुं एकेन्द्रिय शरीरोनो आहार करे, यावत् पंचेन्द्रियशरीरोनो आहार करे ? १० लोमाहारनी वक्तव्यतारूप दसमो अधिकार. ११ अने मनोभक्षीनी वक्तव्यतारूप अगियारमो अधिकार छे-इत्यादि. जेमके हे भगवन् ! नैरयिको ओजआहारवाळा अने मनोभक्षी-मन वडे भक्षण करवाना स्वभाववाळा होय छे ? ए सामान्य पणे हमणांज नाममात्र वडे कहेला पदोना अर्थाधिकारोनी विभावना-विस्तारथी अर्थनुं प्रकाशन करवा योग्य छे ए सूत्रकारनुं वचन छे.

१. हवे जेनी प्रतिज्ञा करी छे तेनो निर्वाह करवानी इच्छावाळा सूत्रकार 'यथोद्देशं निर्देशः' उद्देशना क्रमने अनुसरी निर्देश थाय

रट्ठे समुप्पज्जति ? गोयमा ! नेरइयाणं दुविधे आहारे पण्णत्ते, तंजहा–आभोगनिव्वत्तिते य अणाभोगनिव्वत्तिते य । तत्थ णं जे से अणाभोगनिव्वत्तिते से णं अणुसमयमविरहिते आहारट्ठे समुप्पज्जति । तत्थ णं जे से आ-भोगनिव्वत्तिते से णं असंखिज्जसमतिए अंतोमुहुत्तिते आहारट्ठे समुप्पज्जति ।

होय ? हा गौतम ! होय. हे भगवन् ! नैरयिकोने केटला काळे आहारनी इच्छा उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! नैरयिकोने बे प्रकारनो आहार कह्यो छे. ते आ प्रमाणे–आभोगनिर्वर्तित–इच्छापूर्वक करेलो अने अनाभोगनिर्वर्तित–इच्छा सिवाय करेलो.तेमां जे अनाभोग निर्वर्तित आहार छे ते तेओने प्रतिसमय निरंतर होय छे. अने जे आभोगनिर्वर्तित आहार छे ते संबंधे असंख्यात समयना अन्त-र्मुहूर्ते आहारनी इच्छा उत्पन्न थाय छे.

छे. सामान्यपणे नाममात्रथी कथन करवुं ते उद्देश अने विस्तारथी प्रतिपादन करवुं ते निर्देश.–ए न्यायने अनुसरी प्रथम 'सचित्त'
अधिकारनी व्याख्या करे छे—'नेरइयाणं भंते !' इत्यादि. हेभगवन्! नैरयिको शुं सचित्त आहार करे छे, अचित्त आहार करे छे के
मिश्र आहार करे छे? भगवान् उत्तर आपे छे—'हे गौतम ! सचित्त के मिश्र आहार करता नथी, पण अचित्त आहार करे छे. कारण
के अहीं वैक्रिय शरीरधारी वैक्रिय शरीरना पोपणयोग्य पुद्गलोनो आहार करे छे अने ते अचित्त ज होय छे, पण जीवे ग्रहण करेला
होता नथी, माटे तेओ अचित्त आहारवाळा छे, पण सचित्त आहारवाळा नथी, तेम मिश्र आहारवाळा पण नथी. एम असुरकुमा-
रथी आरंभी स्तनितकुमार सुधीना भवनपतिओ, व्यन्तर, ज्योतिपिक अने वैमानिको जाणवा. औदारिक शरीरवाळा औदारिक
शरीरना पोपण योग्य पुद्गलोनो आहार करे छे अने ते पुद्गलो पृथिवीकायादिना परिणामरूपे परिणत थयेला होय छे, माटे सचित्त
आहारवाळा, अचित्त आहारवाळा अने मिश्र आहारवाळा घटी शके छे, तेथी सूत्रकारे कह्युं छे—'ओरालियसरीरा जाव मणूसा' इत्यादि.

औदारिक शरीरवाळा पृथिवीकायिकोथी आरंभी मनुष्यो सुधी जाणवा. तात्पर्य ए छे के—पृथिवी, पाणी, अग्नि, वायु अने वनस्पति रूप एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय अने मनुष्य ए बधाय सचित्तआहारवाळा, अचित्तआहारवाळा अने मिश्र-आहारवाळा पण कहेवा. ए प्रथम अधिकार कह्यो.

हवे बीजाथी आरंभी आठमा सुधीना सात अधिकारोने चोवीश दंडकना क्रमथी साथे कहेवानी इच्छावाळा सूत्रकार प्रथम नैरयिको संबन्धे कहे छे-'नेरइया णं'-इत्यादि. हे भगवन्! नैरयिको आहारार्थी-आहारनी अभिलाषावाळा छे? (अहीं 'किम्' वगेरे प्रश्नार्थक शब्द नथी तोपण काकु-प्रश्नार्थक ध्वनिवडे प्रश्नार्थ समजवो.) भगवान् उत्तर आपे छे—'हन्त' इत्यादि. 'हन्त' अनुमतिना अर्थमां छे. हे गौतम! ए मने अनुमत छे के नैरयिको आहारनी अभिलाषावाळा छे. हे भगवन्! नैरयिको जो आहारनी इच्छावाळा छे तो तेने 'केवइ कालस्स' कियता कालेन-केटला काळे, अहीं प्राकृत होवाथी त्रीजी विभक्तिना अर्थमां छट्ठी विभक्ति छे. आहारार्थ-आहाररूप प्रयोजन, आहारनी इच्छा उत्पन्न थाय छे? भगवान् कहे छे—गौतम! नैरयिकोने बे प्रकारनो आहार छे. जेमके, आभोगनिर्वर्तित अने अनाभोगनिर्वर्तित, तेमां आभोग-आलोचन, विचार, अभिसन्धि-इच्छा ए अर्थ छे. इच्छावडे निर्वर्तित-ग्रहण करेलो, एटले 'हुं आहार लउं' एवी इच्छापूर्वक ग्रहण करेलो ते आभोगनिर्वर्तित. तेथी विपरीत-उलटुं अनाभोगनिर्वर्तित, एटले 'हुं आहार करुं' एवी विशिष्ट इच्छा सिवाय वर्षाकाळे पुष्कळ मूत्रादि वडे अभिव्यक्त थयेल शीत पुद्गलोना आहारनी पेठे ग्रहण करायेलो होय ते अनाभोगनिर्वर्तित आहार समजवो. 'तत्थ णं' इत्यादि. एमां—आभोगनिर्वर्तित अने अनाभोगनिर्वर्तित आहारमां जे अनाभोगनिर्वर्तित आहार छे ते नैरयिकोने अनुसमय—प्रतिसमय होय छे. अहीं लांबा काळ सुधी चाली शके एवो आहार एकवार पण ग्रहण कर्यो होय तो तेटला काळ सुधी 'प्रतिसमय होय छे' एम कहेवाय, तेथी भवपर्यन्त निरंतर ग्रहण करे छे एम प्रतिपादन करवा 'अविरहित' निरंतर आहार ग्रहण करे छे एम कह्युं छे. अथवा निरंतर चालु आहारनुं ग्रहण छतां 'चुकस्खलित' न्यायथी कंइक अंतर पडे तो पण लोकमां तेनी गणना नहि थती होवाथी प्रतिसमय ग्रहणनो व्यवहार प्रवर्ते छे, तेथी वच्चे जरापण

२. नेरइया णं भंते ! किमाहारमाहारेंति ? गोयमा ! दव्वतो अणंतपदेसियातिं, खेत्तओ असंखेज्जपदेसोगाढातिं, कालतो अण्णयरट्ठिइयातिं, भावओ वण्णमंतातिं गंधमंताइं रसमंताइं फासमंताइं । जाइं भावतो वण्णमंताइं आहारेंति ताइं किं एगवण्णातिं आहारेंति, जाव किं पंचवण्णाइं आहारेंति ? गोयमा ! ठाणमग्गणं पडुच्च एगवण्णाइंपि आहारेंति जाव पंचवण्णाइंपि आहारेंति, विहाणमग्गणं पडुच्च कालवण्णाइंपि आहारेंति जाव

---

२. हे भगवन् ! नैरयिको शेनो आहार करे छे ? हे गौतम ! द्रव्यथी अनन्त प्रदेशवाळा, क्षेत्रथी असंख्याता प्रदेशोमां रहेला, काळथी कोइ पण स्थितिवाळा अने भावथी वर्णवाळा, गन्धवाळा रसवाळा अने स्पर्शवाळा पुद्गलस्कन्धोनो आहार करे छे. भावथी जे वर्णवाळा पुद्गलोनो आहार करे छे ते शुं एक वर्णवाळा, यावत् पांचवर्णवाळा पुद्गलोनो आहार करे छे ? हे गौतम ! स्थानमार्गणा–सामान्य मार्गणाने आश्रयी एकवर्णवाळां, यावत् पांचवर्णवाळां पुद्गलोनो आहार करे छे, अने विधानमार्गणा–विशेषमार्गणाने

अंतर नथी ते वतावता 'अविरहित' कह्युं छे. प्रतिसमय निरंतर अनाभोग निर्वर्तित आहारनुं ग्रहण थाय छे ते ओज आहारादि रूपे समजवुं. तेमां आभोगनिर्वर्तित अने अनाभोगनिर्वर्तितमां जे आभोगनिर्वर्तित आहारार्थ—आहारनी अभिलाष ते असंख्याता समये थाय छे अने जे असंख्याता समये थाय छे ते जघन्य पदे पण अन्तर्मुहूर्त रूप छे, पण तेथी ओछुं नथी. माटे 'अन्तर्मुहूर्त सुधी आहाराभिलाषा उत्पन्न थाय छे' एम कह्युं छे. तात्पर्य ए छे के अन्तर्मुहूर्त काळ सुधी रहे छे, पछी रहेती नथी. कारण के नैरयिकोने 'हुं आहार करुं' एवो जे अभिलाष छे ते ग्रहण करेला आहारद्रव्यना परिणाम वडे जे अति तीव्र दुःख थाय छे अने दुःख थवाथी अन्तर्मुहूर्त पछी निवृत्त थाय छे माटे नैरयिकोने आहाराभिलाष अन्तर्मुहूर्तनो छे.

२. 'नेरइया णं' इत्यादि. हे भगवन् ! नैरयिको केवा प्रकारनो आहार करे छे ? द्रव्यादिभेदथी चार प्रकारनो आहार प्रतिपादन करवानी

सुक्किल्लाइंपि आहारेंति । जातिं वण्णतो कालवण्णातिं आहारेंति ताइं किं एगगुणकालाइं आहारेंति जाव दसगुणकालाइं आहारेंति, संखिज्जगुणकालाइं, असंखिज्जगुणकालाइं, अणंतगुणकालाइं आहारेंति? गोयमा! एगगुणकालाइंपि आहारेंति, जाव अणंतगुणकालाइंपि आहारेंति, एवं जाव सुक्किल्लाइंपि, एवं गंधतोवि रसतोवि। जाइं भावओ फासमंताइं आहारेंति ताइं नो एगफासाइं आहारेंति, नो दुफासाइं आहारेंति, नो तिफासाइं आहारेन्ति, चउफासाइं आहारेन्ति, जाव अट्ठफासाइंपि आहारेन्ति, विहाणमग्गणं पडुच कक्खडाइंपि-

आश्रयी काळावर्णवाळा पुद्‌गलोनो आहार करे छे, यावत् शुक्लवर्णवाळा पुद्‌गलोनो आहार करे छे. वर्णथी जे काळावर्णवाळा पुद्‌गलोनो आहार करे छे ते शुं एकगुण काळावर्णवाळा, यावत् दसगुण काळावर्णवाळा, संख्यातगुण, असंख्यातगुण के अनन्तगुण काळावर्णवाळा पुद्‌गलोनो आहार करे छे? हे गौतम! एकगुण काळावर्णवाळा यावत् अनन्तगुण काळावर्णवाळा पुद्‌गलोनो आहार करे छे. ए प्रमाणे यावत् अनन्तगुण शुक्लवर्णवाळा पुद्‌गलोनो पण आहार करे छे. एम गन्ध अने रसनी अपेक्षाए पण समजवुं. भावथी जे स्पर्शवाळा पुद्गलोनो आहार करे छे तेमां एक स्पर्शवाळानो, बे स्पर्शवाळानो अने त्रण स्पर्शवाळानो आहार करतो नथी,

इच्छावाळा भगवान् उत्तर आपे छे—गौतम! द्रव्यथी—द्रव्यस्वरूपनो विचार करतां अनन्तप्रदेशवाळा पुद्गल द्रव्य ग्रहण करे छे, कारण के ते सिवाय बीजा द्रव्योनुं ग्रहण थतुं नथी. संख्यातप्रदेशी के असंख्यातप्रदेशी स्कन्धो जीवने ग्रहण योग्य नथी. क्षेत्रथी असंख्यात प्रदेशमां रहेलां, काळथी 'अन्यतरस्थितिकानि' जघन्य मध्यम के उत्कृष्ट कोइपण स्थितिवाळां, अहिं स्थिति एटले आहारने योग्य स्कन्धना परिणाम रूपे रहेवुं, भावथी वर्णवाळां, गन्धवाळां, रसवाळां अने स्पर्शवाळां, कारण के दरेक परमाणुमां एक एक वर्ण,

आहारेन्ति जाव लुक्खाइं। जातिं फासतो कक्खडातिं आहारेन्ति ताइं किं एगगुणकक्खडाइं आहारेन्ति जाव अणंतगुणकक्खडाइं आहारेन्ति ? गोयमा ! एगगुणकक्खडाइंपि आहारेन्ति जाव अणंतगुणकक्खडाइंपि आहारेन्ति, एवं अट्ठवि फासा भाणितव्वा, जाव अणंतगुणलुक्खाइंपि आहारेन्ति। जातिं भंते ! अणंतगुणलुक्खाइं आहारेन्ति ताइं किं पुट्ठाइं आहारेन्ति अपुट्ठाइं आहारेन्ति ? गोयमा ! पुट्ठाइं आहारेन्ति,नो अपुट्ठाइं आ-

---

परन्तु चार स्पर्शवाळा पुद्गलोनो आहार करे छे, यावत् आठ स्पर्शवाळानो पण आहार करे छे. विधानमार्गणा-विशेषमार्गणाने आश्रयी कर्कश पुद्गलोनो पण आहार करे छे, यावत् रुक्ष पुद्गलोनो पण आहार करे छे.स्पर्शथी जे कर्कश पुद्गलोनो आहार करे छे ते एकगुणा कर्कश पुद्गलोनो आहार करे छे, यावत् अनन्तगुण कर्कश पुद्गलोनो आहार करे छे ? हे गौतम ! एकगुण कर्कश पुद्गलोनो पण आहार करे छे, यावत् अनन्तगुण कर्कश पुद्गलोनो पण आहार करे छे. एम आठे स्पर्शो कहेवा. यावत् अनन्तगुण रुक्ष

गन्ध, रस अने (बे) स्पर्श होय छे, एवा पुद्गल द्रव्यने ग्रहण करे छे. 'जाइं भावतो वण्णमंताइं' भावथी जे वर्णवाळां पुद्गलद्रव्योनो आहार करे छे, ते एक वर्णवाळां के यावत् पांच वर्णवाळा पुद्गलोनो आहार करे छे? इत्यादि प्रश्नसूत्र सुगम छे. भगवान् उत्तर आपे छे-हे गौतम ! 'ठाणमग्गणं पडुच्च' इत्यादि. स्थानमार्गणाने आश्रयी, तिष्ठन्ति विशेषा अस्मिन्निति स्थानं-जेमां विशेषो रहे ते स्थान-एक वर्णवाळां, बे वर्णवाळां, त्रण वर्णवाळा-इत्यादिरूप सामान्य, तेनी मार्गणा-विचारने आश्रयी सामान्य विचारने आश्रयी ए भावार्थ छे. एक वर्णवाळां, बे वर्णवाळां इत्यादि सुगम छे, परन्तु ते अनन्तप्रदेशिक स्कन्धोनो एक वर्ण, बे वर्ण-इत्यादि व्यवहारनयना मतनी अपेक्षाए कथन छे, निश्चयनयना मतनी अपेक्षाए तो सूक्ष्म छतां पण अन्तप्रदेशिक स्कन्ध पांच वर्णवाळोज होय छे.'विहाणमग्गणं पडुच्च'-विधानमार्गणं प्रतीत्य' वि-बीजाथी जुदा धान-स्वरूपनी पुष्टि ते विधान-विशेष, काळो, लीलो-इत्यादि चोकस वर्णादिनी विशेषता, तेना मार्गण-

हारेन्ति, जहा भासुद्देसए जाव णियमा छद्दिसिं आहारेन्ति, ओसण्णं कारणं पडुच्च वण्णओ कालनीलातिं, गंधओ दुब्भिगंधातिं, रसओ तित्तकडुयाइं, फासओ कक्खडगुरुयसीयलुक्खाइं, तेसिं पोराणे वण्णगुणे गंधगुणे रसगुणे फासगुणे विपरिणामइत्ता परिपीलइत्ता परिसाडइत्ता परिविद्धंसइत्ता अण्णे अपुव्वे वण्णगुणे गंधगुणे रसगुणे फासगुणे उप्पाइत्ता आयसरीरखेत्तोगाढे पोग्गले सव्वप्पणयाए आहारं आहारेन्ति । नेरइया णं भंते !

पुद्गलोनो पण आहार करे छे. हे भगवन् ! जे अनन्तगुण रुक्ष पुद्गल द्रव्योनो आहार करे छे ते शुं स्पृष्ट–स्पर्शेला पुद्गलोनो आहार करे छे के नहि स्पर्शेला पुद्गलोनो आहार करे छे ? हे गौतम ! स्पर्शेला पुद्गल द्रव्योनो आहार करे छे,पण नहि स्पर्शेला पुद्गल द्रव्योनो आहार करतो नथी–इत्यादि जेम भाषा उद्देशकमां कह्युं छे तेम यावत् छ दिशामां रहेला पुद्गल द्रव्योनो आहार करे छे. बाहुल्य–सामान्य कारणनी अपेक्षाए वर्णथी काळां अने लीलां, गन्धथी दुर्गन्धी, रसथी कडवां अने तीखां अने स्पर्शथी कर्कश, गुरु,

---

विचारने आश्रयी काळावर्णवाळां पुद्गल द्रव्योनो पण आहार करे छे—इत्यादि सुगम छे, परन्तु आ पण व्यवहार नयथी जाणवुं, निश्चय नयथी अवश्य ते पुद्गल स्कन्धो पांचे वर्णवाळा होय छे. 'जाइं वण्णओ कालवण्णाइंपि' इत्यादि. जे वर्णथी काळावर्णवाळां' इत्यादि सुगम छे, यावत् अनन्तगुण शुक्ल वर्णवाळां द्रव्योनो पण आहार करे छे. ए प्रमाणे गन्ध, रस अने स्पर्श संबन्धी पण सूत्रो जाणवां. जाइं भंते ! अणंतगुणलुक्खाइं' इत्यादि. हे भगवन् ! जे अनन्तगुण रुक्ष द्रव्योनो उपलक्षणथी एकगुण काळां द्रव्योनो पण आहार करे छे, हे भगवन् ! ते शुं स्पृष्ट–आत्मप्रदेशोए स्पर्शेलां अथवा अस्पृष्ट–नहि स्पर्शेलां द्रव्योनो आहार करे छे ? भगवान् उत्तर आपे छे–स्पृष्ट द्रव्योनो आहार करे छे पण अस्पृष्ट द्रव्योनो आहार करतो नथी.–इत्यादि 'जहा भासुद्देसए वा जाव नियमा छद्दिसिं' ति, भाषा उद्देशकमां कह्या प्रमाणे यावत् अवश्य छ दिशाओथी आवेलां पुद्गल द्रव्योनो आहार करे छे. एटले भाषाउद्देशकमां

सव्वओ आहारेन्ति, सव्वओ परिणामेंति, सव्वओ ऊससंति, सव्वओ नीससंति, अभिक्खणं आहारेन्ति अ-
भिक्खणं परिणामंति, अभिक्खणं ऊससंति, अभिक्खणं नीससंति, आहच्च आहारेन्ति, आहच्च परिणामेंति;
आहच्च ऊससंति, आहच्च नीससंति ? हंता ! गोयमा ! णेरइया सव्वतो आहारेन्ति एवं तं चेव जाव आहच्च
नीससंति ।

शीत अने रुक्ष पुद्गल द्रव्योनो आहार करे छे. तेओना पूर्वना वर्णगुण,गन्धगुण,रसगुण अने स्पर्शगुणनो विपरिणाम करी,परिपीडन
करी, नाश करी, विध्वंस करी बीजा अपूर्व वर्णगुण, गंधगुण, रसगुण अने स्पर्शगुणने उत्पन्न करी पोताना शरीररूप क्षेत्रमां रहेलां
पुद्गलोनो सर्व आत्मा वडे आहार करे छे. हे भगवन् ! नैरयिको सर्वतः आहार करे छे,सर्वतः परिणमावे छे, सर्वात्मा वडे उच्छ-
वास ले छे, सर्वात्मा वडे निःश्वास मुके छे, वारंवार आहार करे छे, वारंवार परिणमावे छे, वारंवार उच्छवास ले छे अने वारंवार
निःश्वास मुके छे, कदाचित् आहार करे छे, कदाचित् परिणमावे छे, कदाचित् उच्छवास ले छे अने कदाचित् निःश्वास मुके छे ?
हे गौतम ! नैरयिको सर्वात्म वडे आहार करे छे, ए प्रमाणे तेज कहेवुं यावत् कदाचित् निःश्वास मुके छे.

पूर्वे जेम सूत्र कह्युं छे तेम अहीं पण 'नियमा छद्दिसिं' ए पद सुधी जाणवुं. ते आ प्रमाणे-जे स्पर्शेला द्रव्योनो आहार करे छे, हे
भगवन् ! ते अवगाढ-आत्मप्रदेशो वडे अवगाहेलां द्रव्योनो आहार करे छे के अनवगाढ-अवगाढ क्षेत्रनी बहार रहेलां, नहि अव-
गाहेलां द्रव्योनो आहार करे छे ? हे गौतम ! अवगाहेलां द्रव्योनो आहार करे छे पण नहि अवगाहेलां द्रव्योनो आहार करतो नथी.
हे भगवन् ! जे अवगाढ—अवगाहेलां द्रव्योनो आहार करे छे ते अनन्तरावगाढ—अन्तर सिवाय साक्षात् अवगाहेलां द्रव्योनो आहार

करे छे के परंपरावगाढ-अन्तर सहित अवगाढ द्रव्योनो आहार करे छे ? हे गौतम ! अनन्तरावगाढ द्रव्योनो आहार करे छे पण परंपरावगाढ द्रव्योनो आहार करतो नथी. हे भगवन् ! जे अनन्तरावगाढ द्रव्योनो आहार करे छे ते शुं अणु-सूक्ष्म, थोडां प्रदेशवाळां द्रव्योनो आहार करे छे के वादर-घणां प्रदेशवाळां द्रव्योनो आहार करे छे ? हे गौतम ! सूक्ष्म द्रव्योनो पण आहार करे छे अने वादर द्रव्योनो पण आहार करे छे. हे भगवन् ! जे सूक्ष्म द्रव्योनो पण आहार करे छे अने वादर द्रव्योनो पण आहार करे छे ते शुं उर्ध्व-उपरना प्रदेशोमां रहेला, अधो-नीचेना प्रदेशमां रहेलां के तीरछा प्रदेशोमां रहेला द्रव्योनो आहार करे छे ? हे गौतम ! उपरना प्रदेशोमां रहेला, नीचेना प्रदेशामां रहेला अने तीरछा प्रदेशोमां रहेला द्रव्योनो पण आहार करे छे. हे भगवन् ! जे उपरना प्रदेशोमां रहेलां, अधो-नीचेना प्रदेशोमां रहेला के तीरछा प्रदेशोमां रहेला द्रव्योनो आहार करे छे ते शुं आदिमां, मध्यमां के अन्तमां आहार करे छे ? हे गौतम ! आदिमां, मध्यमां अने अन्तमां आहार करे छे. हे भगवन् ! जे आदिमां मध्यमां के अन्तमां आहार करे छे ते शुं स्वविषय-पोताना विषयभूत द्रव्योनो आहार करे छे के अविषय द्रव्योनो आहार करे छे ? हे गौतम ! स्वविषय द्रव्योनो आहार करे छे, पण अविषय द्रव्योनो आहार करतो नथी. हे भगवन् ! जे स्वविषय द्रव्योनो आहार करे छे ते शुं अनुक्रमे आहार करे छे के अनुक्रम सिवाय आहार करे छे ? हे गौतम ! अनुक्रमे आहार करे छे, पण अनुक्रम सिवाय आहार करतो नथी. हे भगवन् ! जे द्रव्योनो अनुक्रमे आहार करे छे ते त्रण दिशाथी आवेलां, चार दिशाथी आवेलां, पांच दिशाथी आवेलां के छ दिशाथी आवेलां द्रव्योनो आहार करे छे ? हे गौतम ! अवश्य छ दिशापथी आवेला द्रव्योनो आहार करे छे.

व्याख्या—अहीं आत्मप्रदेशोनो स्पर्श आत्मप्रदेशो वडे अवगाढ-आश्रित क्षेत्रनी वहार पण संभवे छे माटे प्रश्न करे छे-हे भगवन् ! जे स्पर्शेलां पुद्गल द्रव्योनो आहार करे छे ते अवगाढ-आत्मप्रदेशो साथे एक क्षेत्रमां रहेलां, के अनवगाढ-आत्मप्रदेशना अवगाह क्षेत्रथी वहार रहेलां द्रव्योनो आहार करे छे ? भगवान् उत्तर आपे छे-हे गौतम ! अवगाढ द्रव्योनो आहार करे छे पण अनवगाढ द्रव्योनो आहार करतो नथी, हे भगवन् ! जे अवगाढ द्रव्योनो आहार करे छे ते शुं अनन्तरावगाढ पटले जे आत्मप्रदेशोमां अनन्तर-

अन्तर-व्यवधान सिवाय अवगाढ-रहेला द्रव्यो होय ते आत्मप्रदेशो वडे ते द्रव्योनो आहार करे छे के परंपरावगाढ-एक, बे, त्रण आदि आत्मप्रदेशो वडे अन्तरवाळा द्रव्योनो आहार करे छे? भगवान् कहे छे-हे गौतम! अनन्तरावगाढ द्रव्योनो आहार करे छे, पण परंपरावगाढ द्रव्योनो आहार करतो नथी. हे भगवन्! जे अनन्तरावगाढ द्रव्योनो आहार करे छे ते शुं अणु-थोडां प्रदेशवाळां द्रव्योनो आहार करे छे के बादर-घणा प्रदेशवाळां द्रव्योनो आहार करे छे? अहीं अणुपणुं अने बादरपणुं आहारने योग्य स्कन्धोना थोडा प्रदेश अने घणा प्रदेशोनी अपेक्षाए जाणवुं. हे भगवन्! जे अणु-थोडा प्रदेशवाळा द्रव्योनो पण आहार करे छे ते शुं उर्ध्व-उपरना प्रदेशोमां रहेलां, नीचेना प्रदेशोमां रहेलां के तीरछा प्रदेशोमां रहेलां द्रव्योनो आहार करे छे? भगवान् कहे छे-हे गौतम! उपरना प्रदेशोमां रहेलां, नीचेना प्रदेशोमां रहेलां अने तीरछा रहेलां द्रव्योनो पण आहार करे छे. अहीं उर्ध्वपणुं अधोपणुं अने तीरछापणुं जेटला क्षेत्रमां नैरयिक रहेलो होय तेटला क्षेत्रमां ते क्षेत्रनी अपेक्षाए जाणवुं.

हे भगवन्! जे ऊर्ध्व प्रदेशावगाढ, अधः प्रदेशावगाढ के तीरछा प्रदेशावगाढ द्रव्योनो आहार करे छे ते शुं आदिमां आहार करे छे मध्यमां आहार करे छे के अन्तमां आहार करे छे? प्रश्ननुं आ तात्पर्य छे—नैरयिको पोताना उपभोगने योग्य अनन्तप्रदेशिक द्रव्यो अन्तर्मुहूर्त काळ सुधी ग्रहण करे छे. तेथी संशय थाय छे के उपभोगने योग्य अन्तर्मुहूर्त प्रमाण काळनी आदिमां-प्रथम समये आहार करे छे, मध्य समयोमां आहार करे छे के छेल्ला समये आहार करे छे? भगवान् उत्तर आपे छे-हे गौतम! आदिमां पण आहार करे छे, मध्यमां पण आहार करे छे अने अन्ते पण आहार करे छे. तात्पर्य ए छे के उपभोगने योग्य अन्तर्मुहूर्तप्रमाण काळनी आदिमां मध्यम, अने छेल्ला समये पण आहार करे छे. हे भगवन्! जे आदिमां, मध्यमां अने अन्तमां पण आहार करे ते शुं स्वविषय-पोताना आहारने योग्य द्रव्योनो आहार करे छे के अविषय-पोताना आहारने अयोग्य द्रव्योनो आहार करे छे? भगवान् कहे छे—हे गौतम! स्वविषय द्रव्योनो आहार करे छे. पण अविषय द्रव्योनो आहार करतो नथी. हे भगवन्! जे स्वविषय द्रव्योनो आहार करे छे ते शुं आनुपूर्वी-अनुक्रम वडे के आनानुपूर्वी वडे आहार करे छे? आनुपूर्वी-जेम नजीक होय तेम, तेथी विपरीत

अनानुपूर्वी. भगवान् उत्तर आपे छे—आनुपूर्वी वडे—जे द्रव्योना नजीकना क्रमने अनुसरीने आहार करे छे. सूत्रमां द्वितीया विभक्ति तृतीयाना अर्थमां जाणवी. केमके आचारांग सूत्रमां 'अगणि च पुट्ठा'–अग्निना स्पृष्टाः–अग्नि वडे स्पर्श करायेला ए अर्थ छे. पण अनानुपूर्वी वडे आहार करतो नथी. उपर नीचे के तीरछा जेम नजीक होय तेम आहार करे छे, पण नजीकना क्रमने ओळंगीने आहार करतो नथी ए भावार्थ छे. हे भगवन् ! जेनो आनुपूर्वी–नजीकना क्रमथी आहार करे छे ते शुं त्रण दिशामां रहेलां पुद्गल द्रव्योनो आहार करे छे, चार दिशा, पांच दिशा के छ दिशामां रहेलां पुद्गलद्रव्यनो आहार करे छे ? अहीं लोकना निष्कुटने अन्ते जघन्य पदे त्रण दिशामां रहेलज द्रव्य प्राप्त थाय छे, पण बे दिशामां रहेल के एक दिशामां रहेल द्रव्य प्राप्त थतुं नथी माटे त्रण दिशाथी आरंभीने प्रश्न कर्यो छे. भगवान् उत्तर आपे छे—हे गौतम ! अवश्य छ दिशामांथी आवेलां पुद्गलद्रव्योनो आहार करे छे. कारण के नैरयिको त्रसनाडीना मध्य भागमां रहेला छे अने त्यां अवश्य छ दिशाना आहारनो संभव छे."

'ओसण्णकारणं पडुच्च' इत्यादि. ओसन्नशब्द बाहुल्यवाचक छे, जेमके 'ओसन्नं देवा सायावेयणं वेदयंति' बहुधा देवो सातावेदनीय वेदे छे. ओसन्न कारण एटले बाहुल्य कारण, सामान्य कारण, अने ते अशुभ विपाकज छे. तो पण प्रायः मिथ्यादृष्टि कृष्णादि वर्णवाळां पुद्गलोनो आहार करे छे, पण भविष्यना तीर्थंकरादि तेवां द्रव्योनो आहार करता नथी. तेथी 'ओसन्न' एम कह्युं छे. वर्णथी काळां अने नीलवर्णवाळां, गन्धथी दुर्गन्धवाळां, रसथी तिक्त अने कटुरसवाळां अने स्पर्शथी कर्कश–बरसठ, गुरु अने शीतस्पर्शवाळां पुद्गलद्रव्योनो आहार करे छे इत्यादि. आहार करता पुद्गलोना पुराण–पूर्वना वर्णगुणो, गन्धगुणो, रसगुणो अने स्पर्शगुणोने विपरिणामावी, परिपीड्य–परिपीडन करी, परिशाटन करी, परिविध्वंस करी, आ चारे पदो एकार्थक अने विनाश अर्थना वाचक छे. तेमज ते भिन्न भिन्न देशना शिष्यो उपर उपकार करवा माटे सूत्रमां ग्रहण करेलां छे. तथा बीजा अपूर्व वर्णगुणो, गन्धगुणो, रसगुणो अने स्पर्शगुणोने उत्पन्न करी पोताना शरीरक्षेत्रमां रहेला पुद्गलोने 'सव्वप्पणया' सर्वात्मा वडे एटले सर्व आत्मप्रदेशो वडे आहार रूपे ग्रहण करे छे.

३. नेरइया णं भंते! जे पोग्गले आहारत्ताते गिण्हंति ते णं तेसिं पोग्गलाणं सेयालंसि कतिभागं आहारेन्ति, कतिभागं आसाएंति ? गोयमा ! असंखेज्जतिभागं आहारेन्ति, अणंतभागं अस्साएंति । नेरइया णं भंते ! जे पोग्गले आहारत्ताते गिण्हंति ते किं सव्वे आहारेन्ति, नो सव्वे आहारेंति ? गोयमा ! ते सव्वे अपरिसेसए आ- हारेन्ति । नेरइया णं भंते! जे पोग्गला आहारत्ताए गिण्हंति ते णं तेसिं पोग्गला कीसत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणा-

३. हे भगवन् ! नैरयिको जे पुद्गलो आहारपणे ग्रहण करे छे ते पुद्गलोना केटला भागनो भविष्य काळे आहार करे छे, केटला भागनो आस्वाद करे छे ? हे गौतम ! असंख्यातमा भागनो आहारपणे उपयोग करे छे अने अनन्तमा भागनो आस्वाद ले छे. हे भगवन् ! नैरयिको जे पुद्गलो आहारपणे ग्रहण करे छे ते बधा पुद्गलोनो आहार करे छे के बधा पुद्गलोनो आहार करतो नथी ? हे गौतम! ते बधा अपरिशेष पुद्गलोनो आहार करे छे. हे भगवन् ! नैरयिको जे पुद्गलो आहारपणे ग्रहण करे छे ते पु-

३. 'नेरइया णं भंते ! जे पोग्गला' इत्यादि. हे भगवन् ! नैरयिको जे पुद्गलोने आहारपणे ग्रहण करे छे, ते ग्रहण करेला पुद्ग- लोनो 'सेकालंसि' भविष्य काळे पटले ग्रहण कर्या पछी 'कइभागं' केटलामो भाग आहाररूपे उपयोग करे छे तथा आहाररूपे ग्रहण करेलां पुद्गलद्रव्योना 'कतिभागं' केटलामा भागनो आस्वाद ले छे ? कारण के आहाररूपे ग्रहण कराता बधा पुद्गलो आस्वादने प्राप्त थता नथी माटे जुदो प्रश्न कर्यो छे. भगवान् उत्तर आपे छे-हे गौतम ! ग्रहण करेला पुद्गलोना असंख्यातमा भागने आहारपणे ग्रहण करे छे. बीजा पुद्गलो जेम गाय वगेरे घासनो मोटो कोळीओ भरे त्यारे तेमांथी पडी जाय तेम पडी जाय छे. आहारपणे ग्रहण कराता पुद्गलोना अनन्तमा भागनो आस्वाद ले छे. बाकीना पुद्गलद्रव्यो आस्वाद लीधा सिवाय शरीरपरिणामने प्राप्त थाय छे. 'नेरइया णं भंते' !-हे भगवन् ! नैरयिको जे पुद्गलो आहारपणे ग्रहण करे छे ते पुद्गलो तेओने केवा स्वरूपे परिणमे छे ? इत्यादि. अहीं विशिष्ट

मंति ? गोयमा ! सोतिंदियत्ताते जाव फासिंदियत्ताते अणिट्ठत्ताते अकंतत्ताए अप्पियत्ताए, असुभत्ताए, अमणुण्णत्ताए, अमणामत्ताते अणिच्छियत्ताते अ(ण)भिज्झियत्ताए अहत्ताते नो उड्ढत्ताए, दुक्खत्ताते नो सुहत्ताते एतेसिं भुज्जो भुज्जो परिणमंति ।

दूगलो तेओने केवा रूपे वारंवार परिणमे छे ? हे गौतम ! तेओने श्रोत्रेन्द्रियपणे, यावत् स्पर्शेन्द्रियपणे, अनिष्टपणे, अकान्तपणे, अप्रियपणे, अशुभपणे, अमनोज्ञपणे, अमनोहरपणे, अनिच्छनीयपणे, अनभिलापितरूपे, अधोपणे–भारेपणे पण ऊर्ध्वपणे–लघुपणे नहि, दुखरूपे पण सुःखरूपे नहि एवा प्रकारे एओने वारंवार परिणमे छे.

ग्रहण समजवुं. तेथी जेना शेष भागनो त्याग कर्यो छे एवा अने केवळ आहार परिणामने योग्य पुद्गल द्रव्यो छे ते आहाररूपे ग्रहण करायेला पुद्गलो संबन्धे अहीं प्रश्न जाणवो. जो एम न होय तो उत्तर सूत्रनी अपेक्षाए पूर्वापर विरोधनो प्रसंग प्राप्त थाय. परन्तु भगवन्तना वचनमां विरोधनी संभावना पण नथी, माटे आ प्रमाणे व्याख्या करवी बरोबर छे. तेथी आवा प्रकारना पूर्वापर विरोधनी आशङ्का दूर करवा माटे पूर्वाचार्योए कालिकसूत्रनो अनुयोग (व्याख्यान) कर्यो छे. ए संबन्धे कह्यं छे के—

"जं जह सुत्ते भणियं तहेव तं जइ वियालणा नत्थि । किं कालियाणुजोगो दिट्ठो दिट्ठिपहाणेहिं" ॥

जो सूत्रमां जेम कह्युं छे ते तेमज छे अने तेमां विचार करवानो अवकाश नथी तो दृष्टिप्रधान पूर्वाचार्योए कालिकसूत्रना अनुयोगनो केम उपदेश कर्यो ? एटले सूत्रमां व्याख्याननी आवश्यकता छे अने तेथी ज विशेषार्थनो निश्चय थाय छे. एथी ज पूर्वाचार्योए कालिकसूत्रना अनुयोगनो उपदेश कर्यो छे. ते बधा पुद्गलो आहाररूपे ग्रहण करे छे के बधा ग्रहण करतो नथी ? भगवान् ! उत्तर आपे छे—ते अशेष-बधा पुद्गलोनो आहार करे छे, केमके ग्रहण करतां छूटी जाय ते सिवायना बाकी रहेला अने केवळ आहारना

परिणामने योग्य बधा य पुद्गलो ग्रहण करेलां छे.
'नेरइया णं' इत्यादि. हे भगवन्! नैरयिको जे पुद्गलो आहारपणे ग्रहण करे छे ते पुद्गलो तेओने केवा स्वरूपे वारंवार परिणमे
छे? भगवान् उत्तर आपे छे—हे गौतम! श्रोत्रेन्द्रियरूपे, यावत् शब्दथी चक्षुइन्द्रियरूपे, घ्राणेन्द्रियरूपे अने जिह्वेन्द्रियरूपे एम ग्रहण
करवुं तथा स्पर्शेन्द्रियरूपे परिणमे छे. इन्द्रियरूपे पण परिणाम पामतां ते पुद्गलो शुभरूप नथी पण एकान्त अशुभरूप छे. जे हेतुथी
कहे छे—'अणिट्ठत्ताए' 'अनिष्टपणे' इत्यादि. इष्ट-मनवडे इच्छेलां, जेमके आ सारुं थयुं जे आवी रीते आ पुद्गलो परिणत थयां, तेथी
विपरीत अनिष्टपणे परिणमे छे, अहीं कोइ वस्तु परमार्थथी शुभ छतां केटलाकने अनिष्ट लागे छे, जेम के माखीओने चंदन कपूर
वगेरे, तेथी सूत्रकार कहे छे—'अकंतत्ताए' अकान्तपणे, अत्यंत अशुभवर्णयुक्त होवाथी नहि इच्छवा लायकपणे, ए हेतुथी ज
'अप्रियतया' अप्रियपणे-जोवा मात्रथी पण पोताने विषे प्रिय बुद्धि नहि उत्पन्न करनारा एवा अप्रियपणे, 'असुभत्ताए' अशुभवर्ण
गन्ध, रस अने स्पर्शरूप होवाथी अशुभपणे, विपाककाळे दुःख उत्पन्न करनारा होवाथी मनने आनन्द नहि आपनारा होवाथी 'अम-
णुन्नत्ताए' अमनोज्ञपणे, 'अमणामत्ताए' अमनोहरपणे, भोज्यपणे मन न पसंद पडे तेवापणे, कारण के कदि पण भोज्यपणे प्राणीओना मनने प्राप्त थता
नथी. 'अणिच्छियत्ताए' अनीप्सितपणे, कारण के भोज्यपणे खावाने इच्छेला नथी, 'अ(ण)भिज्झियत्ताए' अभिध्या-अभिलाषा, जेने विषे
अभिलाषा थाय ते अभिध्यित-अभीष्ट कहेवाय, तेथी भिन्न अनभीष्टपणे, तात्पर्य ए छे के—जे आहारपणे पुद्गलो ग्रहण कर्या छे ते तृप्तिनुं
कारण थता नथी तेथी फरी अभिलाषाना विषयपणे परिणमता नथी. तथा 'अहत्ताए' अधोपणे-भारेपणे, पण 'उर्ध्वपणे' लघुपरिणामरूपे
नहि, तेनो भारे परिणाम होवाथी 'दुहत्ताए' दुखरूपे, पण लघुपरिणामवडे नहि परणमेला होवाथी सुखरूपे नहि, ए प्रमाणे नैरयिको-
ने ते पुद्गलो वारंवार परिणमे छे. ए ज आहारार्थी वगेरे सात द्वारोनो असुरकुमारादि भवनपतिमां विचार करवानी इच्छावाळा सूत्रकार
कहे छे—'जहा नेरइया णं' जेम नैरयिकोने कह्युं तेम असुरकुमारोने 'तेसिं भुज्जो भुज्जो परिणमंति' तेओने वारंवार परिणमे छे ए पद
सुधी यावत् कहेवुं. तेमां नारक सूत्रथी आ असुरकुमार सूत्रनी विशेषता बतावे छे—'तत्थ णं जे से'—तेमां जे आभोगनिर्वर्तित आ-

४. असुरकुमारा णं भंते ! आहारट्ठी ? हंता ! आहारट्ठी । एवं जहा नेरइयाणं तहा असुरकुमाराणवि भाणितव्वं, जाव तेसिं भुज्जो भुज्जो परिणमंति । तत्थ णं जे से आभोगनिव्वत्तिते से णं जहण्णेणं चउत्थभत्तस्स, उक्कोसेणं सातिरेगवाससहस्सस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ । ओसण्णं कारणं पडुच्च वण्णतो हालिद्दसुक्किल्लातिं, गंधतो सुब्भिगंधातिं, रसतो अंबिलमहुरातिं फासओ मउयलहुयनिद्धुण्हातिं, तेसिं पोराणे वण्णगुणे जाव फा-

४. हे भगवन् ! असुरकुमारो आहारनी इच्छावाळा होय ? हा गौतम ! आहारनी इच्छावाळा होय. ए प्रमाणे जेम नैरयिकोने कह्युं तेम असुरकुमारोने पण कहेवुं.यावत् तेओने वारंवार परिणमे छे. तेमां जे आभोगनिर्वर्तित–इच्छापूर्वक आहार छे ते संबंधे तेओने जघन्यथी चतुर्थ भक्त–एक दिवसे अने उत्कृष्ट कंइक अधिक एक हजार वरसे आहारनी इच्छा उत्पन्न थाय छे. सामान्य कारणने आश्रयी वर्णथी हारिद्र–पीळा अने शुक्ल, गंधथी सुगंधी, रसथी खाटा अने मधुर रसवाळा अने स्पर्शथी मृदु, लघु, स्निग्ध अने

हार छे' इत्यादि. ए प्रमाणे प्रतिपादन करेला सूत्रनी मन्दबुद्धिवाळा शिष्यने बराबर प्रतीति न थाय माटे तेना उपर उपकार करवा माटेसूत्र दर्शावे छे—

४. असुरकुमारा णं भंते आहारट्ठी? हन्ता आहारट्ठी? इत्यादि. हे भगवन् ! असुरकुमारो आहारनी इच्छावाळा छे? हा छे. हे भगवन् ! असुरकुमारोने केटला काळे आहारनी इच्छा उत्पन्न थाय ? अहीं प्राकृत होवाथी सप्तमीना अर्थमां छट्ठी विभक्ति छे. एटले कियति काले अतिक्रान्ते सति–केटलो काळ गये छते आहारार्थ–आहारनी अभिलाषा उत्पन्न थाय ? असुरकुमारोने बे प्रकारनो आहार छे–आभोग निर्वर्तित अने अनाभोगनिर्वर्तित. तेमां जे अनाभोगनिर्वर्तित आहार छे ते तेने प्रतिसमय निरन्तर होय छे. तेमां जे आभोगनिर्वर्तित आहार छे ते संबन्धे जघन्यथी चतुर्थभक्त पछी अने उत्कृष्ट कंइक अधिक हजार वरस गया पछी आहारनी अभिलाषा उत्पन्न थाय

सिंदियत्ताते जाव मणामत्ताते इच्छियत्ताते भिज्झियत्ताते उद्धत्ताते नो अहत्ताए, सुहत्ताए नो दुहत्ताए, तेसिं भुज्जो भुज्जो परिणमंति, सेसं जहा नेरइयाणं, एवं जाव थणियकुमाराणं, णवरं आभोगनिव्वत्तिते उक्कोसेणं दिवसपुहुत्तस्स आहारट्ठे समुप्पज्जति ।

उण्ण पुद्गलो तथा तेओना पूर्वना वर्णगुणनो विपरिणाम करी, विध्वंस करी यावत् स्पर्शेन्द्रियपणे यावत् मनोहरपणे इच्छनीयपणे अभिलषितपणे ऊर्ध्वपणे--लघुपणे पण भारेपणे नहि, सुखरूपे पण दुखरूपे नहि एवो तेओने वारंवार परिणाम थाय छे. बाकी बधुं नैरयिकोनी पेठे समजवुं. ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमारोने जाणवुं. परन्तु इच्छापूर्वक आहार संबंधे उत्कृष्ट दिवसपृथक्त्वे—बे दिवसथी नव दिवसे आहारनी इच्छा उत्पन्न थाय छे.

छे, तेमां 'चतुत्थभत्तस्स' अहीं सप्तमीना अर्थमां षष्ठी विभक्ति छे. चतुर्थभक्त ए आगममां एक दिवसनी संज्ञा छे, एटले जघन्यथी एक दिवस गया पछी फरी आहारनी इच्छा उत्पन्न थाय छे. आ दस हजार वरस आयुषवाळाने जाणवुं, अने उत्कर्षथी कंइक अधिक हजार वरस गया पछी आहारनी इच्छा उत्पन्न थाय छे ते सागरोपमना आयुषवाळाने समजवुं. 'असुरकुमाराणं भंते'! 'किंमाहारमाहारयन्ति ? इत्यादि हे भगवन् ! असुरकुमारो शेनो आहार करे छे ? हे गौतम ! द्रव्यथी अनन्तप्रदेशिक, क्षेत्रथी असंख्यात प्रदेशावगाढ, काळथी कोइपण जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्टस्थितिवाळां अने भावथी वर्णवाळां, गन्धवाळां, रसवाळां अने स्पर्शवाळां यावत् अवश्य छ दिशाथी आवेलां पुद्गलद्रव्योनो आहार करे छे. सामान्य कारणने आश्रयी वर्णथी पीतवर्णवाळां अने शुक्लवर्णवाळां, गन्धथी सुगन्धी, रसथी खाटां अने मधुर अने स्पर्शथी मृदु, लघु, स्निग्ध अने उष्णगुणवाळां, तथा तेओना पूर्वना वर्णगुण, गन्धगुण, रसगुण अने स्पर्शगुणने विपरिणमावी, यावत् इच्छितपणे, अभिलाषाना विषयपणे, ऊर्ध्वपणे—लघुपणे, पण अधोपणे—गुरुपणे नहि, सुखरूपे, पण दुःखरूपे नहि एवा ते पुद्गल

५. पुढविकाइया णं भंते! आहारट्ठी? हंता! आहारट्ठी। पुढविकाइया णं भंते! केवतिकालस्स आहारट्ठे समुप्पज्जति? गोयमा! अणुसमयमविरहिते आहारट्ठे समुप्पज्जइ। पुढविकाइया णं भंते! किमाहारमाहारेन्ति? एवं जहा नेरइयाणं जाव ताइं कतिदिसिं आहारेन्ति? गोयमा! निव्वाघातेणं छद्दिसिं, वाघायं पडुच्च सिय तिदिसिं सिय चउदिसिं सिय पंचदिसिं, नवरं ओसन्नकारणं न भण्णति। वण्णओ कालनीललोहितहालिद्दसुक्कि-

५. हे भगवन्! पृथिवीकायिको आहारनी इच्छावाळा होय? हा, आहारनी इच्छावाळा होय. हे भगवन्! पृथिवीकायिकोने केटला काळे आहारनी इच्छा उत्पन्न थाय? हे गौतम! तेने प्रतिसमय निरंतर आहारनी इच्छा होय छे. हे भगवन्! पृथिवीकायिको शेनो आहार करे छे? ए प्रमाणे जेम नैरयिकोने कह्युं तेम कहेवुं. यावत् केटली दिशाथी आवेलां पुद्गल द्रव्योनो आहार करे छे? हे गौतम! व्याघात-प्रतिबन्ध सिवाय छ दिशाथी आवेलां अने व्याघातने आश्रयी कदाच त्रण दिशाथी आवेलां, कदाच

द्रव्यो तेओने वारंवार परिणमे छे. जेम असुरकुमारो संबन्धे सूत्र कह्युं तेम नागकुमारथी मांडी स्तनितकुमार सुधी कहेवुं. परन्तु आभोगनिर्वर्तित आहारना विचारमां उत्कृष्टथी कहेवाना अवसरे 'उत्कर्षथी दिवसपृथक्त्वे-बे दिवसथी नव दिवसे आहारनी इच्छा थाय छे' एम कहेवुं. आ कथन पल्योपमना असंख्यातमा भागना के तेथी वधारे आयुषवाळाने माटे समजवुं. बाकी बधुं तेमज जाणवुं.

५. हवे पृथिवीकायिको संबन्धे आ सात अधिकारोनो विचार करवानी इच्छावाळा सूत्रकार कहे छे-'पुढवीकाइया णं भंते!-हे भगवन्! पृथिवीकायिको आहारनी इच्छावाळा होय? इत्यादि. 'पृथिवीकायिकोना सूत्रनो पूर्वनी पेठे विचार करवो, परन्तु निव्वाघाएणं छद्दिसिं' इत्यादि. 'निर्व्याघात-व्याघातनो अभाव होय त्यारे अवश्य छ दिशामां रहेला-छ दिशामांथी आवेला पुद्गलोनो आहार करे छे'. व्याघात एटले अलोकाकाश वडे स्खलना-प्रतिबन्ध थवो, व्याघातने आश्रयी लोकना निष्कुटादि-गवाक्षादिने विशे कदाचित् त्रण दिशाथी

ल्लातिं, गंधतो सुब्भिगंधदुब्भिगंधातिं, रसतो तित्तरसकडुयरसकसायरसअंबिलमहुराइं, फासतो कक्खडफास-
मउगगुरुयलहुयसीतउण्हणिद्धलुक्खातिं, तेसिं पोराणे वण्णगुणे सेसं जहा नेरइयाणं जाव आहच्च नीससंति।
पुढविकाइया णं भंते! जे पोग्गले आहारत्ताते गिण्हंति तेसिं भंते! पोग्गलाणं सेयालंसि कतिभागं आहारेन्ति,
कतिभागं आसाएंति? गोयमा! असंखेज्जतिभागं आहारेन्ति, अणंतभागं आसाएंति। पुढविकाइया णं भंते!
जे पोग्गले आहारत्ताते गिण्हंति ते किं सव्वे आहारेन्ति, नो सव्वे आहारेन्ति? जहेव नेरइया तहेव। पुढवि-

चार दिशाथी आवेलां अने कदाच पांच दिशाथी आवेलां पुद्गल द्रव्योनो आहार करे छे. परन्तु अहीं 'ओसन्नं कारणं' सामान्य कारण
कहेवानुं नथी. वर्णनी अपेक्षाए काळां, लीलां, लाल, पीळां अने शुक्ल वर्णवाळां, गन्धनी अपेक्षाए सुगन्धी अने दुर्गन्धी, रसनी अ-
पेक्षाए तीखां, कडवा, तूरा, खाटा अने मधुर रसवाळां अने स्पर्शनी अपेक्षाए कर्कश, मृदु, गुरु, लघु, शीत, उष्ण, स्निग्ध अने रुक्ष
स्पर्शवाळां पुद्गलो तेओना पूर्वना वर्णगुणोने विपरिणमावी-इत्यादि बधुं नैरयिकोने कह्युं तेम कहेवुं. यावत् कदाचित् निःश्वास
ले छे. हे भगवन्! पृथिवीकायिको जे पुद्गलोने आहारपणे ग्रहण करे छे ते पुद्गलोनो केटलामो भाग भविष्य काळे आहार करे छे-
आहारना परिणामने योग्य करे छे अने केटला भागनो आस्वाद ले छे? हे गौतम! असंख्यातमा भागनो आहार करे छे अने
अनन्तमा भागनो आस्वाद ले छे. हे भगवन्! पृथिवीकायिको जे पुद्गलोने आहारपणे [विशिष्ट रूपे] ग्रहण करे छे शुं ते बधानो

आवेलां, कदाचित् चार दिशाथी आवेलां अने कदाचित् पांच दिशाथी आवेला पुद्गल द्रव्योनो आहार करे छे. अहीं आ भावार्थ छे—
ज्यारे पृथिवीकायिक जीव 'लोकनिष्कुट'-लोकना गवाक्ष जेवा प्रान्त भागने विषे छेल्ले नीचेना प्रतरना अग्नि खुणामां रहेलो

काइया णं भंते ! जे पोग्गले आहारत्ताते गिण्हंति ते णं तेसिं पुग्गला कीसत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमंति ? गोयमा ! फासिंदियवेमायत्ताते भुज्जो भुज्जो परिणमंति, एवं जाव वणस्सइकाइया ।

आहार करे छे-आहारना परिणामने योग्य करे छे के बधानो आहार करतो नथी ? जेम नैरयिको संबन्धे कह्युं तेम कहेवुं. हे भगवन् ! जे पुद्गलो आहारपणे ग्रहण करे छे ते पुद्गलो तेओने केवा रूपे वारंवार परिणमे छे ? हे गौतम ! स्पर्शेन्द्रियना विविध प्रकारे वारंवार परिणमे छे. ए प्रमाणे वनस्पतिकायिको सुधी जाणवुं.

होय छे त्यारे तेनी नीचेनो भाग अलोक वडे व्याप्त होवाथी अधोदिशाना पुद्गलोनो अभाव होय छे. अग्नि खुणामां रहेलो होवाथी पूर्व दिशाना अने दक्षिण दिशाना पुद्गलोनो अभाव होय छे, ए प्रमाणे तेनी अधोदिशा, पूर्व दिशा अने दक्षिण दिशा अलोक वडे व्यापेली होवाथी तेने छोडी जे बाकी रहेली ऊर्ध्व, पश्चिम अने उत्तर दिशा अबाधित छे, तेथी ते दिशा तरफथी आवेला पुद्गलोनो आहार करे छे. ज्यारे ते पृथिवीकायिक पश्चिम दिशामां रहे छे, त्यारे पूर्व दिशा अधिक थाय छे. अने दक्षिण अने अधो ए बे दिशा अलोक वडे व्याघातवाळी छे, माटे ते चारे दिशाथी आवेला पुद्गलोनो आहार करे छे. ज्यारे उपरना बीजा आदि प्रतरमां रहेल पश्चिम दिशाने अवलंबीने रहे छे, त्यारे नीचेनी पण दिशा अधिक होय छे, केवळ पर्यन्तवर्ती एक दक्षिण दिशा अलोक वडे व्याघातवाळी छे, माटे पांच दिशाथी आवेला पुद्गलोनो आहार करे छे. बाकीनुं बधुं सूत्र पूर्वनी पेठे कहेवुं. जे विशेषता छे ते बतावे छे—परन्तु 'ओसन्नं कारणं न भन्नइ' 'सामान्य कारणने आश्रयी कहेवानुं नथी' इत्यादि सुगम छे 'स्पर्शनेन्द्रियनी विमात्रा-विषम मात्रा, विविधता वडे तेना इष्ट अनिष्ट अनेक भेद रूपे परिणमे छे ए भावार्थ छे. परन्तु नारकोनी पेठे एकान्त अशुभ रूपे अने देवोनी पेठे एकान्त शुभ रूपे परिणमता नथी. जेम पृथिवीकायिको संबन्धे सूत्र कह्युं तेम अप्, तेजस् अने वनस्पतिकायिकोने पण कहेवुं. कारण के बधाय सकल लोकव्यापी होवाथी तेओमां विशेषता नथी.

६. बेइंदिया णं भंते ! आहारट्ठी ? हन्ता आहारट्ठी । बेइंदिया णं भंते ! केवतिकालस्स आहारट्ठे समुप्पज्जति ? जहा नेरइयाणं, नवरं तत्थ णं जे से आभोगनिव्वत्तिते से णं असंखिज्जसमइए अंतोमुहुत्तिए वेमायाए आहारट्ठे समुप्पज्जति, सेसं जहा पुढविकाइयाणं, जाव आहच्च नीससंति, नवरं नियमा छद्दिसिं । बेइंदियाणं भंते ! [पुच्छा] जे पोग्गले आहारत्ताते गिण्हंति ते णं तेसिं पुग्गलाणं सियालंसि कतिभागं आहारेन्ति कतिभागं आसाएंति ? एवं जहा नेरइयाणं । बेइंदिया णं भंते ! जे पोग्गला आहारत्ताए गिण्हंति ते किं सव्वे आहारेन्ति, णो सव्वे आहा-

---

६. हे भगवन् ! बेइन्द्रियो आहारनी इच्छावाळा होय ? हा, आहारनी इच्छावाळा होय. हे भगवन् ! बेइन्द्रियोने आहारनो अभिलाष केटला काळे थाय ? हे गौतम ! नैरयिकोनी पेठे जाणवुं. परन्तु तेमां जे आभोगनिर्वर्तित–इच्छापूर्वक आहार छे ते संबधे असंख्यात समय प्रमाण अन्तर्मुहूर्त गये विविध रूपे आहारनी इच्छा उत्पन्न थाय छे. बाकी बधुं पृथिवीकायिकोने कह्युं तेम 'जाव आहच्च नीससंति' यावत् कदाचित् निःश्वास ले छे त्यां सुधी कहेवुं. परन्तु एटली विशेषता छे के तेओ अवश्य छ दिशाथी आवेला पुद्गलोनो आहार करे छे. हे भगवन् ! बेइन्द्रिय जीवो जे पुद्गलोने आहारपणे ग्रहण करे छे, ते पुद्गलोना केटला भागनो भविष्य काळे आहार-

---

६. 'बेइंदिया णं भंते ! आहारट्ठी' ? हे भगवन् ! बेइन्द्रियो आहारनी इच्छावाळा होय छे—इत्यादि सूत्र सुगम छे, परन्तु बेइन्द्रियोने बे प्रकारनो आहार छे—लोमाहार अने प्रक्षेपाहार, लोम–रोमकूप, ते वडे जे आहार ग्रहण थाय ते लोमाहार. जेनो मुखमां प्रक्षेप कराय ते प्रक्षेपाहार के कवलाहार कहेवाय छे. तेमां जे सामान्य रीते वर्षादि काळने विशे शरीरमां पुद्गलोनो प्रवेश जे मूत्रादि वडे जाणी शकाय छे ते लोमाहार समजवो. अने मुखमां कोळीआ लेवा वडे जे आहार करवो ते प्रक्षेपाहार. तेमां जे पुद्गलोने लोमाहारपणे ग्रहण करे

रेन्ति ? गोयमा ! वेइंदियाणं दुविधे आहारे पन्नत्ते, तंजहा—लोमाहारे य पक्खेवाहारे य, जे पोग्गले लोमाहारत्ताए गिण्हति ते सव्वे अपरिसेसे आहारेन्ति, जे पोग्गले पक्खेवाहारत्ताए गेण्हंति तेसिमसंखेज्जतिभागमाहारेन्ति, अणेगाइं च णं भागसहस्साइं अफासाइज्जमाणाणं अणासाइज्जमाणाणं विद्धंसमागच्छंति। एतेसि णं भंते ! पोग्गलाणं अणासाइज्जमाणाणं अफासाइज्जमाणाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पोग्गला अणासाइज्जमाणा, अफासाइज्जमाणा अणंतगुणा । वेइंदियाणं भंते ! जे पोग्गला आहारत्ताते-पुच्छा ।

रूप परिणाम करे छे अने केटला भागनो आस्वाद ले छे–ए प्रमाणे जेम नैरयिकोने कह्युं तेम कहेवुं. हे भगवन् ! वेइन्द्रिय जीवो जे पुद्गलोने आहार रूपे [विशिष्ट] ग्रहण करे छे शुं ते बधानो आहार करे छे के बधानो आहार करतो नथी ? हे गौतम ! वेइन्द्रियोने बे प्रकारनो आहार कह्यो छे–लोमाहार अने प्रक्षेपाहार. तेमां जे पुद्गलोने लोमाहारपणे ग्रहण करे छे ते बधानो समग्रपणेआहार करे छे. अने जे पुद्गलोने प्रक्षेपाहारपणे ग्रहण करे छे तेओना असंख्यातमा भागनो आहार करे छे अने अनेक हजार भागो स्पर्श कर्या सिवाय के स्वाद लीधा सिवाय नाश पामे छे. हे भगवन् ! स्वाद लीधा सिवायना अने स्पर्श कर्या सिवायना पुद्गलोमां कया पुद्गलो

छे ते बधानो अपरिशेषपणे–समग्रपणे आहार करे छे, कारण के ते पुद्गलोनो तेवा प्रकारनो स्वभाव छे. जे पुद्गलोने प्रक्षेपाहारपणे ग्रहण करे छे तेओना असंख्यातमा भागनो आहार करे छे. अने 'अनेक हजार भागो'–घणा असंख्याता भागो स्पर्श कर्या सिवाय अने स्वाद लीधा सिवाय नाश पामे छे. तात्पर्य ए छे के घणां द्रव्यो अंदर अने बहार नहि स्पर्श करायेलां, तेम नहि स्वाद लीधेला नाश पामे छे. परन्तु केटलाक अति स्थूलपणाथी अने केटलाक अति सूक्ष्मपणाथी यथा संभव नाश पामे छे. हवे नहि स्पर्श करायेला अने आस्वाद नहि लीधेला

गोयमा ! जिब्भिंदियफासिंदियवेमायत्ताए तेसिं भुज्जो भुज्जो परिणमंति । एवं जाव चउरिंदिया,णवरं णेगाइं च णं भागसहस्साइं अणाघाइज्जमाणाइं अणासाइज्जमाणाइं अफासाइज्जमाणाइं विद्धंसमागच्छंति । एतेसि णं

कोनाथी अल्प बहु, तुल्य के विशेपाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा पुद्‌गलो स्वाद लीधा सिवायना छे, तेथी स्पर्श कर्या सिवायना पुद्‌गलो अनन्तगुणा छे. हे भगवन् ! बेइन्द्रियो जे पुद्‌गलो आहारपणे ग्रहण करे छे ते तेओने केवा रूपे वारंवार परिणमे छे ? हे गौतम ! तेओने जिह्वेन्द्रिय अने स्पर्शनेन्द्रियना विविधपणे वारंवार परिणमे छे. ए प्रमाणे चउरिन्द्रियो सुधी जाणवुं. परन्तु

पुद्गलोनुं परस्पर अल्पवहुत्व कहे छे—'एएसिणं भंते ! पुग्गलाणं अणासाइज्जमाणाणं' इत्यादि. अहीं आहारना एक एक स्पर्श योग्य भागने विशे अनन्तमो भाग आस्वादने योग्य होय छे. आस्वादने योग्य पुद्‌गलोमां केटलापक आस्वादने प्राप्त थाय छे अने केटलापक आस्वादने प्राप्त थता नथी. तेथी जे आस्वादने नहि प्राप्त थयेला पुद्गलो छे ते थोडा ज छे, कारण के जेनो स्पर्श करायेलो नथी तेवा पुद्गलोनी अपेक्षाए तेओ अनन्तमा भागना छे, अने जेनो स्पर्श करायेलो नथी तेवा पुद्गलो अनन्तगुणा छे. बेइन्द्रियो जे पुद्गलो आहारपणे ग्रहण करे छे ते तेओने 'जिब्भिंदियफासिंदियवेमायत्ताए' जिह्वेन्द्रिय अने स्पर्शेन्द्रियनी विमात्रा-विषम मात्रा वडे-विविधपणे परिणमे छे, अहीं विषम मात्रानो विचार पूर्वनी पेठे जाणवो. 'एवं जाव चउरिंदिया' ए प्रमाणे चउरिन्द्रिय सुधी जाणवुं.' एटले बेइन्द्रियोने जे प्रकारे कह्युं छे ते प्रमाणे चउरिन्द्रिय सूत्र सुधी कहेवुं. कारण के तेओनी समान वक्तव्यता छे. तेओमां जे विशेषता छे ते बतावे छे—'नवरं' इत्यादि. परन्तु जे पुद्गलोने प्रक्षेपाहारपणे ग्रहण करे छे ते पुद्गलोना एक असंख्यातमा भागनो आहार करे छे, अने अनेक हजार भागो-घणा असंख्याता भागो सुंघ्या सिवाय, स्पर्श कर्या सिवाय अने स्वाद लीधा सिवाय नाश पामे छे ते पण यथा संभव अति स्थूलपणाथी के अतिसूक्ष्मपणाथी जाणवा. अहीं ज अल्पवहुत्व कहे छे—'एएसि णं भंते' ! इत्यादि. अहीं एक

भंते ! पोग्गलाणं अणाघाइज्जमाणाणं अणासाइज्जमाणाणं अफासाइज्जमाणाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४? गोयमा ! सव्वत्थोवा पोग्गला अणाघाइज्जमाणा,अणासाइज्जमाणा अणंतगुणा, अफासाइज्जमाणा अणंतगुणा ।

७. तेइंदियाणं भंते ! जे पोग्गला–पुच्छा । गोयमा ! ते णं पोग्गला घाणिंदिय–जिब्भिंदिय–फासिंदियवेमायत्ताए तेसिं भुज्जो भुज्जो परिणमंति । चउरिंदियाणं चक्खिंदिय–घाणिंदिय–जिब्भिंदिय–फासिंदियवेमायत्ताए तेसिं भुज्जो भुज्जो परिणमंति, सेसं जहा तेइंदियाणं । पंचिंदियतिरिक्खजोणिया जहा तेइंदियाणं, ण-

तेना अनेक हजार भागो सुंध्या सिवाय, स्वाद लीधा सिवाय के स्पर्श कर्या सिवाय नाश पामे छे. हे भगवन् ! सुंध्या सिवायना, स्वाद लीधा सिवायना के स्पर्श कर्या सिवायना ए पुद्गलोमां कया पुद्गलो कोनाथी अल्प ४ छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा पुद्गलो सुंध्या सिवायना छे. तेथी स्वाद लीधा सिवायना पुद्गलो अनन्तगुणा छे, तेथी स्पर्श कर्या सिवायना पुद्गलो अनन्तगुणा छे.

७. हे भगवन् ! तेइन्द्रियो जे पुद्गलो आहारपणे ग्रहण करे छे ते पुद्गलो तेओने केवा रूपे परिणमे छे ? हे गौतम ! ते पुद्गलो घ्राणेन्द्रिय, जिह्वेन्द्रिय अने स्पर्शनेन्द्रियना विविध रूपे वारंवार परिणमे छे. चउरिन्द्रियोने चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, जिह्वेन्द्रिय

एक स्पर्श योग्य भागने विशे अनन्तमो भाग आस्वाद करवा योग्य छे अने तेनो अनन्तमो भाग सुंघवा योग्य छे माटे उपर कह्या प्रमाणे अल्पबहुत्व थाय छे. बाकी बधुं सुगम छे.

७. पंचेन्द्रिय सूत्रमां जघन्यथी 'अंतोमुहुत्तस्स' अहीं षष्ठी विभक्तिनो अर्थ सती सप्तमीना जेवो होवाथी अन्तर्मुहूर्त गये छते आहारनी इच्छा उत्पन्न थाय छे. अने उत्कर्षथी षष्ठ भक्त–बे दिवस गया पछी आहारनी इच्छा थाय छे. आ देवकुरु अने उत्तर

वरं तत्थ णं जे से आभोगनिव्वत्तिते से जहण्णेणं अंतोमुहुत्तस्स, उक्कोसेणं छट्ठभत्तस्स आहारट्ठे समुप्पज्जति। पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं भंते! जे पोग्गला आहारत्ताए–पुच्छा। गोयमा! सोतिंदिय–चक्खिंदिय–घाणिंदिय–जिब्भिंदिय–फासिंदियवेमायत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमंति। मणूसा एवं चेव, नवरं आभोगनिव्वत्तिते जहन्नेणं अंतोमुहुत्तस्स, उक्कोसेणं अट्ठमभत्तस्स आहारट्ठे समुप्पज्जति। वाणमंतरा जहा नागकुमारा, एवं जोतिसियावि, णवरं आभोगनिव्वत्तिते जहन्नेणं दिवसपुहुत्तस्स, उक्कोसेणं दिवसपुहुत्तस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ,

अने स्पर्शनेन्द्रियनी विमात्रा–विविध रूपे ते पुद्‌गलो वारंवार परिणमे छे. बाकी बधुं तेइन्द्रियोनी पेठे जाणवुं. पंचेन्द्रिय तिर्यंचो तेइन्द्रियोनी पेठे समजवा. परन्तु तेमां जे आभोगनिर्वतित–इच्छापूर्वक आहार छे ते संबन्धे जघन्यथी अन्तर्मुहूर्ते अने उत्कृष्ट बे दिवसे तेओने आहारनी इच्छा थाय छे. पंचेन्द्रिय तिर्यंचो जे पुद्‌गलो आहारपणे ग्रहण करे छे ते पुद्‌गलो तेने केवा रूपे परिणमे छे? हे गौतम! श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, जिह्वेन्द्रिय अने स्पर्शेन्द्रियना विविध रूपे वारंवार परिणमे छे. मनुष्यो पण एमज समजवा. परन्तु आभोगनिर्वर्तित आहार संबन्धे जघन्यथी अन्तर्मुहूर्ते अने उत्कृष्ट त्रण दिवसे आहारनी इच्छा थाय छे. व्यन्तरो नागकुमारनी पेठे जाणवा. एम ज्योतिषिक देवो पण जाणवा. पण आभोगनिर्वर्तित आहार संबन्धे जघन्यथी दिवसपृथक्त्वे–बे दि-

कुरुना तिर्यंच पंचेन्द्रियनी अपेक्षाए समजवुं. मनुष्य सूत्रमां पण 'उक्कोसेणं अट्ठमभत्तस्स' उत्कर्षथी अष्टमभक्त–त्रण दिवस गया पछी आहारनी इच्छा थाय छे. ए देवकुरु अने उत्तर कुरुने आश्रयी समजवुं. व्यन्तर सूत्रमां नागकुमार सूत्रनी पेठे कहेवुं. ज्योतिषिक सूत्र पण तेमज समजवुं. जे विशेष छे ते बतावे छे—'नवरं जहण्णेण वि दिवसपुहुत्तस्स, उक्कोसेणवि दिवसपुहुत्तस्स' त्ति. 'परन्तु जघन्यथी

एवं वेमाणियावि, नवरं आभोगनिव्वत्तिए जहन्नेणं दिवसपुहुत्तस्स, उक्कोसेणं तेत्तीसाए वाससहस्साणं आहारट्ठे समुप्पज्जति, सेसं जहा असुरकुमाराणं, जाव एतेसिं भुज्जो भुज्जो परिणमंति। सोहम्मे आभोगनिव्वत्तिते जहन्नेणं दिवसपुहुत्तस्स, उक्कोसेणं दोण्हं वाससहस्साणं आहारट्ठे समुप्पज्जइ। ईसाणे पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं दिवसपुहुत्तस्स सातिरेगस्स, उक्कोसेणं सातिरेग दोण्हं वाससहस्साणं। सणंकुमाराणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं दोण्हं वाससहस्साणं, उक्कोसेणं सत्तण्हं वाससहस्साणं। माहिंदे पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं

वसथी नव दिवसे अने उत्कृष्टथी पण दिवसपृथक्त्वे आहारनी इच्छा थाय छे. ए प्रमाणे वैमानिको पण जाणवा. परन्तु आभोगनिर्वर्तित आहार संबन्धे जघन्यथी दिवसपृथक्त्वे अने उत्कृष्टथी तेत्रीश हजार वरसे आहारनी इच्छा थाय छे. बाकी बधुं असुरकुमारोनी पेठे 'जाव एतेसिं भुज्जो भुज्जो परिणमन्ति' यावत्–एओने वारंवार परिणमे छे–त्यां सुधी जाणवुं.सौधर्म देवलोकमां आभोगनिर्वर्तित आहार संबन्धे जघन्यथी दिवसपृथक्त्वे अने उत्कृष्ट बे हजार वरसे आहाराभिलाप थाय छे. ईशान देवलोक संबन्धे पृच्छा. हे गौतम! जघन्यथी कंइक अधिक दिवसपृथक्त्वे अने उत्कृष्टथी कंइक अधिक बे हजार वरसे आहारनी इच्छा थाय छे. सनत्कुमार देवो संबंधे पृच्छा. हे गौतम! जघन्यथी बे हजार वरसे अने उत्कृष्टथी सात हजार वरसे आहारनी इच्छा थाय छे. माहेन्द्र देवो संबन्धे प्रश्न.

दिवस पृथक्त्व गया पछी अने उत्कर्षथी पण दिवस पृथक्त्व गया बाद आहारनी इच्छा थाय छे'. ज्योतिषिको जघन्यथी पण पल्योपमना आठमा भागना आयुषवाळा होय छे, तेथी तेओने जघन्य पदे पण दिवसपृथक्त्व (बे दिवसथी नव दिवस) व्यतीत थया पछी पुनः आहारनी इच्छा थाय छे. वैमानिक सूत्रमां 'नवरमाभोगनिव्वत्तिए जहण्णेणं दिवसपुहुत्तस्स'–परंतु एटलो विशेष छे के 'आभोग

दोण्हं वाससहस्साणं सातिरेगाणं, उक्कोसेणं सत्तण्हं वाससहस्साणं सातिरेगाणं। बंभलोए पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं सत्तण्हं वाससहस्साणं, उक्कोसेणं दसण्हं वाससहस्साणं। लंतए णं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं दसण्हं वाससहस्साणं, उक्कोसेणं चउदसण्हं वाससहस्साणं। महासुक्के णं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं चउदसण्हं वाससहस्साणं, उक्कोसेणं सत्तरसण्हं वाससहस्साणं। सहस्सारे पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं सत्तरसण्हं वाससहस्साणं, उक्कोसेणं अट्ठारसण्हं वाससहस्साणं। आणए णं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं अट्ठारसण्हं वाससहस्साणं, उक्कोसेणं एगूणवीसाए वाससहस्साणं। पाणए णं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं एगूणवीसाए वाससहस्सा-

हे गौतम! जघन्य सात हजार वरसे अने उत्कृष्ट दस हजार वरसे आहारनी इच्छा थाय छे. ब्रह्मलोक संबन्धे पृच्छा. हे गौतम! जघन्य सात हजार वरसे अने उत्कृष्ट दस हजार वरसे आहारनी इच्छा थाय छे. लांतक देवो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम! जघन्य दस हजार वरसे अने उत्कृष्ट चौद हजार वरसे आहारनी इच्छा थाय छे. महाशुक्र देव संबन्धे पृच्छा. हे गौतम! जघन्य चौद हजार वरसे अने उत्कृष्ट सत्तर हजार वरसे आहारनी इच्छा थाय छे. सहस्रार देवो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम! जघन्य सत्तर हजार वरसे अने उत्कृष्ट अढार हजार वरसे आहारनी इच्छा थाय छे. आनत देवो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम! जघन्य अढार हजार वरसे अने उत्कृष्ट ओगणीश हजार वरसे आहारनी इच्छा थाय छे. प्राणत संबन्धे प्रश्न. जघन्य ओगणीश हजार वरसे अने उत्कृष्ट वीश हजार वरसे आहारनी इच्छा थाय छे. आरणदेव संबन्धे प्रश्न. जघन्यथी वीश हजार वरसे अने उत्कृष्ट एकवीश हजार वरसे आहारनी इच्छा थाय

निर्वर्तित आहार-इच्छापूर्वक आहार जघन्य दिवस पृथक्त्वे होय छे, ते पल्योपमादिना आयुषवाळा माटे जाणवुं. अने उत्कर्षथी तेत्रीश

णं, उक्कोसेणं वीसाए वाससहस्साणं । आरणे णं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं वीसाए वाससहस्साणं, उक्कोसेणं एक्कवीसाए वाससहस्साणं । अच्चुए णं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं एक्कवीसाए वाससहस्साणं, उक्कोसेणं बावीसाए वाससहस्साणं । हिट्ठिमहिट्ठिमगेविज्जगाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं बावीसाए वाससहस्साणं, उक्कोसेणं तेवीसाए वाससहस्साणं, एवं सव्वत्थ सहस्साणि भणियव्वाणि, जाव सव्वट्ठं । हिट्ठिममज्झिमगाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं तेवीसाए, उक्कोसेणं चउवीसाए । हेट्ठिमउवरिमाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं चउवीसाए, उक्कोसेणं पणवीसाए । मज्झिमहेट्ठिमाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं पणवीसाए, उक्कोसेणं छव्वी-

---

छे. अच्युत संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्य एकवीश हजार वरसे अने उत्कृष्ट बावीश हजार वरसे आहारनी इच्छा थाय छे. नीचेनी त्रिकना नीचेना ग्रैवेयक संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्य बावीश हजार वरसे अने उत्कृष्ट तेवीश हजार वरसे आहारनी इच्छा थाय छे. ए प्रमाणे बधे [जेटला सागरोपमनुं आयुष होय] तेटला हजार वरसो सर्वार्थसिद्ध सुधी कहेवा. नीचेनी त्रिकना मध्यम ग्रैवेयको संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्य तेवीश हजार वरसे अने उत्कृष्ट चोवीश हजार वरसे आहारनी इच्छा थाय छे. नीचेनी त्रिकना उपरना ग्रैवेयक देवो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्य चोवीश हजार वरसे अने उत्कृष्ट पचीश हजार वरसे तेओने आहारनी इच्छा थाय छे. नीचेनी त्रिकना उपरना ग्रैवेयको संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्य चोवीश हजार वरसे अने उत्कृष्ट पचीश हजार वरसे आहारनी इच्छा थाय छे. मध्यम त्रिकनी नीचेना ग्रैवेयक संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्य पचीश हजार वरसे अने उत्कृष्ट छवीश हजार वरसे होय छे, ते अनुत्तर देवोने आश्रयी जाणवुं. अहीं जेनी जेटला सागरोपमनी स्थिति होय तेने तेटला हजार वरस वीत्या

साए। मज्झिममज्झिमाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं छव्वीसाए, उक्कोसेणं सत्तावीसाए। मज्झिमउवरिमाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं सत्तावीसाए, उक्कोसेणं अट्ठावीसाए। उवरिमहेट्ठिमाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं अट्ठावीसाए, उक्कोसेणं एगूणतीसाए। उवरिममज्झिमाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं एगूणतीसाए, उक्कोसेणं तीसाए। उवरिमउवरिमाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं तीसाए, उक्कोसेणं एगतीसाए। विजयवेजयंतजयंतअपराजियाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं एगतीसाए, उक्कोसेणं तेत्तीसाए। सव्वट्ठगसिद्धदेवाणं पुच्छा। गोय-

हजार वरसे आहारनी इच्छा थाय छे. मध्यम त्रिकना मध्यम ग्रैवेयक संबन्धे प्रश्न. हे गौतम! जघन्य छव्वीश हजार वरसे अने उत्कृष्ट सत्यावीश हजार वरसे आहारनी इच्छा थाय छे. मध्यम त्रिकनी उपरना ग्रैवेयक देवो संबन्धे प्रश्न. हे गौतम! जघन्य सत्यावीश हजार वरसे अने उत्कृष्ट अठ्यावीश हजार वरसे आहारनी इच्छा थाय छे. उपरनी त्रिकना नीचेना ग्रैवेयक देवो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम! जघन्य अठ्यावीश हजार वरसे अने उत्कृष्ट ओगणत्रीश हजार वरसे आहारनी इच्छा थाय छे. उपरनी त्रिकना मध्यम ग्रैवेयक देवो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम! जघन्य ओगणत्रीश हजार वरसे अने उत्कृष्ट त्रीश हजार वरसे आहारनी इच्छा थाय छे. उपरनी त्रिकना उपरना ग्रैवेयक संबन्धे पृच्छा. हे गौतम! जघन्य त्रीश हजार वरसे अने उत्कृष्ट एकत्रीश हजार वरसे आहारनी इच्छा थाय छे. विजय, वैजयन्त, जयन्त अने अपराजित संबन्धे पृच्छा. हे गौतम! जघन्य एकत्रीश हजार वरसे अने उत्कृष्ट तेत्रीश हजार

वरसे आहारनी इच्छा थाय छे. तेथी आ नियमने आश्रयी सौधर्मादि देवलोकमां जघन्यथी अने उत्कर्षथी स्थितिनुं परिमाण विचारीने सर्व वैमानिक सूत्र जाणवुं.

मा ! अजहण्णमणुक्कोसेणं तेत्तीसाए वाससहस्साणं आहारट्ठे समुप्पज्जति ।

८. नेरइयाणं भंते ! किं एगिंदियसरीराइं आहारेन्ति, जाव पंचिंदियसरीराइं आहारेन्ति ? गोयमा ! पुव्वभावपण्णवणं पडुच्च एगिंदियसरीराइंपि आहारेन्ति जाव पंचिंदिय०, पडुप्पण्णभावपण्णवणं पडुच्च नियमा पंचिंदियसरीरातिं आहारेन्ति, एवं जाव थणियकुमारा । पुढविकाइयाणं पुच्छा । गोयमा ! पुव्वभावपण्णवणं पडुच्च एवं चेव, पडुप्पण्णभावपण्णवणं पडुच्च नियमा एगिंदियसरीरातिं आहारेन्ति । बेइंदिया पुव्वभाव-

---

वरसे आहारनी इच्छा थाय छे. सर्वार्थसिद्ध देवो संवन्धे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्य अने उत्कृष्ट सिवाय तेत्रीश हजार वरसे आहारनी इच्छा थाय छे.

८. हे भगवन् ! नैरयिको शुं एकेन्द्रिय शरीरोनो आहार करे के यावत् पंचेन्द्रिय शरीरोनो आहार करे ? हे गौतम ! पूर्व भावनी प्रज्ञापनाने आश्रयी एकेन्द्रिय शरीरोनो पण आहार करे छे, यावत् पंचेन्द्रिय शरीरोनो पण आहार करे छे. अने प्रत्युत्पन्न-वर्तमान भावनी प्रज्ञापनाने अनुसरी अवश्य पंचेन्द्रिय शरीरोनो आहार करे छे. एम स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं. पृथिवीकायिको संवंधे पृच्छा.

---

८. हवे एकेन्द्रिय शरीरादि संवन्धे अधिकार कहेवानी इच्छावाळा सूत्रकार कहे छे—'नेरइया णं भंते' ! हे भगवन् !-नैरयिको एकेन्द्रियना शरीरोनो आहार करे छे ? इत्यादि प्रश्नसूत्र सुगम छे. उत्तर सूत्र कहे छे—'गोयमा' ! हे गौतम ! पूर्वभावनी प्रज्ञापना-प्ररूपणाने आश्रयी एकेन्द्रियना शरीरोनो पण आहार करे छे, यावत् शब्द कहेवाथी बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रियना शरीरो ग्रहण करवा. तथा पंचेन्द्रियशरीरोनो पण आहार करे छे. अहीं तात्पर्य आ छे-ज्यारे आहारपणे ग्रहण कराता पुद्गलोना अतीत-भूतकाळना भाव

पण्णवणं पडुच्च एवं चेव, पडुप्पण्णभावपण्णवणं पडुच्च नियमा बेइंदियाणं सरीराति आहारेन्ति, एवं जाव चउरिंदिया जाव पुव्वभावपण्णवणं पडुच्च, एवं पडुप्पण्णभावपण्णवणं पडुच्च नियमा जस्स जति इंदियाइं तइंदियाइं सरीराइं आहारेन्ति, सेसा जहा नेरइया, जाव वेमाणिता । नेरइया णं भंते! किं लोमाहारा पक्खेवाहारा?

हे गौतम ! पूर्वभावनी प्रज्ञापनाने आश्रयी एम ज समजवुं. प्रत्युत्पन्न-वर्तमान भावनी प्रज्ञापनानी अपेक्षाए अवश्य एकेन्द्रिय शरीरोनो आहार करे छे. बेइन्द्रियो पूर्वभावनी प्रज्ञापनाने आश्रयी एमज जाणवा. अने प्रत्युत्पन्न भाव प्रज्ञापनाने आश्रयी अवश्य बेइन्द्रिय शरीरोनो आहार करे छे. ए प्रमाणे चउरिन्द्रिय सुधी पूर्वभाव प्रज्ञापनाने आश्रयी जाणवुं. अने प्रत्युत्पन्न भाव प्रज्ञापनाने आश्रयी अवश्य जेने जेटली इन्द्रियो होय ते तेटली इन्द्रियवाळा शरीरोनो आहार करे छे. बाकी बधुं नैरयिकोनी पेठे यावत् वैमानिको सुधी जाणवुं.

-परिणामनो विचार करीए त्यारे ते केटला एक कोइ काळे एकेन्द्रिय शरीर रूपे परिणमेला हता, कदाचित् बेइन्द्रिय शरीर रूपे परिणमेलां, कदाचित् तेइन्द्रिय शरीररूपे, कदाचित् चउरिन्द्रिय शरीररूपे अने कदाचित् पंचेन्द्रिय शरीररूपे परिणमेलां हतां, तेथी ज्यारे भूतकाळना परिणामनो अत्यारे वर्तमानमां आरोप करीने विवक्षा करीए त्यारे नैरयिको एकेन्द्रिय शरीरोनो पण यावत् पंचेन्द्रिय शरीरोनो पण आहार करे छे. 'पडुप्पन्नभावपण्णवणं पडुच्च' इत्यादि. प्रत्युत्पन्न-वर्तमान भावनी प्रज्ञापना-प्ररूपणाने आश्रयी अवश्य पंचेन्द्रिय शरीरोनो आहार करे छे. केवी रीते करे छे ? तेनो उत्तर आ प्रमाणे छे-अहीं ऋजुसूत्र नय वर्तमान काळना भावनी प्ररूपणा करे छे, पण बाकीना नैगमादि नयो करता नथी. ऋजुसूत्र नय 'क्रियमाणं कृतम्' करातुं होय ते करेलुं, जेनो आहार करातो होय ते आहार करेलुं अने परिणमतुं होय ते परिणमेलुं' माने छे. आहार कराता पुद्गल ते कहेवाय छे के जे स्वशरीररूपे परिणमे छे. जेनो आहार करातो होय ते आहार करेलुं अने परिणमतुं होय ते परिणमेलुं होवाथी तेना मते स्वशरीरनो ज आहार कराय छे

गोयमा ! लोमाहारा, नो पक्खेवाहारा, एवं एगिंदिया सव्वे देवा य भाणितव्वा, जाव वेमाणिया। वेइंदिया जाव मणूसा लोमाहाराचि पक्खेवाहाराचि।

हे भगवन् ! नैरयिको लोमाहारवाळा छे के प्रक्षेपाहारवाळा छे ? हे गौतम ! लोमाहारवाळा छे पण प्रक्षेपाहारवाळा नथी. ए प्रमाणे एकेन्द्रियो अने सर्व देवो कहेवा. बेइन्द्रियो यावत् मनुष्यो लोमाहारवाळा पण होय छे अने प्रक्षेपाहारवाळा पण होय छे.

अने नैरयिकोनुं स्वशरीर पंचेन्द्रिय शरीर छे,अने पंचेन्द्रियशरीर होवाथी कह्युं छे के तेओ अवश्य पंचेन्द्रिय शरीरोनो आहार करे छे. ए प्रमाणे असुरकुमारथी आरंभी स्तनितकुमार सुधीना भवनपति देवो कहेवा. पृथिवीकायिक सूत्रमां प्रत्युत्पन्न-वर्तमान भावनी प्ररूपणाना विचारमां 'तेओ अवश्य एकेन्द्रिय शरीरोनो आहार करे छे' एम कहेवुं. कारण के तेओ एकेन्द्रिय होवाथी तेओना शरीरो एकेन्द्रियशरीरो छे. एम बेइन्द्रियसूत्रमां 'अवश्य बेइन्द्रियना शरीरोनो आहार करे छे' एम कहेवुं, तेइन्द्रियसूत्रमां अवश्य तेइन्द्रियशरीरोनो अने अने चउरिन्द्रियसूत्रमां अवश्य चउरिन्द्रिय शरीरोनो आहार करे छे. तिर्यंच पंचेन्द्रियो, मनुष्यो, व्यन्तर, ज्योतिषिको अने वैमानिको नैरयिकनी पेठे कहेवा. ते प्रमाणे सूत्रकार 'पुढवीकाइयाणं पुच्छा' इत्यादि सूत्र कहे छे. हवे लोमाहारनो विचार करवानी इच्छावाळा सूत्रकार आ सूत्र कहे छे-'नेरइया णं भंते ! किं लोमाहारा पक्खेवाहारा'? हे भगवन् ! नैरयिको लोमाहारवाळा छे के प्रक्षेपाहारवाळा छे ? इत्यादि सूत्र सुगम छे, परन्तु नैरयिकोने वैक्रिय शरीरोनो तेवा प्रकारनो स्वभाव होवाथी प्रक्षेपाहार होतो नथी, लोमाहार पण पर्याप्ताने जाणवो, पण अपर्याप्ताने होतो नथी. ए प्रमाणे जेम नैरयिकोने कह्युं छे तेम पृथिवी, पाणी, अग्नि, वायु अने वनस्पति रूप एकेन्द्रियो तथा असुरकुमारथी मांडी वैमानिक सुधीना बधा देवोने कहेवुं. तेमां एकेन्द्रियोने मुख नहि होवाथी प्रक्षेपाहार होतो नथी, अने असुरकुमारादिने वैक्रिय शरीर होवाथी अने तेना तेवा प्रकारना स्वभावथी प्रक्षेपाहार होतो नथी. बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउरिन्द्रिय, तिर्यंच पंचेन्द्रिय अने मनुष्यो लोमाहारवाळा अने प्रक्षेपाहारवाळा पण कहेवा. कारण के बन्ने प्रकारना आहारनो पण तेओने संभव छे.

९. नेरइया णं भंते ! किं ओयाहारा मणभक्खी ? गोयमा ! ओयाहारा, णो मणभक्खी, एवं सव्वे ओरालियसरीरावि । देवा सव्वेवि जाव वेमाणिया ओयाहारावि मणभक्खीवि । तत्थ णं जे ते मणभक्खी देवा तेसि णं इच्छामणे समुप्पज्जति 'इच्छामो णं मणभक्खणं करित्तते', तते णं तेहिं देवेहिं एवं मणसीकते समाणे खिप्पामेव जे पोग्गला इट्ठा कंता जाव मणामा ते तेसिं मणभक्खत्ताए परिणमंति, से जहानामए सीया पोग्गला

९. हे भगवन् ! नैरयिको ओजआहारवाळा अने मनोभक्षी होय छे ? हे गौतम ! ओजआहारवाळा होय छे पण मनोभक्षी होता नथी. एम बधा औदारिक शरीरवाळा पण जाणवा. वैमानिक सुधीना बधा देवो ओजआहारवाळा अने मनोभक्षी होय छे. तेओमां जे मनोभक्षी देवो छे तेओने 'अमे मन वडे भक्षण करवाने इच्छीए छीए.' एवुं इच्छाप्रधान मन थाय छे. ते देवो ज्यारे एवो विचार करे छे त्यारे तुरत ज जे पुद्गलो इष्ट, कान्त यावत् मनने अनुकूल छे ते तेओने मनोभक्षण रूपे परिणमे छे. जेम शीत पुद्गलो

९. हवे मनोभक्षणरूप छेल्ला अर्थाधिकारने कहेवानी इच्छावाळा सूत्रकार कहे छे—'नेरइया णं भंते ! किं ओयाहारा मणभक्खी'? हे भगवन् ! नैरयिको ओजाहारवाळा अने मनोभक्षी होय छे ? इत्यादि. ओजस्–उत्पत्ति स्थाने आहारयोग्य पुद्गलनो समूह, जेनो ओजस्रूप आहार छे ते ओजाहारवाळा कहेवाय छे. मन वडे भक्षण करवाना स्वभाववाळा मनोभक्षी कहेवाय छे. तेमां नैरयिको ओजाहारवाळा होय छे, कारण के तेओने अपर्याप्तावस्थामां ओजाहारनो संभव छे, तेओ मनोभक्षी नथी. मनोभक्षण रूप आहार ते कहेवाय के जे तेवा प्रकारनी शक्तिथी मन वडे पोताना शरीरनी पुष्टि करनारां पुद्गलोनो आहार कराय अने जेनो आहार कर्या पछी तृप्तिपूर्वक परम संतोष प्राप्त थाय. ते मनोभक्षणरूप आहार नैरयिकोने नथी, कारण के प्रतिकूळ (असाता वेदनीय) कर्म वडे तेवा प्रकारनां मन वडे इष्ट आहार ग्रहण करवारूप शक्तिनो अभाव छे. 'एवं सव्वे ओरालियसरीरावि' ए प्रमाणे–नैरयिकोने कह्या प्रमाणे

सीयं पप्प सीयं चेव अतिवतित्ताणं चिट्ठंति, उसिणा वा पोग्गला उसिणं पप्प उसिणं चेव अइवइत्ताणं चिट्ठंति, एवामेव तेहिं देवेहिं मणभक्खीकए समाणे से इच्छामणे खिप्पामेव अवेति ।

पन्नवणाए आहारपए पढमो उद्देसो समत्तो २३-१ ।

शीतयोनिवाळा जीवने आश्रयी शीत रूपे परिणमीने रहे छे, उष्ण पुद्गलो उष्णयोनिवाळा जीवने आश्रयी उष्णरूपे थइने रहे छे,एम ते देवो मनोभक्षण करे छे त्यारे तेओनुं आहारनुं इच्छाप्रधान मन निवृत्त-शांत थाय छे.

प्रज्ञापनामां आहारपदनो प्रथम उद्देशक समाप्त.

पृथिवीकायिकथी मांडी मनुष्य सुधीना बधा औदारिक शरीरवाळा जाणवा. ते आ प्रमाणे—'पुढविकाइया णं भंते ! किं ओयाहारा मणभक्खी ? गोयमा ओयाहारा, नो मणभक्खी'-हे भगवन् ! बधा पृथिवीकायिको ओज आहारवाळा अने मनोभक्षी होय छे ? हे गौतम ! ओज आहारवाळा होय छे, पण मनोभक्षी होता नथी-इत्यादि. 'देवा सव्वेवि' इत्यादि. असुरकुमारथी आरंभी वैमानिक सुधीना बधा देवो ओजाहारवाळा अने मनोभक्षी होय छे. ते आ प्रमाणे-'हे भगवन्! असुरकुमारो शुं ओजाहारवाळा अने मनोभक्षी होय छे ? हे गौतम ! ओजाहारवाळा अने मनोभक्षी होय छे. यावत् वैमानिको पण ओजाहारवाळा अने मनोभक्षी होय छे. हवे देवो मनोभक्षी जे प्रकारे छे ते प्रकारे बतावे छे-'तत्थ णं' इत्यादि. ते संसारी जीवोमां जे मनोभक्षी देवो छे तेओनुं मन आहारनो प्रस्ताव होवाथी आहार विशे आवा प्रकारे थाय छे के 'अमे मन वडे खावाने इच्छीए छीए' आवुं मन थाय छे एटले तेवा प्रकारना शुभ कर्मना उदयथी 'क्षिप्रमेव' तत्काळज जे इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ अने मणाम-मनने अनुकूल पुद्गलो छे ते देवोने मनोभक्षरूपे परिणमे छे. केवी रीते परिणमे छे ? ए संबंधे दृष्टांत कहे छे-'से' शब्द अथशब्दना अर्थमां छे; अने ते अथशब्द वाक्यना प्रारंभमां वपराय छे, जेम के 'नाम' विवक्षित शीत पुद्गलो 'शीतं'-शीतयोनिवाळा प्राणीने 'प्राप्य' आश्रयी शीतपणुं 'अतिव्रज्य' अतिशयपणे

पामीने रहे छे, तात्पर्य ए छे के विशेषतः शीत थइने शीतयोनिवाळा प्राणीना सुखने माटे थाय छे, तथा उष्ण पुद्गलो 'उण्णं'–उष्णयोनिवाळा प्राणीने आश्रयी उष्णपणुं अतिशयपणे पामीने रहे छे. एटले विशेषतः स्वरूपनी प्राप्तिथी तेना सुखने माटे थाय छे ए भावार्थ छे. 'एवमेव' ए प्रमाणे ते देवोए पूर्वे कहेली रीति वडे मनोभक्षण कर्युं एटले ते देवोनुं 'इच्छामनः'–इच्छा प्रधान जेमां छे एवुं मन 'क्षिप्रमेवावैति' तुरत तृप्ति थवाथी निवृत्त थाय छे, शांत थाय छे. भावार्थ आ प्रमाणे छे–जेम शीत पुद्गलो शीतयोनिवाळा प्राणीने सुखरूप थाय छे अने उष्णपुद्गलो उष्णयोनिवाळा प्राणीने सुखरूप थाय छे तेम देवोए पण मन वडे आहार कराता पुद्गलो तेओनी तृप्ति माटे अने तेओना परम संतोषने माटे थाय छे. अने तेथी आहारना अभिलाषनी निवृत्ति थाय छे. अहीं ओजाहारादिना विभागने जणावनारी सूत्रकृतांग निर्युक्तिनी आ गाथाओ छे–" सरीरेणोयाहारो तयाय फासेण लोमआहारो । पक्खेवाहारो पुण कावलिओ होइ नायव्वो ॥ १ ॥ ओयाहारा जीवा सव्वे अपज्जत्तया मुणेयव्वा । पज्जत्तगा य लोमे पक्खेवे होंति भइयव्वा ॥ २ ॥ एगिंदियदेवाणं नेरइयाणं नत्थि पक्खेवो । सेसाणं जीवाणं संसारत्थाण पक्खेवा ॥३॥ लोमाहारा एगिंदिया उ नेरइयसुरगणा चेव । सेसाणं आहारो लोमे पक्खेवओ चेव ॥४॥ ओयाहारा मणभक्खिणो य सव्वेवि सुरगणा होंति । सेसा हवंति जीवा लोमे पक्खेवओ चेव " ॥५॥ शरीर वडे ओजआहार थाय छे, त्वचाना स्पर्शवडे लोमाहार थाय छे अने प्रक्षेपाहार कोळीआ वडे थाय छे. वधा अपर्याप्त जीवो ओजआहारवाळा जाणवा, पर्याप्त जीवो लोमाहारवाळा होय छे अने प्रक्षेपाहार विकल्पे जाणवो. एटले कदाचित् होय अने कदाचित् न होय. एकेन्द्रिय, देवो अने नारकोने प्रक्षेपाहार नथी. वाकीना संसारी जीवोने प्रक्षेपाहार होय छे. ३ लोमाहारवाळा एकेन्द्रियो, नारको अने देवो छे. वाकीना वधा जीवोने लोमाहार अने प्रक्षेपाहार होय छे." हवे कयो आहार आभोगनिर्वर्तित–इच्छापूर्वक छे अने कयो आहार अनाभोगनिर्वर्तित–इच्छा सिवाय करायेलो होय छे ? ए प्रश्ननो उत्तर ए छे के देवोने अनाभोगनिर्वर्तित ओजआहार होय छे, अने ते अपर्याप्तावस्थामां होय छे. लोमाहार पण अनाभोगनिर्वर्तित होय छे अने ते पर्याप्तावस्थामां होय छे. तथा मन वडे भक्षण करवारूप आहार आभोगनिर्वर्तित छे अने ते पर्याप्तावस्थामां ज होय छे, वीजा जीवोने होतो नथी. वधा जीवोने पण अनाभोगनिर्वर्तित ओजआहार अपर्याप्तावस्थामां होय छे अने पर्याप्तावस्थामां लोमाहार होय छे. नैरयिक सिवाय वाकीना जीवोने लोमाहार अना-

बीओ उद्देसो ।

आहार[1] भविय[2] सण्णी[3] लेसा[4] दिट्ठी[5] य संजत[6] कसाए[7] । णाणे[8] जोगु[9] वओगे[10] वेदे[11] य सरीर[12] पज्जत्ती[13] ॥

१०. जीवे णं भंते ! किं आहारए अणाहारए? गोयमा ! सिय आहारए सिय अणाहारए, एवं नेरइए जाव असुर-

द्वितीय उद्देशक ।

१ आहार, २ भव्य, ३ संज्ञी, ४ लेश्या, ५ दृष्टि, ६ संयत, ७ कषाय, ८ ज्ञान, ९ योग, १० उपयोग, ११ वेद, १२ शरीर अने १३ पर्याप्ति–एम बीजा उद्देशकमां तेर अधिकारो छे.

भोग निर्वर्तित होय छे अने नैरयिकोने लोमाहार आभोगनिर्वर्तित पण होय छे. बेइन्द्रियथी आरंभी मनुष्य सुधीना जीवोने जे प्रक्षेपाहार छे ते आभोगनिर्वर्तित–इच्छापूर्वकज होय छे. आहार पदनो प्रथम उद्देशक समाप्त.

आहारपदना प्रथम उद्देशकनी व्याख्या करी, हवे बीजा उद्देशकनी व्याख्या करवानी छे. तेना प्रारंभमां आ अधिकार जणावनारी 'आहार' इत्यादि संग्रहगाथा छे–'आहार' इत्यादि १ प्रथम सामान्यतः जीव संबन्धे आहाराधिकार, २ भव्य–भव्य जीव संबन्धे आहाराधिकार, ३ त्रीजो संज्ञी संबन्धे आहाराधिकार, ४ चोथो लेश्या–सलेश्य जीव संबन्धे आहाराधिकार, ५ दृष्टि–सम्यग्दृष्टि वगेरे संबंधे आहाराधिकार, ६ संयत–संयत संबन्धे आहाराधिकार, ७ कषाय–सकषायी जीव संबन्धे आहाराधिकार, ८ ज्ञान–ज्ञानी संबन्धे आहाराधिकार, ९ योग–सयोगी संबन्धी आहाराधिकार, १० उपयोग–ज्ञानादि उपयोगवाळा संबन्धे आहाराधिकार, ११ वेद–सवेदी जीव संबन्धे आहाराधिकार, १२ शरीर–शरीरवाळा संबन्धे आहाराधिकार, १३ पर्याप्ति–पर्याप्त संबन्धे आहाराधिकार. अहीं भव्यादिनुं ग्रहण होवाथी तेना प्रतिपक्षरूप अभव्यादि पण सूचित जाणवा. ते प्रमाणे आगळ कहेवामां आवशे.

कुमारे, जाव वेमाणिए। सिद्धे णं भंते! किं आहारए अणाहारए? गोयमा! नो आहारए, अणाहारए। जीवा णं भंते! किं आहारया अणाहारया? गोयमा! आहारयावि अणाहारयावि। नेरइयाणं पुच्छा। गोयमा! सव्वेवि ताव होज्जा आहारया १, अहवा आहारगा य अणाहारए य २, अहवा आहारगा य अणाहारगा य ३, एवं जाव वेमाणिया, णवरं एगिंदिया जहा जीवा। सिद्धाणं पुच्छा। गोयमा! नो आहारगा, अणाहारगा। दारं १ ॥ भ-

१०. हे भगवन्! जीव शुं आहारक होय के अनाहारक होय? हे गौतम! कदाच आहारक होय अने कदाच अनाहारक होय. हे भगवन्! नैरयिक शुं आहारक होय के अनाहारक होय? हे गौतम! कदाच आहारक होय अने कदाच अनाहारक होय. ए प्रमाणे असुरकुमार यावत् वैमानिक सुधी जाणवुं. हे भगवन्! सिद्ध शुं आहारक छे के अनाहारक छे? हे गौतम! आहारक नथी, पण अनाहारक छे. हे भगवन्! जीवो शुं आहारक होय के अनाहारक होय? हे गौतम! आहारक पण होय छे अने अनाहारक पण होय छे. नैरयिको संबन्धे प्रश्न. हे गौतम! १ बधा य आहारक होय, २ अथवा बधा आहारक होय अने एक अनाहारक होय,

१०. तेमां प्रथम आहाराधिकारनो विचार करवानी इच्छावाळा सूत्रकार आ सूत्र कहे छे—'जीवे णं भंते'! हे भगवन्! जीव आहारक होय के अनाहारक होय? इत्यादि प्रश्नसूत्र सुगम छे. भगवान्! उत्तर आपे छे—हे गौतम! स्यात्–कदाचित् आहारक होय अने कदाचित् आहारक न होय. ते केवी रीतें होय? तेनो उत्तर आ प्रमाणे छे—विग्रहगतिमां, केवली समुद्घातकाळे, शैलेशी अवस्थामां (चौदमां अयोगी केवली गुणस्थानके) अने सिद्धावस्थामां अनाहारक होय छे. वाकीनी अवस्थामां आहारक होय छे. कह्युं छे के—"विग्गहगइमावन्ना केवलिणो समोहया अजोगी य। सिद्धा य अणाहारा सेसा आहारगा जीवा ॥" विग्रहगतिने प्राप्त थयेला, समुद्घातवाळा केवली, अयोगी–योग रहित केवली, अने सिद्धो अनाहारक छे अने वाकीना वधा आहारक छे." ए प्रमाणे सामान्य

वसिद्धिए णं भंते ! जीवे किं आहारते अणाहारते ? गोयमा ! सिय आहारते, सिय अणाहारए, एवं जाव वेमाणिए। भवसिद्धिया णं भंते ! जीवा किं आहारगा अणाहारगा ? गोयमा ! जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो, अभवद्धिएवि एवं चेव । नोभवसिद्धिए नोअभवसिद्धिए णं भंते ! जीवे किं आहारए अणाहारए ? गोयमा ! णो आहारए, अणाहारए, एवं सिद्धेवि । नोभवसिद्धियनोअभवसिद्धिया णं भंते ! जीवा किं आहारगा अणाहारगा ? गोयमा ! नो आहारगा, अणाहारगा, एवं सिद्धावि । दारं २ ॥ सण्णी णं भंते ! जीवे किं आहारए अणाहारए ?

३ अथवा घणा आहारक होय अने घणा अनाहारक होय. ए प्रमाणे वैमानिको सुधी कहेवुं. परन्तु एकेन्द्रियो जीवोनी पेठे जाणवा. सिद्धो संबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! तेओ आहारक नथी पण अनाहारक छे. द्वार १. हे भगवन् ! भवसिद्धिक (भव्य) जीव शुं आहारक होय के अनाहारक होय ? हे गौतम ! कदाचित् आहारक होय अने कदाचित् अनाहारक होय. ए प्रमाणे वैमानिक सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! भवसिद्धिक जीवो शुं आहारक होय के अनाहारक होय ? हे गौतम ! जीव अने एकेन्द्रिय सिवाय त्रण भांगा जाणवा. अभवसिद्धिक (अभव्य) जीव पण एमज समजवो. हे भगवन्! नोभवसिद्धिक-नोअभवसिद्धिक

रीते जीव संबन्धे आहारनो विचार करी हवे नैरयिकादि चोवीश दंडकना क्रमथी आहारक अने अनाहारकनो विचार करे छे—[1] नेरइए णं भंते ! किं आहारए-हे भगवन् ! नैरयिक शुं आहारक के अनाहारक होय ?-इत्यादि सूत्र सुगम छे, ए प्रमाणे

१. अहीं मूळ सूत्रपाठमां 'एवं नेरइए जाव असुरकुमारे जाव वेमाणिए' एवो पाठ लिखित अने मुद्रित पुस्तकमां छे एटले जीवनी पेठे नैरयिकने जाणवुं वगेरे. परन्तु टीकाकारे 'इदानीं नैरयिकादिचतुर्विंशतिदंडकक्रमेणाहारकानाहारकचिन्तां करोति-नेरइए णं भंते किं आहारए'

गोयमा ! सिय आहारए सिय अणाहारए, एवं जाव वेमाणिए, णवरं एगिंदियविगलिंदिया नो पुच्छिज्जंति । सण्णी णं भंते ! जीवा किं आहारगा अणाहारगा ? गोयमा ! जीवाइओ तियभंगो जाव वेमाणिया । असण्णी णं भंते ! जीवे किं आहारए अणाहारए ? गोयमा ! सिय आहारए सिय अणाहारए, एवं णेरइए जाव वाणमंतरे। जोइसियवेमाणिया ण पुच्छिज्जंति । असण्णी णं भंते ! जीवा किं आहारगा, अणाहारगा ? गोयमा ! आहार-

जीव शुं आहारक होय के अनाहारक होय ? हे गौतम ! आहारक न होय पण अनाहारक होय. एम सिद्ध संबन्धे पण जाणवुं. हे भगवन् ! नोभवसिद्धिक-नोअभवसिद्धिक जीवो शुं आहारक होय के अनाहारक होय ? हे गौतम ! आहारक न होय पण अनाहारक होय. एम सिद्धो पण जाणवा. द्वार २. हे भगवन् ! संज्ञी जीव आहारक होय के अनाहारक होय ? हे गौतम ! कदाच आहारक होय अने कदाच अनाहारक होय. ए प्रमाणे वैमानिक सुधी जाणवुं. परन्तु एकेन्द्रिय संबन्धे प्रश्न न करवो. हे भगवन् !

सामान्यतः जीवपद अने नैरयिकादिमां एक वचन वडे आहारकपणा अने अनाहारकपणानो विचार कर्यो, हवे बहुवचन वडे तेनो विचार करे छे-'जीवा णं भंते' ! आहारया-हे भगवन् ! जीवो आहारक छे ? इत्यादि प्रश्नसूत्र सुगम छे. भगवान् उत्तर आपे छे-हे

इत्यादि सुगमं "-ए पाठ लीधो छे. आ उपरथी मालुम पडे छे के अहीं मूल पाठ 'एवं नेरइए' ने बदले नेरइएणं भंते आहारए अणाहारए ? गोयमा ! सिय आहारए सिय अणाहारए । एवं असुरकुमारे जाव वेमाणिए ॥" आवो होवो जोइए, पण कोइ कारणथी आ पाठ रही गयो होय अने बदले टुंकामां 'एवं नेरइए जाव असुरकुमारे' एवो पाठ प्रक्षिप्त थयो होय एम लागे छे. वली आ पाठमां 'जाव' पद पण निरर्थक छे, कारण के यावत् शब्दथी कोइनो संग्रह थतो नथी, केमके नैरयिक पछी असुरकुमारनोज दंडक आवे छे.

गावि अणाहारगावि एगो भंगो। असण्णी णं भंते! णेरइया किं आहारया अणाहारया? गोयमा! आहारगा वा १, अणाहारगा वा २, अहवा आहारए य अणाहारए य ३, अहवा आहारए य अणाहारया य ४, अहवा आहारगा य अणाहारए य ५, अहवा आहारगा य अणाहारगा य ६, एवं एते छब्भंगा, एवं जाव थणियकुमारा। एगिं-

संज्ञी जीवो शुं आहारक होय के अनाहारक होय? हे गौतम! जीवादि संबन्धे त्रण भांगा वैमानिको सुधी जाणवा. हे भगवन्! असंज्ञी जीव शुं आहारक होय के अनाहारक होय? हे गौतम! कदाच आहारक होय अने कदाच अनाहारक होय. ए प्रमाणे नैरयिकथी आरंभी व्यन्तर सुधी जाणवुं. ज्योतिष्क अने वैमानिक संबन्धे प्रश्न न करवो. हे भगवन्! असंज्ञी जीवो शुं आहारक होय के अनाहारक होय? हे गौतम! तेओ आहारक पण होय अने अनाहारक पण होय-ए एक भंग जाणवो. हे भगवन्! असंज्ञी नारको आहारक होय अनाहारक होय? हे गौतम! १ बधा आहारक होय, २ बधा अनाहारक होय, ३ अथवा एक आहारक होय अने एक अनाहारक होय, ४ अथवा एक आहारक होय अने घणा अनाहारक होय, ५ अथवा घणा आहारक होय अने एक अना-

गौतम! आहारक पण होय छे अने अनाहारक पण होय छे. एटले बहुवचन सहित बन्ने प्रकारना आहारक अने अनाहारक जीवो होय छे ए भावार्थ छे. ते आ प्रमाणे-विग्रहगति सिवाय बाकीना काळे बधा संसारी जीवो आहारक होय छे, विग्रहगति तो क्वचित् कोइ काळे कोइ जीवनी होय छे. अने ते सर्वकाळे होवा छतां पण प्रतिनियत-अमुकज जीवोनी होय छे, तेथी आहारक जीवो घणा होय छे माटे आहारकने विशे बहुवचन छे. अने अनाहारक सिद्धो तो हमेशां होय छे, अने तेओ अभव्योथी अनन्तगुणा छे. वळी हमेशां एक एक निगोदनो असंख्यातमो भाग प्रतिसमय विग्रह गतिमां वर्ते छे अने तेओ अनाहारक होय छे, तेथी अनाहारकोने विशे पण बहुवचन जाणवुं. नारकसूत्रमां १ बधाय नारको आहारक होय. तात्पर्य ए छे के कोइ समये बधाय नारको आहारक होय छे,

दिएसु अभंगतं, बेइंदिय- जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु तियभंगो, मणूसवाणमंतरेसु छब्भंगा । नोसण्णी-नोअसण्णी णं भंते ! जीवे किं आहारए अणाहारए ? गोयमा ! सिय आहारए, सिय अणाहारए य, एवं मणूसेवि । सिद्धे अणाहारते, पुहुत्तेणं नोसण्णीनोअसण्णी जीवा आहारगावि अणाहारगावि, मणूसेसु तियभंगो, सिद्धा अणाहारगा । दारं ३ ॥

हारक होय, ६ अथवा घणा आहारक होय अने घणा अनाहारक होय. ए प्रमाणे छ भांगा जाणवा. ए प्रमाणे स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं. एकेन्द्रियोमां बीजा भांगाओ थता नथी. बेइन्द्रिय यावत् पंचेन्द्रिय तिर्यंचोमां त्रण भांगाओ तथा मनुष्य अने व्यन्तरोमां छ भांगा जाणवा. हे भगवन् ! नोसंज्ञी–नोअसंज्ञी जीव शुं आहारक होय के अनाहारक होय ? हे गौतम ! कदाच अहारक होय अने कदाच अनाहारक होय. एम मनुष्य संबन्धे पण जाणवुं. सिद्ध अनाहारक होय. बहुवचन युक्त नोसंज्ञी–नोअसंज्ञी जीवो आहारक पण होय अने अनाहारक पण होय. मनुष्यने विशे त्रण भांगा होय छे. अने सिद्धो अनाहारक होय छे. द्वार ३.

एक पण अनाहारक होतो नथी. एम शाथी होय छे ? एम कोइ प्रश्न करे तो तेनो उत्तर ए छे के उपपातविरह—उपजवानो विरहकाळ होवाथी एम थाय छे. ते आ प्रमाणे-नैरयिकोनो उपपातविरह बार मुहूर्तनो होय छे. अने एटला काळमां पूर्वे उत्पन्न थयेला अने विग्रहगतिने प्राप्त थयेला पण आहारक थाय छे अने बीजो नहि उत्पन्न थतो होवाथी अनाहारक संभवतो नथी. २ अथवा घणा आहारक होय अने एक अनाहारक पण होय. एटले आहारक पदमां बहुवचन अने अनाहारक पदने विशे एकवचन समजवुं. आ भांगो शी रीते घटे ? उत्तर-अहीं नरकने विशे प्राणी कदाचित् एक उत्पन्न थाय, अने कदाचित् बे, कदाचित् त्रण, चार, यावत् संख्याता के असंख्याता उत्पन्न थाय छे. तेमां ज्यारे एक उत्पन्न थाय अने ते पण विग्रहगतिने प्राप्त थयेलो होवाथी अनाहारक

होय अने ते सिवायना बीजा पूर्वे उत्पन्न थयेला होवाथी आहारक होय त्यारे आ भांगो घटे छे. त्रीजो भांगो कहे छे-३ आहारको होय अने अनाहारको होय. अहीं बन्ने स्थळे बहुवचन छे. ज्यारे घणा नारको विग्रहगति वडे नैरयिकपणे उत्पन्न थाय त्यारे जाणवो. बाकीना भांगाओनो संभव नथी, कारण के नारकोने विशे आहारक पद हमेशां बहुवचननोज विषय होय छे. ए प्रमाणे असुरकुमारथी आरंभी स्तनितकुमार सुधीमां, बेइन्द्रियथी मांडी वैमानिक सुधीमां प्रत्येकने विशे त्रण भांगा जाणवा. कारण के उपजवानुं अन्तर होवाथी प्रथम भंग अने एक, बे इत्यादि संख्या वडे उपजता होवाथी बाकीना बे भांगा संभवे छे. पृथिवी, पाणी, अग्नि,वायु अने वनस्पतिरूप एकेन्द्रियोमां प्रत्येकने विशे आहारको होय अने अनाहारको पण होय'-आ एकज भांगो होय छे. कारण के पृथिवी, अप् तेजस् अने वायुने विषे प्रतिसमय असंख्याता अने वनस्पतिमां प्रतिसमय अनन्ता विग्रहगति वडे उत्पन्न थता होवाथी अनाहारक पदमां पण हमेशां बहुवचननो संभव छे. ते प्रमाणे सूत्रकार कहे छे—'एवं जाव वेमाणिया, नवरं एगिंदिया जहा जीवा'—ए प्रमाणे यावत् वैमानिको कहेवा, परन्तु एकेन्द्रियो जीवोनी पेठे कहेवा. एटले नैरयिकोने जे भांगा कह्या छे ते प्रमाणे बाकीना असुरकुमारथी आरंभी वैमानिक सुधीना जीवोने कहेवा. परन्तु पृथिवी, अप्, अग्नि, वायु अने वनस्पतिरूप एकेन्द्रियो जेम बन्ने स्थळे बहुवचन सहित जीवो कह्या छे तेम कहेवा. सिद्धोने विशे 'अनाहारको होय' ए एकज भंग समजवो. कारण के सर्व शरीरोना नाशथी तेओने आहारनो संभव नथी, अने तेओ हमेशां घणा होय छे. प्रथम द्वार समाप्त. हवे बीजुं भव्यद्वार कहे छे—भवसिद्धिए णं भंते'! हे भगवन्! भवसिद्धिक जीव आहारक होय के अनाहारक होय? इत्यादि. संख्याता असंख्याता के अनन्त भवो वडे जेनी सिद्धि थाय छे ते भवसिद्धिक-भव्य जाणवो. ते कदाचित् आहारक होय अने कदाचित् अनाहारक होय. विग्रहगत्यादि अवस्थामां अनाहारक अने बीजा काळे आहारक होय. ए प्रमाणे चोवीश दंडकमां पण प्रत्येक दंडकने आश्रयी कहेवुं. ते प्रमाणे सूत्रकार कहे छे—'एवं जाव वेमाणिए' ए प्रमाणे वैमानिक सुधी कहेवुं. अहीं सिद्धविषयक सूत्र न कहेवुं कारण के ते मोक्षपदने प्राप्त थयेल होवाथी तेनामां भव्यपणुं नथी. हवे आने विशेज बहुवचन वडे आहारक अने अनाहारकपणानो विचार करे छे—'भवसिद्धिया णं भंते!' हे भगवन्! भवसिद्धिक

जीवो आहारक होय इत्यादि. अहीं पण आहारकद्वारनी पेठे जीव पदने विशे अने एकेन्द्रियोने विषे प्रत्येकने आश्रयी बन्ने स्थळे बहुवचन वडे 'आहारको पण होय अने अनाहारको पण होय' ए एकज भांगो होय छे. बाकीना नारकादि स्थानोमां त्रण भांगाओ थाय छे—१ कदाचित् केवळ-बधा य आहारको ज होय अने एक पण अनाहारक न होय. २ अथवा कदाचित् बधा आहारक होय अने एक अनाहारक होय. ३ अथवा आहारको होय अने अनाहारको पण होय. ए बन्ने स्थळे पण बहुवचन समजवुं. ते प्रमाणे सूत्रकार कहे छे—'जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो'-जीव अने एकेन्द्रिय सिवाय त्रण भांगा जाणवा. जेम एक अने बहु भवसिद्धिक विषे आहारक अने अनाहारकपणानो विचार कर्यो तेम अभवसिद्धिकने विषे पण करवो. कारण के बन्ने स्थळे एकवचन अने बहुवचनमां बधे य भांगानी संख्या समान छे. ते प्रमाणे सूत्रकार कहे छे—'अभवसिद्धिए एवं चेव' अभवसिद्धिकने पण भवसिद्धिकनी पेठे एकवचन अने बहुवचनमां कहेवुं. 'नोभवसिद्धिक-नोअभवसिद्धिक'-जे भवसिद्धिक नथी, तेम अभवसिद्धिक पण नथी ते सिद्ध छे, ते भवसिद्धिक नथी, कारण के भव-संसारथी रहित छे. रूढिथी जे सिद्धिगमनने योग्य न होय ते अभवसिद्धिक कहेवाय छे. तेथी अभवसिद्धिक पण नथी. कारण के ते सिद्धिपदने प्राप्त थयेल छे. एम होवाथी नोभवसिद्धिकनोअभवसिद्धिकना विचारमां बेज पद छे-जीवपद अने सिद्धिपद. बन्ने स्थळे एकवचननी अपेक्षाए 'अनाहारक होय' ए एकज भांगो अने बहुवचनमां पण बधाय अनाहारको होय ए एकज भांगो होय छे. संज्ञीद्वारने विशे 'सन्नी णं भंते !' इत्यादि प्रश्नसूत्र सुगम छे. उत्तरसूत्र कहे छे—'हे गौतम' इत्यादि. संज्ञी विग्रहगतिमां अनाहारक होय छे अने बाकीना समये आहारक होय छे. (प्र०)—मनसहित होय ते संज्ञी कहेवाय छे. विग्रहगतिमां मन नथी, तो संज्ञी छतां अनाहारक केम होय ? (उ०)—विग्रहगतिने प्राप्त थया छतां पण संज्ञीनुं आयुष वेदे छे माटे संज्ञी कहेवाय छे. जेम नारकनुं आयुष वेदवाथी नारक कहेवाय छे. माटे संज्ञी छतां अनाहारक होवामां कंइपण दोष नथी. ए प्रमाणे वैमानिक सूत्र सुधी कहेवुं. 'परन्तु एकेन्द्रियो अने विकलेन्द्रियो संबन्धे न पूछवुं.' एटले के ते विशे सूत्र सर्वथा न कहेवुं. कारण के तेओ मनरहित होवाथी संज्ञी नथी. बहुवचननी अपेक्षाए जीवपद अने नैरयिकादि पदोमां प्रत्येकने बधे त्रण भांगा कहेवा-१ केवळ-बधाय आहारक होय, २ बधा आहारक होय

अने एक अनाहारक होय. ३ अथवा घणा आहारको पण होय अने घणा अनाहारको पण होय. ते ज प्रमाणे सूत्रकार कहे छे-जीवादि
संबन्धे त्रण भांगाओ यावत् वैमानिको सुधी जाणवा. तेमां सामान्यथी जीवपदमां प्रथम भंग होय छे, कारण के सर्वलोकनी अपेक्षाए संज्ञीपणे
निरंतर उपजे छे. ज्यारे एक संज्ञी जीव विग्रहगतिने प्राप्त थयेलो होय छे त्यारे बीजो भङ्ग. अने ज्यारे घणा संज्ञी जीवो विग्रहगतिने प्राप्त थयेला
होय छे त्यारे त्रीजो भङ्ग थाय छे. ए प्रमाणे नैरयिकादि पदोने विषे भांगानो विचार करवो. 'असण्णी णं भंते !' हे भगवन् ! असंज्ञी
आहारक होय के अनाहारक होय ? इत्यादि. अहीं पण विग्रहगतिमां अनाहारक होय अने बाकीना समये आहारक होय. 'एवं जाव
वाणमन्तरे'—ए प्रमाणे व्यन्तर सुधी कहेवुं. एटले सामान्य जीवपदनी पेठे चोवीश दण्डकना क्रमथी वानव्यन्तर सूत्र सुधी कहेवुं.
(प्र०)—नारको, भवनपतिओ अने व्यन्तरो, असंज्ञीथी अने संज्ञीथी आवी उत्पन्न थाय छे. जेओ असंज्ञीथी आवी उत्पन्न थाय छे
ते असंज्ञी अने संज्ञीथी आवी उत्पन्न थाय छे तेओ संज्ञी कहेवाय छे, तेथी असंज्ञी सूत्रमां पण उपर कह्या प्रमाणे पाठ छे. ज्योति-
ष्क अने वैमानिको संज्ञीथी ज आवी उत्पन्न थाय छे, पण असंज्ञीथी आवी उत्पन्न थता नथी. माटे तेओमां असंज्ञीपणाना व्यवहा-
रनो अभाव होवाथी तेओनो पाठ नथी. तेथी सूत्रकार कहे छे के—'जोइसियवेमाणिया न पुच्छिज्जंति' ज्योतिष्क अने वैमानिको
संबन्धे प्रश्न न करवो. एटले ते संबन्धे सूत्र न कहेवुं कारण के तेओने असंज्ञीपणुं नथी. बहुवचनना विचारमां सामान्यतः जीवपदने
विषे एक ज भांगो होय छे. जेमके—आहारको पण होय अने अनाहारको पण होय. कारण के प्रतिसमय विग्रहगतिने प्राप्त थयेला
अनन्त एकेन्द्रिय जीवो होवाथी अने तेथी तेओ अनाहारकपणे हमेशां प्राप्त थता होवाथी अनाहारक पदने विषे हमेशां
बहुवचन होय छे. नैरयिकपदने विषे हमेशां छ भांगा होय छे. तेमां 'सव्वेवि ताव आहारगा होज्ज'-ए पहेलो भांगो, आ भांगो ज्यारे अन्य
असंज्ञी नारक उत्पन्न थया छतां विग्रहगतिने प्राप्त थयेलो न होय अने पूर्वे उत्पन्न थयेला बधा असंज्ञी नारको आहारक थयेला होय
त्यारे घटे छे. २ बधाय अनाहारक होय ए बीजो भांगो. आ भांगो ज्यारे पूर्वे उत्पन्न थयेलो असंज्ञी नारक एक पण न होय अने
उत्पन्न थता विग्रहगतिने प्राप्त थयेला घणा नारको होय त्यारे जाणवो. ३ एक आहारक होय अने एक अनाहारक होय. प्राकृत-

भाषामां 'द्विवचनमां पण बहुवचन होय छे.' माटे बहुवचननी अपेक्षाए आ भांगो पण बरोबर छे. तेमां ज्यारे घणा काळथी उत्पन्न थयेलो एक असंज्ञी नारक होय अने हमणां उत्पन्न थतो पण एक असंज्ञी नारक विग्रहगतिने प्राप्त थयेलो होय त्यारे आ भांगो घटी शके छे. ४ एक आहारक होय अने घणा अनाहारक होय ए चोथो भांगो. आ भङ्ग घणा काळथी उत्पन्न थयेलो एक असंज्ञी नारक विद्यमान होय अने हमणां उत्पन्न थता बीजा असंज्ञी नारको विग्रहगतिने प्राप्त थयेला होय त्यारे जाणवो. ५ घणा आहारक होय अने एक अनाहारक होय ए पांचमो भांगो. लांबा काळथी उत्पन्न थयेला घणा असंज्ञी नारको होय अने हमणां उत्पन्न थतो एक असंज्ञी नारक विग्रहगतिने प्राप्त थयेलो होय त्यारे जाणवो. ६ घणा आहारक होय अने घणा अनाहारक पण होय ए छट्ठो भांगो, आ भङ्ग लांबा काळथी उत्पन्न थयेला अने हमणां उत्पन्न थता घणा असंज्ञी नारको होय त्यारे जाणवो. 'एवमेते छब्भङ्गा' ए प्रमाणे ए छ भांगा थाय छे. ते आ प्रमाणे—१ केवळ आहारकपदना बहुवचननी अपेक्षाए पहेलो भांगो, २ केवळ अनाहारकपदना बहुवचन वडे बीजो भांगो, ३ आहारकपद अने अनाहारकपदना एक साथे प्रत्येकना एकवचन वडे त्रीजो भांगो, ४ आहारकपदना एकवचनवडे अने अनाहारकपदना बहुवचन वडे चोथो भांगो, ५ आहारकपदना बहुवचनवडे अने अनाहारकपदना एकवचनवडे पांचमो भांगो अने ६ बन्ने स्थळे बहुवचनवडे छट्ठो भांगो जाणवो. बाकीना बीजा भांगाओनो संभव नथी, कारण के अहीं बहुवचननो विचार प्रस्तुत छे. आ छ भांगाओ असुरकुमारथी मांडी स्तनितकुमार सुधी जाणवा, ते प्रमाणे सूत्रकार कहे छे—'एवं जाव थणियकुमारा' ए प्रमाणे स्तनितकुमार सुधी जाणवुं. 'एगिंदिएसु अभङ्गयं' एकेन्द्रियोमां भांगानो अभाव छे. एटले पृथिवी, अप्, तेजस्, वायु अने वनस्पतिरूप एकेन्द्रियोमां बीजा अन्य भांगाओनो अभाव छे. एटले एक ज भांगो होय छे. ते आ प्रमाणे—आहारको होय अने अनाहारको पण होय. तेमां आहारको घणा होय ए सुप्रसिद्ध छे. अनाहारको पण प्रतिसमय पृथिवी, अप, तेजस् अने वायु प्रत्येक असंख्याता अने वनस्पति प्रतिसमय अनन्ता सर्वदा होय छे. ते पण घणा छे अने सिद्धो पण छे. बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउरिन्द्रिय अने तिर्यञ्च पंचेन्द्रियमां प्रत्येकने आश्रयी त्रण भांगा जाणवा. जेमके—१ बधा य आहारको होय. २ अथवा बधाय आहारको होय अने

एक अनाहारक होय. ३ अथवा घणा आहारको होय अने घणा अनाहारको होय. तेमां बेइन्द्रियोने आश्रयी आ विचार छे.-ज्यारे बेइन्द्रियपणे उत्पन्न थतो एक पण जीव विग्रहगतिमां न होय त्यारे पूर्वे उत्पन्न थयेला बधाय आहारक होय छे. ए प्रथम भांगो, ज्यारे एक बेइन्द्रिय विग्रहगतिमां होय त्यारे पूर्वे उत्पन्न थयेला बधा आहारक होय अने उत्पन्न थतो एक अनाहारक होय ए बीजो भांगो. ज्यारे उत्पन्न थता घणा बेइन्द्रियो होय त्यारे त्रीजो भांगो होय छे. ए प्रमाणे तेइन्द्रिय, चउरिन्द्रिय अने तिर्यञ्च पंचेन्द्रियोने विशे पण विचार करवो. मनुष्य अने व्यन्तरोमां छ भांगा होय छे अने ते नारकोनी पेठे जाणवा, ते प्रमाणे सूत्रकार कहे छे—'बेइंदिय जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु तियभङ्गो, मणूस वाणमंतरेसु छब्भङ्गा' बेइन्द्रिय यावत् तिर्यञ्च पंचेन्द्रियोमां त्रण भांगा अने मनुष्य अने व्यन्तरोमां छ भांगा समजवा. नोसंज्ञी-नोअसंज्ञी केवली अने सिद्ध छे, माटे नोसंज्ञी-नोअसंज्ञीपणाना विचारमां त्रण पद होय छे—जीवपद, मनुष्यपद अने सिद्धपद. तेमां जीवसंबन्धे सूत्र कहे छे—'नोसण्णीनोअसण्णी णं भंते! जीवे' इत्यादि. हे भगवन्! नोसंज्ञी-नोअसंज्ञी जीव आहारक होय के अनाहारक होय? स्यात्-कदाचित् आहारक होय, कारण के केवलज्ञानीने समुद्घातादि अवस्थाना अभावमां आहारकपणुं होय छे. कदाचित् अनाहारक होय छे, अने ते अनाहारकपणुं समुद्घातनी अवस्थामां, अयोगीपणानी अवस्थामां अने सिद्धावस्थामां जाणवुं. 'सिद्धे अणाहारए' सिद्ध अनाहारक होय छे. एटले सिद्धविषयक सूत्रमां 'अनाहारक होय छे' एम कहेवुं. पृथक्त्व-बहुवचननी अपेक्षाए 'आहारगा वि अणाहारगा वि' आहारको पण होय अने अनाहारको पण होय. तेमां घणा केवलज्ञानी हमेशां समुद्घातादि अवस्थारहित होय छे, माटे आहारको होय, अने अनाहारको पण होय, कारण के सिद्धो हमेशां होय छे अने तेओ अनाहारक होय छे. 'मणुस्सेसु तियभङ्गा' मनुष्योने विषे त्रण भांगा समजवा. जेमके ज्यारे कोइपण केवली समुद्घातादि अवस्थाने प्राप्त थयेल न होय त्यारे बधाय आहारको होय. ज्यारे एक केवली समुद्घातादि अवस्थाने प्राप्त होय त्यारे २ बधा आहारको होय अने एक अनाहारक होय ए भांगो जाणवो. ३ अथवा आहारको होय. अने अनाहारको होय. आ भांगो ज्यारे घणा केवली समुद्घातादि अवस्थामां होय त्यारे जाणवो.

११. सलेसे णं भंते ! जीवे किं आहारए अणाहारए ? गोयमा ! सिय आहारए, सिय अणाहारए, एवं जाव वेमाणिते । सलेसा णं भंते ! जीवा किं आहारगा अणाहारगा ? गोयमा ! जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो, एवं कण्हलेसावि नीललेसावि काउलेसावि जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो । तेउलेसाए पुढविआउवणस्सइकाइयाणं छ-

---

११. हे भगवन् ! लेश्यासहित जीव आहारक होय के अनाहारक होय ? हे गौतम ! कदाच आहारक होय अने कदाच अनाहारक होय. ए प्रमाणे वैमानिक सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! लेश्यासहित जीवो आहारक होय के अनाहारक होय ? हे गौतम ! जीव अने एकेन्द्रिय सिवाय त्रण भांगा जाणवा. एम कृष्णलेश्यावाळा, नीललेश्यावाळा अने कापोतलेश्यावाळाने पण जीव अने एकेन्द्रिय

---

११. लेश्याद्वारमां सामान्य लेश्यावाळा संबन्धे सूत्र कहे छे—'सलेसे णं भंते ! जीवे'–इत्यादि. 'हे भगवन् ! लेश्यावाळो जीव आहारक होय के अनाहारक होय ? आ सूत्रनो विचार सामान्य जीव सूत्रनी पेठे करवो. अहीं पण सिद्ध संबन्धे सूत्र न कहेवुं. कारण के सिद्धो लेश्यारहित छे. बहुवचननी अपेक्षाए जीवपद अने पृथिव्यादि एकेन्द्रियोने विशे प्रत्येकने एकज भांगो होय छे. जेमके 'आहारको पण होय अने अनाहारको पण होय.' कारण के बन्ने प्रकारना जीवो हमेशां घणा होय छे. बाकीना नैरयिकादि पदोने विशे प्रत्येकने त्रण भांगा जाणवा. ते आ प्रमाणे–१ बधा य आहारको होय. २ अथवा बधा य आहारको होय अने एक अनाहारक होय. ३ अथवा घणा आहारको होय अने अनाहारको होय. आ भांगाओनो विचार पूर्वेनी पेठे करवो. ते प्रमाणे सूत्रकार कहे छे—'जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो' इति. जीव अने एकेन्द्रिय सिवाय त्रण भांगा जाणवा. ए प्रमाणे जेम सामान्यतः सलेश्य सूत्र कह्युं, तेम कृष्णलेश्या, नीललेश्या अने कापोतलेश्या संबन्धे पण सूत्र कहेवुं. बधे सामान्य जीवपदमां अने एकेन्द्रियोमां प्रत्येकने विशे अन्य भंगो होता नथी. बाकीनाने त्रण भंग होय छे. तेजोलेश्या संबन्धे पण सूत्र एकवचनमां पूर्वेनी पेठे जाणवुं. बहुवचनमां पृथिवी, पाणी अने वनस्पतिमां छ भांगाओ जाणवा. तेओमां तेजोलेश्या केवी रीते होय ? ए प्रश्ननो उत्तर ए छे के तेजोलेश्यावाळा भवनपति व्यन्तर, ज्योतिष्क,

छभंगा, सेसाणं जीवादिओ तियभंगो जेसिं अत्थि तेउलेसा, पम्हलेसाए सुक्कलेसाए य जीवादिओ तियभंगो, अलेसा जीवा मणुस्सा सिद्धा य एगत्तेणवि पुहुत्तेणवि नो आहारगा अणाहारगा । दारं ४ ॥

सिवाय त्रण भांगा समजवा. तेजोलेश्यामां पृथिवी अप् अने वनस्पतिकायिकोने छ भांगा अने वाकीना जेओने तेजोलेश्या छे तेओने जीवादि संवन्धी त्रण भांगा जाणवा. पद्मलेश्या अने शुक्ललेश्यामां जीवादि संवन्धी त्रण भांगा समजवा. लेश्यारहित जीवो, मनुष्यो अने सिद्धो होय छे अने ते एकवचन अने बहुवचननी अपेक्षाए पण आहारक नथी, पण अनाहारक छे. द्वार ४.

सौधर्म अने ईशान देवोनी पृथिवी, पाणी अने वनस्पतिमां उत्पत्ति थाय छे. आज भगवती प्रज्ञापनानी चूर्णिमां कह्युं छे के—'जेणेतेसु भवणवइ-वाणमंतर-जोइसिय-सोहम्मीसाणया देवा उववज्जंति तेण तेउलेस्सा लब्भइ ।' जेथी ए भवनपति, व्यंतर, ज्योतिषिक, सौधर्म अने ईशान देवो एओमां आवी उपजे छे, तेथी तेओमां तेजोलेश्या होय छे. ते छ भांगा आ प्रमाणे छे—१ वधा य आहारको होय, २ अथवा वधा य अनाहारको होय. ३ अथवा एक आहारक होय अने एक अनाहारक होय. ४ अथवा एक आहारक होय अने वधा अनाहारक होय. ५ अथवा वधा आहारक होय अने एक अनाहारक होय. ६ अथवा घणा आहारको होय अने घणा अनाहारको होय. वाकीनाने जीवपदथी आरंभी त्रण भांगा जाणवा. ते प्रमाणे सूत्रकार कहे छे—'तेउलेस्साए पुढविआउवणस्सइकाइयाणं छब्भंगा, सेसाणं जीवाइओ तियभंगो'—तेजोलेश्यामां पृथिवी, अप् अने वनस्पतिकायिकोने छ भांगा अने वाकीनाने जीवपदथी आरंभी त्रण भांगा जाणवा. शुं वधा जीवोने सामान्यपणे जीवपदथी आरंभी त्रण भांगा होय के कोइकने होय? ए प्रश्नना उत्तरमां सूत्रकार कहे छे—'जेसिं अत्थि तेउलेसा' जेओने तेजोलेश्या होय छे तेओने त्रण भांगा कहेवा, पण वाकीनाने न कहेवा. एथी एम जणाव्युं के नारक, तेजस्, वायु, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रियो संवन्धे तेजोलेश्या सूत्र न कहेवुं- अने पद्मलेश्या अने शुक्ललेश्या जेओने होय छे तेओ संवन्धे ते विशे सूत्र कहेवुं. तेमां पद्मलेश्या अने शुक्ललेश्या तिर्यंच पंचेन्द्रिय, मनुष्य अने वैमानिकोमां होय छे, पण वाकीनाने होती नथी,

१२. सम्मद्दिट्ठी णं भंते ! जीवा किं आहारगा अणाहारगा ? गोयमा ! सिय आहारगा, सिय अणाहारगा । वेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया छब्भंगा, सिद्धा अणाहारगा, अवसेसाणं तियभंगो, मिच्छादिट्ठीसु जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो । सम्मामिच्छादिट्ठी णं भंते ! किं आहारगे, अणाहारगे ? गोयमा ! आहारए, नो अणाहारए,

१२. हे भगवन् ! सम्यग्दृष्टि जीवो आहारक होय के अनाहारक होय ? हे गौतम ! कदाचित् आहारक होय अने कदाचित् अनाहारक होय. बेइन्द्रियो, तेइन्द्रियो अने चउरिन्द्रियोने छ भांगा होय छे. सिद्धो अनाहारक होय छे, बाकीना जीवोने त्रण भांगा होय छे. मिथ्यादृष्टिने विशे जीव अने एकेन्द्रिय सिवाय त्रण भांगा समजवा. हे भगवन् ! सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव शुं आहारक होय

माटे ते बन्ने लेश्यामां प्रत्येकने आश्रयी चार पद छे-जेमके १ सामान्य जीवपद, २ तिर्यंच पंचेन्द्रियपद, ३ मनुष्यपद अने ४ वैमानिक पद. बधेय एकवचननी अपेक्षाए १ कदाच आहारक होय अने कदाचित् अनाहारक होय-ए भांगो होय छे. बहुवचननी अपेक्षाए त्रण भांगा होय छे. जेमके—१ बधा य आहारक होय, २ अथवा बधा आहारक होय अने एक अनाहारक होय. ३ अथवा आहारको होय अने अनाहारको होय. ते प्रकारे सूत्रकार कहे छे—'पम्हलेसाए सुक्कलेसाए जीवाइओ तियभंगो'-पद्मलेश्या अने शुक्ललेश्यामां जीवादि संबन्धे त्रण भांगा जाणवा. लेश्यारहित अयोगी केवली अने सिद्धो छे, तेथी अहीं त्रण पद समजवा. जेमके सामान्य जीवपद, मनुष्य अने सिद्ध. बधेय एक वचन अने बहुवचन वडे अनाहारको ज कहेवा, एज बाबत सूत्रकार कहे छे—'अलेस्सा जीवा मणुस्सा सिद्धा य एगत्तेणवि पुहुत्तेण वि नो आहारगा, अणाहारगा'-लेश्यारहित जीवो, मनुष्यो अने सिद्धो एकवचन अने बहुवचननी अपेक्षाए आहारक होता नथी पण अनाहारक होय छे. लेश्याद्वार समाप्त.

१२. हवे सम्यग्दृष्टि द्वारनी व्याख्या करे छे-अहीं सम्यग्दृष्टि औपशमिक सम्यक्त्व, सास्वादन सम्यक्त्व, क्षायोपशमिक सम्यक्त्व वेदकस-

एवं एगिंदियविगलिंदियवज्जं जाव वेमाणिते, एवं पुहुत्तेणवि । दारं ५ ॥

के अनाहारक होय ? हे गौतम ! आहारक होय, पण अनाहारक न होय. ए प्रमाणे एकेन्द्रिय अने विकलेन्द्रिय सिवाय वैमानिक सुधी जाणवुं. एम बहुवचननी अपेक्षाए पण जाणवुं. द्वार ५.

म्यक्त्व के क्षायिकसम्यक्त्व वडे जाणवा. कारण के अहीं सामान्य सम्यग्दृष्टिनुं ग्रहण करेलुं छे अने ते प्रमाणेज आगळ भांगानो विचार करवानो छे. तेमां औपशमिक सम्यग्दृष्टि वगेरे सुप्रसिद्ध छे. अने वेदक सम्यग्दृष्टि क्षायिक सम्यक्त्वने प्राप्त करतो सम्यक्त्वमोहनीयना चरमसमयवर्ती पुद्गलोने अनुभव करतो होय त्यारे जाणवो. एकवचनमां वधाय जीवादि पदोमां प्रत्येकने आश्रयी कदाचित् आहारक होय अने कदाचित् अनाहारक होय' आ भांगो होय छे. परन्तु पृथिव्यादि संबन्धे सूत्र न कहेवुं, कारण के तेओमां सम्यग्दृष्टिपणुं नथी. केम के 'उभयभावो पुढवाइएसु' पृथिव्यादिमां उभयनो-प्रतिपद्यमान के प्रतिपन्न सम्यग्दृष्टिनो उत्पत्तिनो अभाव छे. माटे बहुवचनने आश्रयी सूत्रमां सामान्य रीते जीवपदमां 'आहारको पण होय अने अनाहारको पण होय' ए एकज भांगो घटे छे. कारण के आहारक अने अनाहारक बन्ने प्रकारना सम्यग्दृष्टि हमेशां घणा होय छे. नारक, भवनपति, तिर्यंच पंचेन्द्रिय, मनुष्य, व्यन्तर, ज्योतिषिक अने वैमानिकोमां प्रत्येकने त्रण भांगा होय छे. जेमके-१ कदाचित् वधा य आहारका ज होय, २ कदाचित् वधा आहारको होय अने एक अनाहारक होय, ३ कदाचित् घणा आहारको होय अने घणा अनाहारको होय. बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रियमां छ भांगा होय छे. अने तेनो पूर्वनी पेठे विचार करवो. बेइन्द्रियादिने सम्यग्दृष्टिपणुं अपर्याप्तावस्थाभावी सास्वादन सम्यक्त्वनी अपेक्षाए जाणवुं. सिद्धो अनाहारक होय छे. कारण के तेओ क्षायिकसम्यक्त्व सहित होय छे. ते प्रमाणे सूत्रकार कहे छे—'बेइन्दियतेइन्दियचउरिन्दिएसु छब्भङ्गा, सिद्धा अणाहारगा, अवसेसाणं तियभङ्गो'-बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रियोमां छ भांगा होय छे. सिद्धो अनाहारक होय छे अने बाकीनाने त्रण भांगा जाणवा. मिथ्यादृष्टिने विशे पण एकवचननी अपेक्षाए वधे कदाचित् आहारक होय अने कदाचित् अनाहारक होय एम कहेवुं. बहुवचनमां

१३. संजए णं भंते ! जीवे किं आहारए अणाहारए ? गोयमा ! सिय आहारए सिय अणाहारए, एवं मणू-

१३. हे भगवन् ! संयत जीव शुं आहारक होय के अनाहारक होय ? हे गौतम ! कदाचित् आहारक होय अने कदाचित् अनाहारक

जीवपद अने पृथिव्यादि पदने विशे प्रत्येकने आश्रयी 'आहारको पण होय अने अनाहारको पण होय,' कारण के आहारक अने अनाहारक बन्ने प्रकारना जीवो हमेशां तेओमां घणा होय छे. बाकीना बधा स्थानोमां त्रण भांगा होय छे. अहीं सिद्धसूत्र न कहेवुं. कारण के सिद्धोने मिथ्यात्व होतुं नथी. एज वावत सूत्रकार कहे छे—'मिच्छादिट्ठीसु जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो'-मिथ्यादृष्टिओमां जीव अने एकेन्द्रिय सिवाय त्रण भांगा होय छे. 'सम्मामिच्छादिट्ठी णं भंते ! हे भगवन् ! सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव आहारक होय के अनाहारक होय ? इत्यादि प्रश्नसूत्र सुगम छे. भगवान् उत्तर आपे छे—' हे गौतम ! आहारक होय, पण अनाहारक न होय ? शाथी ? अहीं संसारी जीवोने अनाहारकपणुं विग्रहगतिमां होय छे. अने सम्यमिथ्यादृष्टिपणुं विग्रहगतिमां होतुं नथी, कारण के ते अवस्थामां कोइपण जीव काळ करतो नथी. केमके के 'सम्मामिच्छो न कुणइ कालं' 'सम्यग्मिथ्यादृष्टि काळ करतो नथी' एवुं शास्त्रनुं वचन छे. तेथी सम्यग्मिथ्यादृष्टिने विग्रहगतिना अभावथी अनाहारकपणुं नथी. एम चोवीश दंडकना क्रमथी वधेय कहेवुं, परन्तु एकेन्द्रियो अने विकलेन्द्रियो न कहेवा, कारण के तेओमां सम्यग्मिथ्यादृष्टिपणानो असंभव छे. एम बहुवचननी अपेक्षाए पण कहेवुं. जेमके—'सम्मामिच्छाद्दिट्ठी णं भंते जीवा किं आहारगा, अणाहारगा ? गोयमा आहारगा, नो अणाहारगा सम्मामिच्छादिट्ठीणं भंते ! नेरइआ किं आहारगा, अणाहारगा ? गोयमा ! आहारगा,णो अणाहारगा. एवमेगेन्दिय-विगलेन्दियवज्जा जाव वेमाणिया ॥' हे भगवन् ! सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवो शुं आहारको होय के अनाहारको होय ? हे गौतम ! आहारको होय पण अनाहारको न होय, हे भगवन् ! सम्यग्मिथ्यादृष्टि नैरयिको आहारको होय के अनाहारको होय ? हे गौतम ! आहारको होय पण अनाहारको न होय. ए प्रमाणे एकेन्द्रिय अने विकलेन्द्रिय सिवाय वैमानिको सुधी जाणवुं. दृष्टिद्वार समाप्त.

१३. हवे संयतद्वारनी व्याख्या करे छे-संयतपणुं मनुष्योनेज होय छे. तेमां बे पद छे—जीवपद अने मनुष्यपद तेमां जीवपदने विशे

सेवि, पुहुत्तेणं तियभंगो। असंजते पुच्छा। सिय आहारए, सिय अणाहारए, पुहुत्तेणं जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो। संजतासंजते णं जीवे पंचिंदियतिरिक्खजोणिते मणूसे य ३ एते एगत्तेणवि पुहुत्तेणवि आहारगा नो अणाहारगा, नोसंजतेनोअसंजतेनोसंजतासंजते जीवे सिद्धे य एते एगत्तेण पोहत्तेणवि नो आहारगा अणाहारगा। दारं ६ ॥

होय, ए प्रमाणे मनुष्य संबन्धे पण कहेवुं. बहुवचननी अपेक्षाए त्रण भांगा जाणवा. असंयत संबन्धे पृच्छा. हे गौतम! कदाचित् आहारक होय अने कदाचित् अनाहारक होय. बहुवचनमां जीव अने एकेन्द्रिय सिवाय त्रण भांगा जाणवा. संयतासंयत जीव पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक अने मनुष्य होय छे अने ते एकवचन अने बहुवचन वडे पण आहारक होय छे पण अनाहारक होता नथी. नोसंयत–नोअसंयत–नोसंयतासंयत जीव अने सिद्ध छे अने ते एकवचन अने बहुवचन वडे पण आहारक नथी, पण अनाहारक छे. द्वार ६.

सूत्र कहे छे. 'संजए णं भंते! जीवे'–हे भगवन्! संयत जीव आहारक होय के अनाहारक होय–इत्यादि सूत्र सुगम छे. परन्तु अनाहारकपणुं केवली समुद्घातनी अवस्थामां के अयोगीपणामां जाणवुं. बाकीना समये आहारकपणुं जाणवुं. एम मनुष्यसंबन्धे सूत्र कहेवुं. जेमके 'संजए णं भंते किं आहारए, अणाहारए? गोयमा! सिय आहारए सिय, अणाहारए'–हे भगवन्! संयत मनुष्य आहारक होय के अनाहारक होय? हे गौतम! कदाचित् आहारक होय अने कदाचित् अनाहारक होय, तेनो विचार हमणांज कर्यो छे. 'पुहुत्तेणं तियभंगो'—बहुवचनमां जीवपद अने मनुष्यपदमां प्रत्येकने त्रण भांगा जाणवा. ते आ प्रमाणे–१ बधाय आहारको होय, आ भांगो ज्यारे कोइ पण केवली समुद्घात के अयोगीपणाने प्राप्त थयेल न होय त्यारे जाणवो, २ अथवा बधा आहारको होय अने एक अनाहारक होय. आ भांगो एक केवली समुद्घात करे अथवा शैलेशीने–अयोगीपणाने प्राप्त थाय त्यारे होय छे. ३ अथवा आहारको होय अने

१४. सकसाई णं भंते ! जीवे किं आहारए अणाहारए ? गोयमा ! सिय आहारए, सिय अणाहारते एवं, जाव वेमाणिता, पुहुत्तेणं जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो, कोहकसाईसु जीवादीसु एवं चेव, नवरं देवेसु छब्भंगा, मा-

१४. हे भगवन् ! सकपायी जीव आहारक होय के अनाहारक होय ? हे गौतम ! कदाचित् आहारक होय अने कदाचित् अनाहारक होय. ए प्रमाणे वैमानिक सुधी जाणवुं. बहुवचनमां जीव अने एकेन्द्रिय सिवाय त्रण भांगा जाणवा. क्रोधकषायवाळा

अनाहारको होय. आ भांगो ज्यारे घणा केवलज्ञानी समुद्घात करे अथवा शैलेशीने प्राप्त थाय त्यारे घटी शके छे. असंयत सूत्रमां एकवचननी अपेक्षाए वधे य 'कदाचित् आहारक होय अने कदाचित् अनाहारक होय'-एम कहेवुं. बहुवचननी अपेक्षाए जीवपद अने पृथिव्यादि पदने विशे प्रत्येकने आश्रयी आहारको पण होय अने अनाहारको पण होय-ए भांगो होय. वाकीना नैरयिकादि स्थानोमां प्रत्येकने त्रण भांगा समजवा. संयतासंयत-देशविरतियुक्त. तेओ तिर्यंच पंचेन्द्रिय अने मनुष्यो होय छे, वाकीना जीवो होता नथी, कारण के वाकीना जीवोने स्वभावथीज देशविरतिनो परिणाम होतो नथी, ए प्रमाणे एओने त्रण पद होय छ-सामान्य जीवपद, तिर्यंचपंचेन्द्रियपद अने मनुष्यपद. ए त्रणे स्थानोमां एकवचन अने वहुवचननी अपेक्षाए आहारको होय छे. कारण के वीजा भवमां जतां अने केवली समुद्घातादि अवस्थामां देशविरति परिणामनो अभाव छे. नोसंयत-नोअसंयत-नोसंयतासंयतना विचारमां वे पद छे-जीवपद अने सिद्धपद. वन्ने स्थळे एकवचन अने वहुवचनमां अनाहारकपणुंज होय छे, पण आहारकपणुं होतुं नथी. कारण के सिद्धो अनाहारक होय छे. संयतद्वार समाप्त.

१४. हवे कपायद्वार कहे छे—'सकसाई णं भंते ! जीवे' हे भगवन् ! सकपायी जीव आहारक होय के अनाहारक होय-इत्यादि एकवचन सूत्र सुगम छे. बहुवचनमां 'जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो' जीव अने एकेन्द्रिय सिवाय त्रण भांगा समजवा. जीवपदमां अने पृथिव्यादि पांच पदमां प्रत्येकने 'आहारको पण होय अने अनाहारको पण होय'-एम कहेवुं. कारण के ते स्थानोमां आहारक अने

णकसाईसु मायाकसाईसु य देवनेरइएसु छब्भंगा, अयसेसाणं जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो, लोहकसाईसु नेरइएसु छब्भंगा, अवसेसेसु जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो, अकसाई जहा णोसण्णीणोअसण्णी । दारं ७ ॥

जीवादिने विशे एमज समजवुं, परन्तु देवोमां छ भांगा होय छे. मानकषायवाळा अने मायाकषायवाळा देव अने नारकोने विशे छ भांगा अने बाकीना स्थाने जीव अने एकेन्द्रिय सिवाय त्रण भांगा समजवा. लोभकषायवाळा नारकोने छ भांगा अने बाकीना स्थानोमां जीव अने एकेन्द्रिय सिवाय त्रण भांगा जाणवा. अकषायी नोसंज्ञी–नोअसंज्ञीनी पेठे कहेवा. द्वार ७.

अनाहारक बन्ने प्रकारना सकषायी जीवो घणा होय छे. बाकीना स्थानोमां त्रण भांगा जाणवा. 'कोहकसाई एवं चेव' क्रोधकषायी पण सामान्य सकषायीने पेठे जाणवो. तेमां जीवपद अने पृथिव्यादि पदोनां भांगानो अभाव छे. बाकीना स्थानोमां त्रण भांगा जाणवा. शुं बधा स्थानोमां त्रण भांगा समजवा? ना. परन्तु 'देवेसु छब्भंगा' देवोमां छ भांगा जाणवा, कारण के देवो स्वभावथीज घणा लोभवाळा होय छे पण बहु क्रोधादिवाळा होता नथी. तेथी क्रोधकषायी एकादि पण होय छे, माटे छ भांगा थाय छे. जेमके–१ कदाचित् क्रोधकषायी बधाय आहारको होय, कारण के एक पण क्रोधकषायी विग्रहगतिने प्राप्त थयेलो न होय, २ कदाचित् बधाय अनाहारको होय. कारण के एक पण क्रोधकषायी छतां आहारक न होय. अहीं क्रोधनो उदय मानादिना उदयथी जुदोज विवक्षित छे, पण मानादिना उदयसहित विवक्षित नथी. तेथी कदाचित् क्रोधकषायी छतां आहारकनो सर्वथा पण अभाव होय, ३ तथा कदाचित् एक आहारक होय अने एक अनाहारक होय. ४ कदाचित् एक आहारक होय अने घणा अनाहारक होय. ५ कदाचित् घणा आहारको होय अने एक अनाहारक होय. ६ कदाचित् घणा आहारक होय अने घणा अनाहारक होय. मानकषाय सूत्र अने मायाकषाय सूत्र एकवचनमां पूर्वनी पेठे जाणवुं. बहुवचनमां विशेषता कहे छे—'माणकसाईसु' इत्यादि. मानकषायी अने मायाकषायीनो बहुवचन वडे विचार करता देवो अने नैरयिकोमां प्रत्येकने आश्रयी छ भांगा जाणवा, नैरयिको भवस्वभावथी बहुक्रोधवाळा अने देवो बहुलोभवाळा

१५. णाणी जहा सम्मदिट्ठी। आभिणिवोहियणाणी सुयणाणी य बेइंदियतेइंदियचउरिंदिएसु छब्भंगा,

१५. ज्ञानी सम्यग्दृष्टिनी जेम जाणवो. आभिनिबोधिक ज्ञानी अने श्रुतज्ञानी बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रियने विषे छ

होय छे. तेथी देवो अने नारकोने मानकषाय अने मायाकषाय स्वल्प होय छे. तेथी पूर्वे कह्या प्रमाणे छ भांगा थाय छे. जीवपदमां अने पृथिव्यादि पदोमां प्रत्येकने आश्रयी अन्य भांगाओ थता नथी, कारण के आहारक अने अनाहारक मानकषायी अने मायाकषायी प्रत्येक हमेशां ते ते स्थानकोमां घणा होय छे. बाकीना स्थानोमां त्रण भांगा जाणवा, लोभकषायसूत्र पण एकवचनमां तेमज समजवुं. बहुवचनमां विशेषता जणावे छे—'लोभकसाईसु' इत्यादि. लोभकषायवाळा नैरयिकोमां छ भांगा जाणवा, कारण के तेओमां लोभकषाय अल्प छे. बाकीना जीव अने एकेन्द्रिय सिवायना स्थानोमां पण त्रण भांगा जाणवा. देवोमां पण त्रण भांगा समजवा, कारण के तेओमां लोभनी अधिकता होवाथी छ भांगाओनो संभव नथी. जीव अने एकेन्द्रियोमां पूर्वनी पेठे एकज भांगो जाणवो. 'आहारको पण होय अने अनाहारको पण होय.' 'अकसाई जहा-नोसण्णीणोअसण्णी' अकषायी जेम नोसंज्ञी-नोअसंज्ञी कह्या तेम कहेवा तात्पर्य ए छे के अकषायी मनुष्यो अने सिद्धो होय छे. अकषायी मनुष्यो उपशान्तकषायादि जाणवा, कारण के तेथी बीजा सकषायी होय छे. तेथी एओना पण त्रण पदो होय छे. जेमके-सामान्यथी जीवपद, मनुष्यपद अने सिद्धपद. तेमां सामान्य जीवपदमां अने मनुष्यपदमां प्रत्येकने आश्रयी एकवचननी अपेक्षाए 'कदाचित् आहारक होय अने कदाचित् अनाहारक होय' एम कहेवुं. सिद्धपदमां तो अनाहारकज होय छे. बहुवचननी अपेक्षाए जीवपदमां आहारको पण होय अने अनाहारको पण होय, कारण के केवलज्ञानी आहारको अने सिद्धो अनाहारको हमेशां घणा होय छे. मनुष्यपदमां त्रण भांगा जाणवा.-१ बधाय आहारको होय. २ अथवा बधा आहारको होय अने एक अनाहारक होय. ३ अथवा आहारको अने अनाहारको होय. कषायद्वार समाप्त.

१५. हवे ज्ञानद्वार कहे छे-'नाणी जहा सम्मदिट्ठित्ति' जेम पूर्वे सम्यग्दृष्टि कह्यो छे तेम ज्ञानी कहेवो. जेमके-'हे भगवन्! ज्ञानी

अवसेसेसु जीवादिओ तियभंगो जेसिं अत्थि । ओहिणाणी पंचिंदियतिरिक्खजोणिया आहारगा, णो अणाहारगा, अवसेसेसु जीवादिओ तियभंगो जेसिं अत्थि ओहिनाणं, मणपज्जवनाणी जीवा मणूसा य एगत्तेणवि पुहुत्तेणवि आहारगा,णो अणाहारगा । केवलनाणी जहा नोसण्णीनोअसण्णी दारं । ७ ॥ अण्णाणी मतिअण्णाणी सुयअण्णाणी जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो । विभंगनाणी पंचिंदियतिरिक्खजोणिया मणूसा य आहारगा, णो अणाहारगा, अवसेसेसु जीवादियो तियभंगो । दारं ८ ॥

भांगा समजवा. बाकीना जीवो विशे जेओने मतिज्ञान अने श्रुतज्ञान छे तेओने जीवादि संबन्धे त्रण भांगा जाणवा. अवधिज्ञानी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिको आहारको होय छे पण अनाहारक होता नथी. बाकीना जीवोमां जेओने अवधिज्ञान छे तेओने जीवादि संबन्धे त्रण भांगा जाणवा. मनःपर्यवज्ञानी जीवो अने मनुष्यो एकवचन अने बहुवचन वडे पण आहारक छे पण अनाहारक नथी. केवलीज्ञानी नोसंज्ञी–नोअसंज्ञीनी पेठे जाणवा. द्वार ८.

जीव शुं आहारक होय के अनाहारक होय? हे गौतम! कदाचित् आहारक होय अने कदाचित् अनाहारक होय. हे भगवन्! ज्ञानी नैरयिक शुं आहारक होय के अनाहारक होय? हे गौतम! कदाचित् आहारक होय अने कदाचित् अनाहारक होय. ए प्रमाणे एकेन्द्रिय सिवाय वैमानिक सुधी कहेवुं. हे भगवन्! ज्ञानी जीवो आहारक होय के अनाहारक होय? हे गौतम! कदाचित् आहारक पण होय अने कदाचित् अनाहारक होय. हे भगवन्! ज्ञानी नैरयिको शुं आहारक होय के अनाहारक होय? हे गौतम १ बधाय आहारको होय. २ अथवा बधा आहारको होय अने एक अनाहारक होय. ३ अथवा घणा आहारको अने अनाहारको होय. ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमारोने जाणवुं. बेइन्द्रिय संबंधे प्रश्न हे गौतम! १ बधा य आहारक होय, २ अथवा बधा अनाहारक होय, ३ अथवा अनाहारक होय

अने एक अनाहारक होय. ४ अथवा एक आहारक होय अने वधा अनाहारको होय. ५ अथवा वधा आहारको होय अने एक अनाहारक होय. ६ अथवा घणा आहारको होय अने अनाहारको होय. एम तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रियो कहेवा. वाकीना जीवो नैरयिकोनी पेठे वैमानिक सुधी जाणवा. सिद्धो संवन्धे पृच्छा. हे गौतम! तेओ अनाहारको होय. आभिनिवोधिक ज्ञानी अने श्रुतज्ञानी सूत्रमां एकवचननी अपेक्षाए पूर्वनी पेठे जाणवुं. अने वहुवचननी अपेक्षाए वेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रियमां छ भांगा होय छे. वाकीना जीवादि स्थानोमां एकेन्द्रिय सिवाय त्रण भांगा होय छे. ते आ प्रमाणे-'हे भगवन्! आभिनिवोधिक ज्ञानी जीवो शुं आहारक होय के अनाहारक होय? हे गौतम १ वधा य आहारक होय, २ अथवा वधा य आहारक होय अने एक अनाहारक होय, ३ अथवा घणा आहारक होय अने घणा अनाहारक होय-इत्यादि. ते प्रमाणे सूत्रकार कहे छे के 'आभिणिवोहियनाणी सुयनाणीवेइंदियतेइंदियचउरिंदिएसु छब्भंगा, अवसेसेसु जीवाइओ तियभंगो' आभिनिवोधिकज्ञानी अने श्रुतज्ञानी वेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रियमां छ भांगा अने वाकीना स्थानोमां जीवादि संवन्धे त्रण भांगा जाणवा-इत्यादि सुगम छे. 'नवरं जेसिं अत्थि' परन्तु जे जीवोने आभिनिवोधिकज्ञान अने श्रुतज्ञान होय तेओने त्रण भांगा कहेवा. वाकीना पृथिव्यादिमां न कहेवा. अवधिज्ञान सूत्र एकवचनमां तेमज जाणवुं. वहुवचनना विचारमां अवधिज्ञानी पंचेन्द्रिय तिर्यंचो आहारकज होय छे पण अनाहारक होता नथी. शा हेतुथी? तेनुं कारण ए छे के अहीं पंचेन्द्रिय तिर्यंचोनुं अनाहारकपणुं विग्रहगतिमां होय छे. अने ते समये तेओने गुणनिमित्ते अवधिज्ञाननो संभव नथी. कारण के त्यारे गुणोनोज असंभव छे. तेम अपतित अवधिज्ञान सहित देव के मनुष्य तिर्यंचमां उत्पन्न थतो नथी. तेथी अवधिज्ञानी छतां पंचेन्द्रिय तिर्यंचने अनाहारकपणानो असंभव छे. एकेन्द्रिय अने विकलेन्द्रिय सिवायना वाकीना स्थानोमां प्रत्येकने त्रण भांगा समजवा. ते वावत सूत्रकार कहे छे—'ओहीनाणी णं पंचिंदियतिरिक्खजोणिया आहारगा, अवसेसेसु जीवाइओ तियभंगो, जेसिं अत्थि ओहिणाणमिति'-'अवधिज्ञानी पंचेन्द्रिय तिर्यंचो आहारक होय छे, वाकीना स्थानोमां जेओने अवधिज्ञान छे तेओने जीवादि संवन्धे त्रण भांगा जाणवा. मनःपर्यवज्ञान मनुष्योनेज होय छे, तेथी तेना वे पद छे, जेमके जीवपद अने मनुष्यपद. वन्ने स्थळे पण एकवचन अने वहुवचनमां मनःपर्यवज्ञानी आहारकज कहेवा, पण अनाहारक न कहेवा. कारण के विग्रहगत्यादि अवस्थामां मनःपर्यवज्ञाननो संभव

१६. सजोगीसु जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो। मणजोगी वइजोगी जहा सम्मामिच्छद्दिट्ठी, नवरं वइजोगो विगलिंदियाणवि। कायजोगीसु जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो, अजोगी जीवमणूससिद्धा अणाहारगा। दारं ९॥

१६. सयोगीने विशे जीव अने एकेन्द्रिय सिवाय त्रण भांगा जाणवा. मनयोगी अने वचनयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टिनी जेम कहेवा. परन्तु वचनयोग विकलेन्द्रियोने पण कहेवो. काययोगीने विशे जीव अने एकेन्द्रिय सिवाय त्रण भांगा होय छे. अयोगी

नथी. केवलज्ञानीने जेम पूर्वे नोसंज्ञी-नोअसंज्ञी संबन्धे कह्युं तेम कहेवुं. तात्पर्य ए छे के केवलज्ञानना विचारमां पण त्रण पद होय छे. जेमके—सामान्य जीवपद, मनुष्यपद अने सिद्धपद, तेमां सामान्य जीवपदमां अने मनुष्यपदमां एकवचननी अपेक्षाए कदाचित् आहारक होय अने अनाहारक होय'-एम कहेवुं. सिद्धपदमां 'अनाहारक होय'. बहुवचननी अपेक्षाए सामान्यथी जीवपदमां 'आहारको पण होय अने अनाहारको पण होय'. मनुष्यपदमां त्रण भांगा होय छे अने ते पूर्वे बतावेला छे. सिद्धपदमां बधाय अनाहारको होय छे. अज्ञानी सूत्र-मतिअज्ञानी सूत्र अने श्रुतअज्ञानी सूत्र एकवचनमां पूर्वनी पेठे जाणवुं. बहुवचनना विचारमां जीवपद अने पृथिव्यादि एकेन्द्रियोने विशे प्रत्येकने 'घणा आहारको पण होय अने घणा अनाहारको पण होय' एम कहेवुं. बाकीना स्थानोमां त्रण भांगा जाणवा. विभङ्गज्ञानी सूत्र पण एकवचनमां तेमज जाणवुं. बहुवचनना विचारमां विभंगज्ञानी पंचेन्द्रिय तिर्यंचो अने मनुष्यो आहारकज कहेवा, पण अनाहारक न कहेवा. कारण के विभङ्गज्ञानसहित जीवनी विग्रहगति वडे तिर्यंच पंचेन्द्रियो अने मनुष्योमां उत्पत्तिनो असंभव छे. बाकीना स्थानोमां एकेन्द्रिय अने विकलेन्द्रिय सिवाय प्रत्येकने त्रण भांगा कहेवा. ज्ञानद्वार समाप्त.

१६. हवे योगद्वार कहे छे—तेमां सामान्यथी सयोगी सूत्र एकवचनमां तेमज जाणवुं. बहुवचनमां जीव अने एकेन्द्रियपदोनो छोडी बाकीना स्थानोमां त्रण भांगा जाणवा. जीवपद अने पृथिव्यादि पदोमां प्रत्येकने 'आहारको पण होय अने अनाहारको पण होय' ए भङ्ग जाणवो

सागाराणागारोवउत्तेसु जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो, सिद्धा अणाहारगा। दारं १० ॥ सवेदे जीवेगिंदियवज्जो
तियभंगो, इत्थिवेदपुरिसवेदेसु जीवादिओ तियभंगो, नपुंसगवेदए य जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो, अवेदए ज-
हा केवलनाणी। दारं ११ ॥

जीव, मनुष्य अने सिद्ध अनाहारक जाणवा. द्वार ९. साकार अने अनाकार उपयोगवाळामां जीव अने एकेन्द्रिय सिवाय त्रण भांगा
जाणवा. सिद्धो अनाहारक होय छे. द्वार १०. वेदसहित जीवने विशे जीव अने एकेन्द्रिय सिवाय त्रण भांगा, स्त्रीवेद अने पुरुष-
वेदमां जीवादि संबन्धे त्रण भांगा अने नपुंसकवेदमां जीव अने एकेन्द्रिय सिवाय त्रण भांगा जाणवा. वेदरहित जीव केवलज्ञानीनी
पेठे जाणवो. द्वार ११.

कारण के ते स्थानोमां आहारक अने अनाहारक बन्ने प्रकारना जीवो घणा होय छे. 'मणजोगी वइजोगी जहा सम्मामिच्छद्दिट्ठीय'त्ति.
मनयोगी अने वचनयोगी जेम पूर्वे सम्यग्मिथ्यादृष्टि कह्या तेम कहेवा.' एटले एकवचन अने बहुवचनमां 'आहारकोज कहेवा पण अनाहारको
न कहेवा-ए भाव छे 'परन्तु वचनयोग विकलेन्द्रियोने पण होय छे' नवरं सम्यग्मिथ्यादृष्टि सूत्रथी अहीं आ विशेष छे-सम्यग्मिथ्या-
दृष्टिपणुं विकलेन्द्रियोने नथी, माटे तेनुं सूत्र त्यां कह्युं नथी. अने वचनयोग विकलेन्द्रियोने पण होय छे माटे ते संबन्धी सूत्र पण
वचनयोगमां कहेवुं. ते आ प्रमाणे छे—'हे भगवन्! मनयोगवाळो जीव शुं आहारक होय के अनाहारक होय? हे गौतम! आहारक
होय पण अनाहारक न होय. ए प्रमाणे एकेन्द्रिय अने विकलेन्द्रिय सिवाय वैमानिक सुधी कहेवुं. एम बहुवचननी अपेक्षाए पण
कहेवुं. हे भगवन्! वचनयोगी जीव शुं आहारक होय के अनाहारक होय? हे गौतम! आहारक होय पण अनाहारक न होय एम
एकेन्द्रिय सिवाय यावत् वैमानिक सुधी कहेवुं. एम बहुवचन वडे पण कहेवुं. ए प्रमाणे काययोगवाळा संबन्धी सूत्र पण एकवचन

अने वहुवचनमां सयोगीसूत्रनी पेठे जाणवुं. अयोगी मनुष्यो अने सिद्धो होय छे, तेथी अहीं त्रण पद छे—जीवपद, मनुष्यपद अने सिद्धपद. त्रणे स्थानो विशे एकवचन अने वहुवचनमां अनाहारकपणुंज होय छे. योगद्वार समाप्त.

हवे उपयोगद्वारनी व्याख्या करे छे—तेमां साकार-ज्ञानोपयोगसूत्रमां अने अनाकार-दर्शनोपयोगसूत्रमां प्रत्येकने एकवचनमां वधेय 'कदाचित् आहारक होय अने कदाचित् अनाहारक होय' एम कहेवुं. अने सिद्धपदने विशे तो अनाहारक होयछे. वहुवचननी अपेक्षाए जीवपदमां अने पृथिव्यादि पदोमां 'घणा आहारको पण होय अने घणा अनाहारको पण होय' ए भांगो समजवो. वाकीना स्थानोमां त्रण भांगा जाणवा. सिद्धो अनाहारक होय छे. सूत्रपाठ आ प्रमाणे छे–'सागारोवउत्ते णं भंते ! जीवे किं आहारए अणाहारए ? गोयमा ! सिय आहारए, सिय अणाहारए'—हे भगवन् ! साकार उपयोगवाळा जीव शुं आहारक होय के अनाहारक होय ? हे गौतम ! कदाचित् आहारक होय अने कदाचित् अनाहारक होय इत्यादि. उपयोगद्वार समाप्त. वेदद्वारमां सामान्य वेदसहित सूत्रमां एकवचनने विशे 'कदाचित् आहारक होय अने कदाचित् अनाहारक होय' ए भंग जाणवो. वहुवचनमां जीवपद अने एकेन्द्रियोने छोडीने वाकीना स्थानोमां त्रण भांगा अने जीवपद अने एकेन्द्रियोमां 'घणा आहारक होय अने घणा अनाहारक होय' ए सिवाय वीजा भांगानो अभाव समजवो. कारण के त्यां घणा आहारको पण होय अने घणा अनाहारको पण होय–ए एकज भांगो होय छे. स्त्रीवेद सूत्र अने पुरुषवेद सूत्र एकवचनमां तेमज जाणवुं. परन्तु अहीं नारक, एकेन्द्रिय अने विकलेन्द्रिय न कहेवा. कारण के तेओ नपुंसक होय छे. वहुवचनमां जीवादि पदोमां प्रत्येकने त्रण भांगा जाणवा. नपुंसकवेदमां पण एकवचननी अपेक्षाए सूत्र तेमज जाणवुं. परन्तु अहीं भवनपति, व्यन्तर, ज्योतिष्क अने वैमानिको न कहेवा. कारण के तेओ नपुंसक वेदरहित छे. वहुवचनमां जीव अने एकेन्द्रिय सिवायना वाकीना स्थानोमां त्रण भांगा अने जीवपद तथा पृथिव्यादि एकेन्द्रिय पदोमां पूर्वे कह्या प्रकारे भांगाओनो अभाव होय छे. वेदरहितने जेम केवलज्ञानी संवन्धे कह्युं छे तेम एकवचन अने वहुवचनमां कहेवुं. जीवपद अने मनुष्यपदने विशे एकवचनमां 'कदाचित् आहारक होय अने कदाचित् अनाहारक होय' अने वहुवचननी अपेक्षाए जीवपदमां घणा आहारको पण होय अने घणा अनाहारको

१७. ससरीरी जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो, ओरालिगसरीरीजीवमणूसेसु तियभंगो, अवसेसा आहारगा, नो अणाहारगा जेसिं अत्थि ओरालियसरीरं, वेउव्विगसरीरी आहारगसरीरी य आहारगा, नो अणाहारगा जेसिं अत्थि, तेयकम्मसरीरी जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो, असरीरी जीवा सिद्धा य नो आहारगा, अणाहारगा । दारं १२ । आहारपज्जत्तीए पज्जत्ते सरीरपज्जत्तीए पज्जत्ते इंदियपज्जत्तीए पज्जत्ते अणापाणुपज्जत्तीए पज्जत्तए भासाम-

१७. सशरीरी जीवने एकेन्द्रिय सिवाय त्रण भांगा कहेवा. औदारिक शरीरी जीव अने मनुष्योमां त्रण भांगा समजवा. बाकीना जीवो जेओने औदारिक शरीर छे तेओ आहारक होय छे, पण अनाहारक होता नथी. वैक्रियशरीरी अने आहारक शरीरी जेओने वैक्रिय अने आहारक शरीर छे तेओ आहारक होय छे पण अनाहारक होता नथी. तैजसकार्मण शरीरवाळाने जीव अने एकेन्द्रिय सिवाय त्रण भांगा जाणवा. अशरीरी–शरीर रहित जीवो अने सिद्धो आहारक नथी पण अनाहारक छे. द्वार १२. आहार पर्याप्ति वडे पर्याप्त, शरीर पर्याप्ति वडे पर्याप्त,

पण होय. मनुष्योमां त्रण भांगा समजवा. अने सिद्धपणामां 'सघा अनाहारको होय' एम कहेवुं. वेदद्वार समाप्त.

१७. शरीरद्वार विशे सामान्यतः सशरीर सूत्रमां एकवचननी अपेक्षाए एवे 'कदाचित् आहारक होय अने कदाचित् अनाहारक होय.' बहुवचननी अपेक्षाए जीव अने एकेन्द्रिय सिवाय बाकीना स्थानोमां प्रत्येकने त्रण भांगा अने जीवपद अने पृथिव्यादि एकेन्द्रिय पदोमां प्रत्येकने पूर्वे कह्या प्रमाणे भांगाओनो अभाव समजवो. औदारिकशरीरसूत्र एकवचनमां तेमज जाणवुं. परन्तु अहीं नारको, भवनपति, व्यन्तर, ज्योतिष्क अने वैमानिको न कहेवा, कारण के तेओने औदारिक शरीर नथी. बहुवचनमां जीवपद अने मनुष्यपदोमां प्रत्येकने त्रण भांगा जाणवा. जेमके—१ 'बधा य आहारको होय'. आ भांगो ज्यारे कोइपण केवली समुद्घातने प्राप्त [illegible] न होय त्यारे समजवो. २ अथवा बधा आहारको होय अने एक अनाहारक होय. आ भांगो एक केवलज्ञानी

णपज्जत्तीए पज्जत्तते एतासु पंचसुवि पज्जत्तीसु जीवेसु मणूसेसु य तियभंगो, अवसेसा आहारगा, नो अणाहारगा, भासामणपज्जत्ती पंचिंदियाणं, अवसेसाणं नत्थि। आहारपज्जत्तीअपज्जत्तए णो आहारए, अणाहारए एगत्तेणवि पुहुत्तेणवि, सरीरपज्जत्तीअपज्जत्तए सिय आहारए सिय अणाहारए, उवरिल्लियासु चउसु अपज्जत्तीसु नेरइयदेवमणूसेसु छब्भंगा, अवसेसाणं जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो, भासामणपज्जत्तएसु जीवेसु पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु य तियभंगो, नेरइयदेवमणुएसु छब्भंगा। सव्वपदेसु एगत्तपोहत्तेणं जीवादिया दंडगा पुच्छाए

इन्द्रिय पर्याप्ति वडे पर्याप्त, श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति वडे पर्याप्त अने भाषा मन पर्याप्ति वडे पर्याप्तानो विचार करतां ए पांचे पर्याप्तिओमां जीव अने मनुष्य पदने आश्रयी त्रण भांगा जाणवा. बाकीना जीवो आहारक होय छे पण अनाहारक होता नथी. भाषा अने मनःपर्याप्ति पंचेन्द्रियोने होय छे. बीजाने नथी. आहारपर्याप्ति वडे अपर्याप्तो एकवचन अने बहुवचननी अपेक्षाए पण आहारक नथी, पण शरीरपर्याप्ति वडे अपर्याप्त कदाचित् आहारक होय अने कदाचित् अनाहारक होय. उपरनी चारे अपर्याप्तिओमां नारक, देव अने मनुष्योमां छ भांगा होय छे. बाकीना पदोमां जीव अने एकेन्द्रिय सिवाय त्रण भांगा समजवा. भाषा मनपर्याप्ति वडे पर्याप्ता जीवो

समुद्घातने प्राप्त थयेल होय अथवा अयोगी होय त्यारे होय छे. ३ अथवा 'घणा आहारको होय अने घणा अनाहारको होय'. आ भांगो घणा केवली समुद्घातने प्राप्त थयेला के अयोगी होय त्यारे जाणवो. बाकीना एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउरिन्द्रिय के तिर्यञ्च पंचेन्द्रियो आहारक ज कहेवा, पण अनाहारक न कहेवा. कारण के विग्रहगतिथी उत्तीर्ण थयेलाने ज औदारिक शरीरनो संभव छे, वैक्रियशरीरी अने आहारकशरीरी बधा य एकवचन अने बहुवचनमां आहारक ज होय छे, पण अनाहारक होता नथी.

भाणितव्वा जस्स जं अत्थि तस्स तं पुच्छिज्जति, जस्स जं णत्थि तस्स तं न पुच्छिज्जति, जाव भासामणपज्जत्तीअपज्जत्तएसु नेरइयदेवमणुएसु छब्भंगा, सेसेसु तियभंगो ॥ आहारपयस्स बितिओ उद्देसो समत्तो ।

पन्नवणाए भगवईए अट्ठावीसइमं आहारपयं समत्तं ।

अने पंचेन्द्रिय तिर्यंचोमां त्रण भांगा, नारक, देव अने मनुष्योमां छ भांगा कहेवा. सर्व पदोमां एकवचन अने बहुवचननी अपेक्षाए जीवादि दंडको प्रश्न वडे कहेवा. जेने जे होय छे तेने तेनो प्रश्न करवो. जेने जे नथी, तेनो तेने प्रश्न न करवो. यावत् भाषा मनपर्याप्ति वडे अपर्याप्ता देव अने मनुष्योमां छ भांगा अने बाकीना स्थानोमां त्रण भांगा जाणवा.

प्रज्ञापना सूत्रमां अठ्यावीशमा आहारपदनो बीजो उद्देशक समाप्त.

परंतु जेओने वैक्रिय अने आहारक शरीर संभवे छे ते ज कहेवा, बीजा न कहेवा. तेमां वैक्रियशरीर नारक, भवनपति, वायुकायिक, तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय, मनुष्य, व्यन्तर, ज्योतिषिक अने वैमानिकोने होय छे अने आहारक मनुष्योने ज होय छे. सूत्रपाठ आ प्रमाणे—'वेउव्वियसरीरी णं भंते ! आहारए अणाहारए ? गोयमा ! आहारए, णो अणाहारए'–हे भगवन् ! वैक्रियशरीरी जीव शुं आहारक छे के अनाहारक छे ? हे गौतम ! आहारक छे पण अनाहारक नथी. हे भगवन् ! वैक्रियशरीरी नारक शुं आहारक छे के अनाहारक छे ? हे गौतम ! आहारक छे पण अनाहारक नथी. तैजसकार्मणशरीरवाळाना सूत्रमां एकवचननी अपेक्षाए बधे य 'कदाचित् आहारक होय अने कदाचित् अनाहारक होय. बहुवचननी अपेक्षाए जीव अने एकेन्द्रिय सिवायना बाकीना स्थानोमां त्रण भांगा अने जीवपद अने एकेन्द्रियोमां भांगाओनो अभाव जाणवो. अशरीरी–शरीररहित सिद्धो होय छे. अने तेमां बे ज पद छे. जीवो अने सिद्धो. तेने विशे एकवचन अने अने बहुवचनमां बन्ने स्थानोमां अनाहारक ज होय छे. शरीरद्वार समाप्त.

हवे पर्याप्तद्वार कहे छे—तेमां आगममां पांच पर्याप्तिओ कहेली छे. कारण के भाषा अने मनपर्याप्तिनी एकपणे विवक्षा करी छे. आहारपर्याप्तिवडे पर्याप्त, शरीरपर्याप्तिवडे पर्याप्त, इन्द्रियपर्याप्तिवडे पर्याप्त, श्वासोच्छ्वासपर्याप्तिवडे पर्याप्त तथा भाषा अने मनपर्याप्तिवडे पर्याप्तानो विचार करतां, अहीं सर्व पर्याप्तिओनी सङ्कलना-संख्या कहे छे—'एतासु पञ्चस्वपि पर्याप्तिषु' अहीं 'समर्थितासु चिन्त्यमानासु' ए पदनो अध्याहार करवो. एटले संपूर्ण करेली ए पांच पर्याप्तिओनो विचार करतां ए पांच पर्याप्तिओ वडे पर्याप्ताने एकवचननी अपेक्षाए जीवपद अने मनुष्यपदमां कदाचित् आहारक होय अने कदाचित् अनाहारक होय. अने बाकीना स्थानोमां आहारक होय. बहुवचनमां 'जीवेसु मणूसेसु य तियभङ्गो' त्ति जीवपद अने मनुष्यपदने विशे त्रण भांगा कहेवा. अने तेनो औदारिकशरीरवाळा सूत्रनी पेठे विचार करवो. बाकीना वधा य आहारको कहेवा. परन्तु भाषामनपर्याप्ति पंचेन्द्रियोने ज होय छे. माटे तेना सूत्रमां एकेन्द्रिय अने विकलेन्द्रियो न कहेवा, परन्तु बाकीना जीवो कहेवा. ए ज बाबत सूत्रकार कहे छे—'भासामणपज्जत्ती पञ्चिंदियाणं, अवसेसाणं नत्थि' भाषा-मनपर्याप्ति पंचेन्द्रियोने होय छे बीजाने नथी. आहारपर्याप्तिवडे अपर्याप्ताना सूत्रमां एकवचननी अपेक्षाए बधे य अनाहारक कहेवो, पण आहारक न कहेवो. आहारपर्याप्तिवडे अपर्याप्त विग्रहगतिमां ज होय छे. कारण के उत्पत्तिस्थानने प्राप्त थयेलो जीव प्रथम समये ज आहारपर्याप्तिवडे पर्याप्त होय छे. जो एम न होय तो ते समये आहारकपणुं न घटे. बहुवचननी अपेक्षाए तो 'अनाहारको होय'. शरीरपर्याप्तिवडे अपर्याप्त सूत्रमां एकवचननी अपेक्षाए 'कदाचित् आहारक होय अने कदाचित् अनाहारक होय'. तेमां विग्रहगतिमां अनाहारक अने उपपातक्षेत्रने प्राप्त थयेलो शरीरपर्याप्तिनी समाप्ति सुधी आहारक होय छे. ए प्रमाणे इन्द्रियपर्याप्तिवडे अपर्याप्तसूत्रमां, श्वासोच्छ्वासपर्याप्तिवडे अपर्याप्तसूत्रमां अने भाषामनःपर्याप्तिवडे अपर्याप्तसूत्रमां प्रत्येकने एकवचननी अपेक्षाए 'कदाचित् आहारक होय अने कदाचित् आहारक न होय' एम कहेवुं. बहुवचननी अपेक्षाए 'उवरिल्लियासु' उपरनी शरीर अपर्याप्तिप्रमुख चार अपर्याप्तिओनो विचार करता नारक, देव अने मनुष्योमां प्रत्येकने छ भांगा कहेवा. जेमके १ 'कदाचित् बधा य अनाहारको ज होय २ 'कदाचित् बधा य आहारको ज होय. ३ कदाचित् एक आहारक होय अने एक अनाहारक होय. ४ कदाचित् एक आहारक होय

अने घणा अनाहारको होय. ५ कदाचित् घणा आहारको होय अने एक अनाहारक होय अने ६ कदाचित् घणा आहारको अने घणा अनाहारको होय.' वाकीना नारक, देव अने मनुष्य सिवाय वीजा जीवोने जीवपद अने एकेन्द्रियो विना त्रण भांगा कहेवा. जेमके— १ वधा य आहारको होय. २ अथवा वधा आहारको होय अने एक अनाहारक होय. ३ अथवा घणा आहारको अने घणा अनाहारको होय. जीवपद अने एकेन्द्रियपदोने विशे शरीरपर्याप्ति वडे अपर्याप्त सूत्रमां, इन्द्रियपर्याप्तिवडे अपर्याप्तसूत्रमां अने श्वासोच्छ्वासपर्याप्तिवडे अपर्याप्तसूत्रमां प्रत्येकने आश्रयी भांगाओनो अभाव छे. केमके तेओ आहारको पण होय छे अने अनाहारको पण होय छे. कारण के आहारक अने अनाहारक वन्ने प्रकारना जीवो हमेशां घणा होय छे. भाषा मनःपर्याप्तिवडे अपर्याप्ता एकेन्द्रियो अने विकलेन्द्रियो होता नथी, परन्तु पंचेन्द्रियो ज होय छे, जेओने भाषामनपर्याप्तिनो संभव छे तेओ ज ते पर्याप्तिवडे अपर्याप्ता कहेवाय छे, पण वीजा कहेवाता नथी. तेथी तेना सूत्रमां वहुवचननी अपेक्षाए जीवपदमां अने पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च पदमां त्रण भांगा कहेवा. पंचेन्द्रिय तिर्यञ्चो संमूर्छिमो हमेशां घणा होय छे. तेथी ज्यां सुधी हजी वीजो पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च विग्रहगतिने प्राप्त थयेलो न होय त्यां सुधी 'वधाय आहारको होय' ए भांगो होय छे. ते एक विग्रहगतिने प्राप्त थयेलो होय त्यारे वीजो भांगो-वधा आहारक होय अने एक अनाहारक होय. ज्यारे विग्रहगतिने प्राप्त थयेला पण घणा होय त्यारे घणा आहारको अने घणा अनाहारको होय-ए त्रीजो भांगो होय. जीवपद विशे त्रण भांगा ए अपेक्षाए जाणवा. नारक, देव अने मनुष्यमां प्रत्येकने छ भांगा होय छे अने ते पूर्वे कहेला छे.

अहीं भव्यपदथी आरंभी प्रायः एकवचन अने वहुवचनवडे जुदा सूत्रो जीवादि दंडकना क्रमथी कह्या नथी, तेथी मन्द वुद्धिवाळाने भ्रान्ति न थाय माटे ते संवन्धे अतिदेश-सादृश्य प्रतिपादक सूत्र कहे छे—'सव्वपएसु एगत्त'-इत्यादि. सर्वे पदोमां-वधाय पदोमां एकवचन अने वहुवचननी अपेक्षाए प्रश्नवडे अने उपलक्षणथी उत्तर वडे ए जीवादि दण्डको कहेवा. शुं वधे य सामान्यपणे कहेवा? नहि, जेने जे होय तेने ते पूछवुं एटले ते संवन्धे सूत्र कहेवुं. जेने जे नथी ते तेने न पूछवुं एटले ते वावत सूत्र न कहेवुं. क्यां सुधी एम कहेवुं? ए शङ्कानां समाधानमां चरम दंडकना कथन सुधी कहेवुं-एम सूत्रकार कहे छे—'जाव भासामणपज्जत्तीए अपज्जत्तएसु'

यावत् भाषामनपर्याप्तिवडे अपर्याप्ता नारक, देव अने मनुष्य विषे कहेवुं. इत्यादिना अर्थनो पूर्वे विचार कर्यो छे. अहीं प्रस्तुत अर्थनो विचार करवा माटे पूर्वाचार्योए कहेली आ गाथाओ छे—" सिद्धेगिंदियसहिया जहिं तु जीवा अभङ्गयं तत्थ। सिद्धेगिंदियवज्जेहिं होइ जीवेहिं तियभङ्गो ॥१॥ असण्णीसु य नेरइयदेवमणुएसु होंति छब्भङ्गा। पुढविदगतरुगणेसु य छब्भङ्गा तेउलेसाए ॥२॥ कोहे माणे माया छब्भङ्गा सुरगणेसु सव्वेसुं। माणे माया लोभे णेरइएहिंपि छब्भङ्गा ॥३॥ आभिणिबोहियनाणे सुयनाणे खलु तहेव सम्मत्ते। छब्भङ्गा खलु नियमा बियतियचउरिंदिएसु भवे ॥४॥ उवरिल्लापज्जत्तीसु चउसु णेरइयदेवमणुएसुं। छब्भङ्गा खलु नियमा वज्जे पढमा उ अपजत्ती ॥५॥ सण्णी विसुद्धलेसा सञय तिहिल्ल तिसु य नाणेसु। थीपुरिसाण य वेदेवि छब्भङ्ग अवेय तियभङ्गो ॥६॥ सम्मामिच्छामणवइमणनाणे बालपंडियविउव्वी। आहारसरीरंमि य नियमा आहारया होंति ॥७॥ ओहिंमि विभङ्गंमि य नियमा आहारया उ नायव्वा। पञ्चिंदिया तिरिच्छा मणुया पुण होंति विभंगे ॥८॥ ओरालसरीरंमि य पज्जत्तीणं च पञ्चसु तहेव। तियभङ्गो जियमणुएसु होंति आहारगा सेसा ॥९॥ णोभवअभविय लेसा अजोगिणो तहय होंति असरीरी। पढमाए अपज्जत्तीए ते उ नियमा अणाहारा ॥१०॥ सन्नासन्नविउत्ता अवेय अकसाइणो य केवलिणो। तियभङ्ग एगवयणे सिद्धाऽणाहारया होंति ॥११॥" सिद्ध अने एकेन्द्रिय सहित ज्यां जीवो छे त्यां बीजो भांगो नथी. सिद्ध अने एकेन्द्रिय सिवायना जीवोमां त्रण भांगा जाणवा. १ असंज्ञी, नारक, देव अने मनुष्योमां छ भांगा होय छे. पृथिवी, अप् अने वनस्पतिसमूहने विशे तेजोलेश्यानी अपेक्षाए छ भांगा थाय छे. २ सर्व देवोमां क्रोध, मान अने माया संबन्धे छ भांगा थाय छे. मान, माया अने लोभ संबन्धे नारकोमां पण छ भांगा थाय छे. ३ आभिनियोधिकज्ञान, श्रुतज्ञान अने सम्यक्त्वना छ भांगा अवश्य बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रियने विशे थाय छे. ४ उपरनी चार अपर्याप्तिओमां नारक, देव अने मनुष्योने विशे छ भांगा थाय छे. प्रथम (आहार) अपर्याप्ति अवश्य वर्जवी. संज्ञी, विशुद्ध लेश्या, संयत, नीचेना त्रण ज्ञान, स्त्रीवेद अने पुरुषवेदमां पण छ भांगा अने वेदरहितने त्रण भांगा थाय छे. ६ सम्यग्मिथ्यात्व, मनोयोग, वचनयोग, मनःपर्यवज्ञान, बालपंडित-देशविरति, वैक्रियलब्धिवाळा, अने आहारक शरीरमां अवश्य आहारको होय छे. अवधिज्ञान अने विभंगज्ञानमां

अवश्य आहारक जाणवा. पंचेन्द्रिय तिर्यंचो अने मनुष्यो विभंगज्ञानमां होय छे. औदारिकशरीरमां पांचे पर्याप्तिओमां जीव अने मनुष्योने विशे तेमज त्रण भांगा होय छे अने बाकीना वधा आहारक होय छे. नोभव्यअभव्य, अलेश्या-लेश्यारहित अयोगी अने अशरीरी तथा प्रथम अपर्याप्तिमां वर्तमान जीवो अनाहारक होय छे, संज्ञा अने असंज्ञा वियुक्त, वेदरहित, अकषायी अने केवलज्ञानीने त्रण भांगा जाणवा. एकवचन वडे सिद्धो अनाहारक होय छे.

आ वधी गाथाओ पूर्वे कहेला अर्थने जणावनारी होवाथी तेना अर्थनो विचार करेलो छे, माटे ग्रन्थ वधी जवाना भयथी फरीथी तेनो विचार करता नथी, परन्तु 'एक्कवयणे सिद्धा अणाहारया होंति' अहीं 'एक्कवयणे' ए स्थळे तृतीयाना अर्थमां सप्तमी छे एटले एकवचन वडे वधे सिद्धो अनाहारक होय छे एम जाणवुं. द्वितीय उद्देशक समाप्त.

श्रीमदाचार्यमलयगिरिविरचित प्रज्ञापना सूत्रनी टीकाना. अनुवादमां अठयावीशमुं आहारपद समाप्त.

एगूणवीसइमं उवओगपयं ।

१. कइविहे णं भंते ! उवओगे पन्नत्ते ? गोयमा ! दुविहे उवओगे पन्नत्ते, तंजहा–सागरोवओगे य अणागारोवओगे य । सागरोवओगे णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! अट्ठविहे पन्नत्ते, तंजहा–आभिणिबोहियनाणसागारोवओगे, सुयणाणसागारोवओगे, ओहिणाणसागारोवओगे, मणपज्जवनाणसागारोवओगे, केवल-

---

ओगणत्रीशमुं उपयोगपद ।

१. हे भगवन् ! केटला प्रकारनो उपयोग कह्यो छे ? हे गौतम ! बे प्रकारनो उपयोग कह्यो छे. ते आ प्रमाणे–साकार उपयोग अने अनाकार उपयोग. हे भगवन् ! साकार उपयोग केटला प्रकारनो कह्यो छे ? हे गौतम ! आठ प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे–१ आभिनिबोधिक ज्ञान साकारोपयोग, २ श्रुतज्ञान, ३ अवधिज्ञान, ४ मनःपर्यवज्ञान, ५ केवलज्ञान, ६ मतिअज्ञान, ७ श्रुतअज्ञान,

---

१. एम अठ्यावीशमुं 'आहार' नामे पद कह्युं. हवे ओगणत्रीशमा पदनो प्रारंभ कराय छे. एनो संबन्ध आ छे–अहीं पूर्वना पदमां गतिना परिणामविशेष रूप आहारपरिमाण कह्यो, अहीं ज्ञानना परिमाणविशेष रूप उपयोगनुं प्रतिपादन कराय छे. तेमां आ प्रथम सूत्र छे—'कइविहे णं भंते ! उवओगे पन्नत्ते' सूत्रमां 'प' कार मागधी भाषाना नियमथी आवेलो छे 'णं' वाक्यालंकारमां आवे छे. 'भदन्त' !–परमकल्याणयुक्त हे भगवन् ! उपयोग केटला प्रकारनो कह्यो छे ? उपयोजनं–उपयोग. अहीं क्रियाना अर्थमां घञ् प्रत्यय समजवो. अथवा 'उपयुज्यतेऽनेन' जे वडे जीव वस्तुनुं ज्ञान करवामां प्रवृत्त थाय ते उपयोग. अहीं करणमां घ प्रत्यय थयेलो छे एटले जीवनो बोधरूप तात्त्विक व्यापार. ते केटला प्रकारनो कह्यो छे ? भगवान् कहे छे—'हे गौतम !' इत्यादि. आकार–प्रतिनियत अर्थने ग्रहण करवानो परिणाम, कारण के 'आगारो य विसेसो' एवुं शास्त्रवचन छे. आकारसहित होय ते साकार, एवा प्रकारनो उपयोग

नाणसागारोवओगे, मतिअण्णाणसागारोवओगे,सुयअण्णाणसागारोवओगे,विभंगणाणसागारोवओगे । अणागारोवओगे णं भंते ! कतिविहे पन्नत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे पन्नत्ते, तंजहा–चक्खुदंसणअणागारोवओगे, अचक्खुदंसणअणागारोवओगे, ओहिदंसणअणागारोवओगे, केवलदंसणअणागारोवओगे य । एवं जीवाणं ।

अने ८ विभंगज्ञान साकारोपयोग. हे भगवन् ! अनाकार उपयोग केटला प्रकारनो कह्यो छे ? हे गौतम ! चार प्रकारनो कह्यो छे. ते आ प्रमाणे–१ चक्षुदर्शन अनाकार उपयोग, २ अचक्षुदर्शन, ३ अवधिदर्शन, अने ४ केवलदर्शन. ए प्रमाणे जीवोने कहेवुं.

ते साकारोपयोग, तात्पर्य ए छे के सचेतन के अचेतन वस्तुमां उपयोग करतो आत्मा ज्यारे पर्याय सहित वस्तु जाणे छे त्यारे ते उपयोग साकार कहेवाय छे. अने ते उपयोग काळथी छद्मस्थने अन्तर्मुहूर्त काळनो अने केवलीने एक समयनो होय छे. उपर कहेला स्वरूपवाळो आकार जेमां नथी ते अनाकार उपयोग, [1]स्कन्धावारना उपयोगनी पेठे वस्तुनुं जे सामान्यरूपे ज्ञान ते अनाकारोपयोग. आ अनाकार उपयोग पण छद्मस्थोने अन्तर्मुहूर्तनो छे, पण अनाकार उपयोगना काळथी साकार उपयोगनो काळ संख्यातगुण जाणवो, कारण के ते पर्यायनो परिच्छेद–बोध करतो होवाथी तेमां घणो काळ लागे छे अने तेनुं कारण छद्मस्थोनो तेवा प्रकारनो स्वभाव छे. केवलीने अनाकार उपयोग एक समयनो होय छे. च शब्दो स्वगत अनेक भेदना सूचक छे.

१. लशकरी छावणीने स्कन्धावार कहे छे. तेमां हाथी, घोडा, रथ अने पायदळनुं सैन्य होवा छतां ज्यां तेनुं विशेषरूपे ज्ञान न होय पण सैन्यरूपे सामान्य बोध होय तेना जेवो अनाकार उपयोग छे. यद्यपि नामजात्यादिनी कल्पनारहित अनाकार बोध छे तेथी स्कन्धावारनो उपयोग पण विशेष उपयोगरूप छे तो पण तेमां हाथी, घोडा, रथ अने पायदळरूप विशेष बोधना अभावनी समानता होवाथी दृष्टान्त तरीके तेनुं ग्रहण कर्युं छे.

२. नेरइयाणं भंते ! कतिविधे उवओगे पन्नत्ते ? गोयमा ! दुविधे उवओगे पन्नत्ते, तंजहा–सागारोवओगे य अणागारोवओगे य । नेरइयाणं भंते ! सागारोवओगे कइविहे पन्नत्ते ? गोयमा ! छव्विहे पन्नत्ते, तंजहा–मतिणाणसागारोवओगे, सुयणाणसागारोवओगे, ओहिणाणसागारोवओगे, मतिअण्णाणसागारोवओगे, सुयअण्णाणसागारोवओगे, विभंगणाणसागारोवओगे। नेरइया णं भंते ! अणागारोवओगे कइविहे पन्नत्ते ? गोयमा ! तिविहे पन्नत्ते, तंजहा–चक्खुदंसणअणागारोवओगे, अचक्खुदंसणअणागारो-

२. हे भगवन् ! नैरयिकोने केटला प्रकारनो उपयोग कह्यो छे ? हे गौतम ! बे प्रकारनो उपयोग कह्यो छे–साकार उपयोग अने अनाकार उपयोग. हे भगवन् ! नैरयिकोने साकार उपयोग केटला प्रकारनो कह्यो छे ? हे गौतम ! छ प्रकारनो कह्यो छे. ते आ प्रमाणे–१ मतिज्ञान साकारोपयोग, २ श्रुतज्ञान, ३ अवधिज्ञान, ४ मतिअज्ञान, ५ श्रुतअज्ञान, ६ विभंगज्ञान. हे भगवन् ! नैरयिकोने अनाकार उपयोग केटला प्रकारनो कह्यो छे ? हे गौतम ! त्रण प्रकारनो कह्यो छे. ते आ प्रमाणे–१ चक्षुदर्शन अनाकारोपयोग, २ अचक्षुदर्शन, ३ अवधिदर्शन. ए प्रमाणे स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं. पृथिवीकायिको संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! बे प्रकारनो

२. तेमां साकार उपयोगना भेदो कहेवानी इच्छावाळा सूत्रकार आ सूत्र कहे छे—'सागारोवओगे णं भंते !' इति. हे भगवन् ! साकार उपयोग केटला प्रकारनो छे-इत्यादि. अभि-अर्थाभिमुख-पदार्थसापेक्ष, नि-नियत,प्रतिनियत स्वरूपवाळो निश्चित बोध-बोधविशेष ते अभिनिबोध. अभिनिबोध शब्दनो विनयादिमां पाठ मानी स्वार्थमां 'इकण्' प्रत्यय करवाथी आभिनिबोधिक रूप थाय छे. कदाचित् 'स्वार्थिक प्रत्ययो मूळ प्रकृति-शब्दना लिंग अने वचनने छोडी दे छे, तेथी आभिनिबोधिक शब्दनुं नपुंसक लिंग छे. जेम

वओगे, ओहिदंसणअणागारोवओगे, एवं जाव थणियकुमाराणं। पुढविकाइयाणं पुच्छा। गोयमा ! दुविहे उव-
ओगे पन्नत्ते, तंजहा–सागारोवओगे अणागारोवओगे य। पुढविकाइयाणं सागारोवओगे कतिविधे पन्नत्ते? गो-
यमा ! दुविहे पन्नत्ते, तंजहा–मतिअण्णाणसागारोवओगे, सुयअण्णाणसागारोवओगे य। पुढविकाइयाणं अ-
णागारोवओगे कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! एगे अचक्खुदंसणअणागारोवओगे पन्नत्ते, एवं जाव वणस्सइका-

---

उपयोग कह्यो छे. ते आ प्रमाणे–साकार उपयोग अने अनाकार उपयोग. पृथिवीकायिको संबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! बे प्रकारनो
छे. ते आ प्रमाणे–मतिअज्ञान, अने श्रुतअज्ञान. पृथिवीकायिकोने अनाकार उपयोग केटला प्रकारनो कह्यो छे ? हे गौतम ! एक
अचक्षुदर्शनरूप अनाकार उपयोग कह्यो छे. ए प्रमाणे वनस्पतिकायिको सुधी जाणवुं. बेइन्द्रियो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! बे
प्रकारनो उपयोग कह्यो छे. ते आ प्रमाणे–साकार उपयोग अने अनाकार उपयोग. हे भगवन् ! बेइन्द्रियोने साकार उपयोग केटला

विनय एज वैनयिक. अथवा अभिनिबुध्यते अस्मात् अस्मिन् वा–जेनाथी अथवा जेने विशे बोध थाय ते अभिनिबोध–एटले तेना आ-
वरणरूप कर्मनो क्षयोपशम, ते वडे निर्वृत्त–उत्पन्न थयेलुं ते आभिनिबोधिक. एवा प्रकारनुं ज्ञान ते आभिनिबोधिक ज्ञान. ते इन्द्रिय अने
मनना निमित्ते थयेलो योग्य देशमां रहेली वस्तुनो स्पष्ट प्रतिभास–बोधविशेषरूप छे. एवा प्रकारनो साकार उपयोग ते आभिनिबो-
धिक ज्ञान साकार उपयोग कहेवाय छे. श्रवण-श्रुत–एटले वाच्यवाचकभावपूर्वक शब्दनी साथे संबन्धवाळा अर्थनुं ग्रहण करवामां
कारणभूत बोधविशेष, 'आवा आकारवाळी वस्तु घटशब्दवाच्य छे अने ते जलधारण करवा वगेरे रूप अर्थक्रिया करवानो समर्थ छे'
इत्यादिरूपे प्रधान करायेलो सामान्य परिमाण जेने विशे छे एवो शब्द अने अर्थनुं पर्यालोचन करनार इन्द्रिय अने मनोनिमित्ते थयेलो
बोधविशेष ते श्रुतज्ञान. तेनो फरी साकार उपयोग शब्द साथे विशेषण समास करवो. अव शब्दनो अर्थ 'नीचे' एवो थाय छे एटले

इयाणं। बेइंदियाणं पुच्छा। गोयमा! दुविधे उवओगे पन्नत्ते, तंजहा–सागारोवओगे अणागारोवओगे य। बेइंदियाणं भंते! सागारोवओगे कतिविधे पन्नत्ते? गोयमा! चउव्विहे पन्नत्ते,तंजहा–आभिणिबोहियनाण०, सुयनाण०,मतिअण्णाण०,सुतअण्णाणसागारोवओगे। बेइंदियाणं भंते! अणागारोवओगे कइविहे पन्नत्ते? गोयमा! एगे अचक्खुदंसणअणागारोवओगे, एवं तेइंदियाणवि। चउरिंदियाणवि एवं चेव, नवरं अणागारोवओगे दुवि-

---

प्रकारनो कह्यो छे? हे गौतम! चार प्रकारनो कह्यो छे. ते आ प्रमाणे–आभिनिबोधिकज्ञान, श्रुतज्ञान, मतिअज्ञान अने श्रुतअज्ञान. बेइन्द्रिओने अनाकार उपयोग केटला प्रकारनो छे? हे गौतम! एक अचक्षुदर्शनरूप अनाकार उपयोग छे. ए प्रमाणे तेइन्द्रियोने जाणवुं. चउरिन्द्रियोने एमज जाणवुं. परन्तु तेने अनाकार उपयोग बे प्रकारनो कह्यो छे. ते आ प्रमाणे–चक्षुदर्शन

जे घडे नीचे विस्तारवाळी वस्तुनो 'धीयते' बोध थाय ते अवधि. अथवा अवधि–मर्यादा, रूपीज द्रव्योमां जाणवापणे प्रवृत्तिरूप मर्यादा सहित जे ज्ञान ते अवधिज्ञान. परि–सर्वथा, अव–गमन करवुं. अवन, गमन वगेरे शब्दो पर्यायो छे. अने सर्वे गत्यर्थक धातु ज्ञानार्थक होवाथी जाणवुं एवो अर्थ थाय छे. मन विशे अथवा मन संबन्धी सर्वथा जाणवुं ते मनःपर्यवज्ञान कहेवाय छे. 'पर्यय' एवुं पाठान्तर पण छे. तेनो अर्थ तो पूर्ववत् जाणवो. अथवा 'मनःपर्याय' एवुं पाठान्तर छे. तेमां मनांसि पर्येति–मनने सर्वथा जाणे ते मनःपर्याय. अथवा मनना पर्यायो–धर्मो, बाह्य वस्तुनो विचार करवाना प्रकारो, तेओने विषे अथवा तेओनुं जे ज्ञान ते मनःपर्यायज्ञान कहेवाय छे. आ ज्ञाननो विषय अढी द्वीप अने समुद्रोमां रहेला संज्ञी पंचेन्द्रियना मनोगत द्रव्यो छे. केवळ–एक, कारण के मत्यादिज्ञान निरपेक्ष छे. केम के छाद्मस्थिक ज्ञान नष्ट थाय छे त्यारे केवळज्ञान उपजे छे–एवुं शास्त्रनुं वचन छे. अथवा केवळ–शुद्ध, कारण के तेना आवरणरूप कर्ममेल दूर थया छे. अथवा केवळ–संपूर्ण, प्रथमथीज तेना बधा आवरणोनो क्षय थवाथी संपूर्णरूपे उत्पन्न थाय छे, अथवा

धे पन्नत्ते, तंजहा–चक्खुदंसणअणागारोवओग, अचक्खुदंसणअणागारोवओगे । पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं जहा नेरइयाणं । मणुस्साणं जहा ओहिए उवओगे भणितं तहेव भाणितव्वं । वाणमंतरजोतिसियवेमाणियाणं जहा णेरइयाणं ।

३. जीवा णं भंते ! किं सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता ? गोयमा ! सागारोवउत्तावि अणागारोवउत्तावि । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–'जीवा सागारोवउत्तावि अणागारोवउत्तावि ? गोयमा ! जेणं जीवा आभि-

---

अनाकारोपयोग अने अचक्षुदर्शन अनाकारोपयोग. पंचेन्द्रिय तिर्यंचोने नैरयिकोनी पेठे कहेवुं. मनुष्योने जेम सामान्य उपयोग संबन्धे कह्युं छे तेमज कहेवुं. हे भगवन्! व्यन्तर, ज्योतिषिक अने वैमानिकोने केटला प्रकारना उपयोग होय ? नैरयिकोनी जेम जाणवुं.

३. हे भगवन् ! जीवो शुं साकार उपयोगवाळा छे के अनाकार उपयोगवाळा छे ? हे गौतम ! साकार उपयोगवाळा पण छे अने अनाकार उपयोगवाळा पण छे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के जीवो साकार उपयोगवाळा पण छे अने अनाकार उपयोग-

---

केवळ–असाधारण, कारण के तेना ज्ञाननो विषय अनन्त छे. एवा प्रकारनुं ज्ञान ते केवलज्ञान. तथा मति, श्रुत अने अवधि ज्यारे मिथ्यात्वमोह वडे मलिन थाय छे त्यारे अनुक्रमे मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान अने विभंगज्ञान तरीके तेओनो व्यवहार थाय छे. कह्युं छे के–'आद्यत्रयमज्ञानमपि भवति मिथ्यात्वसंयुक्तम्' इति. आदिना त्रण ज्ञान मिथ्यात्वसंयुक्त होय त्यारे अज्ञानरूपे थाय छे. 'विभंग'– वि–विपरीत भङ्ग–ज्ञाननो प्रकार जेने विशे छे ते विभङ्गज्ञान. वधेय साकार उपयोग शब्दनी साथे विशेषण समास करवो.

२. अनाकार उपयोगना भेदो जणावे छे–'अणगारोवओगे णं भंते' ! हे भगवन् ! अनाकार उपयोग केटला प्रकारे छे? इत्यादि.

णिबोहियणाणसुयनाणओहिनाणमणपज्जवनाणकेवलनाणमइअण्णाणसुयअण्णाणविभंगणाणोवउत्ता तेणं जीवा सागारोवउत्ता, जे णं जीवा चक्खुदंसणअचक्खुदंसणओहिदंसणकेवलदंसणोवउत्ता तेणं जीवा अणागारोवउत्ता, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—'जीवा सागारोवउत्तावि अणागारोवउत्तावि'। नेरइया णं भंते ! किं सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता? गोयमा! नेरइया सागरोवउत्तावि अणागारोवउत्तावि। से केणट्ठेणं भंते ! एवं

वाळा पण छे ? हे गौतम ! जे हेतुथी जीवो आभिनिबोधिक ज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, केवलज्ञान, मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान अने विभङ्गज्ञानना उपयोगवाळा होय छे ते हेतुथी जीवो साकार उपयोगवाळा छे. जे हेतुथी जीवो चक्षुदर्शन,अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन अने केवळदर्शनना उपयोगवाळा होय छे ते हेतुथी जीवो अनाकार उपयोगवाळा छे. ते माटे हे गौतम ! एम कहेवाय छे के जीवो साकार उपयोगवाळा पण छे अने अनाकार उपयोगवाळा पण छे. हे भगवन् ! नैरयिको साकार उपयोगवाळा छे के अ-

---

तेमां चक्षुइन्द्रिय वडे दर्शन-रूप सामान्यनुं ग्रहण करवुं ते चक्षुदर्शन, ते रूप अनाकारोपयोग ते चक्षुदर्शन अनाकारोपयोग. अचक्षु-चक्षु सिवायनी बाकीनी इन्द्रियो अने मन वडे पोतपोताना विषयनुं सामान्य ज्ञान ते अचक्षुदर्शन. ते पछी अनाकार उपयोगनी साथे विशेषणसमास करवो. ए प्रमाणे पछीना सूत्रोमां पण जाणवुं. अवधिरूप-मर्यादित-मात्र रूपी द्रव्य विषयक दर्शन-सामान्य ज्ञान ते अवधिदर्शन. केवळ-संपूर्ण जगतमां रहेली सर्व वस्तुओनुं सामान्य ज्ञानरूप दर्शन ते केवळदर्शन. (प्र०)—मनःपर्यवज्ञाननुं दर्शन केम नथी होतुं ? जेथी पांचमो अनाकार उपयोग थतो नथी ? (उ०)—मनना पर्याय संबन्धे जे ज्ञान थाय ते मनना पर्यायने ज (प्रथमथी) विशेषरूपे ग्रहण करतुं उत्पन्न थाय छे. पर्याय-विशेष, अने विशेषविषयक ज्ञान ज कहेवाय पण दर्शन कहेवातुं नथी. माटे मनःपर्यवज्ञानना दर्शननो अभाव छे, माटे पांचमा अनाकार उपयोगनो असंभव छे. 'ए प्रमाणे जीवोने कहेवुं.' एम सामान्य उपयोगनी पेठे जीवोने पण

वुच्चति ? गोयमा ! जेणं नेरइया आभिणिबोहियणाणसुयनाणओहिनाणमतिअण्णाणसुयअन्नाणविभग-
नाणोवउत्ता ते णं नेरइया सागारोवउत्ता, जे णं नेरइया चक्खुदंसणअचक्खुदंसणओहिदंसणोवउत्ता तेणं ने-
रइया अणागारोवउत्ता, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ-जाव 'सागारोवउत्तावि अणागारोवउत्तावि', एवं जाव
थणियकुमारा । पुढविकाइयाणं पुच्छा । गोयमा ! तहेव जाव जेणं पुढविकाइया मतिअण्णाणसुयअण्णाणोव-

नाकार उपयोगवाळा छे ? हे गौतम ! साकार उपयोगवाळा पण छे अने अनाकार उपयोगवाळा पण छे. हे भगवन्! शा हेतुथी एम
कहो छो ? हे गौतम ! जे हेतुथी नैरयिको आभिनिवोधिकज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान अने विभङ्गज्ञानना
उपयोगवाळा होय छे ते हेतुथी नैरयिको साकार उपयोगवाळा होय छे. जे हेतुथी नैरयिको चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन अने अवधिदर्श-
नना उपयोगवाळा होय छे ते हेतुथी नैरयिको अनाकार उपयोगवाळा होय छे, ते माटे हे गौतम ! एम कहुं छु के यावत् साकार

उपयोग बे प्रकारनो कहेलो छे एम जाणवुं. तेमां पण साकार उपयोग आठ प्रकारनो छे अने अनाकार उपयोग चार प्रकारनो छे.
तात्पर्य ए छे के जेम पूर्वे जीवपदरहित उपयोगसूत्र सामान्यथी कह्युं तेम जीवपदसहित कहेवुं. जेम के 'हे भगवन्! जीवोने केटला
प्रकारनो उपयोग कह्यो छे ? हे गौतम ! बे प्रकारनो उपयोग कह्यो छे. ते आ प्रमाणे-साकार उपयोग अने अनाकार उपयोग. हे
भगवन् ! जीवोने साकार उपयोग केटला प्रकारनो कह्यो छे ? हे गौतम ! आठ प्रकारनो कह्यो छे'—इत्यादि. ए प्रमाणे, सामान्य पण
जीवोना उपयोगनो विचार कर्यो.

हवे चोवीश दंडकना क्रमथी नैरयिकादिना उपयोगनो विचार करे छे—'नेरइया णं भंते' ! हे भगवन्? नैरयिकोने केटला प्रका-
रनो उपयोग छे? इत्यादि, नैरयिको बे प्रकारना छे-सम्यग्दृष्टि अने मिथ्यादृष्टि. अवधिज्ञान पण तेओने भवनिमित्तक अवश्य उत्पन्न

उत्ता ते णं पुढविकाइया सागारोवउत्ता, जेणं पुढविकाइया अचक्खुदंसणोवउत्ता तेणं पुढविकाइया अणागारोवउत्ता, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जाव वणप्फइकाइया । बेइंदियाणं भंते ! अट्ठसहिया तहेव पुच्छा। गोयमा ! जाव जेणं बेइंदिया आभिणिबोहियनाणसुयणाणमतिअण्णाणसुयणाणोवउत्ता तेणं बेइंदिया सागा-

उपयोगवाळा होय छे अने अनाकार उपयोगवाळा पण होय छे. ए प्रमाणे स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं. पृथिवीकायिको संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! तेमज कहेवुं. यावत् जे हेतुथी पृथिवीकायिको मतिअज्ञान अने श्रुतअज्ञानना उपयोगवाळा होय छे ते हेतुथी पृथिवीकायिको साकार उपयोगवाळा छे. जे हेतुथी पृथिवीकायिको अचक्षुदर्शनना उपयोगवाळा छे ते हेतुथी पृथिवीकायिको अनाकार उपयोगवाळा छे, ते माटे हे गौतम ! एम कहुं छुं. ए प्रमाणे वनस्पतिकायिको सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! बेइन्द्रियोना अर्थ-प्रयोजन

थाय छे. कारण के भवप्रत्ययो नारक-देवानाम्' (तत्त्वा० अ. १. सू. २२) एवुं वचन छे. तेमां सम्यग्दृष्टिने मतिज्ञान श्रुतज्ञान, अने अवधिज्ञान होय छे अने मिथ्यादृष्टिने मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान अने विभङ्गज्ञान होय छे. एटले सामान्यपणे नैरयिकोने छ प्रकारनो साकार उपयोग होय छे. अनाकार उपयोग त्रण प्रकारनो छे. जेमके—चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन अने अवधिदर्शन. ए त्रणे प्रकारनो अनाकार उपयोग सम्यग्दृष्टि अने मिथ्यादृष्टिने सामान्यपणे जाणवो. कारण के सूत्रमां बन्नेने अवधिदर्शन कहेलुं छे. ए प्रमाणे असुरकुमारथी आरंभी स्तनितकुमार सुधीना भवनपतिने जाणवुं. पृथिवीकायिकोने साकार उपयोग बे प्रकारनो छे. जेमके-मतिअज्ञान अने श्रुतअज्ञान. अनाकार उपयोग एक अचक्षुदर्शनरूप छे. बाकीना उपयोगो तेओने होता नथी. कारण के तेओ सम्यग्दर्शनादि लब्धि रहित छे. ए प्रमाणे अप्, तेजस्, वायु अने वनस्पतिने पण जाणवुं. बेइन्द्रियोने साकार उपयोग चार प्रकारनो छे. जेमके-मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, मतिअज्ञान अने श्रुतअज्ञान. तेमां अपर्याप्तावस्थामां सास्वादनपणाने प्राप्त थयेला केटलाकने मतिज्ञान अने श्रुतज्ञान होय छे

वउत्ता तेणं अणागारोवउत्ता, से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ, एवं जाव
रोवउत्ता, जेणं बेइंदिया अचक्खुदंसणोवउत्ता तेणं अणागारोवउत्ता, से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ, एवं जाव
चउरिंदिया, णवरं चक्खुदंसणं अब्भहियं चउरिंदियाणंति। पंचिंदियतिरिक्खजोणिया जहा नेरइया, मणूसा
जहा जीवा, वाणमंतरजोतिसियवेमाणिया जहा नेरइया।

पण्णवणाए भगवईए एगूणतीसइमं उवओगपयं समत्तं।

दण्डक सहित तेमज पृच्छा करवी. हे गौतम! यावत् जे हेतुथी बेइन्द्रियो आभिनिबोधिकज्ञान, श्रुतज्ञान, मतिअज्ञान अने श्रुतअज्ञा-
नना उपयोगवाळा छे ते हेतुथी बेइन्द्रियो साकार उपयोगवाळा छे. जे हेतुथी बेइन्द्रियो अचक्षुदर्शनना उपयोगवाळा छे ते हेतुथी
अनाकार उपयोगवाळा छे. ते माटे हे गौतम! हुं एम कहुं छुं. ए प्रमाणे चउरिन्द्रियो सुधी जाणवुं. परन्तु चउरिन्द्रियोने चक्षुदर्शन

अने बाकीनाने मतिअज्ञान अने श्रुतअज्ञान होय छे. तथा अचक्षुदर्शनरूप एक अनाकार उपयोग होय छे. बाकीना उपयोगो तेओने
होता नथी. एम तेइन्द्रियोने पण समजवुं. चउरिन्द्रियोने पण एमज जाणवुं, परन्तु एटली विशेषता छे के तेओने अनाकार उपयोग बे
प्रकारनो होय छे—चक्षुदर्शन अने अचक्षुदर्शन. पंचेन्द्रिय तिर्यंचोने साकार उपयोग छ प्रकारनो छे. जेमके—१ मतिज्ञान, २ श्रुतज्ञान,
३ अवधिज्ञान, ४ मतिअज्ञान, ५ श्रुतअज्ञान अने ६ विभंगज्ञान. अनाकार उपयोग त्रण प्रकारनो छे. जेमके चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन अने
अवधिदर्शन. कारण के केटलाएक पंचेन्द्रिय तिर्यंचोमां अवधिज्ञान अने अवधिदर्शननो संभव छे. मनुष्योने यथासंभव आठेय साकार
उपयोगो अने चारेय अनाकार उपयोगो होय छे, कारण के तेओमां सर्व ज्ञानो अने दर्शनोनी लब्धिनो संभव छे. व्यन्तर, ज्योतिषिक
अने वैमानिको नैरयिकोनी पेठे जाणवा. ए प्रमाणे सामान्यथी चोवीश दंडकना क्रमथी जीवोना उपयोगनो विचार कर्यो. हवे मन्दबु-

अधिक कहेवुं. पंचेन्द्रिय तिर्यंचो नैरयिकोनी पेठे अने मनुष्यो जीवोनी पेठे समजवा. व्यन्तर, ज्योतिषिक अने वैमानिको नैरयिकोनी जेम जाणवा.

प्रज्ञापना भगवतीमां ओगणत्रीशमुं उपयोगपद समाप्त.

द्विवाळाने स्पष्ट बोध थाय माटे जीवो ज ते ते उपयोग सहित चोवीश दंडकना क्रमथी विचाराय छे—'जीवा णं भंते' ! हे भगवन्! जीवो० इत्यादि सुगम छे.

प्रज्ञापना सूत्रनी टीकाना अनुवादमां ओगणत्रीशमुं उपयोग पद समाप्त.

तीसइमं पासणयापयं ।

१. कतिविहा णं भंते ! पासणया पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पासणया पन्नत्ता, तंजहा–सागारपासणया, अणागारपासणया । सागारपासणया णं भंते ! कइविहा पन्नत्ता ? गोयमा ! छव्विहा पण्णत्ता, तंजहा–सुयणाणपासणया, ओहिणाणपासणया, मणपज्जवणाणपासणया, केवलणाणपासणया, सुयअण्णाणसागारपासणया, विभंगणाणसागारपासणया । अणागारपासणया णं भंते ! कइविधा पन्नत्ता ? गोयमा ! तिविहा पन्नत्ता,

---

त्रीशमुं पश्यत्ता पद.

१. हे भगवन् ! केटला प्रकारे पासणया–पश्यत्ता–त्रैकालिक अथवा स्पष्ट दर्शनरूप बोध कह्यो छे ? हे गौतम ! बे प्रकारे छे. ते आ प्रमाणे—साकार पासणया अने अनाकार पासणया. हे भगवन् ! साकार पासणया केटला प्रकारे कही छे ? हे गौतम ! छ प्रकारनी कही छे. ते आ प्रमाणे–१ श्रुतज्ञानपासणया, २ अवधिज्ञान, ३ मनःपर्यवज्ञान, ४ केवलज्ञान, ५ श्रुतअज्ञान अने ६ विभंगज्ञानपासणया. हे भगवन् ! अनाकारपासणया केटला प्रकारनी छे ? हे गौतम ! त्रण प्रकारनी छे–१ चक्षुदर्शन अनाकार

---

१. ए प्रमाणे ओगणत्रीशमुं पद कह्युं. हवे त्रीशमा पदनो प्रारंभ थाय छे. एनो संबन्ध आ प्रमाणे छे–पूर्वेना पदमां ज्ञानना परिमाण विशेषरूप उपयोग कह्यो, अहीं पण ज्ञानना परिमाणविशेषरूप उपयोगने विशे पश्यत्तानो विचार कराय छे. कारण के त्रैकालिक अथवा स्पष्ट उपयोगने पश्यत्ता कहे छे. तेमां आ प्रथम सूत्र छे—'हे भगवन् ! केटला प्रकारे 'पासणया' पश्यत्ता कहेली छे ? अहीं 'दृश्' धातु जोवाना अर्थमां छे. 'पश्यति'–अहीं वर्तमान अर्थमां कर्तरि शतृच् प्रत्यय थाय छे अने अनत् आदेश थाय छे. दृश् धातुनो 'पश्य'

तंजहा—चक्खुदंसणअणागारपासणया, ओहिदंसणअणागारपासणया, केवलदंसणअणागारपासणया, एवं जीवाणंपि। नेरइयाणं भंते! कतिविधा पासणया पण्णत्ता? गोयमा! दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—सागारपासणया, अणागारपासणया। नेरइयाणं भंते! सागारपासणया कइविहा पन्नत्ता? गोयमा! चउव्विहा पन्नत्ता, तंजहा—सुयणाणपासणया, ओहिणाणपासणया, सुयअण्णाणपासणया, विभंगणाणपासणया। नेरइयाणं भंते! अ-

पासणया, २ अवधिदर्शन, ३ केवलदर्शन. ए प्रमाणे जीवोने पण कहेवुं. हे भगवन्! नैरयिकोने केटला प्रकारनी पासणया होय छे? हे गौतम! बे प्रकारनी होय छे. ते आ प्रमाणे—साकार पासणया अने अनाकार पासणया. हे भगवन्! नैरयिकोने साकार पासणया केटला प्रकारनी छे? हे गौतम! चार प्रकारनी छे. ते आ प्रमाणे—१ श्रुतज्ञानपासणया, २ अवधिज्ञानपासणया, ३ श्रुतअज्ञानपासणया अने ४ विभंगज्ञानपासणया. हे भगवन्! नैरयिकोने अनाकारपासणया केटला प्रकारनी छे? हे गौतम! बे प्रकारनी

आदेश थाय छे. पश्यतो भावः पश्यत्ता. अहीं भाव अर्थमां तल् प्रत्यय थयो छे. त्यार पछी अकारान्त शब्दथी आप् प्रत्यय थवाथी 'पासणया' शब्द कहेवाय छे. आ पासणया शब्द उपयोगनी पेठे साकार अने अनाकार बोधनो प्रतिपादक छे. तथा उपयोग विशे प्रश्न अने उत्तर आ प्रमाणे छे—'हे भगवन्! उपयोग केटला प्रकारनो कह्यो छे? हे गौतम! बे प्रकारनो उपयोग कह्यो छे, ते आ प्रमाणे—साकार उपयोग अने अनाकार उपयोग. तेम पश्यत्ता विशे प्रश्न अने उत्तरसूत्र आ प्रमाणे—'हे भगवन्! केटला प्रकारनी पासणया कही छे? हे गौतम! बे प्रकारनी कही छे. ते आ प्रमाणे—साकार पश्यत्ता अने अनाकार पश्यत्ता. (प्र०)—साकार अने अनाकार भेद समान छतां उपयोग अने पासणयामां कइ विशेषता छे के जेथी उपयोगथी पासणया—पश्यत्ता जुदी कहो छो? (उ०)—साकार अने अनाकार भेदना पेटाभेदनी संख्यारूप विशेषता छे. जेमके—पांच ज्ञान अने त्रण अज्ञान ए आठ प्रकारनो साकार उपयोग

णागारपासणया कतिविहा पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–चक्खुदंसण० ओहिदंसण०, एवं जाव थणियकुमारा। पुढविकाइयाणं भंते! कतिविहा पासणया पन्नत्ता ? गोयमा ! एगा सागारपासणया। पुढविकाइयाणं भंते! सागारपासणया कतिविहा पन्नत्ता ? गोयमा ! एगा सुयअन्नाणसागारपासणया पन्नत्ता, एवं जाव वणस्सइकाइयाणं। बेइंदियाणं भंते! कतिविहा पासणया पन्नत्ता ? गोयमा ! एगा सागारपासणया पन्नत्ता। बेइंदि-

छे. ते आ प्रमाणे–चक्षुदर्शनपासणया अने अवधिदर्शनपासणया. ए प्रमाणे स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं. हे भगवन्! पृथिवीकायिकोने केटला प्रकारनी पासणया होय छे ? हे गौतम ! तेओने एक साकारपासणया होय छे. हे भगवन्! पृथिवीकायिकोने साकारपासणया केटला प्रकारनी होय छे ? हे गौतम ! तेओने एक श्रुतअज्ञानसाकारपासणया होय छे. एम वनस्पतिकायिको सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! बेइन्द्रियोने केटला प्रकारनी पासणया होय छे ? हे गौतम ! एक साकार पासणया होय छे. ए प्रमाणे तेइन्द्रियोने पण जाणवुं.

छे. अने साकार पश्यत्ता छ प्रकारनी छे, कारण के मतिज्ञान अने मतिअज्ञानने पश्यत्ता मानता नथी. शा हेतुथी ? उत्तर–अहीं पश्यत्ता पश्यते पश्यतो भावः–जोनारनो भाव-प्रेक्षण जाणवुं, केमके दृश् धातु प्रेक्षण–जोवाना अर्थमां छे. अहीं साकार पश्यत्तानो विचार करतां प्रकाश-अधिक दीर्घ काळ पर्यन्त ईक्षण अने अनाकार पश्यत्तानो विचार करतां प्रकृष्ट-स्पष्टरूप ईक्षण ते अहीं रूढिथी प्रेक्षण जाणवुं. तेथी जे लाग पडे क्षण काळनो बोध थाय तेज ज्ञान दीर्घ काळनो विषय होवाथी साकार पश्यत्ता शब्दथी कहेवाय छे, अन्य ज्ञान कहेवातुं नथी. मतिज्ञान अने मतिअज्ञान उत्पन्न अने विनाशने नहि प्राप्त थनेला अर्थनुं ग्रहण करनार वर्तमानकाल विषयक छे. आ ... मतिज्ञानने आगमी अन्य स्थळे कह्युं छे के–'अवग्गहादिरूवं पच्चुप्पन्नवत्थुगाहगं लोए। इंदियमणोनिमित्तं तमाभिनिवोधिगं
... लोकमां अवग्रहादिरूप, वर्तमान वस्तुने ग्रहण करनार इन्द्रिय अने मनना निमित्तथी ज्ञान थाय छे तेने आभिनिवोधिकज्ञान
साम"...

याणं भंते! सागारपासणया कइविहा पन्नत्ता? गोयमा! दुविहा पन्नत्ता, तंजहा सुयणाणसागारपासणया, सुयअण्णाणसागारपासणया, एवं तेइंदियाणवि। चउरिंदियाणं पुच्छा। गोयमा! दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—सागारपासणया य अणागारपासणया य। सागारपासणया जहा बेइंदियाणं। चउरिंदियाणं भंते! अणागारपासणया कइविहा पन्नत्ता? गोयमा! एगा चक्खुदंसणअणागारपासणया पन्नत्ता। मणूसाणं जहा जीवाणं, सेसा जहा नेरइया जाव वेमाणियाणं।

चउरिन्द्रियो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम! तेओने पासणया—पश्यत्ता वे प्रकारनी कही छे. ते आ प्रमाणे—साकार पासणया अने अनाकार पासणया. साकार पासणया बेइन्द्रियोने कही छे तेम कहेवी. हे भगवन्! चउरिन्द्रियोने अनाकार पासणया केटला प्रकारनी छे? हे गौतम! एक चक्षुदर्शनरूप अनाकार पासणया होय छे. मनुष्योने जीवोनी पेठे कहेवुं. बाकीना जीवोने नैरयिकोनी जेम वैमानिक सुधी कहेवुं.

कहे छे. तेथी ते बन्ने ज्ञान साकारपश्यत्ता शब्द वाच्य नथी. श्रुतज्ञानादि त्रिकालविषयक छे. जेमके श्रुतज्ञान वडे अतीत अने अनागत भावो पण जाणी शकाय छे. कह्युं छे के—"जं पुण तिकालविसयं आगमगंथाणुसारि विन्नाणं। इंदियमणोनिमित्तं सुयनाणं तं जिणा वेंति॥" त्रिकालविषयक, आगम ग्रन्थने अनुसारे इन्द्रिय अने मननिमित्ते जे विज्ञान थाय छे तेने जिनो श्रुतज्ञान कहे छे. अवधिज्ञान पण अतीत अने अनागत असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणीरूप काळ जाणे छे. मनःपर्यवज्ञान पण पल्योपमनो असंख्यातमो भाग अतीत अने भविष्यकाळ जाणे छे. अने केवळज्ञान सर्वकाळ विषयक सुप्रसिद्ध छे. श्रुतअज्ञान अने विभङ्गज्ञान पण त्रिकालविषयक छे. कारण के ते वडे पण अतीत अने अनागत भावनुं ज्ञान थाय छे. तेथी ते ज्ञानो साकारपश्यत्ता शब्द वडे कहेवाय छे. जेमां पूर्वोक्त स्वरू-

त्रिकालविषयक होय त्यां बधे उपयोग शब्द प्रवर्ते छे, माटे पवाळा आकारनी स्फुरणा थाय ते बोध वर्तमानकाळ विषयक होय के त्रिकालविषयक होय त्यां बधे उपयोग शब्द प्रवर्ते छे, माटे साकार उपयोग आठ प्रकारनो छे. चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन अने केवळदर्शन एम चारे प्रकारे अनाकार उपयोग छे अने अनाकारपश्यत्ता त्रण प्रकारे छे. कारण के अचक्षुदर्शन अनाकारपश्यत्तारूप नथी. शा हेतुथी? तेनुं कारण ए छे के पूर्वे अनाकार-पश्यत्तानो विचार करतां कह्युं छे के प्रकृष्ट-स्पष्ट ईक्षणरूप अनाकारपश्यत्ता छे. अने अचक्षुदर्शनमां स्पष्ट ईक्षण नथी, कारण के आत्मा चक्षुनी जेम बाकीनी इन्द्रियो अने मन वडे जाणतो नथी, तेथी अचक्षुदर्शन अनाकारपश्यत्तारूप नहि होवाथी त्रण प्रकारे अना-कारपश्यत्ता छे. ए प्रमाणे साकार भेद अने अनाकार भेदना प्रत्येक पेटाभेदमां विचित्रता होवाथी उपयोग अने पश्यत्तामां मोटी विशेषता छे. एज विशेषतानुं प्रतिपादन करवानी इच्छावाळा सूत्रकार प्रथमथी तेना साकार अने अनाकार भेदो अने तेना पेटा भेदोनुं प्रतिपादन करे छे—'हे गौतम! बे प्रकारनी पश्यत्ता छे. ते आ प्रमाणे–साकार पश्यत्ता अने अनाकार पश्यत्ता. हे भगवन्! साकार पश्यत्ता केटला प्रकारनी कही छे'–इत्यादि सूत्रना अर्थनो विचार कर्यो छे. ए प्रमाणे सामान्यपणे जीवपदना विशेषणरहित पश्यत्ता कही. हवे जीवपदना विशेषण सहित पश्यत्ता कहे छे—'एवं जीवाणंपि' ए प्रमाणे जीवोने पण कहेवुं एटले पूर्वे कह्या प्रमाणे जीवोने पण एटले जीवपदना विशेषण सहित पण पश्यत्ता कहेवी. ते आ प्रमाणे—'जीवाणं भंते! कतिविधा पासणया पन्नत्ता? गोयमा! दुविहा पन्नत्ता, तंजहा-सागारपासणया य अणागारपासणया य। जीवाणं भंते! सागारपासणया कतिविहा पन्नत्ता? इत्यादि. हे भगवन्! जीवोने केटला प्रकारनी पश्यत्ता कही छे? हे गौतम! बे प्रकारनी पश्यत्ता कही छे. ते आ प्रमाणे-साकार पश्यत्ता अने अ-नाकार पश्यत्ता. हे भगवन्! जीवोने साकार पश्यत्ता केटला प्रकारनी कही छे' इत्यादि. ए प्रमाणे जीवोने पण सामान्यपणे पश्यत्ता कही. हवे चोवीश दंडकना क्रमथी कहे छे—'नेरइया णं भंते! हे भगवन्! नैरयिकोने केटला प्रकारनी पश्यत्ता कही छे? इत्यादि सुगम होवाथी अने घणुं करी उपयोग पदमां तेनो विचार करेलो होवाथी पूर्वे कहेली भावनाने अनुसारे स्वयं जाणी लेवुं. ए प्रमाणे सामान्यथी अने विशेषथी जीवोने पश्यत्ता कही.

२. जीवा णं भंते ! किं सागारपस्सी, अणागारपस्सी ? गोयमा ! जीवा सागारपस्सीवि अणागारपस्सीवि । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–'जीवा सागारपस्सीवि अणागारपस्सीवि' ? गोयमा ! जे णं जीवा सुतणाणी ओहिणाणी मणपज्जवनाणी केवलनाणी सुयअण्णाणी विभंगनाणी ते णं जीवा सागारपस्सी, जेणं जीवा चक्खुदंसणी ओहिदंसणी केवलदंसणी ते णं जीवा अणागारपस्सी, से एतेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ–'जीवा सागारपस्सीवि अणागारपस्सीवि'। नेरइया णं भंते ! किं सागारपस्सी, अणागारपस्सी ? गोयमा ! एवं चेव, नवरं सागारपासणयाए मणपज्जवनाणी केवलनाणी न वुच्चति, अणागारपासणयाए केवलदंसणं नत्थि, एवं जाव थणि-

---

२. हे भगवन् ! जीवो शुं साकारदर्शी–साकारपश्यत्तावाळा छे के अनाकारदर्शी–अनाकार पश्यत्तावाळा छे ? हे गौतम ! जीवो साकार पश्यत्तावाळा पण छे अने अनाकार पश्यत्तावाळा पण छे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के 'जीवो साकारपश्यत्तावाळा पण छे अने अनाकारपश्यत्तावाळा पण छे' ? हे गौतम ! जे हेतुथी जीवो श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी, मनःपर्यवज्ञानी, केवलज्ञानी, श्रुतअज्ञानी अने विभंगज्ञानी छे ते हेतुथी साकारपश्यत्तावाळा छे. जे हेतुथी जीवो चक्षुदर्शनी, अवधिदर्शनी अने केवलदर्शनी छे ते हेतुथी जीवो अनाकारपश्यत्तावाळा छे. ते माटे हे गौतम ! हुं एम कहुं छुं के 'जीवो साकारदर्शी पण छे अने अनाकारदर्शी पण छे.' हे भगवन् ! नैरयिको साकारपश्यत्तावाळा छे के अनाकार पश्यत्तावाळा छे ? हे गौतम ! एमज जाणवुं. परन्तु साकारपश्यत्तामां मनःपर्यवज्ञानी अने केवलज्ञानी न कहेवा. अने

---

२. हवे पश्यत्ता सहित जीवोनोज विचार करवानी इच्छावाळा सूत्रकार कहे छे—'जीवा णं भंते ! किं सागारपस्सी' ? इत्यादि. हे भगवन् ! जीवो शुं साकारदर्शी—साकार पश्यत्तावाळा छे ? जीवो–जीवनयुक्त, प्राणधारण करनारा. 'णं' वाक्यालंकारमां वपराय छे. किं

यकुमारा। पुढविकाइयाणं पुच्छा। गोयमा! पुढविकाइया सागारपस्सी, णो अणागारपस्सी। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ? गोयमा! पुढविकाइयाणं एगा सुयअण्णाणसागारपासणया पन्नत्ता, से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ, एवं जाव वणस्सतिकाइयाणं। बेइंदियाणं पुच्छा। गोयमा! सागारपस्सी, णो अणागारपस्सी। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चति? गोयमा! बेइंदियाणं दुविहा सागारपासणया पन्नत्ता, तंजहा–सुयणाणसागारपासणया, सुयअण्णाणसागारपासणया, से एएणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ। एवं तेइंदियाणवि। चउरिंदियाणं पुच्छा। गोयमा! चउरिंदिया सागारपस्सीवि अणागारपस्सीवि। से केणट्ठेणं० ? गोयमा! जेणं चउरिंदिया सुयणाणी सुयअन्नाणी

अनाकारपश्यत्तामां केवलदर्शन नथी. ए प्रमाणे स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं. पृथिवीकायिको संबन्धे पृच्छा. हे गौतम! पृथिवीकायिको साकारपश्यत्तावाळा होय छे पण अनाकारपश्यत्तावाळा नथी. हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो? हे गौतम! पृथिवीकायिकोने एक श्रुतअज्ञानरूप साकारपश्यत्ता कही छे. ते माटे हे गौतम! हुं एम कहुं छुं. ए प्रमाणे वनस्पतिकायिको सुधी जाणवुं. बेइन्द्रियो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम! तेओ साकारपश्यत्तावाळा छे, पण अनाकारपश्यत्तावाळा नथी. हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो? हे गौतम! बेइन्द्रियोने बे प्रकारनी साकारपश्यत्ता कही छे. जेमके–श्रुतज्ञान साकारपश्यत्ता अने श्रुतअज्ञान साकारपश्यत्ता, ते हेतुथी हे गौतम! हुं एम कहुं छुं. ए प्रमाणे तेइन्द्रियोने पण जाणवुं. चउरिन्द्रियो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम! चउरिन्द्रियो साकारपश्यत्तावाळा

प्रश्नार्थक छे. साकार पश्यत्ता जेओने होय ते 'आकारपस्सी'–साकारदर्शी अथवा साकारपश्यत्तावाळा कहेवाय छे. प्राकृत होवाथी 'सागारपस्सी' रूप थाय छे. अहीं 'मनःपर्यवज्ञानी अने केवलज्ञानी कहेवाता नथी'—इत्यादि. कारण के नैरयिकोने चारित्रनी प्राप्ति

ते णं चउरिंदिया सागारपस्सी, जेणं चउरिंदिया चक्खुदंसणी ते णं चउरिंदिया अणागारपस्सी, से एएणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ । मणूसा जहा जीवा, अवसेसा जहा नेरइया जाव वेमाणिया ।

३. केवली णं भंते ! इमं रयणप्पभं पुढविं आगारेहिं हेतूहिं उवमाहिं दिट्ठंतेहिं वण्णेहिं संठाणेहिं पमाणेहिं पडोयारेहिं जं समयं जाणाति तं समयं पासइ, जं समयं पासइ तं समयं जाणइ ? गोयमा ! नो तिणट्ठे समट्ठे। से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति–'केवली णं इमं रयणप्पभं पुढविं आगारेहिं० जं समयं जाणति नो तं समयं पा-

पण होय छे अने अनाकारपश्यत्तावाळा पण होय छे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो ? हे गौतम ! जे हेतुथी चउरिन्द्रियो श्रुतज्ञानी के श्रुतअज्ञानी छे ते हेतुथी चउरिन्द्रियो साकारपश्यत्तावाळा छे. जे हेतुथी चउरिन्द्रियो चक्षुदर्शनी छे ते हेतुथी चउरिन्द्रियो अनाकारपश्यत्तावाळा छे. ते हेतुथी हे गौतम ! एम कहुं छुं. मनुष्यो जीवोनी पेठे अने बाकीना नैरयिकोनी पेठे वैमानिक सुधी जाणवा.

३. हे भगवन् ! केवली आ रत्नप्रभा पृथिवीने आकारो वडे, हेतुओ वडे, उपमा वडे, दृष्टांतो वडे, वर्ण वडे, संस्थान वडे, प्रमाण वडे अने प्रत्यवतार (घनोदधि वगेरे वलयो) वडे जे समये जाणे छे ते समये देखे छे ? अने जे समये देखे छे ते समये जाणे छे ? हे गौतम ! ए अर्थ

नहि होवाथी मनःपर्यवज्ञान, केवलज्ञान अने केवलदर्शन नथी.

३. अहीं छद्मस्थने अनुक्रमे उत्पन्न थतो साकार अने अनाकार उपयोग घटे छे. कारण के तेओ कर्मसहित छे. कर्मसहित जीवोने अन्य उपयोग समये अन्य उपयोग कर्म वडे आच्छादित थयेलो होवाथी घटतो नथी. अने केवलज्ञानी तो चार घाती कर्मना क्षयथी

सति, जं समयं पासति नो तं समयं जाणइ ? गोयमा ! सागारे से णाणे भवति, अणागारे से दंसणे भवति,
से तेणट्ठेणं जाव णो तं समयं जाणति, एवं जाव अहेसत्तमं । एवं सोहम्मकप्पं जाव अच्चुयं, गेविज्जगविमाणा
अणुत्तरविमाणा, ईसीपब्भारं पुढवीं, परमाणुपोग्गलं दुपदेसियं खंधं जाव अणंतपदेसियं खंधं । केवली णं
भंते ! इमं रयणप्पभं पुढविं अणागारेहिं अहेतूहिं अणुवमाहिं अदिट्ठंतेहिं अवण्णेहिं असंठाणेहिं अपमाणेहिं

समर्थ नथी. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के केवलज्ञानी आ रत्नप्रभा पृथिवीने आकार वडे जे समये जाणे छे ते समये
देखतो नथी, अने जे समये देखे छे ते समये जाणतो नथी' ? हे गौतम ! तेनुं ज्ञान साकार होय छे अने दर्शन अनाकार होय छे, ते
हेतुथी यावत् ते समये जाणतो नथी. ए प्रमाणे नीचेनी सातमी नरकपृथिवी सुधी जाणवुं. एम सौधर्म देवलोक यावत् अच्युत देव-
लोक, ग्रैवेयक विमानो, अनुत्तर विमानो, ईषत्प्राग्भारा पृथिवी, परमाणुपुद्गल, द्विप्रदेशिक स्कन्ध, यावत् अनन्त प्रदेशिक स्कन्ध

थाय छे. तेथी संशय थाय छे के 'तेने ज्ञानावरण अने दर्शनावरणनो क्षय थयेलो होवाथी जे समये रत्नप्रभादिने जाणे छे तेज समये
देखे छे के तेवा जीवस्वभावथी अनुक्रमे देखे छे ? माटे प्रश्न करे छे—'केवली णं भंते' इत्यादि. 'हे भगवन् ! केवली'—इत्यादि. केवलज्ञान
अने दर्शन जेओने छे ते केवली कहेवाय छे. 'णं' वाक्यालंकारमां वपराय छे. भदन्त-परम कल्याणना योगवाळा हे भगवन् ! आ
प्रत्यक्षथी जणाती रत्नप्रभा नामे पृथिवीने 'आगारेहिं' ति-आकारो वडे, आकारना भेदो वडे, जेमके-आ रत्नप्रभा पृथिवीना खरकांड,
पंककांड अने अपूकांडना भेदथी त्रण कांड छे. खरकांड पण सोळ प्रकारनो छे. जेमके—'प्रथम एक हजार योजन प्रमाण रत्नकांड छे,
त्यार पछी हजार योजन प्रमाण वज्रकांड छे. तेनी पण नीचे हजार योजन प्रमाण वैडूर्यकांड छे'—इत्यादि. 'हेऊहिं' ति हेतुओ-युक्तिओ
वडे, ते युक्ति आ प्रमाणे छे-शा कारणथी रत्नप्रभा कहेवाय छे ? कारण के एनो रत्नमय कांड छे माटे रत्नप्रभा कहेवाय छे. कारण के

अपडोयारेहिं पासति न जाणति ? हंता ! गोयमा ! केवली णं इमं रयणप्पभं पुढविं अणागारेहिं जाव पासति न जाणति । से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ–'केवली णं इमं रयणप्पभं पुढविं अणागारेहिं जाव पासति ण जाणति'? गोयमा ! अणागारे से दंसणे भवति, सागारे से नाणे भवति, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ–'केवली णं इमं रयणप्पभं पुढविं अणागारेहिं जाव पासति ण जाणति', एवं जाव ईसिप्पभारं पुढविं परमाणुपोग्गलं अणंत-

---

संबन्धे कहेवुं. हे भगवन् ! केवली आ रत्नप्रभा पृथिवीने अनाकार वडे, अहेतु वडे, अनुपमा वडे, अदृष्टान्त वडे, अवर्ण वडे, असंस्थान वडे, अप्रमाण वडे अने अप्रत्यवतार वडे देखे छे, जाणतो नथी ? हा गौतम ! केवलज्ञानी आ रत्नप्रभा पृथिवीने अनाकार वडे यावत् देखे छे, पण जाणतो नथी. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के 'केवली आ रत्नप्रभा पृथिवीने अनाकार वडे देखे छे, पण जाणतो नथी ? हे गौतम ! तेओने दर्शन अनाकार होय छे अने ज्ञान साकार होय छे, ते हेतुथी हे गौतम ! एम कहेवाय

रत्नो जेनुं प्रभा–स्वरूप छे ते रत्नप्रभा–पछी तेनी व्युत्पत्ति थाय छे. 'उवमाहिं' उपमाओ वडे, उपपूर्वक मा धातुथी अङ्. प्रत्यय लागी उपमा शब्द थाय छे. ते आ प्रमाणे—रत्नप्रभामां रत्नप्रभादि कांडो वर्णविभागनी अपेक्षाए केवा छे ? एटले केवा केवा वर्णवाळा छे? पद्मराग मणिना सरखा वर्णवाळा छे. 'दिट्ठंतेहिं'—दृष्टांतो वडे, दृष्टः अन्तः–परिच्छेदो विवक्षितसाध्यसाधनयोः संबन्धस्याविनाभावरूपस्य प्रमाणेन यत्र ते दृष्टान्ताः–प्रमाण वडे जाणेलो छे विवक्षित साध्य अने साधनना अविनाभाव–व्याप्तिरूप संबन्धनो अन्त–परिच्छेद जेओने विशे ते दृष्टान्तो कहेवाय छे, ते वडे, जेम घट पोतामां रहेला विशाल तळीआ अने पेट वगेरे आकारादि रूप धर्मो वडे सहित अने पटादिगत परधर्मोथी भिन्न जणाय छे, अने तेथी पटादिथी भिन्नवस्तु छे, तेम आ पण रत्नप्रभा पोताना भेदोवडे सहित अने शर्कराप्रभादि भेदोथी भिन्नछे माटे. तेओथी जुदी वस्तु छे–इत्यादि. 'वण्णेहिं' 'वर्णो वडे, शुक्लादि वर्णना विभाग वडे, अने तेओना ज अधिक अने ओछा संख्याता,

पदेसियं खंधं पासति, न जाणति । पन्नवणाए भगवईए तीसइमं पासणयापयं समत्तं ॥ ३० ॥

छे के केवली आ रत्नप्रभा पृथिवीने अनाकार वडे यावत् देखे छे, पण जाणतो नथी. ए प्रमाणे ईषत्प्राग्भारा पृथिवी, परमाणुपुद्गल, अने अनन्तप्रदेशिक स्कन्धने देखे छे पण जाणतो नथी.

प्रज्ञापना सूत्रना अनुवादमां त्रीसमुं पासणयापद समाप्त.

असंख्याता अने अनन्तगुणा विभाग वडे, वर्णनुं ग्रहण उपलक्षण-गन्धादिनुं सूचक छे, तेथी गन्ध, रस, अने स्पर्शना विभाग वडे जाणवुं. संस्थानो वडे' ते रत्नप्रभामां भवन अने नारकना संस्थानो छे. जेमके—'ते भवनो वहारना भागोमां वृत्त-गोळ अने अंदर चोखुणा छे, तथा नीचे कमळनी कर्णिकाना जेवी आकृतिवाळां छे. ते नरकावासो अंदर गोळ अने वहार चोखुणीआ छे, तथा नीचे क्षुरप्र—अस्त्राना जेवी आकृतिवाळां छे'—इत्यादि. 'पमाणेहिं'—प्रमाणो वडे, प्रमाण एटले 'अहे' इत्यादि परिमाण वडे,जेमके ते 'एक लाख अने एंशी हजार योजन प्रमाण जाडाइवाळा तथा लंबाइ अने पहोळाइमां एक राज प्रमाण छे, 'पडोयारेहिं' ति प्रत्यवतारो वडे प्रति-सर्वथा अवतीर्यते-व्याप्त थाय जेओ वडे ते प्रत्यवतार कहेवाय छे, ते अहीं घनोदधि वगेरेना वलयो जाणवा. ते वलयो सर्व दिशाओ अने विदिशाओमां आ रत्नप्रभाने वींटीने रहेला छे. 'जं समयं' इत्यादि. अहीं व्याप्ति होय त्यारे कालवाचक शब्दथी अधिकरणमां बीजी विभक्ति थाय छे. तेथी आ अर्थ थाय छे-जे समये आकारादि सहित रत्नप्रभा पृथिवीने जाणे छे ते समये केवल दर्शन वडे देखे छे एटले केवलदर्शननो विषय करे छे ? हवे भगवान् उत्तर आपे छे-हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ-युक्तियुक्त नथी ए भावार्थ छे. तेनुं तत्त्व-रहस्य नहि जाणनार, शिष्य प्रश्न करे छे—'से केणट्ठेणं भंते' ? इत्यादि 'हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो' इत्यादि. अहीं 'से' शब्द अथशब्दना अर्थमां छे, अने अथ शब्द प्रश्नार्थद्योतक छे. कया अर्थ-कारणथी हे भगवन् ! एम पूर्वे कह्या प्रमाणे कहो छो ? ते प्रकार बतावे छे—'केवली 'णं'-इत्यादि. भगवान् उत्तर कहे छे—'गौतम'-इत्यादि. आनो आ भावार्थ छे-अहीं ज्ञान वडे

जाणतो होय ते 'जानाति'–जाणे छे एम कहेवाय छे, अने दर्शन वडे जाणतो होय ते पश्यति–देखे छे एम कहेवाय छे. ते केवली भगवंतनुं ज्ञान साकार छे, जो एम न होय तो तेने ज्ञान न कही शकाय. विशेषोने ग्रहण करतो होय ते बोध ज्ञान कहेवाय छे, कारण के 'सविशेषं पुनर्ज्ञानं' विशेष सहित होय ते ज्ञान कहेवाय छे–एवुं शास्त्रनुं वचन छे. दर्शन अनाकार छे, कारण के 'निर्विशेषं विशेषाणां दर्शनमुच्यते' विशेषोने निर्विशेषपणे–सामान्य पणे जाणवा ते दर्शन–एवुं शास्त्रवचन छे. तेमां ज्ञान अने दर्शन जीवने तेवा प्रकारना स्वभावथी अंशतः उत्पन्न थता नथी, जेमके– केटलाएक प्रदेशोमां ज्ञान होय अने केटलाक प्रदेशोमां दर्शन होय एम नथी, परन्तु तथा स्वभावथी ज्यारे ज्ञान होय त्यारे सर्व प्रदेशोमां ज्ञान होय ज्यारे दर्शन होय त्यारे सर्व प्रदेशोमां दर्शनज होय. कारण के ज्ञान अने दर्शन साकार अने अनाकारपणे परस्पर विरुद्ध छे, जेमके छाया अने आतपनी पेठे एक बीजाना अभावमां तेनी स्थिति होय छे. तेथी जे समये जाणे छे ते समये देखता नथी, जे समये देखे छे ते समये जाणतो नथी. एज बाबत सूत्रकार कहे छे— 'से एएणट्ठेणं'–ए हेतुथी इत्यादि. एथी वादी सिद्धसेन दिवाकरे जे कह्युं छे के 'केवली भगवान् एक समये जाणे छे अने देखे छे' तेनुं पण खंडन करेलुं समजवुं. कारण के आ सूत्र वडे साक्षात् युक्तिपूर्वक ज्ञान अने दर्शनना उपयोगने क्रमशः व्यवस्थापित कर्यो छे. ए प्रमाणे शर्कराप्रभा, वालुकाप्रभा, पंकप्रभा, धूमप्रभा, तमःप्रभा अने तमस्तमःप्रभा, सौधर्म, ईशान, सनत्कुमार, माहेन्द्र, ब्रह्मलोक, लान्तक, शुक्र, सहस्रार, आनत, प्राणत, आरण, अच्युतकल्प, ग्रैवेयक विमान, अनुत्तर विमान, ईषत्प्राग्भारा पृथिवी, परमाणुपुद्गल, द्विप्रदेशिक स्कन्ध, यावत् अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध संबन्धी सूत्रोनो विचार करवो. जो ज्ञान अने दर्शननी साकार अने अनाकार रूपे जुदी ए प्रमाणे व्यवस्था करेली छे तो तेथी आ बाबत अर्थात् प्राप्त थाय छे के ज्यारे केवली भगवान् रत्नप्रभादिने आकारादिना अभावरूपे जाणे छे त्यारे ते 'देखे छे पण जाणता नथी.'—एम कहेवुं जोइए, अने ए सत्य छे, ते प्रमाणे सूत्रकार कहे छे—'केवली णं भंते ! इमं रयणप्पभं पुढविं अणागारेहिं अहेऊहिं'–केवली भगवान् आ रत्नप्रभा पृथिवीने 'अनाकारो वडे यावत् देखे छे पण जाणता नथी' इत्यादि सूत्र प्राये विचार करेलो होवाथी सुगम छे.

श्रीमद् आचार्य मलयगिरिविरचित प्रज्ञापना सूत्रनी टीकाना अनुवादमां त्रीशमुं पासणयापद समाप्त.

एगतीसइमं सण्णीपयं ।

१. जीवा णं भंते ! किं सण्णी, असण्णी, नोसण्णीनोअसण्णी ? गोयमा ! जीवा सण्णीवि असण्णीवि नो-सण्णीनोअसण्णीवि । नेरइयाणं पुच्छा । गोयमा ! नेरइया सण्णीवि असण्णीवि नो नोसण्णीनोअसण्णी । एवं असुरकुमारा जाव थणियकुमारा । पुढविकाइयाणं पुच्छा । गोयमा ! नो सण्णी, असण्णी, नो नोसण्णीनोअ-

---

एकत्रीशमुं संज्ञीपद.

१. हे भगवन् ! जीवो शुं संज्ञी, असंज्ञी के नोसंज्ञी–नोअसंज्ञी होय ? हे गौतम ! जीवो संज्ञी पण होय, असंज्ञी पण होय अने नोसंज्ञी–नोअसंज्ञी पण होय. नैरयिको संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! नैरयिको संज्ञी पण होय. अने असंज्ञी पण होय. पण नोसंज्ञी–नोअसंज्ञी न होय. ए प्रमाणे असुरकुमारो यावत् स्तनितकुमारो जाणवा. पृथिवीकायिको संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! तेओ संज्ञी नथी,

---

१. एम पश्यत्ता नामे त्रीशमुं पद कह्युं. हवे एकत्रीशमा पदनो प्रारंभ कराय छे. तेनो आ संबन्ध छे–गया पदमां ज्ञानना परिणाम विशेषनुं प्रतिपादन कर्युं अने अहीं परिणामना समानपणाथी गतिना परिणाम विशेषरूप संज्ञापरिणामनुं प्रतिपादन कराय छे. तेमां आ प्रथम सूत्र छे—'जीवाणं भंते ! किं सण्णी' इत्यादि. 'हे भगवन् ! जीवो शुं संज्ञी, असंज्ञी के नोसंज्ञीनोअसंज्ञी छे' ? इत्यादि. संज्ञा–पदार्थना भूत, वर्तमान अने भावी स्वभावनो विचार करवो. ते संज्ञा जेओने छे ते संज्ञी कहेवाय छे एटले विशिष्ट स्मरणादि रूप मनना ज्ञानवाळा संज्ञी जाणवा. उपर कहेला मनोविज्ञान रहित असंज्ञी समजवा. तेओ एकेन्द्रिय, विकलेन्द्रिय अने संमूर्छिम पंचेन्द्रिय होय छे. अथवा 'संज्ञायतेऽनया' जे वडे पूर्वे जाणेलो, वर्तमान अने भावी पदार्थ सम्यक् जणाय–विचाराय ते संज्ञा एटले विशिष्ट मनोवृत्ति, ते जेओने होय ते संज्ञी–मनसहित कहेवाय छे. तेथी विपरीत असंज्ञी एटले मनरहित जाणवा. तेओ हमणांज कहेला एकेन्द्रि-

सण्णी। एवं वेइंदियतेइंदियचउरिंदियावि, मणूसा जहा जीवा, पंचिंदियतिरिक्खजोणिया वाणमंतरा य जहा नेरइया, जोतिसियवेमाणिया सण्णी, नो असण्णी, नो नोसण्णीनोअसण्णी। सिद्धाणं पुच्छा। गोयमा! नो सण्णी, नो असण्णी, नोसण्णिनोअसण्णी। नेरइयतिरियमणुया य वणयरगसुरा इ सण्णीऽसण्णी य। विगलिंदिया असण्णी जोतिसवेमाणिया सण्णी ॥

पण्णवणाए भगवईए इगतीसइमं सण्णीपयं समत्तं।

असंज्ञी छे, अने नोसंज्ञी–नोअसंज्ञी नथी. ए प्रमाणे बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रियो पण जाणवा. मनुष्यो जीवोनी पेठे जाणवा. पंचेन्द्रिय तिर्यञ्चो अने व्यन्तरो नैरयिकनी जेम समजवा. ज्योतिषिक अने वैमानिको संज्ञी छे, असंज्ञी नथी, तेम नोसंज्ञी–नोअसंज्ञी नथी. सिद्धो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम! तेओ संज्ञी नथी, असंज्ञी नथी, पण नोसंज्ञी–नोअसंज्ञी छे. "नारक, तिर्यञ्च, मनुष्यो, व्यन्तर अने असुरादि संज्ञी अने असंज्ञी छे. विकलेन्द्रियो असंज्ञी छे. ज्योतिषिक अने वैमानिको संज्ञी छे.

प्रज्ञापना सूत्रना अनुवादमां एकत्रीशमुं संज्ञीपद समाप्त.

यादि जाणवा. कारण के एकेन्द्रियोने प्रायः सर्वथा मनोवृत्तिनो अभाव छे. बेइन्द्रियादिने विशिष्ट मनोवृत्ति नथी. कारण के ते बेइन्द्रियादि वर्तमान काळवर्ती शब्दादि अर्थने शब्दादि रूपे जाणे छे, भूत अने भावी अर्थने जाणता नथी. केवलज्ञानी अने सिद्ध संज्ञी नथी, तेम असंज्ञी नथी. संज्ञी अने असंज्ञी–बन्नेना प्रतिषेधनो विषय छे. यद्यपि केवलज्ञानीने मनोद्रव्यनो संबन्ध छे, परन्तु मनोद्रव्य वडे ते भूत, वर्तमान अने भावी पदार्थना स्वभावनो विचार करता नथी. परन्तु तेओने बधा ज्ञानावरण अने दर्शनावरणनो क्षय थयेलो होवाथी पर्यालोचन सिवायज केवल ज्ञान अने केवल दर्शन वडे साक्षात् सर्व वस्तुने जाणे छे अने देखे छे. तेथी ते संज्ञी नथी, तेम असंज्ञी

पण नथी. पण सर्व कालावच्छेदेन-सर्वकाळ वर्ती सर्व द्रव्य अने पर्यायना समूहने प्रत्यक्ष करवामां समर्थ ज्ञान वडे सहित छे. सिद्ध पण संज्ञी नथी, कारण के तेने द्रव्य मननो पण अभाव छे, तेम असंज्ञी पण नथी, कारण के ते सर्वज्ञ छे. तेथी ए प्रमाणे सामान्यपणे जीव-पदमां संज्ञी, असंज्ञी अने नोसंज्ञी-नोअसंज्ञी होय छे. भगवान् तेज प्रकारे समाधान करे छे—'हे गौतम' इत्यादि. जीवो संज्ञी पण होय छे, कारण नैरयिकादि संज्ञी होय छे, जीवो असंज्ञी पण छे, कारण के पृथिव्यादि असंज्ञी होय छे. अने नोसंज्ञी-नोअसंज्ञी पण होय छे. कारण के सिद्ध अने केवली नोसंज्ञी-नोअसंज्ञी होय छे.

हवे पओनो चोवीश दंडकोना क्रमथी विचार करे छे—'नेरइया णं' इत्यादि. नैरयिको संबन्धी पृच्छा. अहीं जे नैरयिको संज्ञीथी आवी उत्पन्न थाय छे ते संज्ञी कहेवाय छे अने बीजा असंज्ञी कहेवाय छे. नैरयिकोने चारित्र नहि होवाथी केवलीपणुं होतुं नथी, तेथी कह्युं छे के-नैरयिको संज्ञी पण होय छे, असंज्ञी पण होय छे, पण नोसंज्ञी-नोअसंज्ञी होता नथी. ए प्रमाणे असुरकुमारथी आरंभी स्तनितकुमार सुधीना भवनपति देवो कहेवा. कारण के तेओ असंज्ञीथी पण आवी उत्पन्न थाय छे, अने तेओने केवलीपणानो अभाव छे. 'मणूसा जहा जीवा' मनुष्यो जेम पूर्वे जीवो कह्या तेम कहेवा. एटले तेओ संज्ञी पण, असंज्ञी पण अने नोसंज्ञी-नोअसंज्ञी पण कहेवा. तेमां जेओ गर्भज छे तेओ संज्ञी छे. संमूर्छिमो असंज्ञी छे अने केवली नोसंज्ञी-नोअसंज्ञी छे. 'पंचिंदियतिरिक्खजोणियवाणमंतरा जहा नेरइया' पंचेन्द्रिय तिर्यंचो अने व्यन्तरो जेम नैरयिको कह्या तेम कहेवा. अर्थात् तेओ संज्ञी पण होय छे अने असंज्ञी पण होय छे पण नोसंज्ञी-नोअसंज्ञी होता नथी. तेमां संमूर्छिम पंचेन्द्रिय तिर्यंचो असंज्ञी छे अने गर्भज संज्ञी छे. व्यन्तरो असंज्ञीथी उत्पन्न थयेला असंज्ञी अने संज्ञीथी उत्पन्न थयेला संज्ञी जाणवा.बन्ने पण चारित्रना अभावथी नोसंज्ञी-नोअसंज्ञी नथी.ज्योतिषिक अने वैमानिको संज्ञीज होय छे. पण

असंज्ञी होता नथी, कारण के ते असंज्ञीथी आवी उत्पन्न थता नथी. तेम तेओने चारित्र नहि होवाथी नोसंज्ञी-नोअसंज्ञी नथी. सिद्धो पूर्वे कहेली युक्तिथी संज्ञी नथी, असंज्ञी नथी, परंतु नोसंज्ञीनोअसंज्ञी छे. आ संबन्धे सुखपूर्वक बोध थवा माटे संग्रहणी गाथा कहे छे—'नेरइय' इत्यादि. नैरयिको, तिर्यंच पंचेन्द्रियो, मनुष्यो, वनचरो-व्यन्तरो अने असुरादि-समस्त भवनपतिओ प्रत्येक संज्ञी अने असंज्ञी कहेवा. अने एओनो हमणांज विचार कर्यो छे. विकलेन्द्रियो-एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रिय असंज्ञी होय छे अने ज्योतिषिको अने वैमानिको संज्ञी होय छे.

श्रीमद् आचार्य मलयगिरिविरचित प्रज्ञापना सूत्रनी टीकाना अनुवादमां एकत्रीशमुं संज्ञी पद समाप्त.

बत्तीसइमं संजयपयं ।

१. जीवा णं भंते ! किं संजया, असंजया, संजयासंजया, नोसंजया–नोअसंजया–नोसंजयासंजया ? गोयमा ! जीवा संजयावि १, असंजयावि २, संजयासंजयावि ३, नोसंजयानोअसंजयानोसंजयासंजयावि ४ । नेरइया णं भंते ! पुच्छा । गोयमा ! नेरइया नो संजया, असंजया, नो संजयासंजया, नो नोसंजयनोअसंजयनोसंजयासंजया । एवं जाव चउरिंदिया । पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा । गोयमा ! पंचिंदियतिरिक्खजोणिता

बत्रीशमुं संयत पद.

१. हे भगवन् ! जीवो शुं संयत, असंयत, संयतासंयत के नोसंयत–नोअसंयत–नोसंयतासंयत छे ? हे गौतम ! जीवो संयत पण छे, असंयत पण छे, संयतासंयत पण छे अने नोसंयत–नोअसंयत–नोसंयतासंयत पण छे. हे भगवन् ! नैरयिको–इत्यादि प्रश्न. हे गौतम ! नैरयिको संयत नथी, असंयत छे, संयतासंयत नथी, तेम नोसंयत–नोअसंयत–नोसंयतासंयत पण नथी. ए प्रमाणे यावत् चउरिन्द्रियो सुधी जाणवुं. पंचेन्द्रिय तिर्यंचो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! पंचेन्द्रिय तिर्यंचो संयत नथी, असंयत छे, संयता-

१. ए प्रमाणे एकत्रीशमुं पद कह्युं, हवे बत्रीशमा पदनो प्रारंभ कराय छे. तेनो आ संबन्ध छे-पूर्वना पदमां संज्ञी जीवोनो परिणाम कह्यो अने अहीं चारित्रना परिणाम विशेष संयमनुं प्रतिपादन कराय छे. संयम ए निरवद्य–पापरहित योगनी प्रवृत्ति अने पापसहित योगनी निवृत्ति रूप छे, तेमां आ प्रथम सूत्र छे—'जीवाणं भंते'!—इत्यादि. 'संयच्छन्ति स्म' सर्व सावद्य योगोथी सम्यक्रूपणे निवृत्त थयेल। होय, अर्थात् चारित्रपरिणामनी वृद्धिना कारणभूत निरवद्य योगोमां प्रवर्तता होय ते संयत. (अहीं अकर्मक धातुथी

नो संजता, असंजताचि, संजतासंजताचि, नो नोसंजतनोअसंजतनोसंजतासंजताचि । मणुस्साणं पुच्छा । गोयमा ! मणूसा संजताचि असंजताचि संजतासंजताचि, नो नोसंजतनोअसंजतनोसंजतासंजता । वाणमंतरजोतिसियवेमाणिया जहा नेरइया । सिद्धा णं पुच्छा । गोयमा ! सिद्धा नो संजता १, नो असंजता २, नो संजतासंजता ३, नोसंजतनोअसंजतनोसंजतासंजता ४ । गाहा–

संयत छे, पण नोसंयत–नोअसंयत–नोसंयतासंयत नथी. मनुष्यो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! मनुष्यो संयत पण छे, असंयत पण छे, संयतासंयत पण छे, पण नोसंयत–नोअसंयत–नोसंयतासंयत नथी. व्यन्तर, ज्योतिषिक अने वैमानिको नैरयिकोनी जेम जाणवा. सिद्धो संबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! सिद्धो संयत नथी, असंयत नथी, संयतासंयत नथी, पण नोसंयत–नोअसंयत–नोसंयतासंयत छे.

कर्ताना अर्थमां 'त' प्रत्यय थयेलो छे) एटले हिंसादि पापस्थानोथी निवृत्त थयेला होय ते संयत, तेथी विपरित असंयत, हिंसादिना अंशथी निवृत्त थयेला संयतासंयत अने जेओए त्रणेनो प्रतिषेध करेलो होय ते सिद्धो जाणवा. सिद्धो संयतादि त्रणे पर्यायथी निवृत्त थयेला छे एम शाथी जाणवुं ? तेनो उत्तर आ प्रमाणे छे–संयम निरवद्य योगनी प्रवृत्ति अने सावद्य योगनी निवृत्ति रूप छे, तेथी संयतादि पर्याय योगने आश्रित छे अने सिद्ध भगवंतो योगथी रहित छे, कारण के तेओने शरीर अने मननो अभाव छे ते माटे संयतादि त्रणे अवस्थाथी निवृत्त थयेला छे. एम सामान्यपणे जीवपदमां संयतादि चारे अवस्था घटे छे, तेम सूत्रकार कहे छे—हे गौतम ! जीवो संयत पण छे, कारण के साधुओ संयत छे. असंयत पण छे, कारण के नारको वगेरे असंयत छे, संयतासंयत पण छे कारण के पंचेन्द्रिय तिर्यंचो अने मनुष्योने अंशथी संयम होय छे. तथा नोसंयत–नोअसंयत–नोसंयतासंयत पण होय छे, कारण के सिद्धोने त्रणेनो पण प्रतिषेध छे. चोवीश दंडकना सूत्रो सुगम छे. अहीं संग्रहणी गाथा कहे छे–'संयत' इत्यादि. संयत, असंयत अने मिश्र–

"संजयअसंजयमीसगा य जीवा तहेव मणुया य। संजतरहिया तिरिया सेसा अस्संजता होंति"।

पन्नवणाए भगवईए बत्तीसइमं संजयपयं समत्तं।

गाथा—जीवो तेमज मनुष्यो संयत, असंयत अने मिश्र-संयतासंयत होय छे. तिर्यंचो संयमरहित छे अने बाकीना जीवो असंयत छे.

प्रज्ञापना भगवतीना अनुवादमां बत्रीशमुं संयतपद समाप्त.

संयतासंयत जीवो तेमज मनुष्यो होय छे. तात्पर्य ए छे के जीवपद अने मनुष्यपदमां संयतादि त्रणे पदो घटे छे, पण नथी घटता एम नथी, ए तात्पर्यने जणावनार आ सूत्र छे. परन्तु अन्य पदनो निषेध करतुं नथी, जो एम न होय तो जीवपदमां संयतादि त्रणे अवस्थाना प्रतिषेध रूप चोथुं पद पण घटे छे, जे प्रकारे पूर्वे कह्युं छे. तथा संयतपद रहित उपलक्षणथी त्रणेना प्रतिषेध रहित पंचेन्द्रिय तिर्यंचो छे. (प्र०)-संयत पद रहित तिर्यंच पंचेन्द्रियो केम कहेवाय? कारण के तेओमां सर्वथा संयतपणुं घटे छे. जेम के—संयतपणुं निरवद्य योगनी प्रवृत्ति अने सावद्य योगनी निवृत्तिरूप छे अने तिर्यंचोने पण निरवद्य योगमां प्रवृत्ति अने सावद्य योगथी निवृत्ति संभवे छे. कारण के तेओ आयुषना छेल्ला काळे पण चार प्रकारना आहारनुं प्रत्याख्यान करी शुभ योगोमां वर्तता देखाय छे. वळी सिद्धान्तमां ते ते स्थळे तेओ पोताने विषे महाव्रतोनुं आरोपण करता संभळाय छे. कह्युं छे के-"तिरियाणं चारित्तं निवारितं तह य अह पुणो तेसिं। सुव्वइ बहुयाणं चिय महव्वयारोवणं समये"॥ तिर्यंचोने चारित्रनो निषेध कर्यो छे तो पण तेओमां घणाने सिद्धान्तमां महाव्रतोनुं आरोपण संभळाय छे. (उ०)—ते अयुक्त छे, कारण के सम्यक् प्रकारे वस्तुतत्त्वनुं ज्ञान नथी. अहीं संयतपणुं निरवद्ययोगनी प्रवृत्ति अने सावद्य योगनी निवृत्तिरूप आन्तर चारित्र परिणाम सहित जाणवुं, ते सिवायनुं नहि. जेओए चार प्रकारना आहारनुं प्रत्याख्यान करेलुं छे एवा अने महाव्रतोनुं आरोपण करता तेओने भवनिमित्ते चारित्रनो परिणाम थतो नथी, अने ते परिणाम तो अचिन्त्य चिन्तामणि समान मनुष्यभवमांज थाय छे, अने ते पण कर्मना क्षयोपशमथी थाय छे, बीजी रीते थतो नथी. माटे भगवंते आ मनुष्यभव अत्यंत दुर्लभ कह्यो छे.

(प्र०)—'ते प्रमाणे महाव्रतादिना आरोपणरूप चेष्टा करता तिर्यंचोने आन्तर चारित्रनो परिणाम नथी' एम शाथी जणाय ? (उ०)—तेओने केवलज्ञानादि नहि थवाथी एम जाणी शकाय छे. जो तिर्यंचोने पण चारित्र परिणाम संभवे तो कयांइक क्यारे कोइकने उत्कृष्ट भावथी मनःपर्यवज्ञान के केवलज्ञान पण थाय, कारण के ते बन्नेनुं कारण चारित्र छे. परन्तु तेम शास्त्रमां संभळातुं नथी, माटे जणाय छे के तेओने चारित्र परिणामनो संभव नथी. कह्युं छे के-" न महव्वयसब्भावेवि चरणपरिणामसंभवो तेसिं। न बहुगुणाणं पि जओ केवलसंभूइ परिणामो" ॥ "बहु गुणवाळा एवा तेओने महाव्रतनो सद्भाव छतां चारित्र परिणामनो संभव नथी. कारण के तेथी केवलज्ञाननी उत्पत्तिनो प्रसंग थाय." माटे चारित्र परिणामनो अभाव होवाथी तेओ संयत पद रहित छे. बाकीना संसारी जीवो असंयत-असंयतपद सहित छे, पण बाकीना पदसहित नथी.

श्रीमद् आचार्य मलयगिरिविरचित प्रज्ञापना टीकाना अनुवादमां बत्रीशमुं संयत पद समाप्त.



तेत्तीसइमं ओहिपयं ।

भेद[1]विसय[2]संठाणे[3] अब्भितर[4]बाहिरे[5] य देसोही[6] । ओहिस्स य खय[7]वुड्ढी[8] पडिवाई[9] चेव अपडिवाई[10] ।

तेत्रीशमुं अवधि पद.

अवधिज्ञानना भेद १, विषय २, संस्थान ३, अभ्यन्तरावधि ४, बाह्यावधि ५, देशावधि ६, क्षय-हीयमान अवधि ७, वृद्धि-वर्धमान अवधि ८, प्रतिपाती ९ अने अप्रतिपाती १० ए तेत्रीशमा पदमां दश द्वारो छे.

'भेय-विसय' इत्यादि. १ जेनो शब्दार्थ पूर्वे कह्यो छे ते अवधिज्ञाननो प्रथम भेद कहेवानो छे. २ ते पछी विषय, ३ ते पछी संस्थान-अवधिज्ञाने प्रकाशित करेला क्षेत्रना जे त्रापा वगेरेना आकार विशेषरूप छे, तेनुं कारण अवधिज्ञान होवाथी अवधिना संस्थान तरीके कहेवाय छे. तथा अवधिज्ञान बे प्रकारनुं छे-अभ्यन्तरावधि अने बाह्यावधि. ४ तेमां जे अवधि सर्व दिशामां पोताना विषयभूत क्षेत्रनो प्रकाश करे अने तेथी अवधिज्ञानीनी साथे निरंतर पोताना वडे प्रकाश करवा योग्य क्षेत्र संबंधवाळुं होय ते अभ्यन्तरावधि, ५ एथी विपरीत ते बाह्यावधि. अभ्यन्तरावधि बे प्रकारे छे. जेमके-अन्तगत अने मध्यगत. हवे अन्तगतनो शब्दार्थ शो छे? उत्तर-आ संबन्धे पूर्वाचार्योए त्रण अर्थ बतावेला छे-आत्मप्रदेशोने अन्ते रहेलुं अवधि ते अन्तगत अवधि. तात्पर्य ए छे के-अहीं उत्पन्न थतुं कोइ पण अवधिज्ञान स्पर्धकरूपे उत्पन्न थाय छे. स्पर्धक एटले गवाक्षना जाळीआ वगेरे द्वारा बहार नीकळेला दीवाना प्रकाशनी पेठे अवधिज्ञानना प्रकाशनो भाग विशेष. ते संबन्धे जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण स्वोपज्ञ भाष्यनी टीकामां कहे छे-"स्पर्द्धकमवधिविच्छेदविशेष" इति-स्पर्द्धक अवधिज्ञाननो भाग विशेष छे. ते स्पर्द्धको एक जीवने असंख्याता के संख्याता होय छे. कारण के मूलावश्यकनी प्रथम पीठिकामां कह्युं छे-"फड्डा य असंखेज्जा संखिज्जा या वि एग जीवस्स।"-स्पर्द्धको असंख्याता के संख्याता एक जीवने होय छे,

अने ते विचित्र स्वरूपवाळा होय छे. तेमांना कोइ पर्यन्तवर्ती आत्मप्रदेशोमां उत्पन्न थाय छे. तेमां पण केटलाक आगळना भागमां, केटलाक पृष्ठ भागमां, केटलाक अधो भागे, केटलाक उपरना भागमां अने केटलाक मध्यवर्ती आत्मप्रदेशोमां होय छे. ए प्रमाणे जे अवधिज्ञान उत्पन्न थाय छे ते आत्माना अन्त भागमां रहेलुं होवाथी 'अन्तगत' कहेवाय छे. कारण के अन्तमां रहेला ते आत्मप्रदेशो वडे साक्षात् अवबोध थाय छे. अथवा औदारिक शरीरना अन्ते रहेलुं अवधिज्ञान 'अन्तगत' अवधि कहेवाय छे. कारण के औदारिक शरीरनी अपेक्षाए एक दिशामां रहेला द्रव्योनो बोध थाय छे, आ पण स्पर्द्धकरूप अवधिज्ञान छे, अथवा बधाय आत्मप्रदेशोनो क्षयोपशम होवा छतां पण औदारिक शरीरना अन्ते कोइ पण एक दिशामां जेथी बोध थाय ते पण अन्तगत कहेवाय छे. (प्र०)-जो बधाय आत्मप्रदेशोनो क्षयोपशम होय तो चारे तरफ केम जोतो नथी? (उ०)--एक दिशामांज क्षयोपशमनो संभव छे. देशादिनी अपेक्षाए कर्मनो क्षयोपशम विचित्र होय छे तेथी बधाय आत्मप्रदेशोनो स्व सामग्रीना वशथी आवा प्रकारनोज क्षयोपशम थाय छे, जेथी औदारिक शरीरनी अपेक्षाए एक विवक्षित दिशामां देखे छे. ए संबन्धे नंदि सूत्रनी चूर्णिमां कह्युं छे "ओरालियसरीरंते ठियं गयं ति एगट्ठं, तं वा अप्पप्पसफड्डगावहिएगदिसोवलंभाओ अंतगयमोहिणाणं भन्नइ, अहवा सव्वप्पएसु सुद्धेसु वि ओरालियसरीरगंतेण एगदिसि पासणागयं ति अंतगयं ति भण्णइ" इति.--"औदारिक शरीरना अंते स्थित-गत ए एकार्थवाची छे, एटले रहेलुं, ते आत्मप्रदेशना स्पर्द्धक वडे मर्यादित एक दिशाने जाणे छे तेथी ते 'अन्तगत' कहेवाय छे, अथवा सर्व आत्मप्रदेशो विशुद्ध छतां औदारिकशरीरना अन्ते एक दिशाने जोवामां रहेलुं छे माटे अन्तगत कहेवाय छे. आ त्रीजो पक्ष छे. त्रीजो आ पक्ष छे-एक दिशामां रहेला ते अवधिज्ञान वडे जे क्षेत्र प्रकाशित थयेलुं छे ते क्षेत्रना अन्ते अवधि वर्ते छे, कारण के ते क्षेत्रना अन्ते अवधिज्ञानी रहेलो छे, तेथी अन्ते एटले एक दिशामां रहेला अवधिज्ञानना विषयभूत क्षेत्रने पर्यन्ते गत-रहेलुं छे माटे अन्तगत अवधि कहेवाय छे. अन्तगत अवधिज्ञान त्रण प्रकारे छे. जेमके-पुरतः अन्तगत, पृष्ठतः अन्तगत अने पार्श्वतः अन्तगत. तेमां जेम कोइ पुरुष हाथमां ग्रहण करेली अने आगळ चालती दीवी वडे आगळना भागनेज जुए छे, बीजे जोई शकतो नथी, ए प्रमाणे जे अवधिज्ञान वडे

तेवा प्रकारनो क्षयोपशम थवाथी आगळज संख्याता के असंख्याता योजन सुधी देखे छे, बीजे देखतो नथी ते 'पुरतः अन्तगत'
अवधि कहेवाय छे. तथा तेज पुरुष जेम पाछळ हाथमां ग्रहण करेली दीवी वडे पाछळना भागनेज देखे छे तेम जे अवधिज्ञान वडे
पाछळथीज संख्याता के असंख्याता योजन सुधी देखे छे ते 'पृष्ठतःअन्तगत अवधि कहेवाय छे. जे अवधिज्ञान वडे एक पडखे
अथवा बन्ने पडखे संख्याता के असंख्याता योजन सुधी देखे छे ते 'पार्श्वतःअन्तगत' अवधि कहेवाय छे. ए सबन्धे नन्दि अध्यन-
यनी चूर्णिमां कह्युं छे-" पुरओ अन्तगयणं पुरतो चेव संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा जोयणाई जाणइ पासइ, मग्गतोऽन्तगयणं ओहि-
नाणेणं मग्गतो चेव" इत्यादि.-पुरतः अन्तगत अवधिज्ञान वडे आगळ संख्याता के असंख्याता योजन सुधी जाणे छे अने देखे छे.
मार्गतः-पृष्ठतः अन्तगत अवधिज्ञान वडे पाछळ रहेला संख्याता के असंख्याता योजन सुधी जाणे देखे छे' इत्यादि. 'मध्यगत' अवधिनु
पण त्रण प्रकारे व्याख्यान छे-अहीं दंडादिना मध्य भागनी पेठे मध्य प्रसिद्ध छे. तेमां आत्मप्रदेशोना मध्य भागमां एटले मध्यवर्ती
आत्मप्रदेशोमां रहेल अवधि 'मध्यगत' कहेवाय छे. आ अवधिज्ञान स्पर्द्धकरूप छे अने सर्व दिशामां बोधनुं कारण मध्यवर्ती आत्म-
प्रदेशोनुं अवधिज्ञान जाणवुं. अथवा सर्व आत्मप्रदेशोनो क्षयोपशम होवा छतां पण औदारिक शरीरना मध्यभाग वडे ज्ञान थाय छे,
ते माटे मध्यमां रहेलुं होवाथी 'मध्यगत' अवधि कहेवाय छे. नन्दि अध्ययननी चूर्णिमां कह्युं छे के " ओरालियसरीरमज्झे फड्डगविसुद्धीओ
सव्वदिसोवलंभत्तणओ मज्झगतोत्ति भण्णइ" इति-औदारिक शरीरना मध्य भागमां स्पर्द्धकनी विशुद्धिथी अथवा सर्व आत्मप्रदेशोनी
विशुद्धिथी सर्व दिशामां ज्ञान थवाथी 'मध्यगत' अवधि कहेवाय छे." अथवा ते अवधि वडे जे क्षेत्र प्रकाशित छे, ते क्षेत्रनी सर्व
दिशाओमां मध्य भागने विषे रहेलुं ते मध्यगत अवधि कहेवाय छे, कारण के अवधिज्ञानी ते वडे प्रकाशित क्षेत्रना मध्य भागमां
रहेलो छे. ए संबन्धे नन्दिसूत्रना चूर्णिकार कहे छे-"अहवा उवलद्धिखेत्तस्स अवहिपुरिसो मज्झगतो त्ति अतो वा मज्झगतो ओही
भण्णइ" अथवा उपलब्धिना-ज्ञानना विषयभूत क्षेत्रना मध्य भागमां अवधिज्ञानी पुरुष होय छे माटे मध्यगत अवधि कहेवाय छे. आ
त्रणे व्याख्यानमां पण ज्यारे अवधिज्ञान वडे प्रकाशित क्षेत्रनो अवधिज्ञानी साथे संबन्ध होय छे त्यारे ते अभ्यन्तरावधि कहेवाय छे.

कारण ते सर्व दिशामां प्रकाशित क्षेत्रना मध्यभागमां रहेलो छे, आ भेद आ बाह्यावधिमां न ग्रहण करवो, कारणके तेनो अभ्यन्तरावधिमां अन्तर्भाव थाय छे. परन्तु ज्यारे अवधिज्ञान वडे प्रकाशित क्षेत्र वच्चे त्रुटित थयेलुं होवाथी अवधिज्ञानी साथे तेनो संबन्ध न होय त्यारे 'बाह्य अवधि' कहेवाय छे. आ भेद अहीं ग्रहण करवो, कारण के ते प्रस्तुत छे. तथा ते पछी 'देसोही' देशावधि कहेवानो छे, अने उपलक्षणथी तेना प्रतिपक्ष रूप सर्वावधि पण कहेवानो छे. हवे देशावधि अने सर्वावधिनुं शुं स्वरूप छे? तेनो उत्तर ए छे के अहीं अवधि त्रण प्रकारे छे. जेमके-सर्व जघन्य, मध्यम अने सर्वोत्कृष्ट. तेमां सर्व जघन्य अवधि छे ते द्रव्यथी तैजस अने भाषा वर्गणा वच्चे रहेला अनन्त द्रव्योने, क्षेत्रथी अंगुलना असंख्यातमा भाग प्रमाण क्षेत्रने, काळथी आवलिकाना असंख्यातमा भाग प्रमाण अतीत अने अनागत काळने जाणे छे. अहीं अवधि क्षेत्र अने काळने स्वरूपथी साक्षात् जाणतुं नथी, कारण के ते अमूर्त छे, अने अवधिनो विषय रूपी द्रव्यो छे. 'रूपिष्ववधेः' (अ. १. सू. २८) एवुं तत्त्वार्थनुं वचन छे. अहीं क्षेत्र अने काळनुं ज्ञान उपचारथी जाणवुं, तात्पर्य ए छे के एटला क्षेत्र अने काळमा रहेलां जे द्रव्यो छे तेने जाणे छे. भावथी अनन्त पर्यायोने जाणे छे. कारण के दरेक द्रव्यना जघन्य पदे पण रूप, रस, गन्ध अने स्पर्शरूप चार पर्यायोने जाणे छे. "दो पज्जवे दुगुणिए सव्वजहण्णे उ पिच्छए (ओही)। ते उ वन्नाइया चउरो" कारण के 'सर्व जघन्य अवधि क्रमणा बे पर्यायोने एटले वर्णादि चार पर्यायोने जाणे छे' एवुं शास्त्रवचन छे. अने द्रव्यो अनन्त छे. आथी उपर प्रदेशनी वृद्धि वडे, समयनी वृद्धि वडे अने पर्यायनी वृद्धि वडे वधतुं अवधिज्ञान मध्यम समजवुं. ते त्यां सुधी जाणवुं के यावत् सर्वोत्कृष्ट परमावधि न थाय. सर्वोत्कृष्ट परमावधि द्रव्यथी सर्व रूपी द्रव्योने जाणे छे, क्षेत्रथी अलोकमां लोकप्रमाण (असंख्याता) खंडोने जाणे छे. काळथी असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी रूप अतीत अने अनागत काळने जाणे छे अने भावथी अनन्त पर्यायोने जाणे छे, कारण के दरेक द्रव्यना संख्याता के असंख्याता पर्यायोने जाणे छे. केम के "एगं दव्वं पेच्छं खंधमणुं वा स पज्जवे तस्स। उक्कोसमसंखिज्जे संखेज्जे पेच्छए कोई॥" 'कोइक अवधिज्ञानी एक परमाणु के स्कन्धरूप द्रव्योने जोतो तेना उत्कृष्टथी संख्याता के असंख्याता पर्यायोने जुए छे.' एवुं शास्त्रवचन छे. तेमां सर्व जघन्य अने मध्यम अवधि देशावधि कहेवाय छे अने सर्वोत्कृष्ट अवधिने परमावधि के सर्वावधि कहेवाय छे.

१. कइविहा णं भंते ! ओही पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा ओही पन्नत्ता, तंजहा—भवपच्चइया य खओवस-

१. हे भगवन् ! केटला प्रकारे अवधिज्ञान कह्युं छे. हे गौतम ! अवधि बे प्रकारे कह्युं छे. जेम के—भवप्रत्ययिक अने क्षायोप-

तथा अवधिनी क्षय अने वृद्धि कहेवानी छे. तात्पर्य ए छे के हीयमान अने वर्धमान अवधिज्ञान कहेवानुं छे. तेमां तथाविध सामग्रीना अभावथी पूर्वे अवस्थाथी हानिने प्राप्त थतुं हीयमान अवधि कहेवाय छे. कह्युं छे के "हीयमाणयं पुव्वावत्थातो अहोऽहो हस्समाणं" ति—हीयमान अवधि पूर्वे अवस्थाथी नीचे नीचे घटतुं जाय छे, अने जेम अधिक अधिक इन्धनना नांखवा वगेरे वडे अग्निनी ज्वालानो समूह वधतो जाय तेम जे पूर्वावस्थाथी यथायोग्यपणे विशुद्ध विशुद्धतर अध्यवसाय थवाथी वधतुं जाय ते वर्धमान अवधि कहेवाय छे. तथा प्रतिपाती अने अप्रतिपाती, तथा च शब्द अनुक्त अर्थनो समुच्चय करनार होवाथी आनुगामिक अने अनानुगामिक अवधि पण कहेवा योग्य छे. तेमां पडवाना स्वभाववाळुं होय ते प्रतिपाती. जे अवधि उत्पन्न थइ क्षयोपशमने योग्य केटलाक काळ सुधी रहीने प्रदीपनी पेठे सर्वथा नाश पामे ते प्रतिपाती कहेवाय छे. (प्र०)—हीयमान अने प्रतिपातीमां शो भेद छे ? (उ०)—पूर्वावस्थाथी नीचे नीचे हानि पामतुं होय ते हीयमान अवधि कहेवाय छे अने एक काळे निर्मूळ नाश पामे ते प्रतिपाती कहेवाय छे. जे पडे नहिं ते अप्रतिपाती, जे केवळ ज्ञान सुधी के मरण पर्यन्त नाश न पामे ते अप्रतिपाती. तथा गमन करनार पुरुषने जे आ—समंतात्—सर्वथा अनुसरे ते आनुगामिक. अहीं स्वार्थमां 'क' प्रत्यय थयो छे. अथवा अनुगम—अनुसरवुं ए जेनुं प्रयोजन छे ते आनुगामिक. जे लोचननी पेठे जनारा पुरुषने अनुसरे, साथे जाय ते आनुगामिक अवधि कहेवाय छे ए भावार्थ छे. जे आनुगामिक नथी ते अनानुगामिक. सांकळथी बांधेला दीवानी पेठे जे गमन करनार पुरुषने अनुसरतुं नथी ए भावार्थ छे. ए प्रमाणे अधिकारनुं प्रतिपादन करवा माटे द्वार गाथा कही छे.

१. हवे "यथोद्देशं निर्देशः" 'उद्देशना क्रम प्रमाणे निर्देश थाय छे' ए न्यायने अनुसरी प्रथमथी अवधिना भेदनुं प्रतिपादन करवा माटे

मिया य, दोण्हं भवपच्चइया, तंजहा–देवाण य नेरइयाण य, दोण्हं खओवसमिया, तंजहा–मणूसाणं पंचिंदियतिरिक्खजोणियाण य।

शमिक. बेने भवप्रत्ययिक अवधि छे. ते आ प्रमाणे–देवो अने नारकोने, अने बेने क्षायोपशमिक अवधि छे. जेम के–मनुष्यो अने पंचेन्द्रिय तिर्यंचोने.

सूत्रकार कहे छे—'कइविहा णं भंते !' हे भगवन् ! अवधि केटला प्रकारे कह्युं छे –इत्यादि. सूत्रमां स्त्रीलिंगनो निर्देश प्राकृत होवाथी कर्यो छे. भगवान् उत्तर कहे छे–हे गौतम ! बे प्रकारे अवधिज्ञान कह्युं छे. जेमके 'भवपच्चइया य खओवसमिया य' भवप्रत्ययिक अने क्षायोपशमिक. 'भवन्ति अस्मिन्'–जेमां कर्मने वश वर्ती प्राणीओ उत्पन्न थाय छे ते भव–नारकादिनो जन्म. अधिकरणमां 'अ' प्रत्यय थयो छे. भव एज प्रत्यय कारण जेनुं छे ते भवप्रत्यय. अहीं प्रत्यय शब्द कारणवाची छे. "प्रत्ययः शपथज्ञानहेतुविश्वासनिश्चये" प्रत्यय शब्द शपथ, ज्ञान, हेतु, विश्वास अने निश्चय अर्थमां छे. तेने स्वार्थिक क प्रत्यय थवाथी भवप्रत्ययक थाय छे. तथा अवधिज्ञानावरणीय कर्मना उदयावलिकामां रहेला अंशना वेदवा वडे नाश थवो ते क्षय अने अनुदय अवस्थामां रहेला कर्मना विपाकोदयने रोकवो ते उपशम. क्षय अने उपशम वडे थयेलो ते क्षायोपशमिक कहेवाय छे. च शब्दो पोतामांना अनेक भेदोना सूचक छे. तेमां जे अवधि जेओने होय ते तेओने बतावे छे—'दोण्हं' इत्यादि. बे प्रकारना जीवोने भवप्रत्यय अवधि होय छे. जेमके देवो अने नारकोने. देवो भवनपति, व्यन्तर, ज्योतिष्क अने वैमानिकना भेदथी चार प्रकारना छे. नारको रत्नप्रभादि पृथिवीना भेदथी सात प्रकारना छे. च शब्द प्रत्येकना स्वगत अनेक भेदोनो सूचक छे. ते अनेक भेदोने सूत्रकार विषय अने संस्थानना विचारमां स्वयमेव बतावशे. (प्र०)—अवधिज्ञान क्षायोपशमिक भावमां छे, अने नारकादि भव औदयिक भावमां वर्ते छे, तो देवादिने भवप्रत्यय अवधिज्ञान केम

२. नेरइया णं भंते ! केवइयं खेत्तं ओहिणा जाणंति पासंति ? गोयमा ! जहन्नेणं अद्धगाउयं, उक्कोसेणं चत्तारि गाउयाइं ओहिणा जाणंति पासंति । रयणप्पभापुढविनेरइया णं भंते ! केवतियं खेत्तं ओहिणा जाणंति [illegible]

२. हे भगवन् ! नैरयिको केटला क्षेत्रने अवधिज्ञान वडे जाणे अने देखे ? हे गौतम ! जघन्यथी अरधो गाउ अने उत्कृष्ट चार गाउ प्रमाण क्षेत्रने जाणे छे अने देखे छे. हे भगवन् ! रत्नप्रभा पृथिवीना नैरयिको अवधिज्ञान वडे केटलुं क्षेत्र जाणे अने [illegible]

कहेवाय ? (उ०)—अहीं दोष नथी. कारण के भवप्रत्यय अवधिज्ञान छे ते पण परमार्थथी क्षायोपशमिकज छे. परन्तु ते क्षयोपशम देव अने नारकोना भवमां पक्षीओने आकाशमां गमन करवानी लब्धिनी पेठे अवश्य होय छे, माटे 'भवप्रत्यय' पण कहेवाय छे. आ संबन्धे नन्दिअध्ययनना चूर्णिकार कहे छे के "ननु ओही खओवसमिओ [illegible] उच्यते, सो वि खओवसमिओ [illegible]" [illegible] क्षायोपशमिक छे [illegible] ते पण क्षायोपशमिकज छे. परन्तु ते क्षयोपशम देव अने नारकोना भवमां अवश्य होय छे. [illegible] पक्षीओने आकाशगमननी पेठे. तेथी भवप्रत्ययिक कहेवाय छे. [illegible] क्षायोपशमिक [illegible] होय छे. [illegible] तिर्यंचोने [illegible] नथी, तेथी क्षायोपशमिक [illegible] छे. [illegible] क्षायोपशमिकज छे.

५. ए प्रमाणे अवधिज्ञाननो [illegible] 'केवइया णं' इत्यादि. हे भगवन् !

पासंति ? गोयमा ! जहन्नेणं अद्धुट्ठाइं गाउयाइं, उक्कोसेणं चत्तारि गाउयाइं ओहिणा जाणंति पासंति। स-क्करप्पभापुढविनेरइया जहन्नेणं तिण्णि गाउयाइं, उक्कोसेणं अद्धुट्ठाइं गाउयाइं ओहिणा जाणंति पासंति। वालुयप्पभापुढविनेरइया जहन्नेणं अड्ढाइज्जाइं गाउयाइं, उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं ओहिणा जाणंति पासंति पंकप्पभापुढविनेरइया जहन्नेणं दोण्णि गाउयाइं, उक्कोसेणं अड्ढाइज्जाइं गाउयाइं ओहिणा जाणंति पासंति। धूमप्पभापुढविनेरइया जहन्नेणं दिवड्ढं गाउयाइं, उक्कोसेणं दो गाउयाइं ओहिणा जाणंति पासंति। तमापुढ-

देखे ? हे गौतम ! जघन्य साडा त्रण गाउ अने उत्कृष्ट चार गाउ प्रमाण क्षेत्रने जाणे छे अने देखे छे. शर्कराप्रभाना नैरयिको जघन्य त्रण गाउ अने उत्कृष्ट साडा त्रण गाउ अवधिज्ञान वडे जाणे छे अने देखे छे. वालुकाप्रभाना नैरयिको जघन्य अढी गाउ अने उत्कृष्ट त्रण गाउ अवधिज्ञान वडे जाणे छे अने देखे छे. पंकप्रभापृथिवीना नैरयिको जघन्य बे गाउ अने उत्कृष्ट अढी गाउ अवधिज्ञान वडे जाणे छे अने देखे छे. धूमप्रभा पृथिवीना नैरयिको जघन्य दोढ गाउ अने उत्कृष्ट बे गाउ अवधिज्ञान वडे जाणे छे

नैरयिको केटलुं क्षेत्र अवधिज्ञान वडे जाणे छे? इत्यादि सुगम छे. परन्तु सातमी नरकपृथिवीमां जघन्य पदनी अपेक्षाए जघन्य अवधि-ज्ञान अरधो गाउ छे अने रत्नप्रभामां उत्कृष्ट पदने आश्रयी उत्कृष्ट अवधिज्ञान चार गाउनुं छे. हवे दरेक नरकपृथिवीमां नैरयिकोना अवधिज्ञानना विषयनो विचार करे छे—'रयणप्पभ' इत्यादि. हे भगवन् ! रत्नप्रभा पृथिवीना नैरयिको अवधिज्ञान वडे केटलुं क्षेत्र जाणे ? इत्यादि सुगम छे. जघन्यपद अने उत्कृष्टपदना विषयने संग्रह करनारी आ बे गाथाओ छे—"१ अद्धुट्ठ २ तिन्नि ३ अड्ढा-इयाइं ४ दोन्नि ५-६ दिवड्ढमेगं च। ७ अद्धं च गाउ कमसो जहन्नतो रयणमाईसुं ॥१॥ चत्तारि गाउयाइं २ अद्धुट्ठाइं ३ तिगाउयं चेव। ४ अड्ढाइज्जा ५ दोण्णि ६-७ दिवड्ढमेगं च नरएसुं॥" रत्नप्रभादि नरकपृथिवीने विषे जघन्य अवधिज्ञान अनुक्रमे १ साडात्रण गाउ,

...पासंति। अधेसत्तमाए पुच्छा। गोयमा!
विनेरइया जहन्नेण गाउयं, उक्कोसेणं दिवड्ढं गाउयं ओहिणा जाणन्ति पासंति।
जहन्नेणं अद्धं गाउयं, उक्कोसेणं गाउयं ओहिणा जाणंति पासंति।

३. असुरकुमारा णं भंते! ओहिणा केवइयं खेत्तं जाणंति पासंति? गोयमा! जहन्नेणं पणवीसं जोअणाइं,
उक्कोसेणं असंखेज्जे दीवसमुद्दे ओहिणा जाणंति पासंति। नागकुमारा णं जहन्नेणं पणवीसं जोअणाइं, उक्को-
सेणं संखेज्जे दीवसमुद्दे ओहिणा जाणंति पासंति, एवं जाव थणियकुमारा। पंचिंदियतिरिक्खजोणिया णं भंते!

...अवधिज्ञान वडे जाणे छे अने देखे छे. नीचेनी
अने देखे छे. तमःप्रभापृथिवीना नैरयिको जघन्य गाउ अने उत्कृष्ट दोढ गाउ अवधिज्ञानवडे जाणे छे अने देखे छे.
सातमी नरकपृथिवी संबन्धे पृच्छा. हे गौतम! जघन्य अर्ध गाउ अने उत्कृष्ट एक गाउ अवधिज्ञानवडे जाणे छे अने देखे छे.

३. हे भगवन्! असुरकुमारो अवधिज्ञानवडे केटलुं क्षेत्र जाणे अने देखे? हे गौतम! जघन्य पचीश योजन, अने उत्कृष्ट
असंख्याता द्वीप–समुद्रोने अवधिज्ञान वडे जाणे छे अने देखे छे. नागकुमारो जघन्य पचीश योजन अने उत्कृष्ट संख्याता द्वीप–
समुद्रोने अवधिज्ञान वडे जाणे छे अने देखे छे. ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं. हे भगवन्! पंचेन्द्रिय तिर्यंचो केटलुं

...अर्ध गाउप्रमाण क्षेत्र छे. अने उत्कृष्ट १ चार गाउ, २ साडा-
त्रण गाउ, ३ त्रण गाउ, ४ अढी गाउ, ५ बे गाउ, ६ दोढ गाउ अने ७ एक गाउ प्रमाण छे.

३-४. भवनपति अने व्यन्तरोने अवधिनो जघन्य पदे जे पचीश योजन प्रमाण विषय छे ते जेओनी सौथी जघन्य स्थिति दस हजार वर-
सनी छे तेओनी अपेक्षाए जाणवो. बाकीनानी अपेक्षाए न समजवो. आ संबन्धे भाष्यकार कहे छे–"पणवीस जोयणाइं दसवाससहस्स-

केवइयं खेत्तं ओहिणा जाणंति पासंति ? गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, उक्कोसेणं असंखेज्जे दीवसमुद्दे । मणूसा णं भंते ! ओहिणा केवतितं खेत्तं जाणंति पासंति ? गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, उक्कोसेणं असंखेज्जाइं अलोए लोयप्पमाणमेत्ताइं खंडाइं ओहिणा जाणंति पासंति । वाणमंतरा जहा नागकुमारा ।

क्षेत्र अवधिज्ञानवडे जाणे अने देखे ? हे गौतम ! जघन्य आंगळनो असंख्यातमो भाग अने उत्कृष्ट असंख्याता द्वीप–समुद्रो जाणे छे अने देखे छे. हे भगवन् ! मनुष्यो अवधिज्ञान वडे केटलुं क्षेत्र जाणे अने देखे ? हे गौतम ! जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग अने उत्कृष्ट अलोकमां लोकप्रमाणमात्र असंख्याता खंडोने अवधि वडे जाणे छे अने देखे छे. व्यन्तरो नागकुमारनी पेठे जाणवा.

हस्सिया ठिई जेसिं" इति–जेओनी दस हजार वरसनी स्थिति छे तेओना अवधिज्ञाननो विषय पचीश योजन प्रमाण छे." मनुष्यना विचारमां उत्कृष्ट पदे जे अलोकमां लोक प्रमाण असंख्याता खंडोने जाणे छे ते परमावधिनी अपेक्षाए जाणवुं, कारण के तेनोज एटलो विषय होय छे. आ तो सामर्थ्य मात्रनुं वर्णन छे. जो एटला क्षेत्रमां तेने जोवा लायक विषय होय तो ते जुए परन्तु नथी, कारण के अलोकमां रूपी द्रव्योनो असंभव छे अने अवधिज्ञाननो विषय रूपी द्रव्य छे. केवळ आ विशेष छे. ज्यां सुधी हजी पण संपूर्ण लोकने जुए त्यां सुधी अहीं स्कंधोने ज देखे छे, ज्यारे अवधि अलोकमां पण प्रसरे छे त्यारे जेम जेम वधे छे तेम तेम लोकमां सूक्ष्म अने सूक्ष्मतर स्कन्धो देखे छे, छेवटे परमाणुने पण देखे छे. कह्युं छे के–" सामत्थमेत्तमुत्तं दट्ठव्वं जइ हवेज्ज पेच्छेज्जा । न उ तं तत्थत्थि जओ सो रूविनिबंधणो भणिओ ॥ १ ॥ वड्ढंतो पुण बाहिं लोगत्थं चेव पासइ दव्वं । सुहुमयरं सुहुमयरं परमोही जाव

४. जोइसिया णं भंते ! केवतितं खेत्तं ओहिणा जाणंति पासंति ? गोयमा ! जहन्नेणं संखेज्जे दीवसमुद्दे, उक्कोसेणवि संखेज्जे दीवसमुद्दे । सोहम्मगदेवा णं भंते ! केवतितं खेत्तं ओहिणा जाणंति पासंति ? गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, उक्कोसेणं अहे जाव इमीसे रयणप्पभाए हिट्ठिल्ले चरमंते, तिरियं जाव असंखिज्जे दीवसमुद्दे, उड्ढं जाव सगाइं विमाणाइं ओहिणा जाणंति पासंति, एवं ईसाणगदेवावि । सणंकुमारदेवावि एवं चेव, नवरं जाव अहे दोचाए सक्करप्पभाए पुढवीए हिट्ठिल्ले चरमंते, एवं माहिंददेवावि । बंभ-

४. हे भगवन् ! ज्योतिषिको केटलुं क्षेत्र अवधिज्ञानवडे जाणे अने देखे ? हे गौतम ! जघन्य संख्याता द्वीप–समुद्रो अने उत्कृष्ट पण संख्याता द्वीप–समुद्रोने जाणे अने देखे. हे भगवन् ! सौधर्म देवो केटलुं क्षेत्र अवधिवडे जाणे अने देखे ? हे गौतम ! जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग अने उत्कृष्ट नीचे यावत् आ रत्नप्रभाना चरम भागने, तीरछुं असंख्याता द्वीसमुद्र पर्यन्त अनेऊर्ध्व–उपर पोतपोताना विमानो सुधी अवधिज्ञान वडे जाणे छे अने देखे छे. एम ईशानदेवो पण जाणवा. सनत्कुमार देवो पण एमज समजवा, परन्तु नीचे बीजी शर्कराप्रभा पृथिवीना नीचेना चरमभाग सुधी जाणे अने देखे. एम माहेन्द्र देवो पण जाणवा. ब्रह्मलोक

परमाणुं ॥ २ ॥ " आ सामर्थ्यमात्र कह्युं छे. जो अलोकमां देखवा लायक होय तो देखे, पण तेने देखवा लायक द्रव्य त्यां नथी. कारण के तेनो विषय रूपी द्रव्य कह्यो छे. लोकनी बहार वधतुं अवधिज्ञान लोकमां रहेला सूक्ष्म अने सूक्ष्मतर द्रव्यने यावत् परमावधि परमाणुने देखे छे. आवा प्रकारना परमावधि वडे युक्त अवश्य अन्तर्मुहूर्तमां केवलज्ञानरूप लक्ष्मी प्राप्त करे छे. जे माटे कह्युं छे के "परमोहीनाणविऊ केवलमंतोमुहुत्तमित्तेणं । "परमावधिज्ञानवाळो अन्तर्मुहूर्त मात्रमां केवलज्ञान प्राप्त करे छे." (प्र०)—वैमानिकोने

लोयलंतगदेवा तच्चाए पुढवीए हिट्ठिल्ले चरमंते, महासुक्कसहस्सारगदेवा चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए हेट्ठिल्ले चरमंते, आणयपाणयआरणच्चुयदेवा अहे जाव पंचमाए धूमप्पभाए हेट्ठिल्ले चरमंते, हेट्ठिममज्झिमगेवेज्जगदेवा अधे जाव छट्ठाए तमाए पुढवीए हेट्ठिल्ले जाव चरमंते। उवरिमगेविज्जगदेवा णं भंते! केवतियं खेत्तं ओहिणा जाणंति पासंति? गोयमा! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, उक्कोसेणं अधे सत्तमाए हेट्ठिल्ले चरमंते, तिरियं जाव असंखेज्जे दीवसमुद्दे, उड्ढं जाव सयाइं विमाणाइं ओहिणा जाणंति पासंति। अणुत्तरो-

---

अने लान्तक देवो त्रीजी वालुकाप्रभा पृथिवीना नीचेना चरम भागने जाणे छे अने देखे छे. महाशुक्र अने सहस्रार देवो चोथी पंकप्रभा पृथिवीना नीचेना चरमान्तने जाणे छे अने देखे छे. आनत, प्राणत, आरण अने अच्युत देवो नीचे पांचमी नरकपृथिवीना नीचेना चरम भाग सुधी जाणे छे अने देखे छे. नीचेना अने मध्यम त्रिकना ग्रैवेयक देवो नीचे छट्ठी तमापृथिवीना नीचेना चरम भाग सुधी जाणे छे. हे भगवन्! उपरना ग्रैवेयक देवो केटलुं क्षेत्र अवधिज्ञान वडे जाणे अने देखे? हे गौतम! जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग अने उत्कृष्ट नीचेनी सातमी नरकपृथिवीना नीचेना चरमान्त सुधी, तीरछुं असंख्याता द्वीप-समुद्र

जघन्य पदे जे अंगुलना असंख्यातमा भाग प्रमाण क्षेत्र कह्युं छे, तेमां अन्य शंका करे छे-'अंगुलना असंख्यातमा भाग प्रमाण क्षेत्र विषयक अवधिज्ञान सौथी जघन्य छे, अने सौथी जघन्य अवधिज्ञान तिर्यंच अने मनुष्योमांज होय छे, बीजाने विशे होतुं नथी. कारण के आ संबन्धे भाष्यकार स्वकृत टीकामां कहे छे-" उत्कृष्टो मनुष्येष्वेव, नान्येषु, मनुष्यतिर्यग्योनिष्वेव जघन्यो नान्येषु, शेषाणां मध्यम एवेति "-उत्कृष्ट अवधिज्ञान मनुष्योमांज होय छे, बीजाने विशे होतुं नथी. अने जघन्य अवधि मनुष्य अने तिर्यंचोमां ज होय

वबाइयदेवा णं भंते ! केवतियं खेत्तं ओहिणा जाणंति पासंति? गोयमा! संभिन्नं लोगनालिं ओहिणा जाणंति पासंति ।

५. नेरइयाणं भंते ! ओही किंसंठिए पन्नत्ते ? गोयमा ! तप्पागारसंठिए पन्नत्ते । असुरकुमाराणं पुच्छा । गोयमा ! पल्लगसंठिते, एवं जाव थणियकुमाराणं । पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा । गोयमा ! णाणासंठा-

---

पर्यन्त अने उपर पोतपोताना विमानो सुधी अवधिज्ञान वडे जाणे छे अने देखे छे. हे भगवन् ! अनुत्तरौपपातिक देवो केटलुं क्षेत्र अवधिज्ञान वडे जाणे अने देखे ? हे गौतम ! संपूर्ण लोकनाडीने अवधिवडे जाणे छे अने देखे छे.

५. हे भगवन् ! नैरयिकोने अवधिज्ञान केवा संस्थान–आकारवाळुं होय ? हे गौतम ! तेओने त्रापाना आकार जेवुं संस्थान कह्युं छे.

छे, बीजाने होतुं नथी. बाकीना जीवोने मध्यम अवधि होय छे." तो केम अहीं वैमानिकोने सर्व जघन्य अवधि कह्युं ? (उ०)–सौधर्मादि देवोने परभवथी आवेलुं अवधिज्ञान उत्पत्ति काळे संभवे छे, अने ते कदाचित् सर्वजघन्य पण होय, उत्पन्न थया पछी तो ते भवमां उत्पन्न थयेलुं अवधि होय छे, माटे कंइ पण दोष नथी. आ संबन्धे दुष्षमाकालरूपी अन्धकारमां निमग्न थयेल जिन प्रवचनने प्रकाश करवामां प्रदीप समान जिनभद्र गणि क्षमाश्रमण कहे छे–"वेमाणियाणमंगुलभागमसंखं जहन्नओ होइ । उववाए परभविओ तब्भवजो होइ तो पच्छा" ॥–वैमानिकोने अंगुलना असंख्यातमा भाग प्रमाण अवधि जघन्यथी होय छे, ते उपपात काळे परभवथी आवेलुं जाणवुं. अने त्यार पछी ते भवमां उत्पन्न थयेलुं अवधि होय छे." उपर यावत् पोताना विमानो सुधी एटले पोताना विमानना शिखर अने ध्वजादि पर्यन्त होय छे. 'संभिन्नं लोगनालिं' ति–संभिन्न–परिपूर्ण चौद रज्जु प्रमाण लोकनाडी पर्यन्त होय छे.

५. हवे संस्थान द्वार कहे छे–'नेरइया णं' इत्यादि. हे भगवन् ! नैरयिकोने अवधिज्ञान केवा संस्थान—आकारवाळुं छे ? 'तप्पा-

णसंठिए, एवं मणूसाणवि । वाणमंतराणं पुच्छा। गोयमा ! पडहगसंठाणसंठिए। जोतिसियाणं पुच्छा। गोयमा! झल्लरिसंठाणसंठिए पन्नत्ते । सोहम्मगदेवाणं पुच्छा। गोयमा ! उड्ढमुयंगागारसंठिए पन्नत्ते, एवं जाव अच्चुयदेवाणं । गेवेज्जगदेवाणं पुच्छा । गोयमा ! पुप्फचंगेरिसंठिए पन्नत्ते । अणुत्तरोववाइयाणं पुच्छा । गोयमा ! जव-

---

असुरकुमारो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! पालाना जेवा संस्थानवाळुं छे. ए प्रमाणे स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं. पंचेन्द्रिय तिर्यञ्चो संबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! अनेक प्रकारना आकारवाळुं छे. ए प्रमाणे मनुष्योने पण जाणवुं. व्यन्तरो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! पटह-ना-ढोलना जेवुं संस्थान छे. ज्योतिषिको संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! तेनो आकार झालरना जेवो छे. सौधर्म देवो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! तेनो आकार उभा रहेला मृदङ्गना जेवो छे.ए प्रमाणे यावत् अच्युत देवो सुधी जाणवुं.ग्रैवेयक देवो संबन्धे प्रश्न.हे गौतम !

गारसंठिए'त्ति तप्र-त्रापो, काष्ठनो समुदाय विशेष, जे नदीना प्रवाह वडे तरातो दूरथी लवाय छे, ते लांबो अने त्रिकोण होय छे. तेना आकार जेवो नारकोना अवधिज्ञाननो आकार छे. असुरकुमारादि बधाय भवनपतिओने अवधि पालाना आकार जेवुं छे. पालो लाट देशमां धान्य भरवानुं पात्र विशेष छे. ते उपर अने नीचे लांबो अने उपर कांइक सांकडो होय छे. पंचेन्द्रिय तिर्यंचो अने मनुष्योने अवधिनो अनेक प्रकारनो आकार छे. जेम स्वयंभूरमण समुद्रमां मत्स्यो विविध आकारवाळा होय छे, वळी त्यां मत्स्योनुं वलयनी आकृतिवाळुं संस्थान निषेध्युं छे, अने तिर्यंच अने मनुष्योना अवधिनुं ते पण संस्थान होय छे. कह्युं छे के-"नाणागारो तिरियमणुएसु मच्छा सयंभूरमणे व्व । तत्थ वलयं निसिद्धं तस्स पुण तयंपि होज्जाहि ॥ जेम स्वयंभूरमण समुद्रमां मत्स्यो अनेक प्रकारना आकारवाळा होय छे तेम तिर्यंच अने मनुष्योमां अवधि अनेक आकारवाळुं छे. ते मत्स्योमां वलयनो आकार निषेध्यो छे, परन्तु तेनो तो ते आकार पण होय छे. व्यन्तरोने पटहनी आकृतिवाळुं अवधि छे. पटह वाद्य विशेष छे, जेने ढोल कहेवामां आवे छे.' ते

६. नेरइयाणं भंते ! ओहिस्स किं अंतो, बाहिं ? गोयमा ! अंतो, नो बाहिं, एवं जाव थणियकुमारा। पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! नो अंतो, बाहिं। मणूसाणं पुच्छा। गोयमा ! अंतोवि बाहिंपि।

६. हे भगवन् ! नैरयिको अवधिज्ञानना अन्तः–मध्यवर्ती होय छे के बहार होय छे ? हे गौतम ! तेओ अन्तः–मध्यवर्ती होय छे, पण बहार होता नथी. ए प्रमाणे स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं. पंचेन्द्रिय तिर्यंचो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! तेओ अवधिना अ-

मृदंग छे. पुष्पनी माळा वडे शिखा सहित भरेली पुष्पचंगेरी कहेवाय छे. उभो कुमारिकानो सरकंचुक ए [1]जवनालक कहेवाय छे." आ संस्थानोना प्रतिपादन करवा वडे आ बाबत जणावेली छे के भवनपति अने व्यन्तरोने उपर अधिक अवधिज्ञान होय छे. वैमानिकोने नीचे अने ज्योतिष्को अने नारकोने तीरछुं वधारे अवधिज्ञान होय छे. तथा मनुष्य अने तिर्यंचोने विचित्र अवधिज्ञान होय छे. आ संबन्धे कह्युं छे के–"भवणवइवणयराणं उड्ढं बहुगो अहो य सेसाणं। नारगजोइसियाणं तिरियं ओरालिओ चित्तो"॥ भवनपति अने व्यन्तरने ऊर्ध्वं, बाकीनाने नीचे, नारक अने ज्योतिष्कोने तीरछुं बहु अवधि होय छे. तथा औदारिकावधिज्ञान–तिर्यंच अने मनुष्य संबन्धी अवधि विचित्र होय छे.

६. तथा नारक, भवनपति व्यन्तर. ज्योतिष्क अने वैमानिको तेवा प्रकारना भवस्वभावथी अवधिना मध्यवर्ती होय छे पण बहार होता नथी. तात्पर्य ए छे के तओ चोतरफ प्रकाशवाळा अने स्व संबन्धी अवधिवाळा होय छे, पण स्पर्द्धकावधिवाळा के विछिन्नावधिवाळा होता नथी. तिर्यंच पंचेन्द्रियो तेवा प्रकारना भवस्वभावथी अवधिना मध्यवर्ती होता नथी, पण बहार होय छे, अहीं पण आ भावार्थ

१. जवनालक–कन्या चोलक, आ मरुदेश वगेरेमां प्रसिद्ध चणीआ रूप कन्याना वस्त्रनी साथे सीवेलो के जेथी वस्त्र खसे नहि ते कन्याना मस्तकना भाग वडे पहेराय छे.

वाणमंतरजोइसियवेमाणियाणं जहा नेरइयाणं ।

७. नेरइयाणं भंते ! किं देसोही, सव्वोही ? गोयमा ! देसोही, नो सव्वोही, एवं जाव थणियकुमारा । पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा । गोयमा ! देसोही, नो सव्वोही । मणूसाणं पुच्छा । गोयमा ! देसोहीवि सव्वोहीवि । वाणमंतरजोइसियवेमाणियाणं जहा नेरइयाणं ।

८. नेरइयाणं भंते ! ओही किं आणुगामिते, अणाणुगामिते, वड्ढमाणते, हीयमाणए, पडिवाई, अप्पडिवाई,

---

न्तः—मध्यवर्ती पण होय छे अने बहार पण होय छे. मनुष्यो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! तेओ अवधिना अन्त—मध्यवर्ती पण होय छे अने बाह्य पण होय छे. व्यन्तर, ज्योतिषिक अने वैमानिकोने नैरयिकोनी पेठे जाणवुं.

७. हे भगवन् ! नैरयिकोने देशावधि होय छे के सर्वावधि होय छे ? हे गौतम ! देशावधि होय छे, पण सर्वावधि होतुं नथी. ए प्रमाणे स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं. पंचेन्द्रिय तिर्यंचो संबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! तेओने देशावधि होय छे पण सर्वावधि होतुं नथी. मनुष्यो संबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! तेओने देशावधि पण होय छे अने सर्वावधि पण होय छे. व्यन्तर, ज्योतिष्क अने वैमानिकोने नैरयिकोनी जेम कहेवुं.

८. हे भगवन् ! नैरयिकोने अवधिज्ञान आनुगामिक, अनानुगामिक, वर्धमान, हीयमान, प्रतिपाती, अप्रतिपाती, अवस्थित के

छे-तिर्यंच पंचेन्द्रियो तेवा प्रकारना भवस्वभावथी स्पर्द्धकावधिवाळा, के जेनुं सर्वतःप्रकाशी अवधिज्ञान वच्चे विछिन्न थयुं छे एवा होय छे. एटले स्पर्द्धकादिरूप अवधिवाळा होय छे ए भावार्थ छे.

७. देशावधि अने सर्वावधिना विचारमां मनुष्य सिवाय बधाय देशावधिवाळा अने मनुष्यो देशावधिवाळा पण अने सर्वावधिवाळा पण होय छे. कारण के तेओने परमावधिनो पण संभव छे.

८. आनुगामिकादिना विचारमां नारक, भवनपति, व्यन्तर, ज्योतिष्क अने वैमानिको आनुगामिक, अप्रतिपाती अने अवस्थित

अवट्ठिए, अणवट्ठिए ? गोयमा ! आणुगामिए, नो अणाणुगामिए, नो वड्ढमाणते, नो हीयमाणए, नो पडिवाई, अप्पडिवाई, अवट्ठिए, नो अणवट्ठिए, एवं जाव थणियकुमाराणं। पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा! आणुगामितेवि जाव अणवट्ठिएवि, एवं मणूसाणवि। वाणमंतरजोतिसियवेमाणियाणं जहा नेरइयाणं।

पण्णवणाए भगवईए तेत्तीसइमं ओहिपदं समत्तं ॥ ३३ ॥

अनवस्थित होय छे ? हे गौतम ! आनुगामिक होय छे पण अनानुगामिक होतुं नथी, वर्धमान होतुं नथी, हीयमान होतुं नथी, प्रतिपाती होतुं नथी, अप्रतिपाती होय छे, अवस्थित होय छे, पण अनवस्थित होतुं नथी. ए प्रमाणे स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं. पंचेन्द्रिय तिर्यचो संबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! आनुगामिक पण होय छे, यावत् अनवस्थित पण होय छे. ए प्रमाणे मनुष्योने पण कहेवुं. व्यन्तर, ज्योतिषिक अने वैमानिकोने नैरयिकोनी पेठे कहेवुं.

प्रज्ञापना भगवतीना अनुवादमां तेत्रीशमुं अवधिपद समाप्त.

अवधिवाळा होय छे, परन्तु तेवा भवस्वभावथी अनानुगामिक, वर्धमान, हीयमान, प्रतिपाती अने अनवस्थित अवधिवाळा होता नथी. तिर्यंच पंचेन्द्रिय अने मनुष्योने आठे प्रकारना अवधि होय छे.

श्रीमद् आचार्य मलयगिरिविरचित प्रज्ञापना टीकाना अनुवादमां तेत्रीशमुं अवधि पद समाप्त.

चउत्तीसइमं परियारणापयं ।

अणंतरागयाहारे १, आहारे भोयणाइ य २ । पोग्गला नेव जाणंति ३, अज्झवसाणा ४ य आहिया ॥
सम्मत्तस्साहिगमे ५ तत्तो परियारणा ६ य बोद्धव्वा । काए फासे रूवे सद्दे य मणे य अप्पबहुं ७ ॥

चोत्रीशमुं प्रवीचार पद

१ अनन्तरागत आहारक-उत्पत्ति समये तुरत आहार करनार, २ आहार विषे आभोग अने अनाभोगपणुं, ३ आहारपणे ग्रहण करेला पुद्गलो जाणता नथीवगेरे, ४ अध्यवसायोनुं कथन, ५ सम्यक्त्वनी प्राप्ति, ६ ते पछी काय, स्पर्श, रूप, शब्द अने मन संबन्धे परिचारणा-विषयोपभोग अने ७ तेओनुं अल्पबहुत्व-ए सात अधिकारो चोत्रीशमा पदमां कहेवाना छे.

ए प्रमाणे तेत्रीशमुं पद कह्युं, हवे चोत्रीशमा पदनो प्रारंभ कराय छे, तेनो सम्बन्ध आ प्रमाणे छे—पूर्वना पदमां ज्ञानना परिणाम विशेपरूप अवधिज्ञान सम्बन्धे कह्युं, अने अहीं परिणामना समानपणाथी वेदना परिणामविशेषरूप प्रवीचार कहेवाय छे. तेमां सर्व वक्तव्यतानो संग्रह करनार आ बे गाथा छे—'अणंतरागयाहारे' इत्यादि. प्रथम अनन्तरागत आहारक-अनन्तर-उत्पत्ति समये तुरत ज एक पण समयना अन्तर सिवाय आहार करनार नैरयिकादि कहेवा योग्य छे. २ त्यारपछी 'आहारे भोयणाइ य'—आहार विशे आभोगना-आभोगपणुं, इच्छापूर्वक आहार ग्रहण करवो, आदि शब्दथी आहारने विशे अनाभोगपणुं एटले अनाभोगपणे आहार ग्रहण करवा सम्बन्धे कहेवा योग्य छे. जेमके हे भगवन्! नैरयिकोने आहार आभोगनिर्वर्तित-इच्छापूर्वक होय छे के अनाभोगनिर्वर्तित-इच्छा सिवाय होय छे-इत्यादि. ३ तथा 'पोग्गला नेव जाणंति' इति-नैरयिको आहारपणे ग्रहण करेला पुद्गलो जाणता नथी-इत्यादि चोवीश दंडकना अनुक्रमथी कहेवा योग्य छे. ४ 'अज्झवसाणा य आहिया' त्यारपछी नैरयिकादिना अनुक्रमे अध्य-

१. नेरइया णं भंते ! अणंतराहारा,ततो निव्वत्तणा, ततो परियाइणया,ततो परियारणया, तओ पच्छा विउव्वणया ? हंता ! गोयमा ! नेरइया णं अणंतराहारा, ततो निव्वत्तणया, ततो परियादिणया, ततो परिणामया, तओ परियारणया, तओ पच्छा विउव्वणया । असुरकुमारा णं भंते ! अणंतराहारा, ततो निव्वत्तणया, ततो परियाइणया, ततो परिणामया, ततो विउव्वणया, तओ पच्छा परियारणया ? हंता ! गोयमा ! असुरकुमारा

१. हे भगवन् ! नैरयिको अनन्तराहार–उत्पत्ति समये तुरत आहार करनारा होय ? ते पछी शरीरनी उत्पत्ति, ते पछी पर्यादान–पुद्गलोनुं ग्रहण, ते पछी तेनो परिणाम, ते पछी परिचारणा–विषयोपभोग अने त्यार बाद विकुर्वणा करे छे ? हा गौतम ! नैरयिको उत्पत्ति समये तुरत आहार करनारा होय छे, ते पछी शरीरनी उत्पत्ति थाय छे, त्यार बाद पुद्गलोनुं ग्रहण थाय छे, ते पछी तेनो परिणाम, ते पछीं परिचारणा अने पछी विकुर्वणा करे छे. हे भगवन् ! असुर कुमारो उत्पत्तिसमते तुरत आहार करनारा

वसायो कहेला छे. सूत्रमां पुंलिंगनो निर्देश प्राकृत होवाथी थयो छे. 'च' शब्द पूर्वनी अपेक्षाए समुच्चयना अर्थमां छे ५ त्यारपछी 'सम्मंत्तस्स अहिगमे' सम्यक्त्वनी प्राप्ति चोवीश दंडकना क्रमथी विचारवा योग्य छे. ६ 'तत्तो' त्यारपछी एटले सम्यक्त्वनी प्राप्तिना प्रतिपादनना पछी काय, स्पर्श, रूप, शब्द अने मन विषे परिचारणा कहेवा योग्य छे ७ ते पछी कायप्रविचारादिनुं 'अप्पबहु'–अल्पबहुए भाव प्रधान निर्देश होवाथी अल्पबहुत्व कहेवा योग्य छे.

१ हवे 'यथोद्देशं निर्देशः' उद्देशना क्रमने अनुसरी निर्देश थाय छे–ए न्यायथी प्रथम अनन्तरागत आहारनी वक्तव्यता कहेवानी इच्छावाळा सूत्रकार आ सूत्र कहे छे—'नेरइयाणं भंते !' इत्यादि. हे भगवन् ! नैरयिको अनन्तराहाराः–उत्पत्ति समये तुरत आहार करनारा छे? इत्यादि. हे भदन्त !—परम कल्याणना योगवाळा परम सुखना योगवाळा हे भगवन् ! नैरयिको 'णं' वाक्यालङ्कारमां वपराय छे.

अणंतराहारा, ततो निव्वत्तणया, जाव ततो पच्छा परियारणया, एवं जाव थणियकुमारा । पुढविकाइया णं भंते ! अणंतराहारा, ततो निव्वत्तणया, ततो परियाइणया, ततो परिणामया,ततो परियारणया,ततो विउव्वणया ? हंता ! गोयमा ! तं चेव जाव परियारणया, नो चेव णं विउव्वणया । एवं जाव चउरिंदिया, नवरं वाउ-

होय छे, ते पछी शरीरनी उत्पत्ति, ते पछी पुद्गलोनुं ग्रहण, ते पछी परिणाम, पछी विकुर्वणा, अने ते पछी परिचारणा करे छे ? हा गौतम ! असुरकुमारो उत्पत्ति समये तुरत आहार करे छे, पछी शरीरनी उत्पत्ति थाय छे, यावत् ते पछी परिचारणा करे छे. ए प्रमाणे स्तनितकुमारो सुधी कहेवुं. हे भगवन् ! पृथिवीकायिको अनन्तराहार–उत्पत्ति समये तुरत आहार करनारा होय छे ? ते पछी शरीरनी उत्पत्ति, त्यार पछी पुद्गलोनुं ग्रहण, पछी तेनो परिणाम, पछी परिचारणा–विषयोपभोग अने ते पछी विकुर्वणा करे छे ? हा गौतम ! तेमज जाणवुं, यावत् परिचारणा करे छे, पण विकुर्वणा करता नथी. ए प्रमाणे चउरिन्द्रियो सुधी जाणवुं. परन्तु

'अनन्तरागतआहाराः' उत्पत्ति क्षेत्रनी प्राप्ति समये ज आहार करनार होय ? ते पछी उत्पत्ति समये आहारना ग्रहणथी आरंभी अनुक्रमे तेओना शरीरनी निर्वर्तना–उत्पत्ति थाय छे ? 'ततो परियाइणया' ते पछी शरीरनी उत्पत्तिथी आरंभी पर्यादान–यथायोग्यपणे अङ्ग अने प्रत्यङ्गोवडे लोमाहारादिद्वारा चोतरफथी पुद्गलोनुं ग्रहण थाय छे. ? 'ततो परिणामया' ते पुद्गलो ग्रहण कर्या पछी तुरत ते पुद्गलोनो इन्द्रियादिरूपे परिणाम थाय छे ? इन्द्रियादिरूपे परिणाम थया पछी यथायोग्य प्रमाणे परिचारणा–शब्दादि विषयनो उपभोग थाय छे? ते पछी विकुर्वणा–वैक्रियलब्धिवडे अनेक प्रकारे अनेक रूपवाळा वैक्रिय शरीर थाय छे ? ए प्रश्न कर्यो एटले भगवान् उत्तर आपे छे—'हन्ता गोयमा' ! इत्यादि. हा गौतम ! अहीं 'हन्त' स्वीकारना अर्थमां छे. नैरयिको 'अन्तराहाराः' उत्पत्ति समये तुरत आहार करनारा होय छे. इत्यादि ए प्रमाणे जेम नैरयिकोनी अन्तराहारादिनी वक्तव्यता कही तेम असुरकुमारथी आरंभी स्तनितकुमार सुधीना

क्काइया पंचिंदियतिरिक्खजोणिया मणूसा य जहा नेरइया, वाणमंतरजोइसियवेमाणिया जहा असुरकुमारा ।

वायुकायिको, पंचेन्द्रिय तिर्यंचो अने मनुष्यो नैरयिकोनी पेठे समजवा. व्यन्तर, ज्योतिपिक अने वैमानिको असुरकुमारोनी पेठे जाणवा.

भवनपति देवोनी पण कहेवी. परंतु एटलो विशेष छे के असुरकुमारादिने पूर्वे विकुर्वणा होय छे अने पछीथी परिचारणा-विपयोपभोग होय छे. कारण के तेओ विशिष्ट शब्दादि विषयोना उपभोगनी इच्छा थतां पूर्वे इष्ट वैक्रियरूप करे छे अने पछीथी शब्दादि विपयनो उपभोग करे छे ए नियम छे. वाकीना जीवो शब्दादि विषयना उपभोगनी प्राप्ति थतां हर्पना वशथी अत्यंत विशिष्ट शब्दादिना उपभोगनी इच्छाथी के वीजा कोइ पण कारणथी विकुर्वणा करे छे. तेथी तेओने पूर्वे शब्दादि विपयना उपभोगरूप प्रविचारणा होय छे अने पछीथी विकुर्वणा होय छे. पृथिवीकायना विषयमां प्रश्नसूत्र तेमज कहेवुं, अने उत्तरसूत्र परिचारणा सुधी कहेवुं. कारण के तेओने पण स्पर्शना उपभोगनो संभव छे. 'नो चेव णं विउव्वणया' परन्तु तेओने विकुर्वणा न कहेवी. कारण के तेओने वैक्रियलब्धिनो असंभव छे. ए प्रमाणे-पृथिवीकायिकनी पेठे वायुकाय सिवायना अप्कायथी मांडी चउरिन्द्रिय सुधी जाणवा. कारण के ते वधाने पण वैक्रियलब्धि नहि होवाथी सूत्रनुं समानपणुं छे. वायुकाय संवन्धे विशेषता कहेवानी इच्छावाळा सूत्रकार समान पाठ होवाथी वायुकाय सहित पंचेन्द्रिय तिर्यंच अने म ष्योनुं अतिदेश-समानपणुं वतावे छे. 'नवरं' इत्यादि. 'जहा नेरइया' जेम नैरयिको कह्या तेम वायुकायिकादि कहेवा. तात्पर्य ए छे के नैरयिकनी पेठे विकुर्वणा पण एओने कहेवी. कारण के तेओने वैक्रियलब्धिनो संभव छे. पण ते प्रविचारणा-विषयोपभोगनी पछी होय छे. "वाणमंतरजोइसवेमाणिया जहा असुरकुमारा"—व्यन्तर, ज्योतिष्क अने वैमानिको असुरकुमारनी पेठे कहेवा. एटले असुरकुमारोनी पेठे व्यन्तरादिने पण पूर्वे विकुर्वणा अने पछी परिचारणा कहेवी. कारण के वधाय देवोनो तेवा प्रकारनो स्वभाव छे. मूलटीकामां कह्युं छे के "पुव्वं विउव्वणा खलु पच्छा परियारणा सुरगणाणं । सेसाण पुव्वपरियारणा उ पच्छा विउव्वणया ॥" पूर्वे विकुर्वणा अने पछी परिचारणा वधा देवोने होय छे अने वाकीनाने पूर्वे परिचारणा अने पछी विकुर्वणा होय छे.

२. नेरइया णं भंते ! आहारे किं आभोगनिव्वत्तिते, अणाभोगनिव्वत्तिते ? गोयमा ! आभोगनिव्वत्तिएवि अणाभोगनिव्वत्तिएवि । एवं असुरकुमाराणं जाव वेमाणियाणं, णवरं एगिंदियाणं नो आभोगनिव्वत्तिए, अणाभोगनिव्वत्तिए । नेरइया णं भंते ! जे पोग्गले आहारत्ताए गिण्हंति ते किं जाणंति पासंति आहारेंति, उदाहु न याणंति न पासंति आहारेंति ? गोयमा ! न याणंति न पासंति आहारेंति, एवं जाव तेइंदिया । चउरिंदियाणं पुच्छा । गोयमा ! अत्थेगतिया न याणंति पासंति आहारेंति, अत्थेगइया न याणंति न पासंति आहारेंति ।

---

२. हे भगवन् ! नैरयिकोने आहार शुं आभोगनिर्वर्तित-इच्छापूर्वक होय छे के अनाभोगनिर्वर्तित-इच्छा सिवाय होय छे ? हे गौतम ! आभोगनिर्वर्तित पण होय छे अने अनाभोगनिर्वर्तित पण होय छे. ए प्रमाणे असुरकुमारो यावत् वैमानिकोने जाणवुं. परन्तु एकेन्द्रियोने आभोगनिर्वर्तित-इच्छा पूर्वक आहार होतो नथी, पण अनाभोगनिर्वर्तित आहार होय छे. हे भगवन् ! नैरयिको जे पुद्गलो आहारपणे ग्रहण करे छे ते शुं जाणे छे, देखे छे अने तेनो आहार करे छे, अथवा जाणता नथी, देखता नथी अने आहार करे छे ? हे गौतम ! तेओ जाणता नथी, देखता नथी अने आहार करे छे. ए प्रमाणे तेइन्द्रियो सुधी जाणवुं. चउरिन्द्रियो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! केटला

---

२. हवे आहार विशे आभोग-संकल्पनो विचार करवानी इच्छावाळा सूत्रकार कहे छे—'नेरइया णं भंते ! आहारे' इत्यादि. हे भगवन् ! नैरयिकोने आभोगनिर्वर्तित आहार होय छे के अनाभोगनिर्वर्तित होय छे ? इत्यादि. ज्यारे मनोव्यापार पूर्वक आहार ग्रहण करे छे त्यारे आभोगनिर्वर्तित अने ते सिवाय बाकीना काळे अनाभोगनिर्वर्तित आहार होय छे. अने ते लोमाहार जाणवो. ए प्रमाणे बाकीना जीवोने आभोगनिर्वर्तित अने अनाभोगनिर्वर्तित आहारनो विचार करवो. परन्तु एकेन्द्रियोने अत्यंत अल्प अने असमर्थ-अस्पष्ट मनोद्रव्यनी लब्धि

पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा । गोयमा ! अत्थेगतिया जाणंति पासंति आहारेंति १, अत्थेगतिया जाणंति न पासंति आहारेंति २, अत्थेगतिया न याणंति पासंति आहारेंति ३, अत्थेगतिया न जाणंति न पासंति आहारेंति ४, एवं जाव मणुस्साणवि। वाणमंतरजोइसिया जहा नेरइया। वेमाणियाणं पुच्छा । गोयमा ! अत्थेगतिया जाणंति पासंति आहारेन्ति, अत्थेगतिया न जाणंति न पासंति आहारेन्ति । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुचइ-'वे-

---

एक जाणता नथी, देखे छे अने आहार करे छे, अने केटला एक जाणता नथी, देखता नथी अने आहार करे छे. पंचेन्द्रिय तिर्यंचो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! १ केटला एक जाणे छे, देखे छे अने आहार करे छे. २ केटलाएक जाणे छे देखता नथी अने आहार करे छे. ३ केटला एक जाणता नथी, देखे छे अने आहार करे छे. ४ केटलाएक जाणता नथी, देखता नथी अने आहार करे छे. ए प्रमाणे मनुष्योने पण कहेवुं. व्यन्तर अने ज्योतिष्को नैरयिकोनी पेठे जाणवा. वैमानिको संबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! १ केटलाएक जाणे

होवाथी स्पष्ट मनोव्यापार होतो नथी, तेथी तेओने हमेशां अनाभोगनिर्वर्तित ज आहार होय छे, परन्तु कदि पण आभोगनिर्वर्तित आहार होतो नथी. हवे आहारपणे ग्रहण कराता पुद्गलोने विशे ज्ञान अने दर्शननो विचार करे छे-'नेरइयाणं भंते' ! इत्यादि. हे भगवन् ! नैरयिको (णं वाक्यालंकारमां वपराय छे) जे पुद्गलोने आहारपणे ग्रहण करे छे ते पुद्गलोने जाणे छे अने देखे छे, अथवा जाणता नथी अने देखता नथी ? भगवान् उत्तर आपे छे—हे गौतम ! तेओ अवधिज्ञान वडे जाणता नथी. कारण के लोमाहार रूपे ते पुद्गलो अति सूक्ष्म होवाथी नारकोने अवधिज्ञाननो विषय थता नथी. तेम ते देखता पण नथी, कारण के ते चक्षुइन्द्रियनो विषय नथी. बेइन्द्रियो पण जाणता नथी, कारण के तेओ मिथ्याज्ञानी होवाथी तेओने तेनुं सम्यग्ज्ञान थतुं नथी. बेइन्द्रियोने मतिअज्ञान छे अने ते पण अस्पष्ट छे, तेथी पोता वडे ग्रहण करता प्रक्षेपाहारने पण सम्यक् जाणता नथी, तेम चक्षुइन्द्रिय नहि होवाथी देखता पण नथी.

माणिया अत्थेगतिया जाणंति पासंति आहारेन्ति,अत्थेगतिया न जाणंति न पासंति आहारेन्ति' ? गोयमा ! वेमाणिया दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–माईमिच्छदिट्ठिउववन्नगा य अमायिसम्मदिट्ठिउववन्नगा य, एवं जहा इंदियउद्देसए पढमे भणितं तहा भाणितव्वं, जाव से एएणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति।

छे, देखे छे अने आहार करे छे, अने केटलाएक जाणता नथी, देखता नथी अने आहार करे छे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के 'वैमानिको केटला एक जाणे छे, देखे छे अने आहार करे छे अने केटलाएक जाणता नथी देखता नथी अने आहार करे छे' ? हे गौतम ! वैमानिको बे प्रकारना छे, ते आ प्रमाणे—मायी मिथ्यादृष्टि उत्पन्न थयेला अने अमायी सम्यग्दृष्टि उत्पन्न थयेला. ए प्रमाणे जेम प्रथम इन्द्रिय उद्देशकमां कह्युं छे ते प्रमाणे कहेवुं. यावत् ए कारणथी हे गौतम ! हुं एम कहुं छुं.

एम तेइन्द्रियो पण ज्ञानदर्शनरहित जाणवा. चउरिन्द्रियो 'अत्थेगइया' केटलाएक छे जेओ पोते ग्रहण करेलो आहार प्रक्षेपरूप होवा छतां पण तेने जाणता नथी, कारण के ते मिथ्याज्ञानी छे अने तेओने पण बेइन्द्रियोनी पेठे मतिअज्ञान छे अने ते पण अस्पष्ट छे, परन्तु चक्षुइन्द्रिय वडे जुए छे, कारण के तेओने चक्षुइन्द्रिय होय छे. ते आ प्रमाणे–माखी वगेरे गोळ आदि वस्तुने जुए छे अने तेनो आहार करे छे. तथा बीजा केटलाएक चउरिन्द्रियो छे, जेओ मिथ्याज्ञानी होवाथी जाणता नथी. तेम अन्धकारादि वडे चक्षुदर्शननो प्रतिबन्ध थयेलो होवाथी के अनुपयोगनो संभव होवाथी देखता नथी. पंचेन्द्रिय तिर्यंचो संबन्धे लोमाहार अने प्रक्षेपाहारने आश्रयी चउभंगी जाणवी. तेमां प्रक्षेपाहारनी अपेक्षाए आ प्रमाणे विचार छे—१ केटलाएक पंचेन्द्रिय तिर्यंचो छे जेओ प्रक्षेपाहारने जाणे छे, कारण के तेओ सम्यग्ज्ञानी होवाथी तेनुं तेओने यथावस्थित परिज्ञान होय छे, तेम चक्षुइन्द्रि होवाथी देखे छे अने ए प्रमाणे आहार करे छे. २ तथा केटलाएक छे जेओ पूर्वनी पेठे जाणे छे, परन्तु चक्षुदर्शननो अंधकारादि

वडे तथा अनुपयोगवडे प्रतिबंध थयेलो होवाथी देखता नथी. केटलाएक तिर्यंच पंचेन्द्रियो छे जेओ जाणता नथी, कारण के मिथ्याज्ञानवाळा होवाथी तेओने तेनुं सम्यग्ज्ञान नथी, परन्तु चक्षुइन्द्रियना उपयोगथी देखे छे. ४ तथा केटलाएक छे जेओ मिथ्याज्ञान होवाथी जाणता नथी, तेम पूर्वनी पेठे देखता पण नथी अने ए प्रमाणे आहार करे छे. लोमाहारनी अपेक्षाए आ प्रमाणे विचार छे—१ केटलाएक तिर्यंच पंचेन्द्रियो छे जेओ लोमाहारने जाणता नथी, कारण के ते विशिष्ट अवधिज्ञान वडे रहित छे. तेम तेवा प्रकारनो क्षयोपशम होवाथी अने इन्द्रियनुं सामर्थ्य अति विशुद्ध होवाथी देखे छे अने ए प्रमाणे आहार करे छे. २ केटलाएक छे जेओ पूर्वनी पेठे जाणता नथी, अने तेवा प्रकारनुं इन्द्रियनुं सामर्थ्य नहि होवाथी देखता पण नथी. ३ केटलाएक छे जेओ जाणता नथी परन्तु ते विषयनुं इन्द्रियसामर्थ्य होवाथी देखे छे. ४ तथा केटलाएक छे जेओ मिथ्याज्ञान होवाथी, अवधिज्ञानरहित होवाथी अने अवधिज्ञानना विषयथी अतीत होवाने लीधे जाणता नथी अने तेवा प्रकारना इन्द्रियना सामर्थ्यना अभावथी देखता पण नथी. ए प्रमाणे मनुष्योने पण लोमाहार अने प्रक्षेपाहारनी अपेक्षाए चोभंगी विचारवी. 'वाणमंतरजोइसिया जहा नेरइया' 'व्यन्तर अने ज्योतिष्को नैरयिकोनी पेठे जाणवा'. कारण के नैरयिकोना अवधिज्ञाननी पेठे व्यन्तर अने ज्योतिष्कना अवधिज्ञाननो पण तेओ मनोभक्षी (मन मात्र वडे आहार करनारा) होवा छतां आहारना पुद्गलो विषय नथी. अर्थात् नैरयिकोनी पेठे अवधिज्ञान वडे तेओ आहारना पुद्गलो जाणता नथी. वेमाणियाणं पुच्छा—वैमानिको संबन्धे प्रश्न. वैमानिकोने जुदुं सूत्र कहेवुं—'वेमाणिया णं भंते ! जे पोग्गले आहारत्ताए गेण्हंति ते किं जाणंति' पासंति, आहारेंति, उदाहु न जाणंति न पासंति, आहारेंति ? हे भगवन् ! वैमानिको जे पुद्गलोने आहारपणे ग्रहण करे छे ते शुं जाणे छे, देखे छे अने आहार करे छे अथवा जाणता नथी, देखता नथी अने आहार करे छे? भगवान् उत्तर आपे छे—'हे गौतम' इत्यादि. वैमानिको बे प्रकारना छे-मायी मिथ्यादृष्टि उपपन्नक अने अमायी सम्यग्दृष्टि उपपन्नक. तेमां पूर्व भवमां करेली माया जेओने छे ते मायी कहेवाय छे, कारण के स्थूलरूपे करायेली जे ते माया वडे मलिन कर्मनी उत्पत्ति थाय छे अने तेथी मलिन कर्म उदयमां आवे छे त्यारे भवना हेतुथी पण उत्पन्न थयेल अवधिज्ञान समीचीन-बराबर होतुं नथी. तेओ सम्यग्दृष्टि

न समजवा. तथा मिथ्या-विपरीत दृष्टि-जिनप्रणीत वस्तुतत्त्वनो बोध जेओने छे तेओ मिथ्यादृष्टि छे. मायी पण मिथ्यादृष्टि उत्पन्न थयेला होय ते मायीमिथ्यादृष्टि उपपन्नक कहेवाय छे. अहीं स्वार्थिक 'क' प्रत्यय थयेलो छे. तेओ उपरना ग्रैवेयकत्रिकनी उपरना ग्रैवेयकना अन्त सुधी होय छे. कारण के तेओने यथायोग्यपणे मिथ्यादृष्टिपणुं अने मायीपणुं अवश्य होय छे. तेनाथी विपरीत अमायी सम्यग्दृष्टि जाणवा. तेओ अनुत्तरविमानवासी होय छे, कारण के तेओने अवश्य सम्यग्दृष्टिपणुं अने पूर्वना गया भवमां अत्यन्त अल्प क्रोध, मान, माया अने लोभ तथा उपशान्तकषायपणुं होय छे. आ संबन्धे मूलटीकाकार कहे छे के "वेमाणिया मायिमिच्छादिट्ठिउववन्नगा जाव उवरिमगेवेज्जा, अमायिसम्मदिट्ठिउववन्नगा अनुत्तरसुरा एव गृह्यन्ते" इति—मायीमिथ्यादृष्टि उपपन्नक वैमानिको उपरना ग्रैवेयक सुधी जाणवा, अने अमायी सम्यग्दृष्टि उपपन्नक अनुत्तर सुरो ग्रहण करवा. ए प्रमाणे पूर्वे इन्द्रिय संबन्धी प्रथम उद्देशकमां कहेलुं छे तेम कहेवुं अने ते 'ए हेतुथी' इत्यादि वडे सौथी छेल्ला निगमन वाक्य सुधी जाणवुं. ते आ प्रमाणे—"तेमां जे मायीमिथ्यादृष्टि उपपन्नक देवो छे तेओ जाणता नथी, देखता नथी अने आहार करे छे. अने तेमां जे अमायी सम्यग्दृष्टि उपपन्नक देवो छे ते बे प्रकारना कह्या छे. तेमके अनन्तरोपपन्नक अने परंपरोपपन्नक. तेमां अनन्तरोपपन्नक-तुरत उत्पन्न थयेला देवो छे तेओ जाणता नथी, देखता नथी अने आहार करे छे. जे परंपरोपपन्नक-जेओने उत्पन्न थयाने समयादिनुं अन्तर पडेलुं छे ते बे प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे—पर्याप्ता अने अने अपर्याप्ता. तेमां जे अपर्याप्ता छे तेओ जाणता नथी, देखता नथी अने आहार करे छे. अने जे पर्याप्ता छे ते बे प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे-उपयोगसहित अने उपयोगरहित. तेमां जे उपयोगरहित छे ते जाणता नथी, देखता नथी अने आहार करे छे. अने उपयोगसहित छे तेओ जाणे छे, देखे छे अने आहार करे छे. ए माटे हे गौतम! एम कहुं छुं के केटलाएक नथी जाणता, नथी देखता अने आहार करे छे' अने केटलाएक जाणे छे, देखे छे अने आहार करे छे. आ सूत्रनो टीकाकारे करेलो आ अर्थ छे-तेमां जे मायीमिथ्यादृष्टि उपपन्नक देवो छे एटले उपरनी त्रिकना उपरना ग्रैवेयक सुधीना देवो छे ते मन वडे-संकल्पमात्र वडे भक्षण करवा लायक आहारना परिणामने योग्य पुद्गलो अवधिज्ञान वडे जाणता नथी, कारण के ते पुद्गलो तेओना अवधिज्ञाननो विषय थता नथी. अने चक्षु

वडे जोता पण नथी, कारण के चक्षुनुं तेवा प्रकारनुं सामर्थ्य नथी. जे अमायी सम्यग्दृष्टि उपपन्नक एटले अनुत्तर विमानवासी देवो छे ते बे प्रकारना छे-अनन्तरोपपन्नक अने परंपरोपपन्नक. जेने उत्पन्न थयाने एक पण समयनुं अन्तर पड्युं नथी ते अनन्तरोपपन्नक-प्रथम समये उत्पन्न थयेलाछे. अने जेने उत्पन्न थयाने समयादिनुं अन्तर पड्युं छे ते परंपरोपपन्नक एटले जेने उत्पन्न थयाने द्वितीयादि समयो थयेला छे एवा छे. तेमां जेओ अनन्तरोपपन्नक छे तेओ जाणता नथी अने देखता नथी. कारण के प्रथम समये उत्पन्न थयेला होवाथी तेओने अवधिज्ञाननो उपयोग अने चक्षुइन्द्रिय नथी, परन्तु जाण्या अने देख्या सिवाय एमज आहार करे छे. तेमां जेओ परंपरोपपन्नक छे ते बे प्रकारना छे. जेमके पर्याप्ता अने अपर्याप्ता. तेमां जेओ अपर्याप्ता छे तेओ जाणता नथी अने देखता नथी. कारण के पर्याप्तिओ परिपूर्ण नहि थयेली होवाथी अवधि वगेरेनो उपयोग होतो नथी. जेओ पर्याप्ता छे ते बे प्रकारना छे-उपयोगसहित अने उपयोगरहित. जेमां जेओ उपयोगसहित छे तेओ जाणे छे, कारण के उपयोग वडे यथाशक्ति ज्ञाननी पोताना विषयने जाणवानी अवश्य प्रवृत्ति थाय छे, तेम चक्षु वडे देखे छे, कारण के तेओनुं इन्द्रियोनुं सामर्थ्य घणुं वधारे छे. जेओ उपयोगरहित छे तेओ जाणता नथी अने देखता नथी. कारण के तेओ उपयोगरहित छे. (प्र०)—उपयोगसहित होवा छतां पण मनोभक्ष्य-मात्र मनना संकल्प वडे ग्रहण करवा योग्य आहारना पुद्गलोने केम जाणे? (उ०)—आ संबन्धे आवश्यकनी प्रथम पीठिकामां अवधिज्ञानना अधिकारमां कह्युं छे—"संखेज्ज कम्मदव्वे थोऊणयं पलियं" एनो आ अर्थ छे—कार्मणशरीर द्रव्योने जोतो क्षेत्रथी लोकना संख्याता भागोने जुए छे अने काळथी कंइक न्यून पल्योपम सुधी जुए छे. अनुत्तर देवो तो संपूर्ण लोकनाडी देखे छे, कारण के 'संभिन्नलोकनाडिं पासंति अनुत्तरा देवा' एवुं शास्त्रनुं वचन छे. तेथी मन वडे भक्षण करवा लायक आहारना परिणामने योग्य पुद्गलोने पण जाणे छे. आ संबन्धे मूल टीकाकार कहे छे के "ते जानन्ति, पश्यन्ति आहारयन्ति च, विशुद्धत्वादवधेरिन्द्रियविषयस्य चातिविशुद्धत्वात् पश्यन्त्यपि" इति—तेओ जाणे छे, देखे छे अने आहार करे छे, कारण के तेओनुं अवधिज्ञान विशुद्ध छे अने इन्द्रियनो विषय अतिविशुद्ध होवाथी देखे पण छे. अहीं इन्द्रिय विषय इन्द्रियोनुं सामर्थ्य जाणवुं. उपसंहार वाक्य प्रसिद्ध छे.

३. नेरइयाणं भंते केवतिया अज्झवसाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! असंखेज्जा अज्झवसाणा पन्नत्ता। ते णं भंते ! किं पसत्था अपसत्था ? गोयमा ! पसत्थावि अपसत्थावि, एवं जाव वेमाणियाणं। नेरइया णं भंते ! किं सम्मत्ताभिगमी, मिच्छत्ताभिगमी, सम्मामिच्छत्ताभिगमी ? गोयमा ! सम्मत्ताभिगमीवि मिच्छत्ताभिगमीवि सम्मामिच्छत्ताभिगमीवि, एवं जाव वेमाणियाणवि। नवरं एगिंदियविगलिंदिया णो सम्मत्ताभिगमी,

३. हे भगवन् ! नैरयिकोने केटला अध्यवसायो कह्या छे ? हे गौतम ! असंख्याता अध्यवसायो कह्या छे. हे भगवन् ! ते प्रशस्त-शुभ छे के अप्रशस्त-अशुभ छे ? हे गौतम ! प्रशस्त पण छे अने अप्रशस्त पण छे. ए प्रमाणे वैमानिको सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! नैरयिको सम्यक्त्वाधिगामी-सम्यक्त्वनी प्राप्तिवाळा होय छे, मिथ्यात्वनी प्राप्तिवाळा होय छे के सम्यग्मिथ्यात्वनी प्राप्तिवाळा होय छे ? हे गौतम ! तेओ सम्यक्त्वनी प्राप्तिवाळा होय छे, मिथ्यात्वनी प्राप्तिवाळा होय छे अने सम्यग्मिथ्यात्वनी प्राप्तिवाळा पण होय छे. ए प्रमाणे वैमानिको सुधी पण कहेवुं. परन्तु एकेन्द्रियो अने विकलेन्द्रियो सम्यक्त्वनी प्राप्तिवाळा नथी. सम्यग्मिथ्यात्वनी प्राप्तिवाळा

३. अध्यवसायना विचारमां प्रत्येक नैरयिकादिने असंख्याता अध्यवसायो होय छे, कारण के तेओने प्रतिसमय घणुं करी भिन्न भिन्न अध्यवसाय होय छे. हवे सम्यक्त्वादिनी प्राप्तिनो विचार करे छे-'नेरइया णं भंते' ! इत्यादि. "हे भगवन् ! नैरयिको शुं सम्यक्त्वाधिगामी-सम्यक्त्वनी प्राप्तिवाळा, ए प्रमाणे मिथ्यात्वाधिगामी-मिथ्यात्वनी प्राप्तिवाळा के सम्यग्मिथ्यात्वाधिगामी-सम्यक्त्वमिथ्यात्वनी प्राप्तिवाळा होय छे ? भगवान् कहे छे-'हे गौतम' ! इत्यादि सुगम छे. कारण के त्रणे प्रकारनी प्राप्तिनो यथायोग पणे संभव छे. ए प्रमाणे नैरयिक संबन्धी पाठ वडे निरंतर वैमानिको सुधी कहेवुं. परन्तु केटलाएक एकेन्द्रियोने अने विकलेन्द्रियोने सास्वादन सम्यक्त्व पण होय छे. तो पण तेओ मिथ्यात्वने सन्मुख होवाथी सम्यक्त्व छतां पण तेनी सूत्रकारे विवक्षा करी नथी.

मिच्छत्ताभिगमी, नो सम्मामिच्छत्ताभिगमी।

४. देवा णं भंते किं सदेवीया सपरियारा,सदेवीया अपरियारा, अदेवीया सपरियारा, अदेवीया अपरियारा? गोयमा! अत्थेगतिया देवा सदेवीया सपरियारा, अत्थेगतिया देवा अदेवीया सपरियारा, अत्थेगतिया देवा अदेविया अपरिचारा, नो चेव णं देवा सदेवीया अपरिचारा। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुचति-'अत्थेगतिया देवा सदेवीया सपरिचारा, तं चेव जाव नो चेव णं देवा सदेवीया अपरिचारा? गोयमा! भवणपतिवाणमंतरजोति-

---

नथी. पण मिथ्यात्वनी प्राप्तिवाळा होय छे.

४. हे भगवन्! देवो शुं १ देवी सहित अने सपरिचार-मैथुनसेवी, २ देवीसहित अने अपरिचार-मैथुनसेवा रहित, ३ देवीरहित अने परिचारसहित अने ४ देवीरहित अने परिचाररहित होय? हे गौतम! १ केटलाएक देवो देवीसहित अने परिचारसहित होय छे, केटलाएक देवो देवीरहित अने परिचारसहित होय छे अने केटलाएक देवो देवीरहित अने परिचार रहित होय छे, परन्तु देवो देवीसहित अने परिचाररहित होता नथी. हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो के 'केटला एक देवो देवीसहित अने परिचारसहित

---

४. हवे परिचारणानो विचार करवानी इच्छावाळा सूत्रकार कहे छे-'देवाणं' इत्यादि सूत्र सुगम छे. परन्तु भवनपति, व्यन्तर, ज्योतिष्क, सौधर्म अने ईशान देवलोकमां देवो देवीसहित छे, कारणके त्यां देवीओनी उत्पत्ति छे अने तेथीज तेओ 'सपरिचाराः' विषय सेवन करनारा होय छे. कारणके देवीओनो देवो वडे यथायोगपणे परिग्रह थवाथी इच्छा थतां कायप्रवीचार-शरीर वडे विषय सेवन थाय छे. सनत्कुमार अने माहेन्द्र, ब्रह्मलोक अने लान्तक, महाशुक्र अने सहस्रार तथा आनतादि चार कल्पमां देवो देवी

ससोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवा सदेवीया सपरियारा, सणंकुमारमाहिंदबंभलोगलंतगमहासुक्कसहस्सारआणयपाणयआरणच्चुएसु कप्पेसु देवा अदेवीया सपरिचारा, गेवेज्जअणुत्तरोववाइया देवा अदेवीया अपरियारा, नो चेव णं देवा सदेवीया अपरिचारा, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुचइ-अत्थेगतिया देवा सदेवीया सपरिचारा, तं चेव, नो चेव णं देवा सदेवीया अपरियारा ।

होय इत्यादि तेज कहेवुं, यावत् देवो देवीसहित अने परिचार रहित होता नथी ? हे गौतम ! भवनपति, व्यन्तर, ज्योतिष्क, सौधर्म अने ईशान कल्पोमां देवो देवी सहित अने परिचार सहित होय छे. सनत्कुमार, माहेन्द्र ब्रह्मलोक, लांतक, महाशुक्र, सहस्रार, आनत, प्राणत, आरण अने अच्युत कल्पमां देवो देवी रहित अने परिचार सहित होय छे. ग्रैवेयक अने अनुत्तरौपपातिक देवो देवीरहित अने परिचार रहित होय छे. परन्तु देवो देवी सहित अने परिचाररहित होता नथी. ते हेतुथी हे गौतम ! हुं एम कहुं छुं के केटलाएक देवीसहित अने परिचारसहित होय छे इत्यादि तेज कहेवुं, यावत् देवो देवीसहित अने परिचाररहित होता नथी.

रहित होय छे, कारण के त्यां देवीओनी उत्पत्ति नथी. अने तेओ परिचारणा-विषयसेवन सहित होय छे. केम के सौधर्म अने ईशानना देवीओनी साथे अनुक्रमे स्पर्श, रूप, शब्द अने मन वडे प्रवीचार-विषय सेवन थाय छे. ग्रैवेयक अने अनुत्तरौपपातिक देवो देवी रहित होय छे, कारण के त्यां देवीओनी उत्पत्ति नथी, अने अपरिचार-विषय सेवन रहित होय छे. कारण के त्यां अत्यन्त मन्द पुरुषवेदनो उदय होवाथी मन वडे पण विषय सेवननो संभव नथी. परन्तु देवो तेवा प्रकारना भवस्वभावथी देवी सहित अने परिचार रहित होता नथी. 'ए कारणथी' इत्यादि निगमन वाक्य छे.

५. कतिविहा णं भंते ! परियारणया पन्नत्ता ? गोयमा ! पंचविहा परियारणा पन्नत्ता, तंजहा–कायपरियारणा, फासपरियारणा, रूवपरियारणा, सद्दपरियारणा, मणपरियारणा। से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–पंचविहा परियारणा पन्नत्ता, तंजहा–कायपरियारणा जाव मणपरियारणा ? गोयमा ! भवणवइवाणमंतरजोइससोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवा कायपरियारगा, सणंकुमारमाहिंदेसु कप्पेसु देवा फासपरियारगा, बंभलोयलंतगेसु देवा रूवपरियारगा, महासुक्कसहस्सारेसु देवा सद्दपरियारगा, आणयपाणयआरणच्चुएसु कप्पेसु देवा मणपरियार-

५. हे भगवन् ! केटला प्रकारे परिचारणा–मैथुनसेवा कही छे ? हे गौतम ! पांच प्रकारे परिचारणा कही छे. ते आ प्रमाणे—१ कायपरिचारणा, २ स्पर्शपरिचारणा, ३ रूपपरिचारणा, ४ शब्दपरिचारणा अने ५ मनपरिचारणा. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के 'पांच प्रकारनी परिचारणा कही छे' जेमके—'काय परिचारणा यावत् मनपरिचारणा' ? हे गौतम ! भवनपति, व्यन्तर, ज्योतिष्क, सौधर्म अने ईशान कल्पमां देवो कायपरिचारक–शरीर वडे मैथुन सेवन करनारा, सनत्कुमार अने माहेन्द्र कल्पमां देवो स्पर्शपरिचारक–स्पर्शमात्र वडे मैथुन सेवन करनारा, ब्रह्मलोक अने लान्तक कल्पमां देवो रूपपरिचारक–रूप वडे मैथुन

'५. देवो देवी सहित परिचारणावाळा होय छे' एम कह्युं, तेमां परिचारणा संबन्धे जिज्ञासावाळो शिष्य प्रश्न करे छे–'कइविहा णं भंते' ! हे भगवन् ! केटला प्रकारे परिचारणा कही छे'–इत्यादि सुगम छे. भगवान् कहे छे–'हे गौतम' ! इत्यादि स्पष्ट छे. 'नवरं कायपरिचारगा' इति–परन्तु काय–शरीर वडे मनुष्य स्त्री पुरुषनी पेठे परिचार–मैथुनसेवन जेओने छे तेओ कायपरिचारक कहेवाय छे. तात्पर्य ए छे के भवनपतिथी आरंभी ईशान देवलोक सुधीना देवो संक्लिष्ट उदयवाळा पुरुषवेद कर्मना प्रभावथी मनुष्यनी पेठे

गा, गेवेज्जअणुत्तरोववाइया देवा अपरियारगा, से तेणट्ठेणं गोयमा ! तं चेव जाव मणपरियारगा । तत्थ णं जे ते कायपरियारगा देवा तेसि णं इच्छामणे समुप्पज्जति–'इच्छामो णं अच्छराहिं सद्धिं कायपरियारं करेत्तए', तए णं तेहिं देवेहिं एवं मणसीकए समाणे खिप्पामेव तओ अच्छराओ ओरालातिं सिंगाराइं मणुण्णाइं मणोहराइं मणोरमाइं उत्तरवेउव्वियरूवाइं विउव्वंति, विउव्वित्ता तेसिं देवाणं अंतियं पाउब्भवंति, तते णं ते देवा

सेवन करनारा, महाशुक्र अने सहसार कल्पमां देवो शब्दपरिचारक–शब्द वडे मैथुन सेवन करनारा, तथा आनत, प्राणत, आरण अने अच्युत कल्पमां देवो मनवडे मैथुन सेवन करनारा होय छे. ग्रैवेयक अने अनुत्तरौपपातिक देवो अपरिचारक–मैथुन सेवनरहित होय छे. ते हेतुथी हे गौतम ! इत्यादि यावत् 'मन वडे मैथुनसेवन करनारा होय छे'. तेमां जे कायपरिचारक–शरीर वडे मैथुन सेवन करनारा छे तेओने इच्छाप्रधान मन–संकल्प थाय छे के–'अमे अप्सराओनी साथे कायपरिचार–शरीर वडे मैथुन सेवन करवा इच्छीए छीए'. ते देवो एवो संकल्प करे छे एटले जलदी ते अप्सराओ उदार शृंगार युक्त मनोज्ञ, मनोहर अने मनोरम उत्तर वैक्रिय

मैथुन सुखमां लीन थता अने कायक्लेशजन्य सर्व अंगे स्पर्शसुख पामी प्रसन्न थाय छे, अन्य प्रकारे प्रसन्न थता नथी. सनत्कुमार अने माहेन्द्र कल्पना देवो स्पर्शपरिचारक–स्तन, हाथ, साथळ अने जघनादि शरीरना स्पर्श वडे परिचार–मैथुन सेवन करनारा होय छे. तेओ ज्यारे मैथुन सेवन करवाने इच्छे छे त्यारे मैथुन सेवननी अभिलाषाथी पासे रहेली देवीओना स्तनादि अवयवोनो स्पर्श करे छे, अने तेटला मात्र वडे कायप्रविचारथी अनन्तगुण सुख अने वेदनी उपशांति थाय छे. ब्रह्मलोक अने लान्तक कल्पना देवो रूपपरिचारक–रूपमात्रना देखवा वडे मैथुन सेवन करनारा होय छे. तेओ देवांगनाओनुं कामनी राजधानी जेवुं दीव्य अने उन्माद करनार रूप जोइने कायप्रविचारथी अनन्तगुण मैथुनसुखनो अनुभव करे छे, अने तेटला मात्रथी तेओनो वेद उपशान्त थाय छे. महा

ताहिं अच्छराहिं सद्धिं कायपरियारणं करेंति । से जहानामए सीया पोग्गला सीतं पप्प सीयं चेव अतिवतित्ताणं चिट्ठंति, उसिणा वा पोग्गला उसिणं पप्प उसिणं चेव अतिवतित्ताणं चिट्ठंति, एवमेव तेहिं देवेहिं ताहिं अच्छराहिं सद्धिं कायपरियारणे कते समाणे से इच्छामणे खिप्पामेव अवेति ।

रूप करे छे, करीने ते देवोनी पासे आवे छे. त्यार बाद ते देवो ते अप्सराओनी साथे शरीरद्वारा मैथुन सेवन करे छे. जेमके शीत पुद्गलो शीत योनिवाळा प्राणीने पामी अतिशय शीतपणे परिणत थइने रहे छे, अने उष्ण पुद्गलो उष्णयोनिवाळा प्राणीने पामी अतिशय उष्णपणे परिणत थइने रहे छे. ए प्रमाणे ते देवो वडे ते अप्सराओनी साथे कायपरिचार कराय छे, त्यारे तेनुं इच्छाप्रधान मन जलदी शांत थाय छे.

शुक्र अने सहस्रार कल्पमां देवो शब्दपरिचारक-शब्दमात्रना श्रवणथी मैथुनसेवन करनारा होय छे. तेओ शुभ्र देवीना गीत, हास्य, सविकार भाषण अने नूपुरादि आभूषणोना ध्वनिना श्रवण मात्र वडेज कायप्रविचारथी अनन्तगुण सुखनो उपभोग करे छे, अने तेटला मात्रथी तेनो वेद शान्त थाय छे. आनत, प्राणत, आरण अने अच्युत कल्पमां देवो मनःपरिचारक-कामना विकार वडे वृद्धि पामेला परस्पर अनेक प्रकारना मनना संकल्प वडे मैथुनसेवन करनारा होय छे. तेओ परस्पर अनेक प्रकारना मनना संकल्पमात्र वडे कायप्रविचारथी अनन्तगुण सुखने प्राप्त करे छे, अने तेटला मात्रथी तेओ तृप्त थाय छे. ग्रैवेयक अने अनुत्तर देवो अपरिचारक-मन वडे पण अपरिचार-मैथुन सेवन रहित होय छे. कारण के तेओ अल्प मोहना उदयवाळा होवाथी प्रशम सुखमां लीन थयेला छे. (प्र०)—जो एम छे तो तेओ ब्रह्मचारी केम न कहेवाय ? (उ०)—चारित्र परिणामना अभावथी तेओ ब्रह्मचारी नथी. 'से तेणट्ठेणं' ते हेतुथी केटलाक देवो देवी सहित अने परिचारसहित होय छे इत्यादि निगमन वाक्य छे. तेमां जे कायपरिचारक देवो छे तेओना काय-

परिचारनो विचार करवानी इच्छावाळा सूत्रकार आ प्रमाणे कहे छे-'तत्थ णं' इत्यादि. ते कायपरिचारक वगेरे देवोमां जे कायपरिचारक भवनपति, व्यन्तर, ज्योतिष्क, सौधर्म अने ईशान देवो छे तेओने 'इच्छामनः'-काय वडे मैथुन सेवन करवानुं इच्छाप्रधान मन थाय छे. केवी रीते थाय छे ? 'अमे अप्सराओनी साथे कायपरिचार करवाने इच्छीए छीए'. ते पछी ते देवो उपर कह्या प्रमाणे कायपरिचारनो मनमां विचार करे छे, एटले 'क्षिप्रमेव' जलदीज ते अप्सराओ पोतपोताने उपभोग करवा योग्य देवोनो अभिप्राय जाणीने विषय सेवननी अभिलाषाथी उत्तरवैक्रिय रूपो करे छे-ए संबन्ध छे. ते उत्तरवैक्रिय रूपो केवा प्रकारना छे ? उदार-विशाल, परन्तु हीन अवयववाळा नहि, ते पण 'शृंगाराणि' शृंगार-आभूषणादि वडे शणगारवुं, विभूषित करवुं, एवा शृंगार युक्त होय छे. अहीं अभ्रादिथी 'अ' प्रत्यय थयो छे. एटले विभूषणादि वडे जेओनो उदार शृंगार करायेलो छे एवां, ते रूपो कदाचित् कोइने अमनोज्ञ होय, ए माटे कहे छे-'मनोज्ञानि' पोतपोताने उपभोग्य देवना मनोगत भावने गमे तेवां, मनोज्ञ रूपो लेशथी पण संभवे, ते माटे कहे छे के 'मनोहराणि'-पोतपोताना उपभोग्य देवोना मनने हरण करे, अधीन करे तेवां, ते मनोहरपणुं प्रथम आरंभ मात्रमां होय, तेथी कहे छे-'मनोरमाणि' पोतपोताना उपभोग्य देवना मनने रमाडे-आनंद पमाडे, प्रतिसमय उत्तरोत्तर अनुराग सहित करे तेवां, आवा प्रकारना उत्तर वैक्रिय रूपो करीने ते देवोनी पासे प्रगट थाय छे-आवे छे. ते पछी जेम मनुष्य मनुष्यस्त्री साथे मैथुन सेवन करे छे तेम ते देवो ते अप्सराओनी साथे कायपरिचारणा-सर्व अंगना कायक्लेशपूर्वक मैथुन सेवन करे छे. कारण के ए प्रमाणेज तेओना वेदनी उपशांति थाय छे. आज बावत दृष्टांत वडे दृढ करे छे-'से जहानामए' इत्यादि. 'से' शब्द अथ शब्दना अर्थमां छे, अने अथ शब्द वाक्यना प्रारंभमां वपराय छे. 'यथानाम' ते विवक्षित शीतपुद्गलो शीत-शीतयोनिवाळा प्राणीने प्राप्य-आश्रयी 'शीतमेव' शीत पणेज 'अतिव्रज्य' अतिशय परिणमीने रहे छे. तात्पर्य ए छे के शीत पुद्गलो शीत-शीतयोनिवाळा प्राणीना विशेषतः सुखने माटे थाय छे, अने उष्ण पुद्गलो उष्ण-उष्णयोनिवाळा प्राणीने आश्रयी उष्णमेव-उष्णपणे 'अतिव्रज्य' अतिशय परिणमीने रहे छे, अर्थात् स्वरूपनी प्राप्ति थवाथी तेना विशेषतः सुखने माटे थाय छे ए भावार्थ छे. 'एवमेव' ए प्रमाणे ते देवोए ते अप्सराओनी साथे काय

६. अत्थि णं भंते ! तेसिं देवाणं सुक्कपोग्गला ? हंता अत्थि । ते णं भंते ! तासिं अच्छराणं कीसत्ताते भुज्जो भुज्जो परिणमंति ? गोयमा ! सोतिंदियत्ताते चक्खुइंदियत्ताते, घाणिंदियत्ताते, रसिंदियत्ताते, फासिंदियत्ताते इट्ठत्ताते कंतत्ताते मणुन्नत्ताते मणामत्ताते सुभगत्ताते सोहग्गरूवजोव्वणगुणलावन्नत्ताए ते तासिं भुज्जो भुज्जो परिणमंति ।

---

६. हे भगवन् ! ते देवोने शुक्रना–वीर्यना पुद्गलो छे ? हा छे. हे भगवन् ! ते पुद्गलो ते अप्सराओने केवा रूपे वारंवार परिणमे छे ? हे गौतम ! श्रोत्रेन्द्रियपणे, चक्षुइन्द्रियपणे, घ्राणेन्द्रियपणे, रसेन्द्रियपणे, स्पर्शेन्द्रियपणे, इष्टपणे, कांतपणे, मनोज्ञपणे, मनाप–मनने गमे एवापणे, सुभग–प्रियपणे, सौभाग्यनो हेतु रूप, यौवन अने लावण्यगुणपणे ते पुद्गलो वारंवार तेओने परिणमे छे.

परिचारणा कर्ये छते 'इच्छामनः' जेमां काम विषयनी इच्छा प्रधान छे एवुं मन जलदीज अतितृप्ति थवाथी शांत थाय छे. तात्पर्य ए छे के जेम शीत पुद्गलो शीतयोनिवाळा प्राणीनो स्पर्श थता विशेषतः शीतपणुं पामता तेना सुखने माटे थाय छे अने उष्ण पुद्गलो उष्णयोनिवाळा प्राणीनो स्पर्श थता अत्यंत उष्णपणुं पामता तेना सुखने माटे थाय छे, तेम देवीना शरीरना पुद्गलो देवना शरीरने प्राप्त करी अने देवना शरीरना पुद्गलो देवीना शरीरने प्राप्त करी परस्पर एकगुणपणे परिणमता एक बीजाना सुखने माटे थाय छे, अने तेथी तृप्ति थाय छे अने तृप्ति थवाथी अभिलाषनी निवृत्ति थाय छे.

६. अहीं मनुष्यस्त्रीने मनुष्य पुरुषना उपभोगमां शुक्रना पुद्गलोनो संयोग थवाथी सुख प्राप्त थाय छे तो देवीने पण उपभोग करवा लायक देवना शुक्र पुद्गलोना संयोगथी सुख थाय छे के कोइ बीजी रीते सुख थाय छे'? ए प्रमाणे संदेहवाळो शिष्य देवोने शुक्रपुद्गलोना अस्तित्व संबन्धे प्रश्न करे छे—'अत्थि णं भंते !' इत्यादि. 'अस्ति' ए बहुवचनपणामां निपात–अव्यय छे. हे भगवन् ! ते देवोने

शुक्रपुद्गलो होय छे के जेना संबन्धथी देवीओने सुख थाय ? भगवान् कहे छे-हा गौतम ! छे. केवळ वैक्रियशरीरनी अन्तर्गत ते पुद्गलो छे, माटे गर्भाधाननुं कारण थतां नथी. 'ते णं भंते' ! इत्यादि. हे भगवन् ! ते शुक्रपुद्गलो ते अप्सराओने केवा स्वरूपे भूयः वारंवार-ज्यारे ज्यारे शुक्रपुद्गलोनुं क्षरण थाय त्यारे परिणमे छे ? भगवान् उत्तर आपे छे—'गौतम' इत्यादि. ते श्रोत्रेन्द्रियस्वरूपे यावत् स्पर्शनेन्द्रियपणे परिणमे छे. ते पुद्गलो कदाचित् अनिष्टपणे परिणाम पामता संभवे, तेथी कहे छे-'इष्टतया' इष्टपणे, इष्ट छतां पण कोइक वस्तु स्वरूपथी अकान्त-अनिच्छनीय होय छे. जेम के सूकरादिने विष्ठादि, तेथी कहे छे—'कान्ततया' कान्तपणे, इच्छनीयपणे, कान्त छतां पण कोइक वस्तु मनने स्पृहणीय न होय, तेथी कहे छे-'मनोज्ञतया' मनोज्ञपणे-अतिस्पृहणीयपणे, ते अतिस्पृहणीयपणुं पण कदाचित् पारंभ काळ मात्रमां संभवे, तेथी कहे छे के 'मणामत्ताए' मनने अनुकूल पणे. मनने प्राप्त करे, हमेशां मनमां रमे ते मनाप, एटले मनवडे हमेशां स्पृहणीयपणे परिणमे छे. शा हेतुथी ? ए माटे कहे छे के—'सुभगतया' सुभगपणे-सर्व जनने प्रियपणे परिणमे छे. अहीं हेतुना अर्थमां त्रीजी विभक्ति छे. कारण के 'निमित्त, कारण अने हेतुमां प्रायः सर्व विभक्तिओ देखाय छे.' एटले जेथी सुभगपणे परिणमे छे, तेथी कहेवाय छे के—इष्टपणे, कान्तपणे-इत्यादि रूपे परिणमे छे. तेओनुं सुभगपणे केम परिणमन थाय छे ? ए माटे कहे छे—'सोहग्गरूवजोव्वणगुणलावन्नत्ताए'-प्राकृत होवाथी गुणशब्द लावण्यशब्दनी पूर्वे मुकवामां आव्यो छे. पण वास्तविक रीते पछी जाणवो. तेथी आ अर्थ थाय छे-सौभाग्य माटे रूप, यौवन अने लावण्यरूप गुणस्वरूपे परिणमे छे. तेमां रूप-सौन्दर्यवाळो आकार, यौवन-अत्यंत तरुणावस्था, लावण्य-काम विकारनो हेतु उत्कृष्ट परिणाम विशेष. जेथी सौभाग्यना हेतु रूपादिगुणोना कारणपणे परिणमे छे तेथी सुभगपणे परिणमे छे-एम कहेवाय छे. ए प्रमाणे ते शुक्रपुद्गलो ते अप्सराओने वारंवार परिणमे छे. एम कायपरिचार कह्यो.

७. तत्थ णं जे ते फासपरियारगा देवा तेसि णं इच्छामणे समुप्पज्जति, एवं जहेव कायपरियारगा तहेव निरवसेसं भाणितव्वं । तत्थ णं जे ते रूवपरियारगा देवा तेसि णं इच्छामणे समुप्पज्जति—'इच्छामो णं अच्छराहिं सद्धिं रूवपरियारणं करेत्तते',ते णं तेहिं देवेहिं एवं मणसीकते समाणे तहेव जाव उत्तरवेउव्वितातिं रूवाइं विउव्वित्ता जेणामेव ते देवा तेणामेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तेसिं देवाणं अदूरसामंते ठिच्चा ताइं उरालाइं जाव मणोरमाइं उत्तरवेउव्विताइं रूवाइं उवदंसेमाणीतो २ चिट्ठंति,तते णं ते देवा ताहिं अच्छराहिं सद्धिं रूव-

---

७. तेमां जेओ स्पर्शपरिचारक–स्पर्श वडे मैथुन सेवन करनारा देवो छे तेओना मनमां इच्छा थाय छे–इत्यादि कायपरिचारक देवो संबन्धे कह्युं तेम बधुं कहेवुं. तेमां जे रूप परिचारक–रूप वडे मैथुन सेवी देवो छे तेओना मनमां इच्छा थाय छे के 'अमे अप्सराओनी साथे रूप वडे मैथुन सेववाने इच्छीए छीए'–ए प्रमाणे ते देवोए मनमां विचार करे छे एटले ते प्रमाणे ज ते देवीओ उत्तर वैक्रिय रूपो करे छे,करीने ज्यां ते देवो छे त्यां आवे छे,त्यां आवीने ते देवोनी थोडे दूर रहीने ते उदार शृङ्गारवाळुं यावत् मनोहर पोतानुं उत्तर वैक्रिय रूप बतावती उभी रहे छे. ते पछी ते देवो ते अप्सराओनी साथे रूपपरिचारणा–रूप वडे मैथुनसेवन करे छे.

---

७. हवे स्पर्शपरिचारनो विचार करवानी इच्छावाळा सूत्रकार कहे छे—'तत्थ णं' इत्यादि. कायपरिचारकादिमां जे स्पर्शपरिचारक–स्पर्शवडे मैथुन सेवन करनारा देवो छे. तेओनुं इच्छामन–स्पर्शपरिचारनी इच्छाप्रधान मन थाय छे. ए प्रमाणे जेम हमणां पूर्वे कायपरिचारको संबन्धे कह्युं तेम स्पर्शपरिचारकोने विशे पण सघळुं कहेवुं. ते आ प्रमाणे–'इच्छामो णं अच्छराहिं सद्धिं फासपरियारं करेत्तए' इत्यादि. 'अमे ते अप्सराओनी साथे स्पर्शपरिचार–स्पर्शवडे मैथुन सेवन करवाने इच्छीए छीए.' ए प्रमाणे ते देवोए

परियारणं करेंति, सेसं तं चेव जाव भुज्जो भुज्जो परिणमन्ति । तत्थ णं जे ते सद्दपरियारगा देवा तेसि णं इ-च्छामणे समुप्पज्जति—'इच्छामो णं अच्छराहिं सद्धिं सद्दपरियारणं करेत्तए', तते णं तेहिं देवेहिं एवं मणसीकए समाणे तहेव जाव उत्तरवेउव्वियातिं रूवातिं विउव्वंति, विउव्वित्ता जेणामेव ते देवा तेणामेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तेसिं देवाणं अदूरसामंते ठिच्चा अणुत्तराइं उच्चावयाइं सद्दाइं समुदीरेमाणीतो २ चिट्ठंति, तते णं

बाकी बधुं तेमज जाणवुं, यावत् वारंवार परिणमे छे. तेमां जे शब्दपरिचारक–शब्द वडे मैथुनसेवन करनारा देवो छे तेओना मनमां इच्छा थाय छे के 'अमे अप्सराओनी साथे शब्दपरिचार–शब्द वडे विषयसेवन करवाने इच्छीए छीए'. पछी ते देवोए प्रमाणे मनमां विचार करे छे एटले पूर्ववत् यावत् वैक्रिय रूप विकुर्वे छे, विकुर्वीने ज्यां देवो छे त्यां आवे छे,आवीने ते देवोनी पासे थोडे दूर रहीने अनुत्तर–अनुपम एवा अनेक प्रकारना शब्दो बोलती २ उभी रहे छे. त्यार बाद ते देवो ते अप्सराओनी साथे शब्दपरि-

मनमां विचार करे छे एटले जलदी ते अप्सराओ उदार शृंगारवाळां यावत् रूपो विकुर्वीने ते देवोनी पासे आवे छे. त्यार बाद ते देवो ते अप्सराओनी साथे स्पर्शपरिचार–स्पर्शवडे मैथुन सेवन करे छे. मुखचुंबन, स्तनमर्दन, हस्तवडे आलिंगन, जघन, उरुप्रमुख शरीरने स्पर्श करवारूप स्पर्शपरिचार समजवो. 'जेम के शीत पुद्गलो शीतयोनिवाळा प्राणीने प्राप्त करी शीतपणे अत्यंत परिणमीने रहे छे, अने उष्ण पुद्गलो उष्णयोनिवाळा प्राणीने प्राप्त करी उष्णपणे अतिशय परिणमीने रहे छे, ए प्रमाणे ते देवोए स्पर्शपरिचार कर्यो एटले तेनी मैथुनविषयक इच्छा तुरतज शान्त थाय छे. आ सूत्रनी अवतरणसहित व्याख्या पूर्वनी पेठे जाणवी. हे भगवन् ! ते देवोने शुक्रपुद्गलो छे ? हा, छे. हे भगवन् ! ते पुद्गलो ते अप्सराओने केवा स्वरूपे परिणमे छे ? हे गौतम ! श्रोत्रेन्द्रियपणे, यावत् स्पर्शेन्द्रियपणे इष्टपणे, कान्तपणे, यावत् वारंवार परिणमे छे. आ सूत्रनी पण अवतरणसहित व्याख्या पूर्वनी पेठे जाणवी.

ते देवा ताहिं अच्छराहिं सद्धिं सद्दपरियारणं करेन्ति, सेसं तं चेव जाव भुज्जो भुज्जो परिणमंति। तत्थ णं जे ते मणपरियारगा देवा तेसिं इच्छामणे समुप्पज्जति–'इच्छामो णं अच्छराहिं सद्धिं मणपरियारणं करेत्तते', ततो णं तेहिं देवेहिं एवं मणसीकए समाणे खिप्पामेव ताओ अच्छराओ तत्थ गयाओ चेव समाणीओ अणुत्तराति उच्चावयाति

चार–शब्द वडे विपयसेवन करे छे.वाकी वधुं तेमज जाणवुं,यावत् वारंवार परिणमे छे.तेमां जे मनपरिचारक–मन वडे विपय सेवनारा देवो छे तेओना मनमां इच्छा थाय छे के 'अमे अप्सराओनी साथे मन वडे परिचार–विपयसेवन करवाने इच्छीए छीए'. पछी ते देवो ए प्रमाणे मनमां विचार करे छे एटले जलदी ते अप्सराओ त्यां आवी अनुत्तर–कामप्रधान अनेक प्रकारना संकल्पो करती

परन्तु स्पर्शपरिचारमां शुक्रना पुद्गलोनो संक्रम दिव्य प्रभावथी थाय छे एम समजवुं. हवे रूपपरिचारणानो विचार करवानी इच्छा-वाळा सूत्रकार कहे छे–'तत्थ णं' इत्यादि सूत्र सुगम छे, यावत् रूपो 'विउव्वित्ता' सुधी जाणवुं. 'जेणामेव' जे देवलोकमां जे विमानने विषे जे स्थळे ते देवो छे, तेज स्थाने ते अप्सराओ आवे छे. आवीने ते देवोनी थोडे दूर रहीने ते पूर्वे विकुर्वेलां उदार यावत् उत्तर वैक्रिय रूपोने वतावती उभी रहे छे. त्यार वाद ते देवो ते अप्सराओनी साथे परस्पर विलासपूर्वक दृष्टिक्षेप, अंगप्रत्यंगोने जोवां अने पोतपोताना अनुरागने प्रदर्शित करवाने योग्य चेष्टाने प्रकट करवा वगेरे रूप रूपपरिचारणा करे छे. 'सेसं तं चेव'त्ति वाकी वधुं 'से जहानामए' जेम के शीत पुद्गलो इत्यादिथी मांडी–यावत् भुज्जो भुज्जो परिणमन्ति–वारंवार परिणमे छे' ए वाक्य सुधी तेमज जाणवुं. ए प्रमाणे रूपपरिचारणानो विचार कर्यो. हवे शब्दपरिचारणानो विचार करवानी इच्छावाळा सूत्रकार कहे छे–'तत्थ णं' इत्यादि सूत्र स्पष्ट छे, परन्तु थोडे दूर समीपमां रहीने 'अनुत्तरान्' सर्व प्रकारे मनने आनंद उत्पन्न करवा वडे अनन्य-सदृश–जेना समान वीजा नथी एवा अनेक प्रकारना 'उच्चावचान्' अत्यन्त कामने उद्दीपन करनारा सभ्य अनेअसभ्यरूप शब्दोने वोलती उभी रहे छे. अहीं 'शब्द' पुंलिंग होवा छतां प्राकृत होवाथी 'सद्दाई' एम नपुंसकलिंगनो निर्देश कर्यो छे. वाकी वधुं तेमज जाणवुं. 'एवं

मणाइं संपहारेमाणीतो २ चिट्ठंति, तते णं ते देवा ताहिं अच्छराहिं सद्धिं मणपरियारणं करेंति, सेसं णिरवसेसं तं चेव जाव भुज्जो भुज्जो परिणमंति ॥

करती उभी रहे छे. त्यार पछी ते देवो ते अप्सराओनी साथे मन वडे विषयसेवन करे छे, बाकी बधुं तेमज जाणवुं, यावत् वारंवार परिणमे छे.

तत्थ णं' ए प्रमाणे 'तेमां जे मनःपरिचारक देवो छे' इत्यादि मनःपरिचारक सूत्र पण तेमज समजवुं. यावत् मनःपरिचारनो मनमां विचार करे छे. एटले जलदी ते अप्सराओ त्यां सौधर्म अने ईशान देवलोकमां आवेला पोताना विमानमां रहेलीज अनुत्तर-परम संतोष उत्पन्न करवा वडे असाधारण 'उच्चावचानि' अनेक प्रकारना कामसहित सभ्य अने असभ्यरूप मननो प्रचार करती एटले तेवा प्रकारना संकल्प करती उभी रहे छे. अहीं मूळमां 'तत्थगया चेव समाणीओ' त्यां रहेली छती-एम कहेता सूत्रकारे 'देवीओ सहस्रार देवलोक पर्यन्त जाय छे' एम जणाव्युं. ते संबन्धे संग्रहणीना मूळ टीकाकार हरिभद्र सूरि कहे छे—"सनत्कुमारादिदेवानां रताभिलाषे सति देव्यः खल्वपरिगृहीताः सहस्रारं यावद् गच्छन्ति" इति । 'सनत्कुमारादि देवोने मैथुनसेवननी इच्छा थाय त्यारे अपरिगृहिता (जेना कोइ देवोए नियतपणे स्वीकार कर्यो नथी एवी) देवीओ सहस्रार देवलोक सुधी जाय छे.' तेज हरिभद्रसूरि बीजे स्थळे कहे छे—"इह सोहम्मे कप्पे जासिं देवीणं पलिओवमाउगं ताओ तद्देवाणं चेव हवन्ति, जासिं पुण पलिओवमाइ समयाहिया ठिई दुसमयतिसमयसंखेज्जासंखेज्जसमयाहिया ठिई जाव दसपलिया सोहम्मगदेवीओ ताओ सणंकुमाराणं गच्छन्ति, एवं दसपलिओवरि जासिं समयाहिया ठिई जाव वीसं पलिया ताओ बम्भलोगदेवाणं गच्छन्ति, एवं वीसपलिओवरि जासिं समयाहिया ठिई जाव तीसं पलिया ताओ महासुक्कदेवाणं गच्छन्ति, एवं तीसपलिओवरि जासिं समयाहिया ठिई जाव चत्तालीसं पलिया ताओ आणयदेवाणं तत्थ ठिया चेव झाणावलंबणं होंति, एवं चत्तालीसपलिओवरि जासिं समयाहिया ठिई जाव पंचासं पलिया ताओ आरणदेवाणं

तत्थ ठियाओ चेव झाणालंबणं होंति। तथा ईसाणे जासिं देवीणं पलिओवममहियमाउयं ताओ तइनाणं चेव होंति, जासिं पुण अहिय-पलिओवमाई समयाहिया ठिई दुसमयतिसमयसंखेज्जासंखेज्जसमयाहिया जाव पण्णरसं पलिया ताओ माहिंददेवाणं गच्छन्ति, एवं जासिं पण्णरसपलिओवरि समयाहिया ठिई दुसमयतिसमयसंखेज्जासंखेज्जसमयाहिया जाव पणवीसं पलिया ताओ लन्तगदेवाणं, जासिं पणवीसपलिओवरि समयाहिया ठिई जाव पंचतीसं पलिया ताओ सहस्सारदेवाणं, जासिं पुण पंचतीसपलिओवरि समयाहिया ठिई जाव पणयालीसं पलिया ताओ पाणयदेवाणं तत्थ ठियाओ चेव झाणावलंबणं होंति, जासिं पुण पणयालिसपलिओवरि समयाहिया ठिई जाव पणपन्नं पलिया ताओ अच्चुयदेवाणं तत्थ ठियाओ चेव झाणावलंबणं हवन्ति" । अहीं सौधर्म देवलोकमां जे देवीओनुं पल्योपमनुं आयुष छे ते देवीओ सौधर्म देवोने उपभोग्य छे, जेओनी पल्योपमथी मांडी समयाधिक, बे समय, त्रण समय, संख्याता के असंख्याता समय अधिक यावत् दस पल्योपमनी स्थिति छे, तेओ सनत्कुमार देवोनी साथे गमन करे छे. एटले ते देवीओ सनत्कुमार देवोने उपभोग्य छे. एम जेओनी दसपल्योपमना उपर समयाधिक यावत् वीश पल्योपमनी स्थिति छे, तेओ ब्रह्मलोक देवोने गमन करवा योग्य छे. ए प्रमाणे वीश पल्योपमना उपर जेओनी समयाधिक यावत् त्रीश पल्योपमनी स्थिति छे तेओ महाशुक्रदेवोने गमन करवा योग्य छे. ए प्रमाणे जे देवीओनी त्रीश पल्योपमना उपर समयाधिक यावत् चालीश पल्योपमनी स्थिति छे तेओ त्यां रहेलीज आनत देवोने ध्यान-संकल्पनुं आलम्बनभूत थाय छे. ए प्रमाणे जेओनी चालीश पल्योपमना उपर समयाधिक यावत् पचास पल्योपमनी स्थिति छे तेओ त्यां रहेलीज आरण देवोने ध्यान-मनना संकल्पनुं आलम्बनरूप थाय छे. तथा ईशान देवलोकमां जे देवीओनुं पल्योपमथी अधिक आयुष छे तेओ ईशान देवोने योग्य छे. जे देवीओनी साधिक पल्योपमथी आरंभी समयाधिक, बे समय, त्रण समय, संख्याता समय, यावत् असंख्याता समय अधिक यावत् पन्दर पल्योपमनी स्थिति छे तेओ माहेन्द्र देवोने गमन करवा योग्य छे. एम जे देवीओनी पन्दर पल्योपमना उपर समयाधिक, यावत् पचीश पल्योपमनी स्थिति छे ते लान्तक देवोने गमन करवा योग्य छे. जे देवीओनी पचीश पल्योपमना उपर समयाधिक यावत् पांत्रीश पल्योपमनी स्थिति छे

८. एतेसि णं भंते ! देवाणं कायपरियारगाणं जाव मणपरियारगाणं, अपरियारगाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा देवा अपरियारगा, मणपरियारगा संखेज्जगुणा, सद्दपरियारगा असंखेज्जगुणा, रूवप-

८. हे भगवन् ! कायपरिचारक–शरीर वडे मैथुनसेवी, यावत् मन वडे विषय सेवनारा अने अपरिचारक–विषय सेवनरहित ते देवोमां कया देवो अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा देवो विषयसेवन रहित छे, तेथी मन वडे विषय

तेओ सहस्रार देवोने गमन करवा योग्य छे. जेओनी पांत्रीश पल्योपमना उपर समयाधिक यावत् पीसताळीश पल्योपमनी स्थिति छे तेओ त्यां रहेजील प्राणत देवोने संकल्पनुं अवलम्बन भूत थाय छे. जेओनी पीसताळीश पल्योपमना उपर समयाधिक यावत् पचास पल्योपमनी स्थिति छे तेओ त्यां रहेलीज अच्युत देवोने संकल्पनुं अवलम्बन थाय छे." 'तए णं' इत्यादि. त्यार बाद ते देवो ते अप्सराओनी साथे सुरत संबन्धी परस्पर सभ्य अये असभ्य मनना संकल्प करवारूप मनपरिचार करे छे. 'सेसं' इत्यादि. बाकी 'से जहानामए सीया पोग्गला' इत्यादि. जेम के शीत पुद्गलो इत्यादि बधुं यावत् वारंवार परिणमे छे'–ए छेल्ला वाक्य सुधी कहेवुं. अने तेनी व्याख्या पूर्वनी पेठे करवी. तेथी उपरना ग्रैवेयकादि देवो मनथी पण स्त्रीओने इच्छता नथी. कारण के तेओने अल्प वेदनो उदय छे, तथा तेओ उत्तरोत्तर अनन्तगुण सुखवाळा छे. ते आ प्रमाणे–कायप्रवीचारक देवोथी अनन्तगुण सुखवाळा स्पर्शपरिचारक देवो छे. तेथी अनन्तगुण सुखवाळा रूपपरिचारक देवो छे, तेथी शब्दपरिचारक देवो अनन्तगुण सुखवाळा छे. तेथी अनन्तगुण सुखवाळा मनपरिचारक देवो छे अने तेथी अपरिचारक देवो अनन्तगुण सुखवाळा छे.

८. हवे एओनुं परस्पर अल्पबहुत्व कहे छे—'एएसिणं' इत्यादि. सौथी थोडा अपरिचारक–विषयसेवन रहित देवो छे. कारण के तेओ ग्रैवेयक अने अनुत्तरौपपतिक देवो छे अने ते बधा मळीने क्षेत्रपल्योपमना असंख्यातमा भागना आकाशप्रदेशना राशिप्रमाण छे. तेथी मनःपरिचारक देवो संख्यातगुणा छे. कारण के तेओ आनतादि चार देवलोकमां रहेवावाळा छे अने तेमां रहेनारा देवो पूर्व देवोनी अपेक्षाए संख्यातगुणा

रियारगा असंखेज्जगुणा, फासपरियारगा असंखेज्जगुणा, कायपरियारगा असंखेज्जगुणा ॥

पण्णवणाए भगवईए चउत्तीसइमं परियारणापयं समत्तं ॥

सेवी देवो संख्यातगुणा छे, तेथी शब्द वडे विषयसेवी असंख्यातगुणा छे,तेथी रूप वडे विषयसेवी असंख्यातगुणा छे,तेथी स्पर्श वडे विषय सेवनारा असंख्यातगुणा छे, अने तेथी काया वडे विषय सेवनारा असंख्यातगुणा छे.

प्रज्ञापना भगवतीमां चोत्रीशमुं परिचारणा पद समाप्त.

क्षेत्रपल्योपमना असंख्यातमा भागना आकाशप्रदेशना राशिप्रमाण छे. तेथी शब्दपरिचारक देवो असंख्यातगुणा छे. कारण के तेओ महाशुक्र अने सहस्रार कल्पवासी छे, अने तेओ घनरूपे करेला लोकनी एक प्रदेशनी श्रेणीना असंख्यातमा भागे जेटला आकाशप्रदेशो होय तेटला छे. तेथी रूपपरिचारक देवो असंख्यातगुणा छे. कारण के तेओ ब्रह्मलोक अने लान्तक देवलोकमां रहेनारा छे अने तेओ पूर्व देवोनी अपेक्षाए असंख्यातगुणी श्रेणिना असंख्यातमा भागे रहेला आकाशप्रदेशना राशिप्रमाण छे. तेथी पण स्पर्शपरिचारक देवो असंख्यातगुणा छे. कारण के तेओ सनत्कुमार अने माहेन्द्रकल्पमां रहेवा वाळा छे. अने त्यां रहेला देवो ब्रह्मलोक अने लान्तक देवोनी अपेक्षाए असंख्यातगुणी श्रेणिना असंख्यातमा भागना आकाश प्रदेशप्रमाण कहेला छे. तेथी कायपरिचारक देवो असंख्यातगुणा छे, कारण के भवनपतिथी आरंभी ईशान पर्यन्त सर्वे देवो कायपरिचारक छे, अने तेओ सर्वे मळी प्रतरना असंख्यातमा भागमां रहेला आकाशप्रदेशना राशिप्रमाण छे.

श्रीमद् आचार्य मलयगिरिविरचित प्रज्ञापना टीकाना अनुवादमां चोत्रीशमुं प्रवीचारपद समाप्त.

पणतीसइमं वेदणापयं ।

सीता य दव्व सरीरा साता तह वेदणा भवति दुक्खा। अब्भुवगमोवक्कमिया निदाय अणिदाय नायव्वा॥
सायमसायं सव्वे सुहं च दुक्खं अदुक्खमसुहं च। माणसरहियं विगलिंदिया उ सेसा दुविहमेव ॥

पांत्रीशमुं वेदना पद

शीत (उष्ण अने शीतोष्ण) वेदना, द्रव्य (क्षेत्र, काळ अने भाव)ने आश्रयी वेदना, शारीरिक (अने मानसिक) वेदना, साता अने दुःखा वेदना, तथा आभ्युपगमिकी अने औपक्रमिकी वेदना, अने निदा-विवेकसहित अने अनिदा-विवेकरहित वेदना जाणवी. बधा जीवो साता अने असाता, सुखा, दुःखा अने अदुःखसुखा रूप वेदना वेदे छे. विकलेन्द्रियो-एकेन्द्रियादि मनरहित वेदना वेदे छे अने बाकीना जीवो बन्ने प्रकारनी शारीरिक अने मानसिक वेदना वेदे छे.

ए प्रमाणे चोत्रीशमुं पद कह्युं, हवे पांत्रीशमा पदनो प्रारंभ कराय छे. एनो संबन्ध आ प्रमाणे छे-पूर्वेना पदमां वेदना परिणाम विशेषरूप प्रवीचार कह्यो अने आ पदमां गतिना परिणाम विशेष वेदनानुं प्रतिपादन करवानुं छे. तेमां प्रारंभमां सकल वक्तव्यताना संग्रहनुं प्रतिपादन करनार आ बे द्वार गाथाओ छे—'सीया य दव्व' इत्यादि' प्रथम शीता-शीत वेदना, 'च' शब्दथी उष्ण वेदना अने शीतोष्ण वेदना कहेवानी छे. त्यार पछी द्रव्य, क्षेत्र काल अने भावने आश्रयी वेदना कहेवानी छे. त्यार पछी शारीरी-शरीर संबन्धी वेदना अने उपलक्षणथी मानसी-मन संबन्धी वेदना कहेवानी छे. त्यार बाद साता अने दुःखा वेदना भेदसहित कहेवा योग्य जाणवी. ते पछी आभ्युपगमिकी-स्वयं व्रत-नियमादिना अभ्युपगम-स्वीकार करवा वडे थयेली वेदना अने औपक्रमिकी-वेदनीय कर्मना

१. कइविहा णं भंते ! वेदणा पन्नत्ता ? गोयमा ! तिविहा वेदणा पन्नत्ता, तंजहा–सीता, उसिणा, सीतोसिणा । नेरइया णं भंते ! किं सीतं वेदणं वेदेंति, उसिणं वेदणं वेदेंति, सीतोसिणं वेदणं वेदेंति ? गोयमा ! सीतंपि वेदणं वेदेंति, उसिणंपि वेदणं वेदेंति, नो सीतोसिणं वेदणं वेदेंति । केई एक्केक्कपुढवीए वेदणाओ भ-

१. हे भगवन् ! केटला प्रकारनी वेदना कही छे ? हे गौतम ! त्रण प्रकारनी वेदना कही छे. ते आ प्रमाणे—शीत, उष्ण अने शीतोष्ण वेदना. हे भगवन् ! नैरयिको शुं शीतवेदना वेदे छे, उष्णवेदना वेदे छे के शीतोष्णवेदना वेदे छे ? हे गौतम ! शीतवेदना वेदे छे, उष्णवेदना वेदे छे. परन्तु शीतोष्ण वेदना वेदता नथी. कोइ आचार्य एक एक पृथिवीने विशे वेदना कहे छे. हे भगवन् !

उदय वडे थयेली वेदना कहेवा योग्य छे. ते पछी निदा अने अनिदारूप वेदना कहेवानी छे. साता अने सुखादिनी विशेषता तथा आभ्युपगमिकी आदि शब्दोनो अर्थ आगळ कहेवामां आवशे. सातादि वेदनाने आश्रयी जे विशेषता कहेवानी छे तेनो संग्रह करनारी बीजी गाथा छे—'सायमसायं' इत्यादि. बधा संसारी जीवो साता, असाता अने च शब्दथी साता-असाता बन्ने प्रकारनी वेदना वेदे छे. तथा सुखा, दुःखा अने अदुःखासुखा वेदनाने वेदे छे. तथा विकलेन्द्रियो-एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रियो, अहीं तु शब्द अधिकार रूप अर्थनो सूचक होवाथी अने असंज्ञी पंचेन्द्रियो 'मानसरहितां' मनरहित वेदना वेदे छे. बाकीना जीवो बे प्रकारनी शरीर अने मनहेतुक शारीरिक, मानसिक अने ते बन्ने प्रकारनी वेदना वेदे छे. आ द्वार गाथामां निदा अने अनिदा वेदनाना भेदनो संग्रह कर्यो नथी. कारण के सूत्रनी गति विचित्र छे.

१. तेमां 'उद्देशना क्रमने अनुसरी निर्देश थाय छे' ए न्यायथी प्रथम शीतादि वेदनानुं प्रतिपादन करवा माटे सूत्रकार कहे छे- 'कइविहा णं भंते !' इत्यादि. हे भगवन् ! केटला प्रकारनी वेदना कही छे ? इत्यादि, 'शीता' शीत पुद्गलोना संबन्धथी उत्पन्न थयेली

णंति । रयणप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! पुच्छा । गोयमा ! नो सीतं वेदणं वेदेंति, उसिणं वेदणं वेदेंति, नो सीतोसिणं वेदणं वेदेंति, एवं जाव वालुयप्पभापुढविनेरइया। पंकप्पभापुढविनेरइयाणं पुच्छा । गोयमा ! सीतंपि वेदणं वेदेंति, उसिणंपि वेदणं वेदेंति, नो सीतोसिणं वेदणं वेदेंति । ते बहुयतरागा जे उसिणं वेदणं वेदेंति, ते थोवतरागा जे सीतं वेदणं वेदेंति । धूमप्पभाए एवं चेव दुविहा, नवरं ते बहुतरागा जे सीतं वेदणं वेदेंति, ते

रत्नप्रभापृथिवीना नैरयिको संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! तेओ शीतवेदना वेदता नथी, उष्णवेदना वेदे छे अने शीतोष्ण वेदना वेदता नथी. ए प्रमाणे वालुका पृथिवीना नैरयिको सुधी जाणवुं. पंकप्रभा पृथिवीना नैरयिको संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! तेओ शीतवेदना वेदे छे अने उष्ण वेदना पण वेदे छे,पण शीतोष्ण वेदना वेदता नथी.जेओ उष्णवेदना वेदे छे तेओ घणा छे अने जेओ शीतवेदना वेदे छे तेओ थोडा छे. धूमप्रभाने विशे एम बन्ने प्रकारनी वेदना जाणवी. परन्तु जे शीतवेदना वेदे छे ते घणा छे अने जे उष्ण वेदना वेदे

शीत वेदना. ए प्रमाणे उष्ण वेदना समजवी. जे भिन्न भिन्न अवयवमां शीत अने उष्ण पुद्गलना संबन्धथी शीत अने उष्ण वेदना थाय ते शीतोष्ण वेदना. ए त्रणे प्रकारनी वेदनानो नैरयिकादि चोवीश दंडकना क्रमथी विचार करे छे—'नेरइया णं' इत्यादि. हे भगवन् ! नैरयिको शीत वेदना वेदे छे ? इत्यादि. तेमां प्रथमनी त्रण नरक पृथिवीमां नैरयिको उष्ण वेदना वेदे छे. ते नारको शीतयोनिवाळा छे अने तेना आश्रयभूत जे नरकावासो छे ते चो तरफ जगत्प्रसिद्ध खेरना अंगारा करतां अधिक अने घणा तापवाळा उष्ण पुद्गलोथी उत्पन्न थयेला छे. पंकप्रभा नामे चोथी नरकपृथिवीमां केटलाक नैरयिको उष्ण वेदना वेदे छे अने केटलाएक नैरयिको शीत वेदनानो अनुभव करे छे. कारण के त्यांना नरकावासो शीत अने उष्णना भेदथी बे प्रकारना छे. तेमां केवळ जे उष्णवेदना अनुभवे छे ते घणा छे, कारण के घणा नरकावासोमां उष्णवेदनानो सद्भाव छे. बीजा जे शीत वेदनानो अनुभव करे छे ते थोडा छे. कारण के अत्यंत

थोवतरागा जे उसिणं वेदणं वेदेंति। तमाए य तमतमाए य सीयं वेदणं वेदेंति, नो उसिणं वेदणं वेदेंति, नो सीतोसिणं वेदणं वेदेंति, । असुरकुमाराणं पुच्छा । गोयमा ! सीतंपि वेदणं वेदेंति, उसिणंपि वेदणं वेदेंति, सीतोसिणंपि वेदणं वेदेंति, एवं जाव वेमाणिया ।

ते थोडा छे. तमा अने तमतमामां शीत वेदना वेदे छे पण उष्णवेदना अने शीतोष्ण वेदना वेदता नथी. असुरकुमारो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! तेओ शीत वेदना वेदे छे, उष्ण वेदना वेदे छे अने शीतोष्ण वेदना पण वेदे छे. ए प्रमाणे वैमानिको सुधी जाणवुं.

थोडा नरकावासोमां शीत वेदनानो संभव छे. धूमप्रभा पृथिवीमां केटलाएक शीत वेदनावाळा अने केटलाएक उष्ण वेदनावाळा छे, परन्तु शीत वेदनावाळा घणा छे, कारण के घणा नरकवासोमां शीत वेदनानो संभव छे अने थोडा उष्ण वेदनावाळा छे, कारण के केटलाक नरकावासोमां उष्ण वेदना होय छे. नीचेनी बन्ने पृथिवीमां नैरयिको शीत वेदनानो ज अनुभव करे छे. कारण के त्यांना बधा नैरयिको उष्ण योनिवाळा छे अने नरकावासो अनुपम शीतलतावाळा छे. अहीं सुधीनुं सूत्र प्राचीन आचार्योमां मतभेद विना संभळाय छे. केटलाएक आचार्यो आ संबन्धे अधिक पण सूत्र कहे छे. तेथी तेनो मत कहे छे—'केई एकेकीए पुढवीए वेयणं भणंति' केटलाएक आचार्यो एक एक पृथिवीमां प्रश्न अने उत्तर रूपे वेदना कहे छे. तेओ जे प्रमाणे कहे छे ते प्रमाणे बतावे छे—'रयणप्पभ' इत्यादि सूत्र सुगम छे. ए प्रमाणे नैरयिकोनी शीतादि वेदनानो विचार कर्यो. हवे असुरकुमारो संबन्धे वेदनानो विचार करता सूत्रकार कहे छे—'असुरकुमाराणं पुच्छा'-असुरकुमारोने शीतादि वेदनाना विषयमां प्रश्न सूत्र कहेवुं—'असुरकुमारा णं भंते ! किं सीयं वेदणं वेयंति, उसिणं वेदणं वेयंति, सीओसिणं वेयणं वेयन्ति ?' असुरकुमारो शीत वेदना अनुभवे छे, उष्ण वेदना अनुभवे छे के शीतोष्ण वेदना अनुभवे छे ? भगवान् कहे छे—'हे गौतम' इत्यादि. तेओ शीत वेदना पण वेदे छे. ज्यारे तेओ शीतल जळथी भरेला द्रहादिमां स्नानादि करे छे. उष्ण वेदना पण वेदे छे, ज्यारे कोइ महाऋद्धिवाळो, तेनी जातनो के अन्य जातिनो देव कोपना आवे-

२. कतिविहा णं भंते ! वेदणा पन्नत्ता ? गोयमा ! चउव्विहा वेदणा पन्नत्ता, तंजहा–दव्वतो खेत्ततो कालतो
भावतो । नेरइया णं भंते ! किं दव्वतो वेदणं वेदेंति, जाव किं भावतो वेदणं वेदेंति ? गोयमा ! दव्वओवि

२. हे भगवन् ! केटला प्रकारनी वेदना कही छे ? हे गौतम ! चार प्रकारनी वेदना कही छे. ते आ प्रमाणे–द्रव्यथी, क्षेत्रथी,

शथी विरूप दृष्टि वडे जोतो शरीरमां संताप उत्पन्न करे छे, जेम प्रथम थयेला ईशानेन्द्रे वलीचंचा राजधानीमां वसता असुरकुमारोने संताप उत्पन्न
कर्यो हतो. अथवा वीजी रीते तेवा प्रकारना उष्ण पुद्गलोना संबन्धथी उष्ण वेदनानो अनुभव करता जाणवा. ज्यारे जुदा जुदा अव-
यवमां शीत पुद्गलोनो अने उष्ण पुद्गलोनो संवन्ध थाय त्यारे शीतोष्ण वेदनानो अनुभव करे छे. (प्र०)—उपयोग जीवोने तेवा प्रकारना
स्वभावथी अनुक्रमे होय छे, तो अहीं शीत अने उष्ण वेदनानो अनुभव एक साथे केम कहो छो ? (उ०)—अहीं पण वेदनानो अनुभव
तेवा प्रकारना जीवस्वभावथी अनुक्रमे ज थाय छे. केवळ शीत अने उष्ण वेदनाना कारणभूत पुद्गलोनो संवन्ध एक काळे थाय छे,
माटे सूक्ष्म अने जलदी थवाना स्वभाववाळा उपयोगना क्रमनी अपेक्षा कर्या सिवाय जे प्रमाणे तेओ एक काळे वेदता होय एम माने
छे ते प्रमाणे प्रतिपादन करेलुं छे, तेमां कोइ प्रकारनो दोष नथी. कारण के सूत्र सामान्यपणे प्रवृत्त थयेलुं छे. 'एवं जाव वेमाणिया'
ए प्रमाणे असुरकुमारोने कह्या प्रमाणे वैमानिको सुधी सूत्र कहेवुं. ते आ प्रमाणे—'हे भगवन् ! पृथिवीकायिको शुं शीत वेदना वेदे
छे, उष्ण वेदना वेदे छे के शीतोष्ण वेदना वेदे छे ? हे गौतम ! शीत वेदना पण वेदे छे, उष्ण वेदना पण वेदे छे, अने शीतोष्ण
वेदना पण वेदे छे.' इत्यादि. तेमां पृथिवीकायिकादि मनुष्य पर्यन्त हिमादिना पडवाथी शीत वेदनानो अनुभव करे छे. अग्नि
वगेरेना संवन्धमां उष्ण वेदनानो अने जुदा जुदा अवयवमां शीत अने उष्ण पुद्गलोना संवन्धमां शीतोष्ण वेदनानो अनुभव करे छे. व्य-
न्तर ज्योतिष्क अने वैमानिको असुरकुमारनी पेठे विचारवा.

२. शीतादि भेदथी त्रण प्रकारनी वेदना कही, हवे ते वेदना अन्य प्रकारे कहेवानी इच्छावाळा सूत्रकार प्रश्न अने उत्तर कहे छे–

वेदणं वेदेंति, जाव भावओवि वेदणं वेदेंति, एवं जाव वेमाणिया। कतिविहा णं भंते! वेदणा पन्नत्ता? गोयमा! तिविहा वेदणा पन्नत्ता, तंजहा-सारीरा, माणसा, सारीरमाणसा। नेरइया णं भंते! किं सारीरं वेदणं वेदेंति, माणसं वेयणं वेदेंति, सारीरमाणसं वेदणं वेदेंति? गोयमा! सारीरंपि वेदणं वेदेंति, माणसंपि वेदणं वेदेंति, सारीरमाणसंपि वेदणं वेदेंति। एवं जाव वेमाणिया, नवरं एगिंदियविगलिंदिया सारीरं वेदणं वेदेंति, नो माणसं

काळथी अने भावथी. हे भगवन्! नैरयिको शुं द्रव्यथी वेदना वेदे छे? यावत् शुं भावथी वेदना वेदे छे? हे गौतम! द्रव्यथी पण वेदना वेदे छे, यावत् भावथी पण वेदना वेदे छे. ए प्रमाणे वैमानिको सुधी जाणवुं. हे भगवन्! केटला प्रकारनी वेदना कही छे? हे गौतम! त्रण प्रकारनी वेदना कही छे. जेमके शारीरीक, मानसिक अने शारीरीक-मानसिक वेदना. हे भगवन्! नैरयिको शारीरीक वेदना वेदे छे, मानसिक वेदना वेदे छे के शरीरीक अने मानस बन्ने वेदना वेदे छे? हे गौतम! नैरयिको शारीरीक वेदना पण वेदे

'कइविहा णं भंते'! इत्यादि. हे भगवन्! केटला प्रकारनी वेदना कही छे? इत्यादि. अहीं वेदना द्रव्य, क्षेत्र, काळ अने भावनी सामग्रीथी उत्पन्न थाय छे, कारण के सर्व वस्तु द्रव्यादि सामग्रीना वशथी उपजे छे. तेमां ज्यारे आ प्राणीनी वेदना पुद्गल द्रव्यना संबन्धने आश्रयी विचारीए त्यारे द्रव्यथी वेदना थाय छे माटे द्रव्य वेदना. नारकादिना उत्पत्तिक्षेत्रने आश्रयी चिन्तन-विचार कराय त्यारे क्षेत्रवेदना, नारकादि भवनी काळना संवन्ध वडे विवक्षा करातो होय त्यारे काळ वेदना अने वेदनीय कर्मना उदयथी उत्पन्न थवा वडे विचार करातो होय त्यारे भाववेदना. ए चारे प्रकारनी वेदनानो चोवीश दण्डकना क्रमथी विचार करे छे—'नेरइया णं भंते'! किं दव्वतो वेयणं वेदन्ति'—हे भगवन्! नैरयिको शुं द्रव्यथी वेदना वेदे छे'—इत्यादि बधुंय सूत्र सुगम छे. हवे अन्य प्रकारे वेदनानुं प्रतिपादन करवानी इच्छावाळा सूत्रकार प्रश्न अने उत्तर सूत्र कहे छे—'कइविहा णं भंते'! 'हे भगवन्! वेदना केटला प्रकारे छे? इत्यादि. शरीरमां थयेली शा-

वेदणं वेदेंति, नो सारीरमाणसं वेदणं वेदेंति। कइविहा णं भंते! वेयणा पन्नत्ता? गोयमा! तिविहा वेयणा पन्नत्ता,तंजहा-साता,असाता,सातासाता। नेरइया णं भंते! किं सायं वेदणं वेदंति, असातं वेदणं वेदेंति, सायासायं वेदणं वेदेंति? गोयमा! तिविहंपि वेदणं वेदेंति, एवं सव्वजीवा जाव वेमाणिया। कतिविहा णं भंते! वेदणा पन्नत्ता? गोयमा! तिविहा वेदणा पन्नत्ता, तंजहा-दुक्खा, सुहा, अदुक्खसुहा। नेरइया णं भंते! किं दुक्खं वेदणं

छे, मानस वेदना पण वेदे छे अने शारीरीक अने मानसिक बन्ने वेदना पण वेदे छे. ए प्रमाणे वैमानिको सुधी जाणवुं. परन्तु एकेन्द्रियो अने विकलेन्द्रियो शारीरीक वेदना वेदे छे, पण मानसिक वेदना अने शारीरीक-मानसिक वेदना वेदता नथी. हे भगवन्! केटला प्रकारनी वेदना कही छे? हे गौतम! त्रण प्रकारनी वेदना कही छे. ते आ प्रमाणे-साता, असाता अने साता-असाता. हे भगवन्! नैरयिको शुं साता वेदना वेदे छे, असाता वेदना वेदे छे के साता अने असाता बन्ने प्रकारनी वेदना वेदे

रीरीक वेदना अने मनमां उत्पन्न थयेली मानसी वेदना अने शरीर अने मन बन्नेने विशे थयेली शारीर-मानसी वेदना कहेवाय छे. अहीं कर्मधारय समासमां पूर्व पदनो पुंवद्भाव थयो छे. ए वेदनानो चोवीश दण्डकना क्रमथी विचार करे छे-नेरइया णं भंते! किं सारीरं वेयणं वेदंति,-'हे भगवन्! नैरयिको शुं शारीर-शरीर संबन्धी वेदना वेदे छे'? इत्यादि. तेमां ज्यारे परस्पर उदीरणा करवाथी, परमाधार्मिकोए उत्पन्न करवाथी के क्षेत्रना प्रभावथी शरीर विशे पीडानो अनुभव करे छे त्यारे शारीरीक वेदना वेदे छे. ज्यारे केवळ पछीना भवने अनुसरी मनमां दुःखनो विचार करे छे, तथा दुष्कर्म करनार पोताने अनुसरी अतिशय पश्चात्ताप करे छे त्यारे मानसी-मन संबन्धी वेदना वेदे छे. ज्यारे विवक्षित तेटला काळमां शरीर विशे पीडानो अनुभव करे अने एटला काळ सुधी मन विशे उपर कह्या प्रमाणे एक साथे पीडानो अनुभव करे त्यारे एटला काळनी एक विवक्षा करी शारीर-मानसी वेदना अनुभवे छे. अहीं

वेदेंति पुच्छा। गोयमा! दुक्खंपि वेदणं वेदेंति, सुहंपि वेदणं वेदेंति, अदुक्खमसुहंपि वेदणं वेदेंति, एवं जाव वेमाणिया।

छे ? हे गौतम! त्रणे प्रकारनी वेदना वेदे छे. एम सर्व जीवो यावत् वैमानिको सुधी जाणवा. हे भगवन्! केटला प्रकारनी वेदना कही छे ? हे गौतम! दुःखा, सुखा अने अदुःखसुखा. हे भगवन्! नैरयिको शुं दुःखा वेदना वेदे छे-इत्यादि प्रश्न. हे गौतम! दुःखा वेदना पण वेदे छे, सुखा वेदना पण वेदे छे अने अदुःखसुखा वेदना पण वेदे छे, ए प्रमाणे वैमानिको सुधी जाणवुं.

पण वेदनानो अनुभव अनुक्रमे ज थाय छे. केवळ विवक्षित तेटला काळमां शरीर विशे पीडानो अनुभव करे छे अने मनमां पण एटला काळ सुधी पीडा अनुभवे छे ते एकपणे विवक्षा करी एक साथे शरीर अने मननी पीडानो अनुभव कह्यो छे माटे तेमां दोष नथी. ए प्रमाणे नैरयिकोने कह्या प्रमाणे सूत्र वैमानिक सुधी जाणवुं. परन्तु एकेन्द्रियो अने विकलेन्द्रियो शारीरिक वेदना वेदे छे पण मानसिक वेदना वेदता नथी. कारण के तेओने मन नथी, तेथी तेने अनुसारे ते संबन्धे सूत्र न कहेवुं.

हवे अन्य प्रकारे वेदना कहेवानी इच्छावाळा सूत्रकार प्रश्न अने उत्तर सूत्र कहे छे—'कइविहा णं भंते' ! भगवन्! केटला प्रकारे वेदना कही छे ? इत्यादि. तेमां साता-सुखरूप वेदना, असाता दुःखरूप वेदना अने साता-असाता—सुख-दुःखरूप वेदना, एनो ज नैरयिकादि चोवीश दण्डकना क्रमथी विचार करे छे—'नेरइया णं भंते' ! इत्यादि. 'हे भगवन्! नैरयिको शुं सातावेदना वेदे छे' ? इत्यादि. नारको तीर्थंकरना जन्मादि समये सातावेदना वेदे छे अने बाकीना समये असाता वेदना वेदे छे. ज्यारे पूर्व भवनो मित्र देव के दानव वचनामृतो वडे शान्त करे त्यारे मनमां साता अने शरीरे क्षेत्रना प्रभावथी असाता अनुभवे छे. अथवा ज्यारे मनमां ज तेना दर्शनथी अने तेना वचन सांभळवाथी साता अने पश्चात्तापना अनुभवथी असाता अनुभवे छे त्यारे साता-असाता वेदनानो अनुभव करे छे. अहीं पण तेटला विवक्षित काळने एक विवक्षी साता अने असातानो अनुभव एक काळे कह्यो छे, पण वास्तविक रीते ते अनुक्रमे

३. कतिविहा णं भंते ! वेदणा पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा वेयणा पन्नत्ता । तंजहा–अब्भोवगमिया य उवक्कमिया य । नेरइया णं भंते ! अब्भोवगमियं वेदणं वेदेंति, उवक्कमियं वेदणं वेदेंति ? गोयमा ! नो अब्भो-

३. हे भगवन् ! केटला प्रकारनी वेदना कही छे ? हे गौतम ! बे प्रकारनी वेदना कही छे. ते आ प्रमाणे–आभ्युपगमिकी अने औपक्रमिकी. हे भगवन् ! नैरयिको आभ्युपगमिकी वेदना वेदे छे के औपक्रमिकी वेदना वेदे छे ? हे गौतम ! तेओ आभ्युपगमिकी

ज जाणवो. 'एवं' इत्यादि. ए प्रमाणे—नैरयिकोने कह्या प्रमाणे वैमानिक सुधी बधा जीवो कहेवा. तेमां पृथिव्यादि जीवो ज्यां सुधी तेने उपद्रव प्राप्त न थाय त्यां सुधी तेओ साता वेदना वेदे छे. उपद्रव प्राप्त थतां असाता वेदना अनुभवे छे अने जुदा जुदा अवयवमां उपद्रव होय अने न होय त्यारे साता अने असाता वेदना वेदे छे. व्यन्तर, ज्योतिष्क अने वैमानिक देवो सुख अनुभवता साता वेदना, च्यवनादि समये असाता वेदना अने बीजानी संपत्तिने जोवाथी मात्सर्यादिनो अनुभव अने पोतानी प्रिय देवीना आलिंगनादिनो अनुभव एक साथे थाय त्यारे साता असाता वेदना वेदे छे. पुनः अन्य प्रकारे वेदनानुं प्रतिपादन करता सूत्रकार प्रश्न अने उत्तर सूत्र कहे छे—'कइविहा णं भंते' ! 'हे भगवन् ! केटला प्रकारे वेदना कही छे' ? इत्यादि. जे वेदना एकान्ते दुःखरूपे कही शकाय नहि, कारण के सुख पण होय छे, तेम सुखरूप पण न कही शकाय, कारण के दुःख पण होय छे, ते अदुःखसुखा–सुखदुःखात्मिका वेदना कहेवाय छे. (प्र०)—साता अने असाता अने सुखा अने दुःखामां शी विशेषता छे ? (उ०)—जे अनुक्रमे उदयमां आवेला वेदनीय कर्मना पुद्गलना अनुभवथी सुख दुःख थाय ते साता अने असाता कहेवाय छे. जे अन्य वडे उदीराती वेदना रूप साता असाता ते सुखा अने दुःखा कहेवाय छे. एज वेदनानो चोवीश दंडकना अनुक्रमथी विचार करे छे—'नेरइया णं भंते' !–हे भगवन् ! नैरयिको दुःखा–दुःख रूप वेदना वेदे छे ? इत्यादि.

३. अन्य प्रकारे वेदनानोज विचार करे छे—कइविहा णं भंते' ! 'हे भगवन् ! केटला प्रकारे वेदना कही छे ? इत्यादि. तेमां आ-

वगमियं वेदणं वेदेंति, उवक्कमियं वेदणं वेदेंति, एवं जाव चउरिंदिया । पंचिंदियतिरिक्खजोणिया मणूसा य दुविहंपि वेदणं वेदेंति, वाणमंतरजोतिसियवेमाणिया जहा नेरइया ॥

४. कतिविहा णं भंते ! वेदणा पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा वेदणा पन्नत्ता, तंजहा—निदाय अणिदाय। नेरइया

वेदना वेदता नथी, पण औपक्रमिकी वेदना वेदे छे. ए प्रमाणे चउरिन्द्रिय सुधी जाणवुं. पंचेन्द्रिय तिर्यंचो अने मनुष्यो बन्ने प्रकारनी वेदना वेदे छे. व्यन्तर, ज्योतिष्क अने वैमानिको नैरयिकोनी पेठे समजवा.

४. हे भगवन् ! केटला प्रकारनी वेदना कही छे ? हे गौतम ! बे प्रकारनी वेदना कही छे. ते आ प्रमाणे—निदा अने अनिदा.

भ्युपगमिकी एटले जे स्वयं अभ्युपगम्यते-अङ्गीकार कराय. जेम साधुओ वडे केशनुं लुंचन, आतापना इत्यादि वडे शरीरने कष्ट अपाय छे, कारण के अभ्युपगमेन निर्वृत्ता अभ्युपगम-स्वयं केशनो लोच वगेरे कष्टनुं अङ्गीकार करवुं, ते वडे उत्पन्न थयेली ते आभ्युपगमिकी एवी तेनी व्युत्पत्ति थाय छे. उपक्रम-स्वयमेव पासे जवुं, अथवा उदीरणा करण वडे पासे लाववुं ,ते वडे उत्पन्न थयेली ते औपक्रमिकी. स्वयं उदयमां आवेला के उदीरणा करणथी उदयमां आवेला वेदनीय कर्मना विपाकना अनुभव वडे उत्पन्न थयेली वेदना औपक्रमिकी वेदना कहेवाय छे. तेमां पंचेन्द्रिय तिर्यंचो अने मनुष्यो बन्ने प्रकारनी वेदना वेदे छे. कारण के सम्यग्दृष्टि पंचेन्द्रिय तिर्यंचो अने मनुष्योने कर्मनो क्षय करवा माटे आभ्युपगमिकी वेदनानो संभव छे. बाकीना जीवो औपक्रमिकी ज वेदना वेदे छे, पण आभ्युपगमिकी वेदना वेदता नथी. पृथिवी, पाणी, अग्नि, वायु, वनस्पति, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रियोने मननो अभाव होवाने लीधे विवेकना अभावथी तेवा प्रकारे आभ्युपगमिकी वेदनानी प्राप्ति नथी. नारक, भवनपति, व्यन्तर, ज्योतिष्क अने वैमानिकोने तेवा प्रकारना भवस्वभावथी आभ्युपगमिकी वेदना नथी. ए ज सूत्रकार बतावे छे—'नेरइया णं भंते' ! 'हे भगवन् ! नैरयिको आभ्युपगमिकी वेदना वेदे छे' इत्यादि सुगम छे.

णं भंते ! किं निदायं वेयणं वेदेंति, अणिदायं वेदणं वेदेंति ? गोयमा ! निदायंपि वेदणं वेदेंति, अणिदायंपि वेदणं वेदेंति । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–'नेरइया निदायंपि अनिदायंपि वेदणं वेदेंति' ? गोयमा ! नेरइया दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–सण्णीभूया य असण्णीभूया य । तत्थ णं जे ते सण्णिभूया ते णं निदायंपि वेदणं वेदेंति, तत्थ णं जे ते असण्णीभूता ते णं अणिदायं वेदणं वेदेंति, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं नेरइया निदायंपि

हे भगवन् ! नैरयिको निदा वेदना वेदे छे के अनिदा वेदना वेदे छे ? हे गौतम ! निदा वेदना वेदे छे अने अनिदा वेदनाने पण वेदे छे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के नैरयिको निदा अने अनिदा वेदनाने पण वेदे छे ? हे गौतम ! नैरयिको बे प्रकारना छे–संज्ञीभूत अने असंज्ञीभूत. तेमां जेओ संज्ञीभूत छे तेओ निदा वेदनाने वेदे छे अने जे असंज्ञीभूत छे ते अनिदा वेदना वेदे छे. ए प्रमाणे स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं. पृथिवीकायिको संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! तेओ निदा वेदना वेदता नथी, पण अ-

---

४. फरी अन्य प्रकारे वेदनानुं ज प्रतिपादन करवानी इच्छावाळा सूत्रकार कहे छे—'कतिविहा णं भंते' ! हे भगवन् ! केटला प्रकारनी वेदना कही छे ? इत्यादि. वेदनाना बे प्रकार छे–निदा अने अनिदा. नितरां निश्चितं वा सम्यग् दीयते चित्तमस्यामिति निदा–जेमां अत्यन्त अथवा निश्चित चित्त अपाय ते निदा एटले सामान्य रीते मनना व्यापारवाळी के सम्यग् विवेकवाळी वेदना. ते सिवाय बीजी मनना व्यापाररहित के सम्यक् प्रकारना विवेक रहित वेदना ते अनिदा. एनुं ज चोवीश दण्डकना क्रमथी प्रतिपादन करे छे—'नेरइया णं' इत्यादि, 'हे भगवन् ! नैरयिको निदा वेदना वेदे छे के अनिदा वेदना वेदे छे ? इत्यादि. नैरयिको बे प्रकारना छे–संज्ञीभूत अने असंज्ञीभूत. तेमां जेओ संज्ञीथी आवी उत्पन्न थाय छे ते संज्ञीभूत अने जेओ असंज्ञीथी आवी उत्पन्न थाय छे ते असंज्ञीभूत नैरयिको कहेवाय छे. असंज्ञी नैरयिको पूर्वे अन्य जन्ममां करेलुं कंइपण शुभ, अशुभ के वैरादिनुं स्मरण करता नथी, कारण के स्मरण तेनुंज थाय छे के जे तीव्र सङ्कल्प वडे

वेयणं वेदेंति अणिदायंपि वेदणं वेदेंति, एवं जाव थणियकुमारा। पुढविकाइयाणं पुच्छा। गोयमा! नो निदायं वेदणं वेदेंति, अणिदायं वेदणं वेदेंति। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुचइ-'पुढवीकाइया नो निदायं वेदणं वेदेंति, अनिदायं वेदणं वेदेंति'? गोयमा! पुढविकाइया सव्वे असण्णी असण्णिभूयं अणिदायं वेदणं वेदेंति, से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुचइ-पुढविकाइया नो निदायं वेदणं वेदेंति, अणिदायं वेदणं वेदेंति, एवं जाव चउरिंदिया। पंचिं-

---

निदा वेदना वेदे छे. हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो के पृथिवीकायिको निदा वेदना वेदता नथी, पण अनिदा वेदना वेदे छे? हे गौतम! पृथिवीकायिको बधां असंज्ञी छे अने तेओ असंज्ञीभूत अनिदा वेदना वेदे छे. ते हेतुथी हे गौतम! एम कहुं छुं के पृथिवीकायिको निदा वेदना वेदता नथी, पण अनिदा वेदना वेदे छे. एम चउरिन्द्रिय सुधी जाणवुं. पंचेन्द्रिय तिर्यंचो, मनुष्यो अने व्यन्तरो नैरयिकोनी पेठे जाणवा. ज्योतिष्क देवो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम! तेओ निदा वेदनाने पण वेदे छे अने अनिदा वेद-

---

करेलुं होय, परन्तु पूर्वना असंज्ञी भवमां मनरहित होवाथी तेओने तीव्र संकल्प होतो नथी, तेथी नैरयिको जे कांइपण वेदना वेदे छे ते अनिदा वेदना वेदे छे. कारण के तेने पूर्वना भवमां अनुभवेला विषयनुं स्मरण करवाने योग्य मननो असंभव छे. संज्ञीभूत नैरयिको पूर्वनुं बधुं स्मरण करे छे, माटे तेओ निदा वेदना वेदे छे. ए प्रमाणे असुरकुमारथी आरंभी स्तनितकुमार सुधीना भवनपतिओ कहेवा. कारण के तेओनी पण संज्ञी अने असंज्ञीथी उत्पत्ति थाय छे. पृथिवी, पाणी, अग्नि, वायु, वनस्पति, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रियो संमूर्छिम होय छे माटे मनरहित होवाथी अनिदा ज वेदना वेदे छे. 'पंचिंदियतिरिक्खजोणिया मणूसा वाणमंतरा जहा नेरइया' पंचेन्द्रिय तिर्यंचो, मनुष्यो अने व्यन्तरो नैरयिकोनी पेठे जाणवा. एटले जेम नैरयिको कह्या तेम तेओ निदा वेदना पण वेदे छे अने अनिदा वेदना पण वेदे छे-एम कहेवुं. शा हेतुथी एम वेदे छे? उत्तर—अहीं पंचेन्द्रिय तिर्यंचो अने मनुष्यो बे प्रकारना छे-जेमके

दियतिरिक्खजोणिया:मणूसा वाणमंतरा जहा नेरइया । जोइसियाणं पुच्छा। गोयमा! निदायंपि वेयणं वेदेंति, अणिदायंपि वेयणं वेदेंति! से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ–'जोइसिया निदायंपि वेदणं वेदेंति,अणिदायंपि वेयणं वेदेंति'? गोयमा! जोइसिया दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–माइमिच्छदिट्ठिउववण्णगा य अमाइसम्मदिट्ठिउववन्नगा य। तत्थ णं जे ते माइमिच्छदिट्ठिउववण्णगा ते णं अणिदायं वेयणं वेयंति, तत्थ णं जे ते अमाईसम्म-

---

नाने पण वेदे छे. हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो के 'ज्योतिष्को निदा वेदनाने पण वेदे छे अने अनिदा वेदनाने पण वेदे छे'? हे गौतम! ज्योतिष्क देवो बे प्रकारना छे. जेमके–मायी मिथ्यादृष्टि अने अमायी सम्यग्दृष्टि. तेमां जे मायी मिथ्यादृष्टि उत्पन्न थयेला छे तेओ अनिदा वेदना वेदे छे, अने जे अमायी सम्यग्दृष्टि उत्प थयेला छे तेओ निदा वेदना वेदे छे. ए हेतुथी हे गौतम! एम

संमूर्छिम अने गर्भज. तेमां जे संमूर्छिम छे तेओ मन रहित होवाथी अनिदा वेदना वेदे छे. जेओ गर्भज छे ते मनसहित छे माटे निदा वेदना अनुभवे छे. व्यन्तरो संज्ञीथी पण आवी उत्पन्न थाय छे अने असंज्ञीथी आवीने पण उत्पन्न थाय छे, तेथी नैरयिकनी पेठे निदा अने अनिदा वेदना अनुभवता जाणवा. 'जोइसिया णं' ज्योतिष्को संज्ञीथी आवीने ज उत्पन्न थाय छे, तेथी तेओने नैरयिकोने कह्या प्रमाणे निदा अने अनिदा वेदनानो संभव नथी. परन्तु बीजी रीते संभव छे ते प्रकारने जाणवानी इच्छावाळो शिष्य प्रश्न करे छे—'से केणट्ठेणं भंते!' हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो? इत्यादि सुगम छे. भगवान् उत्तर आपे छे—'हे गौतम' इत्यादि. ज्योतिष्को बे प्रकारना छे–मायीमिथ्यादृष्टिउपपन्नक. अने अमायीसम्यग्दृष्टि उपपन्नक. तेमां माया वडे बांधेलुं जे मिथ्यात्वादि कर्म ते पण कारण विशे कार्यना उपचारथी माया कहेवाय छे. माया जेओने छे ते मायी, आज हेतुथी मिथ्यात्वना उदयथी मिथ्या–विपरीत दृष्टि–वस्तुतत्त्वनी प्रतिपति–बोध जेओने छे ते मायीमिथ्यादृष्टि उत्पन्न थयेला कहेवाय छे. तेथी विपरीत अमायी सम्यग्दृष्टि कहेवाय

द्दिट्ठिउववन्नगा ते णं निदायं वेदणं वेदेंति, से एतेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ 'जोइसिया दुविहंपि वेदणं वेदेंति', एवं वेमाणियावि ॥

पण्णवणाए भगवईए पणतीसइमं वेयणापयं समत्तं ॥ ३५ ॥

कहुं छुं के ज्योतिष्को बन्ने प्रकारनी वेदना वेदे छे. ए प्रमाणे वैमानिको पण जाणवा.

प्रज्ञापना भगवतीमां पांत्रीशमुं वेदनापद समाप्त.

छे. तेमां जेओ मायीमिथ्यादृष्टि उत्पन्न थयेला छे तेओ मिथ्यादृष्टिपणाथी, व्रतविराधनाथी के अज्ञानतपथी 'अमे आ प्रकारे उत्पन्न थया छीए' एम जाणता नथी. तेथी सम्यक् प्रकारे यथावस्थित ज्ञानना अभावथी अनिदा वेदनानो अनुभव करे छे. जेओ अमायी सम्यग्दृष्टि उत्पन्न थयेला छे तेओ सम्यग्दृष्टिपणाथी यथावस्थित स्वरूप जाणे छे. तेथी जे कांइ वेदना वेदे छे ते बधी य निदा वेदना वेदे छे. 'एवं चेव वेमाणिया वि' ए प्रमाणे वैमानिको पण जाणवा. एटले ज्योतिष्कने कह्या प्रमाणे वैमानिको पण निदा अने अनिदा वेदना वेदे छे एम जाणवुं. कारण के तेओ सम्यग्दृष्टि अने मिथ्यादृष्टिना भेदथी बे प्रकारना छे.

श्रीमद् आचार्य मलयगिरिविरचित प्रज्ञापना टीकाना अनुवादमां पांत्रीशमुं वेदनापद समाप्त.

छत्तीसइमं समुग्घायपयं ।

वेयणकसायमरणे वेउव्वियतेयए य आहारे । केवलिए चेव भवे जीवमणुस्साण सत्तेव ।

छत्रीशमुं समुद्घात पद.

१ वेदना, २ कषाय, ३ मरण, ४ वैक्रिय, ५ तैजस, ६ आहारक अने ७ केवली समुद्घात ए सात समुद्घातो जीव अने मनुष्योने होय छे.

ए प्रमाणे पांत्रीशमा पदनी व्याख्या करी, हवे छत्रीशमा पदनो प्रारंभ थाय छे. तेनो आ संवन्ध छे—अहीं पूर्वना पदमां गतिना परिणामविशेषरूप वेदनानुं प्रतिपादन कर्युं, आ पदमां पण गतिना परिणामविशेषरूप समुद्घातनो विचार कराय छे. तेमां समुद्घातनी वक्तव्यता संवन्धे प्रारंभमां आ संग्रहणी गाथा कहेली छे—'वेयण' इत्यादि. अहीं सात समुद्घातो छे. ते आ प्रमाणे—'वेयणकसायमरणे' इति. वेदना, कषाय अने मरण ए त्रण पदनो समाहार द्वन्द्व समास छे. एटले ते विशे त्रण समुद्घातो छे. जेमके वेदना समुद्घात, कषायसमुद्घात अने मरणसमुद्घात, 'वेउव्विय'त्ति चोथो वैक्रियविषय समुद्घात, पांचमो तैजससमुद्घात, छट्ठो आहार-आहारकशरीर विषयक समुद्घात अने सातमो केवलिक-केवलीसंवन्धी समुद्घात छे. 'जीवमणुस्साणं सत्तेव'त्ति सामान्यथी जीवना विचारमां अने मनुष्यद्वारना विचारमां सात समुद्घात कहेवाना छे, पण न्यून नहि, कारण के जीव अने मनुष्यने विशे साते समुद्घातोनो संभव छे. 'सत्तेव' अहीं 'एव'कार परिमाणना अर्थमां छे. ए संवन्धे शाकटायन न्यासकार कहे छे—'एवोऽवधारणपृथक्त्वपरिमाणेषु' इति. एवकार अवधारण, पृथक्त्व अने परिमाणना अर्थमां छे. वाकीना द्वारोनो विचार करता ज्यां जेटला समुद्घातोनो संभव होय तेटला कहेवा. तेने सूत्रकार स्वयं आगळ कहेशे. आ प्रमाणे संग्रहणी गाथानो संक्षेपार्थ छे. समुद्घातनो शो शब्दार्थ छे?

उत्तर- सम्-एकीभाव-तन्मयता, ते वडे उत्-प्रबलपणे-अधिकपणे घात करवो. एकीभाव वडे अधिकपणे कर्मोनो घात करवो ते समुद्घात. कोनी साथे एकीभाव-तन्मयता होय छे? अर्थात् वेदनादि साथे एकीभाव होय छे. ते आ प्रमाणे-ज्यारे आत्मा वेदनादि समुद्घातने प्राप्त थयेलो होय छे त्यारे वेदनादिना अनुभवज्ञानवडे परिणत ज होय छे, अन्य ज्ञानवडे परिणत होतो नथी माटे वेदनादिना अनुभव ज्ञान साथे एकीभाव होय छे. अधिकपणे कर्मनो घात शी रीते थाय? उत्तर-अहीं वेदनादि समुद्घात वडे परिणत थयेलो आत्मा काळान्तरे अनुभव करवा योग्य वेदनादिना कर्मप्रदेशोने उदीरणा करण वडे आकर्षी उदयावलिकामां नांखी अनुभवी निर्जरे छे-क्षय करे छे, अर्थात् आत्मप्रदेशोनी साथे रहेला संक्लिष्ट कर्मोनो नाश करे छे. कारण के "पुव्वकयकम्मसाडणं तु निज्जरा" 'पूर्वे करेला कर्मनो नाश करवो ए निर्जरा' एवुं शास्त्रवचन छे. ते आ प्रमाणे-वेदनासमुद्घात असातावेदनीय कर्मने आश्रित छे, कषायसमुद्घात कषाय नामे चारित्रमोहनीय कर्मने आश्रित छे. मारणान्तिक समुद्घात अन्तर्मुहूर्त बाकी रहेला आयुषकर्मने आश्रित छे. वैक्रिय, तैजस अने आहारक समुद्घात अनुक्रमे वैक्रियशरीरनाम, तैजसशरीरनाम अने आहारकशरीर नामकर्मने आश्रित छे. केवलीसमुद्घात साता-असाता वेदनीय, शुभ-अशुभ नामकर्म अने उच्च-नीच गोत्र कर्मने आश्रित छे. तेमां वेदना समुद्घातने प्राप्त थयेलो आत्मा असातावेदनीय कर्मना पुद्गलोनो क्षय करे छे. ते आ प्रमाणे-वेदना वडे पीडित थयेलो जीव अनन्तानन्त कर्मस्कन्धो वडे वींटायेला आत्मप्रदेशोने शरीरथी बहार काढे छे अने ते प्रदेशो वडे मुख अने जठरादिना खाली भागने तथा कान अने स्कन्धादिना वच्चेना भागने पूरी लंबाइ अने विस्तारमां शरीरप्रमाण क्षेत्रने व्यापी अन्तर्मुहूर्त सुधी रहे छे, अने ते अन्तर्मुहूर्तमां घणा असातावेदनीय कर्मना पुद्गलोनो क्षय करे छे.

कषायसमुद्घातना परिणामवाळो आत्मा कषायनामे चारित्रमोहनीय कर्मपुद्गलोनो नाश करे छे. ते आ प्रमाणे-कषायना उदयथी व्याकुल थयेलो जीव आत्मप्रदेशोने बहार काढे छे अने ते प्रदेशो वडे मुख अने उदरादिना खाली भागने तथा कान अने स्कन्धादिनो वच्चेना

भागोने पूरी लंबाइ अने विस्तारमां शरीरप्रमाण क्षेत्रने व्यापीने रहे छे. ए प्रमाणे घणा कषायकर्मना पुद्गलोनो नाश [1]करे छे. एम मरणसमुद्घातने प्राप्त थयेलो आयुषकर्मना पुद्गलोनो [2]नाश करे छे. परन्तु मरणसमुद्घातने प्राप्त थयेलो पोताना प्रदेशोने बहार काढी मुख-उदरादिना खाली भागने तथा कान अने स्कन्धादिना वच्चेना भागने पूरी विस्तार अने जाडाइमां स्वशरीरप्रमाण अने लंबाइमां पोताना शरीर करतां अधिक जघन्यथी अंगुलनो असंख्यातमो भाग अने उत्कर्षथी असंख्याता योजनो सुधी एक दिशामां रहेला क्षेत्रने व्यापीने रहे छे एम कहेवुं. वैक्रियसमुद्घातने प्राप्त थयेलो जीव पोताना आत्मप्रदेशोने शरीरथी बहार काढी शरीरना विस्तार अने जाडाइ प्रमाण अने लंबाइमां संख्याता योजनप्रमाण दंड करी स्थूल पुद्गलोना क्रमथी वैक्रियशरीर नामकर्मना पुद्गलोनो पूर्वनी पेठे क्षय करे छे. ते संबन्धे कह्युं छे के "वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ, समोहणित्ता संखिज्जाइं जोयणाइं दंडं निसिरइ, निसिरित्ता अहाबायरपोग्गले परिसाडेइ"। वैक्रियसमुद्घात वडे समुद्घात करे छे-आत्मप्रदेशोने बहार काढे छे, समुद्घात करी संख्याता योजन प्रमाण दंड करे छे. दंड करी बादरपुद्गलोना क्रमथी एटले जेम जेम बादर होय तेवा पुद्गलोनो क्षय करे छे. ए प्रमाणे तैजस अने आहारक समुद्घातनो विचार करवो. परन्तु तैजससमुद्घात तेजोलेश्या मूकवाना समये तैजसनामकर्मना क्षयनुं कारण [3]छे. आहारक

१. समुद्घात समये कषायना मोहनीयना पुद्गलोने नाश करतो जीव तीव्र कषायना उदयथी बीजा घणा कषायमोहनीयना पुद्गलो ग्रहण करे छे.

२. अहीं एटली विशेषता छे के कोइ एक जीव एकवार मारणान्तिक समुद्घात करी नरकादिमां उत्पन्न थाय अने त्यां आहार करे तेनो परिणाम करे अने शरीर बांधे अने कोइ एक जीव समुद्घातथी के उत्पत्ति स्थानथी पाछो फरी पोताना शरीरमां आवी फरीवार मरणसमुद्घात करी नारकथी मांडी अनुत्तर सुधीना बधा स्थानोमां उपजे. जुओ भग० श० ६ उ० ६.

३. तेजोलेश्या मूकवाना समये विस्तार अने जाडाइमां शरीरप्रमाण अने लंबाइमां संख्याता योजन प्रमाण दंड करी पूर्वे बांधेला तैजस नाम कर्मना पुद्गलोनो क्षय करे छे अने बीजा तैजस पुद्गलो ग्रहण करी तेजोलेश्या मूके छे.

समुद्घातने प्राप्त थयेलो आहारकशरीर नामकर्मना पुद्गलोनो क्षय करे छे.' केवली समुद्घातने प्राप्त थयेलो केवली साता-असाता-वेदनीयादि कर्मना पुद्गलोनो नाश करे छे. ते जे रीते नाश करे छे ते प्रकारे शिष्य उपर अनुग्रह करवा माटे तेनो अहीं विचार करीए छीए—केवली समुद्घात आठ समयनो छे. ते समुद्घात करता केवलज्ञानी प्रथम समये जाडाइमां पोताना शरीरप्रमाण अने उंचो अने नीचो लोकान्त पर्यन्त आत्मप्रदेशोनो दंड करे छे. बीजे समये पूर्व अने पश्चिम अथवा दक्षिण अने उत्तर कपाट करे छे. त्रीजे समये मंथान करे छे. चोथे समये वच्चेना आंतरा पूरे छे. पांचमे समये आंतराओ संहरे छे. छट्ठे समये मंथान संहरे छे. सातमा समये कपाट संहरे छे अने आठमा समये पोताना शरीरमां आवी रहे छे. ते वात सूत्रकार पोते कहेवाना छे के 'पढमे समये दंडं करेइ, बीए कवाडं करेइ' इत्यादि. 'प्रथम समये दंड करे छे. बीजा समये कपाट करे छे'-इत्यादि. तेमां दंड करवाना समय पहेला जे पल्योपमना असंख्यातमा भागप्रमाण वेदनीय, नाम अने गोत्र कर्मनो स्थिति हती तेना बुद्धिथी असंख्याता भागो करवा, ते पछी दंड समये दंड करतो ते असंख्याता भागोनो क्षय करे छे अने एक असंख्यातमो भाग बाकी राखे छे. पूर्वे जे त्रण कर्मनो रस हतो तेना अनन्त भागो करवा अने पछी दंड समये १ असातावेदनीय, २-६ प्रथम सिवायना पांच संस्थान, ७-११ पांच संघयण, १२-१५ प्रशस्त वर्णादिचतुष्क, १६ उपघात, १७ अप्रशस्त विहायोगति, १८ दुःस्वर, १९ दुर्भग, २० अस्थिर, २१ अपर्याप्त, २२ अशुभ, २३ अनादेय, २४ अयशःकीर्ति अने २५ नीचगोत्र-ए पचीश प्रकृतिओना रसना अनन्त भागोनो नाश करे छे अने एक अनन्तमो भाग बाकी रहे छे. ते समये सातावेदनीय, २ देवगति, ३ मनुष्यगति, ४ देवानुपूर्वी, ५ मनुष्यानुपूर्वी, ६ पंचेन्द्रियजाति, ७-११ पांच

१. आहारकलब्धिवाळा चौद पूर्वधर अन्य क्षेत्रमां रहेला तीर्थंकरदर्शनादि कोइपण निमित्ते शरीर प्रमाण पहोळो अने स्थूल तथा संख्याता योजन प्रमाण लांबो आत्मप्रदेशोनो दंड करी पूर्वे बांधेला आहारक शरीरनाम कर्मना पुद्गलो खेरवी अने आहारक शरीर योग्य पुद्गलो ग्रहण करी आहारक शरीर करे छे.

शरीर, १२-१४ त्रण उपांग, १५ प्रथम संस्थान, १६ प्रथम संघयण, १७-२० प्रशस्त वर्णादि चतुष्क, २१ अगुरुलघु, २२ पराघात, २३ उच्छ्वास, २४ प्रशस्तविहायोगति, २५ त्रस, २६ बादर २७ पर्याप्त, २८ प्रत्येक, २९ आतप, ३० उद्द्योत, ३१ स्थिर, ३२ शुभ, ३३ सुभग, ३४ सुस्वर, ३५ आदेय, ३६ यशःकीर्ति, ३७ निर्माण, ३८ तीर्थंकर अने ३९ उच्चगोत्ररूप ओगणचाळीश प्रकृतिओनो अनुभाग अप्रशस्त प्रकृतिओना अनुभाग मध्ये प्रवेश करवा वडे नाश करे छे. ए समुद्घातनो प्रभाव छे. बाकी रहेली असंख्यातमा भागनी स्थिति अने अनन्तमा भागना रसना अनुक्रमे असंख्याता अने अनन्ता भागो करे छे. अने ते पछी बीजा कपाट करवाना समये स्थितिना असंख्याता भागोनो नाश करे छे अने एक भाग बाकी रहे छे. अनुभागना अनन्ता भागोना नाश करे छे अने एक भाग बाकी रहे छे. अहीं पण अप्रशस्त प्रकृतिना अनुभाग मध्ये प्रवेश करवा वडे प्रशस्त प्रकृतिओना अनुभागनो घात समजवो. ते पछी त्रीजा समये बाकी रहेली असंख्यातमा भागनी स्थिति अने अनन्तमा भागना अनुभागना फरीथी वुद्धि वडे अनुक्रमे असंख्याता अने अनन्ता भागो करीने ते पछी चोथा समये स्थितिना असंख्याता भागोनो नाश करे छे अने एक भाग बाकी रहे छे. अनुभागना पण अनन्ता भागोनो नाश करे छे अने एक भाग बाकी राखे छे. प्रशस्त प्रकृतिओना अनुभागनो घात पूर्वनी पेठे जाणवो. ए प्रमाणे स्थितिघातादि करता अने जेणे स्वप्रदेशो वडे सर्व लोकने व्याप्त कर्यो छे एवा केवली भगवानने वेदनीयादि त्रण कर्मनी स्थिति आयुष करतां संख्यातगुणी रहेली छे अने अनुभाग तो हजी पण अनन्तगुण छे. हवे चोथा समये बाकी रहेली असंख्यातमा भागनी स्थितिना अने अनन्तमा भागना रसना फरीथी पण वुद्धि वडे अनुक्रमे संख्याता अने अनन्ता भागो करे छे, ते पछी आंतराना संहार करवाना समये स्थितिना संख्याताभागोनो नाश करे छे अने एक सङ्ख्यातमो भाग बाकी रहे छे. अनुभागना अनन्ता भागोनो नाश करे छे अने एक भाग बाकी रहे छे. ए प्रमाणे ए दण्डादिना पांच समयमां प्रत्येक समये प्रत्येक कण्डक-खण्ड उकेरेलो-नाश पामेलो होय छे, कारण के समये समये स्थितिखण्ड अने अनुभागखण्डनो नाश करे छे. त्यार बाद छठ्ठा समयथी मांडी प्रयत्न मन्द थवाथी स्थितिकण्डक अने अनुभागकण्डकनो अन्तर्मुहूर्त काळमां विनाश करे छे, छठ्ठा समयथीं मांडी पछीना समयोमां प्रतिसमय कण्डकना एक एक

१. कति णं भंते ! समुग्घाया पन्नत्ता? गोयमा ! सत्त समुग्घाया पन्नत्ता, तंजहा–वेदणासमुग्घाते १, कसायसमुग्घाते २, मारणंतियसमुग्घाते ३, वेउव्वियसमुग्घाते ४, तेयासमुग्घाते ५, आहारसमुग्घाते ६, केवलिसमुग्घाते ७। वेदणासमुग्घाए णं भंते ! कतिसमइए पन्नत्ते ? गोयमा ! असंखेज्जसमइए अंतोमुहुत्तिते पन्नत्ते, एवं जाव आहारसमुग्घाते । केवलिसमुग्घाए णं भंते ! कतिसमइए पन्नत्ते ? गोयमा ! अट्ठसमइए पन्नत्ते । नेरइयाणं भंते ! कति समुग्घाया पन्नत्ता ? गोयमा ! चत्तारि समुग्घाया पन्नत्ता, तंजहा–वेदणासमुग्घाए, क-

---

१. हे भगवन् ! केटला समुद्घातो कह्या छे ? हे गौतम ! सात समुद्घातो कह्या छे. ते आ प्रमाणे–१ वेदनासमुद्घात, २ कषाय समुद्घात, ३ मारणांतिक समुद्घात, ४ वैक्रिय समुद्घात, ५ तैजस समुद्घात, ६ आहारक समुद्घात, अने ७ केवली समुद्घात. हे भगवन् ! वेदना समुद्घात केटला समयनो छे ? हे गौतम ! असंख्याता समयप्रमाण अन्तर्मुहूर्तनो छे, ए प्रमाणे आहारक समुद्घात सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! केवलिसमुद्घात केटला समयनो छे ? हे गौतम ! आठ समयनो छे. हे भगवन् ! नैरयिकोने केटला समुद्घातो कह्या छे ? हे गौतम ! नैरयिकोने चार समुद्घातो कह्या छे. ते आ प्रमाणे–१ वेदना समुद्घात २ कषाय

खण्डने त्यां सुधी उकेरे छे यावत् अन्तर्मुहूर्तना छेल्ला समये संपूर्ण खण्डनो नाश थाय छे. ए प्रमाणे अन्तर्मुहूर्तना स्थितिकण्डको अने अनुभाग कण्डकोनो ज्यां सुधी सयोगी अवस्थानो छेल्लो समय छे त्यां सुधी घात करे छे. आ वधाय स्थितिकण्डक अने अनुभागकण्डक असंख्याता जाणवा. आ सम्बन्धे पटलुंज कहेवुं वस छे.

१. हवे प्रस्तुत बाबत कहेवानो प्रारंभ करीए छीए. तेमां संग्रहणी गाथामां कहेला अर्थने स्पष्ट करता प्रथमथीज समुद्घातनी

सायसमुग्घाते, मारणंतियसमुग्घाते, वेउव्वियसमुग्घाते । असुरकुमाराणं भंते ! कति समुग्घाया पन्नत्ता? गोयमा ! पंच समुग्घाया पन्नत्ता, तंजहा–वेदणासमुग्घाते, कसायसमुग्घाते मारणंतियसमुग्घाते, वेउव्वियसमुग्घाते, तेयासमुग्घाए, एवं जाव थणियकुमाराणं । पुढविकाइयाणं भंते ! कति समुग्घाया पन्नत्ता ? गोयमा ! तिण्णि समुग्घाया पन्नत्ता, तंजहा–वेदणासमुग्घाते, कसायसमुग्घाते, मारणंतियसमुग्घाते, एवं जाव चउरिंदि-

समुद्घात, ३ मारणांतिक समुद्घात अने ४ वैक्रिय समुद्घात. हे भगवन् ! असुरकुमारोने केटला समुद्घातो कह्या छे ? हे गौतम ! पांच समुद्घातो कह्या छे. ते आ प्रमाणे–१ वेदना समुद्घात, २ कषायसमुद्घात, ३ मारणांतिकसमुद्घात, ४ वैक्रियसमुद्घात, अने ५ तैजससमुद्घात. ए प्रमाणे स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! पृथिवीकायिकोने केटला समुद्घातो कह्या छे? हे गौतम ! त्रण समुद्घातो कह्या छे. ते आ प्रमाणे–१ वेदनासमुद्घात, २ कषायसमुद्घात अने ३ मारणांतिकसमुद्घात. ए प्रमाणे चउरिन्द्रियो सुधी

संख्या संबन्धे प्रश्नसूत्र कहे छे—'कइ णं' इत्यादि. कति–केटला, णं वाक्यालंकारमां छे. 'भदन्त' ए भगवन्त वर्धमान स्वामीनुं आमन्त्रण-संबोधन छे. भगवन्तनुं भदन्तपणुं परम कल्याणना योगथी छे. अथवा 'भवान्त' ए संबोधन जाणवुं, कारण के ते सर्व संसार सागरने अन्ते रहेला छे. अथवा 'भयान्त' ! एवुं संबोधन जाणवुं, कारण के तेमणे आ लोक अने परलोकादि सात प्रकारना भयनो नाश करेलो छे. समुद्घातो–जेनो शब्दार्थ पहेलां कह्यो छे ते केटला कहेला छे? भगवान् उत्तर आपे छे—गौतम ! इत्यादि. हे गौतम ! सात समुद्घात कह्या छे. जेमके—'वेदनासमुद्घात' इति. वेदनानो समुद्घात ते वेदनासमुद्घात. ए प्रमाणे आहारकसमुद्घात सुधी जाणवुं. 'केवलिसमुद्घात' इति केवली संबन्धी समुद्घात ते केवलीसमुद्घात. हवे कयो समुद्घात केटला काळ सुधी होय छे' ए निरूपण करवा माटे सूत्रकार कहे छे—'वेदणासमुग्घाए' हे भगवन् ! वेदनासमुद्घात केटला समयनो होय? इत्यादि सुगम

याणं। नवरं वाउकाइयाणं चत्तारि समुग्घाया पन्नत्ता, तंजहा–वेदणासमुग्घाए, कसायसमुग्घाए, मारणंतियसमुग्घाए, वेउव्वियसमुग्घाए। पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं जाव वेमाणियाणं भंते! कति समुग्घाया पन्नत्ता? गोयमा! पंच समुग्घाया पन्नत्ता, तंजहा–वेयणासमुग्घाए, कसायसमुग्घाए, मारणंतियसमुग्घाए, वेउव्वियसमुग्घाए, तेयासमुग्घाए। नवरं मणूसाणं सत्तविहे समुग्घाए पन्नत्ते, तंजहा–वेदणासमुग्घाए, कसायसमुग्घाए, मारणंतियसमुग्घाए, वेउव्वियसमुग्घाए तेयासमुग्घाए आहारसमुग्घाए, केवलिसमुग्घाते।

जाणवुं. परन्तु वायुकायिकोने चार समुद्‌घातो होय छे. ते आ प्रमाणे–१ वेदनासमुद्‌घात, २ कषायसमुद्‌घात, ३ मारणांतिकसमुद्‌घात अने ४ वैक्रियसमुद्‌घात. हे भगवन्! पंचेन्द्रिय तिर्यंचो यावत् वैमानिकोने केटला समुद्‌घातो कह्या छे? हे गौतम! पांच समुद्‌घातो कह्या छे. ते आ प्रमाणे–१ वेदना, २ कषाय, ३ मारणांतिक, ४ वैक्रिय अने ५ तैजससमुद्‌घात. परन्तु मनुष्योने सात समुद्‌घातो कह्या छे. ते आ प्रमाणे–१ वेदना, २ कषाय, ३ मारणांतिक, ४ वैक्रिय, ५ तैजस, ६ आहारक अने ७ केवलिसमुद्‌घात.

छे. 'नवरं जाव' इत्यादि. परन्तु यावत् आहारक समुद्‌घात सुधी उपर कह्या प्रमाणे पाठ वडे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण समुद्‌घातो अनुक्रमे कहेवा. ए आदिना छए समुद्‌घातो अन्तर्मुहूर्त काळना छे, अने केवलिसमुद्‌घात आठ समयनो छे. तथा तेनो विचार हमणां ज कर्यो छे.

एज समुद्‌घातोनो चोवीश दण्डकना क्रमथी विचार करे छे—'नेरइयाणं' इत्यादि. 'हे भगवन्! नैरयिकोने केटला समुद्‌घातो होय? नैरयिकोने आदिना चार समुद्‌घातो होय छे. कारण के तेओने तेजोलब्धि, आहारकलब्धि अने केवलज्ञानना अभावथी बाकीना त्रण समुद्‌घातोनो संभव नथी. असुरकुमारादि दशे भवनपतिओने तेजोलेश्यानी लब्धि होवाथी आदिना पांच समुद्‌घातो होय छे. पृथिवी कायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक, वनस्पतिकायिक, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउरिन्द्रियने आदिना त्रण समुद्‌घातो होय छे. कारण के

२. एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स केवइया वेदणासमुग्घाया अतीता ? गोयमा ! अणंता, केवइया पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्सत्थि तस्स जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा । एवमसुरकुमारस्सवि निरंतरं जाव वेमाणियस्स, एवं जाव तेयगसमुग्घाते, एवमेते पंच चउवीसा दंडगा । एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स केवइया आहारसमुग्घाया अतीता ? कस्सइ

---

२. हे भगवन् ! एक एक नार ने केटला वेदना समुद्घातो अतीत—पूर्वे थयेला छे ? हे गौतम ! अनन्ता पूर्वे थयेला छे. केटला पुरस्कृत—भविष्यकाळे थवाना छे ? हे गौतम ! कोइने थवाना होय छे अने कोइने थवाना होता नथी. जेने होय छे तेने जघन्यथी एक, बे, त्रण अने उत्कृष्ट संख्याता, असंख्याता अने अनन्ता थवाना होय छे. ए प्रमाणे असुरकुमारने पण यावत् निरंतर वैमानिकना दंडक सुधी कहेवुं. एम तैजस समुद्घात सुधी जाणवुं. ए प्रमाणे पांच समुद्घातो चोवीश दंडके कहेवा. हे भगवन् ! एक

तेओने वैक्रियादि लब्धिना अभावथी पछीना चारे समुद्घातोनो असंभव छे. वायुकायिकोने प्रथमना चार समुद्घातो होय छे. केमके तेओने वैक्रियलब्धिनो संभव होवाथी वैक्रियसमुद्घातनो पण संभव छे. पंचेन्द्रिय तिर्यंचोने आदिना पांच समुद्घातो होय छे, कारण के तेओमां केटलाएकने तेजोलब्धि पण होय छे. मनुष्योने साते समुद्घातो होय छे, कारण के मनुष्योमां सर्वे भावनो संभव छे. व्यन्तर, ज्योतिष्क अने वैमानिकोने आदिना पांच समुद्घातो होय छे. कारण के तेओने वैक्रिय अने तेजोलब्धि होय छे. पछीना बे समुद्घातो होता नथी, कारण के तेओने आहारकलब्धि अने केवलिपणानो अभाव छे.

२. हवे 'चोवीश दण्डकने आश्रयी एक जीवने केटला वेदनादि समुद्घातो पूर्वे थयेला छे अने केटला भविष्यकाळे थवाना छे' एनो विचार करवानी इच्छावाळा सूत्रकार कहे छे—'एगमेगस्स णं भंते' ! इत्यादि. हे भगवन् ! एक एक नैरयिकने केटला वेदना

अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्स अत्थि तस्स जहन्नेणं एक्को वा दो वा, उक्कोसेणं तिण्णि। केवइया पुरेक्खडा? कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्सत्थि जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं चत्तारि, एवं निरंतरं जाव वेमाणियस्स, नवरं मणूसस्स अतीतावि पुरेक्खडावि जहा नेरइयस्स पुरेक्खडा। एगमेगस्स णं भंते! नेरइयस्स केवतिया केवलिसमुग्घाया अतीता? गोयमा! नत्थि। केवइया पुरेक्खडा? गोयमा! कस्सइ अत्थि

एक नैरयिकने आहारक समुद्घातो केटला पूर्वे थयेला छे? कोइने होय छे अने कोइने होता नथी. जेने होय छे तेने जघन्यथी एक अने बे तथा उत्कर्षथी त्रण होय छे. केटला भविष्य काळे थवाना छे? कोइने होय छे अने कोइने होता नथी. जेने होय छे तेने जघन्यथी एक, बे अने त्रण, अने उत्कर्षथी चार होय छे. ए प्रमाणे निरंतर वैमानिक सुधी कहेवुं. परन्तु मनुष्यने पूर्वे थयेला अने भविष्य काळे थवाना नैरयिकने भविष्य काळे जे थवाना छे तेनी पेठे कहेवा. हे भगवन्! एक एक नैरयिकने केवलि समुद्घातो केटला

समुद्घातो पूर्वे थयेला छे? इत्यादि. सूत्रमां 'म'कार अलाक्षणिक-नियम विरुद्ध छे. हे भगवन्! नैरयिकने वधा भूतकाळने आश्रयी केटला वेदना समुद्घातो 'अतीताः' पूर्वे थयेला छे? भगवान् कहे छे—हे गौतम! अनन्ता थयेला छे. कारण के तेने नारकादि स्थानो अनन्तवार प्राप्त थयेला छे. अने एक एक नारकादि स्थाननी प्राप्ति समये प्रायः अनेकवार वेदनासमुद्घात थाय छे. आ हकीकत घणा जीवोनी अपेक्षाए कहेवामां आवी छे. कारण के घणा जीवो अव्यवहारराशिथी नीकळेला अनन्तकाळ सुधी होय छे, तेथी तेनी अपेक्षाए एक एक नैरयिकने अतीत काळे अनन्त वेदना समुद्घातो थयेला घटे छे. परन्तु जेओ थोडा काळथी अव्यवहार राशिथी नीकळेला होय छे तेओने यथा संभव संख्याता के असंख्याता वेदनासमुद्घातो जाणवा. पण तेओ थोडाक ज होय छे माटे तेनी विवक्षा करी नथी. 'केवईया पुरेक्खडा' त्ति केटला पुरस्कृत-भविष्य काळे थवाना छे'? आ सूत्रपाठनुं सूचनमात्र छे. सूत्रपाठ तो

कस्सइ नत्थि, जस्सत्थि एक्को, एवं जाव वेमाणियस्स, नवरं मणूसस्स अतीता कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्सत्थि एक्को, एवं पुरेक्खडावि ।

पूर्वे थयेला छे ? हे गौतम ! पूर्वे थयेला नथी. केटला भविष्यकाळे थवाना छे ? हे गौतम ! कोइने थवाना छे अने कोइने नथी. जेने थवाना छे तेने एक समुद्घात थवानो छे. ए प्रमाणे वैमानिक सुधी कहेवुं. परन्तु मनुष्यने कोइने पूर्वे थयेला छे अने कोइने नथी. जेने छे तेने एक छे. ए प्रमाणे भविष्य काळे थवानो पण एक ज केवलि समुद्घात जाणवो.

आ प्रमाणे छे—एगमेगस्स नेरइयस्स णं भंते ! केवइया वेयणासमुग्घाया पुरेक्खडा ? 'हे भगवन् ! एक एक नैरयिकने केटला वेदना समुद्घातो भविष्य काळे थवाना छे ? ए सुगम छे. परन्तु पुरः–आगळ कृत–ते परिणामनी प्राप्तिनी योग्यता वडे करेला छे ? अर्थात् 'तेना करनार जीवे' ए अध्याहार छे. एटले पुरस्कृत—अनागत काळे थवाना छे ए तात्पर्य छे. अहीं भगवान् कहे छे–कोइने थवाना होय छे अने कोइने होता नथी'. जेने थवाना होय छे तेने पण जघन्यथी एक, बे अने त्रण थवाना होय छे. अने उत्कृष्ट संख्याता, असंख्याता अने अनन्ता थवाना होय छे. तात्पर्य आ छे—जे कोइ जीव विवक्षित प्रश्न समय पछी वेदना समुद्घात कर्या सिवाय ज नरकथी नीकळी पछीना मनुष्य भवमां वेदना समुद्घातने नहि प्राप्त थयेलो ज सिद्ध थाय तेने आगळ भविष्य काळमां एक पण वेदना समुद्घात थवानो नथी. पण जे जीव विवक्षित प्रश्न समय पछी बाकीना आयुष काळमां केटलाक काळ सुधी नरकभवमां आवीने त्यार बाद मनुष्य भव पामी सिद्ध थाय तेने एकादि समुद्घातनो सम्भव छे. संख्याता काळ सुधी संसारमां रहेनाराने संख्याता, असंख्याता काळ सुधी संसारमां रहेनाराने असंख्याता अने अनन्त काळ संसारमां रहेनाराने अनन्ता वेदना समुद्घातो थाय छे. 'एवं' इत्यादि. ए प्रमाणे नैरयिकने कह्या प्रमाणे असुरकुमारने यावत् स्तनितकुमारने पण कहेवुं. त्यार बाद चोवीश दण्डकना क्रमथी वैमानिक सुधी निरंतर कहेवुं. तात्पर्य ए छे के बधाय असुरकुमारादि स्थानोमां अतीत काळे अनन्त वेदना समुद्घातो कहेवा,

अने अनागत काळे वेदना समुद्घातो कोइने थवाना होय छे अने कोइने होता नथी. जेने होय छे तेने पण जघन्यथी एक, बे, त्रण अने उत्कर्षथी संख्याता, असंख्याता अने अनन्त समुद्घातो कहेवा. तेनो विचार पण पूर्वे कह्या प्रमाणे स्वयं करी लेवो, ए प्रमाणे चोवीश दंडकना क्रमथी कषाय समुद्घात, मारणान्तिक समुद्घात, वैक्रिय समुद्घात अने तैजससमुद्घात प्रत्येक दंडके कहेवा, तेथी एकसो वीश दंडकसूत्रो थाय छे. ते प्रमाणे सूत्रकार कहे छे—'एवं जाव तेयगसमुग्घाए' इत्यादि. 'एम तैजस समुद्घात सुधी जाणवुं.' एटले वेदना समुद्घात संबन्धे कह्युं छे ते प्रकारे बाकीना बधा समुद्घात विशे पण प्रत्येक समुद्घातने आश्रयी यावत् तैजस समुद्घात सुधी कहेवुं. बाकी बधुं सुगम छे.

'एगमेगस्स णं' इत्यादि. हे भगवन् ! एक एक नैरयिकने पूर्वेना बधा अतीतकाळनी अपेक्षाए केटला आहारक समुद्घातो पूर्वे थयेला छे ? भगवान् उत्तर आपे छे—'हे गौतम ! कोइने होय छे. अहीं 'अत्थि'-अस्ति ए निपात-अव्यय सर्वलिङ्ग अने सर्ववचनमां होय छे. ए संबन्धे शाकटायन न्यासकार कहे छे—'अस्तीति निपातः सर्वलिङ्गवचनेष्विति' 'अस्ति' ए निपात सर्व लिङ्ग अने वचनोमां होय छे. तेथी आ अर्थ थाय छे—कोइने आहारक समुद्घातो पूर्वे थयेला होय छे अने कोइने होता नथी. जेणे पूर्वे मनुष्यपणुं पामीने तेवा प्रकारनी सामग्रीना अभावथी चौद पूर्वेनुं अध्ययन कर्युं नथी, चौद पूर्वेनुं ज्ञान होवा छतां पण आहारक लब्धिना अभावथी के तथाविध प्रयोजनना अभावथी आहारक शरीर कर्युं नथी तेने होता नथी. जेने होय छे तेने पण जघन्यथी एक अने बे अने उत्कर्षथी त्रण होय छे, पण चार होता नथी. जेणे चार वार आहारक शरीर कर्युं छे तेनुं नरकमां गमन थतुं नथी. ए संबन्धे मूल टीकाकार कहे छे—"आहारसमुग्घाया उक्कोसेणं तिन्नि, तदुवरि निगमा नरगं न गच्छइ जस्स चत्तारि भवन्ति"त्ति । आहारक समुद्घातो उत्कर्षथी त्रण होय छे. तेना उपर जेने चार समुद्घातो थाय छे ते अवश्य नरकमां जतो नथी. भविष्यकाळे पण केटलाकने होय छे अने केटलाकने होता नथी. तेमां जे मनुष्यपणुं पामी तेवा प्रकारनी सामग्रीना अभावथी चौद पूर्वेनुं ज्ञान अने आहारक समुद्घात विना सिद्ध थाय छे तेने होता नथी. बाकीना जीवने यथासंभव जघन्यथी एक, बे, त्रण अने उत्कर्षथी चार समुद्घातो

होय छे. त्यारबाद अवश्य बीजी गतिमां उत्पन्न नहि थवाने लीधे आहारक समुद्घात सिवाय सिद्धिगमन थाय छे. 'एवं' इत्यादि. ए प्रमाणे-नैरयिकने कह्या प्रमाणे चोवीश दंडकना क्रमवडे निरंतर वैमानिक सूत्र सुधी कहेवुं. परंतु मनुष्यने अतीतकाळे पण अने अनागतकाळे पण जेम नैरयिकोने भविष्यकाळे थवाना समुद्घातो कह्या छे तेम कहेवा. एटले अतीतकाळे पण चार अने अनागतकाळे पण चार समुद्घातो उत्कर्षथी कहेवा. सूत्रपाठ आ प्रमाणे छे—"एगमेगस्स णं मणूसस्स भंते ! केवइया आहारसमुग्घाया अतीता ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि, कस्सइ नत्थि, जस्स अत्थि जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेणं चत्तारि' हे भगवन् ! एक एक मनुष्यने केटला आहारक समुद्घातो पूर्वे थयेला छे ? हे गौतम ! कोइने होय छे अने कोइने होता नथी. जेने होय छे तेने जघन्यथी एक, बे अने त्रण अने उत्कृष्ट चार समुद्घातो होय छे. केटला भविष्यकाळे थवाना होय छे ? हे गौतम ! कोइने होय छे अने कोइने होता नथी. जेने छे तेने एक, बे, त्रण अने उत्कृष्ट चार समुद्घातो होय छे. तात्पर्य ए छे के जे चोथी वेळा आहारक शरीर करे छे ते अवश्य ते भवे ज मुक्ति प्राप्त करे छे पण बीजी गतिमां जतो नथी. ए शी रीते जणाय ? उत्तर—सूत्रना पूर्वापर विचारथी जाणी शकाय छे. ते आ प्रमाणे—जो चोथी वेळा आहारक शरीर करीने बीजी गतिमां जाय तो नारकादि कोइपण गतिमां अतीतकाळे चार आहारक समुद्घातो कह्या होत, पण कह्या नथी, तेथी जाणी शकाय छे के चोथी वेळा आहारक शरीर करीने अवश्य ते भवमां ज मुक्तिगामी थाय छे, परन्तु बीजी गतिमां जतो नथी. तेमां जेणे पूर्वे आहारकशरीर कदि पण कर्युं नथी तेने अतीत काळे आहारक समुद्घात होतो नथी. तेथी तेनी अपेक्षाए कह्युं छे के—'कोइने नथी'. जेने छे तेणे पण जो पूर्वे आहारक शरीर एक वार कर्युं होय तो तेने एक अतीत काळे आहारक समुद्घात थयेल छे, बे वार जेणे कर्युं होय तेने बे, त्रण वार कर्युं होय तेने त्रण आहारक शरीरो अतीतकाळे थयेला छे, चोथी वेळा आहारक शरीर करीने आहारक समुद्घातथी निवृत्त थयेलो छे अने हजी मनुष्यभवनो त्याग कर्यो नथी तेने चार समुद्घातो होय छे, पुरस्कृत-भविष्यकाळे थवाना पण समुद्घातो कोइने होय छे अने कोइने होता नथी. तेमां जे चोथी वेळा आहारक शरीर करीने आहारक समुद्घातथी निवृत्त थयेलो छे, अथवा जेणे आहा-

रक शरीर कर्युं नथी एवो, अथवा जेणे एकवार आहारक शरीर कर्युं छे एवो, अथवा जेणे बे वार आहारक शरीर कर्युं छे एवो, अथवा जेणे त्रणवार आहारक शरीर कर्युं छे एवो पण तेवा प्रकारनी सामग्रीना अभावथी त्यार पछी आहारक शरीर कर्या सिवाय ज मुक्ति पामशे, तेने भविष्यमां आहारक समुद्घातो करवाना होता नथी. जेने करवाना होय छे तेने पण जघन्यथी एक, बे, त्रण अने उत्कर्षथी चार समुद्घातो करवाना होय छे. तेमां एकादि समुद्घातनो संभव पूर्वे कहेली भावनाने अनुसारे स्वयं जाणवो. जेणे पूर्वे काळे एकवार पण आहारक शरीर कर्युं नथी, पण पछी तथाविध सामग्रीथी जेटला संभवे तेटला शरीर करशे तेने चार समुद्घातो होय छे बीजाने होता नथी.

हवे केवली समुद्घात संबन्धे दंडकसूत्र कहे छे—'एगमेगस्स णं भंते'! इत्यादि. हे भगवन्! एक एक नैरयिकने निरधिक-अनन्त अतीत काळने आश्रयी केटला केवलिसमुद्घातो पूर्वे थयेला छे? भगवान् कहे छे—'नत्थि'त्ति अतीतकाळे एक पण केवलीसमुद्घात थयेलो नथी. कारण के केवलिसमुद्घात कर्या पछी अन्तर्मुहूर्तमां अवश्य जीवो परम पदने पामे छे. तेथी जो केवलिसमुद्घात थयो हत तो नरके ज न जात, पण अत्यारे नरकमां छे माटे एक पण नारकने अतीतकाळे केवलिसमुद्घात थयेलो नथी. 'केवइया पुरेक्खड'त्ति केटला केवलिसमुद्घात पुरस्कृत-भविष्यकाळे थवाना छे? ए प्रश्न छे. भगवान् कहे छे—'गोतमा! कस्सइ अत्थि, कस्सइ नत्थि'त्ति हे गौतम! कोइने होय छे अने कोइने होतो नथी. अहीं केवलिसमुद्घात एक प्राणीने सर्वदा एकवार ज थाय छे, पण बे त्रणवार थता नथी. तेथी 'अस्ति' ए अव्यय एकवचनान्त जाणवो. तेथी आ अर्थ थाय छे-कोइने पण केवलिसमुद्घात पुरस्कृत-भविष्यमां थवानो होय छे जे लांबा काळे पण मुक्तिपदनी प्राप्ति समये आयुष करतां विषम-अधिक स्थितिवाळां कर्मसहित होय. कोइने थवानो पण नथी. जे मुक्तिपद प्राप्त करवाने अयोग्य होय, अथवा योग्य होय तो पण, जे केवलिसमुद्घात सिवाय मुक्तिपदने भविष्यमां प्राप्त करशे. ते संबन्धे सूत्रकार कहेशे—"अगंतूण समुग्घायमणं‚ता केवलिजिणा। जरमरणविप्पमुक्का सिद्धिं वरगइं गया॥" समुद्घातने प्राप्त थया सिवाय अनन्ता केवली जिनो जरा अने मरणथी रहित थइ सिद्धिनामे श्रेष्ठ गतिने प्राप्त थयेला होय छे. अहीं 'अस्ति' ए अव्यय

सर्वे लिंग अने सर्वे वचनमां होय छे. ए प्रमाणे जेणे सिद्धान्त जाण्यो नथी एवा कोइने बहुवचननी शंका थाय तेने दूर करवा माटे कहे छे—'जस्स अत्थि' जेने एक केवलिसमुद्घात भविष्यमां थवानो छे तेने एक होय छे. कारण के फरीथी तेने संसार होतो नथी. 'एवं जाव वेमाणियस्स' ए प्रमाणे-नैरयिक संबन्धी पाठ वडे चोवीश दंडकना क्रमने अनुसरी वैमानिक सूत्र सुधी कहेवुं. ते आ प्रमाणे—'एगमेगस्स णं भंते ! वेमाणियस्स केवइया केवलिसमुग्घाया अतीता ? गोयमा नत्थि, केवइया पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि, कस्सइ नत्थि, जस्सत्थि एक्को' इति। हे भगवन् ! एक एक वैमानिकने केटला केवलिसमुद्घातो पूर्वे थयेला छे ? हे गौतम ! पूर्वे थया नथी. केटला भविष्यमां थवाना छे ? हे गौतम ! कोइने होय छे अने कोइने होता नथी. जेने होय छे तेने एक होय छे इत्यादि. तेमां विशेषता कहे छे—नवरं' इत्यादि. परन्तु आ विशेष छे-मनुष्यने केवलिसमुद्घातना विचारमां अतीत काळे कोइकने होय छे अने कोइकने होता नथी एम कहेवुं. तेमां जे केवलिसमुद्घातथी निवृत्त थयेलो छे अने हजी मुक्तिपदने प्राप्त थयो नथी, तेने अतीत काळे केवलिसमुद्घात थयेलो छे. ते बधा मळीने उत्कृष्ट पदे शतपृथक्त्व-बसोथी नवसो सुधी जाणवा. जे केवलिसमुद्घातने प्राप्त थयो नथी एवा कोइने पण अतीत काळे केवलिसमुद्घात थयो नथी. ते बधा मळीने असंख्याता जाणवा. कारण के शतपृथक्त्व सिवायना बीजा बधा मनुष्यो केवलिसमुद्घातने प्राप्त थया नथी. अहीं पण अस्ति' ए अव्यय सर्वे लिंग अने सर्वे वचनवाची होवाथी 'कोइने होय छे अने कोइ नथी होता'-एम कहेवामां बहुपणानी आशंका थाय तेने दूर करवा माटे सूत्रकार कहे छे-जे मनुष्यने भूतकाळे केवलिसमुद्घात थयेल छे तेने अवश्य एक थयेल छे, बे त्रण थया नथी, कारण के एकज समुद्घात वडे प्रायः बधा अघाती कर्मोनो निर्मूल नाश थाय छे. 'एवं पुरेक्खडावि'त्ति ए प्रमाणे—अतीत समुद्घात संबन्धे कह्युं तेम पुरस्कृत-भविष्यकाळे थवाना केवलिसमुद्घातो संबन्धे जाणवुं. ते आ प्रमाणे—'कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्सत्थि एक्को' इति. कोइने होय छे अने कोइने होतो नथी, जेने छे जेने एक थवानो होय छे. अहीं पूर्वे कह्या प्रमाणे स्वयं विचार करवो. ए प्रमाणे अतीत अने अनागत काळने आश्रयी एक एक नैरयिकादि संबन्धे वेदनादि समुद्घातनो विचार कर्यो.

३. नेरइयाणं भंते ! केवइया वेदणासमुग्घाया अतीता ? गोयमा ! अणंता । केवइया पुरेक्खडा ? गोयमा ! अणंता, एवं जाव वेमाणियाणं, एवं जाव तेयगसमुग्घाए, एवं एतेवि पंच चउवीसदंडगा । नेरइयाणं भंते ! केवइया आहारगसमुग्घाया अतीता ? गोयमा ! असंखेज्जा । केवइया पुरेक्खडा ? गोयमा ! असंखेज्जा, एवं जाव वेमाणियाणं । नवरं वणस्सइकाइयाणं मणूसाण य इमं णाणत्तं-वणस्सइकाइयाणं भंते ! केवइया आहारसमुग्घाया अईया ? गोयमा ! अणंता । मणूसाणं भंते ! केवइया आहारसमुग्घाया अईया ? गोयमा ! सिय संखे-

---

३. हे भगवन् ! नैरयिकोने केटला वेदना समुद्घातो पूर्वे थयेला छे ? हे गौतम ! अनन्ता थयेला छे. केटला पुरस्कृत-भविष्य काळे थवाना छे ? हे गौतम ! अनन्ता थवाना छे. ए प्रमाणे वैमानिको सुधी जाणवुं. एम तैजस समुद्घात सुधी कहेवुं. ए प्रमाणे ए बधा मळीने एकसो वीश दंडको थाय छे. हे भगवन् ! नैरयिकोने केटला आहारक समुद्घातो पूर्वे थयेला छे ? हे गौतम ! असंख्याता पूर्वे थयेला छे. केटला भविष्य काळे थवाना छे ? हे गौतम ! असंख्याता थवाना छे. ए प्रमाणे वैमानिको सुधी जाणवुं. परंतु वनस्पतिकायिको अने मनुष्योने आ विशेष छे—'हे भगवन् ! वनस्पतिकायिकोने केटला आहारक समुद्घातो पूर्वे थयेला छे ? हे

---

३. हवे समुदायरूप नैरयिकादिना प्रत्येक दंडके समुद्घात संबन्धे विचार करवानी इच्छावाळा सूत्रकार कहे छे—'नेरइयाणं' इत्यादि. हे भगवन् ! विवक्षित प्रश्न समये वर्तमान समुदित बधा नैरयिकोने पूर्वे केटला वेदनासमुद्घातो थयेला छे ? भगवान् कहे छे—'हे गौतम ! पूर्वे अनन्ता थयेला छे. कारण के घणा जीवो अनन्त काळथी अव्यवहार राशिथी नीकळेला छे अने तेओने अतीत अनन्तकाळे नैरयिकोमां अनन्ता वेदनासमुद्घातो थयेला होय छे. केटला भविष्यकाळे थवाना छे ? अहीं पण संपूर्ण प्रश्नसूत्रपाठ आ

ज्जा, सिय असंखेज्जा, एवं पुरेक्खडावि । नेरइयाणं भंते ! केवइया केवलिसमुग्घाया अतीता ? गोयमा ! णत्थि । केवइया पुरेक्खडा ? गोयमा ! असंखेज्जा, एवं जाव वेमाणियाणं । नवरं वणस्सइमणूसेसु इमं नाणत्तं–वणस्सइकाइयाणं भंते ! केवइया केवलिसमुग्घाया अतीता ? गोयमा ! णत्थि । केवइया पुरेक्खडा ? गोयमा ! अणंता। मणूसाणं भंते ! केवइया केवलिसमुग्घाया अतीता ? गोयमा ! सिय अत्थि सिय नत्थि, जइ अत्थि जहण्णेणं

गौतम ! अनन्ता थयेला छे ? हे भगवन् । मनुष्योने केटला आहारक समुद्घातो पूर्वे थयेला छे ? हे गौतम ! कदाच संख्याता अने कदाच असंख्याता थयेला छे. ए प्रमाणे भविष्य काळे थवाना पण जाणवा. हे भगवन् ! नैरयिकोने केटला केवलिसमुद्घातो पूर्वे थयेला छे ? हे गौतम ! थयेला नथी. केटला भविष्य काळे थवाना छे ? हे गौतम ! असंख्याता थवाना छे. ए प्रमाणे वैमानिको सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! मनुष्योने केटला केवलिसमुद्घातो पूर्वे थयेला छे ? हे गौतम ! कदाच थयेला होय छे अने कदाच

जाणवो—नेरइयाणं भंते ! केवइया वेयणासमुग्घाया पुरेक्खडा ? इति. हे भगवन् ! नैरयिकोने केटला वेदनासमुद्घातो भविष्यमां थवाना छे ? भगवान् कहे छे—हे गौतम ! अनन्ता थवाना छे. कारण के बधा नैरयिको अनन्तकाळ सुधी संसारमां रहेवाना छे. ए प्रमाणे चोवीश दंडकना क्रमथी यावत् वैमानिको सुधी कहेवुं. जेम वेदनासमुद्घातनो चोवीश दंडकना क्रमथी विचार कर्यो तेम कषाय, मरण, वैक्रिय अने तैजस समुद्घातोनो पण विचार करवो. ते प्रमाणे सूत्रकार कहे छे—'एवं जाव तेयगसमुग्घाए' एम तैजस समुद्घात सुधी कहेवुं. एम थवाथी आ पण बहुवचन विषयक एकसोने वीश दंडकसूत्रो थाय छे. एज बाबत सूत्रकार कहे छे—'एवमेए वि य पंच चउव्वीसदंडगा' इति. ए प्रमाणे ए पण एकसो वीश दंडको थाय छे. हवे आहारक समुद्घातनो विचार करता कहे छे—'नेरइयाणं' इत्यादि. हे भगवन् ! नैरयिकोने आहारक समुद्घातो अतीतकाळे केटला थयेला छे ? इत्यादि. अहीं प्रश्नसूत्र सुगम छे.

एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सतपुहुत्तं। केवतिया पुरेक्खडा ? सिय संखेज्जा, सिय असंखेज्जा।

थयेला नथी. जो थयेला छे तो जघन्यथी एक, वे अने त्रण थयेला छे अने उत्कृष्ट शतपृथक्त्व–वसोथी नवसो सुधी थयेला छे. केटला भविष्यमां थवाना छे ? कदाच संख्याता अने कदाच असंख्याता थवाना छे.

भगवान् कहे छे—हे गौतम ! पूर्वे असंख्याता थयेला छे. अहीं आ तात्पर्य छे-अहीं नैरयिको हमेशां प्रश्न समये वधा मळीने पण असंख्याता होय छे. तेओमां पण केटलापक असंख्याता छे के जेओए पूर्वे आहारक समुद्घात कर्यो छे. तेथी जेओए पूर्वे आहार समुद्घात कर्यो छे एवा असंख्याता ज घटे छे, अनन्ता तेम संख्याता घटता नथी. एम तेओ भविष्यमां आहारक समुद्घातवाळा पण असंख्याता जाणवा. ए प्रमाणे चोवीश दंडकना क्रमथी यावत् वैमानिको पर्यन्त कहेवुं. ए यावत सूत्रकार कहे छे—'एवं जाव वेमाणियाणं' ए प्रमाणे वैमानिको सुधी कहेवुं. अहीं जे विशेषता छे ते वतावकानी इच्छावाळा सूत्रकार कहे छे—'नवरं'–परन्तु वनस्पतिकायिकना अने मनुष्यना विचारमां नैरयिकोनी अपेक्षाए विशेषता जाणवी. ते विशेषता वतावे छे—'एवं वणस्सइकाइयाणं' ए प्रमाणे वनस्पतिकायिकोने कहेवुं. अहीं प्रश्नसूत्र सुगम छे. भगवान् कहे छे—हे गौतम ! पूर्वे अनन्ता थयेला छे, कारण के जेणे पूर्वे आहारक समुद्घात कर्या छे एवा अनन्ता चौद पूर्वधरो प्रमादना वशथी संसारनी वृद्धि करीने वनस्पतिमां होय छे. भविष्य काळे अनन्ता आहारक समुद्घात करवाना छे. कारण के अनन्ता जीवो वनस्पतिकायथी नीकळी चौद पूर्वना ज्ञानपूर्वक आहारक समुद्घात करी भविष्यमां मोक्षे जवाना छे. 'मणुस्साणं भंते' ! इत्यादि. हे भगवन् ! मनुष्योने केटला आहारक समुद्घातो अतीतकाळे थयेला छे ? इत्यादि प्रश्नसूत्र प्रसिद्ध छे. भगवान् कहे छे-हे गौतम ! 'स्यात्' ए अव्यय अनेकान्तनो द्योतक छे. तेथी आ अर्थ थाय छे-कदाचित् संख्याता अने कदाचित् असंख्याता होय छे. शी रीते होय ? अहीं संमूर्छिम अने गर्भज मनुष्य समुदायना विचारमां मनुष्यो उत्कृष्ट पदे अंगुलप्रमाण क्षेत्रमां जेटला आकाशप्रदेशो होय तेनुं जे प्रथम वर्गमूल छे तेने त्रीजा वर्गमूळ साथे गुणतां जेटला

थाय एटला प्रदेशप्रमाण खंडो घनीकृत लोकनी एक प्रदेशनी श्रेणिमां जेटला होय तेमांथी एक ओछो करीए तेटला होय छे. अने
तेओ बाकीना नारकादि जीवराशिनी अपेक्षाए घणाज थोडा छे. तेमां पण जेओए पूर्वे भवोमां आहारकशरीर करेलुं छे
तेओ तो केटलाक छे. तेओ कदाचित् विवक्षित प्रश्नसमये संख्याता होय छे अने कदाचित् असंख्याता होय छे. ते माटे
कह्युं छे के—'सिय संखेज्जा सिय असंखेज्जा' इति. कदाचित् संख्याता होय छे अने कदाचित् असंख्याता होय छे. भवि-
ष्यकाळे पण विवक्षित प्रश्न समये विद्यमान मनुष्योमां केटलाएक आहारक शरीर करशे तेओ पण कदाचित् संख्याता अने कदाचित्
असंख्याता होय छे, तेथी कहे छे के—'एवं पुरेक्खडा वि' जेम अतीत काळे आहारक समुद्घातो कह्या छे तेम भविष्यकाळे पण
जाणवा. एटले जेम वनस्पतिकायिको अने मनुष्योने अतीत काळे आहार समुद्घातो कह्या छे तेम भविष्यमां थवाना आहारक समु-
द्घातो पण जाणवा. ते आ प्रमाणे—हे भगवन् ! वनस्पतिकायिकोने केटला आहारक समुद्घातो भविष्यमां थवाना छे? हे गौतम !
अनन्ता थवाना छे. हे भगवन् ! मनुष्योने केटला आहारक समुद्घातो भविष्यमां थवाना छे? कदाच संख्याता थवाना होय छे अने
कदाच असंख्याता थवाना होय छे. केवलिसमुद्घात विशे प्रश्नसूत्र कहे छे—"नेरइयाणं भंते !' हे भगवन् ! केटला केवलिसमुद्घातो
अतीत काळे थयेला होय ? इत्यादि सुगम छे. भगवान् उत्तर आपे छे—हे गौतम ! नैरयिकोने भूतकाळे कोइपण केवलिसमुद्घात
थयेलो नथी, कारण के जेओए केवलिसमुद्घात कर्यो छे तेओनुं नारकादिमां गमन थतुं नथी. केटला भविष्यमां थवाना छे? ए प्रश्न
छे. भगवान् उत्तर आपे छे—हे गौतम ! असंख्याता थवाना छे. कारण के विवक्षित प्रश्न समये वर्तता नारकोमां असंख्याता नार-
कोने भविष्यमां केवलि समुद्घात थवानो छे अने ते प्रमाणे केवलज्ञानीए जाणेलुं छे. ए प्रमाणे चोवीश दंडकना क्रमथी वैमानिक
सूत्र सुधी कहेवुं. ते प्रमाणे सूत्रकार कहे छे—'एवं जाव वेमाणियाणं' ए प्रमाणे वैमानिको सुधी जाणवुं. अहीं विशेषता कहे छे—
'नवरं'-परन्तु वनस्पतिकायिकोमां अने मनुष्योमां आ विशेषता कहेवानी छे, ते कहे छे—'वणस्सइकाइयाणं' इत्यादि. वनस्पतिका-
यिकोने केटला केवलिसमुद्घातो अतीतकाळे थयेला छे ? इत्यादि प्रश्नसूत्र सुप्रसिद्ध छे. उत्तरसूत्रमां आ प्रमाणे उत्तर छे—अनन्ता

४. एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स नेरइयत्ते केवइया वेदणासमुग्घाया अतीता ? गोयमा ! अणंता। केवइया पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्स अत्थि जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्को-

४. हे भगवन् ! एक एक नैरयिकने नैरयिकपणामां केटला वेदनासमुद्घातो पूर्वे थयेला छे ? हे गौतम ! अनन्ता थयेला छे. केटला भविष्य काळे थवाना छे ? हे गौतम ! कोइने थवाना होय छे अने कोइने थवाना होता नथी. जेने थवाना छे तेने जघन्यथी एक, बे के त्रण अने उत्कृ-

केवलिसमुद्घातो थवाना छे, कारण के तेओमां जेओने भविष्यकाळे अनन्ता केवलिसमुद्घातो थवाना छे तेवा जीवो अनन्ता छे. 'मणुस्साणं' इत्यादि. हे भगवन् ! मनुष्योने केटला केवलिसमुद्घातो अतीत काळे थयेला छे ? इत्यादि. अहीं पण प्रश्नसूत्र सुगम छे. भगवान् उत्तर आपे छे—हे गौतम ! कदाच अतीतकाळे थयेला होय अने कदाचित् थयेला न होय. तात्पर्य ए छे के ज्यारे प्रश्न समये समुद्घातथी निवृत्त थयेला प्राप्त थाय त्यारे होय छे अने बाकीना काळे होता नथी. तेमां ते समये जेणे केवलिसमुद्घात कर्यो छे एवा मनुष्यो होय तो जघन्यथी एक, बे के त्रण अने उत्कर्षथी शतपृथक्त्व-बसोथी नवसो सुधी होय छे. कारण के उत्कृष्ट पदे एक काळे एटला केवलज्ञानीओ केवलिसमुद्घातने प्राप्त थयेला होय छे. 'केवइया पुरेक्खडा ?' केटला पुरस्कृत-भविष्य काळे थवाना केवलिसमुद्घातो होय छे ? एटले मनुष्योने केटला समुद्घातो भविष्यमां थवाना होय छे ? भगवान् उत्तर आपे छे-कदाचित् संख्याता अने कदाचित् असंख्याता थवाना होय छे. कारण के मनुष्यो संमूर्छिम अने गर्भज बधा मळीने उत्कृष्ट पदे पूर्वे जेटलुं प्रमाण बताव्युं छे एटला (असंख्याता) होय छे. तेमां पण विवक्षित प्रश्न समये वर्तता मनुष्योमां घणा अभव्य होवाथी कदाचित् संख्याता केवलिसमुद्घातो होय छे, कदाचित् असंख्याता होय छे, कारण के जेओने भविष्यकाळे केवलिसमुद्घातो थवाना छे एवा घणा होय छे.

४. हवे नैरयिकत्वादि भावोमां वर्तता एक एक नैरयिकादिने पूर्वकाळे केटला वेदना समुद्घातो थयेला होय छे अने केटला

सेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा । एवं असुरकुमारत्ते जाव वेमाणियत्ते । एगमेगस्स णं भंते ! असुरकुमारस्स नेरइयत्ते केवइया वेदणासमुग्घाया अतीता ? गोयमा ! अणंता । केवइया पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सति नत्थि, जस्सत्थि तस्स सिय संखेज्जा वा सिय असंखेज्जा वा सिय अणंता वा । एगमेगस्स णं भंते ! असुरकुमारस्स असुरकुमारत्ते केवइया वेदणासमुग्घाया अतीता ? गोयमा ! अणंता । केवइया पुरे-

ष्ट संख्याता, असंख्याता के अनन्ता थवाना होय छे. ए प्रमाणे असुरकुमारपणामां यावत् वैमानिकपणामां जाणवुं. हे भगवन् ! एक एक असुरकुमारने नैरयिकपणामां केटला वेदनासमुद्घातो अतीत काळे थयेला छे ? हे गौतम ! अनन्ता थयेला छे. केटला भविष्य काळे थवाना छे ? हे गौतम ! कोइने थवाना होय छे अने कोइने थवाना होता नथी. जेने थवाना छे तेने कदाच संख्याता, कदाच असंख्याता अने कदाच अनन्ता थवाना होय छे. हे भगवन् ! एक एक असुरकुमारने असुरकुमारपणामां अतीत काळे केटला वेदना

भविष्यकाळे थवाना होय छे तेनुं निरूपण करवानी इच्छावाळा सूत्रकार कहे छे—'एगमेगस्स णं भंते !' इत्यादि. हे भगवन् ! एक एक नैरयिकने सर्व अतीतकाळनी अपेक्षाए ते ते काळे नैरयिकपणामां वर्तता वधा मळीने केटला वेदना समुद्घात थयेला छे ? भगवान् उत्तर आपे छे—हे गौतम ! अनन्ता थयेला छे. कारण एक एक नैरयिकने नरकस्थान पूर्वे अनन्तवार प्राप्त थयेलुं छे अने एक नरकभवमां जघन्यपदे पण संख्याता वेदना समुद्घातो थाय छे. 'केवइया पुरेक्खडा' ? केटला भविष्यकाळे थवाना छे ? हे भगवन् ! एक एक नैरयिकने संसारथी मांडी मोक्षगमन सुधीमां अनागतकाळनी अपेक्षाए नारकपणामां भविष्यमां थवाना वधा मळीने वेदना समुद्घातो केटला छे ? भगवान् उत्तर आपे छे—'हे गौतम ! 'कस्सइ अत्थि' इत्यादि. कोइने थवाना छे अने कोइने थवाना नथी. तेमां जेनुं नजीकमां मृत्यु छे एवो नैरयिक वेदना समुद्घात कर्या सिवाय छेवटना मरणवडे नरकथी नीकळी पछीना भवमां

क्खडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्सत्थि जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा, एवं नागकुमारत्तेवि जाव वेमाणियत्ते, एवं जहा वेयणासमुग्घातेणं असुरकुमारे नेरइयादिवेमाणियपज्जवसाणेसु भणितो तहा नागकुमारादिया अवसेसेसु सट्ठाणेसु परट्ठाणेसु भाणितव्वा जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते । एवमेते चउव्वीसा चउव्वीसं दंडगा भवंति ।

समुद्घातो थयेला छे ? हे गौतम ! अनन्ता थयेला छे. केटला भविष्य काळे थवाना छे ? हे गौतम ! कोइने थवाना छे अने कोइने थवाना नथी. जेने थवाना छे तेने जघन्यथी एक, बे, त्रण अने उत्कर्षथी संख्याता, असंख्याता अने अनन्ता थवाना छे. ए प्रमाणे नागकुमारपणामां यावत् वैमानिकपणामां पण कहेवुं. ए प्रमाणे जेम वेदना समुद्घात वडे असुरकुमार नैरयिकथी आरंभी वैमानिक सुधीमां कह्यो तेम नागकुमारादि बधा बाकीना स्वस्थानोमां अने परस्थानोमां कहेवा. यावत् वैमानिकने वैमानिकपणामां कहेवुं. एम आ चोवीशगुणा चोवीश दंडको थाय छे.

सिद्ध थाय तेने नैरयिकपणामां भविष्यमां थवानो एक पण वेदना समुद्घात नथी. बाकीनानेथ वाना छे अने तेने पण जघन्यथी एक, बे के त्रण होय छे. आ बाबत जेओनुं क्षीण थयेलुं शेष आयुष बाकी छे एवा, ते भवमां उत्पन्न थयेला अने पछीना भवमां सिद्ध थवाना छे तेओनी अपेक्षाए जाणवुं, परन्तु फरीथी नरकमां उत्पन्न थवाना होय तेनी अपेक्षाए न समजवुं. कारण के फरीथी नरकमां उत्पन्न थनारने तो जघन्यपदे पण संख्याता वेदना समुद्घातो थाय छे. ए संबन्धे मूळ टीकाकार कहे छे—"नरकेषु जघन्यस्थितिपूत्पन्नस्य नियमतः संख्येया एव वेदनासमुद्घाता भवन्ति, वेदनासमुद्घातप्रचुरत्वान्नारकाणाम्" इति । जघन्य स्थितिवाळा नरकोमां उत्पन्न थयेलाने अवश्य संख्याता ज घणा वेदना समुद्घातो थाय छे. कारण के वेदना समुद्घातवाळा नारको होय छे. उत्कर्षथी

संख्याता, असंख्या के अनन्ता होय छे. तेमां जे एक वार जघन्य स्थितिवाळा नरकमां उत्पन्न थवानो छे तेने संख्याता समुद्घातो होय छे. जघन्य स्थितिवाळा नरकमां अनेकवार अने दीर्घस्थितिवाळा नरकोमां एकवार के वारंवार जे उत्पन्न थवानो छे तेने असंख्याता अने अनन्तवार उत्पन्न थवानो छे तेने अनन्ता समुद्घातो होय छे. ए प्रमाणे नैरयिक संबन्धी पाठवडे असुरकुमारपणामां अने त्यार पछी चोवीश दण्डकना क्रमथी निरन्तर यावत् वैमानिकपणामां कहेवुं. ते आ प्रमाणे—'एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स असुरकुमाराओ केवइया वेयणासमुग्घाया अतीता ? अनन्ता । केवइया पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि, कस्सइ नत्थि, जस्स अत्थि जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा'—हे भगवन् ! एक एक नैरयिकने असुरकुमारनी अपेक्षाए केटला वेदना समुद्घातो अतीत काळे थयेला छे ? हे गौतम ! अनन्ता थयेला छे. केटला भविष्यकाळे थवाना छे ? हे गौतम ! कोइने थवाना होय छे अने कोइने थवाना नथी होता. जेने थवाना छे तेने जघन्यथी एक, बे के त्रण अने उत्कृष्ट संख्याता, असंख्याता के अनन्ता भविष्यकाळे थवाना होय छे. तेमां अतीतसूत्रमां अनन्तवार असुरकुमारपणुं प्राप्त थयेलुं होवाथी असुरकुमारपणाने प्राप्त थयेला नैरयिकने [असुरकुमारपणामां] अतीत काळे अनन्ता वेदना समुद्घातो घटे छे. पुरस्कृत-भावी वेदना समुद्घातना विचारमां जे नरकथी नीकळी पछीना भवमां मनुष्यपणुं पामी सिद्ध थशे, अथवा परंपराए एकवार असुरकुमारना भवने प्राप्त थवा छतां वेदना समुद्घातने प्राप्त नहि थाय तेने एक पण वेदना समुद्घात असुरकुमारपणामां थवानो नथी. जे एकवार असुरकुमारपणाने प्राप्त थइ एक ज वार वेदना समुद्घातने प्राप्त करशे तेने जघन्यथी एक, बाकीनाने बे के त्रण, संख्याती वार असुरकुमारपणाने प्राप्त थवाना छे तेने संख्याती वार, असंख्यातीवार असुरकुमारभावने प्राप्त थवाना छे तेने असंख्याती वार अने अनन्त वार प्राप्त थवाना छे तेने अनन्त वेदना समुद्घातो थवाना छे. ए प्रमाणे चोवीश दंडकना क्रमथी नागकुमारत्वादि स्थानोमां सूत्रपाठ निरन्तर ज्यां सुधी वैमानिकपणा सम्बन्धी सूत्र छे त्यां सुधी कहेवो.

'एगमेगस्स णं' इत्यादि. हे भगवन् ! पूर्वे नैरयिकपणे थयेला-नैरयिकपणाने प्राप्त थयेला एक एक असुरकुमारने (नैरयिकपणामां)

सम्पूर्ण अतीत काळनी अपेक्षाए वधा मळी केटला वेदना समुद्घातो पूर्वे थयेला छे? भगवान् उत्तर आपे छे— हे गौतम! अतीत काळे अनन्ता थयेला छे. कारण के तेणे अनन्तवार नैरयिकपणुं प्राप्त कर्युं छे, अने एक नैरयिकना भवमां जघन्यपदे पण संख्याता वेदना समुद्घातो थयेला छे. केटला थवाना छे? कदाचित् थवाना होय अने कदाचित् न थवाना होय. एटले कोइकने थाय अने कोइने न थाय ए भावार्थ छे. अहीं आ तात्पर्य छे—जे असुरकुमारना भवथी नीकळी नरकमां जवानो नथी, परन्तु तुरत के परंपराए मनुष्यभव पामी सिद्ध थशे तेने नैरयिकपणामां भविष्यकाळे वेदना समुद्घातो थवाना नथी. कारण के तेने नैरयिकपणानी अवस्थानो ज असम्भव छे. जे ते भव पछी परंपराए नरकमां जशे तेने वेदना समुद्घातो थवाना होय छे. तेमां पण कोइकने संख्याता, कोइकने असंख्याता अने कोइकने अनन्ता थवाना होय छे. तेमां जे एक वार जघन्य स्थितिवाळा नैरयिकमां उत्पन्न थशे तेने जघन्यपदे पण संख्याता होय छे. कारण के सर्वे जघन्य स्थितिवाळा नरकोमां पण संख्याता वेदना समुद्घातो थाय छे. केम के नारकोने घणी वेदना होय छे. अनेकवार जघन्य स्थितिवाळा नरकोमां अने एकवार के अनेकवार दीर्घस्थितिवाळा नरकोमां जवाथी असंख्याता वेदना समुद्घात अने अनन्तवार जवामां अनन्त वेदनासमुद्घातो थवाना छे.

तथा असुरकुमारपणामां रहेला एक एक असुरकुमारने संपूर्ण अतीत काळने आश्रयी केटला वेदना समुद्घातो अतीत काळे थयेला छे? भगवान् कहे छे—हे गौतम! अनन्ता थयेला छे. कारण के पूर्वे पण अनन्तवार असुरकुमारपणुं प्राप्त थयेलुं छे अने दरेक भवमां प्रायः वेदना समुद्घात होय छे. भविष्य काळना विचारमां कोइने थवाना होय छे अने कोइने थवाना होता नथी. जेने प्रश्न समय पछी असुरकुमारपणामां वर्तता छतां वेदना समुद्घात थवानो नथी, तेम त्यांथी नीकळी फरी पण असुरकुमारपणुं प्राप्त थवानुं नथी तेने वेदना समुद्घात थवाना नथी. जे एक वार असुरकुमारपणुं प्राप्त करशे तेने जघन्यपदे एक, बे के त्रण वेदना समुद्घातो थवाना छे. संख्यातीवार उपजशे तेने संख्याता असंख्यातीवार उपजशे तेने असंख्याता अने अनन्तवार उपजशे तेने अनन्ता वेदना समुद्घातो भविष्यकाळे थवाना छे. ए प्रमाणे चोवीश दंडकना क्रमथी नागकुमारत्वादि स्थानोमां असुरकुमार सम्बन्धे निरन्तर यावत्

५. एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स नेरइयत्ते केवइया कसायसमुग्घाया अतीता ? गोयमा ! अणंता । केवइया पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्सत्थि एगुत्तरियाते जाव अणंता । एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स असुरकुमारत्ते केवइया कसायसमुग्घाया अतीता ? गोयमा ! अणंता, केवइया पुरेक्खडा ? गोयमा !

५. हे भगवन् ! एक एक नैरयिकने नैरयिकपणामां केटला कषाय समुद्घातो अतीत काळे थयेला छे ? हे गौतम ! अनन्ता थयेला छे. केटला भविष्य काळे थवाना छे ? हे गौतम ! कोइने थवाना होय छे अने कोइने थवाना होता नथी. जेने थवाना छे तेने एकोत्तर–एकथी मांडी यावत् अनन्ता जाणवा. हे भगवन् ! एक एक नैरयिकने असुरकुमारपणामां केटला कषाय समुद्घातो अतीत काळे

वैमानिकपणामां कहेवुं. ते प्रमाणे सूत्रकार कहे छे—'एवं नागकुमारत्ते वि' इत्यादि. ए प्रमाणे नागकुमारपणामां पण जाणवुं–इत्यादि. ए प्रमाणे असुरकुमारो सम्बन्धे वेदना समुद्घातनो विचार कर्यो, हवे नागकुमारादिमां अतिदेश–समानपणुं बतावे छे—'एवं' इत्यादि. उपर बतावेला पाठ वडे जेम असुरकुमार चोवीश दंडकना क्रमथी नैरयिकथी आरंभी वैमानिक सुधीमां कह्यो तेम नागकुमारादि बाकीना बधा दंडको स्वस्थान अने परस्थानमां कहेवा. यावत् वैमानिकने वैमानिकपणामां कहेवुं. ए प्रमाणे नैरयिकना चोवीश दंडक सूत्रथी आरंभी वैमानिकना चोवीश दंडक सूत्र सुधी चोवीश सूत्रो थाय छे. एम प्रत्येक दंडकना चोवीश एवा चोवीश दंडक सूत्रवडे वेदनासमुद्घातनो विचार कर्यो.

५. हवे प्रत्येक दंडकना चोवीश एवा चोवीश दंडकसूत्रो वडे कषाय समुद्घातनो विचार करवानी इच्छावाळा सूत्रकार कहे छे—'एगमेगस्स णं' इत्यादि. एक एक नैरयिकने नैरयिकपणामां अतीत काळे केटला कषायसमुद्घातो थयेला छे ? इत्यादि. तेमां नैरयिकने नैरयिकपणा विशे प्रश्नसूत्र सुगम छे. पुरस्कृत–भविष्यकाळना विचारमां कषायसमुद्घातो कोइने थवाना होय छे अने कोइने होता

कस्सति अत्थि कस्सति नत्थि, जस्सत्थि सिय संखेज्जा, सिय असंखेज्जा, सिय अणंता, एवं जाव नेरइयस्स थणियकुमारत्ते। पुढविकाइयत्ते एगुत्तरियाए नेतव्वं, एवं जाव मणुयत्ते, वाणमंतरत्ते जहा असुरकुमारत्ते। जोइसियत्ते अतीता अणंता, पुरेक्खडा कस्सति अत्थि कस्सति नत्थि, जस्सत्थि सिय असंखेज्जा सिय अणंता, एवं वेमाणियत्तेवि सिय असंखेज्जा सिय अणंता। असुरकुमारस्स नेरइयत्ते अतीता अणंता, पुरेक्खडा कस्सति अत्थि

थयेला छे ? हे गौतम ! अनन्ता थयेला छे. केटला भविष्यमां थवाना छे ? हे गौतम ! कोइने थवाना होय छे अने कोइने थवाना नथी. जेने थवाना छे तेने कदाचित् संख्याता, कदाचित् असंख्याता अने कदाचित् अनन्ता थवाना होय छे. ए प्रमाणे नैरयिकने यावत् स्तनितकुमारपणामां कहेवुं. पृथिवीकायिकपणामां एकोत्तर–एकथी मांडी अनन्ता जाणवा. एम यावत् मनुष्यपणामां कहेवुं. व्यन्तरपणामां जेम असुरकुमारपणामां कह्युं तेम कहेवुं. ज्योतिष्कपणामां अतीत काळे अनन्ता थयेला छे. भविष्यमां कोइने थवाना

नथी. तेमां जेनुं शेष आयुष क्षीण थयेलुं छे एवो प्रश्नसमये भवना अन्ते वर्ततो नैरयिक कषायसमुद्घातने प्राप्त कर्या सिवाय ज नरकभवथी नीकळी तुरत पछीना भवमां सिद्ध थशे के परम्पराए बीजा भवोमां सिद्ध थशे पण फरी नरकगामी नहि थाय तेने नैरयिकपणामां भविष्यमां थवाना कषायसमुद्घातो होता नथी. बाकीनाने होय छे. जेने होय छे तेने पण जघन्यथी एक, बे के त्रण कषायसमुद्घातो होय छे अने ते जेओनुं शेष आयुष क्षीण थयेलुं छे एवा अने कषायसमुद्घातने प्राप्त थनाराने जाणवा. उत्कर्षथी संख्याता, असंख्याता के अनन्ता होय छे. तेमां जेओने संख्याता वरसनुं आयुष बाकी छे तेओने संख्याता, असंख्याता वरसनुं आयुष जेओनुं बाकी छे तेओने असंख्याता समजवा. अथवा एकवार जघन्यस्थितिवाळा नरकमां उत्पन्न थवा वाळाने संख्याता, वारंवार जघन्यस्थितिवाळा नरकमां उत्पन्न थनारने के एकवार के अनेकवार दीर्घस्थितिवाळा नरकमां उत्पन्न थवावाळाने असंख्याता अने अनन्तवार

कस्सति नत्थि, जस्सत्थि सिय संखेज्जा, सिय असंखेज्जा, सिय अणंता । असुरकुमारस्स असुरकुमारत्ते अतीता अणंता, पुरेक्खडा एगुत्तरिया, एवं नागकुमारत्ते जाव निरंतरं वेमाणियत्ते जहा नेरइयस्स भणितं तहेव भाणितव्वं, एवं जाव थणियकुमारस्सवि वेमाणियत्ते, नवरं सव्वेसिं सट्ठाणे एगुत्तरियाए, परट्ठाणे जहेव असुरकुमारस्स । पुढविकाइयस्स नेरइयत्ते जाव थणियकुमारत्ते अतीता अणंता, पुरेक्खडा कस्सति अत्थि कस्सति नत्थि,

---

होय अने कोइने न थवाना होय. जेने थवाना होय तेने कदाच असंख्याता होय अने कदाच अनन्ता होय. ए प्रमाणे वैमानिकपणामां पण कदाचित् असंख्याता अने कदाचित् अनन्ता होय छे. असुरकुमारने नैरयिकपणामां अतीत काळे अनन्ता थयेला होय छे. भविष्य काळे कोइने थवाना होय अने कोइने थवाना न होय. जेने थवाना होय तेने कदाचित् संख्याता होय, कदाचित् असंख्याता होय अने कदाचित् अनन्ता होय. असुरकुमारने असुरकुमारपणामां अतीत काळे अनन्ता थयेला होय अने भविष्य काळे एकोत्तर—

उत्पन्न थवावाळाने भविष्यकाळे अनन्ता कषायसमुद्घातो जाणवा. तथा जे प्रमाणे नैरयिकने नैरयिकपणामां कह्युं तेम असुरकुमारपणामां अतीत सूत्र जाणवुं अने ते प्रमाणे ज पुरस्कृत सूत्रमां 'कोईने थवाना होय छे अने कोइने होता नथी'. जे नरकथी नीकळी असुरकुमारपणुं प्राप्त करशे नहि तेने असुरकुमारपणामां भविष्यकाळे कषायसमुद्घातो थवाना नथी. जे असुरकुमारपणुं पामशे तेने थवाना छे. ते कषायसमुद्घातो जघन्यपदे संख्याता होय छे, कारण के जघन्यस्थितिमां पण असुरकुमारोने संख्याता कषायसमुद्घातो थाय छे. केमके तेओ लोभादि बहुकषायवाळा छे. उत्कृष्टपदे असंख्याता के अनन्ता होय छे. तेमां एकवार दीर्घस्थितिवाळामां के अनेकवार जघन्यस्थितिवाळामां उत्पन्न थवावाळाने असंख्याता अने अनन्तवार उत्पन्न थवावाळाने अनन्ता कषायसमुद्घातो होय छे. ए प्रमाणे नैरयिकोने नागकुमारत्वादि स्थानोमां यावत् स्तनितकुमारपणामां निरन्तर कहेवुं. ते प्रमाणे सूत्रकार कहे छे—'एवं जाव' इत्यादि.

जस्सत्थि सिय संखेज्जा, सिय असंखेज्जा, सिय अणंता। पुढविकाइयस्स पुढविकाइयत्ते जाव मणूसत्ते अतीता अणंता, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्स अत्थि एगुत्तरिया। वाणमंतरत्ते जहा णेरइयत्ते। जोतिसियवेमाणियत्ते अतीता अणंता, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्स अत्थि सिय असंखेज्जा, सिय

एकथी मांडी अनन्त सुधी जाणना. ए प्रमाणे नागकुमारपणामां यावत् वैमानिकपणामां जेम नैरयिकने कर्युं तेम कहेवुं. एम यावत् स्तनितकुमारने पण वैमानिकपणामां कहेवुं. परन्तु सर्वने स्वस्थानमां एकोत्तर–एकादि अनन्त पर्यंत अने परस्थानमां असुरकुमारनी पेठे जाणवुं. पृथिवीकायिकने नैरयिकपणामां यावत् स्तनितकुमारपणामां अतीत काळे अनन्ता थयेला छे. भविष्य काळे थवाना कोइने होय छे अने कोइने होता नथी. जेने होय छे तेने कदाचित् संख्याता होय, कदाचित् असंख्याता होय अने कदाचित् अनन्ता थवाना होय. पृथिवीकायिकने पृथिवीकायिकपणामां यावत् मनुष्यपणामां अतीत काळे अनन्ता थयेला होय छे अने भविष्यमां थवाना

'ए प्रमाणे नेरयिकने' यावत् स्तानितकुमारपणामां कहेवुं. पृथिवीकायिकपणामां अतीतसूत्र तेमज कहेवुं. पुरस्कृत–भविष्यना विचारमां कोइने होय छे, कोइने होता नथी. तेमां जे नरकथी नीकळी पृथिवीकायमां जवानो नथी तेने नथी होता, जे जवानो छे तेने पण जघन्यपदे एक, बे, त्रण अने उत्कर्षथी संख्याता, असंख्याता के अनन्ता होय छे. ते आ प्रमाणे–तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय भवथी, मनुष्यना भवथी के देवना भवथी कषायसमुद्घातने प्राप्त थइ जे एकवार पृथिवीकायिकोमां जवानो छे तेने एक, बे वार जवानो छे तेने बे, त्रण वार जवानो छे तेने त्रण, संख्याती वार जवानो छे तेने संख्याता, असंख्याती वार जवानो छे तेने असंख्याता अने अनन्ता वार जवानो छे तेने अनन्ता कषायसमुद्घातो थशे. ते प्रमाणे सूत्रकार कहे छे—'पुढविकाइयत्ते एगुत्तरियाए नेयव्वं' इति तथा एवं जाव मणूसत्ते' पृथिवीकायिकपणामां एकोत्तर–एकथी मांडी अनन्त सुधी जाणवा. तथा ए प्रमाणे यावत् मनुष्यपणामां जाणवुं. एम पृथिवीकायिकपणामां जे सूत्र

अणंता, एवं जाव मणूसेवि नेयव्वं । वाणमंतरजोइसियवेमाणिया जहा असुरकुमारा, णवरं संठाणे एगुत्तरियाए भाणितव्वे जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते । एवं एते चउव्वीसं चउवीसा दंडगा ।

कोइने होय अने कोइने न होय. जेने होय छे तेने एकोत्तर-एकथी मांडी अनन्त सुधी जाणवा, व्यन्तरपणामां जेम नैरयिकपणामां कह्युं छे तेम कहेवुं. ज्योतिष्क अने वैमानिकपणामां अतीतकाळे अनन्ता थयेला छे. भविष्यमां थवाना कोइने होय अने कोइने न होय. जेने होय तेने कदाच असंख्याता होय अने कदाच अनन्ता होय. ए प्रमाणे यावत् मनुष्य संबंधे पण जाणवुं. व्यन्तर, ज्योतिष्क अने वैमानिको जेम असुरकुमारो कह्या तेम कहेवा. परन्तु स्वस्थानने आश्रयी एकोत्तर-एकथी मांडी अनन्त सुधी जाणवा. यावत् वैमानिकोने वैमानिकपणामां कहेवुं. ए प्रमाणे ए चोवीश चोवीशगुणा दंडको थाय छे.

पाठ कह्यो छे ते वडे यावत् मनुष्यपणामां कहेवुं. ते आ प्रमाणे—'एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स आउकाइयत्ते केवइया कसायसमुग्धाया अईया ? गोयमा अणंता । केवइया पुरेक्खडा ? गोयमा! कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्सत्थि जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा । हे भगवन् ! एक एक नैरयिकने अप्कायिकपणामां केटला कषायसमुद्घातो अतीत काळे थयेला होय छे ? हे गौतम ! अनन्ता थयेला छे. केटला भविष्य काळे थवाना छे ? हे गौतम ! कोइने थवाना छे अने कोइने थवाना नथी. जेने थवाना छे तेने जघन्यथी एक, बे के त्रण अने उत्कृष्ट संख्याता, असंख्याता के अनन्ता थवाना छे. ए रीते मनुष्यसूत्र सुधी कहेवुं. तेमां अप्कायथी मांडी वनस्पति सुधीना सूत्रनो विचार पृथिवीकायिक सूत्रनी पेठे करवो, बेइन्द्रियसूत्रमां पुरस्कृत-भविष्य काळे थवाना कषायसमुद्घातनो विचार करतां जघन्यथी एक, बे के त्रण समुद्घातो जे एकवार जघन्यस्थितिवाळा बेइन्द्रियना भवने प्राप्त करवानो छे तेनी अपेक्षाए समजवा. संख्याती वार बेइन्द्रियना भवने प्राप्त थवानो छे तेने संख्याता,

असंख्याती वार प्राप्त करवानो छे तेने असंख्याता अने अनन्तवार प्राप्त करवानो छे तेने अनन्ता कषायसमुद्घातो भविष्य काळे थवाना छे. ए प्रमाणे तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रिय सूत्रो पण विचारवा. तिर्यंच पंचेन्द्रिय अने मनुष्यसूत्र विशे आ प्रमाणे विचार छे-जे एक वार तिर्यंच पंचेन्द्रियना भवने प्राप्त करवानो छे अने स्वभावथी ज अल्प कषायवाळो छे तेने जघन्यथी एक, बे के त्रण समुद्घातो होय छे अने बाकीना तिर्यंच पंचेन्द्रियना भवने संख्याती वार प्राप्त करनारने संख्याता, असंख्याती वार प्राप्त करनारने असंख्याता अने अनन्ती वार प्राप्त करनारने अनन्ता कषायसमुद्घातो थवाना छे.

मनुष्यसूत्रमां भविष्यना कषायसमुद्घात संबन्धे आ प्रमाणे विचार छे-जे नरकभवथी नीकळी अल्प कषायवाळो मनुष्यभव पामी कषायसमुद्घात कर्या सिवाय ज मोक्षमां जवानो छे तेने नथी, बाकीनाने होय छे. तेमां जे एक, बे के त्रण वार कषायसमुद्घातने प्राप्त करशे तेने एक, बे के त्रण कषायसमुद्घातो होय छे. संख्याता भवो करनारने अथवा एक भवमां पण संख्याता कषायसमुद्घात करनारने संख्याता, असंख्याता भवो प्राप्त करनारने असंख्याता अने अनन्ता भवो प्राप्त करनारने अनन्ता कषायसमुद्घातो थवाना छे. 'वाणमंतरत्ते जहा असुरकुमारत्ते' 'जेम असुरकुमारपणामां पूर्वे कह्युं छे तेम व्यन्तरपणामां कहेवुं'. तात्पर्य ए छे के भविष्य काळना विचारमां एम कहेवुं-जेने थवाना छे तेने कदाचित् संख्याता, कदाचित् असंख्याता अने कदाचित् अनन्ता होय छे. परन्तु एकोत्तरिका-एकथी मांडी अनन्त सुधी न कहेवा. व्यन्तरोने पण असुरकुमारोनी पेठे जघन्यस्थितिमां पण संख्याता कषायसमुद्घातो होय छे. असंख्याता अने अनन्तानो विचार पण असुरकुमारनी पेठे जाणवो. 'जोइसियत्ते' ज्योतिष्कपणामां अतीत काळे अनन्ता कहेवा. भविष्यमां थवाना कोइने होय, अने कोईने न पण होय. एनो पण पूर्वनी पेठे विचार करवो. जेने छे तेओमां पण कोइने असंख्याता अने कोइने अनन्ता होय. परन्तु कदाचित् संख्याता होय एम न कहेवुं. शा हेतुथी ? उत्तर—ज्योतिष्कोने जघन्यपदे पण असंख्याता काळनुं आयुष होवाथी जघन्यथी पण असंख्याता कषायसमुद्घातो होय छे अने अनन्त वार त्यां जवानी इच्छावाळाने अनन्ता होय छे. एम वैमानिकपणामां पण भविष्य काळना विचारमां 'कदाचित् असंख्याता अने कदाचित् अनन्ता होय'

एम कहेवुं. तेनो विचार पूर्वनी पेठे जाणवो. ए प्रमाणे नैरयिकने स्वस्थाने-नैरयिकपणामां अने परस्थाने-असुरकुमारत्वादि स्थानोमां कषायसमुद्घातनो विचार कर्यो.

हवे असुरकुमारोमां स्वस्थान अने परस्थानने आश्रयी कषायसमुद्घातोनो विचार करवानी इच्छावाळा सूत्रकार कहे छे—'एग-मेगस्स णं' इत्यादि. एक एक असुरकुमारने नैरयिकपणामां कषायसमुद्घातो अतीत काळे अनन्ता होय छे. भविष्यकाळे कोइने होय अने कोइने न होय. तेमां जे असुरकुमारना भवथी नीकळी नरके जवानो नथी तेने होता नथी, जे नरके जवानो छे तेने होय छे. तेमां पण जघन्यथी संख्याता होय छे. कारण के जघन्यस्थितिवाळा नरकोमां पण संख्याता कषायसमुद्घातो थाय छे. उत्कर्षथी असंख्याता अने अनन्ता जाणवा. तेमां जघन्य स्थितिवाळा नरकोमां वारंवार अने दीर्घस्थितिवाळा नरकोमां एक वार के अनेक वार जवावाळाने असंख्याता अने अनन्तवार जवावाळाने अनन्ता होय छे. असुरकुमारने असुरकुमारपणामां अतीत काळे अनन्ता अने 'पुरेक्खडा एगुत्तरिया' भविष्यमां थवाना एकोत्तरिका-एकथी मांडी अनन्त सुधी होय छे. जे भविष्यमां थवाना छे ते कोइने होय छे अने कोइने होता नथी. तेमां जे असुरकुमार भवना पर्यन्तवर्त्ती छे अने कषायसमुद्घात करवानो नथी, तेम त्यांथी च्यवी फरीथी असुरकुमारनो भव प्राप्त करवानो नथी परन्तु पछीना भवे के परम्पराए सिद्धिपदने पामशे तेने होता नथी, बाकीनाने होय छे. जेने होय छे तेने पण जघन्यथी एक, बे के त्रण अने उत्कर्षथी असंख्याता के अनन्ता होय छे. तेमां जेओना आयुषनो शेष भाग क्षीण थयेलो छे एवा कषायसमुद्घातने प्राप्त थनार अने फरीथी त्यां नहि उत्पन्न थनारने एकादि कषायसमुद्घातो जाणवा. संख्याता आदिनो विचार नैरयिकपणामां कर्यो हतो तेम करवो. 'एवं' इत्यादि. ए प्रमाणे नागकुमारपणामां अने त्यार बाद चोवीश दंडकना क्रमथी निरन्तर यावत् वैमानिकपणामां जेम नैरयिकने सूत्र कह्युं हतुं तेम कहेवुं. तात्पर्य ए छे के नागकुमारपणाथी मांडी यावत् स्तनितकुमारपणामां भविष्यना विचारमां 'कोइने होय छे अने कोइने होता नथी. जेने होय छे तेने कदाच संख्याता होय, कदाच असंख्याता होय अने कदाच अनन्ता होय. पृथिवीकायिकादिपणामां यावत् मनुष्यपणामां जेने थवाना छे तेने जघन्यथी एक, बे के त्रण अने उत्कर्षथी संख्याता,

असंख्याता के अनन्ता होय छे. व्यन्तरपणामां जेने थवाना छे तेने कदाच संख्याता, कदाच असंख्याता अने कदाच अनन्ता होय छे. ज्योतिष्कपणामां 'जेने थवाना छे तेने कदाच असंख्याता होय अने कदाच अनन्ता होय.' वैमानिकपणामां पण एम ज कहेवुं. 'एवं जाव'इत्यादि. ए प्रमाणे असुरकुमारनी पेठे नागकुमार यावत् स्तनितकुमार प्रत्येकने यावत् वैमानिकपणामां कहेवुं एटले वैमानिकपणा संबन्धी सूत्र छे त्यां सुधी कहेवुं. अहीं विशेषता बतावे छे—'नवरं' परन्तु नागकुमारथी मांडी स्तनितकुमार सुधीना बधाने स्वस्थानमी अपेक्षाए अवश्य भविष्यमां थवाना एकोत्तरिका-एकथी मांडी अनन्त सुधी जाणवा. अने परस्थानमी अपेक्षाए जेम असुरकुमारने कह्या तेम कहेवा. 'पुढविक्काइयस्स नेरइयत्ते' इत्यादि. पृथिवीकायिकने नैरयिकपणामां यावत् स्तनितकुमारपणामां अतीत काळे अनन्ता जाणवा अने तेनो विचार पूर्वेनी पेठे करवो. भविष्यमां कोइने होय छे अने कोइने होता नथी. तेमां जे पृथिवीकायना भवथी नीकळी नरकमां, असुरकुमारमां यावत् स्तनितकुमारमां जवानो नथी परन्तु मनुष्यभव पामी मोक्षे जवानो छे तेने होता नथी, बीजाने होय छे. जेने होय छे तेने जघन्यथी संख्याता होय छे. कारण के जघन्य स्थितिवाळा नरकादिमां पण संख्याता कषाय समुद्घातो होय छे. उत्कर्षथी असंख्याता के अनन्ता होय छे अने ते पूर्वेनी पेठे विचारवा. पृथिवीकायिकपणामां यावत् मनुष्यपणामां अतीत काळे ते प्रमाणे अनन्ता होय छे. भविष्यकाळे थवाना एकथी मांडी अनन्त सुधी कहेवा. ते आ प्रमाणे—कोइने होय छे अने कोइने होता नथी. जेने होय छे तेने जघन्यथी एक, बे के त्रण अने उत्कर्षथी संख्याता, असंख्याता के अनन्ता होय छे. तेनो विचार जेम नैरयिकनो पृथिवीकायिकपणामां कर्यो तेम करवो. 'वाणमंतरत्ते जहा नेरइयत्ते' इति. व्यन्तरपणामां जेम नैरयिकपणामां कह्युं तेम कहेवुं. तात्पर्य ए छे के अहीं एकोत्तरिका-एकथी मांडी अनन्त सुधी न कहेवा, परन्तु 'कदाच संख्याता होय, कदाच असंख्याता होय अने कदाच अनन्ता होय एम कहेवुं. ज्योतिष्कपणामां अने वैमानिकपणामां अतीत काळे ते प्रमाणे अनन्ता थयेला छे. जो भविष्यमां थवाना छे तो जघन्यपदे असंख्याता अने उत्कृष्टपदे अनन्ता जाणवा. ए प्रमाणे अप्कायिकने यावत् मनुष्यने जाणवुं. व्यन्तर, ज्योतिष्क अने वैमानिकने असुरकुमारनी पेठे कहेवुं. परन्तु भविष्यना विचारमां स्वस्थानमी अपेक्षाए बधुं एकोत्तरिका वडे-एकथी मांडी अनन्त सुधी

६. मारणंतियसमुग्घातो सट्ठाणेवि परट्ठाणेवि एगुत्तरियाए नेयव्वो जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते, एवमेते चउवीसं चउवीसदंडगा भाणितव्वा। वेउव्वियसमुग्घातो जहा कसायसमुग्घातो तहा निरवसेसो भाणितव्वो, नवरं जस्स नत्थि तस्स न वुच्चति, एत्थवि चउवीसं चउवीसा दंडगा भाणियव्वा। तेयगसमुग्घातो जहा मार-

६. मारणान्तिक समुद्घात स्वस्थानने विशे अने परस्थानने विशे पण एकोत्तरिका वडे-एकथी मांडी अनन्ता वडे कहेवो. यावत् वैमानिकने वैमानिकपणामां कहेवो. ए प्रमाणे ए [प्रत्येकना दंडकना] चोवीश एवा चोवीश दंडको कहेवा. वैक्रिय समुद्घात जेम कषायसमुद्घात कह्यो तेम बधो कहेवो, परन्तु जेने होय तेने कहेवो. ए प्रमाणे ए पण चोवीश चोवीश दंडको कहेवा. तैजस

कहेवा. परस्थाननी अपेक्षाए जेम असुरकुमारनुं सूत्र कह्युं तेम कहेवुं. सूत्रनो पर्यन्त भाग बतावे छे—'जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते' इति. यावत् वैमानिकने वैमानिकपणामां कहेवुं. ए प्रमाणे आ कषायसमुद्घात संबन्धी चोवीश संख्यावाळा चोवीश दंडको कहेवा. ए प्रमाणे प्रत्येक दंडकना चोवीश एवा चोवीश दंडकसूत्रो वडे कषायसमुद्घात कह्यो.

६. हवे प्रत्येक दंडकना चोवीश चोवीश दंडकसूत्रो वडे मारणान्तिक समुद्घात कहे छे—'मरणंतिए' इति. मारणान्तिक समुद्घात भविष्यकाळना विचारमां स्वस्थान विशे अने परस्थान विशे एकोत्तरिका-एकथी मांडी अनन्त संख्या वडे कहेवो. एटले स्वस्थान अने परस्थानमां एकथी मांडी अनन्ता मारणान्तिक समुद्घातो कहेवा. यावत् वैमानिकने वैमानिकपणा विशे सूत्र कहेवुं. ते आ प्रमाणे-हे भगवन्! एक एक नैरयिकने नैरयिकपणामां केटला मारणान्तिक समुद्घातो अतीतकाळे थयेला छे? हे गौतम! अनन्ता थयेला छे. केटला भविष्यकाळे थवाना छे? हे गौतम! कोइने थवाना छे अने कोइने नथी. जेने थवाना छे तेने जघन्यथी एक, बे के त्रण अने उत्कर्षथी संख्याता, असंख्याता के अनन्ता होय छे. तेमां जे मारणांतिक समुद्घात कर्या सिवाय काळ करीने नरकथी नीकळी तुरत

णंतियसमुग्घातो, णवरं जस्सऽत्थि, एवं एतेवि चउव्वीसं चउव्वीसा दंडगा भाणितव्वा ।

समुद्‌घात मारणान्तिक समुद्‌घातनी पेठे कहेवो. परन्तु जेने होय तेने कहेवो. ए प्रमाणे प्रत्येकना चोवीश चोवीश दंडको कहेवा.

के परंपराए केटलाक भव कर्या पछी मनुष्य भव पामीने सिद्ध थशे, पण फरी नरकमां जवानो नथी तेने भविष्यमां मारणान्तिक समुद्‌घात होता नथी. परन्तु जे तेज भवमां वर्तती मारणान्तिक समुद्‌घात वडे काळ करीने नरकथी नीकळी सिद्ध थशे तेने भविष्यमां एक मारणान्तिक समुद्‌घात होय छे. जे फरी नरकमां आवी वधा मळी बे मारणान्तिक समुद्‌घातने प्राप्त थवानो छे तेने बे होय छे. ए प्रमाणे त्रण वगेरे मारणान्तिक समुद्‌घातनो पण विचार करवो. संख्याता वार नरकमां आवनारने संख्याता, असंख्याती वार आवनारने असंख्याता अने अनन्तवार आवनारने अनन्ता मारणान्तिक समुद्‌घातो होय छे. ए प्रमाणे असुरकुमारपणामां सूत्र पाठ कहेवो. परन्तु अहीं आ प्रमाणे भावना छे-जे नरकथी नीकळी मनुष्य भव पामी सिद्ध थशे, अथवा ते भवमां मारणान्तिक समुद्‌घातने प्राप्त कर्या सिवाय मृत्यु पामी तेथी अन्य भवमां मोक्षे जशे तेने होता नथी. बाकीनाने एकादिनो विचार पूर्वेनी पेठे करवो. व्यन्तर, ज्योतिष्क अने वैमानिकोमां नैरयिकनी पेठे कहेवुं. जेम नैरयिकनो नैरयिकादि चोवीश स्थानोमां विचार कर्यो तेम असुरकुमारथी मांडी वैमानिक सुधीनो चोवीश दंडकना क्रमथी विचार करवो. ए प्रमाणे अन्य अन्य पण चोवीश दंडकसूत्रो थाय छे. ते प्रमाणे सूत्रकार कहे छे-'एवं एए चउवीसं चउवीसा दंडगा भाणियव्वा' ए प्रमाणे (प्रत्येक दंडकना) चोवीश चोवीश दंडको कहेवा. एम मारणान्तिक समुद्‌घात प्रत्येकना चोवीश एवा चोवीश दंडकसूत्रो वडे कह्यो.

हवे एटलीज संख्यावाळा सूत्रो वडे वैक्रियसमुद्‌घातने कहेवानी इच्छावाळा सूत्रकार कहे छे—'वेउव्विए' इत्यादि. वक्रियसमुद्‌घात संबन्धे जेम कषायसमुद्‌घात संबन्धे पूर्वे कह्युं तेम बधुं कहेवुं. केवळ जेने वैक्रियलब्धिनो असंभव होवाथी वैक्रियसमुद्‌घात नथी तेने न कहेवो. बाकीनाने कहेवो, ते आ प्रमाणे—एक एक नैरयिकने नैरयिकपणामां केटला वैक्रियसमुद्‌घातो अतीत काळे थयेला

छे ? हे गौतम ! अनन्ता थयेला छे. केटला भविष्यकाळे थवाना छे ? हे गौतम ! कोइने होय छे अने कोइने होता नथी. जेने होय छे तेने जघन्यथी एक, बे, त्रण अने उत्कर्षथी संख्याता, असंख्याता के अनन्ता होय छे. एक एक नैरयिकने असुरकुमारपणामां केटला वैक्रियसमुद्घातो अतीत काळे थयेला छे ? हे गौतम ! अनन्ता थयेला छे. केटला भविष्यमां थवाना छे ? हे गौतम ! कोइने होय छे अने कोइने होता नथी. जेने होय छे तेने कदाच संख्याता, कदाच असंख्याता अने कदाच अनन्ता होय छे. ए प्रमाणे नैरयिकने यावत् स्तनितकुमारपणामां कहेवुं. हे भगवन् ! एक एक नैरयिकने पृथिवीकायिकपणामां केटला वैक्रियसमुद्घातो अतीत काळे थयेला छे ? हे गौतम ! थयेला नथी. केटला भविष्यकाळे थवाना छे ? हे गौतम ! थवाना नथी. ए प्रमाणे यावत् तेजस्कायपणामां कहेवुं. हे भगवन् ! नैरयिकने वायुकायिकपणामां केटला वैक्रियसमुद्घातो अतीत काळे थयेला छे ? हे गौतम ! अनन्ता थयेला छे. केटला भविष्यमां थवाना छे ? हे गौतम ! कोइने थवाना छे अने कोइने थवाना नथी. जेने थवाना छे तेने जघन्यथी एक, बे के त्रण अने उत्कर्षथी संख्याता, असंख्याता के अनन्ता थवाना होय छे. वनस्पतिकायिकपणामां यावत् चउरिन्द्रियपणामां जेम पृथिवीकायिकपणामां कह्युं तेम कहेवुं. तिर्यंच पंचेन्द्रियपणामां अने मनुष्यपणामां जेम वायुकायिकपणामां कह्युं तेम कहेवुं. व्यन्तर, ज्योतिष्क अने वैमानिकपणामां जेम असुरकुमारपणामां कह्युं तेम कहेवुं. अहीं ज्यां वैक्रियसमुद्घातनो संभव छे त्यां कषायसमुद्घातनी पेठे विचार करवो. बीजे तेनो प्रतिषेध सुप्रसिद्ध छे. कारण के त्यां वैक्रियलब्धिनो ज असंभव छे. जेम नैरयिक संबन्धे चोवीश दंडकना क्रमथी सूत्र बताव्युं तेम असुरकुमारादि संबन्धे पण चोवीश दंडकना क्रमथी प्रत्येक सूत्र जाणवुं. परन्तु असुरकुमारथी आरंभी स्तनितकुमार सुधीमां अने व्यन्तरादिमां परस्पर स्वस्थाने एकोत्तरिका-एकथी मांडी अनन्ता अने परस्थाने संख्यातादि कहेवा. वायुकायिक, तिर्यंच पंचेन्द्रिय अने मनुष्यमां परस्पर स्वस्थाने अने परस्थाने एकथी मांडी अनन्ता कहेवा. बाकी बधुं तेमज जाणवुं. ए प्रमाणे प्रत्येक दंडकना चोवीश एवा चोवीश दंडकसूत्रो थाय छे. ते प्रमाणे सूत्रकार कहे छे—'एवं एए चउवीसं चउवीसगा दंडगा भाणिगव्वा'-एम प्रत्येक दंडकना चोवीश एवा चोवीश दंडको कहेवा. ए प्रमाणे-उपर बताव्या प्रमाणे अहीं पण-वैक्रियसमुघातना विषयमां पण प्रत्येकना

७. एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स नेरइयत्ते केवइया आहारसमुग्घाया अतीता ? गोयमा ! णत्थि । केवइया पुरेक्खडा ? गोयमा ! णत्थि, एवं जाव वेमाणियत्ते, नवरं मणूसत्ते अतीता कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्स-

७. हे भगवन् ! एक एक नैरयिकने नैरयिकपणामां केटला आहारक समुद्घातो अतीतकाळे थयेला छे ? हे गौतम ! थयेला नथी. ए प्रमाणे यावत् वैमानिकपणामां कहेवुं. परन्तु मनुष्यपणामां अतीत काळे कोइने थयेला छे अने कोइने नथी. जेने थयेला छे

चोवीश-चोवीश दंडकसूत्रो कहेवा.

हवे तैजससमुद्घातने अतिदेश-समानपणाथी कहे छे—'तेयगे' इत्यादि. जेम मारणान्तिक समुद्गात कह्यो तेम तैजससमुद्गात कहेवो. तात्पर्य ए छे के तैजससमुद्घात स्वस्थाने अने परस्थाने एकोत्तरिका वडे-एकथी मांडी अनन्त संख्या वडे कहेवो. परन्तु जेने तैजससमुद्घात संभवतो नथी तेने न कहेवो. बाकीनाने विशे कहेवो, नैरयिक, पृथिवी, पाणी, अग्नि, वायु, वनस्पति, बे-इन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रियने विशे संभवतो नथी माटे न कहेवो अने ते सिवायना बीजाने कहेवो. ते आ प्रमाणे-हे भगवन् ! एक एक नैरयिकने नैरयिकपणामां केटला तैजससमुद्गातो अतीत काळे थयेला छे ? हे गौतम ! थयेला नथी. केटला भविष्यमां थवाना छे ? हे गौतम ! थवाना नथी. हे भगवन् ! एक एक नैरयिकने असुरकुमारपणामां केटला तैजससमुद्गातो अतीत काळे थयेला छे ? हे गौतम ! अनन्ता थयेला छे. केटला भविष्यमां थवाना छे ? हे गौतम ! कोइने थवाना छे अने कोइने थवाना नथी. जेने थवाना छे तेने जघन्यथी एक, बे के त्रण अने उत्कर्षथी संख्याता, असंख्याता अने अनन्ता थवाना छे'-इत्यादि सूत्रमां कहेली विशेषताने आश्रयी स्वयं विचार करवो. अहीं सूत्रनी संख्या कहे छे—'एवं' इत्यादि. ए प्रमाणे मारणांन्तिक समुद्घात संबन्धी पाठ वडे अने क्वचित् सर्वथा निषेधरूप प्रकार वडे ए तैजससमुद्गात संबन्धी पण प्रत्येकना चोवीश चोवीश दंडको कहेवा.

७. हवे आहारक समुद्गातनो विचार करता सूत्रकार कहे छे—'एगमेगस्स णं' इत्यादि. एक एक नैरयिकने आहारकसमुद्घातो

त्थि जहन्नेणं एक्को वा दो वा, उक्कोसेणं तिन्नि। केवइया पुरेक्खडा ? गोयमा! कस्सति अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्सत्थि जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं चत्तारि, एवं सव्वजीवाणं मणुस्साणं भाणियव्वं। मणूसस्स मणूसत्ते अतीता कस्सति अत्थि कस्सति नत्थि, जस्सत्थि जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं चत्तारि, एवं पुरेक्खडावि। एवमेते चउवीसं चउवीसा दंडगा जाव वेमाणियत्ते।

तेने जघन्यथी एक, बे अने उत्कृष्ट त्रण होय छे. केटला भविष्य काळे थवाना छे? हे गौतम! कोइने थवाना होय छे अने कोइने होता नथी. जेने होय छे तेने जघन्यथी एक, बे के त्रण अने उत्कृष्टथी चार होय छे. ए प्रमाणे सर्व जीवो अने मनुष्योने कहेवुं. मनुष्यने मनुष्यपणामां अतीत काळे थयेला कोइने होय छे अने कोइने होता नथी. जेने थयेला होय छे तेने जघन्यथी एक, बे के त्रण अने उत्कर्षथी चार होय छे. ए प्रमाणे भविष्यकाळमां थवाना पण जाणवा. ए प्रमाणे ए प्रत्येक दंडकना चोवीश एवा चोवीश दंडको यावत् वैमानिकपणामां कहेवा.

अतीत काळे केटला थयेला होय—इत्यादि. अहीं वधा स्थानोने आश्रयी मनुष्यपणाना विचारमां अतीत काळे जघन्यथी एक, बे अने उत्कर्षथी त्रण होय छे. तथा भविष्यमां थवाना जघन्यथी एक, बे के त्रण अने उत्कर्षथी चार होय छे. आ बाबतमां कारण पूर्वे कह्युं छे. अहीं पण सूत्रनी संख्या कहे छे—ए प्रमाणे-उपर बतावेला प्रकार वडे ए आहारक समुद्घात विशे चोवीश दंडको कहेवा. क्यां सुधी कहेवा? ए सूत्रकार कहे छे—'यावत् वैमानिकने वैमानिकपणामां पटले वैमानिकपणा विशे सूत्र छे त्यां सुधी कहेवा. ते आ प्रमाणे—'एक एक वैमानिकने वैमानिकपणामां केटला आहारकसमुद्घातो अतीत काळे थयेला छे? हे गौतम! नथी. केटला भविष्यकाळे थवाना छे? हे गौतम! थवाना नथी.

८. एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स नेरइयत्ते केवतिया केवलिसमुग्घाया अतीता ? गोयमा ! णत्थि । केवइया पुरेक्खडा ? गोयमा ! नत्थि, एवं जाव वेमाणियत्ते, णवरं मणूसत्ते अतीता नत्थि, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्सत्थि इक्को, मणूसस्स मणूसत्ते अतीता कस्सति अत्थि कस्सति नत्थि, जस्सत्थि एक्को, एवं पुरेक्खडावि । एवमेते चउव्वीसं चउव्वीसा दंडगा ।

८. हे भगवन् ! एक एक नैरयिकने नैरयिकपणामां केटला केवलिसमुद्घातो अतीत काळे थयेला छे ? हे गौतम ! थयेला नथी. केटला भविष्य काळे थवाना छे ? हे गौतम ! थवाना नथी. ए प्रमाणे यावत् वैमानिकपणामां कहेवुं. परन्तु मनुष्यपणामां अतीत काळे थयेला नथी, भविष्य काळे थवाना कोइने होय छे अने कोइने होता नथी, जेने थवाना छे तेने एक थवानो छे. मनुष्यने मनुष्यपणामां अतीत काळे कोइने थयेला छे अने कोइने नथी. जेने थयेला छे तेने एक थयेलो छे. ए प्रमाणे भविष्य काळे थवानो पण एकज जाणवो. ए प्रमाणे ए प्रत्येक दंडकना चोवीश चोवीश दंडको कहेवा.

८. हवे केवलिसमुद्घात संबन्धे कहेवानी इच्छावाळा सूत्रकार कहे छे—'एगमेगस्स णं भंते !' इत्यादि. हे भगवन् ! एक एक नैरयिकने नैरयिकपणामां केटला केवलिसमुद्घातो होय ? इत्यादि. अहीं पण आ तात्पर्यार्थ छे-बधाय स्थानोमां मनुष्यपणाना विचार सिवाय अतीत अने भविष्यकाळमां प्रतिषेध करवो. मनुष्य सिवायना स्थानोमां मनुष्यपणाना विचारमां अतीत केवलिसमुद्घातनो प्रतिषेध करवो. भविष्यमां थवानो केवलिसमुद्घात कोइने होय अने कोइने न होय. जेने होय तेने एकज कहेवो. मनुष्यने मनुष्यपणाना विचारमां अतीत काळे कोइने होय अने कोइने न पण होय. जेने होय तेने पण एकज होय. ए हकीकत प्रश्न समये केवलिसमुद्घात करी रहेला केवलीने आश्रयी समजवी. भविष्यमां पण कोइने होय अने कोइने न होय. जेने होय तेने पण एकज होय एम

९. नेरइयाणं भंते ! नेरइयत्ते केवतिया वेदणासमुग्घाया अतीता ? गोयमा ! अणंता । केवतिया पुरेक्खडा ? गोयमा ! अणंता, एवं जाव वेमाणियत्ते, एवं सव्वजीवाणं भाणितव्वं जाव वेमाणियाणं वेमाणियत्ते, एवं जाव तेयगसमुग्घाया, णवरं उवउज्जिऊण नेयव्वं जस्सत्थि वेउव्वियतेयगा ।

९. हे भगवन् ! नैरयिकोने नैरयिकपणामां केटला वेदना समुद्घातो अतीत काळे थयेला छे ? हे गौतम ! अनन्ता थयेला छे. केटला भविष्यमां थवाना छे ? हे गौतम ! अनन्ता थवाना छे. ए प्रमाणे यावत् वैमानिकपणामां कहेवुं. ए प्रमाणे सर्व जीवोने यावत् वैमानिकोने वैमानिकपणामां कहेवुं. एम यावत् तैजस समुद्घात सुधी कहेवुं. परन्तु उपयोग राखी–विचारीने जेने वैक्रिय अने तैजस समुद्घात होय तेने ते कहेवा.

कहेवुं. अहीं पण सूत्रनी संख्या कहे छे—'एवं' इत्यादि. एम उपर बतावेला प्रकार वडे ए केवलिसमुद्घात विशे प्रत्येक दंडकना चोवीश चोवीश दंडको थाय छे. ए प्रमाणे बधा मळी एकवचन संबन्धे चोवीश दंडकने साते गुणतां एकसो अडसठ सूत्रो थाय छे.

९. हवे एटलीज संख्यावाळा बहुवचन संबन्धे सूत्रो छे तेने बताववानी इच्छावाळा सूत्रकार कहे छे—'नेरइयाणं' इत्यादि. हे भगवन् ! विवक्षित प्रश्न समये वर्तमान बधा नैरयिको जेओ पूर्वे सर्व अतीत काळनी अपेक्षाए एटले अनन्त अतीत काळे यथा संभव नैरयिकपणामां रहेला होय तेओने समुदित सर्व संख्या वडे केटला वेदना समुद्घातो थयेला होय छे ? भगवान् कहे छे—हे गौतम ! अनन्ता थयेला होय. कारण के घणा नैरयिको अनन्तकाळथी अव्यवहार राशिमांथी नीकळेला होय छे अने अनन्त वार नरकमां जवा वडे तेओने अनन्त समुद्घातनो संभव छे. केटला भविष्यमां थवाना होय ? आ सूत्र तो सूचना मात्र छे. संपूर्ण पाठ तो आ प्रमाणे छे—'हे भगवन् ! नैरयिकोने नैरयिकपणामां केटला वेदनासमुद्घातो भविष्यमां थवाना होय ? भगवान् कहे छे-हे गौतम ! अनन्ता होय.

कारण के घणानुं फरीथी अनन्तवार नरकमां आगमन संभवे छे. ए प्रमाणे असुरकुमारत्वादि स्थानोमां अनुक्रमे यावत् वैमानिकपणामां कहेवुं एटले वैमानिकपणा विषयक सूत्र छे त्यां सुधी कहेवुं. ते आ प्रमाणे—हे भगवन् ! नैरयिकोने वैमानिकपणामां केटला वेदनासमुद्घातो अतीतकाळे थयेला छे ? हे गौतम ! अनन्ता थयेला छे. केटला भविष्यकाळे थवाना छे ? हे गौतम ! अनन्ता थवाना छे. अहीं अतीतकाळे अनन्ता सुप्रसिद्ध छे. कारण के बधा सांव्यवहारिक जीवोए प्रायः अनन्तीवार वैमानिकपणुं प्राप्त करेलुं छे, भविष्यमां थवाना अनन्ता छे. कारण के प्रश्न समये वर्तता बधा नैरयिकोमांना घणा अनन्तवार वैमानिकपणुं पामवाना छे. ए प्रमाणे वच्चे रहेला असुरकुमारत्वादि स्थानोमां पण विचार करवो. जेम नैरयिकोने नैरयिकत्वादि अवस्थाओमां चोवीश दंडकना अतीत अने अनागत वेदनासमुद्घातो कह्या तेम असुरकुमारादि सर्व जीवोने कहेवा. क्यां सुधी कहेवा ? ए माटे कहे छे—यावत् वैमानिकोने वैमानिकपणामां कहेवा. ते आ प्रमाणे—'हे भगवन् ! वैमानिकोने वैमानिकपणामां केटला वेदनासमुद्घातो अतीत काळे थयेला होय ? हे गौतम ! अनन्ता होय. केटला भविष्य काळे थवाना होय ? हे गौतम ! अनन्ता होय. ए प्रमाणे कषाय, मरण, वैक्रिय अने तैजससमुद्घातो पण नैरयिकथी आरंभी वैमानिक सुधीना बधा जीवोने बधा नैरयिकत्वादि स्थानोमां चोवीश दंडकना क्रम वडे कहेवा. ते प्रमाणे सूत्रकार कहे छे—'एवं जाव' इत्यादि. ए प्रमाणे-वेदनासमुद्घात संबन्धी प्रकार वडे कषायादि समुद्घातो पण यावत् तैजस समुद्घात सुधी कहेवा. कांइपण विशेषता सिवाय कहेवा ? 'नहि'—एम सूत्रकार कहे छे, परन्तु उपयोग करी-ख्याल राखी सर्वे सूत्र बुद्धि वडे विचारवुं. तात्पर्य ए छे के ज्यां समुद्घातो घटे त्यां अतीत अने अनागत समुद्घातो अनन्ता कहेवा. बाकीना स्थानोमां प्रतिषेध करवो. एज बाबतने विशेषपणे कहे छे—'जस्स अत्थि' इत्यादि. जे नैरयिकादि के असुरकुमारादि जीवराशिने वैक्रिय अने तैजस समुद्घातो संभवे छे ते तेने कहेवा. बाकीना पृथिव्यादि स्थानोमां तेनो प्रतिषेध करवो-ए अर्थात् समजी लेवुं. कषाय अने मारणान्तिक समुद्घातो बधेय वेदना समुद्घातनी पेठे अतीत काळे अने भविष्य काळे सामान्यपणे अनन्ता कहेवा. परन्तु क्यांइ पण तेनो निषेध न करवो.

१०. नेरइयाणं भंते ! नेरइयत्ते केवतिता आहारगसमुग्घाया अतीता ? गोयमा ! नत्थि । केवतिता पुरेक्खडा ? गोयमा ! णत्थि, एवं जाव वेमाणियत्ते । णवरं मणूसत्ते अतीता असंखेज्जा, पुरेक्खडा असंखेज्जा, एवं जाव वेमाणियाणं । णवरं वणस्सइकाइयाणं मणूसत्ते अतीता अणंता, पुरेक्खडा अणंता । मणूसाणं मणूसत्ते अती-

---

१०. हे भगवन् ! नैरयिकोने नैरयिकपणामां केटला आहारक समुद्घातो अतीत काळे थयेला छे ? हे गौतम ! थयेला नथी. केटला भविष्यमां थवाना छे ? हे गौतम ! थवाना नथी. ए प्रमाणे यावत् वैमानिकपणामां कहेवुं. परन्तु मनुष्यपणामां अतीत काळे असंख्याता थयेला छे अने भविष्य काळे असंख्याता थवाना छे. ए प्रमाणे यावत् वैमानिकोने कहेवुं. परन्तु वनस्पतिकायिकोने मनुष्यपणामां अतीत काळे अनन्ता थयेला छे अने भविष्य काळे अनन्ता थवाना छे. मनुष्योने मनुष्यपणामां अतीत काळे कदाच संख्याता होय अने कदाच असंख्याता होय. ए प्रमाणे भविष्य काळे थवाना पण जाणवा. बाकीना बधा दंडको नैरयिकोनी पेठे

---

१०. हवे आहारक समुद्घात विशे सूत्र कहे छे—'नेरइयाणं' इत्यादि. आहारक लब्धि छतां आहारक शरीरना प्रारंभ काळे आहारक समुद्घात होय छे, ए सिवाय होतो नथी. आहारक लब्धि चौद पूर्वेनुं ज्ञान होय त्यारे होय छे अने चौद पूर्वेनुं ज्ञान मनुष्यपणानी अवस्थामां होय छे, पण बीजी अवस्थामां होतुं नथी, माटे मनुष्यपणा सिवायनी बीजी अवस्थामां अतीत अने भविष्य आहारक समुद्घातोनो प्रतिषेध करवो. मनुष्यपणानी अवस्थामां पण पूर्वे अतीत काळे थयेला असंख्याता होय छे, कारण के प्रश्न समये वर्तता नारकोमां पूर्वे ते ते काळे मनुष्यपणुं पामी जेओए चौद पूर्वेनुं अध्ययन कर्युं छे एवा घणा-असंख्याता नारको पैकी दरेके एक वार, बे वार अथवा त्रण वार आहारक समुद्घात करेलो होय छे. भविष्य काळे पण असंख्याता जाणवा. कारण के प्रश्न समये वर्तमान नारकोमां घणा-असंख्याता नारको नरकथी नीकळी तुरत अथवा परंपराए ते ते काळे मनुष्यपणुं प्राप्त थये चौद पूर्वेनुं अध्ययन करी एक वार, बे वार, त्रण

ता सिय संखेज्जा, सिय असंखेज्जा, एवं पुरेक्खडावि। सेसा सव्वे जहा नेरइया, एवं एते चउवीसं चउवीसा दंडगा।

११. नेरइयाणं भंते! नेरइयत्ते केवतिया केवलिसमुग्घाया अतीता? गोयमा! नत्थि। केवतिया पुरेक्खडा? गोयमा! नत्थि, एवं जाव वेमाणियत्ते। णवरं मणूसत्ते अतीता णत्थि, पुरेक्खडा असंखेज्जा, एवं जाव वेमाणि-

कहेवा. एम चोवीश चोवीश दंडको कहेवा.

११. हे भगवन्! नैरयिकोने नैरयिकपणामां केटला केवलिसमुद्घातो अतीत काळे थयेला छे? हे गौतम! थयेला नथी. केटला

वार के चार वार आहारकसमुद्घातो करशे.'एवं जाव वेमाणियाणं'जेम नैरयिकोनो चोवीश दंडकना क्रमथी विचार कर्यो तेम असुरकुमारादिनो पण प्रत्येकने आश्रयी चोवीश दंडकना क्रमथी यावत् वैमानिको सुधी विचार करवो. केवळ ज्यां विशेष छे त्यां तेने वतावे छे—'नवरं' इत्यादि. परन्तु वनस्पतिकायिकोने मनुष्यपणाना विचारमां अतीत अने अनागत समुद्घातो अनन्ता कहेवा. कारण के पूर्वे चौद पूर्वेनुं अध्ययन करी जेओए यथासंभव एक वार, बे वार के त्रण वार आहारक समुद्घातो कर्या छे एवा अनन्त जीवो वनस्पतिमां रहेला छे, अने पछी वनस्पतिकायथी नीकळी तुरत ज अथवा परंपराए मनुष्यपणुं पामी यथासंभव एक वार, बे वार, त्रण वार के चार वार आहारक समुद्घातो करवाना छे. मनुष्योने मनुष्यपणामां अतीत काळे अने अनागत काळे कदाचित् संख्याता अने कदाचित् असंख्याता होय छे. केवी रीते होय? उत्तर—प्रश्न समये वर्तमान मनुष्यो उत्कर्ष पदे पण सौथी थोडा छे. कारण के ते श्रेणिना असंख्यातमा भागना प्रदेशराशिप्रमाण छे. तेथी विवक्षित प्रश्न समये वर्तमान मनुष्योने विशे कदाचित् असंख्याता मनुष्योमां प्रत्येके यथासंभव एक वार, बे वार, त्रण वार अने चार वार आहारक समुद्घातो करेला छे अने तेओ भविष्यमां करवाना पण छे. उपसंहार कहे छे—'एवं' इत्यादि. ए प्रमाणे-उपर कहेला प्रकार वडे आ आहारक समुद्घात विशे चोवीश गुणा चोवीश दंडको कहेवा.

११. हवे केवलिसमुद्घातनो अतीत काळे विचार करे छे—'नेरइया णं' इत्यादि. नैरयिकोने नैरयिकावस्थामां केटला केवलिसमु-

या, नवरं वणस्सइकाइयाणं मणूसत्ते अतीता नत्थि, पुरेक्खडा अणंता। मणूसाणं मणूसत्ते अतीता सिय अत्थि सिय णत्थि, जइ अत्थि जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सतपुहुत्तं। केवइया पुरेक्खडा ? गोयमा ! सिय संखेज्जा सिय असंखेज्जा, एवं एते चउव्वीसं चउव्वीसा दंडगा सव्वे पुच्छाए भाणितव्वा जाव वे-

भविष्य काळे थवाना छे? हे गौतम! थवाना नथी. ए प्रमाणे यावत् वैमानिकपणामां कहेवुं. परन्तु मनुष्यपणामां अतीत काळे थयेला नथी, भविष्य काळे असंख्याता होय छे. ए प्रमाणे यावत् वैमानिकोने कहेवा. परन्तु वनस्पतिकायिकोने मनुष्यपणामां अतीत काळे थयेला नथी. भविष्य काळे अनन्ता थवाना होय छे. मनुष्योने मनुष्यपणामां अतीत काळे कदाच होय अने कदाच न होय. जो होय तो जघन्यथी एक, बे के त्रण अने उत्कर्षथी शतपृथक्त्व–बसोथी नवसो सुधी होय. केटला भविष्य काळे थवाना छे ? हे गौतम ! कदाच संख्याता अने कदाच असंख्याता थवाना होय छे. ए प्रमाणे ए बधा चोवीश चोवीश दंडको प्रश्न वडे कहेवा. यावत् वैमानि-

द्घातो अतीतकाळे होय ? इत्यादि. केवलिसमुद्घात पण मनुष्यपणानी अवस्थामां होय छे, पण बीजी अवस्थाओमां होतो नथी. वळी जेणे केवलिसमुद्घात कर्यो छे ते संसारमां भ्रमण करतो नथी. कारण के केवलिसमुद्घात कर्या पछी अन्तर्मुहूर्तमां अवश्य मोक्षपदनी प्राप्ति थाय छे. तेथी नारकोने मनुष्यपणा सिवायनी बाकीनी अवस्थाओमां अतीत अने अनागत केवलिसमुद्घातोनो प्रतिषेध करवो. नैरयिकोने मनुष्यपणानी अवस्थामां पण अतीत समुद्घातनो प्रतिषेध करवो, कारण के जेओए केवलि समुद्घात कर्यो छे तेओनुं नरकमां गमन थतुं नथी. भावी केवलि समुद्घातो थशे, कारण के प्रश्नसमये वर्तमान नारकोमां घणा–असंख्याता नारको मुक्तिगमनने योग्य छे. तेथी भविष्यकाळे 'असंख्याता होय छे' एम कह्युं छे. ए प्रमाणे जेम नैरयिकोने केवलिसमुद्घातनो विचार कर्यो तेम असुरकुमारादिने पण करवो अने ते यावत् वैमानिको सुधी करवो. अहीं विशेष बतावे छे—'नवरं' इत्यादि. परन्तु वनस्पतिकायिकोने

माणियाणं वेमाणियत्ते ।

१२. एतेसि णं भंते ! जीवाणं वेदणासमुग्घातेणं कसायसमुग्घातेणं मारणंतियसमुग्घातेणं वेउव्वियसमुग्घा-

कोने वैमानिकपणामां कहेवा.

१२. हे भगवन् ! वेदनासमुद्घातवाळा, कषायसमुद्घातवाळा, मारणान्तिकसमुद्घातवाळा, वैक्रियसमुद्घातवाळा, तैजस-

मनुष्यपणानी अवस्थामां अतीत केवलिसमुद्घातोनो प्रतिषेध करवो, कारण के जेओए केवलिसमुद्घात कर्यो छे तेओने संसार होतो नथी. भविष्य काळे थवाना अनन्ता कहेवा. कारण के प्रश्न समये वर्तता वनस्पतिकायिकोमां घणा-अनन्ता वनस्पतिकायिको वनस्पतिकायिकथी नीकळी पछी अथवा परंपराए केवलिसमुद्घात करी मोक्षे जवाना छे. मनुष्योने मनुष्यपणामां अतीत काळे कदाचित् होय छे अने कदाचित् होता नथी. कारण के जेओए केवलिसमुद्घात कर्यो छे तेओ सिद्ध थयेला छे अने बीजा हजी केवलि समुद्घातने प्राप्त थया नथी. ज्यारे अतीत काळे होय छे त्यारे पण जघन्यथी एक, बे के त्रण अने उत्कर्षथी शतपृथक्त्व-बसोथी नवसो सुधी होय छे. भविष्यकाळे कदाचित् संख्याता अने कदाचित् असंख्याता प्राप्त थवाना होय छे. कारण के प्रश्न समये वर्तमान मनुष्योमां कदाचित् संख्याता अने कदाचित् असंख्याता यथासंभव तुरत अथवा परंपराए केवलिसमुद्घात करी सिद्ध थवाना होय छे. हवे सूत्रनी बधी संख्या कहे छे—ए प्रमाणे-उपर कह्या प्रकारे ए केवलिसमुद्घात विशे बधा य चोवीश गुणा चोवीश दंडको पृच्छा वडे-प्रश्नपूर्वक कहेवा. क्यां सुधी कहेवा ? ए प्रश्नना उत्तरमां कहे छे—वैमानिकोने वैमानिकपणा विशे सूत्र छे त्यां सुधी कहेवा. ते आ प्रमाणे—'हे भगवन् ! वैमानिकोने वैमानिकपणामां केटला केवलि समुद्घातो अतीतकाळे थयेला छे ? हे गौतम ! थयेला नथी. केटला भविष्यमां थवाना छे ? हे गौतम ! थवाना नथी. ए प्रमाणे एकवचनसहित अने बहुवचनसहित नैरयिकथी मांडीने वैमानिक सुधीना जीवोमां अतीत अने भावी वेदनादि समुद्घातना संभव अने असंभवपूर्वक संख्याना प्रमाणनी प्ररूपणा करी.

तेणं तेयसमुग्घातेणं आहारगसमुग्घातेणं केवलिसमुग्घातेणं समोहयाणं असमोहयाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा जीवा आहारगसमुग्घाएणं समोहया, केवलिसमुग्घाएणं समोहता संखेज्जगुणा, तेयगसमुग्घाएणं समोहया असंखेज्जगुणा, वेउव्वियसमुग्घाएणं समोह-

---

समुद्घातवाळा, आहारकसमुद्घातवाळा, केवलिसमुद्घातवाळा अने समुद्घात रहित ए जीवोमां कया जीवो कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे? हे गौतम! सौथी थोडा जीवो आहारकसमुद्घातवाळा छे, तेथी केवलिसमुद्घातवाळा संख्यातगुणा छे, तेथी तैजससमुद्घातवाळा असंख्यातगुणा छे, तेथी वैक्रियसमुद्घातवाळा असंख्यातगुणा छे, तेथी मारणान्तिकसमुद्घातवाळा अनन्तगुणा छे, तेथी कषायसमुद्घातवाळा असंख्यातगुणा छे, तेथी वेदनासमुद्घातवाळा विशेषाधिक छे अने तेथी समुद्घात रहित असंख्यातगुणा छे. हे भगवन्! वेदनासमुद्घातवडे, कषायसमुद्घातवडे, मारणान्तिकसमुद्घातवडे अने वैक्रियसमुद्घातवडे समुद्घात

---

१२. हवे ते ते समुद्घात वडे यावद् केवलि समुद्घात वडे समुद्घातवाळा अने समुद्घात रहित जीवोनुं परस्पर अल्पबहुत्व कहेवानी इच्छावाळा सूत्रकार कहे छे—'एएसि णं' इत्यादि. हे भगवन्! जेओनुं पूर्वे यथासंभव समुद्घात वडे अने समुद्घातरहितपणे प्रतिपादन कर्युं छे एवा, वेदना समुद्घातवाळा यावत् केवलिसमुद्घातवाळा अने समुद्घात रहित एवा सामान्यपणे जीवोना मध्ये 'कतरे' कया जीवो 'कतरेभ्यः' कोनाथी अल्प होय? कया जीवो कोनाथी बहु-संख्यातगुणा, असंख्यातगुणा इत्यादि घणा होय? कया जीवो कोना तुल्य-समान संख्यावाळा होय, कया जीवो कोनाथी विशेषाधिक-कांइक अधिक होय? अहीं सूत्रमां वा शब्दो विकल्पार्थक समजवा. भगवान् उत्तर आपे छे—हे गौतम! सौथी थोडा जीवो आहारक समुद्घातवाळा छे. कारण के आहारक शरीरो कदाचित् आ लोकमां छ मास सुधी होता पण नथी. ज्यारे होय छे त्यारे पण जघन्यथी: एक, बे के त्रण अने उत्कर्षथी

या असंखेज्जगुणा, मारणंतियसमुग्घाएणं समोहया अणंतगुणा, कसायसमुग्घाएणं समोहया असंखेज्जगुणा, वेदणासमुग्घाएणं समोहया विसेसाहिया, असमोहया असंखिज्जगुणा ।

वाळा अने समुद्घातरहित नैरयिकोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे? हे गौतम! सौथी थोडा नैरयिको मारणान्तिकसमुद्घातवाळा छे, तेथी वैक्रियसमुद्घातवाळा असंख्यातगुणा छे, तेथी कषायसमुद्घातवाळा संख्यातगुणा छे, तेथी वेदना समुद्घातवाळा संख्यातगुणा छे अने तेथी समुद्घात रहित संख्यातगुणा होय छे.

सहस्रपृथक्त्व-बे हजारथी मांडी नव हजार सुधी होय छे. केवळ आहारक समुद्घात आहारक शरीरना प्रारंभ काळे होय छे, वाकीना काळे होता नथी. माटे एक काळे थोडाक ज आहारक समुद्घातो होय छे, तेथी सौथी थोडा आहारक समुद्घातवाळा छे. तेथी केवलिसमुद्घातवाळा संख्यातगुणा छे. कारण के तेओ एक काळे शतपृथक्त्व-बसोथी नवसो सुधी होय छे. यद्यपि आहारक शरीरवाळा विद्यमानपणे जघन्यथी एक काळे एक, बे के त्रण अने उत्कर्षथी बे हजारथी नव हजार सुधी होय छे, तोपण आहारक शरीरना प्रारंभ काळे ज आहारक समुद्घातो होय छे, तेथी थोडाने ज आहारक समुद्घातनो संभव होवाथी एक काळे अत्यंत थोडा आहारक समुद्घातवाळा होय छे, माटे तेथी केवलिसमुद्घातवाळा संख्यातगुणा होवामां विरोध नथी. केवलि समुद्घातवाळाथी तैजस समुद्घातवाळा असंख्यातगुणा छे, कारण के पंचेन्द्रिय तिर्यञ्चो, मनुष्यो अने देवोने पण तैजस समुद्घातनो संभव छे. तेथी पण वैक्रिय समुद्घातवाळा असंख्यातगुणा छे, कारण के नारको अने वायुकायिकोने पण वैक्रिय समुद्घातनो संभव छे, अने वैक्रिय लब्धिवाळा वायुकायिको थोडा नथी, परन्तु देवोथी पण असंख्यातगुणा छे. केवी रीते छे? उत्तर—अहीं बादर पर्याप्त वायुकायिको स्थलचर पंचेन्द्रियोथी असंख्यातगुणा छे. कारण के ते प्रमाणे महादण्डकमां कह्युं छे. स्थलचर पंचेन्द्रियो देवोथी पण असंख्यातगुणा

१३. एतेसि णं भंते ! नेरइयाणं वेदणासमुघाएणं कसायसमुग्घाएणं मारणंतियसमुग्घाएणं वेउव्वियसमुग्घा-

---

१३. हे भगवन् ! वेदनासमुद्घातवाळा, कषायसमुद्घातवाळा, मारणांतिकसमुद्घातवाळा, वैक्रियसमुद्घातवाळा, तैजससमुद्घात-

---

छे. तेथी जो के बादर पर्याप्त वायुकायिकना संख्यातमा भागमात्रने वैक्रियलब्धिनो सम्भव छे. जेथी कह्युं छे के "तिण्हं ताव रासीणं वेउव्वियलद्धी चेव नत्थि, वायरपज्जत्ताणं पि संखेज्जइभागमेत्ताणं"त्ति—[1]त्रण राशिओने वैक्रियलब्धि ज नथी अने बादर पर्याप्ताना पण संख्यातमा भागमात्रने छे, तोपण पर्याप्त वायुकायिकोनो संख्यातमो भागमात्र वैक्रिय लब्धिवाळा देवो करतां पण असंख्यातगुण होय छे. माटे नैरयिको अने वायुकायिकोने वैक्रिय समुद्घातनो सम्भव होवाथी तैजस समुद्घातवाळा करतां वैक्रिय समुद्घातवाळा असंख्यातगुणा घटे छे. तेथी पण मारणान्तिकसमुद्घातवाळा अनन्तगुणा छे. केवी रीते होय छे ? उत्तर—अहीं अनन्ता निगोद जीवोनो असंख्यातमो भाग हमेशां विग्रहगतिमां होय छे, अने तेओ घणुं करीने मारणान्तिक समुद्घातवाळा होय छे माटे पूर्वना करतां अनन्तगुणा छे. तेथी पण कषाय समुद्घातवाळा असंख्यातगुणा छे. कारण के विग्रहगतिने प्राप्त थयेला जीवो करतां असंख्यातगुणा अनन्त निगोद जीवो कषाय समुद्घातवाळा हमेशां होय छे. तेथी पण वेदना समुद्घातवाळा विशेषाधिक छे. कारण के कषाय समुद्घातवाळा करतां कंइक विशेषाधिक ते अनन्त निगोद जीवो वेदना समुद्घातवाळा हमेशां होय छे. तेओथी पण कोइपण समुद्घातवडे रहित जीवो असंख्यातगुणा छे. कारण के वेदना, कषाय अने मरण समुद्घातवाळा करतां असंख्यातगुणा निगोद जीवो समुद्घात रहित हमेशां होय छे.

१३. हवे ए ज अल्पबहुत्वनो नैरयिकादि जीव विशेषमां चोवीश दण्डकना क्रमथी यथासम्भव विचार करवानी इच्छावाळा

---

१ वायुकायिकनी चार राशि सूक्ष्म पर्याप्ता, सूक्ष्म अपर्याप्ता, बादर पर्याप्ता अने बादर अपर्याप्ता छे. तेमांनी त्रण राशि सूक्ष्म पर्याप्ता, अपर्याप्ता, अने बादर अपर्याप्ताने वैक्रियलब्धि नथी, मात्र बादर पर्याप्त वायुकायिकने ज वैक्रियलब्धिनो सम्भव छे.

एणं समोहयाणं असमोहयाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा नेरइया मारणंतियसमुग्घातेणं समोहया, वेउव्वियसमुग्घातेणं समोहया असंखेज्जगुणा, कसायसमुग्घाएणं समोहता संखेज्जगुणा, वेदणासमुग्घाएणं समोहया संखेज्जगुणा, असमोहया संखेज्जगुणा। एतेसि णं भंते ! असुरकुमाराणं वेदणासमुग्घातेणं कसायसमुग्घातेणं मारणंतियसमुग्घातेणं वेउव्वियसमुग्घातेणं तेयगसमुग्घातेणं समोहताणं असमोहताण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा असुरकुमारा तेयगसमुग्घाएणं समोहया, मारणंतियसमुग्घातेणं समोहया असंखेज्जगुणा, वेदणासमुग्घातेणं समोहया असंखेज्जगुणा, कसायसमुग्घाएणं समोहया संखेज्जगुणा, वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहया संखेज्जगुणा, असमोहया असंखेज्जगुणा, एवं जाव थणियकुमारा।

वाळा अने समुद्घातरहित ए असुरकुमारोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेपाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा असुरकुमारो तैजससमुद्घातवाळा छे, तेथी मारणान्तिक समुद्घातवाळा असंख्यातगुणा छे, तेथी वेदनासमुद्घातवाळा असंख्यातगुणा छे, तेथी कषायसमुद्घातवाळा संख्यातगुणा छे, तेथी वैक्रियसमुद्घातवाळा संख्यातगुणा छे, तेथी समुद्घातरहित असंख्यातगुणा छे. ए

सूत्रकार कहे छे—'नेरइया णं' इत्यादि प्रश्नसूत्र छे. भगवान् उत्तर आपे छे—सौथी थोडा नैरयिको मारणान्तिक समुद्घातवाळा छे. कारण के मारणान्तिक समुद्घात मरणकाळे होय छे अने मरण बाकीना जीवता नारकोनी अपेक्षाए घणा थोडाओनुं होय छे. वळी बधा मरण पामता जीवोने सामान्यपणे मरणसमुद्घात होतो नथी, पण केटलाएकने होय छे. केमके 'समोहया वि मरंति, असमोहया मरंति' समुद्घातवाळा पण मरे छे अने समुद्घात विनाना पण मरे छे-एवुं शास्त्रवचन छे. ए कारणथी सौथी थोडा मारणान्तिक

एएसि णं भंते ! पुढविकाइयाणं वेदणा० कसाय० मारणंतियसमुग्घाएणं समोहयाणं असमोहयाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पुढविकाइया मारणंतियसमुग्घाएणं समोहया,कसायसमुग्घाएणं स-

प्रमाणे स्तनितकुमारो सुधी जाणवा. हे भगवन् ! वेदनासमुद्घातवाळा, कषायसमुद्घातवाळा, मरणसमुद्घातवाळा अने समुद्घातरहित पृथिवीकायिकोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेपाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा पृथिवीकायिको मारणान्तिक समुद्घातवाळा छे, तेथी कषायसमुद्घातवाळा संख्यातगुणा छे, तेथी वेदनासमुद्घातवाळा विशेपाधिक छे, तेथी समुद्घातरहित असंख्यातगुणा छे. एम वनस्पतिकायिको सुधी जाणवुं. परन्तु सौथी थोडा वायुकायिको वैक्रिय समुद्घातवाळा छे, तेथी मारणान्तिकसमुद्घातवाळा असंख्यातगुणा छे, तेथी कषायसमुद्घातवाळा संख्यातगुणा छे, तेथी वेदनासमुद्घात वाळा विशेपाधिक छे अने तेथी समुद्घातरहित असंख्यातगुणा छे. हे भगवन् ! वेदना समुद्घातवाळा, कषायसमुद्घातवाळा, मारणांतिकसमुद्घातवाळा अने समुद्-

समुद्घातवाळा छे. तेथी पण वैक्रिय समुद्घातवाळा असंख्यातगुणा छे. कारण के साते नरकपृथिवीमां परस्पर दुःख उत्पन्न करवाने माटे घणा नारकोने निरंतर उत्तर वैक्रियना प्रारंभनो सम्भव छे. तेओथी पण कषायसमुद्घातवाळा संख्यातगुणा छे. कारण के जेओए उत्तर वैक्रिय कर्युं छे अने जेओए उत्तर वैक्रिय कर्युं नथी पत्ता, अने सर्व संख्या वडे उत्तर वैक्रियना आरंभ करनारा करतां संख्यातगुणा कपाय समुद्घातवाळा छे. तेओथी पण वेदना समुद्घातवाळा संख्यातगुणा छे. कारण के क्षेत्रजन्य परमाधार्मिकोए करेली अने परस्पर उत्पन्न करेली वेदनाओ वडे प्रायः घणा हमेशां वेदना समुद्घातने प्राप्त थयेला होय छे. तेओथी पण कोइपण एक समुद्घातवडे रहित जीवो संख्यातगुणा छे. कारण के वेदना समुद्घात सिवाय पण सामान्यपणे वेदनानो अनुभव करता घणा वधारे नारको सम्भवे छे.

मोहया संखेज्जगुणा, वेदणासमुग्घाएणं समोहया विसेसाहिया, असमोहया असंखेज्जगुणा । एवं जाव वणस्सइकाइया, णवरं सव्वत्थोवा वाउक्काइया वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहया, मारणंतियसमुग्घाएणं समोहया असंखेज्जगुणा, कसायसमुग्घाएणं समोहया संखेज्जगुणा, वेदणासमुग्घाएणं समोहया विसेसाहिया, असमोहया असंखेज्जगुणा । बेइंदियाणं भंते ! वेदणासमुग्घाएणं कसायसमुग्घाएणं मारणंतियसमुग्घाएणं समोहयाणं असमो-

---

घातरहित बेइन्द्रियोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा बेइन्द्रियो मारणान्तिकसमुद्घातवाळा छे, तेथी वेदनासमुद्घातवाळा असंख्यातगुणा छे. तेथी कषायसमुद्घातवाळा असंख्यातगुणा छे. अने तेथी समुद्घातरहित संख्यातगुणा छे. ए प्रमाणे चउरिन्द्रियो सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! वेदना, कषाय, मारणान्तिक, वैक्रिय अने तैजससमुद्घातवाळा अने समुद्घातरहित पंचेन्द्रिय तिर्यंचोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! पंचेन्द्रिय तिर्यंचो तैज-

---

हवे असुरकुमारोनुं अल्पबहुत्व कहे छे–'एएसि णं' इत्यादि. प्रश्नसूत्र सुगम छे. भगवान् कहे छे—हे गौतम ! सौथी थोडा असुरकुमारो तैजस समुद्घातवाळा छे. कारण के तैजस समुद्घात घणो कोपावेश होय त्यारे क्वचित् कोइकवार कोइकने थाय छे. तेथी तैजस समुद्घातवाळा सौथी थोडा होय छे. तेथी मारणान्तिक समुद्घातवाळा असंख्यातगुणा होय छे. तेथी वेदना समुद्घातवाळा असंख्यातगुणा होय छे. कारण के परस्पर युद्धादि करवामां घणा वेदना समुद्घातवाळा प्राप्त थाय छे. तेथी पण कषाय समुद्घातवाळा संख्यातगुणा छे. कारण के गमे ते कारणथी घणाओने कषाय समुद्घातनी प्राप्तिनो संभव छे. तेओथी पण वैक्रिय समुद्घातवाळा संख्यातगुणा छे, कारण के परिचारणा-संभोगादि अनेक निमित्ते अतिशय घणा असुरकुमारोने उत्तरवैक्रिय शरीरना आरंभनो सम्भव छे. तेओथी पण समुद्घातरहित असंख्यातगुणा छे. कारण के घणा उत्तम जातिवाळा अने सुखसागरमां लीन

हयाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बेइंदिया मारणंतियसमुग्घाएणं समोहया, वेदणासमुग्घातेणं समोहया असंखेज्जगुणा, कसायसमुग्घाएणं समोहया असंखेज्जगुणा, असमोहया संखेज्जगुणा, एवं जाव चउरिंदिया । पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं भंते ! वेदणासमुग्घाएणं कसायसमुग्घातेणं मारणंतियसमुग्घाएणं वेउव्वियसमुग्घाएणं तेयासमुग्घाएणं समोहयाणं असमोहयाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पंचिंदियतिरिक्खजोणिया तेयासमुग्घाएणं समोहया, वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहया

ससमुद्घातवाळा होय छे. तेथी वैक्रियसमुद्घातवाळा असंख्यातगुणा होय छे. तेथी मारणान्तिकसमुद्घातवाळा असंख्यातगुणा होय छे. तेथी वेदनासमुद्घातवाळा असंख्यातगुणा छे. तेथी कषायसमुद्घातवाळा संख्यातगुणा होय छे. अने तेथी समुद्घातरहित संख्यातगुणा होय छे. हे भगवन् ! वेदनासमुद्घातवाळा, कषाय, 'मारणान्तिक, वैक्रिय, तैजस, आहारक, केवलिसमुद्-

---

थयेला देवो पूर्वेना करतां असंख्यातगुणा कोइपण 'समुद्घातवडे रहित हमेशां होय छे. जेम असुरकुमारोनुं अल्पवहुत्व कह्युं ए प्रमाणे बधा भवनपतिओनुं यावत् स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं.

हवे पृथिवीकायिक संबन्धे अल्पवहुत्व कहे छे—'एएसि णं' इत्यादि. अहीं कषाय समुद्घातवाळा अने वेदना समुद्घातवाळा संख्यातगुणा अने समुद्घातरहित असंख्यातगुणा संबन्धे सुगम होवाथी स्वयं विचार करी लेवो. 'एवं' इत्यादि. ए प्रमाणे-पृथिवीकायिकना प्रकार वडे यावत् वनस्पतिकायिक सुधी अल्पवहुत्व कहेवुं. वायुकायिको संबन्धे विशेष कहेवानी इच्छावाळा सूत्रकार कहे छे—'नवरं' इत्यादि. परन्तु वायुकायिकोना अल्पवहुत्वना विचारमां एम कहेवुं-सौथी थोडा वायुकायिको वैक्रिय समुद्घातवाळा छे. कारण के बादर पर्याप्तना संख्यातमा भाग मात्रने वैक्रिय लब्धिनो संभव छे. तेओथी पण मारणान्तिक समुद्घातवाळा असं-

असंखेज्जगुणा, मारणंतियसमुग्घाएणं समोहया असंखेज्जगुणा, वेदणासमुग्घाएणं समोहया असंखेज्जगुणा, कसायसमुग्घाएणं समोहया संखेज्जगुणा, असमवहता संखेज्जगुणा । मणुस्साणं भंते ! वेदणासमुग्घातेणं कसायसमुग्घातेणं मारणंतियसमुग्घातेणं वेउव्वियसमुग्घातेणं तेयगसमुग्घातेणं आहारगसमुग्घाएणं केवलिसमुग्घातेणं समोहयाणं असमोहयाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा मणुस्सा आहारगसमुग्घाएणं समोहया, केवलिसमुग्घाएणं समोहया संखेज्जगुणा, तेयगसमुग्घाएणं समोहया संखेज्जगुणा, वेउव्वि-

घातवाळा अने समुद्घातरहित मनुष्योमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा मनुष्यो आहारकसमुद्घातवाळा छे. तेथी केवलीसमुद्घातवाळा संख्यातगुणा छे. तेथी तैजससमुद्घातवाळा संख्यातगुणा छे. तेथी वैक्रियसमुद्घातवाळा संख्यातगुणा छे. तेथी मारणान्तिकसमुद्घातवाळा असंख्यातगुणा छे. तेथी वेदनासमुद्घातवाळा असंख्यातगुणा छे.

ख्यातगुणा छे. कारण के पर्याप्ता, अपर्याप्ता सूक्ष्म अने बादर भेदवाळा बधाय वायुकायिकोने मरण समुद्घातनो संभव छे, तेओथी पण कषाय समुद्घातवाळा संख्यातगुणा छे. तेओथी पण वेदना समुद्घातवाळा विशेषाधिक छे. तेओथी समुद्घातरहित असंख्यातगुणा छे. कारण के सर्व समुद्घातने प्राप्त थयेला वायुकायिकनी अपेक्षाए स्वभावस्थित वायुकायिको स्वभावथी ज असंख्यातगुणा छे. बेइन्द्रियसूत्रमां सौथी थोडा बेइन्द्रियो मारणान्तिक समुद्घातवाळा छे. कारण के प्रश्न समये अमुकज बेइन्द्रियोना मरणनो संभव छे. तेथी वेदना समुद्घातवाळा असंख्यातगुणा छे. कारण के टाढ, तडका वगेरेना संबन्धथी घणा मोटा भागने वेदना समुद्घातनो संभव छे. तेथी कषाय समुद्घातवाळा असंख्यातगुणा छे. कारण के तेथी अतिशय घणा बेइन्द्रियोने लोभादि कषाय समुद्घातनो सद्भाव छे. तेओथी पण समुद्घातरहित संख्यातगुणा छे. 'एवं' ए प्रमाणे–बेइन्द्रिय संबन्धी प्रकार वडे यावत् चउरिन्द्रियो सुधी

यसमुग्घाएणं समोहया संखेज्जगुणा, मारणंतियसमुग्घाएणं समोहया असंखिज्जगुणा, वेदणासमुग्घाएणं समोहया असंखेज्जगुणा, कसायसमुग्घाएणं समोहया संखेज्जगुणा, असमोहया असंखेज्जगुणा । वाणमंतरजोइसियवेमाणियाणं जहा असुरकुमाराणं ।

तेथी कषायसमुद्घातवाळा संख्यातगुणा छे. तेथी समुद्घातरहित असंख्यातगुणा छे. व्यन्तर, ज्योतिष्क अने वैमानिको असुरकुमारनी पेठे जाणवा.

कहेवुं. तिर्यंच पंचेन्द्रिय सूत्रमां सौथी थोडा तैजस समुद्घातवाळा छे, कारण के केटलाकने तेजोलब्धिनो संभव छे. तेथी वेदना समुद्घातवाळा असंख्यातगुणा छे. तेओथी पण वैक्रिय समुद्घातवाळा असंख्यातगुणा छे. कारण के घणाने वैक्रियलब्धि होय छे. तेथी मारणान्तिक समुद्घातवाळा असंख्यातगुणा छे. कारण के पूर्वे कहेला करतां असंख्यातगुणा वैक्रियलब्धि रहित वधाय संमूर्छिम जलचर, स्थलचर अने खेचरने पण तथा केटलापक वैक्रिय लब्धिरहित अने वैक्रिय लब्धिवाळा गर्भजोने पण मरण समुद्घातनो संभव छे. तेथी वेदना समुद्घातवाळा असंख्यातगुणा छे. कारण के मरण पामता जीवोनी अपेक्षाए पण नहि मरता असंख्यातगुणा तिर्यंचोने पण वेदना समुद्घातनो संभव छे. तेथी कषाय समुद्घातवाळा संख्यातगुणा छे. तेओथी पण समुद्घात रहित संख्यातगुणा छे. अहीं पूर्वनी पेठे विचारणा करवी.

मनुष्यसूत्रमां सौथी थोडा आहारक समुद्घातवाळा छे, कारण के सौथी थोडाने एक काळे आहारक शरीरना प्रारंभनो संभव छे. तेथी केवलिसमुद्घातवाळा संख्यातगुणा छे. कारण के तेओ शतपृथक्त्व–बसोथी नवसो सुधीनी संख्यामां प्राप्त थाय छे. तेथी तैजस समुद्घातवाळा संख्यातगुणा छे. कारण के तेओ संख्यामां एक लाख प्राप्त थाय छे. तेथी पण वैक्रिय समुद्घातवाळा संख्यातगुणा

१४. कति णं भंते ! कसायसमुग्घाया पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि कसायसमुग्घाया पन्नत्ता, तंजहा—कोहसमुग्घाते, माणसमुग्घाते, मायासमुग्घाते, लोहसमुग्घाते। नेरइयाणं भंते ! कति कसायसमुग्घाया पन्नत्ता? गोयमा ! चत्तारि कसायसमुग्घाता पन्नत्ता, एवं जाव वेमाणियाणं। एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स केवतिता को-

---

१४. हे भगवन् ! केटला कषायसमुद्घातो कह्या छे ? हे गौतम ! चार कषायसमुद्घातो कह्या छे. ते आ प्रमाणे—१ क्रोधसमुद्घात, २ मानसमुद्घात, ३ मायासमुद्घात अने ४ लोभसमुद्घात. हे भगवन् ! नैरयिकोने केटला कषायसमुद्घातो कह्या छे ? हे गौतम ! चार कषायसमुद्घातो कह्या छे. ए प्रमाणे वैमानिको सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! एक एक नैरयिकने केटला क्रोधसमु-

---

छे, कारण के तेओ कोटी प्रमाण होय छे. तेथी मारणान्तिक समुद्घातवाळा असंख्यातगुणा छे, कारण के संमूर्छिम मनुष्योने पण मरण समुद्घातनो संभव छे अने तेओ असंख्याता छे. तेओथी वेदना समुद्घातवाळा असंख्यातगुणा छे. कारण के मरण पामता जीवोनी अपेक्षाए नहि मरण पामता असंख्यातगुणा जीवोने वेदना समुद्घातनो संभव छे. तेथी कषाय समुद्घातवाळा संख्यातगुणा छे. कारण के तेओ घणा होय छे, तेओथी पण समुद्घातरहित असंख्यातगुणा छे. कारण के उत्कृष्ट कषायवाळा करतां असंख्यातगुणा अल्पकषायवाळा संमूर्छिम मनुष्यो सदा प्राप्त थाय छे. व्यन्तर, ज्योतिष्क अने वैमानिको जेम असुरकुमारो कह्या तेम कहेवा. ए प्रमाणे समुद्घातवाळा अने समुद्घात रहित विशे अल्पबहुत्व कह्युं.

१४. हवे कषायसमुद्घात संबन्धे विशेष वक्तव्यता कहेवानी इच्छावाळा सूत्रकार कहे छे—'कइ णं' इत्यादि. 'हे भगवन्! केटला कषायसमुद्घातो कह्या छे ? इत्यादि. सामान्य रीते कषाय समुद्घात संबन्धी अने चोवीश दंडकना क्रम संबन्धी आ सूत्र सुप्रसिद्ध छे, हवे चोवीश दंडकना क्रम वडे वैमानिक पर्यन्त एक एक नैरयिकादिनी कषायसमुद्घात संबन्धे व्यक्तव्यता कहे छे—'एगमेगस्स णं

हसमुग्घाता अतीता ? गोयमा ! अणंता । केवतिता पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्सत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा, एवं जाव वेमाणियस्स,एवं जाव लोभसमुग्घाते,एते चत्तारि दंडगा । नेरइयाणं भंते ! केवइया कोहसमुग्घाता अतीता? गोयमा! अणंता । केवइया पुरेक्खडा ? गोयमा ! अणंता । एवं जाव वेमाणियाणं, एवं जाव लोभसमुग्घाए, एवं एएवि

द्घातो अतीतकाळे थयेला छे ? हे गौतम ! अनन्ता थयेला छे. केटला भविष्यकाळे थवाना छे ? हे गौतम ! कोइने थवाना छे अने कोइने थवाना नथी. जेने थवाना छे तेने जघन्यथी एक, बे के त्रण अने उत्कर्षथी संख्याता, असंख्याता के अनन्ता थवाना छे. ए प्रमाणे यावत् वैमानिकने जाणवुं. एम यावत् लोभसमुद्घात सुधी जाणवुं. ए प्रमाणे चार दण्डको थाय छे. हे भगवन् ! नैरयिकोने केटला क्रोधसमुद्घातो अतीत काळे थयेला छे ? हे गौतम ! अनन्ता थयेला छे. केटला भविष्यकाळे थवाना छे ? हे गौतम ! अनन्ता थवाना छे. ए प्रमाणे वैमानिको सुधी जाणवुं. एम लोभसमुद्घात सुधी कहेवुं. ए प्रमाणे ए पण चार दण्डको थाय छे.

भंते ! इत्यादि. हे भगवन् ! एक एक नैरयिकने केटला क्रोधसमुद्घातो अतीत काळे थयेला छे ? अहीं अतीतकाळ संबन्धी सूत्र स्पष्ट छे. भविष्य काळना सूत्रमां 'कोइने थवाना छे अने कोइने थवानानथी.' जे नरकभवना प्रान्त काळे वर्ततो स्वभावथी ज अल्पकषायवाळो कषायसमुद्घात सिवाय काळ करीने नरकथी नीकळी मनुष्यभवने पामी कषायसमुद्घातने प्राप्त थया सिवाय ज सिद्ध थाय तेने भविष्यमां एक पण कषायसमुद्घात थवानो नथी. जेने थवाना छे तेने पण जघन्यथी एक, बे के त्रण होय छे अने ते पूर्वे जेनुं स्वरूप बताव्युं छे एवा अने एकवार कषायसमुद्घातने प्राप्त थवावाळाने जाणवा. उत्कर्षथी संख्याता, असंख्याता अने अनन्ता होय छे. तेमां संख्याता काळ

चत्तारि दंडगा। एगमेगस्स णं भंते! नेरइयस्स नेरइयत्ते केवइया कोहसमुग्घाया अतीता? गोयमा! अणंता। एवं जहा वेदणासमुग्घातो भणितो तहा कोहसमुग्घातोवि निरवसेसं जाव वेमाणियत्ते। माणसमुग्घाए मायासमुग्घातेवि निरवसेसं जहा मारणंतियसमुग्घाते, लोहसमुग्घातो जहा कसायसमुग्घातो, नवरं सव्वजीवा असुरादिनेरइएसु लोभकसाएणं एगुत्तरियाते नेतव्वा। नेरइयाणं भंते! नेरइयत्ते केवइया कोहसमुग्घाया अती-

---

हे भगवन्! एक एक नैरयिकने नैरयिकपणामां केटला क्रोधसमुद्घातो अतीत काळे थयेला छे? हे गौतम! अनन्ता थयेला छे. ए प्रमाणे जेम वेदनासमुद्घात संबन्धे कह्युं तेम क्रोधसमुद्घात संबन्धे पण बधुं यावत् वैमानिकपणामां कहेवुं. मानसमुद्घात अने मायासमुद्घात संबन्धे पण जेम मारणान्तिकसमुद्घात संबन्धे कह्युं तेम बधुं कहेवुं. लोभसमुद्घात कषायसमुद्घातनी जेम कहेवो. परन्तु असुरादि सर्व जीवो नैरयिकोमां लोभकषायवडे एकोत्तरपणे–एकथी मांडी अनन्त सुधी कहेवा. हे भगवन्! नैरयिकोने नैरयिकपणामां केटला क्रोधसमुद्घातो अतीत काळे थयेला छे? हे गौतम! अनन्ता थयेला छे. केटला भविष्यमां थवाना छे?

सुधी संसारमां रहेनारने संख्याता, असंख्याता काळ सुधी रहेनारने असंख्याता अने अनन्त काळ सुधी रहेनारने अनन्त भावी समुद्घातो होय छे. ए प्रमाणे असुरकुमारादिना क्रम वडे यावत् वैमानिकने कहेवुं. एम चोवीश दंडकना क्रम वडे मानादि समुद्घातवाळा लोभसमुद्घात सुधी कहेवा. ए प्रमाणे चार गुणा चोवीश दंडको थाय छे. ए एक एक नैरयिकादि संबन्धे कह्या हवे सकल नारकादि संबन्धे ए चारगुणा चोवीश दंडकोने कहे छे—'नेरइया णं' इत्यादि. हे भगवन्! नैरयिकोने अतीत काळे केटला क्रोधसमुद्घातो होय? इत्यादि. अतीत सूत्र स्पष्ट छे. अने भावी अनन्ता समुद्घातो होय. कारण के प्रश्न समये वर्तमान नारकोमां घणा

ता ? गोयमा ! अणंता । केवइया पुरेक्खडा ? गोयमा ! अणंता, एवं जाव वेमाणियत्ते, एवं सट्ठाणपरट्ठाणेसु सव्वत्थ भाणियव्वा, सव्वजीवाणं चत्तारिवि समुग्घाया जाव लोभसमुग्घातो जाव वेमाणियाणं वेमाणियत्ते।

हे गौतम ! अनन्ता थवाना छे. ए प्रमाणे यावत् वैमानिकपणामां जाणवुं. एम स्वस्थान अने परस्थानमां बधा कहेवा. सर्व जीवोने चारे समुद्घातो लोभसमुद्घात सुधी जाणवा. यावत् वैमानिकोने वैमानिकपणामां कहेवुं.

अनन्त काळ सुधी रहेवाना होय छे. 'एवं' एम नैरयिकने कहेला प्रकार वडे यावत् वैमानिको सुधी कहेवुं. जेम आ क्रोधसमुद्घात चोवीश दंडकना क्रमथी कह्यो एम मानादिसमुद्घातो पण लोभसमुद्घात सुधी कहेवा. ए रीते ए पण बधा नारको संबन्धे चारगुणा चोवीश दंडको थाय छे. हवे 'एक एक नैरयिकादिने नैरयिकादि भावोमां वर्तता केटला क्रोधसमुद्घातो अतीत काळे होय अने केटला भविष्य काळे थवाना होय'-ए निरूपण करवानी इच्छावाळा सूत्रकार कहे छे—'एगमेगस्स णं' इत्यादि. हे भगवन् ! विवक्षित प्रश्न समयनी पूर्वे संपूर्ण अतीत काळनी अपेक्षाए ते ते काळे नैरयिकपणाने प्राप्त थयेला एक एक नैरयिकने सर्व संख्या वडे केटला क्रोधसमुद्घातो अतीत काळे थयेला होय ? भगवान् कहे छे—हे गौतम! अनन्ता थयेला होय. कारण के तेने नरकगति अनन्तवार प्राप्त थयेली छे अने एक नरकभवमां जघन्य पदे पण संख्याता क्रोधसमुद्घातो होय छे. 'एवं जहा' इत्यादि. एम उपर बतावेला प्रकार वडे जेम वेदनासमुद्घात पूर्वे कह्यो तेम क्रोधसमुद्घात पण निरवशेषपणे-समस्तपणे कहेवो. क्यां सुधी कहेवो ? ए प्रश्नना उत्तरमां कहे छे-यावत् वैमानिकपणामां कहेवो एटले वैमानिकने वैमानिकपणामां ए आलापक-सूत्रपाठ सुधी कहेवो. ते आ प्रमाणे—'नैरयिकने नैरयिकपणामां केटला क्रोधसमुद्घातो भविष्य काळे थवाना छे ? हे गौतम ! कोइने थवाना छे अने कोइने थवाना नथी. जेने थवाना छे तेने जघन्यथी एक, बे, त्रण अने उत्कर्षथी संख्याता, असंख्याता के अनन्ता थवाना छे. ए प्रमाणे असुरकुमारपणामां

यावत् वैमानिकपणामां जाणवुं. हे भगवन्! एक एक असुरकुमारने नैरयिकपणामां केटला क्रोधसमुद्घातो अतीत काळे थयेला होय? हे गौतम! अनन्ता थयेला होय. केटला भविष्य काळे थवाना होय? हे गौतम! कोइने थवाना होय अने कोइने थवाना न होय. जेने थवाना होय तेने कदाच संख्याता होय, कदाच असंख्याता होय अने कदाच अनंता होय. हे भगवन्! एक एक असुरकुमारने असुरकुमारपणामां केटला क्रोधसमुद्घातो अतीत काळे थयेला छे? हे गौतम! अनन्ता थयेला छे. केटला भविष्य काळे थवाना छे? कोइने थवाना होय छे अने कोइने थवाना होता नथी. जेने थवाना होय छे तेने जघन्यथी एक, बे के त्रण अने उत्कर्षथी संख्याता, असंख्याता के अनन्ता थवाना होय छे. ए प्रमाणे नागकुमारपणामां यावत् वैमानिकपणामां कहेवुं. एम असुरकुमारोने नैरयिकथी मांडी वैमानिक सुधीमां (क्रोधसमुद्घातो) कह्या तेम नागकुमारादिने स्वस्थान अने परस्थान विशे यावत् वैमानिकपणामां कहेवा." आ सूत्रनी व्याख्या—हे भगवन्! एक एक नारकने संसारथी मांडी मोक्षे जाय त्यां सुधीना अनन्त काळनी अपेक्षाए नैरयिकपणामां भविष्यमां थवाना भावी क्रोधसमुद्घातो सर्व संख्या वडे केटला होय? भगवान् उत्तर आपे छे—'हे गौतम! कोइने होय अने कोइने न होय'-इत्यादि. नजीकमां मरण जेनुं छे एवो जे नैरयिक क्रोधसमुद्घातने प्राप्त कर्या सिवाय आत्यंतिक-छेल्ला मरण वडे नरकथी नीकळी सिद्ध थाय तेने नैरयिकपणामां थवानो भावी एक पण क्रोधसमुद्घात नथी. बाकीनाने होय छे. जेने छे तेने पण जघन्यथी एक, बे के त्रण होय छे. आ हकीकत जेनुं शेष आयुष क्षीण थयेलुं छे एवा ते भवमां वर्तता अने फरीथी नरकमां नहि उत्पन्न थवावाळा नैरयिकोने आश्रयी समजवी. फरीथी नरकमां उत्पन्न थनारने जघन्य पदे पण संख्याता क्रोधसमुद्घातो थाय छे. कारण के नैरयिकोमां क्रोधसमुद्घात घणा थाय छे, उत्कर्षथी संख्याता असंख्याता के अनन्ता थाय छे. तेमां एकवार जघन्य स्थितिवाळा नरकोमां उत्पन्न थवावाळाने संख्याता अने अनेकवार उत्पन्न थनारने अथवा दीर्घस्थितिवाळा नरकोमां एकवार पण उत्पन्न थनारने असंख्याता अने अनन्तवार उत्पन्न थनारने अनन्ता थाय छे. एम-नैरयिकने कहेला प्रकार वडे असुरकुमारपणामां अने त्यार पछी चोवीश दंडकना क्रमथी यावत् वैमानिकपणा विशे सूत्र छे त्यां सुधी कहेवुं. ते आ प्रमाणे—'हे भगवन्! एक एक नैरयिकने वै-

मानिकपणामां केटला क्रोधसमुद्घातो अतीत काळे थयेला छे? हे गौतम! अनन्ता थयेला छे. केटला भविष्यमां थवाना छे? हे गौतम! कोइने होय छे अने कोइने होता नथी. जेने होय छे तेने जघन्यथी एक, बे के त्रण अने उत्कृष्ट संख्याता, असंख्याता के अनन्ता होय छे." अहीं पण आ भावार्थ छे-अतीत काळना विचारमां अनन्ता थयेला छे, कारण के तेणे अनन्तवार वैमानिकपणुं प्राप्त करेलुं छे. भविष्यना विचारमां जे नरकथी नीकळी पछीना भवमां मनुष्यपणुं पामी सिद्ध थशे अथवा परंपरा वडे वैमानिक भवने प्राप्त थइ क्रोधसमुद्घातने प्राप्त नहि थाय तेने वैमानिकपणामां भावी एक पण क्रोधसमुद्घात होतो नथी. पण जे वारंवार वैमानिकपणाने प्राप्त थइ एकजवार क्रोधसमुद्घातने प्राप्त थशे तेने जघन्यथी एक, बे के त्रण अने बाकीना संख्यातीवार वैमानिकपणाने प्राप्त थनारने संख्याता, असंख्यातीवार प्राप्त थनारने असंख्याता अने अनन्तवार प्राप्त थनारने अनन्ता क्रोधसमुद्घातो थाय छे. 'एगमेगस्स णं' इत्यादि. असुरकुमारने नैरयिकपणामां अतीत काळे क्रोधसमुद्घातो केटला होय? ए प्रश्नसूत्र सुगम छे. 'हे गौतम! अनन्ता होय.' कारण के तेणे अनन्तवार नैरयिकपणुं प्राप्त करेलुं छे अने एक एक नैरयिक भवमां जघन्य पदे पण संख्याता कोधसमुद्घातो थाय छे. पुरस्कृत-भविष्यमां थवाना कोइने होय अने कोइने न होय. तात्पर्य ए छे के जे असुरकुमारना भवथी नीकळी नरकमां जवानो नथी पण तरत के परंपराए मनुष्यभव पामी सिद्ध थशे तेने नैरयिकनी अवस्थामां थवाना भावी क्रोधसमुद्घातो होता नथी. कारण के नैरयिकपणानी अवस्थानो ज असंभव छे. परन्तु जे असुरकुमारना भव पछी परंपराए नरकमां जवानो छे तेने क्रोधसमुद्घातो होय छे. तेमां पण कोइने संख्याता कोइने असंख्याता अने कोइने अनन्ता होय छे. तेमां जे एक वार जघन्य स्थितिवाळा नरकमां उत्पन्न थशे तेने पण जघन्य पदे संख्याता थशे, कारण के दस हजार वरस प्रमाण स्थितिमां पण संख्याता क्रोधसमुद्घातो थाय छे. केमके नारकोने क्रोध घणो होय छे. जघन्य स्थितिवाळामां अनेकवार अने दीर्घस्थितिवाळामां एक वार पण जवामां असंख्याता तथा अनन्तवार नरकमां जवामां अनन्ता क्रोधसमुद्घातो थाय छे. तथा एक एक असुरकुमारने असुरकुमारपणामां रहेलो छतां सर्व अतीत काळने आश्रयी केटला क्रोधसमुद्घातो पूर्वे थयेला छे? भगवान् कहे छे-अनन्ता थयेला छे. कारण के ते अनन्तवार असुरकुमारपणाने प्राप्त थयेलो छे अने दरेक

भवमां प्रायः क्रोधसमुद्घात होय छे. भविष्य काळना विचारमां कोइने होय अने कोइने न होय. जेने प्रश्नसमय पछी असुरकुमारपणामां पण वर्तता छतां क्रोधसमुद्घात थवानो नथी अने त्यांथी नीकळीने फरीथी पण असुरकुमारपणुं पामवानो नथी तेने थवानो नथी. परन्तु जे एकवार असुरकुमारपणुं प्राप्त करशे तेने जघन्य पदे एक, बे के त्रण थशे, अने उत्कर्षथी संख्याता, असंख्याता के अनन्ता क्रोधसमुद्घात थशे. संख्यातीवार असुरकुमारमां आवनारने संख्याता, असंख्यातीवार आवनारने असंख्याता अने अनन्तवार आवनारने अनन्ता थशे. ए प्रमाणे चोवीश दंडकना क्रमथी असुरकुमारने नागकुमारत्वादि स्थानोमां यावत् वैमानिकपणामां निरन्तर कहेवुं. ए प्रमाणे सूत्रकार कहे छे—'एवं नागकुमारत्तेवि' इत्यादि. एम नागकुमारपणामां पण जाणवुं इत्यादि. ए प्रमाणे असुरकुमारादिने विशे अतिदेश-समानपणुं बतावे छे. 'एवं' इत्यादि. ए प्रमाणे-सूत्रपाठमां कहेला प्रकार वडे जेम चोवीश दंडकना क्रमथी असुरकुमार संबन्धे नैरयिकथी आरंभी वैमानिक सुधीना स्थानोमां कह्युं तेम नागकुमारादि समस्त स्वस्थान अने परस्थान विशे कहेवा. यावत् वैमानिकने वैमानिकपणामां आलापक-पाठ कहेवो. ए प्रमाणे ए नैरयिकना चोवीश दंडक सूत्रो जेनी आदिमां छे अने वैमानिकना चोवीश दंडको जेना अन्ते छे एवा चोवीश सूत्रो जाणवा. ए प्रमाणे चोवीश दंडकसूत्रो वडे क्रोधसमुद्घातनो विचार कर्यो. हवे चोवीश एवा चोवीश दंडकसूत्रो वडे मानसमुद्घात अने मायासमुद्घात संबन्धे कहेवानी इच्छावाळा सूत्रकार अतिदेश-समानपणुं बतावे छे—'माणसमुग्घाए मायासमुग्घाए निरवसेसं जहा मारणंतियसमुग्घाए' मानसमुद्घात अने मायासमुद्घात संबन्धे जेम मारणांतिकसमुद्घात संबन्धे कह्युं तेम कहेवुं. एटले जेम मारणान्तिकसमुद्घात विशे पूर्वे सूत्र कह्युं तेम मानसमुद्घात अने मायासमुद्घात विशे निरवशेष-बधुं कहेवुं. ते आ प्रमाणे—'हे भगवन्! एक एक नैरयिकने नैरयिकपणामां केटला मानसमुद्घातो अतीत काळे थयेला छे? हे गौतम! अनन्ता थयेला छे. केटला भविष्य काळे थवाना छे? हे गौतम! कोइने थवाना छे अने कोइने थवाना नथी. जेने थवाना छे तेने जघन्यथी एक, बे के त्रण अने उत्कर्षथी संख्याता, असंख्याता के अनन्ता थवाना छे. ए प्रमाणे असुरकुमारपणामां यावत् वैमानिकपणामां कहेवुं. हे भगवन्! एक एक असुरकुमारने नैरयिकपणामां केटला मानसमुद्घातो अतीत काळे थयेला छे?

हे गौतम ! अनन्ता थयेला छे. केटला भविष्य काळे थवाना छे? हे गौतम ! कोइने थवाना छे अने कोइने थवाना नथी. जेने थवाना छे तेने जघन्यथी एक, बे के त्रण अने उत्कर्षथी संख्याता, असंख्याता के अनंता थवाना छे. ए प्रमाणे नागकुमारपणामां यावत् वैमानिकपणामां कहेवुं. ए प्रमाणे असुरकुमार संबन्धे जेम नैरयिकथी मांडी वैमानिक सुधीमां कह्युं तेम नागकुमारादि संबन्धे स्वस्थान अने परस्थान विशे यावत् वैमानिकने वैमानिकपणामां कहेवुं. आ सूत्रनो आ अर्थ छे—अतीत सूत्रोमां वधेय अनन्तपणुं स्पष्ट छे. कारण के नैरयिकत्वादि स्थानो प्रत्येकने अनन्तवार प्राप्त थयेला छे. भविष्य काळना विचारमां नैरयिकने नैरयिकपणामां आ प्रमाणे विचार छे -जे नैरयिक मानसमुद्घातने प्राप्त कर्या सिवाय काळ करी नरकथी नीकळी तुरत अथवा परंपराए मनुष्य भव पामीने सिद्ध थशे, पण फरी नरकमां नहि आवे तेने भविष्यमां मानसमुद्घातो होता नथी. परन्तु जे ते भवमां वर्ततो अथवा फरीथी नरकमां आवी एकवार मानसमुद्घातने प्राप्त थइ काळ करवा वडे नरकथी नीकळी सिद्ध थशे तेने भविष्यकाळे एक मानसमुद्घात थवानो छे, ए प्रमाणे कोइने बे, कोइने त्रण, संख्यातीवार नरकमां आवनारने संख्याता, असंख्यातीवार आवनारने असंख्याता अने अनन्त वार आवनारने अनन्त भावी मानसमुद्घातो थवाना छे. नैरयिकने ज असुरकुमारपणामां भविष्यना विचारमां आ भावना छे-जे नरकथी नीकळी असुरकुमारपणुं नहि पामे तेने भविष्य काळे मानसमुद्घातो थवाना नथी. पण जे एकवार पामशे तेने एक, बे के त्रण वगेरे, संख्यातीवार असुरकुमारपणुं पामनारने संख्याता, असंख्यातीवार पामनारने असंख्याता अने अनन्तवार पामनारने अनन्ता मानसमुद्घातो थवाना होय छे. ए प्रमाणे त्यां सुधी कहेवुं के ज्यां सुधी तिर्यंच पंचेन्द्रियपणामां भविष्यना समुद्घातनो विचार थाय. मनुष्यना विचारमां आ प्रमाणे भावना छे-जे नरकथी नीकळी मनुष्यभव पामी मानसमुद्घातने प्राप्त थया सिवाय सिद्ध थशे तेने भविष्यमां एक पण मानसमुद्घात भविष्यमां थवानो नथी, परन्तु जे मनुष्यपणाने प्राप्त थइ एकवार मानसमुद्घातने प्राप्त थशे तेने एक, बीजाने बे अने अन्यने त्रण वगेरे, संख्यातीवार मनुष्यपणाने प्राप्त थनारने संख्याता, असंख्यातीवार प्राप्त थनारने असंख्याता अने अनन्तवार प्राप्त थनारने अनन्ता थवाना होय छे. व्यन्तर, ज्योतिष्क अने वैमानिकपणामां जेम असुरकुमारपणामां विचार कर्यो तेम करवो. जेम नैरयिकने नैरयिकत्वादि चोवीश स्थानोमां विचार कर्यो तेम

असुरकुमारादिने पण वैमानिक सुधी चोवीश दंडकना क्रमथी करवो. जेम मानसमुद्घातना चोवीश सूत्रो चोवीश दंडकना क्रमथी कह्यां छे तेम मायासमुद्घातना पण चोवीश सूत्रो चोवीश दंडकना क्रमथी कहेवा. कारण के नन्ने स्थळे समान पाठ छे. हवे लोभसमुद्घात समानपणाथी कहे छे—'लोभसमुग्घातो जहा कसायसमुग्घातो, नवरं सव्वजीवा असुराई नेरइएसु लोभकसाएणं एगुत्तरियाए नेतव्वा'-जेम कषायसमुद्घात कह्यो तेम लोभसमुद्घात कहेवो. परन्तु असुरादि सर्व जीवो नैरयिकोमां एकोत्तरपणे-एकथी मांडी अनन्तसमुद्घातपणे जाणवा. जेम पूर्वे कषायसमुद्घात कह्यो तेम लोभसमुद्घात पण कहेवो. परन्तु असुरकुमारादिने नैरयिकपणामां भविष्यना विचारमां कदाच संख्याता होय, कदाच असंख्याता होय अने कदाच अनन्ता होय-एम कह्युं छे अने अहीं असुरकुमारादि सर्व जीवो नैरयिकोमां भविष्यना समुद्घातनो विचार करता एकोत्तरपणे जाणवा. एकोत्तरनो भाव ते एकोत्तरिका-एक बे त्रण-इत्यादि रूपे जाणवा. अतिशय दुःखनी वेदना वडे पीडायेला होवाथी हमेशां उद्वेगने प्राप्त थयेला नैरयिकोने घणुं करी लोभसमुद्घातनो असंभव छे. सूत्रनो पाठ आ प्रमाणे छे—'हे भगवन्! एक एक नैरयिकपणामां केटला लोभसमुद्घातो अतीत काळे थयेला छे? हे गौतम! अनन्त थयेला छे. केटला भविष्य काळे थवाना छे हे गौतम! कोइने थवाना छे अने कोइने थवाना नथी. जेने थवाना छे. तेने एक, बे के त्रण उत्कर्षथी संख्याता, असंख्याता के अनन्ता थवाना छे. हे भगवन्! एक एक नैरयिकने असुरकुमारपणामां केटला लोभसमुद्घातो अतीत काळे थयेला छे? हे गौतम! अनन्ता थयेला छे. केटला भविष्य काळे थवाना छे? हे गौतम! कोइने थवाना छे अने कोइने थवाना नथी. जेने थवाना छे तेने कदाच संख्याता, कदाच असंख्याता अने कदाच अनन्ता थवाना होय छे. ए प्रमाणे नैरयिकने यावत् स्तनितकुमारपणामां कहेवुं. हे भगवन्! एक एक नैरयिकने पृथिवीकायिकपणामां केटला लोभसमुद्घातो अतीत काळे थयेला छे? हे गौतम! अनन्ता थयेला छे. केटला भविष्य काळे थवाना छे? हे गौतम! कोइने थवाना छे अने कोइने थवाना नथी. जेने थवाना छे ते जघन्यथी एक, बे के त्रण अने उत्कर्षथी संख्याता, असंख्याता अने अनन्ता थवाना छे. ए प्रमाणे यावत् मनुष्य-पणामां कहेवुं. व्यन्तरपणामां जेम असुरकुमारपणामां कह्युं तेम कहेवुं. हे भगवन्! एक एक नैरयिकने ज्योतिष्क-

पणामां केटला लोभसमुद्घातो अतीत काळे थयेला छे? हे गौतम! अनन्ता थयेला छे. केटला भविष्यमां थवाना छे? हे गौतम! कोइने थवाना छे अने कोइने थवाना नथी. जेने थवाना छे तेने जघन्यथी एक, बे के त्रण अने उत्कर्षथी कदाच संख्याता, कदाच असंख्याता अने कदाच अनन्ता थवाना छे. ए प्रमाणे वैमानिकपणामां कहेवुं. हे भगवन्! एक एक असुरकुमारने नैरयिकपणामां केटला लोभसमुद्घातो अतीत काळे थयेला छे? हे गौतम! अनन्ता थयेला छे. केटला भविष्यकाळे थवाना छे? हे गौतम! कोइने थवाना छे अने कोइने थवाना नथी. जेने थवाना छे तेने जघन्यथी एक, बे के त्रण अने उत्कर्षथी संख्याता, असंख्याता अने अनन्ता थवाना छे. हे भगवन्! एक एक असुरकुमारने असुरकुमारपणामां केटला लोभसमुद्घातो अतीतकाळे थयेला छे? हे गौतम! अनन्ता थयेला छे. केटला भविष्यकाळे थवाना छे? हे गौतम! कोइने थवाना छे अने कोइने थवाना नथी, जेने थवाना छे तेने जघन्यथी एक, बे के त्रण अने उत्कर्षथी संख्याता, असंख्याता के अनन्ता थवाना छे. हे भगवन्! एक एक असुरकुमारने नागकुमारपणामां केटला लोभसमुद्घातो अतीतकाळे थयेला छे? हे गौतम! अनन्ता लोभसमुद्घातो थयेला छे. केटला भविष्यमां थवाना छे? हे गौतम! कोइने थवाना छे अने कोइने थवाना ननी. जेने थवाना छे तेने कदाच संख्याता, असंख्याता के अनन्ता थवाना छे. ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमारपणामां जाणवुं. पृथिवीकायिकपणामां यावत् वैमानिकपणामां जेम नैरयिकने कह्युं तेम कहेवुं. ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमारने वैमानिकपणामां कहेवुं. हे भगवन्! एक एक पृथिवीकायिकने नैरयिकपणामां केटला लोभसमुद्घातो अतीत काळे थयेला छे? हे गौतम! अनन्ता थयेला छे. केटला भविष्यकाळे थवाना छे? हे गौतम! कोइने थवाना छे अने कोइने थवाना नथी. जेने थवाना छे तेने जघन्यथी एक, बे के त्रण अने उत्कर्षथी संख्याता, असंख्याता के अनन्ता थवाना छे. पृथिवीकायिकने असुरकुमारपणामां अतीत काळे अनन्ता थयेला छे. केटला भविष्यमां थवाना छे? हे गौतम! कोइने थवाना छे अने कोइने थवाना नथी. जेने थवाना छे तेने कदाच संख्याता, कदाच असंख्याता के कदाच अनन्ता थवाना होय छे. ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमारपणामां जाणवुं. पृथिवीकायिकपणामां अतीत काळे अनन्ता थयेला छे. भविष्यमां थवाना कोइने होय छे अने कोइने होता नथी. जेने

छे तेने जघन्यथी एक, बे के त्रण अने उत्कर्षथी संख्याता, असंख्याता के अनन्ता थवाना होय छे. ए प्रमाणे यावत् मनुष्यपणामां कहेवुं. व्यन्तरपणामां जेम असुरकुमारपणामां कह्युं तेम कहेवुं. ज्योतिष्कपणामां अने वैमानिकपणामां अतीत काळे अनन्ता थयेला छे अने भविष्यमां थवाना कोइने होय छे अने कोइने होता नथी. जेने होय छे तेने कदाच संख्याता, कदाच असंख्याता अने कदाच अनन्ता होय छे. ए प्रमाणे यावत् मनुष्यने वैमानिकपणामां कहेवुं. व्यन्तरने असुरकुमारनी पेठे कहेवुं. ए प्रमाणे ज्योतिष्को अने वैमानिकोने पण कहेवुं. आ सूत्रनो आ अर्थ छे—नैरयिकने नरयिकपणामां अतीत काळे अनन्ता लोभसमुद्घातो थयेला छे. कारण के तेणे अनन्तवार नैरयिकपणुं प्राप्त करेलुं छे. भविष्य काळना विचारमां कोइने थवाना होय अने कोइने थवाना होता नथी. तेमां जे प्रश्न-समय पछी लोभसमुद्घातने प्राप्त थया सिवाय ज नरकभवथी नीकळी तुरत के परंपराए सिद्ध थशे अने फरीथी नरकमां नहि आवे, आव्यो होय तोपण लोभसमुद्घातने प्राप्त नहि थाय, तेने एक पण भविष्यमां लोभसमुद्घात थवानो नथी, बाकीनाने थवाना छे. तेमां कोइने एक, कोइने बे अने कोइने त्रण होय छे. ए हकीकत प्रश्नसमय पछी पण नरकभवने प्राप्त थयेला अथवा एक वार नरकभवमां आवनारने जाणवी. उत्कर्षथी संख्याता, असंख्याता के अनन्ता थवाना होय छे. तेमां संख्याती वार नरकभवमां आवनारने संख्याता, असंख्याती वार आवनारने असंख्याता अने अनन्तवार आवनारने अनन्ता जाणवा. तथा नैरयिकने असुरकुमारपणामां अतीतसूत्र तेमज जाणवुं. भविष्यसूत्रमां कोइने थवाना छे अने कोइने नथी. जे नरकथी नीकळी असुरकुमारपणुं प्राप्त करवानो नथी तेने असुर-कुमारपणामां अनागत लोभसमुद्घातो होता नथी. जे असुरकुमारपणुं प्राप्त करशे तेने होय छे. तेओ जघन्यपदे संख्याता होय छे, कारण के जघन्य स्थितिमां पण असुरकुमारोने संख्याता लोभसमुद्घातो थाय छे, कारण के तेओने घणो लोभ होय छे. उत्कृष्टपदे असंख्याता अने अनन्ता होय छे. तेमां एकवार दीर्घ स्थितिवाळामां अने अनेकवार जघन्य स्थितिवाळामां के दीर्घस्थितिवाळामां उत्पन्न थवावाळा असुरकुमारोने असंख्याता, अने अनन्तवार उत्पन्न थवावाळाने अनन्ता जाणवा. ए प्रमाणे नैरयिकने नागकुमारत्वादि स्थानोमां यावत् स्तनितकुमारपणामां निरंतर कहेवुं. ते प्रमाणे सूत्रकार कहे छे—'एवं जाव थणियकुमारत्ते' ए प्रमाणे स्तनितकुमार-

पणामां कहेवुं. पृथिवीकायिकपणामां अतीतसूत्र तेमज जाणवुं. भविष्यना विचारमां कोइने होय छे अने कोइने होता नथी. तेमां नरकथी नीकळी जे पृथिवीकायिकपणुं पामवानो नथी तेने होता नथी. जे पामशे तेने जघन्यपदे एक, बे के त्रण अने उत्कर्षथी संख्याता, असंख्याता के अनन्ता होय छे. ते आ प्रमाणे—तिर्यञ्च पंचेन्द्रियना भवथी के मनुष्यभवथी लोभसमुद्घातने प्राप्त थइने जे एक वार पृथिवीकायमां जशे तेने एक, बे वार जनारने बे, त्रण वार जनारने त्रण, संख्याती वार जनारने संख्याता, असंख्याती वार जनारने असंख्याता अने अनन्त वार जनारने अनन्ता होय छे. 'ए प्रमाणे यावत् मनुष्यपणामां कहेवुं'. एटले पृथिवीकाय संबन्धी सूत्रपाठ वडे यावत् मनुष्यपणामां कहेवुं. ते आ प्रमाणे—हे भगवन्! एक एक नैरयिकने अप्कायिकपणामां केटला लोभसमुद्घातो अतीत काळे होय? इत्यादि यावत् मनुष्यसूत्र कहेवुं. तेमां अप्कायिकथी मांडी वनस्पतिकाय सुधीना सूत्रनी भावना पृथिवीकायिकसूत्रनी पेठे करवी. बेइन्द्रियसूत्रमां भविष्यना विचारमां जघन्यथी एक, बे के त्रण जाणवा. ए यावत एक वार बेइन्द्रियना भवने प्राप्त करवावाळानी अपेक्षाए जाणवी. उत्कर्षथी संख्याता, असंख्याता के अनन्ता जाणवा. तेमां संख्यातीवार बेइन्द्रियभवने प्राप्त करनारने संख्याता, असंख्याती वार प्राप्त करनारने असंख्याता अने अनन्त वार प्राप्त करनारने अनन्ता होय छे. ए प्रमाणे तेइन्द्रिय, अने चउरिन्द्रिय सूत्रोनो विचार करवो. तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय सूत्र सम्बन्धे आ प्रमाणे विचार छे—एक वार तिर्यञ्च पंचेन्द्रियना भवमां जवावाळा अने स्वभावथी अल्प लोभवाळाने जघन्यथी एक, बे के त्रण लोभसमुद्घातो होय छे. बाकीनाने उत्कर्षथी तिर्यञ्च पंचेन्द्रियना भवमां संख्याती वार जनारने संख्याता, असंख्याती वार जनारने असंख्याता अने अनन्त वार जनारने अनन्ता होय छे. मनुष्यसूत्रमां भविष्यकाळ सम्बन्धे मूळथी आ प्रमाणे भावना छे—जे नरकभवथी नीकळी अल्पलोभकषायवाळो मनुष्यभव पामी लोभसमुद्घातने प्राप्त कर्या सिवाय मोक्षे जशे तेने पुरस्कृत-अनागत काळे लोभसमुद्घातो होता नथी, बाकीनाने होय छे. जेने छे तेने पण जघन्यथी एक, बे के त्रण होय छे अने ते एक, बे के त्रण वार लोभसमुद्घातने प्राप्त थइ मोक्षे जनारने जाणवा. संख्यातादिनो विचार पूर्वनी पेठे समजवो. 'वाणमंतरत्ते जहा असुरकुमारा' व्यन्तरपणामां जेम असुरकुमारो सम्बन्धे कह्युं तेम कहेवुं. एटले जेम

नैरयिकने असुरकुमारपणामां पुरस्कृत-भविष्यकाळ सम्बन्धे सूत्र कह्युं तेम व्यन्तर विशे पण कहेवुं. तात्पर्य ए छे के भविष्यकाळना विचारमां एम कहेवुं-कोइने छे अने कोइने नथी. जेने छे तेने कदाच संख्याता, कदाच असंख्याता के अनन्ता होय छे. परन्तु एकोत्तरिका-एकथी मांडी अनन्त न कहेवा. कारण के व्यन्तरोने पण असुरकुमारनी पेठे जघन्य स्थितिमां पण संख्याता लोभसमुद्घातो होय छे. 'जोइसियत्ते' इत्यादि. ज्योतिष्कपणामां अतीत काळे अनन्ता लोभसमुद्घातो थयेला छे. कारण के अनन्तवार ज्योतिष्कपणुं प्राप्त करेलुं छे. भविष्यमां थवाना लोभसमुद्घातो कोइने होय छे अने कोइने होता नथी ए पूर्वनी पेठे जाणवुं. जेने होय छे तेमां पण कोइने असंख्याता अने कोइने अनन्ता होय छे, कदिपण संख्याता होता नथी. कारण के ज्योतिष्कोनुं जघन्यपदे पण असंख्याता वरसनुं आयुष होवाथी जघन्यथी पण असंख्याता लोभसमुद्घातो होय छे. केमके ते जातिना देवोने लोभ घणो होय छे. ए प्रमाणे वैमानिकपणामां पण भविष्य समुद्घातना विचारमां कहेवुं. एम नैरयिकने स्वस्थाने अने परस्थाने लोभसमुद्घातनो विचार कर्यो, हवे असुरकुमार सम्बन्धे लोभसमुद्घातनो विचार करवानी इच्छावाळा सूत्रकार कहे छे—'एगमेगस्स णं' इत्यादि. एक एक असुरकुमारने नैरयिकपणामां अतीत काळे अनन्ता लोभ समुद्घातो थयेला छे. कारण के अनन्तवार नैरयिकपणुं प्राप्त करेलुं छे, भविष्यकाळे कोइने होय छे अने कोइने होता नथी. तेमां जे असुरकुमारना भवथी नीकळी नरकमां जवानो नथी अने एक वार गयो होय तोपण लोभसमुद्घातने प्राप्त थवानो नथी तेने होता नथी. जे नरकमां जशे तेने एक, बे के त्रण अने उत्कर्षथी संख्याता, असंख्याता के अनन्ता होय छे. तेमां एक वार नरकमां जनारने एकादि होय छे. कारण के नैरयिकोने इष्ट वस्तुना संयोगनो अभाव होवाथी प्रायः लोभसमुद्घातनो असम्भव छे. मूलटीकामां कह्युं छे के 'नेरइयाणं लोभसमुग्घाया थोवा चेव भवन्ति, तेसिमिट्ठदव्वसंजोगाभावातो एगादिसम्भव' इति. नैरयिकोने लोभसमुद्घातो थोडा ज होय छे, कारण के तेओने इष्ट द्रव्यना संयोगनो अभाव होवाथी एकादि लोभसमुद्घातनो सम्भव छे. संख्याती वार नरकमां जनारने संख्याता, असंख्याती वार नरकमां जनारने असंख्याता अने अनन्त वार नरकमां जनारने अनन्ता होय छे. असुरकुमारने असुरकुमारपणामां अतीत काळे अनन्ता स्पष्ट छे. भविष्यकाळे कोइने होय छे

अने कोइने होता नथी. तेमां जे असुरकुमारना भवमां तेना छेल्ला भागे वर्तती लोभसमुद्घातने प्राप्त थवानो नथी तेम त्यांथी नीकळी फरीथी पण असुरकुमारपणुं पामवानो नथी पण तुरत अथवा परंपराए मोक्षे जशे तेने होता नथी. जेने होय छे तेने पण जघन्यथी एक, बे के त्रण अने उत्कर्षथी संख्याता, असंख्याता अने अनन्ता होय छे. तेमां एकादि लोभसमुद्घातो जेनुं बाकीनुं आयुष क्षीण थएलुं छे एवा असुरकुमार-भवने प्राप्त थयेला अने फरीथी त्यां नहि उत्पन्न थनारने जाणवा. संख्यातादिनो विचार नैरयिकनी पेठे जाणवो. असुरकुमारने नागकुमारपणामां अतीत काळे लोभसमुद्घातो पूर्वनी पेठे जाणवा. भविष्य काळे कोइने होय छे अने कोइने होता नथी. तेमां जे असुरकुमारना भवथी नीकळी नागकुमारना भवने प्राप्त थवानो नथी तेने होता नथी. बाकीनाने होय छे. जेने होय छे तेने पण कदाचित् संख्याता, कदाचित् असंख्याता अने कदाचित् अनन्ता होय छे. तेमां एकवार नागकुमारना भवने प्राप्त थनारने संख्याता होय छे. कारण के देवोने जघन्य स्थितिमां पण संख्याता लोभसमुद्घातो थाय छे. असंख्यातीवार प्राप्त थनारने असंख्याता अने अनन्तीवार प्राप्त थनारने अनन्ता होय छे. ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमारपणामां कहेवुं. पृथिवीकायिकपणामां यावत् वैमानिकपणामां जेम नैरयिकने कह्युं तेम कहेवुं. ए प्रमाणे असुरकुमारनी पेठे नागकुमारादिने पण यावत् स्तनितकुमारने वैमानिकपणामां कहेवुं एटले वैमानिकपणा विशे सूत्र छे त्यां सुधी कहेवुं. ते आ प्रमाणे—'हे भगवन्! एक एक स्तनितकुमारने वैमानिकपणामां केटला लोभसमुद्घातो अतीत काळे थयेला छे. इत्यादि. 'ए प्रमाणे एक एक पृथिवीकायिकने नैरयिकपणामां केटला लोभसमुद्घातो अतीत काळे होय? इत्यादि सूत्र पण पूर्वे कहेल भावनाने अनुसारे स्वयं विचारवुं. ए प्रमाणे नैरयिकादिना एकवचनना विषयभूत क्रोधादिसमुद्घातोनो प्रत्येक दंडकना चोवीश एवा चोवीश दंडक सूत्रो वडे विचार कर्यो.

हवे नैरयिकादिना बहुवचनना विषयभूत तेज समुद्घातोनो विचार करवानी इच्छावाळा सूत्रकार कहे छे—'नेरइयाणं भंते' इत्यादि. हे भगवन्! नैरयिकोने नैरयिकपणामां केटला क्रोधसमुद्घातो अतीत काळे थयेला छे? भगवान् कहे छे—'हे गौतम! अनन्ता थयेला छे. कारण के सर्वे जीवोए नैरयिकपणुं अनन्तवार प्राप्त करेलुं छे. केटला भविष्यमां थवाना छे? हे गौतम! अनन्ता थवाना छे. कार-

१५. एतेसि णं भंते ! जीवाणं कोहसमुग्घातेणं माणसमुग्घातेणं मायासमुग्घातेणं लोभसमुग्घातेण य समोहयाणं अकसायसमुग्घातेणं समोहयाणं असमोहयाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा

१५. हे भगवन् ! ए क्रोधसमुद्घातवाळा, मानसमुद्घातवाळा, मायासमुद्घातवाळा अने लोभसमुद्घातवाळा, अकषायसमुद्घातवाळा अने समुद्घात रहित जीवोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा

ण के प्रश्न समये वर्तता नैरयिकोमांना घणा नैरयिको अनन्तवार नैरयिकपणुं प्राप्त करवाना छे. 'एवं' इत्यादि. ए प्रमाणे-नैरयिकसंबन्धी सूत्रपाठ वडे चोवीश एवा चोवीश दंडकसूत्रो वडे निरंतर यावत् वैमानिकने वैमानिकपणामां कहेवुं. एटले वैमानिकपणा विशे सूत्र छे त्यां सुधी कहेवुं. ते आ प्रमाणे—हे भगवन् ! वैमानिकोने वैमानिकपणामां केटला क्रोधसमुद्घातो अतीत काळे थयेला छे ? हे गौतम ! अनन्ता थयेला छे. केटला भविष्य काळे थवाना छे ? हे गौतम ! अनन्ता थवाना छे. तेनो विचार पूर्वेनी पेठे करवो. जेम क्रोधसमुद्घातो सर्व जीवोमां स्वस्थाने अने परस्थाने अतीत काळे अने भविष्यकाळे अनन्ता कहेला छे तेम मानादिसमुद्घातो पण कहेवा. ते प्रमाणे सूत्रकार कहे छे—'एवं' इत्यादि. जे प्रमाणे क्रोधसमुद्घातो कह्या ते प्रमाणे चारेय समुद्घातो स्वस्थाने अने परस्थाने बधेय यावत् लोभसमुद्घात वैमानिकपणामां कह्यो छे त्यां सुधी कहेवा. ते आ प्रमाणे—'हे भगवन् ! वैमानिकोने वैमानिकपणामां केटला लोभसमुद्घातो अतीत काळे थयेला छे ? हे गौतम ! अनन्ता थयेला छे. केटला भविष्य काळे थवाना छे ? हे गौतम ! अनन्ता थवाना छे'-इत्यादि सुगम छे. ए प्रमाणे नैरयिकादिना बहुवचनना विषयभूत क्रोधादिसमुद्घातो पण प्रत्येक दंडकना चोवीश एवा चोवीश दंडकसूत्रो वडे विचार्या.

१५. हवे क्रोधादि समुद्घातोवाळा, ते सिवायना बीजा अकषायसमुद्घातवाळा अने समुद्घात रहित जीवोनुं अल्पबहुत्व कहेवानी इच्छावाळा सूत्रकार प्रथम सामान्यपणे जीव संबन्धे अल्पबहुत्व कहे छे—'एएसि णं' इत्यादि. हे भगवन् ! क्रोधसमुद्घातवाळा,

जीवा अकसायसमुग्घाएणं समोहया, माणसमुग्घाएणं समोहया अणंतगुणा, कोहसमुग्घाएणं समोहया विसेसाहिया, मायासमुग्घाएणं समोहया विसेसाहिया, लोभसमुग्घाएणं समोहया विसेसाहिया, असमोहया संखेज्जगुणा । एतेसि णं भंते ! नेरइयाणं कोहसमुग्घातेणं माणसमुग्घातेणं मायासमुग्घातेणं लोभसमुग्घातेणं समोहयाणं असमोहयाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा नेरइया लोभसमुग्घाएणं समोह-

जीवो अकषायसमुद्घातवाळा छे, तेथी मानसमुद्घातवाळा अनन्तगुणा छे, तेथी क्रोधसमुद्घातवाळा विशेषाधिक छे, तेथी मायासमुद्घातवाळा विशेषाधिक छे, तेथी लोभसमुद्घातवाळा विशेषाधिक छे, तेथी समुद्घात रहित संख्यातगुणा छे. हे भगवन् ! ए क्रोधसमुद्घातवाळा, मानसमुद्घातवाळा, मायासमुद्घातवाळा, लोभसमुद्घातवाळा अने समुद्घात रहित नैरयिकोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा नैरयिको लोभसमुद्घातवाळा छे, तेथी मायासमुद्घातवाळा संख्या-

मानसमुद्घातवाळा, मायासमुद्घातवाळा, लोभसमुद्घातवाळा, अकषाय-कषाय सिवायना बाकीना समुद्घातवाळा अने समुद्घातरहित जीवोमां 'कतरे कतरेभ्योऽल्पा बहवो वा' कोण कोनाथी अल्प, बहु, 'कतरैस्तुल्याः' 'अर्थवशाद् विभक्तिविपरिणामः' अर्थना वशथी विभक्ति बदलाय छे-ए न्यायने अनुसरी पंचमी विभक्तिना स्थाने त्रीजी विभक्तिनो विपरिणाम थवाथी कोना तुल्य छे ए अर्थ थाय छे, अने कोनाथी विशेषाधिक छे. ? एम गौतमे पूछ्युं, एटले भगवान् कहे छे—हे गौतम ! सौथी थोडा जीवो अकषायसमुद्घात वडे-कषाय सिवाय बाकीना वेदनादि छ समुद्घात वडे समुद्घातवाळा होय छे. कषाय सिवायना बीजा समुद्घात वडे समुद्घातवाळा क्वचित्-कोइक काळे होय छे. अने ते उत्कृष्ट पदे पण कषायसमुद्घातवाळाओनी अपेक्षाए अनन्तमा भागे होय छे, तेथी थोडा छे. तेथी मानसमुद्घातवाळा अनन्तगुणा छे. कारण के अनन्त वनस्पति जीवो पूर्व भवना संबन्धथी मानसमुद्घातमां वर्तता होय छे. तेथी क्रोधसमुद्घातवाळा विशे-

या, मायासमुग्घाएणं समोहया संखेज्जगुणा, माणसमुग्घातेणं समोहया संखेज्जगुणा, कोहसमुग्घातेणं समोहया संखेज्जगुणा, असमोहया संखेज्जगुणा। असुरकुमाराणं पुच्छा। गोयमा! सव्वत्थोवा असुरकुमारा कोहसमुग्घाएणं समोहया, माणसमुग्घाएणं समोहया संखेज्जगुणा, मायासमुग्घाएणं समोहया संखेज्जगुणा, लोभसमुग्घाएणं समोहया संखेज्जगुणा, असमोहया संखेज्जगुणा, एवं सव्वदेवा जाव वेमाणिया। पुढविकाइयाणं पुच्छा। गोय-

तगुणा छे, तेथी मानसमुद्घातवाळा संख्यातगुणा छे, तेथी क्रोधसमुद्घातवाळा संख्यातगुणा छे, अने तेथी समुद्घात रहित संख्यातगुणा छे. असुरकुमारो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम! सौथी थोडा असुरकुमारो क्रोधसमुद्घातवाळा छे, तेथी मानसमुद्घातवाळा संख्यातगुणा छे, तेथी मायासमुद्घातवाळा संख्यातगुणा छे, तेथी लोभसमुद्घातवाळा संख्यातगुणा छे अने तेथी समुद्घातरहित संख्यातगुणा छे. एम सर्व देवो यावत् वैमानिको जाणवा. पृथिवीकायिको संबन्धे पृच्छा. हे गौतम! सौथी थोडा पृथिवीकायिको मानस-

पाधिक छे. कारण के मानीनी अपेक्षाए क्रोधी घणा होय छे. तेथी मायासमुद्घातवाळा विशेषाधिक छे. कारण के क्रोधीनी अपेक्षाए मायावी घणा छे. तेथी लोभसमुद्घातवाळा विशेषाधिक छे. कारण के मायावी करतां लोभवाळा घणा छे. तेथी कोइ पण समुद्घात वडे रहित संख्यातगुणा छे. कारण के चारेय गति पैकी प्रत्येकमां समुद्घातवाळा करतां समुद्घातरहित हमेशां संख्यातगुणा होय छे. सिद्धो एकेन्द्रियनी अपेक्षाए अनन्तमा भागे छे माटे ते समुद्घातरहित होवा छतां पण तेनी विवक्षा करी नथी. एज अल्पबहुत्वनो चोवीश दंडकना क्रमथी विचार करे छे—'एएसि णं' इत्यादि सूत्र सुगम छे. परन्तु सौथी थोडा नैरयिको लोभसमुद्घातवाळा छे. कारण के नैरयिकोने इष्ट वस्तुना संयोगनो अभाव होवाथी प्रायः लोभसमुद्घात होतो नथी. जे कोइकने होय छे तेओ थोडाक होय छे. माटे बाकीना समुद्घातवाळानी अपेक्षाए सौथी थोडा छे. असुरकुमार संबन्धी अल्पबहुत्वना विचारमां सौथी थोडा क्रोधसमुद्-

मा ! सव्वत्थोवा पुढविकाइया माणसमुग्घाएणं समोहया, कोहसमुग्घाएणं समोहया विसेसाहिया, मायासमुग्घाएणं समोहया विसेसाहिया, लोभसमुग्घाएणं समोहया विसेसाहिया, असमोहया संखेज्जगुणा । एवं जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणिया, मणुस्सा जहा जीवा, णवरं माणसमुग्घाएणं समोहया असंखेज्जगुणा ।

१६. कइ णं भंते ! छाउमत्थिया समुग्घाया पन्नत्ता ? गोयमा ! छ छाउमत्थिया समुग्घाया पन्नत्ता, तंजहा—

मुद्घातवाळा छे, तेथी क्रोधसमुद्घातवाळा विशेषाधिक छे, तेथी मायासमुद्घातवाळा विशेषाधिक छे, तेथी लोभसमुद्घातवाळा विशेषाधिक छे, अने तेथी समुद्घातरहित संख्यातगुणा छे, ए प्रमाणे यावत् पंचेन्द्रिय तिर्यंचो जाणवा. मनुष्यो जीवोनी जेम जाणवा. परन्तु मानसमुद्घातवाळा असंख्यातगुणा कहेवा.

१६. हे भगवन् ! केटला छाद्मस्थिक समुद्घातो कह्या छे ? हे गौतम ! छ छाद्मस्थिक समुद्घातो कह्या छे. ते आ प्रमाणे—१

घातवाळा छे. कारण के देवो बहुलोभवाळा होय छे अने मानादिवाळा थोडा होय छे, तेथी पण क्रोधवाळा थोडा होय छे माटे शेषसमुद्घातवाळानी अपेक्षाए सौथी थोडा छे. 'एवं सव्वदेवा जाव वेमाणिया' 'ए प्रमाणे सर्व देवो यावत् वैमानिको जाणवा' एटले असुरकुमार संबन्धी अल्पबहुत्वना प्रकार वडे नागकुमारादि बधा देवो वैमानिको सुधी कहेवा. पृथिवीकायिकना विचारमां सामान्यपणे जीवपदने विशे भावना करी तेम करवी. कारण के तेनुं समानपणुं छे. 'एवं जाव' इत्यादि. ए प्रमाणे-पृथिवीकायिक संबन्धे कहेला प्रकार वडे यावत् तिर्यंच पंचेन्द्रियो कहेवा. मनुष्यो जीवोनी पेठे कहेवा. परन्तु अकषायसमुद्घातवाळानी अपेक्षाए मानसमुद्घातवाळा असंख्यातगुणा कहेवा.

१६. हवे 'छाद्मस्थिक केटला समुद्घातो छे' एनुं निरूपण करवा माटे सूत्रकार कहे छे—'कइ णं भंते !' इत्यादि सुगम छे. कोने

वेदणासमुग्घाए, कसायसमुग्घाए, मारणंतियसमुग्घाए, वेउव्वियसमुग्घाए, तेयासमुग्घाए, आहारगसमुग्घाते। नेरइयाणं भंते! कति छाउमत्थिया समुग्घाया पन्नत्ता? गोयमा! चत्तारि छाउमत्थिया समुग्घाया पन्नत्ता, तंजहा–वेदणासमुग्घाए, कसायसमुग्घाए, मारणंतियसमुग्घाए, वेउव्वियसमुग्घाए। असुरकुमाराणं पुच्छा। गोयमा! पंच छाउमत्थिया समुग्घाया पन्नत्ता, तंजहा–वेदणासमुग्घाए, कसायसमुग्घाए, मारणंतियसमुग्घाए, वेउव्वियसमुग्घाए, तेयसमुग्घाए। एगिंदियविगलिंदियाणं पुच्छा। गोयमा! तिण्णि छाउमत्थिया समुग्घाया पन्नत्ता,

---

वेदना, २ कपाय, ३ मारणान्तिक, ४ वैक्रिय, ५ तैजस अने ६ आहारकसमुद्घात. हे भगवन्! नैरयिकोने केटला छाद्मस्थिक समुद्घातो कह्या छे? हे गौतम! चार छाद्मस्थिक समुद्घातो कह्या छे. ते आ प्रमाणे–वेदना, कपाय, मारणान्तिक अने वैक्रियसमुद्घात. असुरकुमार संबन्धे पृच्छा. हे गौतम! पांच छाद्मस्थिक समुद्घातो कह्या छे. ते आ प्रमाणे—१ वेदना, २ कपाय, ३ मारणान्तिक, ४ वैक्रिय अने ५ तैजससमुद्घात. एकेन्द्रियो अने विकलेन्द्रियो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम! तेओने त्रण छाद्मस्थिक समुद्घातो कह्या छे. ते आ प्रमाणे—१ वेदना, २ कपाय अने ३ मारणान्तिक समुद्घात. परन्तु वायुकायिकोने चार समुद्घातो कह्या

केटला छाद्मस्थिक समुद्घातो होय छे-ए चोवीश दंडकना क्रमवडे निरूपण करे छे—'नेरइयाणं' इत्यादि. नेरयिकोने प्रथमना चार वेदनादि समुद्घातो होय छे. कारण के तेओने तैजस लब्धि अने आहारक लब्धिना अभावथी तैजस समुद्घात अने आहारक समुद्घातनो असंभव छे. असुरकुमारादि बधाय देवोने आहारक समुद्घात सिवाय बाकीना पांच समुद्घातो होय छे. कारण के तेओने तैजसलब्धि होवाथी तैजस समुद्घातनो पण संभव छे. परन्तु जे आहारक समुद्घात छे ते तेने संभवतो नथी, कारण के चौद

तंजहा–वेदणासमुग्घाए,कसायसमुग्घाए, मारणंतियसमुग्घाए, णवरं वाउकाइयाणं चत्तारि समुग्घाया पन्नत्ता, तंजहा–वेदणासमुग्घाए, कसायसमुग्घाए, मारणंतियसमुग्घाए, वेउव्वियसमुग्घाए, तेयगसमुग्घाए । मणूसाणं कति छाउमत्थिया समुग्घाया पन्नत्ता ? गोयमा ! छ छाउमत्थिया समुग्घाया पन्नत्ता,तंजहा–वेदणासमुग्घाए, कसायसमुग्घाए, मारणंतियसमुग्घाए, वेउव्वियसमुग्घाए, तेयगसमुग्घाए, आहारगसमुग्घाए ।

छे. ते आ प्रमाणे–१ वेदना, २ कषाय, ३ मारणान्तिक अने ४ वैक्रियसमुद्घात. पंचेन्द्रिय तिर्यंचो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! तेओने पांच छाद्मस्थिक समुद्घातो कह्या छे. ते आ प्रमाणे—१ वेदना, २ कषाय, ३ मारणान्तिक, ४ वैक्रिय, ५ तैजस समुद्घात. मनुष्योने केटला छाद्मस्थिक समुद्घातो छे ? हे गौतम ! छ छाद्मस्थिक समुद्घातो कह्या छे. ते आ प्रमाणे–१ वेदना, २ कषाय, ३ मारणान्तिक, ४ वैक्रिय, ५ तैजस, अने ६ आहारक समुद्घात.

पूर्वना ज्ञानना अभावथी अने भवरूप हेतुथी तेओने आहारक लब्धिनो अभाव छे. वायुकाय सिवाय एकेन्द्रिय अने विकलेन्द्रियोने प्रथमना वेदना, कषाय अने मरणरूप त्रण समुद्घातो होय छे. कारण के तेओने वैक्रिय, आहारक अने तेजोलब्धिनो अभाव होवाथी ते संबन्धी समुद्घातोनो असंभव छे. वायुकायिकोने पूर्वना त्रण समुद्घातो अने वैक्रियसहित चार समुद्घातो होय छे. कारण के तेओमां बादर पर्याप्ताने वैक्रिय लब्धिनो संभव होवाथी वैक्रिय समुद्घातनो पण संभव छे. पंचेन्द्रिय तिर्यंचोने आहारक समुद्घात सिवायना बाकीना पांच छाद्मस्थिक समुद्घातो छे. जे आहारक समुद्घात छे ते तेओने संभवतो नथी, कारण के चौद पूर्वना ज्ञाननो अभाव होवाथी तेओने आहारक लब्धिनो असंभव छे. मनुष्योने छ ए समुद्घातो होय छे. कारण के मनुष्यमां सर्व भावनो संभव छे ए प्रमाणे जेओने जेटला छाद्मस्थिक समुद्घातो छे तेओने तेटला कह्या.

१७. जीवे णं भंते ! वेदणासमुग्घाएणं समोहते, समोहणित्ता जे पोग्गले निच्छुभति, तेहि णं भंते! पोग्गलेहिं केवइते खेत्ते अफुण्णे, केवतिते खेत्ते फुडे ? गोयमा ! सरीरप्पमाणमेत्ते विक्खंभबाहल्लेणं नियमा छद्दिसिं एवतिते खेत्ते अफुण्णे, एवतिते खेत्ते फुडे । से णं भंते ! खित्ते केवतिकालस्स अफुण्णे, केवतिकालस्स फुडे ? गोयमा ! एगसमइएण वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा विग्गहेणं एवतिकालस्स अफुण्णे, एवइयकालस्स फुडे। ते णं भंते ! पोग्गले केवतिकालस्स निच्छुभति ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तस्स, उक्कोसेण वि अंतोमुहु-

---

१७. हे भगवन् ! वेदना समुद्घात वडे समवहत–समुद्घातवाळो जीव वेदना समुद्घात करीने जे पुद्गलोने बहार काढे छे, ते पुद्गलो वडे केटलुं क्षेत्र आपूर्ण–व्याप्त होय ? केटलुं क्षेत्र स्पृष्ट–स्पर्शेलुं होय ? हे गौतम ! अवश्य छ दिशामां विस्तार अने जाडाइमां शरीर प्रमाण मात्र क्षेत्र छे, एटलुं क्षेत्र व्याप्त होय, एटलुं क्षेत्र स्पर्शेलुं होय. हे भगवन् ! ते क्षेत्र केटला काळे आपूर्ण–व्याप्त होय ? केटला काळे स्पर्शेलुं होय ? हे गौतम ! एक समयनी, बे समयनी के त्रण समयनी विग्रहगति वडे जेटलुं क्षेत्र व्याप्त थाय तेटलुं क्षेत्र एटला काळे व्याप्त होय, एटला काळे स्पर्शेलुं होय. हे भगवन् ! ते पुद्गलो केटला काळे बहार काढे ? हे गौतम ! जघन्य-

---

१७. हवे जे समुद्घातमां वर्तता जीव जेटला क्षेत्रने समुद्घातना वशथी ते ते पुद्गलो वडे व्याप्त करे तेनुं निरूपण करे छे—'जीवे णं भंते !' इत्यादि. हे भगवन् ! 'णं' वाक्यालंकारमां वपराय छे, जीव वेदना समुद्घात वडे समवहत–समुद्घातवाळो थाय छे, एटले वेदनासमुद्घात करे छे, समुद्घात करीने पोताना शरीरमां रहेला जे वेदनायोग्य पुद्गलोने 'निच्छुभइ'–निक्षिपति–बहार काढे छे–आत्माथी जुदा करे छे, ते पुद्गलो वडे केटलुं क्षेत्र आपूर्ण–व्याप्त होय ? ते व्याप्तपणुं वच्चे केटलाएक आकाशप्रदेशनो स्पर्श न होय तो

त्तस्स। ते णं भंते! पोग्गला निच्छूढा समाणा जातिं तत्थ पाणातिं भूयातिं जीवातिं सत्तातिं अभिहणंति वत्तेंति लेसेंति संघाएंति संघट्टेंति परितावेंति किलामेंति उद्दवेंति, तेहिंतो णं भंते! से जीवे कतिकिरिए? गोयमा! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए। ते णं भंते! जीवा तातो जीवाओ कतिकिरिया? गोयमा! सिय तिकिरिया, सिय चउकिरिया, सिय पंचकिरिया। से णं भंते! जीवे ते य जीवा अण्णेसिं जीवाणं

थी अन्तर्मुहूर्ते अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्ते बहार काढे. हे भगवन्! बहार काढेला ते पुद्गलो होय ते त्यां रहेला जे प्राणो, भूतो, जीवो अने सत्त्वोने हणे, वर्तयन्ति-फेरवे, कांइक स्पर्श करे, एकठा करे, विशेष एकठा करे, परिताप-पीडा उत्पन्न करे, क्लान्त-मूर्छित करे अने जीवितथी रहित करे, ते जीवोने आश्रयी ते पुद्गलोथी वेदना समुद्घातवाळो ते जीव केटली क्रियावाळो होय? हे गौतम! कदाच त्रण क्रियावाळो होय, कदाच चार क्रियावाळो होय अने कदाच पांच क्रियावाळो होय. हे भगवन्! ते जीवो वे-

पण व्यव्यहारथी कहेवाय, तें माटे कहे छे के—'कियत् क्षेत्रं स्पृष्टं' केटलुं क्षेत्र स्पर्शेलुं होय? एटले दरेक आकाशप्रदेशने व्याप्त करवा वडे स्पर्शेलुं होय? ए प्रमाणे गौतमे प्रश्न कर्यो एटले भगवान् कहे छे—'सरीर' इत्यादि. 'नियमात्-अवश्य 'छद्दिसिं' छ दिशाओ आपूर्ण-व्याप्त थाय अने तेनो स्पर्श थाय तेम विष्कंभ-विस्तारथी अने बाहल्य-पिंडथी-जाडाइथी शरीरप्रमाण मात्र क्षेत्र, एटले जेटलो पोताना शरीरनो विस्तार अने जेटली जाडाइ होय तेटलुं क्षेत्र आपूर्ण-व्याप्त थयेलुं अने स्पर्शेलुं होय छे. तेने निगमन द्वारा कहे छे—'एवइए खेत्ते अफुण्णे, एवइए खेत्ते फुडे' इति. एटलुं क्षेत्र आपूर्ण-व्याप्त थयेलुं होय अने एटलुं क्षेत्र स्पर्शेलुं होय. अहीं वेदनासमुद्घात अधिक वेदनाथी थाय छे अने अधिक वेदना लोकना निष्कुट-गवाक्ष जेवा प्रान्त भागमां जीवोने होती नथी, कारण के तेओ उपद्रवरहित स्थानमां रहे छे. परन्तु त्रसनाडीनी अंदर अधिक वेदना होय छे. कारण के त्यां अन्य निमित्ते वेदनानी उदीरणानो संभव

परंपराघाएणं कतिकिरिया ? गोयमा ! तिकिरियावि चउकिरियावि पंचकिरियावि ।

दना समुद्घातवाळा ते जीवने आश्रयी केटली क्रियावाळा होय ? हे गौतम ! कदाच त्रण क्रियावाळा, कदाच चारक्रियावाळा अने कदाच पांचक्रियावाळा होय. हे भगवन् ! ते जीव अने ते जीवो अन्य जीवोना परंपराए आघात वडे केटली क्रियावाळा होय ? हे गौतम ! त्रणक्रियावाळा पण होय, चारक्रियावाळा पण होय अने पांचक्रियावाळा पण होय.

छे, अने त्यां छ दिशानो पण संभव छे. माटे 'अवश्य छ दिशाए' एम कह्युं छे. जो एम न होत तो 'सिय तिदिसिं, सिय, चउदिसिं सिय पंचदिसिं-कदाच त्रण दिशा, कदाच चारदिशा अने कदाच पांच दिशाए व्याप्त थाय-इत्यादि कह्युं होत.

हवे 'पोताना शरीर प्रमाण जेनो विस्तार अने जाडाइ छे एवुं क्षेत्र [ते पुद्गलो वडे] व्याप्त थयेलुं अने स्पर्शेलुं विग्रहगतिमां जीवनी गतिने आश्रयी केटले दूर सुधी होय अने केटला काळ सुधी होय एवुं निरूपण करवा माटे कहे छे-'से णं भंते'! इत्यादि. अहीं 'से' एमणां जेनुं प्रमाण कह्युं छे ते क्षेत्र, नपुंसक होवा छतां प्राकृत होवाथी पुंलिंग थयो छे. ते क्षेत्र हे भगवन् ! 'केवइ कालस्स' प्राकृत होवाथी त्रीजी विभक्तिना अर्थमां छट्ठी विभक्ति छे. एटले केटला काळे व्याप्त थाय अने केटला काळे स्पर्शेलुं होय ? तात्पर्य ए छे के पोताना शरीरप्रमाण जेनो विस्तार अने जाडाइ छे एवुं क्षेत्र विग्रहगतिमां जीवनी गतिने आश्रयी निरंतर भरेलुं अने स्पर्शेलुं केटला काळसुधी होय ? भगवान् कहे छे—हे गौतम ! एक समयनी, बे समयनी अने त्रण समयनी विग्रहगति वडे आपूर्ण-भरेलुं अने स्पर्शेलुं होय. तात्पर्य ए छे के एक समय, बे समय, अने त्रण समयनी विग्रहगति वडे जेटलुं क्षेत्र व्याप्त थाय एटले दूर सुधी विस्तार अने जाडाइमां पोताना शरीर प्रमाण क्षेत्र वेदना उत्पन्न करवाने योग्य पुद्गलो वडे आपूर्ण-भरेलुं जीवनी गतिने आश्रयी प्राप्त थाय छे. तेथी ए संबन्धे उत्कर्षथी त्रण समयना विग्रह वडे जेटलुं क्षेत्र व्याप्त कराय एटलुं क्षेत्र आत्माथी जुदा थयेला वेदना उत्पन्न करवाने योग्य पुद्गलो वडे आपूर्ण-भरेलुं होय छे. अहीं चार समयनी अने पांच समयनी विग्रहगति संभवे छे, तो पण वेदना समु-

द्घात प्रायः वीजाए उत्पन्न करेली वेदना वडे थाय छे, अने वीजाए उत्पन्न करेली वेदना त्रसनाडीमां रहेला जीवने होय छे पण तेनी वहार रहेलाने होती नथी. त्रसनाडीमां रहेलाने विग्रहगति उत्कर्षथी पण त्रण समयनी होय छे माटे उत्कर्षथी पण 'त्रण समयनी विग्रहगति वडे' एम कह्युं छे. परन्तु चार समयनी अने पांच समयनी कही नथी. उपसंहार वाक्य कहे छे-एवइयकालस्स अफुण्णे, एवइयकालस्स फुडे'-एटला काळे आपूर्ण-भरेलुं अने एटला काळे स्पर्शेलुं होय छे.' एटला वडे ते क्षेत्र उत्कर्षथी पण त्रण समयप्रमाण काळ वडे भरेलुं अने एटला काळवडे स्पर्शेलुं होय छे. तात्पर्य ए छे के विग्रहगतिमां उत्कर्षथी त्रण समय सुधी अने त्रण समयोवडे जेटलुं क्षेत्र व्याप्त कराय एटली सीमाने व्यापीने विस्तार अने जाडाइमां पोताना शरीर प्रमाण क्षेत्र वेदना उत्पन्न करवाने योग्य पुद्गलो वडे भरेलुं अने स्पर्शेलुं जीवनी गतिने आश्रयी व्याप्त थाय छे. अथवा 'केवइकालस्स' अहीं छट्ठी विभक्तिनो ज व्याख्या करवी. तेथी पोताना शरीर प्रमाण जेनो विस्तार अने जाडाइ छे एवुं क्षेत्र वेदना उत्पन्न करवाने योग्य पुद्गलो वडे व्याप्त अने भरेलुं जीवनी विग्रहगतिने आश्रयी केटला काळ संवन्धी होय छे-एटले केटला काळ सुधी प्राप्त थाय ? भगवान् कहे छे—एक समय, बे समय अने त्रण समयनी विग्रहगतिवडे भरेलुं अने स्पर्शेलुं 'लभ्यते' लामे छे ए वाक्यनो अध्याहार करवो. तेथी एटला वडे उत्कर्षथी त्रण समय प्रमाण काळ संबंधी एटले त्रण समयपर्यन्त उपर कहेला प्रमाणवाळुं क्षेत्र वेदना उत्पन्न करवाने योग्य पुद्गलो वडे आपूर्ण-भरेलुं अने एटला काळ सुधी स्पर्श करायेलुं छे.

हवे जेटला काळ सुधी वेदना उत्पन्न करवाने योग्य पुद्गलोने वहार काढे तेटला काळनुं प्रमाण वतावचा माटे सूत्रकार कहे छे-'तेणं भंते' ! इत्यादि. 'हे भदन्त' !-परम कल्याणना योगवाळा, अथवा परम सुखना योगवाळा हे भगवन् ! ते वेदना उत्पन्न करवाने योग्य पुद्गलोने केटला काळ सुधी वहार काढे छे ? केटला काळ सुधी वेदना उत्पन्न करवा योग्य पुद्गलोने विस्तारे छे ? भगवान् कहे छे-जघन्यथी अन्तर्मुहूर्तकाल सुधी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त सुधी वहार काढे छे. परन्तु उत्कर्षथी कंइक मोटा अन्तर्मुहूर्तकाळ सुधी विस्तारे छे एम समजवुं. तात्पर्य ए छे के जे पुद्गलो जघन्यथी अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त सुधी वेदना उत्पन्न करवाने

समर्थ छे ते पुद्गलोने ते ते प्रकारे वेदनाथी पीडित थयेलो जीव पोताना शरीरमां रहेलां पोताना शरीरथी वहार आत्मप्रदेशोथी जुदा करे छे, विस्तारे छे. जेम अत्यंत दाहज्वरथी पीडित थयेलो सूक्ष्म पुद्गलोने वहार काढे छे. आ प्रत्यक्ष सिद्ध छे. 'ते णं भंते'! इत्यादि. हे भगवन्! वहार विस्तारेला शरीरनी साथे संबंधवाळा के संबन्ध रहित ते पुद्गलो 'जाइं तत्थ' प्राकृत होवाथी पुंलिंग छतां पण नपुंसक लिंगमां वपरायेल छे. जे त्यां वेदनासमुद्घातवाळा पुरुषना संबंधवाळा क्षेत्रमां रहेला बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चउरिंद्रिय शंख, कीडी, माखी वगेरे प्राणोने, भूत-वनस्पतिओने. जीव-गरोळी साप वगेरे पंचेन्द्रियोने, सत्त्व-वाकीना पृथिवीकायादिने 'अभिघ्नन्ति' सामा आवतां हणे छे. 'वर्तयन्ति'-फेरवे छे-गोळ फेरवे छे, 'लेशयन्ति'-कंइक स्पर्श करे छे, 'संघातयन्ति'-परस्पर पकठा करे छे. संघट्टयन्ति-विशेषतः संघातरूपे जथ्थारूपे करे छे. परितापयन्ति-पीडा करे छे. क्लमयन्ति-कलान्त-मूर्छित करे छे. अपद्रावयन्ति-जीवितथी जुदा करे छे, ते प्राणादिने आश्रयी ते पुद्गलोथी हे भगवन्! ते वेदनासमुद्घातने प्राप्त थयेलो जीव केटली क्रियावाळो कह्यो छे? भगवान् कहे छे-'सिय तिकिरिए' इत्यादि. स्यात् शब्द कथञ्चित् वाची छे. कथंचित्-क्यारेक कोइक जीवने आश्रयी त्रण क्रियावाळो होय. तात्पर्य ए छे के ज्यारे कोइ जीवोने सर्वथा परिताप के जीवितथी जुदा न करे त्यारे सर्वथा त्रण क्रियावाळोज होय छे. ज्यारे कोइने परिताप-पीडा आपे के मरण पमाडे त्यारे पण जेओने आवाधा-पीडा करतो नथी तेनी अपेक्षाए त्रण क्रियावाळो ज होय. 'सिय चउकिरिए' कदाचित् चार क्रियावाळो होय' एटले कोइने पीडा करे त्यारे तेनी अपेक्षाए चार क्रियावाळो होय, अने कोइने जीवित रहित करे त्यारे तेनी अपेक्षाए पांच क्रियावाळो होय.

हवे तेज प्रस्तुत वेदनासमुद्घातवाळा जीवने आश्रयी ते वेदनासमुद्घातने प्राप्त थयेला पुरुषना पुद्गल वडे स्पर्श करायेला जीवोनी क्रियाओनुं निरूपण करे छे-'ते णं भंते'! इत्यादि. हे भगवन्! 'ते वेदनासमुद्घातने प्राप्त थयेल पुरुषना पुद्गलो वडे स्पर्श करायेला जीवो 'ताओ जीवाओ' वेदनासमुद्घातवाळा जीवथी, अहीं गम्यमान यप्प्रत्ययन्त क्रियाना कर्म अने अधिकरणमां पंचमी थाय छे; तेथी अहीं पंचमी विभक्ति थयेली छे. तेनो आ अर्थ छे-ते वेदना समुद्घातवाळा जीवने आश्रयी केटली क्रियावाळा

१८. नेरइए णं भंते ! वेदणासमुग्घाएणं समोहते, एवं जहेव जीवे, णवरं नेरइयाभिलावो, एवं निरवसेसं जाव वेमाणिते । एवं कसायसमुग्घातोवि भाणितव्वो । जीवे णं भंते ! मारणंतियसमुग्घातेणं समोहणइ, स-

१८. हे भगवन् ! वेदनासमुद्घात वडे समुद्घातवाळो नैरयिक-इत्यादि जेम जीव संबन्धे कह्युं छे तेम कहेवुं. परन्तु नैरयिक संबन्धे पाठ कहेवो. ए प्रमाणे बधुं वैमानिक सुधी कहेवुं. एम कषायसमुद्घात संबन्धे पण कहेवुं. हे भगवन् ! जीव मारणान्तिक समु-

कह्या छे ? भगवान् कहे छे-हे गौतम ! 'कदाचित् त्रण क्रियावाळा होय' एटले ज्यारे तेओ वेदनासमुद्घातवाळाने कांई पण पीडा उत्पन्न करवाने समर्थ न थाय त्यारे त्रण क्रियावाळा होय. ज्यारे तेने पीडा करे त्यारे कदाचित् चार क्रियावाळा होय. कारण के शरीरवडे स्पर्श करायेला वींछी वगेरे पीडा करता देखाय छे. ज्यारे तेने जीवितथी पण रहित करे त्यारे तेओ कदाचित् पांचक्रियावाळा होय, शरीर वडे स्पर्श कराता सर्पादि जवितथी रहित करता देखाय छे ए प्रत्यक्ष सिद्ध छे.

हवे ते वेदनासमुद्घातवाळा जीव वडे हिंसा कराता जीवोथी बीजा जीवोनी हिंसा कराय अने ते बीजा जीवो वडे हिंसा कराता वेदनासमुद्घातवाळा जीव वडे जेओनी हिंसा कराय छे ते जीवोने आश्रयी ते वेदनासमुद्घातवाळा जीवनी अने ते समुद्घातने प्राप्त थयेल जीवना पुद्गलवडे स्पर्श करायेला जीवोनी क्रियाओनुं निरूपण करवा माटे कहे छे—'से णं भंते ! जीवे ते य जीवा' इत्यादि. हे भगवन् ! 'से' ते प्रस्तुत वेदनासमुद्घातने प्राप्त थयेलो जीव अने वेदनासमुद्घातवाळा जीवना पुद्गलो वडे स्पर्श करायेला जीवो अन्य जीवोना उपर बतावेल प्रकारे परंपराघात वडे केटली क्रियावाळा कह्या छे ? भगवान् कहे छे-हे गौतम ! कदाच त्रण क्रियावाळा होय-इत्यादिनो पूर्वेनी पेठे विचार करवो,

१८. एज वेदनासमुद्घातनो उपर कहेला प्रकार वडे चोवीश दंडकमां विचार करता सूत्रकार कहे छे—'नेरइए णं भंते ' ! इत्यादि. ए प्रमाणे उपर कहेला प्रकार वडे जेम पूर्वे सामान्यपणे जीवोनो वेदनासमुद्घातने आश्रयी विचार कर्यो तेम नैरयिकनो पण करवो.

मोहणित्ता जे पोग्गले णिच्छुभति तेहि णं भंते ! पोग्गलेहिं केवतिते खेत्ते अप्फुण्णे, केवतिते खेत्ते फुडे ? गोयमा ! सरीरप्पमाणमेत्ते विक्खंभबाहल्लेणं, आयामेणं जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं उक्कोसेणं असंखेज्जातिं जोयणातिं एगदिसिं एवतिते खेत्ते अफुण्णे, एवतिए खेत्ते फुडे । से णं भंते ! खेत्ते केवतिकालस्स अफुण्णे केवतिकालस्स फुडे ? गोयमा ! एगसमइएण वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा चउसमइएण वा विग्गहेणं एवतिकालस्स अफुण्णे, एवतिकालस्स फुडे, सेसं तं चेव जाव पंचकिरियावि । एवं नेरइएवि, णवरं आयामेणं

दूघात करे छे अने समुद्घात करीने जे पुद्गलोने बहार काढे छे, हे भगवन् ! ते पुद्गलो वडे केटलुं क्षेत्र आपूर्ण—व्याप्त होय ? केटलुं क्षेत्र स्पर्शेलुं होय ? हे गौतम ! विस्तार अने जाडाइमां शरीरप्रमाण तथा लंबाइमां जघन्यथी अंगुलना असंख्यातमा भागप्रमाण अने उत्कर्षथी एक दिशामां असंख्याता योजन सुधी एटलुं क्षेत्र व्याप्त होय, एटलुं क्षेत्र स्पर्शेलुं होय. हे भगवन् ! ते क्षेत्र केटला काळे व्याप्त होय, केटला काळे स्पर्शेलुं होय ? हे गौतम ! एक समयनी, बे समयनी, त्रणसमयनी अने चार समयनी विग्रहगति वडे जेटलुं क्षेत्र व्याप्त थाय तेटलुं एटला काळे व्याप्त होय, एटला काळे स्पर्शेलुं होय. बाकी बधुं 'यावत् पांच क्रियावाळा होय' त्यां

परन्तु जीवना पाठने स्थाने नैरयिकनो पाठ उच्चारवो. जेमके 'हे भगवन् ! वेदनासमुद्घात वडे समुद्घातने प्राप्त थयेलो नैरयिक समुद्घात करीने जे पुद्गलोने बहार काढे छे, आत्माथी जुदा करे छे—इत्यादि. बधुं ए प्रमाणे वैमानिक सुधी कहेवुं. एटले नैरयिकने कहेला प्रकार वडे बाकीना पण स्थानोमां पोतपोताना दंडकना पाठपूर्वक बधुं वैमानिको सुधी एटले वैमानिकना पाठ सुधी कहेवुं. एम वेदनासमुद्घात कह्यो. हवे समान वक्तव्यता होवाथी कषायसमुद्घातने अतिदेश-समा-

जहण्णेणं साइरेगं जोयणसहस्सं, उक्कोसेणं असंखेज्जातिं जोअणातिं एगदिसिं एवतिते खेत्ते अप्फुण्णे, एवतिते खित्ते फुडे, विग्गहेणं एगसमइएण वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा, नवरं चउसमतिएण वा न भन्नति, सेसं तं चेव

सुधी तेमज जाणवुं. ए प्रमाणे नैरयिक पण जाणवो. परन्तु लंबाइमां जघन्यथी कांइक अधिक हजार योजन अने उत्कर्षथी असंख्याता योजन सुधी एक दिशामां एटलुं क्षेत्र व्याप्त होय, एटलुं क्षेत्र स्पर्शेलुं होय. अने ते एक समयनी, बे समयनी अने त्रण समयनी विग्रहगति वडे कहेवुं. परन्तु चार समयनी विग्रहगति वडे न कहेवुं. बाकी बधुं 'यावत् पांच क्रियावाळा पण होय' त्यां सुधी तेमज जाणवुं, असुरकुमारने जेम जीवपदमां कह्युं छे तेम कहेवुं. परन्तु नैरयिकनी पेठे विग्रहगति त्रण समयनी जाणवी. बाकी बधुं नागकु-

नपणे कहेवानी इच्छावाळा सूत्रकार कहे छे—'एवं कसायसमुग्घाओ वि भाणियव्वो' एम कषायसमुद्घात पण कहेवो. एटले वेदनासमुद्घात संबन्धी प्रकार वडे सामान्यपणे जीवपदमां अने चोवीश दंडकना अनुक्रमथी कषायसमुद्घात पण कहेवो. ते आ प्रमाणे—'हे भगवन् ? कषायसमुद्घातने प्राप्त थयेलो जीव कषायसमुद्घात करीने जे पुद्गलो बहार काढे छे' एटले शरीरमां रहेला जे पुद्गलो कषायसमुद्घात वडे उत्पन्न थयेल प्रयत्न विशेषथी पोताना शरीरथी बहार आत्मप्रदेशोथी पण जुदा करे छे, 'हे भगवन् ! ते पुद्गलो वडे केटलुं क्षेत्र आपूर्ण-व्याप्त होय अने केटलुं क्षेत्र स्पर्शेलुं होय ? हे गौतम ! अवश्य छ दिशामां विस्तार अने जाडाइ वडे शरीरप्रमाण क्षेत्र छे, एटलुं व्याप्त होय, एटलुं क्षेत्र स्पर्शेलुं होय. प्रथम कषायसमुद्घात त्रसजीवोने थाय छे. कारण के तेओने ज अत्यंत तीव्र अध्यवसायनो संभव छे. एकेन्द्रियोने तो पूर्व भवना संबन्धथी कषायसमुद्घात होय छे. त्रस जीवो त्रसनाडीमां होय छे पण तेनी बहार होता नथी, अने त्रसनाडीमां रहेलो पोताना शरीरप्रमाण जेनो विस्तार अने जाडाइ छे एवा क्षेत्रने आत्माथी जुदा पडेला पुद्गलो वडे लोकान्त निष्कुट रहित होवाथी छ ए दिशामां व्याप्त करे छे, स्पर्शे छे ते अवश्य घटे छे. माटे 'नियमा छद्दिसिं' अवश्य छ दिशामां

जाव पंचकिरियावि। असुरकुमारस्स जहा जीवपदे, णवरं विग्गहो तिसमइओ जहा नेरइयस्स, सेसं तं चेव जहा असुरकुमारे, एवं जाव वेमाणिते, णवरं एगिंदिये जहा जीवे निरवसेसं।

मारादिने कहेवुं. बाकी बधुं जेम असुरकुमार संबन्धे कह्युं तेम कहेवुं. ए प्रमाणे वैमानिक सुधी जाणवुं. परन्तु एकेन्द्रियने जीवनी पेठे बधुं कहेवुं.

एम कह्युं छे. 'तेटलुं क्षेत्र आपूर्ण-व्याप्त थयेलुं एटलुं क्षेत्र स्पर्शेलुं छे.' इत्यादि बधुं समान छे.

हवे मरणसमुद्घात संबन्धे कहेवानी इच्छावाळा सूत्रकार कहे छे—'जीवे णं भंते! मारणंतियसमुग्घाएणं' इत्यादि पूर्ववत् जाणवुं. मारणान्तिक समुद्घातने प्राप्त थयेलो कोइ जीव मारणान्तिक समुद्घात करी तैजसादिशरीरना अन्तर्गत जे पुद्गलोने निच्छुभइ-बहार काढे छे, आत्मप्रदेशोथी जुदा करे छे, ते पुद्गलो वडे हे भगवन्! केटलुं क्षेत्र व्याप्त होय? भगवान् कहे छे-हे गौतम! विस्तार अने जाडाइमां पोताना शरीरप्रमाण तथा लंबाइमां जघन्यथी पोताना शरीर करतां अधिक अंगुलना असंख्यातमा भागप्रमाण क्षेत्र होय, ज्यारे तेटला मात्र क्षेत्रमां उत्पन्न थाय त्यारे जाणवुं अने उत्कर्षथी असंख्याता योजन प्रमाण समजवुं. ए ज्यारे तेटला क्षेत्रमां उत्पन्न थाय त्यारे अथवा बीजी रीते जाणी लेवुं. ते एक दिशामां होय पण विदिशामां न होय, कारण के स्वभावथी जीव प्रदेशना गमननो दिशामां संभव छे. एटलुं क्षेत्र व्याप्त थाय छे, एटलुं क्षेत्र स्पर्शेलुं होय छे. कारण के जघन्यथी अने उत्कर्षथी आत्मप्रदेशो वडे एटला क्षेत्रनुं व्याप्त थवुं संभवे छे. हवे विग्रहगतिने आश्रयी व्याप्त थवाना अने स्पर्शना काळनुं प्रमाण कहे छे—'से णं भंते'! इत्यादि. हे भगवन्! ते क्षेत्र केटला काळे व्याप्त थाय? इत्यादि. उत्कर्षथी लंबाइमां हमणां जेनुं प्रमाण कह्युं छे एवुं ते क्षेत्र विग्रहगतिने आश्रयी 'केवइकालस्स' अहीं तृतीयाना अर्थमां षष्ठी विभक्ति होवाथी केटला काळे व्याप्त थाय अने केटला काळे स्पर्शेलुं होय? तात्पर्य ए छे के विग्रहगतिने आश्रयी केटला काळे उत्कर्षथी लंबाइमां असंख्याता

योजन प्रमाण क्षेत्र पुद्गलो वडे व्याप्त थाय अने स्पर्शेलु होय ? भगवान् कहे छे—हे गौतम ! एक समय, बे समय, त्रण समय अने चार समयनी विग्रहगतिवडे व्याप्त थाय अने स्पर्शेलुं होय. अहीं पांच समयनी पण विग्रहगति संभवे छे परन्तु ते कदाचितज होय छे माटे तेनी विवक्षा करी नथी. अहीं आ भावार्थ छे-उत्कृष्टपदे लंवाइमां असंख्याता योजनप्रमाण क्षेत्र विग्रहगतिने आश्रयी उत्कृष्ट चार समय वडे व्याप्त थाय अथवा स्पर्शेलुं होय छे. (प्र०)—चार समयनी के पांच समयनी विग्रहगति केम संभवे ? (उ०)—त्रसनाडीथी वहार नीचेना भागथी उपरना भागमां अथवा उपरना भागथी नीचेना भागमां उत्पन्न थतो जीव विदिशाथी दिशामां के दिशाथी विदिशामां उत्पन्न थाय त्यारे एक समये त्रसनाडीमां प्रवेश करे, वीजा समये उपर अथवा नीचे जाय, त्रीजा समये त्रसनाडीथी वहार नीकळे अने चोथा समये दिशामां उत्पत्ति स्थाने प्राप्त थाय. आ चार समयनी विग्रहगति जाणवी. एम पांच समयनी विग्रहगति त्रसनाडीनी वहार विदिशाथी विदिशामां उत्पत्ति होय त्यारे घटे छे. जेमके प्रथम समये त्रसनाडीनी वहार ज विदिशामांथी दिशामां जाय, वीजा समये त्रसनाडीमां प्रवेश करे, त्रीजा समये उपर अथवा नीचे जाय, चोथे समये वहार नीकळे, अने पांचमे समये विदिशामां उत्पत्ति स्थाने आवे. उपसंहार कहे छे—'एवइकालस्स अप्फुण्णे एवइ कालस्स फुडे' एटला काळे ते क्षेत्र व्याप्त थयेलुं होय, एटला काळे ते क्षेत्र स्पर्शेलुं होय. 'सेसं तं चेव जाव पंचकिरिए'—वाकी वधुं तेमज यावत् पांच क्रिया-वाळो होय त्यां सुधी जाणवुं. आ पछी वाकीनुं तेज सूत्र कहेवुं—'हे भगवन् ! ते वहार काढेला पुद्गलो जे त्यां रहेला प्राणो वगेरेनो घात करे-इत्यादि. यावत् पांच क्रियावाळा होय ए पद सुधी जाणवुं. ए प्रमाणे सामान्यपणे जीवपदमां मारणान्तिक समुद्घातनो विचार कर्यो. हवे एनेज चोवीश दंडकना क्रमथी विचार करतां प्रथमथी नैरयिकनुं समानपणुं वतावे छे—'एवं' इत्यादि ए प्रमाणे-एटले सामान्य रीते जीवपदनी पेठे नैरयिकने पण कहेवुं. परन्तु आ विशेष छे—सामान्यतः जीवपदमां क्षेत्र लंवाइमां जघन्यथी अंगुलना असंख्यातमा भागनुं कह्युं छे अने अहीं जघन्यथी कंइक अधिक एक हजार योजन प्रमाण कहेवुं. तेम कहेवानुं शुं कारण छे ? तेनो उत्तर ए छे के अहीं नैरयिको नरकथी नीकळी स्वभावथी ज पंचेन्द्रिय तिर्यंचोमां के मनुष्योमां उत्पन्न थाय छे, पण वीजे उत्पन्न थता नथी. अहीं

सौथी जघन्यनो विचार करवानो छे. तेथी ज्यारे पातालकलशनी पासे रहेनार नैरयिक पातालकलशमां बीजा के त्रीजा त्रिभागमां मत्स्यपणे उत्पन्न थाय त्यारे पातालकलशनी ठीकरी हजार योजन प्रमाण होवाथी जे प्रमाणे जघन्य प्रमाण कह्युं छे ते प्रमाणे घटे छे, तेथी कोइ पण रीते न्यून घटतुं नथी. उत्कर्षथी असंख्याता योजनो छे, अने ते सातमी नरकपृथिवीना नारकोनी अपेक्षाए जाणवुं. अहीं उपसंहार वाक्य कहे छे—'एगदिसिं पवइए' इत्यादि. एक दिशामां जघन्यथी अने उत्कर्षथी एटलुं उपर कहेला प्रमाणवाळुं क्षेत्र व्याप्त थयेलुं होय छे, एटलुं क्षेत्र स्पर्शेलुं होय छे. विग्रहगतिने आश्रयी विशेष कहे छे—'विग्गहेणं' इत्यादि. एक समय, बे समय अने त्रण समयनी विग्रहगति वडे व्याप्त थयेलुं अने स्पर्शेलुं कहेवुं. परन्तु ए प्रमाणे सामान्यतः जीवपदमां पण कह्युं छे तो अहीं शो विशेष छे? ते माटे कहे छे—'नवरं चउसमइएणं वा न भन्नइ' परन्तु अहीं सामान्य जीवपदनी जेम चार समयनी विग्रहगति वडे न कहेवुं. कारण के नैरयिकोने उत्कर्षथी पण त्रण समयनी विग्रहगति होय छे. ते त्रण समय आ प्रमाणे थाय छे–अहीं कोइ नैरयिक वायव्य दिशामां रहेतो अने भरतक्षेत्रमां पूर्व दिशाए तिर्यंच पंचेन्द्रियपणे के मनुष्यपणे उत्पन्न थवानो होय, ते प्रथम उपर आवे छे, बीजा समये वायव्य दिशाथी पश्चिम दिशामां आवे छे, अने त्रीजा समये त्यांथी पूर्व दिशामां आवे छे. ए प्रमाणे असुरकुमारादिमां पण यथासंभव त्रण समयना विग्रहनी भावना करवी. 'सेसं तं चेव जाव पंचकिरियावि' बाकी बधुं तेमज यावत् पांच क्रियावाळा पण होय त्यां सुधी जाणवुं. बाकीनुं वेदनासमुद्घात संबन्धी सूत्र कहेवुं. हे भगवन्! ते पुद्गलो केटला काळे बहार काढे? हे गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्तमां अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्तमां'–इत्यादि 'यावत् छेल्लुं पद पांच क्रियावाळा पण होय–त्यां सुधी कहेवुं. असुरकुमार विशे अतिदेश–समानपणुं कहे छे—'असुरकुमारस्स जहा जीवपदे' इति. असुरकुमारने जेम जीवपदमां कह्युं तेम कहेवुं. एटले जेम सामान्यपणे जीवपदमां कह्युं छे तेम असुरकुमारने पण कहेवुं. एटला वडे शुं कह्युं? जेम जीवपदने विशे क्षेत्र लंबाइमां जघन्यथी अंगुलनो असंख्यातमो भाग अने उत्कर्षथी असंख्याता योजन प्रमाण कह्युं छे तेम अहीं पण कहेवुं. (प्र०)—जघन्यथी अंगुलना असंख्यातमा भागप्रमाण क्षेत्र शी रीते होय? (उ०)—अहीं असुरकुमारथी मांडी ईशान सुधीना देवो पृथिवी, पाणी अने वनस्पतिमां

१९. जीवे णं भंते ! वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहते, समोहणित्ता जे पुग्गले निच्छुभति तेहि णं भंते ! पोग्गलेहिं केवतिते खेत्ते अफुण्णे, केवतिए खित्ते फुडे ? गोयमा ! सरीरप्पमाणमेत्ते विक्खंभबाहल्लेणं, आयामेणं जहन्नेणं अंगुलस्स संखेज्जतिभागं उक्कोसेणं संखिज्जातिं जोअणातिं एगदिसिं विदिसिं वा एवइए खित्ते अफु-

१९. हे भगवन् ! वैक्रिय समुद्घात वडे समुद्घातवाळो जीव वैक्रिय समुद्घात करीने जे पुद्गलो बहार काढे, ते पुद्गलो वडे हे भगवन् ! केटलुं क्षेत्र व्याप्त होय ? केटलुं क्षेत्र स्पर्शेलुं होय ? हे गौतम ! विस्तार अने जाडाइमां शरीर प्रमाण अने लंबाइमां जघन्यथी अंगुलनो असंख्यातमो भाग अने उत्कर्षथी संख्याता योजन प्रमाण एक दिशामां के विदिशामां एटलुं क्षेत्र व्याप्त होय. अथवा

पण उत्पन्न थाय छे. तेथी ज्यारे कोइ पण असुरकुमार संक्लिष्ट परिणामवाळो पोताना कुंडलादि आभरणना एक भागमां पृथिवीकायिकपणे उत्पन्न थवानो होय अने मरणसमुद्घात करे त्यारे जघन्यथी लंबाइमां अंगुलना असंख्यातमा भागप्रमाण क्षेत्र प्राप्त थाय छे, माटे 'जेम जीवपदमां कह्युं छे तेम जाणवुं'-एम कह्युं छे, तेथी अहीं पण विग्रहगति चार समयनी प्राप्त थाय छे, तेथी कहे छे—'नवरं विग्रहस्त्रिसामयिको यथा नैरयिकस्य' परन्तु विग्रहगति त्रण समयनी नैरयिकनी पेठे कहेवी. बाकीनुं सूत्र जे सामान्यपणे जीवपदमां कह्युं छे तेज कहेवुं. नागकुमारादिने विशे अतिदेश-समानपणुं बतावे छे—'जहा असुरकुमारे' इत्यादि. जेम असुरकुमारने विशे कह्युं छे तेम नागकुमारादिने विशे यावत् वैमानिक विशे सूत्र छे त्यां सुधी कहेवुं. परन्तु पृथिव्यादिरूप एकेन्द्रियने विशे जेम सामान्यपणे जीवपदमां कह्युं छे तेम बधुं कहेवुं. तात्पर्य ए छे के जेम जीवपदने विशे चार समयनी पण विग्रहगति कही छे तेम पृथिव्यादि पांचे स्थानोमां कहेवी. बाकी बधुं तेमज कहेवुं. ए प्रमाणे मारणान्तिक समुद्घात कह्यो.

१९. हवे वैक्रिय समुद्घात संबंधे कहेवानी इच्छावाळा सूत्रकार कहे छे—'जीवे णं णं भंते ! वेउव्विए' इत्यादि. हे भगवन् !

णणे, एवतिते खेत्ते फुडे। से णं भंते! केवतिकालस्स अफुण्णे, केवतिकालस्स फुडे? गोयमा! एगसमइएण वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा विग्गहेणं एवतिकालस्स अफुण्णे, एवतिकालस्स फुडे, सेसं तं चेव जाव पंचकिरियावि, एवं नेरइएवि, णवरं आयामेणं जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, उक्कोसेणं संखिज्जाइं जोअणाइं एगदिसिं। एवतिते खेत्ते केवतिकालस्स? तं चेव जहा जीवपदे, एवं जहा नेरइयस्स तहा असुरकुमारस्स, नवरं

एटलुं क्षेत्र स्पर्शेलुं होय. हे भगवन्! ते क्षेत्र केटला काळे व्याप्त होय? केटला काळे स्पर्शेलुं होय? हे गौतम! एक समयनी, बे समयनी के त्रण समयनी विग्रह गति वडे, एटला काळे व्याप्त होय, एटला काळे स्पर्शेलुं होय. बाकी बधुं 'यावत् पांच क्रियावाळा पण होय' त्यां सुधी तेमज जाणवुं. ए प्रमाणे नैरयिक संबन्धे कहेवुं. परन्तु लंबाइमां जघन्यथी अंगुलनो असंख्यातमो भाग अने उत्कर्षथी संख्याता योजनो एक दिशामां होय छे, एटलुं क्षेत्र केटला काळे व्याप्त थाय–इत्यादि जेम जीवपदमां कह्युं छे तेमज कहेवुं.

वैक्रियसमुद्घातवडे समुद्घातवाळो जीव समुद्घात करीने जे पुद्गलो बहार काढे छे–इत्यादि पूर्वनी पेठे जाणवुं. परन्तु लंबाइमां उत्कर्षथी संख्याता योजन प्रमाण क्षेत्र होय छे. ए वायुकायिक सिवायना नैरयिकादिनी अपेक्षाए जाणवुं. कारण के तेओ वैक्रियसमुद्घातनो आरंभ करता तेवा प्रकारना प्रयत्न विशेषथी उत्कर्षथी पण संख्याता योजन प्रमाण दंड करे छे, पण असंख्याता योजन प्रमाण करता नथी. वायुकायिको तो जघन्यथी अने उत्कर्षथी अंगुलना असंख्यातमा भागप्रमाण दंड करे छे अने उत्कर्षथी तेटला प्रमाणवाळो दंड करता तेटला प्रदेशमां रहेला तैजसादि शरीरना पुद्गलोने आत्मप्रदेशोथी जुदा करे छे. ते पुद्गलो वडे व्याप्त क्षेत्र लंबाइमां उत्कर्षथी पण संख्याताज योजन होय छे. ए एवा प्रकारनुं क्षेत्रप्रमाण केवळ वैक्रियसमुद्घातथी उत्पन्न थनार प्रयत्नने आश्रयी कह्युं छे. परन्तु ज्यारे कोइपण वैक्रियसमुद्घातने प्राप्त थयेलो मरण समुद्घातने प्राप्त थाय अने कोइपण रीते उत्कृष्ट त्रण

एगदिसिं विदिसिं वा, एवं जाव थणियकुमारस्स । वाउकाइयस्स जहा जीवपदे, णवरं एगदिसिं । पंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स निरवसेसं जहा नेरइयस्स । मणूसवाणमंतरजोइसियवेमाणियस्स निरवसेसं जहा असुरकुमारस्स ।

ए प्रमाणे जेम नैरयिकने कह्युं तेम असुरकुमारने कहेवुं. परन्तु एक दिशामां के विदिशामां जाणवुं. ए रीते यावत् स्तनितकुमारने कहेवुं. वायुकायिकने जेम जीवपदमां कह्युं छे तेम कहेवुं. परन्तु क्षेत्र एक दिशामां कहेवुं. पंचेन्द्रिय तिर्यंचने नैरयिकनी जेम बधुं कहेवुं. मनुष्य, व्यन्तर, ज्योतिष्क अने वैमानिकने बधुं असुरकुमारनी पेठे जाणवुं.

समयनी विग्रहगति वडे उत्पत्ति स्थाने आवे छे त्यारे असंख्याता योजनप्रमाण आयामक्षेत्र-लंबाइनुं क्षेत्र जाणवुं. तेटला प्रमाणवाळुं क्षेत्र व्याप्त करवुं मरणसमुद्घातना प्रयत्नजन्य छे माटे होवा छतां पण तेनी विवक्षा करी नथी. 'एगदिसिं विदिसिं वा' इति ते जघन्यथी के उत्कर्षथी उपर बतावेला प्रमाणवाळुं आयामक्षेत्र एक दिशामां के विदिशामां जाणवुं. तेमां नैरयिको, पंचेन्द्रिय तिर्यञ्चो, अने वायुकायिकोने अवश्य एक दिशामां होय छे. कारण के नैरयिको परवश अने अल्प ऋद्धिवाळा छे, तिर्यञ्च पंचेन्द्रियो अल्प ऋद्धिवाळा ज होय छे अने वायुकायिको विशिष्ट चेतना रहित होय छे, तेथी वैक्रियसमुद्घातनो आरंभ करता तेओने जो के तथा स्वभावथीज आत्मप्रदेशोना दंडनुं नीकळवुं थाय छे अने ते आत्मप्रदेशोथी जुदा थइने पुद्गलोनुं श्रेणिने अनुसारे गमन थाय छे पण विश्रेणिमां थतुं नथी. तेथी दिशामांज नैरयिको तिर्यञ्च पंचेन्द्रियो अने वायुकायिकोनुं लंबाइमां क्षेत्र समजवुं, पण विदिशामां न जाणवुं. जे भवनपति, व्यन्तर, ज्योतिष्क अने वैमानिक तथा मनुष्यो छे ते स्वेच्छाचारी अने विशिष्ट लब्धिसहित होय छे, तेथी तेओ कदाचित् प्रयत्नविशेषथी विदिशामां पण आत्मप्रदेशोनो दंड करतां त्यां ते आत्मप्रदेशोथी पुद्गलो बहार विस्तारे छे, माटे तेओनुं

२०. जीवे णं भंते ! तेयगसमुग्घाएणं समोहते, समोहणित्ता जे पोग्गले निच्छुब्भति तेहि णं भंते ! पोग्गलेहिं केवतिते खेत्ते अफुण्णे, केवइए खित्ते फुडे ? एवं जहेव वेउव्वितते समुग्घाते तहेव, नवरं आयामेणं जहन्ने-;

२०. हे भगवन् ! तैजस समुद्घात वडे समुद्घात वाळो जीव अने तैजस समुद्घात करीने जे पुद्गलोने वहार काढे, ते पुद्गलो वडे हे भगवन् ! केटलुं क्षेत्र व्याप्त होय, केटलुं क्षेत्र स्पर्शेलुं होय ? इत्यादि जेम वैक्रिय समुद्घात कह्यो तेमज कहेवो. परंतु क्षेत्र एक दिशामां के विदिशामां जाणवुं.

वैक्रियसमुद्घातने प्राप्त थयेलो कोइ काळ पण करे अने विग्रहगतिवडे उत्पत्ति स्थाने पण जाय, तेथी विग्रहगतिने आश्रयी काळनुं निरूपण करवा माटे कहे छे-'से णं भंते' ! इत्यादि. हे भगवन् ! ते क्षेत्र विग्रहगतिने आश्रयी उत्पत्ति स्थान सुधी 'केवइ कालस्स' केटला काळे (अहीं तृतीयाना अर्थमां षष्ठी विभक्ति थयेली छे) व्याप्त होय ? केटला काळे स्पर्शेलुं होय ? भगवान् कहे छे—'हे गौतम ! एक समय, बे समय अने त्रण समयनी विग्रहगति वडे 'क्षेत्र व्याप्त थाय अने स्पर्शेलुं होय' ए पदनो अध्याहार समजवो. तात्पर्य ए छे के विग्रहगतिने आश्रयी मरण देशथी आरंभी उत्पत्ति स्थान सुधीनुं क्षेत्र व्याप्त थवुं उत्कर्षथी त्रण समयमां थाय छे पण चोथे समये थतुं नथी. कारण के वैक्रियसमुद्घातने प्राप्त थयेलो वायुकायिक पण प्रायः त्रसनाडीमांज उत्पन्न थाय छे अने त्रसनाडीमां विग्रहगति उत्कर्षथी पण त्रण समयनी ज होय छे. उपसंहार वाक्य कहे छे—'एवइकालस्स' एटला काळे इत्यादि सुगम छे. 'सेसं तं चेव' ए पछीनुं वाकीनुं सूत्र जे पूर्वे वेदनासमुद्घात संबंधे कह्युं छे, यावत् 'पांच क्रियावाळा पण होय' ए छेल्ला पद सुधी जाणवुं. 'एवं नेरइए वि' 'एम नैरयिक पण जाणवो' इत्यादि सूत्र स्वयं विचारवुं. परन्तु दिशा अने विदिशानी अपेक्षाए विशेष छे ते पूर्वेज बतावेल छे.

२०. हवे तैजस समुद्घात संबंधे कहेवानी इच्छावाळा सूत्रकार कहे छे—'जीवे णं भंते तेयगसमुग्घाएणं' इत्यादि. हे भगवन् !

णं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, सेसं तं चेव एवं जाव वेमाणियस्स, णवरं पंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स एगदिसिं एवतिते खेत्ते अफुण्णे, एवइखित्तस्स फुडे ।

२१. जीवे णं भंते ! आहारगसमुग्घातेणं समोहते, समोहणित्ता जे पोग्गले निच्छुभति तेहि णं भंते! पो-

लंबाइमां जघन्यथी अंगुलना असंख्यातमा भाग प्रमाण जाणवुं. बाकीनुं बधुं तेमज कहेवुं. ए प्रमाणे यावत् वैमानिकने कहेवुं. परंतु पंचेन्द्रिय तिर्यंचने एक दिशामां एटलुं क्षेत्र व्याप्त होय अने एटलुं क्षेत्र स्पर्शेलुं होय.

२१. हे भगवन्! आहारक समुद्घात वाळो जीव समुद्घात करीने जे पुद्गलोने बहार काढे, हे भगवन्! ते पुद्गलो वडे केटलुं क्षेत्र

तैजस समुद्घात वडे समुद्घातवाळो जीव समुद्घात करी जे पुद्गलोने बहार काढे छे, इत्यादि सुगम छे. परन्तु आ तैजससमुद्घात चार देवनिकाय, तिर्यंच पंचेन्द्रिय अने मनुष्योने संभवे छे, बाकीनाने संभवतो नथी. कारण के तेओ महाप्रयत्नवाळा होय छे माटे तैजससमुद्घातनो आरंभ करनारने जघन्यथी पण लंबाइमां अंगुलना असंख्यातमा भाग प्रमाण होय छे, परन्तु संख्यातमा भागप्रमाण होतुं नथी. उत्कर्षथी संख्याता योजन प्रमाण होय छे. ते जघन्यथी अने उत्कर्षथी उपर कहेला प्रमाणवाळुं क्षेत्र तिर्यंच पंचेन्द्रिय सिवायना जीवोने एक दिशामां के एक विदिशामां कहेवुं. अने तिर्यंच पंचेन्द्रियोने तो दिशामांज कहेवुं. अहीं पूर्वे कहेलीज युक्ति अनुसरवी. ते प्रमाणे सूत्रकार कहे छे-'एवं वेउव्वियसमुग्घाए तहेव' जेम वैक्रिय समुद्घात कह्यो, तेम तैजससमुद्घात कहेवो-इत्यादि. ए प्रमाणे तैजससमुद्घात कह्यो.

२१-२२. हवे आहारकसमुद्घातनुं प्रतिपादन करवानी इच्छावाळा सूत्रकार कहे छे-'जीवे णं भंते' इत्यादि. हे भगवन् ! आहारक समुद्घातवडे समुद्घातवाळो जीव समुद्घात करीने जे पुद्गलो बहार काढे छे-इत्यादि. ए सूत्र तैजससमुद्घातनी पेठे विचारवुं.

ग्गलेहिं केवइए खित्ते अफुण्णे, केवइए खेत्ते फुडे? गोयमा! सरीरप्पमाणमेत्ते विक्खंभबाहल्लेणं, आयामेणं जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं,उक्कोसेणं संखेज्जाइं जोयणाइं एगदिसिं, एवतिते खेत्ते एगसमतिएण वा दुसमतिएण वा तिसमतिएण वा विग्गहेणं एवतिकालस्स अफुण्णे, एवतिकालस्स फुडे। ते णं भंते! पोग्गला केवतिकालस्स निच्छुब्भंति? गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तस्स, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तस्स।

व्याप्त होय? केटलुं क्षेत्र स्पर्शेलुं होय? हे गौतम! विस्तार अने जाडाइमां शरीर प्रमाण मात्र अने लंबाइमां जघन्यथी अंगुलना असंख्यातमा भाग जेटलुं अने उत्कर्षथी संख्याता योजन एक दिशामां, एटलुं क्षेत्र एक समय, बे समय के त्रण समयनी विग्रह गति वडे एटला काळे व्याप्त होय, एटला काळे स्पर्शेलुं होय. हे भगवन्! ते पुद्गलो केटला काळे बहार काढे? हे गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्तमां अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्तमां काढे.

परन्तु आहारक समुद्घात मनुष्योने होय छे. तेमां पण चौद पूर्वेनुं अध्ययन करनारने, तेमां पण केटलाएक आहारकलब्धिवाळाने होय छे पण बाकीनाने होतो नथी, अने ते आहारकसमुद्घातनो आरंभ करता जघन्यथी अने उत्कर्षथी लंबाइमां उपर कहेला प्रमाणवाळुं क्षेत्र आत्मप्रदेशोथी जुदा थयेला पुद्गलो वडे एक दिशामां व्याप्त करे छे, पण विदिशामां व्याप्त करतो नथी. विदिशामां तो अन्य प्रयत्न विशेषथी आत्मप्रदेशना दंडनो विस्तार अने पुद्गलो वडे व्याप्त करवुं थाय छे, परन्तु तेओ प्रयोजन नहि होवाथी अने गंभीरपणाथी अन्य प्रयत्ननो आरंभ करता नथी. आहारक समुद्घातने प्राप्त थयेलो पण कोइ काळ करे छे अने विग्रहगति वडे उत्पन्न थाय छे. विग्रहगति उत्कृष्ट त्रण समयनी होय छे. माटे 'एगदिसिं एवइए खेत्ते फुडे' तथा एगसमइएण वा दुसमइएण वा' एक दिशामां एटलुं क्षेत्र स्पर्शेलुं छे' तथा एक समय, अने बे समयवडे' इत्यादि कह्युं छे. तथा मनुष्योनेज आ आहारक समुद्घात होय छे, माटे

२२. ते णं भंते ! पोग्गला निच्छूढा समाणा जातिं तत्थ पाणातिं भूयातिं जीवातिं सत्तातिं अभिहणंति जाव उद्दवेंति, ते(हि) णं भंते ! जीवे कतिकिरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए। ते णं भंते ! जीवाओ कतिकिरिया ? गोयमा ! एवं चेव। से णं भंते ! जीवे ते य जीवा अण्णेसिं जीवाणं परंपराघातेणं कतिकिरिया ? गोयमा ! तिकिरियावि चउकिरियावि पंचकिरियावि, एवं मणूसेवि ।

२२. हे भगवन् ! बहार काढेला ते पुद्गलो त्यां रहेला जे प्राणो, भूतो, जीवो अने सत्त्वोने हणे छे यावत् तेना जीवितनो नाश करे छे तेने आश्रयी जीव केटली क्रियावाळो होय? हे गौतम! कदाच त्रण क्रियावाळो होय, कदाच चार क्रियावाळो होय अने कदाच पांच क्रियावाळो होय. हे भगवन् ! ते जीवो ते समुद्घातवाळा जीवने आश्रयी केटली क्रियावाळा होय ? हे गौतम ! एमज जाणवुं. हे भगवन्! ते जीव अने ते जीवो अन्य जीवोना परंपराए आघात वडे केटली क्रियावाळा होय? हे गौतम! त्रण क्रियावाळा पण होय, चार क्रियावाळा पण होय अने पांच क्रियावाळा पण होय. ए प्रमाणे मनुष्य संबन्धे पण जाणवुं.

चोवीश दंडकना विचारमां प्रारंभमां 'एवं मणूसे वि' ए प्रमाणे मनुष्य संबंधे पण जाणवुं एम कह्युं छे. आ सूत्रनो आ अर्थ छे—ए प्रमाणे सामान्यपणे जीवपदनी जेम मनुष्यने पण एटले मनुष्यना विचारमां सूत्र कहेवुं. जीवपदमां मनुष्योनेज आश्रयी सूत्र प्रवृत्त थयुं छे. कारण के ते सिवाय बीजाने आहारक समुद्घातनो असंभव छे. ए प्रमाणे छ ए छाद्मस्थिक समुद्घातना प्रारंभमां जघन्यथी अने उत्कर्षथी जेटलुं क्षेत्र आत्माथी जुदा थयेला यथा योग्य औदारिकादि शरीरादिना अन्तर्गत पुद्गलो वडे व्याप्त होय छे तेटलुं जणाव्युं.

२३. अणगारस्स णं भंते ! भावियप्पणो केवलिसमुग्घातेणं समोहयस्स जे चरमा निज्जरापोग्गला सुहुमा
णं ते पोग्गला पन्नत्ता ? समणाउसो ! सव्वलोगंपि य णं ते फुसित्ता णं चिट्ठंति ? हंता ! गोयमा ! अणगारस्स
भावियप्पणो केवलिसमुग्घाएणं समोहयस्स जे चरमा निज्जरापोग्गला सुहुमा णं ते पोग्गला पन्नत्ता, समणा-
उसो ! सव्वलोगंपि य णं फुसित्ताणं चिट्ठंति ।

२३. हे भगवन् ! भावित आत्मावाळा अने केवलिसमुद्घातयुक्त अनगारने जे छेल्ला समयना निर्जरा पुद्‌गलो छे ते सूक्ष्म
पुद्‌गलो कह्या छे ? हे आयुष्मान् श्रमण ! ते पुद्‌गलो सर्व लोकने पण स्पर्शीने रहे छे ? हा गौतम ! भावितात्मा अने केवलि समु-
द्घात वडे समुद्घातवाळा अनगारना जे छेल्ला समयना निर्जरापुद्‌गलो छे ते हे आयुष्मान् श्रमण ! सूक्ष्म पुद्‌गलो कह्या छे अने
ते सर्व लोकने पण स्पर्शीने रहे छे.

२३. हवे केवलिसमुद्‌घात करवामां जेवा स्वरूपवाळा पुद्गलो वडे जेटला प्रमाणवाळुं क्षेत्र व्याप्त थाय, तेवा स्वरूपवाळा पुद्गलो वडे
तेटला प्रमाणवाळा क्षेत्रनुं व्याप्तपणुं प्रतिपादन करवानी इच्छावाळा सूत्रकार कहे छे—'अणगारस्स णं भंते !' इत्यादि. हे भगवन् !
भावितात्मा अने केवलिसमुद्घातवाळा अनगारना जे चरम निर्जरा पुद्गलो छे ते सूक्ष्म छे ? इत्यादि. अहीं केवलिसमुद्घात केवलज्ञानीने
होय छे, छद्मस्थोने होतो नथी. केवली निश्चयनयना मतथी अनगार छे, गृहस्थ नथी, तेम पाखंडी नथी, ते 'भावितात्मा'-भावित-
समभाव वडे वासित आत्मा जेनो छे एवा, कारण के ते विशिष्ट शुभ अध्यवसाययुक्त छे. जो एम न होय तो केवलीपणुं घटे
नहि. माटे 'भावितात्मा अनगारने' एम कह्युं छे. जेनुं स्वरूप कह्युं छे एवा केवलिसमुद्घात वडे समवहत-समुद्घातवाळा अनगारना
जे चरम छेल्ला समये वर्तता-केवलिसमुद्घातना चोथा समये रहेला, कारण के ते पुद्गलो वडे ज संपूर्ण लोकने व्याप्त करे छे. 'नि-

२४. छउमत्थे णं भंते ! मणूसे तेसिं णिज्जरापोग्गलाणं किंचि वण्णेणं वण्णं गंधेणं गंधं रसेण रसं फासेणं वा फासं जाणति पासति ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति-'छउमत्थे णं मणूसे

२४. हे भगवन् ! छद्मस्थ मनुष्य ते निर्जरा पुद्गलोने किंचित् वर्ण वडे-वर्णने ग्रहण करनार इन्द्रिय वडे वर्ण रूपे, गन्ध-नासिका वडे गंध रूपे, रस-रसनेन्द्रिय वडे रस रूपे अने स्पर्श-स्पर्शेन्द्रिय वडे स्पर्श रूपे जाणे छे अने देखे छे? हे गौतम ! ए

र्जरापुद्गलो' निर्जरा गुणना योगथी निर्जरा-निर्जराने प्राप्त थयेला पुद्गलो छे, अहीं विशेषण समास करवो. तात्पर्य ए छे के लोकव्यापी थवाना समये आत्मप्रदेशोथी जुदा पडेला अने जेओए कर्मपणाना परिणामनो त्याग करेलो छे एवा 'सुहुमा णं ते पुग्गला' णं निश्चय अर्थमां छे. निश्चित-अवश्य, सूक्ष्मा-चक्षुआदि इन्द्रियोने अगोचर ते पुद्गलो हे आयुष्मान् श्रमण ! आपे कहेला छे ? 'आयुष्मान् श्रमण' ए भगवंतने गौतमे करेलुं संबोधन छे. तथा णं-ए निश्चित छे के सर्व लोकने पण स्पर्शीने ते पुद्गलो रहे छे ? ए प्रमाणे गौतमे प्रश्न कर्यो एटले भगवान् कहे छे-'हन्ता गोयमा' इत्यादि. हन्त ए अव्यय प्रीतिना अर्थमां छे. ए संबन्धे शाकटायन कहे छे-'हन्तेति संप्रदानप्रीतिविषादादिषु' इति. हन्त ए संप्रदान, प्रीति अने विषादादि अर्थमां छे. अहीं यथावस्थित स्वरूपना प्रतिपादकपणाथी प्रश्नसूत्रनी संमतिरूप प्रीति जाणवी, पण हर्षरूप न जाणवी. कारण के मोह क्षीण थयेलो होवाने लीधे भगवंत हर्ष अने विषादादि रहित होवाथी भगवंतनी संमति ज जणावे छे. जे गौतमे कह्युं तेनो अनुवाद करे छे-'अणगारस्स' इत्यादिना अर्थनो विचार कर्यो.

२४. 'सूक्ष्म पुद्गलो छे' एम कह्युं, ते सूक्ष्मपणुं अपेक्षाए पण होय, जेम के आमळा वगेरेनी अपेक्षाए बोर वगेरेनुं सूक्ष्मपणुं छे. तेथी चक्षु आदि इन्द्रियोने अगोचर रूप सूक्ष्मपणुं प्रतिपादन करवानी इच्छावाळा सूत्रकार कहे छे-'छउमत्थेणं भंते' ! इत्यादि. हे भगवन् ! छद्मस्थ मनुष्य हमणां कहेला ते निर्जरापुद्गलोने किंचित्-प्रथम सामान्यपणे जाणे छे अने देखे छे-ए पदनो संबन्ध करवो,

तेसिं णिज्जरापोग्गलाणं णो किंचि वण्णेणं वण्णं गंधेणं गंधं रसेणं रसं फासेणं फासं णो जाणति पासति' ? गोयमा ! अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं सव्वब्भंतराए सव्वखुड्डाए वट्टे तेल्लापूयसंठाणसंठिते वट्टे रहचक्कवालसंठाणसंठिए वट्टे पुक्खरकण्णियासंठाणसंठिए वट्टे पडिपुण्णचंदसंठाणसंठिए एगं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं तिण्णि जोयणसयसहस्साइं सोलस सहस्साइं दोण्णि सत्तावीसे जोयणसते तिण्णि य कोसे

अर्थ समर्थ नथी. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के 'छद्मस्थ मनुष्य ते निर्जरा पुद्गलोने किंचित् वर्ण वडे वर्ण रूपे, गन्ध वडे गन्ध रूपे, रस वडे रस रूपे अने स्पर्श वडे स्पर्श रूपे जाणतो देखतो नथी' ? हे गौतम ! आ जंबूद्वीप नामे द्वीप सर्व द्वीप अने समुद्रमां सौनी अंदर छे. ते सौ करतां नानो, वृत्त–गोळाकृतिवाळो,तेलमां तळेला पुड्लाना आकार जेवो गोळ, रथना पैडाना संस्थान जेवो वर्तुलाकार, कमळनी कर्णिकानी आकृति जेवो गोळाकार अने परिपूर्ण चंद्रनी आकृतिना समान छे. ते एक हजार योजन लांबो अने पहोळो छे तथा तेनी परिधि त्रण लाख, सोळ हजार, बसो सत्यावीश योजन, त्रण कोश, एकसो अठ्यावीश धनुप अने कंइक

पनीज विशेषरूपे व्याख्या करे छे—'वर्णेन' वर्ण्यतेऽनेन–जे वडे यथावस्थित स्वरूपनो निर्णय थाय ते वर्ण एवी व्युत्पत्ति थवाथी वर्ण–वर्णने ग्रहण करनार चक्षुइन्द्रिय वडे कृष्णादि स्वरूपवाळा वर्णने, 'गन्धेन' गन्ध वडे–गन्धग्राहक घ्राणेन्द्रिय वडे गन्धधातु सुंघवाना अर्थमां छे, कारण के गन्ध्यते अनेन–जे वडे शुभ या अशुभ गन्ध सुंघाय ते गन्ध एवी व्युत्पत्ति थाय छे. ते वडे शुभ या अशुभ गंधने, 'रसेन' रसवडे–रस्यते–आस्वाद्यते अनेनेति रसः–जे वडे आस्वाद कराय ते रस–एवी व्युत्पत्ति थवाथी रसने ग्रहण करनार रसनेन्द्रिय वडे तिक्तादिरूप रसने, 'स्पर्शेन' स्पृश्यते अनेन–जे वडे जाणवा योग्य वस्तुनो कर्कशादि रूप स्पर्श जणाय एवो शब्दार्थ होवाथी स्पर्श–स्पर्श ग्रहण करनार स्पर्शनेन्द्रिय वडे कर्कशादि रूप स्पर्शने जाणे छे अने देखे छे ? भगवान् कहे छे–ए अर्थ समर्थ–युक्तियुक्त नथी.

अट्ठावीसं च धणुसतं तेरस य अंगुलाइं अद्धंगुलं च किंचिविसेसाहिते परिक्खेवेणं पन्नत्ते । देवे णं महिड्ढीते जाव महासोक्खे एगं महं सविलेवणं गंधसमुग्गतं गहाय तं अवदालेति, तं महं एगं सविलेवणं गंधसमुग्गतं अवदालइत्ता इणामेव कट्टु केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं तिहिं अच्छराणिवातेहिं तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टित्ताणं हव्वमागच्छेज्जा, से नूणं गोयमा ! से केवलकप्पे जंबुद्दीवे दीवे तेहिं घाणपोग्गलेहिं फुडे ? हंता ! फुडे, छउ-

विशेषाधिक साडा तेर अंगुल कहेली छे. कोइ एक महाऋद्धिवाळो अने महासुखवाळो देव एक मोटा विलेपन–ढांकणा सहित सुगन्धी द्रव्यना डाबडाने ग्रहण करी उपाडे अने ते एक मोटा विलेपन–ढांकणा सहित सुगन्धी द्रव्यना डाबडाने उपाडी ए प्रमाणे करी संपूर्ण जंबूद्वीपने त्रण चपटी वगाडे तेटला समयमां एकवीश वार फरी शीघ्र आवे. हे गौतम ! खरेखर ते संपूर्ण जंबूद्वीप ते गन्धना पुद्गलो वडे व्याप्त थाय ? हा व्याप्त थाय. हे गौतम ! छद्मस्थ मनुष्य ते गन्धना पुद्गलोने किंचित् वर्ण वडे वर्ण रूपे गंध वडे गंध रूपे

पुनः गौतम प्रश्न करे छे—'से केणट्ठेणं भंते !' इत्यादि. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो–इत्यादिनो अर्थ स्पष्ट छे. भगवान् कहे छे—'गोयमा ! अयं णं' इत्यादि. हे गौतम ! 'अयं' प्रत्यक्ष जणातो, 'णं' वाक्यालंकारमां छे, आठ योजन उंचा रत्नमय जंबूवृक्ष वडे सहित द्वीप ते जंबूद्वीप, सर्वाभ्यन्तर–बधामां मध्यवर्ती, कया बधामां मध्यवर्ती छे ? 'सर्वद्वीपसमुद्राणां' सर्व द्वीप अने समुद्रोना मध्यवर्ती छे. ते आ प्रमाणे–ते द्वीपसमुद्रो जंबूद्वीपथी आरंभी आगममां कहेल क्रमवडे बमणा बमणा विस्तारवाळा रहेला छे, तेथी द्वीपसमुद्रोमां जंबूद्वीप अभ्यन्तर–मध्यवर्ती छे. तथा 'सव्वखुड्डागे' सर्वक्षुद्रकः–सर्व द्वीप अने समुद्रोथी क्षुद्रक–नानो छे. ते आ प्रमाणे–बधा लवणादि समुद्रो अने सर्व धातकीखंडादि द्वीपो आ जंबूद्वीपथी आरंभी आगममां कहेला क्रम वडे बमणा बमणा मंडलाकार विस्तारवाळा छे. माटे बाकीना द्वीप समुद्रनी अपेक्षाए सौथी नानो छे. तथा वृत्त–वर्तुल गोळाकार छे, जेथी 'तैलापूपसंस्थानसंस्थितः' छे–तेल वडे

मत्थे णं गोतमा ! मणूसे तेसिं घाणपुग्गलाणं किंचि वण्णेणं वण्णं गंधेणं गंधं रसेणं रसं फासेणं फासं जाणति पासति ? भगवं ! नो इणट्ठे समट्ठे, से एएणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ–'छउमत्थे णं मणूसे तेसिं निज्जरापोग्गलाणं नो किंचि वण्णेणं वण्णं गंधेणं गंधं रसेणं रसं फासेणं फासं जाणति पासति, ए सुहुमा णं ते पोग्गला पन्नत्ता, समणाउसो ! सव्वलोगंपि य णं फुसित्ता णं चिट्ठंति ।

रस वडे रसरूपे अने स्पर्श वडे स्पर्श रूपे जाणे देखे ? हे भगवन् ! ए वात युक्तियुक्त नथी. हे गौतम ! ए कारणथी एम कहुं छुं के 'छद्मस्थ मनुष्य ते निर्जरा पुद्‌गलोने किंचित् वर्ण वडे वर्ण रूपे गंध वडे गंध रूपे रस वडे रस रूपे अने स्पर्श वडे स्पर्श रूपे जाणतो नथी. हे आयुष्मान् श्रमण ! एटला सूक्ष्म ते पुद्‌गलो कह्या छे अने ते सर्व लोकने पण स्पर्शीने रहे छे.

तळेला अपूप-पुडलाना संस्थानना जेवी आकृतिवाळो छे. तेलमां तळेलो पुडलो घणुं करी परिपूर्ण वर्तुलाकार होय छे, पण घीमां तळेलो तेवो होतो नथी. तेथी 'तेल' ए विशेषण आपवामां आव्युं छे. तथा जंबूद्वीप वृत्त-गोळ छे, तेथी 'रथचक्रचक्रवालसंस्थानसंस्थितः'–रथना अंग भूत चक्र-पैडाना चक्रवाल-मंडलना जेवी आकृतिवाळो छे. ए प्रमाणे सूत्रमां कहेला बीजा ने पदनो पण विचार करवो. 'आयामविक्खंभेणं' आयाम-लंबाइ अने विष्कंभ-विस्तार वडे शतसाहस्र-लाख योजनना परिमाण वाळो छे. परिधिना परिमाण लाववानुं गणित जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति वगेरेमां अनेकवार विचार्युं छे माटे त्यांथी जाणी लेवुं. 'देवे णं' इत्यादि. महा ऋद्धि-विमानपरिवारादि जेने छे ते महर्द्धिक, जाव महासोक्खे' यावत् महासौख्यवाळो, यावत् शब्द करवाथी 'महज्जुइए महावले, महायसे' तेमां महती-मोटी द्युति-शरीर अने आभरणादिनी कान्ति जेने छे ते महाद्युतिवाळो. मोटुं बल शारीरिक शक्ति जेने छे ते महाबलवाळो, मोटो यश-ख्याति जेने छे ते महायशस्वी, तथा घणा सातावेदनीय कर्मनो उदय होवाथी महा-

सोख्य-महासुखवाळो, क्वचित् 'महेसक्खे' एवो पाठ छे. तेमां महान्-मोटा ईश-ईश्वर एवी आख्या-प्रसिद्धि जेनी छे एवो. अथवा 'ईश्' ऐश्वर्यार्थक धातु छे. भावमां घञ् प्रत्यय करवो. ईशं-ऐश्वर्यमात्मनः ख्याति-अन्तर्भूत प्रेरणार्थक होवाथी ख्यापयति-प्रकाशयति-पोताना ऐश्वर्यने जणावे, प्रगट करे तथा परिवारादि ऋद्धि वडे वर्ते-ते ईशाख्य, महान् एवो ईशाख्य ते महेशाख्य कहेवाय छे. बीजे स्थळे ' महासक्खे ' एवो पाठ छे. तेमां आवा प्रकारनी वृद्ध आचार्योनी व्याख्या छे—आशु—शीघ्र गमन करे तेथी अश्व-मन, 'अश्नुते'-पोतपोताना विषयने व्याप्त करे छे माटे अक्ष-इन्द्रियो, अक्षशब्द प्रायः अश् धातुथी निष्पन्न कराय छे. महा-स्फूर्ति वाळां अश्व-मन अने अक्ष-इन्द्रियो जेने छे एवो महाश्वाक्ष एटले स्फूर्तिवाळा मन अने चक्षुआदि ईन्द्रियोवाळो-देव एक मोटो-घणो भारे, कारण के जो नानो होय तो तेना गन्धना पुद्गलो वडे संपूर्ण जंबूद्वीपने व्याप्त करवो अशक्य थाय. 'सविलेवणं अति सूक्ष्म छिद्रोने पण ढांकवाथी विशिष्ट लेप-लाख वगेरेना करेला उपरना ढांकणा वडे सहित, विशिष्ट लेप-ढांकणुं दीधा सिवाय सूक्ष्म छिद्रो वडे घणा गन्धपुद्गलो नीकळी जाय अने तेथी उघाडती वेलाए तेओ थोडा रहेवाथी ते वडे संपूर्ण जंबूद्वीपने व्याप्त करवुं घटे नहि, 'गन्धसमुग्गयं' अति उत्तम गन्ध द्रव्योवडे परिपूर्ण भरेलो समुद्गक-डाभडो तेने अवदालयति-उपाडे छे, 'इणामेव' ए प्रमाणेज केवलकप्पं-परिपूर्ण होवाथी केवलज्ञानना समान एटले संपूर्ण जंबूद्वीपने त्रण अप्सरोनिपात-चपटी वडे, चपटी ए कालनुं उपलक्षण-सूचक, छे तेथी आ अर्थ थाय छे-जेटलां काळे त्रण चपटी वगाडाय तेटला काळमां 'त्रिसप्तकृत्वः' एकवीश वार 'अतिपरिवर्त्य' चारे तरफ भमीने 'हव्वं' शीघ्र आवे, ए शब्द मगध देशनी प्रसिद्धि वडे अथशब्दना अर्थमां छे अने अथशब्दनो अर्थ वाक्यनो प्रारंभ वगेरे छे. कह्युं छे के-अथ प्रक्रियाप्रश्नानन्तर्यमङ्गलाधिकारवाक्योपन्यासेषु' अथ शब्द प्रक्रिया, प्रश्न, आनन्तर्य (पछी) मंगल, अधिकार अने वाक्योपन्यास-रूप अर्थमां वपराय छे. तेमां अहीं वाक्यना प्रारंभमां छे. तेनी भावना आ प्रमाणे छे-'एवं' एम प्रथम विवक्षित अर्थना बोधनुं कारण दृष्टांतनो पीठिकाबंध कह्यो, हवे विवक्षित अर्थना बोधनुं कारण दृष्टान्तवाक्य कहेवाय छे. 'नूनं' खरेखर हे गौतम ! ते संपूर्ण जंबूद्वीप ते गन्धना डाभडाथी नीकळेला घणा गन्धना पुद्गलो वडे स्पृष्ट-व्याप्त थाय ? काकु-प्रश्नध्वनि वडे आ सूत्र कहेवाय छे अने

२५. कम्हा णं भंते ! केवली समुग्घायं गच्छति ? गोयमा ! केवलिस्स चत्तारि कम्मंसा अक्खीणा अवेदिया अणिज्जिण्णा भवंति, तंजहा—वेदणिज्जे, आउए, नामे, गोए, सव्वबहुप्पएसे से वेदणिज्जे कम्मे हवति, सव्वत्थोवे आउए कम्मे हवइ, विसमं समं करोति बंधणेहिं ठितीहि य, विसमसमीकरणयाए बंधणेहिं ठितीहि य एवं खलु केवली समोहणाति, एवं खलु समुग्घायं गच्छति। सव्वेवि णं भंते ! केवली समोहणंति, सव्वेवि णं

२५. हे भगवन् ! केवलज्ञानी शा हेतुथी समुद्घातने प्राप्त थाय छे ? हे गौतम ! केवलज्ञानीने चार कर्मना अंशो अक्षीण–नहि क्षय पामेला, नहि वेदेला अने नहि निर्जरेला होय छे. ते आ प्रमाणे–वेदनीय, आयुष, नाम अने गोत्र. तेमां ते केवलीने सौथी बहु प्रदेशवाळुं वेदनीय (अने नाम, गोत्र) कर्म होय छे अने सौथी थोडा प्रदेशवाळुं आयुष कर्म होय छे त्यारे तेने बन्धन–कर्म प्रदेशो वडे अने स्थिति वडे विषम होय तेने समान करे छे. बन्धन–कर्म प्रदेशो अने स्थिति वडे विषमने समान करवा माटे केवली समुद्घात करे

तेथी प्रश्नसूत्र जणाय छे. अथवा 'से' प्रश्नना अर्थमां छे. तेथी शीघ्र प्रश्न करे छे. हवे गौतम कहे छे–हा, स्पृष्ट–व्याप्त थाय, कारण के गन्धपुद्गलो चारे तरफ अति प्रसरवाना स्वभाववाळां होय छे. फरीथी भगवान् प्रश्न करे छे–'छउमत्थे णं' इत्यादि सुगम छे. अहीं आ भावार्थ छे–जेम ते संपूर्ण जंबूद्वीपमां व्याप्त थयेला गन्ध पुद्गलो सूक्ष्म होवाथी छद्मस्थोने चक्षु आदि इन्द्रियगोचर थता नथी तेम सर्वलोकव्यापी निर्जरा पुद्गलो पण इन्द्रियगम्य नथी. उपसंहार कहे छे—'ए सुहुमाणं' इति. एटला सूक्ष्म निर्जरा पुद्गलो कह्यां छे.

२५. हवे जे कारणथी केवलीसमुद्घातनो आरंभ करे छे ते संबन्धे प्रश्न करवानी इच्छावाळा सूत्रकार आ प्रश्नसूत्र कहे छे—'कम्हा णं' इत्यादि. शा कारणथी हे भगवन् ! केवली–केवलज्ञानसहित समुद्घातने प्राप्त थाय छे ? समुद्घातनो आरंभ करे छे ? कारण के ते कृतकृत्य छे. भगवान् उत्तर आपे छे—'गौतम !' इत्यादि. हे गौतम ! केवलीने चार कर्मांशो–कर्मना भेदो 'अक्षीणाः'–क्षय नहि

भंते ! केवली समुग्घातं गच्छंति ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।
"जस्साउएण तुल्लाति, बंधणेहिं ठितीहि य । भवोवग्गहकम्माइं, समुघातं से ण गच्छति ॥ १ ॥
अगंतूणं समुग्घातं, अणंता केवली जिणा । जरमरणविप्पमुक्का, सिद्धिं वरगतिं गता ॥ २ ॥

छे. ए प्रमाणे खरेखर केवली समुद्घातने प्राप्त थाय छे. हे भगवन् ! बधा य केवली समुद्घात करे छे, बधा य केवली समुद्घातने प्राप्त थाय छे ? हे गौतम ! ए अर्थ युक्त नथी. "जेने आयुपना तुल्य बन्धन-प्रदेशो अने स्थिति वडे भवोपग्रह-भवना हेतुभूत कर्म छे ते समुद्घात करतो नथी. समुद्घातने प्राप्त थया सिवाय अनन्ता केवली जिनो जरा अने मरणथी मुक्त थयेला श्रेष्ठ गति रूप सिद्धिने प्राप्त थयेला होय छे."

पामेला, शाथी ? ए कहे छे—'अवेदिताः' नहि वेदेला छे तेथी. अहीं 'निमित्त, कारण अने हेतुमां प्रायः सर्व विभक्तिओ थाय छे' ए व्याकरणना नियमने अनुसरी अहीं हेतुमां प्रथमा विभक्ति थयेली छे. तेथी आ अर्थ थाय छे-जेथी वेदेला नथी तेथी क्षय पामेला नथी. कर्मनो क्षय प्रदेश वडे के विपाक वडे कर्मने वेदवाथी थाय छे—"सव्वं च पपसतया भुज्जइ कम्ममणुभावतो भइयं" सर्व कर्म प्रदेशरूपे भोगवाय छे, पण अनुभावथी भजना-विकल्प समजवो-इत्यादि शास्त्रनुं वचन छे. तेथी ते चारे कर्मो वेद्या नथी माटे क्षय पामेला नथी, एनीज पर्यायथी व्याख्या करे छे—'अनिर्जीर्णाः' आत्मप्रदेशोथी सर्वथा नहि नाश पामेलां एवां रहेलां छे. तेने नामोच्चार पूर्वक जणावे छे—'तं जहा' इत्यादि सुगम छे. तेमां ज्यारे 'से' ते केवलीज्ञानीने सौथी वधारे प्रदेशवाळुं वेदनीय कर्म होय अने उपलक्षणथी नाम अने गोत्रकर्म पण होय छे अने सौथी थोडा प्रदेशवाळुं आयुषकर्म होय छे त्यारे ते 'बंधणेहिं ठिईहिं'ति-बन्धन अने स्थिति वडे, बध्यते येस्ते-भवरूपी कारावासथी नीकळतो प्राणी जे वडे प्रतिबंध पामे ते बन्धनो, अहीं करणमां "अन"प्रत्यय थयो छे. अथवा

'वध्यन्ते' इति योगनिमित्ते आत्मप्रदेशोनी साथे लोलीभाव-तादात्म्य स्वरूपे बंधाय-संश्लेषपने प्राप्त थाय ते बन्धनो, अहीं कर्ममां 'अन' प्रत्यय थयो छे. बन्ने प्रकारनी व्युत्पत्तिमां कर्मपरमाणुओ जाणवा. स्थिति-कर्मना अनुभवनो काळ, ते प्रमाणे भाष्यकारे कह्युं छे के- "विसमं स करेइ समं समोहओ बंधणेहिं ठिईए य । कम्मदव्वाइं बंधणाति कालो ठिई तेसिं ॥" समुद्घातने प्राप्त थयेलो बन्धनो अने स्थिति वडे विषमने समान करे छे. बन्धनो एटले कर्मद्रव्यो अने तेओनो काळ ते स्थिति जाणवी. तेथी ते बन्धनो अने स्थिति वडे विषम एवा वेदनीयादिक कर्मने समुद्घात करवा वडे आयुषना समान करे छे. ए प्रमाणे केवली खरेखर बन्धनो वडे अने स्थिति वडे विषमताने प्राप्त थयेला वेदनीयादिक कर्मने 'समीकरणयाए' समान करवा माटे (अहीं ता प्रत्यय स्वार्थिक छे.) 'समोहन्नइ'-समुद्घात करे छे, समुद्घात करवानो प्रयत्न करे छे. अने ए प्रमाणे ते समुद्घातने प्राप्त थाय छे. कह्युं छे के-"आयुषि समाप्यमाने शेषाणां कर्मणां च यदि समाप्तिः । न स्यात् स्थितिवैषम्यात् गच्छति स ततः समुद्घातम् ॥१॥ स्थित्या बन्धनेन च समीकीयार्थं हि कर्मणां तेषाम् । अन्तमुहूर्तशेषे तदायुषि समुज्जिघांसति सः ॥" आयुष पूरुं थतां बाकीना बीजा कर्मोनी जो समाप्ति न थाय तो ते स्थितिना विषमपणाथी ते समुद्घातने प्राप्त थाय छे. स्थिति अने बन्धन वडे ते कर्मोने समान करवा माटे तेनुं आयुष ज्यारे अन्तमुहूर्त बाकी होय त्यारे ते समुद्घात करवाने इच्छे छे. (प्र०)—'वधारे स्थितिवाळां वेदनीयादि कर्मने आयुषना समान करवा माटे समुद्घात करे छे' एम कहुं ते युक्त नथी, कारण के कृतनाशादि दोषनो प्रसंग प्राप्त थाय छे. ते आ प्रमाणे-लांबा काळ सुधी भोगववा योग्य वेदनीयादि कर्मनो थोडा काळमां नाश थवानो संभव होवाथी कृतनाश दोष प्राप्त थाय छे, अने वेदनीयादि कर्मनी पेठे करेला कर्मक्षयनो पण फरी नाश थवानो संभव होवाथी मोक्षने विषे पण अविश्वास-अश्रद्धानो प्रसंग प्राप्त थशे. (उ०)-ते सत्य नथी, कारण के कृतनाशादि दोषनो प्रसंग नथी. ते आ प्रमाणे-अहीं जेम प्रतिदिवस सेतिका-एक शेर खोराक खावा वडे सो वरस चाले तेटला खोराकने भस्मक व्याधि वडे तेना सामर्थ्यथी थोडा दिवसमां बधो खोराक खाइ जवाथी कृतनाश दोषनी प्राप्ति थती नथी, तेम वेदनीयादि कर्मनो पण तथाविध शुभ अध्यवसायना अनुबंधथी उपक्रम-घात थवा वडे वधानो उपभोग थवाथी कृतनाशरूप

दोषनो प्रसंग नथी. कारण के बे प्रकारे कर्मनो अनुभव थाय छे-विपाकथी अने प्रदेशथी. तेमां प्रदेशथी वधाय कर्म भोगवाय छे. एवुं कोइ कर्म नथी के जे प्रदेशथी अनुभव कर्या सिवाय क्षय पामे. तेथी शी रीते कृतनाश दोषनो प्रसंग प्राप्त थाय? विपाकथी कोइ कर्म भोगवाय छे अने कोइ कर्म भोगवातुं नथी. जो एम न होय तो, एटले वधुं विपाकथी ज भोगवाय तो मोक्षना अभावनो प्रसंग थाय. ते आ प्रमाणे-जो विपाकानुभवथी ज वधुं कर्म क्षय करवुं जोइए एवो नियम होय तो असंख्याता भवोमां तेवा प्रकारना विचित्र अध्यवसाय विशेष वडे जे नरकगत्यादि कर्म बांध्युं होय तेनो एक मनुष्यादि भवमां विपाक वडे अनुभव न थाय. कारण के तेवा प्रकारना विपाकानुभवनुं निमित्त पोतपोतानो भव होय छे. तेथी अनुक्रमे पोतपोताना भवना निमित्त वडे वेदवामां नारकादि भवोमां चारित्रना अभाव वडे घणा कर्मनो उपचय थवाथी अने तेनो पण पोतपोताना भवरूप निमित्त वडे अनुभव करवानो होवाथी क्यांथी मोक्ष थाय? ते माटे सर्व कर्मनो विपाकथी अनुभव भजनाए-विकल्पे जाणवो अने प्रदेशथी अवश्य भोगववुं जोइए एम मानवुं. तेथी कोइ पण दोष नथी. (प्र०)-एम छतां दीर्घ काळ सुधी भोगववा योग्यपणे ते वेदनीयादि कर्म बांधेलुं छे अने उपक्रम वडे तेना परिमाण करतां थोडा काळमां ज तेनो अनुभव प्राप्त थाय छे. तो ए प्रमाणे पण कृतनाश दोषनो प्रसंग केम नथी? (उ०)-ते कथन पण सत्य नथी. कारण के बन्ध समये ज तेवा प्रकारना अध्यवसायथी प्रारंभमां उपक्रमने योग्य ज कर्म तेणे बांधेलुं छे. वळी जिनवचनना प्रामाण्यथी पण वेदनीयादि कर्मनो उपक्रम जाणवो. ए संबन्धे भाष्यकार कहे छे-'उदयक्खयखओवसमा जं च कम्मुणो भणिया। दव्वाइ-पंचगं पइ जुत्तमुवक्कमणमेत्तो वि॥' कर्मना उदय, क्षय, क्षयोपशम अने उपशम कह्या छे ते द्रव्यादि-द्रव्य, क्षेत्र, काळ, भाव अने भव ए पांचेने आश्रयी कह्या छे. माटे एथी पण उपक्रम थवो युक्त छे. ए प्रमाणे मोक्षना उपक्रमनुं कंइ पण कारण नथी, जेथी तेमां अविश्वासनो प्रसंग प्राप्त थाय? जे प्रकारे मोक्षना उपक्रमनो कोइ पण हेतु नथी ते प्रकारे छेल्ला सूत्रमां विचार करशे. तेथी जे कह्युं छे के वेदनीयादिनी पेठे करेला कर्मक्षयनो पण फरी नाश थवानो संभव होवाथी मोक्षने विशे अविश्वास थशे-ए पण युक्तियुक्त नथी.

अहीं अन्य पूर्वपक्षी शंका करे छे-ज्यारे वेदनीयादि कर्म घणुं वधारे होय अने सौथी थोडुं आयुष होय त्यारे अधिक वेदनीयादि

कर्मनो घात करवा माटे भले समुद्घात करे, कारण के वेदनीयादि कर्म सोपक्रम छे, पण ज्यारे आयुष कर्म अधिक होय अने सौथी थोडुं वेदनीयादि कर्म होय त्यारे शुं समजवुं ? खरेखर अधिक आयुषकर्मनो घात करवा माटे समुद्घात करतो नथी, कारण के चरमशरीरवाळानुं आयुष निरूपक्रम होय छे. "चरमशरीरा निरुवक्कमा" चरमशरीरी निरुपक्रम होय छे' एवुं शास्त्रवचन छे. ते अयुक्त छे, कारण के आवा प्रकारनी परिस्थिति कदापि होती नथी. जेम के हमेशां वेदनीयादिक ज आयुष करतां अधिक स्थितिवाळां होय छे. कदि पण वेदनीयादि करतां आयुष अधिक स्थितिवाळुं होतुं नथी. आवो नियम शाथी जाणवो ? तेनो उत्तर ए छे के परिणामना स्वभावथी जाणी शकाय छे. ते आ प्रमाणे 'आवा प्रकारनोज आत्मानो परिणाम छे के जेथी आयुष वेदनीयादिना समान होय के तेथी न्यून होय, कदिपण अधिक न होय. जेम के आयुषनो ज अध्रुवबन्ध थाय छे. ते आ प्रमाणे–आयुष सिवायना सातेय ज्ञानावरणादि कर्मो सर्वदा बंधाय छे अने आयुष तो पोताना भवना त्रीजा भाग वगेरे शेष काळेज बंधाय छे. तेमां एवा प्रकारनी विचित्रताना नियममां स्वभाव सिवाय बीजो कोइ हेतु नथी, ए प्रमाणे अहीं पण स्वभाव विशेष ज नियामक जाणवो. ए संबन्धे भाष्यकार कहे छे–"असमठिईणं नियमो को थेवं आउयं न सेसं ति । परिणामसहावाओ अधुवं बन्धो वि तस्सेव ॥ "विषमस्थितिवाळा कर्ममां शो नियम छे के थोडुं आयुष होय छे पण बाकीना कर्म थोडां होता नथी? परिणामना स्वभावथी छे अने तेथीज आयुषकर्मनो अध्रुवबंध होय छे."

हवे विशेष जाणवा माटे गौतण! भगवंतने पूछे छे–'सव्वे वि णं' इत्यादि. बधाय केवलज्ञानी समवघ्नन्ति–समुद्घातने माटे प्रयत्न करे छे अने प्रयत्न कर्या पछी बधाय केवलो समुद्घातने प्राप्त थाय छे? ए प्रमाणे गौतमे प्रश्न कर्यो एटले भगवान् उत्तर कहे छे– हे गौतम ! ए अर्थ युक्त नथी. तात्पर्य ए छे के बधाय केवली समुद्घातने माटे प्रयत्न करता नथी अने समुद्घातने पण प्राप्त थता नथी. परन्तु जेओना वेदनीयादि कर्म आयुषथी अधिक होय छे ते समुद्घात करे छे. जेना वेदनीयादि कर्मो स्वभावथीज आयुना समानस्थितिवाळां होय ते समुद्घात कर्या सिवाय ज तेनो क्षय करीने सिद्ध थाय छे. ते प्रमाणे सूत्रकार कहे छे–'जस्स' इत्यादि.

जे केवलीना आयुपना तुल्य भवोपग्रह कर्मो छे, भव-मनुष्यभवमां 'उप-समीपे गृह्यते'-ग्रहण कराय-अवलंबन कराय जेओ वडे ते भवोपग्रह-वेदनीय, नाम अने गोत्रकर्म, ते बन्धन-कर्मप्रदेशो वडे अने स्थिति वडे समान होय छे ते समुद्घातने प्राप्त थता नथी, पण समुद्घात कर्या सिवाय ज तेने खपावी सिद्धिरूपी महेलमां विराजे छे ए भावार्थ छे. ए संबन्धे कह्युं छे के-"जस्स उ तुल्लं भवइ य कम्मचउक्कं सभावतो जो य । सो अकयसमुग्घाओ सिज्झइ जुगवं खवेऊणं" ॥ जेना चारे कर्म स्वभावथी तुल्य छे एवो जे केवली ते समुद्घात कर्या सिवाय एक साथे कर्मनो क्षय करीने सिद्ध थाय छे." आ भाव कदाचित ज होय छे के बहुधा होय छे ? तेथी कहे छे-'अगंतूण समुग्घायं' इत्यादि. समुद्घातने-केवलिसमुद्घातने प्राप्त कर्या सिवाय सिद्धि-चरमगतिने प्राप्त थयेला छे ए क्रियानो संबन्ध जाणवो. केटला ? ए माटे सूत्रकार कहे छे-'अनन्ताः' अनन्त, केवलज्ञान अने केवलदर्शनसहित एवा, आ कथन वडे जेओ 'बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, धर्म, अधर्म अने संस्कार-ए नव आत्माना गुणोनो अत्यंत उच्छेद थवो ए मोक्ष-एम माने छे तेना मतनो निरास कर्यो छे एम समजवुं. कारण के ज्ञान ए आत्मानो निरुपचरित-वास्तविक स्वभाव छे अने तेथी तेनो विनाश थतो नथी. अन्यथा आत्मानोज अभाव थाय. आत्मानो निरन्वय-सर्वथा नाश थतो नथी. कारण के सतनो सर्वथा विनाश घटतो नथी. "नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः" असद् वस्तुनी उत्पत्ति थती नथी अने सद् वस्तुनो नाश थतो नथी." ए न्याय छे. 'जिनो'-जेणे रागादिशत्रुओने जित्या छे एवा, आ कथन वडे गोशालकना मतनो निरास कर्यो. कारण के तेना मते मुक्तिपदने प्राप्त थयेल होवा छतां पण तेने वास्तविक रीते वीतराग मानता नथी, केमके मुक्तिपदने प्राप्त थया होवा छतां पण तीर्थनो तिरस्कार थतो जोइने अहीं आवे छे-एवुं तेमनुं कथन छे. पण वीतरागनुं पराभवनी बुद्धिथी अहीं आववुं असंभवित छे. पुनः केवा छे ? ते कहे छे-'जरामरणविप्रमुक्ताः' जरा अने मरणथी रहित छे. जरा अने मरणनुं ग्रहण अन्यनुं उपलक्षण-सूचक छे, तेथी समस्त रोग अने शोकादि सांसारिक क्लेशथी मुकायेला जाणवा. ए वडे एकान्तथी मोक्षसुखनुं उपादेयपणुं कहे छे. कारण के अन्यने एवा प्रकारना स्वरूपवाळा स्थाननो असंभव छे. संसारमां श्रेष्ठ सुखने प्राप्त थयेलुं होय तो पण एवा प्रकारनुं स्थान नथी. कारण के

सर्वे वस्तुनुं पण छेवटे मरण-विनाश छे. सिद्धि-सर्वकर्मना क्षय वडे आत्मानुं स्वरूपमां अवस्थान, एवी वर-सर्वेगतिमां उत्तम ते वरगतिरूप सिद्धिने प्राप्त थयेला छे.

हवे सर्वे केवली समुद्घातने प्राप्त थता प्रथम आवर्जीकरण करे छे. ते प्रमाणे केवलिसमुद्घातनी प्रक्रिया कहेवानी इच्छावाळा भाष्यकार समुद्घातशब्दना व्याख्यानपूर्वक कहे छे-"तत्थाउअंससाहियकम्मसमुग्घायणं समुग्घाओ । तं गंतुमणा पुव्वं आउज्जीकरणं उवेइ" ॥ तेमां आयुपना अंशथी अधिक कर्मनो घात करवो ते समुद्घात, तेने प्राप्त थवानी इच्छावाळा केवली पूर्वे आवर्जीकरण करे छे. आवर्जीकरणनो शो शब्दार्थ छे ? आवर्जन करवुं-आत्माने मोक्षना अभिमुख करवो, मोक्ष प्रति जोडवो ए तात्पर्य छे. अथवा 'आवर्ज्यते अनेन' जे वडे मोक्ष अभिमुख कराय ते आवर्ज-शुभ, मन, वचन अने कायानो व्यापार विशेष. कह्युं छे के "आवज्जणमुवओगो वावारं वा" आवर्जन-उपयोग अथवा व्यापार. तेथी बन्ने स्थळे पण पूर्वे न होय तेनुं करवुं ए विवक्षामां 'च्वि' प्रत्यय थवाथी आवर्जीकरण कहेवाय छे. बीजा आचार्यो आवर्जितकरण एवो शब्द कहे छे, तेनो आ शब्दार्थ छे-आवर्जित-अभिमुख-सन्मुख करायेलो. लोकमां एम बोले छे के 'आवर्जितोऽयं मया' में तेने सन्मुख करेलो छे. तथाभव्यत्व वडे आवर्जित-मोक्ष सन्मुख करायेला आत्मानुं करण-शुभयोगनो व्यापार ते आवर्जितकरण. बीजा आचार्यो 'आउज्जियाकरण' एवो पाठ कहे छे. तेनो शब्दसंस्कार आ प्रमाणे करे छे-'आयोजिकाकरणं' अहीं अन्वयार्थ आ छे-आङ् मर्यादा अर्थमां छे 'आ' केवलिनी दृष्टिवडे योजन-शुभ योगोनो व्यापार अहीं भावमां 'अक' प्रत्यय थवाथी आयोजिकाकरण थाय छे. अन्य आचार्यो 'आउस्सियाकरण' कहे छे. तेनो पण आ अन्वर्थ-व्युत्पत्तिनो अर्थ थाय छे-आवश्यक-अवश्यपणे करवुं ते आवश्यककरण. जेमके केटलाएक केवली समुद्घात करे अने केटलाक न करे, परन्तु आ आवश्यककरण तो बधा य केवली करे छे.

२६. कतिसमतिए णं भंते ! आउज्जीकरणे पन्नत्ते ? गोयमा ! असंखेज्जसमतिए अंतोमुहुत्तिए आउज्जीकरणे पन्नत्ते । कतिसमतिए णं भंते ! केवलिसमुग्घाए पन्नत्ते ? गोयमा ! अट्ठसमतिते पन्नत्ते, तंजहा—पढमे समए दंडं करेति, बीए समए कवाडं करेति, ततिए समए मंथं करेति, चउत्थे समए लोगं पूरेति, पंचमे समए लोयं पडिसाहरति, छट्ठे समए मंथं पडिसाहरति, सत्तमए समए कवाडं पडिसाहरति, अट्ठमे समए दंडं पडिसाहरति, दंडं पडिसाहरेत्ता तओ पच्छा सरीरत्थे भवति ।

२६. हे भगवन् ! केटला समयनुं आयोजीकरण कह्युं छे ? हे गौतम ! असंख्याता समयना अन्तर्मुहूर्त प्रमाण आयोजीकरण कह्युं छे. हे भगवन् ! केवली समुद्घात केटला समयनो छे ? हे गौतम ! आठ समय प्रमाण कह्यो छे. ते आ प्रमाणे–प्रथम समये दण्ड करे छे, बीजा समये कपाट करे छे, त्रीजा समये मन्थान करे छे, चोथा समये लोकने पूरे छे–लोकव्यापी थाय छे, पांचमा समये लोकने संहरे छे, छट्ठा समये मंथान संहरे छे. सातमा समये कपाट संहरे छे, आठमा समये दण्ड संहरे छे अने दण्डने संहरी शरीरस्थ थाय छे.

२६. हवे आ आवर्जीकरणना काळनुं प्रमाण बताववा माटे प्रश्न अने उत्तर सूत्र कहे छे—'कइसमइए णं' हे भगवन् ! आवर्जीकरण केटला समय प्रमाण छे? इत्यादि सुगम छे. आवर्जीकरण कर्या पछी तुरत केवलीसमुद्घातनो आरंभ करे छे–ते केटला समयनो होय छे? ए आशंकामां तेना समयनुं निरूपण करवा माटे कहे छे–'कइसमइए णं' इत्यादि. 'हे भगवन्! केवलीसमुद्घात केटला समयनो छे ? इत्यादि सुगम छे. तेमां जे समये जे करे छे ते बतावे छे—'तंजहा–पढमे समए' इत्यादि. आ पण सुगम छे. कारण

२७. से णं भंते ! तहा समुग्घायगते किं मणजोगं जुंजति, वइजोगं जुंजति, कायजोगं जुंजति ? गोयमा ! नो मणजोगं जुंजति, नो वइजोगं जुंजति, कायजोगं जुंजति । कायजोगे णं भंते ! जुंजमाणे किं ओरालियकायजोगं जुंजति, ओरालियमीसासरीरकायजोगं जुंजति, किं वेउव्वियसरीरकाययोगं जुंजति, वेउव्वियमीसासरीरकाय-

२७. हे भगवन् ! ते प्रकारे समुद्घातने प्राप्त थयेलो शुं मनोयोगनो व्यापार करे छे, वचनयोगनो व्यापार करे छे के काययोगनो व्यापार करे छे ? हे गौतम ! मनोयोगनो व्यापार करतो नथी, वचनयोगनो व्यापार करतो नथी, पण काययोगनो व्यापार करे छे. हे भगवन् ! काययोगनो व्यापार करतो शुं औदारिक काययोगनो व्यापार करे छे ? औदारिकमिश्रशरीरकाययोगनो व्यापार

के तेनी पूर्वे व्याख्या करी छे. परन्तु तेनो भावार्थ आ प्रमाणे छे-जेम आदिना चार समयोमां अनुक्रमे आत्मप्रदेशोनो विस्तार थाय छे, तेम प्रतिलोम-उलटा क्रम वडे संहरण पण थाय छे. ए संबंधे अन्य स्थळे पण कह्युं छे—"उड्ढं अहो य लोगंतगामिणं सो सदेहविक्खंभं । पढमे समयंमि दंडं करेइ विइयंमि य कवाडं ॥१॥ तइयसमयंमि मंथं चउत्थए लोगपूरणं कुणइ । पडिलोमं साहरणं काउं तो होइ देहत्थो ॥२॥ प्रथम समये ऊर्ध्व अने अधो लोकान्त सुधी जवावाळो स्वदेह प्रमाण विस्तारवाळो दंड करे छे, बीजा समये कपाट करे छे, त्रीजा समये मंथान करे छे अने चोथा समये लोकने व्याप्त करे छे. पछी उलटा क्रम वडे संहरण करी त्यार बाद शरीरमां स्थित थाय छे.

२७. आ समुद्घात करवामां जे योगनी प्रवृत्ति थाय छे तेने कहेवानी इच्छावाळा सूत्रकार कहे छे—'से णं भंते'! इत्यादि. समुद्घातने प्राप्त थयेलो शुं मनयोगनो व्यापार करे? इत्यादि. तेमां ते मनोयोग अने वचनयोगनो व्यापार करतो नथी. कारण के तेनुं प्रयोजन नथी. ए संबन्धे धर्मसारनी मूल टीकामां हरिभद्रसूरि कहे छे—"मनोवचसी तदा न व्यापारयति, प्रयोजनाभावात्"।

जोगं जुंजति, किं आहारगसरीरकायजोगं, आहारगमीसासरीरकायजोगं जुंजति, किं कम्मगसरीरकायजोगं जुंजति ? गोयमा ! ओरालियसरीरकायजोगंपि जुंजति, ओरालियमीसासरीरकायजोगंपि जुंजइ, नो वेउव्वियसरीरकायजोगं, नो वेउव्वियमीसासरीरकायजोगं, नो आहारगसरीरकायजोगं, नो आहारगमीसासरीरकायजोगं, कम्मग-

करे छे ? शुं वैक्रियशरीरकाययोगनो व्यापार करे छे ? वैक्रियमिश्रशरीरकाययोगनो व्यापार करे छे ? शुं आहारकशरीरकाययोगनो व्यापार करे छे ? शुं आहारक मिश्र शरीर काययोगनो व्यापार करे छे ? शुं कार्मण शरीर काययोगनो व्यापार करे छे ? हे गौतम ! औदारिकशरीरकाययोगनो पण व्यापार करे छे, औदारिकमिश्रशरीरकाययोगनो पण व्यापार करे छे अने कार्मणशरीरकाययोगनो पण व्यापार करे छे. पण वैक्रिय शरीर काययोगनो व्यापार करतो नथी, वैक्रियमिश्रशरीरकाययोगनो पण व्यापार करतो नथी, आहारकशरीरकाययोगनो व्यापार करतो नथी अने आहारकमिश्रशरीरकाययोगनो व्यापार करतो नथी. पहेला अने

ते वखते प्रयोजन नहि होवाथी मन अने वचननो व्यापार करतो नथी. काययोगनो व्यापार करतो औदारिक काययोग, औदारिक मिश्रकाययोग अने कार्मणकाययोगनो व्यापार करे छे, शेष काययोगनो व्यापार करतो नथी, कारण के लब्धिनो उपयोग नहि करतो होवाथी बाकीना काययोगनो असंभव छे. तेमां प्रथम अने आठमा समये केवळ औदारिक शरीरनो ज व्यापार करे छे माटे औदारिक काययोग छे. बीजा, छट्ठा अने सातमा समये औदारिक अने कार्मणशरीरनो व्यापार छे, माटे औदारिकमिश्रकाययोग छे. त्रीजा, चोथा अने पांचमा समये केवळ कार्मणशरीरना व्यापारवाळो छे माटे कार्मणकाययोग छे. ए संबंधे भाष्यकार कहे छे—"न किर समुग्घातगतो मणवइजोगप्पयोयणं कुणइ। ओरालियजोगं पुण जुंजइ पढमट्ठमे समए ॥१॥ उभयव्वावाराओ तम्मीसं बीयछट्ठसत्तमए। तियचउत्थपंचमे तु कम्मगं तम्मत्तचेट्ठाओ" ॥ खरेखर समुद्घातने प्राप्त थयेलो मन अने वचनयोगनो व्यापार करतो नथी, परन्तु प्रथम

सरीरकायजोगंपि जुंजति, पढमट्ठमेसु समएसु ओरालियसरीरकायजोगं जुंजति, बितियछट्ठसत्तमेसु समएसु ओरालियमीसासरीरकायजोगं जुंजति, ततियचउत्थपंचमेसु समएसु कम्मगसरीरकायजोगं जुंजति ।

२८. से णं भंते ! तहा समुग्घायगते सिज्झति बुज्झति मुच्चति परिनिव्वाति सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । से णं ततो पडिनियत्तति, पडिनियत्तित्ता ततो पच्छा मणजोगंपि जुंजति, वइजोगंपि जुंजइ, कायजोगंपि जुंजति ? मणजोगं जुंजमाणे किं सच्चमणजोगं जुंजति, मोसमणजोगं जुंजति, सच्चामोसमण-

आठमा समयमां ओदारिकशरीरकाययोगनो व्यापार करे छे, बीजा, छठ्ठा अने सातमा समयमां ओदारिक मिश्र शरीर काययोगनो व्यापार करे छे. त्रीजा, चोथा अने पांचमा समयमां कार्मणशरीरकाययोगनो व्यापार करे छे.

२८. हे भगवन् ! ते प्रमाणे समुद्घातने प्राप्त थयेलो सिद्ध थाय, बुद्ध थाय, मुक्त थाय, निर्वाण पामे अने सर्व दुःखोनो अन्त करे ? हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ-युक्त नथी. ते समुद्घातथी निवृत्त थाय छे, निवृत्त थईने त्यार बाद मनोयोगनो पण व्यापार करे छे, वचनयोगनो पण व्यापार करे छे अने काययोगनो पण व्यापार करे छे. मनोयोगनो व्यापार करतो शुं सत्य मनोयोगनो व्या-

अने आठमा समये औदारिकयोगनो व्यापार करे छे. औदारिक अने कार्मण बन्नेनो व्यापार होवाथी औदारिकमिश्रकाययोग बीजा, छठ्ठा अने सातमा समये छे. त्रीजा चोथा अने पांचमा समये मात्र कार्मण शरीरनी चेष्टा होवाथी कार्मणयोग होय छे.

२८. समुद्घात संबन्धे विशेष जणाववा माटे कहे छे-'से णं भंते' ! इत्यादि. हे भगवन् ! ते केवली दंड, कपाट वगेरेना क्रम वडे समुद्घातने प्राप्त थयेलो सिद्ध थाय-कृतार्थ थाय. 'वर्तमान कालनी समीपनो काल पण वर्तमान जेवो गणवो कहेवाय छे' एवो

जोगं जुंजति, असच्चामोसमणजोग जुंजति ? गोयमा ! सच्चमणजोगं, नो मोसमणजोगं, नो सच्चामोसमणजोग जुंजति, असच्चामोसमणजोगं जुंजति, वतिजोगं जुंजमाणे किं सच्चवइजोगं जुंजति, मोसवइजोगं जुंजति, सच्चामोसवइजोगं, असच्चामोसवइजोगं जुंजति ? गोयमा ! सच्चवतिजोगं, नो मोसवइजोगं, नो सच्चामोसवतिजोगं, असच्चामोसवइजोगंपि जुंजति, कायजोगं जुंजमाणे आगच्छेज्ज वा गच्छेज्ज वा चिट्ठेज्ज वा निसीएज्ज वा तुयट्टेज्ज

पार करे, मृषामनोयोगनो व्यापार करे, सत्यमृषामनोयोगनो व्यापार करे के असत्यामृषामनोयोगनो व्यापार करे ? हे गौतम ! सत्यमनोयोगनो व्यापार करे, मृषा मनोयोगनो व्यापार न करे, सत्यमृषा मनोयोगनो व्यापार न करे, असत्यामृषा मनोयोगनो व्यापार करे. वचनयोगनो व्यापार करतो शुं सत्यवचनयोगनो व्यापार करे, मृषा वचनयोगनो व्यापार करे, सत्यमृषा वचनयोगनो व्यापार करे के असत्यामृषा वचनयोगनोव्यापार करे ? हे गौतम ! सत्यवचनयोगनो व्यापार करे, मृषा वचनयोगनो व्यापार न करे,

---

व्याकरण प्रसिद्ध नियम होवाथी सिद्ध थवानो होय तो पण व्यवहारथी सिद्ध थाय छे एम कहेवाय छे, माटे कहे छे-बुध्यते-केवलज्ञान वडे जाणे छे के हुं निश्चयथी सर्व कर्मना क्षयथी कृतार्थ थइश ? तेथी कहे छे-परिनिर्वाति-समस्त प्रकारे शांत थाय छे, निर्वाण पामे छे ? ए वावतने पर्याय शब्द वडे स्पष्ट करे छे-सर्व दुःखोनो अन्त करे छे ? भगवान् कहे छे-'हे गौतम ! आ अर्थ समर्थ-संगत नथी के 'जे समुद्घातने प्राप्त थयेलो यावत्सर्व दुःखोनो अन्त करे'. कारण के हजी पण तेमणे योगनिरोध कर्यो नथी. सयोगीनी आगळ कहेवामां आवती युक्ति वडे सिद्धि थती नथी. तेथी ते शुं करे छे ? ए माटे कहे छे-'से णं' इत्यादि. ते-प्रस्तुत समुद्घातने प्राप्त थयेलो समुद्घातथी निवृत्त थाय छे अने निवृत्त थइने त्यार पछी तुरत मनोयोगनो, वचनयोगनो अने काययोगनो व्यापार करे छे. कारण के ते भगवान् नाम, गोत्र अने वेदनीयरूप भवधारणीय कर्म घणा होय त्यारे तेने अचिन्त्य प्रभाववाळा समुद्घातना वशथी आयुषना समान कर्या

वा उल्लंघेज्ज वा पलंघेज्ज वा, पडिहारियं पीढफलगसेज्जासंथारगं पच्चप्पिणेज्जा ।

असत्यमृषा वचनयोगनो व्यापार न करे, पण असत्यामृषा वचनयोगनो व्यापार करे. काययोगनो व्यापार करतो आवे, जाय, उभा रहे, बेसे, आळोटे,उल्लंघन करे के प्रलंघन करे, प्रातिहारिक-पासे रहेला पीठ-आसन, फलक-पाटीउं, शय्या अने संथारो पाछा आपे.

बाद अन्तर्मुहूर्तमां परमपद-मोक्ष प्राप्त थवानुं होवाथी ते काळे जो अनुत्तरौपपातिक वगेरे देव मनथी पूछे तो उत्तर आपवा माटे मनना पुद्गलो ग्रहण करी मनोयोगनो व्यापार करे छे. ते पण सत्य के असत्यामृषा रूप मननो व्यापार करे छे. मनुष्यादिके पूछ्युं होय के न पूछ्युं होय तो कार्यवशथी वचनयोगना पुद्गलो ग्रहण करी वचनयोगनो व्यापार करे छे अने ते सत्य के असत्यामृषारूप वचननो व्यापार करे छे, बाकीना वचन अने मनना योगनो व्यापार-क्रिया करतो नथी. कारण के तेना रागादि क्षीण थया छे. गमनोगमनादिमां औदारिक काययोगनो व्यापार करे छे. ते आ प्रमाणे-भगवान् कार्य निमित्ते कोइ स्थानथी निवक्षित स्थाने आवे, अथवा क्यांइ जाय, अथवा उभा रहे के बेसे, तेवा प्रकारनो श्रम दूर करवा माटे आळोटे अथवा विवक्षित स्थाने तेवा प्रकारना आवी पडता जीवो वडे व्याप्त भूमिने जोइने तेनो त्याग करवा माटे प्राणीओनी रक्षा निमित्ते उल्लंघन अथवा प्रलंघन करे. तेमां स्वाभाविक पाद विक्षेप-पगला भरवा, गमन करवा करतां कांइक अधिक गमन करवुं ते उल्लंघन, तेथी वधारे मोटा पगला भरवा ते प्रलंघन. अथवा पासे रहेला पीठ-आसन, फलक-पाटीया, शय्या -वसति अने संथारो पाछा आपे एटले जेनी पासेथी लावेला होय तेने पाछा सोंपे. अहीं भगवंत आर्यश्यामसूरिए पासे रहेला आसन, फलक-पाटीया वगेरेने पाछा आपवानुं ज कह्युं छे, तेथी जणाय छे के अवश्य अन्तर्मुहूर्त आयुष बाकी होय त्यारे ज आवर्जीकरणादि करे छे पण वधारे आयुष बाकी होय त्यारे करतो नथी. जो एम न होय तो तेने ग्रहण करवानो पण संभव होवाथी तेने ग्रहण पण करवा पडे. ए कथन वडे कोइ आचार्यो कहे छे-'जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त बाकी होय त्यारे अने उत्कर्षथी छ मास बाकी होय त्यारे समुद्घात करे छे' तेनो निरास जाणवो. कारण के छ मासमां वच्चे वर्षाकालनो पण संभव होवाथी ते निमित्ते आसन फलकादिनुं ग्रहण पण संभवे, परन्तु ते

सूत्रने संमत नथी, माटे ते प्ररूपणा उत्सूत्र जाणवी. वळी आवश्यकमां पण समुद्घात कर्या पछी तुरत शैलेशीना कथनथी ए उत्सूत्र
प्ररूपणा जाणवी. ते सूत्र आ प्रमाणे छे-"दंडकवाडे मथंतरे य साहारणा सरीरत्थे । भासाजोगनिरोहे सेलेसी सिज्झणा चेव ॥" दंड,
कपाट, मंथन, आंतरा पूरवा, संहरण, शरीरस्थ, वचनयोगनिरोध, शैलेशी अने सिद्ध-मोक्ष अनुक्रमे जाणवा. जो उत्कर्षथी छ मासनुं
अंतर पडे तो ते पण कहे, पण कह्युं नथी. ते माटे अयुक्त छे. ते प्रमाणे भाष्यकार कहे छे-"कम्मलहुयाए समओ भिन्नमुहुत्तावसे-
सओ कालो । अन्ने जहन्नमेयं छम्मासुक्कोसमिच्छंति ॥१॥ तत्तोऽनंतरसेलेसीवयणओ जं च पाडिहारीणं । पच्चप्पणमेव सुए इहरा ग्गहणंपि
होज्जाहि ॥" कर्म ओछा करवा निमित्ते (समुद्घातनो) शेष अन्तर्मुहूर्तनो काळ जाणवो. बीजा आचार्यो एने जघन्य काळ कहे छे अने छ
मासनो उत्कृष्ट काळ माने छे. (ते अयुक्त छे) कारण के पछी तुरत शैलेशीनुं कथन होवाथी अने पासे रहेला पीठ फलकादिनुं पाछुं आपवानुं
ज सूत्रमां कह्युं छे. अन्यथा तेने ग्रहण करवानुं पण होय. अहीं ए प्रमाणे अन्तर्मुहूर्त सुधी यथासंभव त्रण योगना व्यापारवाळा केवली
थइने त्यार पछी अत्यन्त स्थिरतारूप, लेश्यारहित अने परम निर्जरानुं कारण ध्यानने अंगीकार करवानी इच्छावाळा योगनो निरोध
करवा माटे प्रारंभ करे छे. कारण के योग होय त्यारे उक्त स्वरूपवाळा ध्याननो असंभव छे. ते आ प्रमाणे-योगनो परिणाम ते
लेश्या, कारण के योगना अन्वय अने व्यतिरेकने अनुसरे छे. तेथी ज्यां सुधी योग छे त्यां सुधी लेश्या अवश्य होय छे, तेथी लेश्या-
रहित ध्याननो संभव नथी. वळी ज्यां सुधी योग छे त्यां सुधी कर्मबन्ध पण छे. कारण के "जोगा पयडिपएसं ठिइअणुभागं कसायओ
कुणइ" योगथी प्रकृति अने प्रदेश बंध करे छे तथा स्थिति अने अनुभागबंध कषायथी करे छे-एवुं शास्त्रवचन छे. केवळ ते कर्मबंध
मात्र योगनिमित्तक होवाथी बे समयनो छे. ते आ प्रमाणे-प्रथम समये कर्म बंधाय छे, बीजा समये वेदाय छे अने त्रीजा समये
ते कर्म अकर्मरूपे थाय छे. तेमां जो के बे समयनी स्थितिवाळा कर्म कराय छे अने पूर्वे पूर्वना कर्म नाश पामे छे, तो पण समये
समये निरंतर कर्म ग्रहण करवामां आवे तो मोक्ष न थाय अने अवश्य मोक्षमां जवानुं छे, ते माटे ते योगनिरोध करे छे. कह्युं छे
के "स ततो योगनिरोधं करोति लेश्यानिरोधमभिकाङ्क्षन्। समयस्थितिं च बन्धं योगनिमित्तं निरुरुत्सुः ॥१॥ समये समये कर्मादाने सति

२९. से णं भंते! तहा सजोगी सिज्झति जाव अंतं करेति? गोयमा! नो इणट्ठे समट्ठे। से णं पुव्वमेव सण्णिस्स पंचिंदियपज्जत्तयस्स जहण्णजोगिस्स हेट्ठा असंखेज्जगुणपरिहीणं पढमं मणजोगं निरुंभति, ततो अणंतरं

२९. हे भगवन्! ते प्रकारे (समुद्घातने प्राप्त थयेलो) सयोगी केवली सिद्ध थाय, यावत् सर्व दुःखोनो अन्त करे? हे गौतम! ए अर्थ समर्थ–युक्त नथी. ते प्रथम जघन्ययोगवाळा संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्ताना मनोयोगनी नीचे असंख्यातगुण हीन–न्यून मनो-

सन्ततेर्न मोक्षः स्याद्। यद्यपि हि विमुच्यते स्थितिक्षयात् पूर्वकर्माणि॥ नाकर्मणो हि वीर्यं योगद्रव्येण भवति जीवस्य। तस्यावस्थानेन तु सिद्धः समयस्थितेर्बन्धः ॥३॥ ते लेश्यानो निरोध करवाने इच्छता अने योगनिमित्ते समयस्थितिना बन्धने रोकवाने इच्छता योगनिरोध करे छे. समये समये कर्म ग्रहण करवामां आवे तो कर्म प्रवाहने लीधे मोक्ष न थाय. जो के स्थितिना क्षयथी पूर्व कर्म मूकाय छे अने कर्मरहितनुं योगद्रव्य वडे वीर्य होतुं नथी पण योगना अवस्थान वडे समयस्थितिनो बंध थाय छे. बन्धनी समयमात्रनी स्थिति बन्धना समयने छोडीने जाणवी. भाष्य पण आ पूर्वोक्त सर्व प्रमेय अर्थने पुष्ट करे छे. ते प्रमाणे तेनो आ ग्रन्थ छे– "विणिवित्तसमुग्घाओ तिण्णिवि जोगे जिणो पउंजिज्जा। सच्चमसच्चामोसं च सो मणं तह वइजोगं ॥१॥ ओरालियकायजोगं गमणाई पाडिहारियाणं वा। पच्चप्पणं करेज्जा जोगनिरोहं तओ कुणइ ॥२॥ किन्न सयोगो सिज्झइ? स बंधहेउत्ति जं सजोगो य। न समेइ परमसुक्कं स निज्जराकारणं परमं ॥३॥" समुद्घातथी निवृत्त थइ जिन त्रणे योगनो व्यापार करे छे. सत्य, असत्यामृषा मनोयोग, वचनयोग अने गमनादिमां औदारिककाययोगनो व्यापार करे छे. तेमज पार्श्ववर्ती पीठ, फलकादिनुं प्रत्यर्पण–पाछा आपवानुं करे छे अने त्यारबाद योगनिरोध करे छे. "सयोगी केम सिद्ध न थाय? कारण के बन्धनो हेतु ते योग छे तेथी ते सयोगी परम निर्जरानुं कारण परमशुक्ल ध्यानने प्राप्त थतो नथी."

२९. 'से णं भंते! तहा सजोगी सिज्झइ' इत्यादि. हे भगवन्! ते प्रमाणे सयोगी सिद्ध थाय'? इत्यादि सुगम छे.

बेइंदियपज्जत्तगस्स जहण्णजोगिस्स हेट्ठा असंखिज्जगुणपरिहीणं दोचं वतिजोगं निरुंभति, ततो अणंतरं च णं सुहुमस्स पणगजीवस्स अपज्जत्तयस्स जहण्णजोगिस्स हेट्ठा असंखेज्जगुणपरिहीणं तचं कायजोगं निरुंभति, से णं एतेण उवाएणं–पढमं मणजोगं निरुंभति, मणजोगं निरुंभित्ता वतिजोगं निरुंभति, वयजोगं निरुंभित्ता कायजोगं निरुंभइ, कायजोगं निरुंभित्ता जोगनिरोहं करेति, जोगनिरोहं करेत्ता अजोगतं पाउणति, अजोगयं पाउणित्ता ईसिं हस्सपंचक्खरुच्चारणद्धाए असंखेज्जसमइयं अंतोमुहुत्तियं सेलेसिं पडिवज्जइ, पुव्वरइयगुणसेढीयं च णं

योगने रोके छे. त्यारपछी तुरत जघन्ययोगवाळा बेइन्द्रिय पर्याप्तना वचनयोगनी नीचे असंख्यातगुण हीन बीजा वचनयोगनो रोध करे छे. त्यार पछी तरत जघन्ययोगवाळा अपर्याप्ता सूक्ष्म पनक जीवना काययोगनी नीचे असंख्यातगुण हीन काययोगनो रोध करे छे. ते ए उपाय वडे–ए प्रकारे प्रथम मनोयोगनो रोध करे छे, मनोयोगनो रोध करी वचनयोगनो रोध करे छे, वचनयोगनो रोध करी काययोगनो रोध करे छे, काययोगनो रोध करी योगनो निरोध करे छे. योग निरोध करीने अयोगीपणुं–योगरहितपणुं पामे छे. योगरहितपणुं पामी इषत्–थोडा काळमां ह्रस्व पांच अक्षरना उच्चारण काळ जेटली असंख्याता समयना अन्तर्मुहूर्त प्रमाण

योगनिरोध करतो प्रथम मनोयोगनो रोध करे छे, अने ते पर्याप्ता संज्ञी पंचेन्द्रियना प्रथम समये जेटलां मनोद्रव्य अने जेटलो तेनो व्यापार होय तेथी असंख्यातगुण न्यून मनोयोगनो प्रतिसमय रोध करतो असंख्याता समयो वडे सर्वथा रोध करे छे. कह्युं छे के "पज्जत्तमेत्तसण्णिस्स जत्तियाइं जहन्नजोगिस्स । होंति मणोदव्वाइं तव्वावारो य जम्मत्तो ॥ तदसंखगुणविहीणं समए समए निरुंभमाणो सो । मणसो सव्वनिरोहं करे असंखेज्जसमएहिं" ॥२॥ जघन्ययोगवाळा पर्याप्त मात्र संज्ञीना जेटला मनोद्रव्यो होय छे

कम्मं, तीसे सेलेसिमद्धाए असंखेज्जाहिं गुणसेढीहिं असंखेज्जे कम्मखंधे खवयति, खवइत्ता वेदणिज्जाउणामगोत्ते इच्चेते चत्तारि कम्मंसे जुगवं खवेति, जुगवं खवेत्ता ओरालियतेयाकम्मगाइं सव्वाहिं विप्पजहणाहिं विप्पजहति, विप्पजहित्ता उज्जुसेढीपडिवण्णो अफुसमाणगतीए एगसमएणं अविग्गहेणं उड्ढं गंता सागारोवउत्ते सिज्झइ बुज्झइ०, तत्थ सिद्धो भवति। ते णं तत्थ सिद्धा भवंति असरीरा जीवघणा दंसणणाणोवउत्ता णिट्ठियट्ठा

शैलेशीने प्राप्त थाय छे अने पूर्वे रचेली गुणश्रेणी जेनी छे एवा कर्मने अनुभववा प्राप्त थाय छे. ते शैलेशीना काळमां असंख्याती गुणश्रेणी वडे असंख्याता कर्म स्कंधोनो क्षय करे छे, क्षय करीने वेदनीय, आयुष, नाम अने गोत्र ए चार कर्मभेदोने एक साथे खपावे छे, एक साथे खपावी औदारिक, तैजस अने कार्मण शरीरनो सर्व प्रकारे त्याग करे छे. त्याग करीने ऋजुश्रेणीने प्राप्त थयेलो अस्पृशद्गति वडे एक समयमां अविग्रहगति वडे ऊर्ध्व-उंचे जइने साकारउपयोग सहित सिद्धिपदने पामे छे, बोध पामे छे,

अने जेटलो तेनो व्यापार होय छे तेथी असंख्यातगुण हीन समये समये रोकतो असंख्याता समयोमां मननो सर्वथा रोध करे छे. पज यावत सूत्रकार कहे छे-'से णं भंते' । इत्यादि. प्रस्तुत केवली योगनो निरोध करवाने इच्छतो पहेला जघन्ययोगवाळा संज्ञी पर्याप्ताना ('मनोयोगनो' अहीं अध्याहार छे) एटले तेना मनोयोगनी नीचे असंख्यातगुण हीन समये समये रोकतो असंख्याता समयमां सर्वथा प्रथम मनोयोगनो रोध करे छे. 'ततोऽनंतरं च णं' त्यार बाद मनोयोगने रोक्या पछी जघन्ययोगवाळा बेइन्द्रिय पर्याप्तना वचनयोगनी नीचेना (अहीं वचनयोग पद अर्थात् जाणी लेवुं.) वचनयोगने असंख्यातगुणहीन समये समये रोकतो सर्वथा बीजा वचनयोगनो रोध करे छे. ए संबन्धे भाष्यकार कहे छे-"पज्जत्तमित्तबिंदियजहन्नवइपज्जवा जे उ । तद्संखगुणविहीणं समये समये निरंभंतो ॥ १ ॥ सव्ववइजोगरोहं संखाईएहिं कुणइ समएहिं" । "पर्याप्त मात्र बेइन्द्रियना जघन्य वचनयोगना जे पर्यायो छे तेथी असं-

णीरया णिरेयणा वितिमिरा विसुद्धा सासयमणागयद्धं कालं चिट्ठंति। से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ 'ते णं तत्थ सिद्धा भवंति असरीरा जीवघणा दंसणणाणोवउत्ता निट्ठियट्ठा नीरया निरेयणा वितिमिरा विसुद्धा सासयमणागयद्धं कालं चिट्ठंति' ? गोयमा ! से जहाणामए बीयाणं अग्गिदड्ढाणं पुणरवि अंकुरुप्पत्ती ण भवति,एवामेव सिद्धाणवि कम्मबीएसु दड्ढेसु पुणरवि जम्मुप्पत्ती ण भवति, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ–'ते णं तत्थ सिद्धा

अने त्यां जइ सिद्ध थाय छे. त्यां रहेला सिद्धो शरीर रहित, जीवप्रदेशना घनवाळा, दर्शन अने ज्ञानना उपयोगवाळा, निष्ठितार्थ–कृतार्थ, रजरहित, निरेजन–कंपरहित, तिमिर–कर्म आवरणरहित, अने विशुद्ध एवा शाश्वत अनागत काळ सुधी रहे छे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के 'तेओ त्यां रहेला सिद्ध, शरीररहित, जीवप्रदेशना घनवाळा, दर्शन ज्ञानना उपयोगसहित, कृतार्थ, कर्मरज रहित, कम्परहित, वितिमिर–अज्ञानरहित, विशुद्ध एवा शाश्वत अनागत काळ पर्यन्त रहे छे' ? हे गौतम ! जेम अग्निथी

ख्यातगुणहीन वचनयोगने समये समये रोकतो असंख्याता समये सर्व वचनयोगनो निरोध करे छे." 'ततोऽणंतरं च णं' इत्यादि. ते वचनयोग पछी तुरत इत्यादि पूर्ववत् समजवुं. प्रथम समयमां उत्पन्न थयेला अपर्याप्त सूक्ष्म पनक जीवनो एटले जघन्ययोगवाळा सौथी अल्प वीर्यवाळा सूक्ष्म पनक जीवनो जे काययोग छे तेनी नीचे असंख्यातगुणहीन काययोगने समये समये रोकतो असंख्याता समये ('समस्त ए पदनो अध्याहार छे.') समस्तपणे त्रीजा काययोगनो निरोध करे छे. ते काययोगनो निरोध करतो सूक्ष्मक्रिय अप्रतिपाती शुक्लध्यानने प्राप्त थाय छे. ते ध्यानना सामर्थ्यथी मुख अने उदरादिना खाली भागने पूरवा वडे शरीरना त्रीजा भागना आत्मप्रदेशो संकुचित थाय छे एटले शरीरना बे तृतीयांश भागमां आत्मप्रदेशो घनरूपे थाय छे. जेम के सात हस्तप्रमाण शरीर होय तो तेनो त्रीजो भाग बे हाथ अने आठ अंगुल संकुचित थाय छे अने चार हाथ अने सोळ आंगळ प्रमाण आत्मप्रदेशो घनरूपे थाय

भवंति असरीरा जीवघणा दंसणणाणोवउत्ता णिट्ठियट्ठा णीरया णिरेयणा वितिमिरा विसुद्धा सासयमणागतद्धं कालं चिट्ठंति'त्ति ।

निच्छिण्णसव्वदुक्खा जाइजरामरणबन्धणविमुक्का । सासयमव्वाबाहं चिट्ठंति सुही सुहं पत्ता ॥'

इति पण्णवणाए भगवतीए छत्तीसतिमं समुग्घायपयं समत्तं ॥

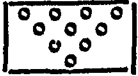
वळेला बीजने फरीथी अंकुरनी उत्पत्ति थती नथी ए प्रमाणे सिद्धोने पण कर्मरूपी बीज बळी जवाथी फरीथी जन्मनी उत्पत्ति थती नथी, ते हेतुथी हे गौतम ! एम कहुं छुं के त्यां रहेला ते सिद्धो शरीर रहित, जीवप्रदेशना घनवाळा, दर्शन–ज्ञानना उपयोग सहित, कृतार्थ, कर्मरजरहित, निरेजन–निष्कंप, वितिमिर–अज्ञानरहित अने विशुद्ध होय छे अने शाश्वत अनागत काळ सुधी रहे छे. सर्व दुःखोनो पार पामेला, जन्म, जरा, मरण अने कर्मना बन्धनथी मुकायेला एवा अव्याबाध सुखने प्राप्त थयेला अने सुखी शाश्वत काळ पर्यंत रहे छे.

प्रज्ञापना भगवतीना अनुवादमां छत्रीशमुं समुद्घात पद समाप्त.

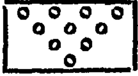
छे.) ते प्रमाणे भाष्यकार कहे छे–"तत्तो य सुहुमपणगस्स पढमसमयोववण्णस्स । जो किर जहन्नजोगो तदसंखेज्जगुणमेक्केक्के ॥१॥ समएहिं रुंभमाणो देहतिभागं च मुंचंतो । रुंभइ स कायजोगं संखाइएहिं चेव समएहिं ॥२॥ ते वार पछी प्रथम समयमां उत्पन्न थयेला सूक्ष्म पनकनो जे जघन्य काययोग छे तेथी असंख्यातगुणहीन काययोगने एक एक समये रोकतो अने शरीरना त्रीजा भागनो त्याग करतो असंख्याता समयोमां काययोगनो निरोध करे छे. काययोगना निरोध काळे छेल्ला अन्तर्मुहूर्ते वेदनीयादि त्रण कर्ममां

प्रत्येक कर्मनी स्थिति सर्वे अपवर्तना करण वडे घटाडी गुणश्रेणिना क्रमवडे कर्मप्रदेशोनी रचनावाळी अयोगी अवस्थाना काल प्रमाण करे छे. ते आ प्रमाणे-प्रथम स्थितिमां थोडा प्रदेशो होय छे. बीजी स्थितिमां तेथी असंख्यातगुणा प्रदेशो होय छे. त्रीजी स्थितिमां तेथी असंख्यातगुणा प्रदेशो होय छे. ए प्रमाणे चरम स्थिति सुधी जाणवुं. तेनी आ स्थापना छे-

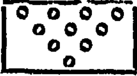
वेदनीय

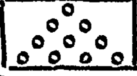


नाम



गोत्र



ए प्रथम समये ग्रहण करेला दलिकनी बनेली गुणश्रेणिओ छे. एम प्रतिसमय ग्रहण करेला दलिकनी बनेली त्रण कर्ममां प्रत्येक नी असंख्याती गुणश्रेणिओ जाणवी, कारण के अन्तर्मुहूर्तना समय असंख्याता छे. आयुषनी स्थिति जे प्रकारे बांधी छे तेवीज रहे छे. अने तेनी गुणश्रेणिना क्रमथी विपरीत क्रमवाळी दलिकनी रचना जाणवी. स्थापना—  आ वधोय मनोयोगादिनो निरोध मन्दबुद्धिवाळाने सुखपूर्वक बोध थवा माटे आचार्ये स्थूल दृष्टिथी वर्णव्यो छे. जो सूक्ष्म दृष्टिथी तेनुं स्वरूप जाणवानी जिज्ञासा थाय तो पञ्चसंग्रहनी टीका जोवी. तेमां अत्यंत सूक्ष्मपणे विस्तारथी तेनुं स्वरूप वर्णव्युं छे. अहीं ग्रन्थ वधी जवाना भयथी अमे कह्युं नथी. 'से णं' इत्यादि. ते प्रस्तुत केवलज्ञानी आ हमणां कहेला उपाय-उपायना प्रकार वडे-इत्यादि वधुं सुगम छे, यावत् 'अयोगता'-अयोगिपणाने प्राप्त करे छे एटले अयोगीपणानी प्राप्तिने सन्मुख थाय छे ए भावार्थ छे. अयोगीपणानी प्राप्तिने सन्मुख थइने ईसिं-ईषत्-थोडा काळमां शैलेशीने प्राप्त करे छे ए संबन्ध छे. केटला काळप्रमाण शैलेशी छे ? ए सूत्रकार कहे छे ? 'ह्रस्वपञ्चाक्षरोच्चारणाद्धया' ह्रस्व पांच अक्षरना उच्चारणना काळ प्रमाण छे. तात्पर्य ए छे के-अतिशीघ्रपणे नहि तेम अति विलंबे नहि पण मध्यम प्रकारे जेटला काळे ङ ञ ण न म एवा प्रकारना पांच ह्रस्वाक्षरो उच्चाराय तेटला काळ प्रमाण छे. एटलो काळ केटला सम-

यप्रमाण छे? ए निरूपण करवा माटे सूत्रकार कहे छे–'असंख्येयसामयिकां' असंख्याता समयप्रमाण छे, ते असंख्याता समयनुं प्रमाण जघन्यथी पण अन्तर्मुहूर्त प्रमाण जाणवुं. एनुं अन्तर्मुहूर्तप्रमाण जणाववा माटे कहे छे–'आन्तर्मुहूर्तिकीं शैलशीं' अन्तर्मुहूर्तप्रमाण शैलेशीने प्राप्त करे छे. शील–चारित्र अने ते अहीं निश्चय नयना मते सर्वसंवररूप ग्रहण करवुं. कारण के ते सौथी उत्तम छे, तेनो ईश–स्वामी तेनी अवस्था ते शैलेशी छे. ते वखते व्यवच्छिन्नक्रिय अप्रतिपाती शुक्लध्यान उपर आरूढ थाय छे. ए संबन्धे कह्युं छे के 'सीलं व समाहाणं निच्छयओ सव्वसंवरो सो य। तस्सेसो सीलेसो। सेलेसी होइ तदवत्था ॥१॥ हस्सक्खराई मज्झेण जेण कालेण पञ्च भण्णन्ति। अच्छइ सेलेसिगतो तत्तियमित्तं तओ कालं ॥२॥ तणुरोहारंभाओ झायइ सहुमकिरियानियट्टिं सो। वोच्छिन्नकिरियमप्पडिवाई सेलेसिकालंमि" ॥३॥ शील–समाधि, अने ते सर्व संवररूप जाणवी तेनो जे ईश–स्वामी तेनी अवस्था ते शैलेशी छे. (१) शैलेशीने प्राप्त थयेलो जेटला काळमां पांच ह्रस्वाक्षरो मध्यम प्रकारे उच्चाराय तेटलो काळ रहे छे. (२) काययोगना रोधना प्रारंभथी सूक्ष्मक्रिय अनिवृत्ति ध्यान होय छे अने शैलेशीना काळमां व्यवच्छिन्नक्रिय अप्रतिपाती ध्यान होय छे." (३) केवळ शैलेशीने प्राप्त करे छे एम नहि, पण पूर्वे रचेली गुणश्रेणिवाळा कर्मने अनुभववाने प्राप्त करे छे. एटले पूर्वे काययोगना निरोधना छेल्ला अन्तर्मुहूर्तमां पूर्वे जेनुं स्वरूप बताव्युं छे एवी गुणश्रेणि जेनी रचेली छे एवा कर्मने अनुभववाने प्राप्त करे छे. ते पछी शुं करे छे? 'ते शैलेशीना काळमां वर्ततो पूर्वे रचेली असंख्याती गुणश्रेणि वडे प्राप्त थयेला त्रण कर्मना जुदा जुदा प्रतिसमय असंख्याता कर्मस्कंधोने 'क्षपयन्' विपाकथी अने प्रदेशथी वेदवा वडे तेनी निर्जरा करतो छेल्ला समये वेदनीय, आयुष, नाम अने गोत्र ए चार कर्मना भेदोनो एक साथे क्षय करे छे. एक साथे क्षय करीने त्यार पछीना समये औदारिक, तैजस अने कार्मणरूप त्रण शरीरनो 'सव्वाहिं विप्पजहणाहिं विप्पजहाति' सर्व प्रकारे विप्रहान–त्याग करवा वडे त्याग करे छे. अर्थात् सर्व प्रकारे त्याग करे छे सूत्रमां प्राकृत होवाथी स्त्रीलिंग छे. तात्पर्य ए छे के जेम पूर्वे शरीरनो देशथी त्याग करतो हतो तेम त्याग करतो नथी, परन्तु सर्व प्रकारे त्याग करे छे. ए संबन्धे कह्युं छे के "ओरालियाइ चयइ सव्वाहिं विप्पजहणाहिं जं भणियं। निस्सेसं तहा न जहा देसच्चाएण सो पुव्विं" ॥ औदारिकादि शरीरने सर्व प्रकारना

त्याग वडे त्याग करे छे एम जे कह्युं छे ते निःशेषपणे त्याग करवाने कह्युं छे, पण पूर्वे देश त्याग वडे त्याग करतो हतो तेम नहि." त्याग करीने ते समये कोशबन्धनो त्याग करवारूप सहकारी कारणथी उत्पन्न थयेला स्वभाव विशेषथी एरंड फळनी पेठे भगवान् पण कर्मसंबन्धना त्याग रूप सहकारी कारणथी उत्पन्न थयेला स्वभाव विशेषथी उपर लोकान्ते जइने सिद्ध थाय छे ए संबंध छे. ए संबंधे कह्युं छे के "एरंडफलं च जहा बंधछेदेरियं दुयं जाइ। तह कम्मबंधणछेदणेरितो जाति सिद्धोवि" ॥ "जेम बंधनना विच्छेद-तूटवा वडे प्रेरित थयेलुं एरंडफळ जाय छे तेम कर्मबंधना छेद पडे प्रेरित थयेल सिद्ध पण जाय छे." केवी रीते जाय छे? अविग्रहेणं' अविग्रह गति वडे एक समये समयान्तर अने प्रदेशान्तरने नहि स्पर्श करतो ऋजुश्रेणिने प्राप्त थयेलो जाय छे. तात्पर्य ए छे.के जेटला पोताना आकाशप्रदेशोमां अहीं अवगाढ-रहेलो छे, तेटला ज प्रदेशोनो उपर पण आश्रय करतो विवक्षित समयथी बीजा समयने नहि स्पर्शतो उपर जाय छे. ते संबन्धे आवश्यक चूर्णिमां कह्युं छे के-"जत्तिए जीवोऽवगाढो तावइयाए ओगाहणाए उड्ढं उज्जुगं गच्छति न वंकं, बिइयं च समयं न फुसइ" । जेटला आकाशप्रदेशमां जीव रहेलो छे तेटली अवगाहना वडे उपर ऋजुगतिए जाय छे, वक्र जतो नथी तेम बीजा समयनो स्पर्श पण करतो नथी". भाष्यकार पण कहे छे-" रिउसेढिं पडिवन्नो समयपएसंतरं अफुसमाणो एगसमएण सिज्झइ अह सागारोवउत्तो सो" ॥ ऋजुश्रेणिने प्राप्त थयेलो अन्य समय अने बीजा प्रदेशोनो नहि स्पर्श करतो, साकार उपयोगवाळो एक समयमां सिद्ध थाय छे ". ए प्रमाणे उपर जइने शुं करे छे ? ए कहे छे—साकार उपयोगवाळो थइने सिद्ध थाय छे-कृतार्थ थाय छे. सर्व लब्धिओ साकार उपयोगवाळाने थाय छे पण अनाकार उपयोगवाळाने उपजती नथी, आ सिद्धि पण सर्व लब्धिओमां उत्तम लब्धि छे, माटे साकार उपयोगवाळाने थाय छे. ए संबन्धे कह्युं छे —सव्वाओ लद्धीओ जं सागारोवओगलाभाओ। तेणेह सिद्धिलद्धी उप्पज्जइ तदुवउत्तस्स ॥" जे कारणथी सर्व लब्धिओ साकार उपयोगवाळाने प्राप्त थाय छे तेथी अहीं सिद्धिलब्धि पण साकार उपयोगवाळाने उपजे छे". त्यार पछी अनुक्रमे उपयोगनी प्रवृत्ति थाय छे. ए ज प्रमाणे केवळी सिद्ध थाय छे ते प्रमाणे प्रतिपादन कर्युं.

हवे सिद्धो जेवा स्वरूपवाळा त्यां रहे छे ते प्रकारे प्रतिपादन करे छे-'तेणं तत्थ सिद्धा भवंति' इत्यादि. तेओ हमणा बतावेला क्रमवडे निष्पन्न थयेला 'तत्र' लोकान्ते सिद्धो होय छे. 'अशरीराः' औदारिकादि शरीर रहित छे, कारण के सिद्धपणाना प्रथम समये ज तेओनो त्याग करेलो छे. 'जीवघनाः'-निचित थयेला जीवप्रदेशोवाळा, कारण के सूक्ष्मक्रियाऽप्रतिपाती ध्याननी प्राप्तिना समये ज तेना सामर्थ्यथी मुख अने पेट वगेरेना खाली भागो पूरेला छे. 'दर्शनज्ञानोपयुक्ताः' जीवना स्वभावथी दर्शन अने ज्ञानना उपयोगवाळा छे. 'निष्ठितार्थाः' कृतार्थ थयेला छे, कारण के कृतकृत्य. छे 'नीरजसः' कर्मरूपी रज रहित छे, कारण के कर्मना बन्धनो अभाव छे. 'निरेजनाः' कंपरहित छे, कारण के कंप क्रियाना कारणनो अभाव छे. 'वितिमिराः' तिमिर-अज्ञानरहित छे, कारण के कर्मरूपी तिमिर-अंधकारनी वासना दूर थयेली छे. 'विशुद्धाः' विशुद्ध छे, कारण के विविध सम्यग्दर्शनादि मार्गनी प्राप्ति वडे अत्यन्त शुद्ध थयेला छे. एवा प्रकारना सिद्धो त्यां शाश्वत अने अनागत-भावी समस्त अद्धा-काळ जेमां छे एटला काळ सुधी त्यां रहेला छे. अहींज मन्दबुद्धिवाळाने बोध थवा माटे आक्षेप-पूर्वपक्ष अने परिहार-उत्तरपक्ष कहे छे-'से केणट्ठेण भंते !' हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो-इत्यादि सुगम छे. परन्तु 'कम्मवीएसु' कर्मरूप बीज-जन्मनुं कारण वळी जवाथी-निर्मूल नाश थवाथी फरीथी जन्मनी उत्पत्ति थती नथी. केमके कारण सिवाय कार्यनो असंभव छे. फरीथी ते कर्म केम उत्पन्न न थाय ? रागादिना अभावथी न थाय. कारण के रागादि आयुष प्रमुख कर्मनुं कारण छे अने ते रागादि तेओने नथी. केमके पूर्वे ज क्षीणमोहनी अवस्थामां तेनो क्षय कर्यो छे अने क्षीण थयेला रागादि सहकारी कारणना अभावथी फरीथी प्रगट थता नथी, रागादिनी उत्पत्तिमां परिणामी कारण आत्मा छे अने सहकारी कारण रागादि मोहनीय कर्म छे. उभय कारणथी उत्पन्न थतुं कार्य एक कारणना अभावमां होतुं नथी. जो एम न होय तो तेने अकारणपणानो प्रसंग प्राप्त थाय. एटले ते कारण ज न कहेवाय. सिद्धोने रागादिमोहनीय कर्म नथी, कारण के तेने पूर्वेज ध्यानाग्नि वडे भस्मसात् कर्युं छे. एम न कहेवुं के अहीं पण तेज प्रसंग प्राप्त थशे-जेम ते रागादिमोहनीय कर्म फरीथी केम उत्पन्न थतुं नथी ? कारण के तेना कारणभूत संक्लेशनो अभाव छे. रागादिमोहनीय कर्मनी उत्पत्तिमां रागादिपरिणतिरूप संक्लेश कारण छे. कारण के जेने वेदे तेने बांधे छे' एवुं शास्त्रवचन छे. वळी

रागादिमोहनीय कर्म रहितने तेवा प्रकारे संक्लेशनी उत्पत्ति थती नथी. माटे संक्लेशना अभावथी रागादिमोहनीय कर्मनो अभाव छे. अने तेना अभावथी फरीथी रागादिनी उत्पत्ति थती नथी. तथा रागादिनी फरीथी उत्पत्तिना विचारमां धर्मसंग्रहणीमां कह्युं छे-"खीणा य ते न होंती पुणरवि सहकारिकारणाभावा । नहि होइ संकिलेसो तेहिं विउत्तस्स जीवस्स ॥१॥ तयभावा न य वंधो तप्पाउग्गस्स होइ कम्मस्स । तदभावे तदभावो सव्वद्धं चेव विन्नेओ ॥२॥" क्षीण थयेला ते रागादि सहकारी कारणना अभावथी फरीथी उत्पन्न थता नथी, कारण के रागादिरहितने संक्लेश थतो नथी. ते रागादिना अभावथी तेने योग्य कर्मनो वन्ध थतो नथी, माटे तेना अभावमां तेनो अभाव सर्वकाळ जाणवो. तेथी रागादिना अभावथी आयुपप्रमुख कर्मनो फरीथी उत्पाद थतो नथी, अने तेना अभावमां फरीथी जन्मनी उत्पत्ति थती नथी. ए हेतुथी ज अन्य स्थळे कह्युं छे के-"दग्धे वीजे यथाऽत्यन्तं प्रादुर्भवति नाङ्कुरः । कर्मवीजे तथा दग्धे न रोहति भवाङ्कुरः ॥" जेम वीज अत्यंत वळी जवाथी अंकुरनी उत्पत्ति थती नथी. तेम कर्मरूपी वीज दग्ध थवाथी भवांकुर उगतो-उत्पन्न थतो नथी. उपसंहार कहे छे-'एएणट्ठेणं' इत्यादि. एज परम मंगलभूत सिद्धनुं स्वरूप शास्त्रनो शिष्य-प्रशिष्यादि वंशना परंपरा संवन्ध वडे विच्छेद न थाय माटे अत्यंत मंगलरूपे उपसंहारना मीषथी कहे छे-'निच्छिण्ण'-इत्यादि. निस्तीर्णसर्वदुःखाः' जेओ सर्व दुःखोने तरी गया छे एटले सर्व सांसारिक दुःखोनो पार पाम्या छे, ए हेतुथी ए कहे छे-'जातिजरामरणवन्धनविमुक्ताः' जाति-जन्म, जरा-वृद्धावस्था, मरण अने वन्धनो-ज्ञानावरणीयादि कर्मो वडे मूकायेला छे. अहीं हेतुमां प्रथमा विभक्ति थइ छे. जेथी जन्म, जरा, मरण अने वन्धनोथी मूकायेला छे तेथी सर्व दुःखो तरी गया छे. एवा प्रकारना तेओ शाश्वत-निरंतर भावी, 'अव्यावाधं' वाधारहित, कारण के रागादि सुखनो वाध करवाने समर्थ छे, पण ते रागादि तेओने नथी, एनो हमणांज विचार कर्यो. एवा परम स्वस्थता रूप

प्रज्ञापनासूत्र

तृतीय खण्ड

समाप्त